वार्षिकी
2024

संविधान की अष्टम अनुसूची में सम्मिलित 22 भाषाएँ

सत्यमेव जयते

भारत सरकार
केंद्रीय हिंदी निदेशालय
उच्चतर शिक्षा विभाग
शिक्षा मंत्रालय

वार्षिकी-2024

केंद्रीय हिंदी निदेशालय

सत्यमेव जयते

वार्षिकी – 2024
भारतीय साहित्य सर्वेक्षण

प्रधान संपादक
प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी 'देशगव्हाणकर'

परामर्श मंडल
प्रो. जी. गोपीनाथन
प्रो. चक्रधर त्रिपाठी
प्रो. श्रीराम परिहार
प्रो. नरेंद्र मिश्र
प्रो. किरण हजारिका
प्रो. विशाला शर्मा
श्री कुलदीप अग्निशेखर

संपादन मंडल
संपादक
डॉ. अनुपम माथुर
डॉ. नूतन पाण्डेय
सह–संपादक
डॉ. प्रतिष्ठा श्रीवास्तव
श्री प्रदीप कुमार ठाकुर
कार्यालयीन व्यवस्था
श्री विक्रांत हुड्डा
श्री संजीव कुमार

केंद्रीय हिंदी निदेशालय, उच्चतर शिक्षा विभाग,
शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार

वार्षिकी – 2024
© भारत सरकार

संपादकीय कार्यालय
केंद्रीय हिंदी निदेशालय
उच्चतर शिक्षा विभाग
शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार
पश्चिमी खंड-7, रामकृष्णपुरम्
नई दिल्ली-110066
वेबसाइट : www.chdpublication.education.gov.in
www.chd.education.gov.in
ई–मेल : bhashaunit@gmail.com
दूरभाषः 011-26105211/12

बिक्री केंद्र :
नियंत्रक,
प्रकाशन विभाग, सिविल लाइंस,
दिल्ली - 110054
वेबसाइट : www.deptpub.gov.in
ई–मेल : acop-dep@nic.in
दूरभाष : 011-23817823/9689

सदस्यता हेतु ड्राफ्ट नियंत्रक,
प्रकाशन विभाग,
दिल्ली के पक्ष में भेजें।

बिक्री केंद्र :
केंद्रीय हिंदी निदेशालय,
उच्चतर शिक्षा विभाग,
शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार,
पश्चिमी खंड-7, रामकृष्णपुरम्,
नई दिल्ली-110066
वेबसाइट : www.chdpublication.education.gov.in
www.chd.education.gov.in
ई–मेल : bhashaunit@gmail.com
दूरभाषः 011–26105211 / 12

सदस्यता हेतु ड्राफ्ट निदेशक, केंद्रीय हिंदी निदेशालय, नई दिल्ली के पक्ष में भेजें।

1. शुल्क सीधे www.bharatkosh.gov.in → Quick Payment → Ministry (007 Higher Education) → Purpose (Education receipt) 211766 JR.ADMN.OFFICER CENTRAL HINDI DIRECTORATE में digital mode से जमा करवाया जा सकता है।
2. कृपया दिए गए बिंदुओं के आधार पर सूचनाएँ देते हुए संलग्न प्रोफॉर्मा भरकर भेजें।
3. भाषा पत्रिका की सदस्यता हेतु आवेदन पत्र निदेशालय की वेबसाइट www.chdpublication.education.gov.in से डाउनलोड किया जा सकता है।

		मूल्य	
देश में	Inland	₹ 320	(डाक खर्च सहित)
विदेश	Foreign	$ 3.74	
		€ 3.19	

वार्षिकी – 2024

अनुक्रमणिका

प्रधान संपादक की कलम से
संपादकीय
आलेख

1. असमिया साहित्य	डॉ. रीतामणि वैश्य डॉ. अनामिका राजवंशी	9
2. उर्दू साहित्य	डॉ. जुबेदा हाशिम मुल्ला	22
3. ओड़िया साहित्य	डॉ. अरुण होता	36
4. कन्नड़ साहित्य	डॉ. टी.जी. प्रभाशंकर 'प्रेमी'	55
5. कश्मीरी साहित्य	डॉ. महाराजकृष्ण 'भरत'	64
6. कोंकणी साहित्य	डॉ. चंद्रलेखा डि'सौझा	69
7. गुजराती साहित्य	प्रो. दीपेंद्रसिंह जाडेजा	96
8. डोगरी साहित्य	ओम गोस्वामी	105
9. तमिल साहित्य	डॉ. बी. संतोषी कुमारी	129
10. तेलुगु साहित्य	डॉ. गुर्रमकोंडा नीरजा	142
11. नेपाली साहित्य	ज्ञानबहादुर छेत्री	151
12. बांग्ला साहित्य	प्रो. राम आह्लाद चौधरी	162
13. बोडो साहित्य	प्रो. स्वर्णप्रभा चैनारी	173
14. मणिपुरी साहित्य	डॉ. एलाङबम विजय लक्ष्मी थाङजम शितलजीत सिंह	188
15. मराठी साहित्य	डॉ. पी. विठ्ठल	199
16. मलयालम साहित्य	प्रो. बी. अशोक	207
17. मैथिली साहित्य	वैद्यनाथ झा	213
18. संताली साहित्य	डॉ. दुली हेम्ब्रोम	218

19. संस्कृत साहित्य	प्रो. अजय कुमार मिश्र	227
20. हिंदी आलोचना	डॉ. आलोक रंजन पांडेय	244
21. हिंदी कहानी	प्रो. अवध किशोर प्रसाद	252
22. हिंदी गद्य की अन्य विधाएँ	प्रो. त्रिभुवननाथ शुक्ल	269
23. हिंदी नाटक और रंगमंच	डॉ. अरुणाभ सौरभ	279
24. हिंदी पत्रकारिता एवं नव प्रौद्योगिकी साहित्य	डॉ. सी. जयशंकर बाबु	292
25. हिंदी बाल साहित्य	डॉ. सुरेंद्र विक्रम	307
26. हिंदी भाषाविज्ञान	डॉ. गोविंद स्वरूप गुप्त	342
27. स्त्री साहित्य	डॉ. विशाला शर्मा	347
संपर्क सूत्र		**358**

"हमारी भाषा हमारी स्वयं की प्रतिबिंब है। एक भाषा अपने बोलने वालों के चरित्र और विकास का सटीक प्रतिबिंब होती है।"

— सीजर चावेज़
(अमेरिकी नागरिक अधिकार कार्यकर्ता एवं विचारक)

प्रधान संपादक की कलम से

सत्यं ब्रुयात प्रियं ब्रुयात, न ब्रुयात सत्यम् अप्रियम् ।
प्रियं च नानृतम् ब्रुयात एष धर्मः सनातनः ।।

अर्थातः 'सत्य बोलो, प्रिय बोलो, किंतु अप्रिय सत्य मत बोलो। प्रिय असत्य भी मत बोलो। यही सनातन धर्म है।'

'मनुस्मृति' (4.138) का सारयुक्त यह श्लोक जितना मूल्यवान है, उतना ही विचारणीय और प्रासंगिक भी।

माँ के गर्भ में पल रहा भ्रूण हो या जन्मोपरांत बाह्य जगत से साक्षात्कार करता जीव, भीतर और बाहर वाणी का श्रवण करते हुए विकसित होता है। सर्वप्रथम प्रारंभिक परिवेश, प्राकृतिक परिवेश तत्पश्चात् सांसारिक परिवेश से वाणी ग्रहण करता बालक संपूर्ण यात्रा को जीता है। वाणी वैज्ञानिक रूप से मुख से निकली एक उच्चरित सार्थक ध्वनि मात्र ही नहीं है, वह व्यक्ति का असल परिचय भी कराती है। यह व्यक्ति के मानसिक एवं भावनात्मक स्तर को सिद्ध करने के साथ ही संबंधों का निर्धारण भी करती है।

कबीर दास ने कहा है –

ऐसी वाणी बोलिए, मन का आपा खोय,
औरन को शीतल करे, आपहुं शीतल होय।

अर्थात् वाणी हमेशा ऐसी बोलनी चाहिए जिससे सुनने वाले को सुख और आनंद का अनुभव हो। वाणी का सामने खड़े व्यक्ति पर प्रभाव/दुष्प्रभाव का ध्यान रखते हुए वाणी का इस्तेमाल करना चाहिए। वाणी व्यक्ति के व्यक्तित्व का ही नहीं अपितु उसके चिंतन का प्रतिबिंब भी होती है। सोचकर अथवा तरीके से कही गई बातें चाहे कितनी भी अप्रिय हों, वह व्यक्ति पर सकारात्मक प्रभाव ही आरोपित करती है, अन्यथा स्वराघात अथवा बलाघात के प्रयोगभर से बातें मूल भाव एवं मूल उद्देश्य से इतर अथवा वंचित हो जाती हैं। यथा– महाभारत का यह सशक्त उदाहरण जिसमें द्रौपदी के कड़वे वचन दुर्योधन के अंतःकरण में शूल समान जा गड़े और अंततः परिणाम विनाशकारी महाभारत के रूप में सामने आया। यह दृष्टांत दर्शाता है कि विनाशकारी युद्ध को वाणी के माध्यम से टाला या निष्क्रिय किया जा सकता है अथवा उसे भयानक रूप दिया जा सकता है। छोटे से छोटे और वैश्विक अनुबंध तक सभी एक मजबूत सकारात्मक वाणी का सफल परिणाम होते हैं। 'श्रीमद्भगवतगीता' में वाणी के तप के विषय में कहा गया है–

अनुद्वेगकरं वाक्यं सत्यं प्रिय हितं च यत्।
स्वाध्यायाभ्यसनं चैव वाङ्मयं तप उच्यते।। (17.15).

अर्थात् उद्वेग न करने वाला, सत्य, प्रिय और हितकारक भाषण तथा स्वाध्याय और अभ्यास वाणी–संबंधी तप कहलाता है।

इस वाक् तप की व्याख्या इस प्रकार है कि तप कोई आत्मपीड़ा का साधन

न होकर आत्मविकास एवं आत्मसाक्षात्कार की कल्याणकारी योजना है। अनुद्वेगकर वक्ता द्वारा प्रयुक्त शब्द ऐसे नहीं होने चाहिए जो श्रोता के मन में उद्वेग या उत्तेजना उत्पन्न करें और न ही अभद्र हों। वक्ता द्वारा प्रयुक्त किए गए शब्दों की उपयुक्तता की परीक्षा श्रोताओं की प्रतिक्रिया से होती है। अनेक लोग अपने जीवन में इस तप की कमी के कारण अपने जीवन में विफल होते हैं और अपने बंधुओं को खो देते हैं। उसका कारण मात्र वाणी की कटुता है। यह शब्दों की कठोरता और उनके विवेकशून्य विचारों की दुर्गंध है। सत्य, प्रिय और हितसत्य भाषण ही श्रेष्ठ है परंतु सत्यप्रिय वचन प्रिय और हितकारी भी हों, इन तीनों के होने पर ही वह वक्तृत्व वाङ्मय तप कहलाता है जो साधक के लिए कल्याणकारी सिद्ध होता है। आत्मोन्नति के रचनात्मक कार्य में वाक्शक्ति का सदुपयोग करना ही भगवान की दृष्टि में वाक्संयम अथवा वाङ्मय तप है।

अपने सशक्त माध्यम वाणी के द्वारा वक्ता की बौद्धिक पात्रता, मानसिक शिष्टता एवं शारीरिक संयम प्रकट होते हैं। यदि वक्ता अपने व्यक्तित्व के इन सभी स्तरों पर संगठित न हो तो उसकी वाणी में कोई शक्ति, कोई चमत्कृति नहीं होती। वाणी एक कर्मेंद्रिय है जिसके सतत् क्रियाशील रहने से मनुष्य की शक्ति का सर्वाधिक व्यय होता है। अतः वाणी के संयम के द्वारा बहुत बड़ी मात्रा में शक्ति का संचय किया जा सकता है जिसका सदुपयोग हम अपनी साधना में कर सकते हैं।

अतः वाणी को सुरक्षित रखना, अपव्यय करना, हितकारी और विवेकपूर्ण बनाना ही वाणी और व्यक्ति दोनों की सफलता का मानदंड है। हमारे धर्मग्रंथ कहते हैंः–

वाचं विना न धर्मः स्यात् वाचं विना न पारिजात।
वाचं विना न शास्त्रार्थ, वाचं विना न सुखम् अस्ति।।

अर्थात् वाणी के बिना धर्म नहीं, वाणी के बिना पारिजात नहीं, वाणी के बिना शास्त्रार्थ नहीं और वाणी के बिना सुख नहीं। ये सभी श्लोक यह बताते हैं कि वाणी का हमारे जीवन में एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। सत्य, प्रिय और हितकारी वाणी हमें सफलता की ओर ले जाती है।

प्रस्तुत 'वार्षिकी' में देशभर की भाषाओं के वार्षिक सर्वेक्षण पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे हर्ष का अनुभव हो रहा है। वर्षभर की समस्त विधाओं का संकलन, अध्ययन तथा मंथनोपरांत श्रमसाध्य लेखन निश्चय ही एक दुरूह कार्य है। लेखकीय अवदान करने वाले समस्त रचनाकारों को हृदय से साधुवाद एवं शुभकामनाएँ।

आपके विचारों एवं सुझावों का स्वागत है।

(प्रो.सुनील बाबुराव कुळकर्णी 'देशगव्हाणकर')

संपादकीय

मनुष्य जन्म के साथ ही अपने परिवार, समाज और आस–पास के परिवेश से विविध संस्कार ग्रहण करता है जो उसके शारीरिक, मानसिक और समग्र व्यक्तित्व के विकास के मूल उपादान होते हैं। ऐसे ही संस्कारों में से एक है भाषा संस्कार जो उसको पूरे समाज से विचारात्मक, भावात्मक रूप से और सर्वजन के प्रति आत्मीयता से जोड़ता है। कोई भी मनुष्य भाषा संस्कार के अभाव में जीवन के परिवेश की व्यापकता को आत्मसात नहीं कर सकता। और बात जब भारतीय संस्कृति में जन्मे व्यक्ति की हो तो कोई भी भारतीय केवल अपनी मातृभाषा से ही नहीं जुड़ता, अपितु अपने पारिवारिक, सामाजिक और भौगोलिक परिवेश के कारण दूसरी भारतीय भाषाओं और बोलियों को और साथ ही उनके संस्कारों को भी सायास या अनायास ही ग्रहण करता चला जाता है।

जब गुरु रवींद्रनाथ टैगोर लिखते हैं– "पंजाब सिंध गुजरात मराठा द्राविड़ उत्कल बंगा" तो भारत की विविध भाषाओं और बोलियों को बोलने वाले सभी भारतीय प्रांतीय और भाषाई परिधियों के परे राष्ट्रीयता और देशभक्ति के एक ही भाव से उद्भासित होकर एक ही पंक्ति में समभाव से स्थित और स्थिर दिखाई देते हैं। भारतवर्ष में पिछले हजारों सालों से कई सौ भाषाएँ/बोलियाँ और उनकी लिपियाँ पनपीं, विकसित हुईं' और लुप्त भी हुईं, किंतु भारत की सांस्कृतिक, भाषिक और तात्विक एकता ने कई बार विविध भाषिक–संस्कृतियों से जुड़े लाखों करोड़ों लोगों को अनेकों बार एक ही भाव/विचार–आंदोलनों से संपृक्त किया। फिर चाहे वह भक्ति आंदोलन हो या स्वतंत्रता की देशव्यापी चेतना; और ऐसे लोकजागरण को व्यापक आधारभूमि देने का कार्य पारस्परिक संस्कृति की वाहिका हमारी समस्त भारतीय भाषाओं ने ही किया। भारतीय भाषाओं की इस पारस्परिक संबद्धता को हमारे प्रबुद्ध विचारकों ने पहचाना और हिंदी के संपर्क–भाषा रूप को मध्य में रखते हुए इन सभी भाषाओं के मध्य समरसता और समन्वय की अनिवार्यता को सुदृढ़ करने हेतु सांविधानिक प्रावधान भी किए।

ऐसे ही सांविधानिक प्रावधानों के उत्तरदायित्व को निदेशालय की वार्षिकी पत्रिका वर्ष 1970 से वहन करती आ रही है। संविधान–स्वीकृत भारतीय भाषाओं में वर्ष–दर–वर्ष प्रकाशित साहित्यों का सर्वेक्षण भाषा–शोधार्थियों/अध्येताओं को

इस पत्रिका के माध्यम से सुलभ होता रहा है। आज भी भारतीय भाषाओं के साहित्य–इतिहास को तथ्यात्मक और आंकड़ों के रूप में अगर जानना हो तो वार्षिकी पत्रिका के पिछले प्रकाशनों के सन्दर्भ ग्रहण करना अपरिहार्य हो जाता है। भाषाओं के साथ–साथ भाषा की मूल लिपि की वर्तमान स्थिति, उसके वर्धन–विकास में गौरव का आभास और उसके क्षरण अथवा विलुप्ति के प्रति गंभीर चिंता भी इन सर्वेक्षण आलेखों में यथासमय जाहिर होती है। इतना ही नहीं, इनके पीछे के भौगोलिक/सामाजिक/राजनीतिक/सांस्कृतिक कारणों का सच भी हमारे समक्ष अनावृत होता है। आज की स्थिति देखें तो देश भर में कई बोलियाँ खासतौर से सुदूर पूर्वोत्तर के आदिवासी क्षेत्रों, उत्तर प्रांत के पहाड़ी क्षेत्रों आदि में अपना अस्तित्व धीरे–धीरे खो रही हैं। एक समय गरिमामयी स्थिति को प्राप्त कश्मीरी भाषा की प्राचीन शारदा लिपि, जिसका नाम कश्मीर राज्य की आराध्या देवी शारदा के नाम पर हुआ, जिसका व्यवहार ईसा की दसवीं शताब्दी से प्रारंभ होता है, जो हिमाचल प्रदेश, पंजाब और कश्मीर की भाषाओं का लेखन–आधार रही, धीरे–धीरे विलुप्ति के कगार पर आ गई है। ललद्यद, रूपा भवानी, नुन्द ऋषि की आध्यात्मिक रचनाएँ जो भारत के भक्ति साहित्य का गौरवमयी हिस्सा हैं, शारदा लिपि में ही रची गईं हैं। किन्तु आज शारदा लिपि के नाम से भी विरले लोग परिचित हैं, यह अनुभूति ही हताश करने वाली है।

सूचना–क्रांति के आपाधापी वाले इस माहौल में जहाँ गंभीर भाषा–चिंतन निचले सोपान पर सरकता जा रहा है, ऐसे में भारतीय भाषाओं के दो प्रबुद्ध, सजग–सुदृढ़ विचारक साहित्यकारों का साहित्याकाश से विलीन हो जाना समस्त भारतीय साहित्य जगत के लिए अपूरणीय क्षति है। बहुविध सृजनात्मक आयामों की रचनाकार प्रो. निर्मला जैन हिंदी आलोचना के क्षेत्र में अपनी प्रखर और विशिष्ट आलोचनात्मक दृष्टि के लिए बहुचर्चित और समवर्ती एवं परवर्ती पीढ़ी के लिए अनुकरणीय रहीं। वही बांग्ला और अंग्रेजी भाषा के कवि–आलोचक तथा साहित्येतर विषयों के लेखक आजू मुखोपाध्याय ने देश–विदेश में अनेक पुरस्कार और सम्मान प्राप्त किए और अपनी सुचिंतित रचनाओं से समस्त भारत को गौरवान्वित किया। इन दो महान विभूतियों के अवसान से पैदा हुई रिक्ति को भरना संभव नहीं हैं। निदेशालय का वार्षिकी परिवार अपनी हार्दिक संवेदनाएँ व्यक्त करते हुए दिवंगत आत्माओं को श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

इस वर्ष भी वार्षिकी का यह अंक हमारे पाठकों की आशा पर खरा उतरेगा, इसी विश्वास के साथ,

(डॉ. अनुपम माथुर)

1

असमिया साहित्य

डॉ. रीतामणि वैश्य
सह–आचार्य, हिंदी विभाग, गुवाहाटी विश्वविद्यालय

डॉ. अनामिका राजवंशी
सहायक आचार्य, असमिया विभाग, गुवाहाटी विश्वविद्यालय

वर्ष 2024 असमिया साहित्य के लिए महत्त्वपूर्ण रहा है क्योंकि इसी वर्ष असमिया भाषा को 'शास्त्रीय भाषा' का दर्जा मिला जो असमिया भाषा की प्राचीनता एवं समृद्धि को सिद्ध करता है। इससे निश्चित रूप से असमिया भाषा और साहित्य को एक नयी पहचान मिली है। यह वर्ष इस असमिया साहित्य, परंपरा और आधुनिकता के बीच एक सुंदर तालमेल से गुजरा है। लेखकों की नयी पीढ़ी ने साहित्य की विविध विधाओं में विभिन्न शैलियों का नवीन प्रयोग कर असमिया साहित्य को और अधिक सशक्त बनाया है। इस साहित्यिक यात्रा में संस्कृति की विरासत और समकालीन समाज के विभिन्न मुद्दों से संबंधित जानकारी प्राप्त होती है।

इन पहलुओं को ध्यान में रखते हुए इस वर्ष प्रकाशित असमिया साहित्य की चर्चा की गई है। हालाँकि असमिया साहित्य का एक विशाल क्षेत्र है और यहाँ इस वर्ष प्रकाशित सभी पुस्तकों की चर्चा करना संभव नहीं है। इस आलेख में वर्ष 2024 में प्रकाशित कुछ महत्त्वपूर्ण ग्रंथों के आधार पर इस वर्ष के असमिया साहित्य पर एक सामग्रिक दृष्टि डालने का प्रयास किया गया है। इस आलेख के लेखन में मूल ग्रंथों के साथ कई लेखकों एवं प्रकाशकों से वार्तालाप किया गया है तथा समाचार–पत्र, पत्रिकाओं तथा इंटरनेट पर उपलब्ध सामग्रियों से मदद ली गई है। निम्नलिखित साहित्यिक विधाओं पर यह आलेख केंद्रित है–

(अ) कविता
(आ) निबंध संकलन
(इ) उपन्यास
(ई) कहानी–संकलन
(उ) समीक्षात्मक ग्रंथ

(ऊ) यात्रा वृत्तांत

(ऋ) आत्मकथा

(ए) अनूदित ग्रंथ

कविता

(क) विगलित प्रार्थनाः समीर ताँती

कवि समीर ताँती को उनके काव्य–संग्रह 'फरिङबोरे बाटर कथा जाने' (फतिंगा रास्ते की बातें जानते हैं) के लिए वर्ष 2024 के साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। नवंबर 2012 में समीर ताँती को छगनलाल जैन साहित्य पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। उन्हें विलियम्सन मैगर शैक्षिक न्यास द्वारा वर्ष 2012 के लिए 'असम उपत्यका साहित्य पुरस्कार' (असम घाटी साहित्य पुरस्कार) से भी सम्मानित किया गया था।

समीर ताँती की पहली कविता सन् 1979 में नागरिक पत्रिका में प्रकाशित हुई थी। अब तक समीर ताँती की कविता, समीक्षा, गद्य साहित्य के संकलन, कहानी–संकलन (दो), अफ्रीकी कविता और जापानी प्रेम कविता के दो अनूदित ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं। उनके उल्लेखनीय काव्य–संकलनों में 'युद्धभूमिर कविता' (युदधभूमि की कविता,1985), 'शोकाकुल उपत्यका' (शोकाकुल घाटी, 1993), 'समय शब्द स्वप्नो' (समय शब्द सपना, 1996) और 'कदम फुलार राति' (कदम्ब खिलने की रात, 2001) शामिल हैं।

'बिगिलित प्रार्थना' (विगलित प्रार्थना) उनका हाल ही में प्रकाशित काव्य–संकलन है जिसमें अकेलेपन, प्रतिकूलता और सामाजिक परिवर्तन के विषयों की खोज की गई है । इस संकलन की कविताओं में शुभ की प्रत्याशा और रोशनी की तलाश की यात्रा को विशेष स्थान मिला है। 'छदिन मोर ओचरलै आहे' (छह दिन मेरे पास आते हैं) शीर्षक कविता में भूखे बच्चों के संदर्भ में निर्मम करुणा की छवि झलकती है। कवि कहते हैं कि छह दिन के सपने की खोज में छह लड़के और छह लड़कियाँ पेट में गमछा बाँधकर कवि के पास आते हैं–

'छदिन मोर ओचरलै आहे छटा लॉरा आरु छजनी छोवाली
सपोन बिचारि
पेटत पानीगामोचा बांधि।' (सातसरी, पृ०–107, 20वाँ वर्ष, जनवरी, 2025)

'मजियात मोर सौंवरणि' (फर्श पर मेरी यादें) शीर्षक कविता में व्यतिक्रमधर्मी बिंबात्मकता के द्वारा अलौकिक छवि प्रस्फुटित हुई है। कवि यादों के सहारे फर्श की तह तक यात्रा करते हैं। फर्श की गहराई में उन्हें कई खोपड़ियाँ, कंकाल, हड्डी–मुंडों के चूर्ण मिलते हैं। कवि को अनुभूत होता है कि वहीं कहीं अंधेरे सुनसान कब्रिस्तान में कवि ही तो नहीं थे–

'मइ सौंवरणिर आँत धरि

मजियार तललै यात्रा करौँ
तलिरो तलित
अजस्र दिनर लाओखोला, जँका, हाड़–मूरर गुड़ि तारे माजर कोनोबाखिनित
मयेइ आचोलौँ नेकि
एंधारे गरका एटा निजान कबरथली।' (सातसरी, पृ०–107, 20 वाँ वर्ष, जनवरी, 2025)

इस प्रकार वे सौंदर्य दृष्टि से सामाजिक जीवन के विकृत और नग्न सत्य को सामने लाने का प्रयास करते हैं जो उनकी कविता की गहरी भावना को दर्शाता है।

(ख) आजिओ आहिछिल अरण्यखनः सत्यजित गगै

कवि सत्यजित गगै की कविताएँ सरल, स्वदेशी और सीधी हैं। कवि असम के आकाश–हवा, नद–नदी, पहाड़–जंगल, खेत में पाए जाने वाले तत्त्वों को बिंबों, प्रतीकों एवं रूपकों में ढालकर पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हैं। हाल ही में पोएट्री विदाउट फियर प्रकाशक से पर्यावरण के मुद्दों पर लिखित उनका 'आजिओ आहिछिल अरण्यखन' (जंगल आज भी आया था) शीर्षक काव्य–संकलन प्रकाशित हुआ है।

ऐसा लगता है कि इस संकलन की कविताओं में कवि आधुनिक तकनीक के प्रवेश, औद्योगिकीकरण और मनुष्य की जीवन–शैली में आए बदलाव की वजह से प्रकृति को हुए नुकसान के बारे में बताना और प्राणियों के विलुप्त होने की स्थिति आने से पहले उसके प्रति आगाह करना चाहते हैं। कवि इस खतरनाक और प्रतिकूल पर्यावरणीय संकट के कारणों और कारकों की ओर पाठकों का ध्यान आकर्षित करते हैं। 'एइ चहरत बरशुण नाइ' (इस शहर में बारिश नहीं होती) शीर्षक कविता में कवि कहते हैं कि जे. सी. बी. के अत्याचार में घायल पहाड़ों की चीत्कार इमारतों के काँचों से जा टकराती है–

'जे. सी. बी.र अत्याचारत
क्षत–बिक्षत पाहारर चिञरबोर
अट्टालिकार काँचत
ठेका खाइछे।' (पोएट्री विदाउट फियर, तृतीय वर्ष, चतुर्थ संख्या, फरवरी–अप्रैल)

'नखेरे रॉदे लिखिछे' (धूप ने नाखून से लिखा है) शीर्षक कविता में कवि कहते हैं कि बड़े पैमाने पर विलुप्ति की छवि सामने तैर रही है–

'ब्यापक बिलुप्तिर निर्मोह छबिबोर
ओपङि आछे समुखत।' (पोएट्री विदाउट फियर, तृतीय वर्ष, चतुर्थ संख्या, फरवरी–अप्रैल)

कवि ने विभिन्न स्थितियों में पेड़ को प्रस्तुत करके उसे अर्थपूर्ण बनाया है। 'गछक कॉलो' (पेड़ से कहा), 'गछजोपाइ एतिया हात मेलि दिछे' (पेड़ ने अब हाथ

फैला दिए हैं), शुकान माटित शितान लै' (सूखी जमीन पर सिरहाना देना) आदि कविताओं को पढ़कर कवि की सचेतनता, शब्दबोध, अतिकथन विरोधी सावधानी को देखा जा सकता है। पारंपरिक अभिव्यक्ति शैली, सतंहीपन, प्रत्यक्ष वाणी–निक्षेपण से बचती ये कविताएँ अर्थपूर्ण हैं। कवि सत्यजित गगै ने इस तरह के प्रयोग से ही अपनी कविताओं की रचना की है।

(ग) अन्य संकलन

आलोच्य काव्य–संग्रहों के अलावा इस साल लोकप्रिय हुए अन्य काव्य–संकलन संग्रह हैं– अभिजित गगै का 'अन्य एटा दिनार बाबे' (एक दूसरे दिन के लिए), साबित्री शइकीया का 'ढपलियाइ आहिल चकुबोर' (दौड़ती आईं आँखें), डेइजी राणी देवी का 'चन्दन तोमार सुबासेरे' (चंदन तुम्हारी खुशबू से) आदि।

निबंध–संकलन

लग पाम कॉरबात एदिन : समीर ताँती

आमि बुक्स द्वारा प्रकाशित समीर ताँती ने अपनी गद्य–रचना 'लग पाम कॉरबात एदिन' (कभी कहीं तुमसे मुलाकात होगी) में विभिन्न विचारों से गद्य को समृद्ध किया है। समीर ताँती की 'लिरिकल' और 'क्रिटिकल' रचनाओं का संग्रह है 'लग पाम कॉरबात एदिन'। उन्होंने कुल उनतीस निबंधों में सामाजिक, राजनीतिक और विविध विषयों को समेटा है। इनमें से कई निबंधों में काव्यात्मक आभास मिलता है। निबंधों में ताँती के अनुभव, बोध और तर्कसंगतता का प्रमाण मिलता है। वे स्मरण के सहारे अतीत का मंथन करते हैं। मानवता की गहन खोज और शुभ की प्रत्याशा ने निबंधों को अलग मर्यादा दी है। कविता से पुष्ट इन निबंधों में ताँती ने अपने कई मत भी रखे हैं। उन्होंने 'सार्क लेखक संमिलन' (सार्क लेखक सम्मेलन), 'भारतर आदिम चित्रकला' (भारत की आदिम चित्रकला) जैसे विभिन्न निबंधों को एक साथ संकलित कर विषय को विविधता प्रदान की है। विभिन्न विषयों की सुंदर प्रस्तुति से पाठक सहज ही इस संकलन के प्रति आकर्षित होते हैं। खासकर 'भारतर आदिम चित्रकला' इस संकलन की एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है।

उपन्यास

नेत्री : जुरी बरा बोरगोहाञि

जुरी बरा बोरगोहाञि असमिया साहित्य जगत की एक उपन्यासकार एवं निबंधकार हैं। उनका 'नेत्री' उपन्यास संघर्षरत महिला कैडरों का एक महत्त्वपूर्ण दस्तावेज है। यहाँ उपन्यासकार ने मिनति हाजरिका, मेनी, नीरा, सत्यबती, पमिली आदि कई उत्पीड़ित और प्रताड़ित महिलाओं के दर्द और जीवनभर के संघर्ष की कहानी बताने की कोशिश की है। एक समय ऐसा आया कि संगठन में सक्रिय रूप से काम करने वाली कई महिला कैडरों को उपेक्षा का सामना करना पड़ा, उनकी

पदोन्नति बाधित हुई। क्या यह षड्यंत्र था? क्या संगठन में अच्छे नेताओं की कमी थी? इत्यादि ऐसे कई प्रश्न 'नेत्री' के पन्नों पर फैले हुए हैं। ऑपरेशन ऑल क्लियर के बाद जिन महिला कैडरों को सेना गिरफ्तार कर असम ले आई थी, क्या वे समाज में एक स्वस्थ जीवन जी पाईं? या उनको भी एक लंबा संग्राम करना था? लेखिका कहती हैं कि कैसे कोई देश इतना क्रूर बन सकता है। जिस देश में एक सौ चालीस वर्षों से कोई सैन्य अभियान नहीं हुआ है, जिस देश में कई शताब्दियों पहले नरहत्या पर प्रतिबंध लगा दिया गया था, जहाँ कोई मनुष्य जंगली पक्षी को भी नहीं मारता और कृषि भूमि को नष्ट करने वाले जंगली सूअरों को केवल मुँह की आवाज से भगा दिया जाता है, उस देश में इतनी गोलियाँ, मोर्टार कैसे फट गए? इतने लोगों के सीने में गोलियाँ कैसे घुसीं? नन्हें बच्चे भी नहीं बच पाए। घने हरे पहाड़ खून से कैसे रंगे गए? शायद आक्रमण के लिए राजा ने खुद आकर शिविर को देखा था–

'केनेकै नृशंस हॉल सेइखन देश यिखन देशत एश चल्लिश बछर धरि कोनो मिलिटेरी अपारेचन होवा नाछिल! सेइ देशत बहु शतिकार आगतेओ नरहत्या निषिद्ध आछिल। बनरीया चराइ एताओ कोनो मानुहे काहानिओ नामारे। पथारर खेति नष्ट करा जाक जाक बनगाहरिक यिखन देशे केवल हुराइ दि आँतराइ दिये। सेइखन देशत केनेकै इमानबोर गुली, मर्टार, बोफस फुटिल। इमानगाल मानुहर बुकुत गुली सोमाल? कणमानि शिशु पर्यंत बाचि नगॉल। तेजेरे राङली है गॉल डाठ सेउजीया निर्जन पाहारबोर? किजानि रजाइ निजेइ आहि केंपर जोख–माख करछिल। आक्रमणर बाबे।' (नेत्री, पृ०–142)

इस प्रकार महिला कैडरों के संघर्ष की कहानी 'नेत्री' के जरिए जुरी बरा बोरगोहाञि ने असम के इतिहास के संघर्ष और राष्ट्रप्रेम को अभिव्यक्ति दी है। इस इतिहास ने असम के सामाजिक और राजनीतिक जीवन को प्रभावित किया और अलगाववाद को जन्म दिया। लेखक का मानना है कि जिन लोगों की कहानियाँ इतिहास में नहीं लिखी जातीं, उनकी कहानियाँ उपन्यास में ही लिखी जानी चाहिए क्योंकि उपन्यास सामाजिक इतिहास का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा है।

(ख) जलज : जुरी बरा बोरगोहाञि

जुरी बरा बोरगोहाञि के नवीनतम उपन्यास 'जलज' में माजुली के एक दशक के लंबे इतिहास को शामिल किया गया है। नंदिनी माजुली के एक परिवार की बेटी है। उसका एक खुशहाल परिवार है। नंदिनी सांस्कृतिक रूप से बहुत सचेत युवती है जो गाँव तथा कॉलेज में भी सत्रीया नृत्य से लेकर रासलीला में राधा की भूमिका अदा करती है। जब नंदिनी रास में राधा की भूमिका अदा करती थी तो उसी के गाँव के शर्मीले स्वभाव के द्वीपन ने कृष्ण का अभिनय किया था। द्वीपन जैसा शर्मीला लड़का, जो किसी लड़की से आँखों से आँखें मिलाकर बात नहीं करता था, घर से

बाहर किसी से बात नहीं करता था, यहाँ तक कि पड़ोसी होने पर भी नंदिनी से भी दूर–दूर रहता था; अचानक उसका एक रात हाथ में बंदूक उठाकर घर से निकल जाना सबको हैरानी में डाल देने वाली खबर थी। जब गाँव के कई नौजवान द्वीपन के रास्ते पर चलकर घर छोड़ गए, तब माजुली में भयंकर अंधेरा उतर आता है। रास, भाओना सब छोड़कर माजुली के लोग घर के बंद कमरे में बैठ गए। शर्मीला लड़का बहुत कम समय के भीतर ही संगठन का शीर्ष नेता बन गया था पर उसने गाँव आना छोड़ दिया था। बहन की शादी के बाद भी नंदिनी की शादी नहीं हुई थी, क्योंकि द्वीपन के साथ रास लीला में अभिनय करने के बाद नंदिनी बदनाम हो गई थी। 'जलज' केवल नंदिनी और द्वीपन की कहानी नहीं है। इसमें माजुली के एक दशक की कई घटनाएँ छिपी हुई हैं।

(ग) गगैदेउ दगैदेउ : नीलाक्षी चलिहा गगै

तिनचुकीया शहर में त्वचा विशेषज्ञ के रूप में सेवारत नीलाक्षी चलिहा गगै अपने स्कूल के दिनों से साहित्य की चर्चा करती आई हैं। उनकी कहानियाँ और कविताएँ असम के अधिकांश समाचारपत्रों में प्रकाशित हुई हैं। सन् 2019 में 'बिंदु साहित्य पुरस्कार', सन् 2022–23 में असम साहित्य सभा के 'बसंती बरदलै पुरस्कार' और सन् 2018 में तिनचुकीया जिला कवि सम्मेलन के 'प्रज्ञा पुरस्कार' से सम्मानित नीलाक्षी चलिहा गगै ने इस उपन्यास में इतिहास में उपेक्षित कुछ घटनाओं को मर्मस्पर्शी तरीके से चित्रित किया है। उपन्यास में असम में ब्रिटिश शासन के आक्रामक विस्तार और उसके दूरगामी कुपरिणाम का निपुणता से चित्रण किया गया है।

(घ) बोधिद्रुमर सार : दिलीप बरा

'बोधिद्रुमर सार' (बोधिद्रुम का सार) सन् 2006 में पूर्वांचल प्रकाश द्वारा प्रकाशित उपन्यास 'कलिजार आइ' का दूसरा भाग है। 'चिन्मय उरफे रातुल महंतर कथारे .. ...' (चिन्मय उर्फ रातुल महंत की कथा से) शीर्षक के साथ पहले अध्याय की शुरुआत करते हुए यह उपन्यास 'मोर कथा' (मेरी बात) और 'शेष कथा' (अंतिम बात) शीर्षक के साथ समाप्त होता है। बीच में दो से चौंतीस तक कुल तैंतीस अध्याय हैं। उपन्यास के पृष्ठों की संख्या चार सौ चौबीस है।

(ङ) बहुब्रिही : फूल गोस्वामी

एक कथाकार के रूप में माने जाने वाले फूल गोस्वामी का उपन्यास 'बहुब्रिही' स्वतंत्र भारत में उच्च जाति की महिलाओं की पीड़ा और गरीबी का एक दुखद चित्र प्रस्तुत करता है। वाणी मंदिर से प्रकाशित इस उपन्यास की कथा के साथ–साथ चरित्र भी सहज गति से आगे बढ़ते हैं।

(च) अन्य उपन्यास :

आलोच्य उपन्यासों के अतिरिक्त रंजीत पाटगिरी का 'जेउरा' (बाड़ा), पद्‌मिनी

गगै का चाओफा, रास्ना पलक का 'इपार सिपार' (इस पार उस पार) आदि इस वर्ष के अन्यतम उपन्यास हैं।

कहानी–संकलन

(क) बैषम्यबाद : गीताली बरा

गीताली बरा वर्तमान असमिया साहित्य की सर्वाधिक सशक्त कथाकारों में से एक हैं। चौदह कहानियों के 'बैषम्यबाद' (भेदभाव) शीर्षक संग्रह में प्रत्येक कहानी एक अनूठी शैली का खुलासा करती है। उनकी 'अकस्मात् सौरभ कुमार चलिहा' (अचानक सौरभ कुमार चलिहा), 'बैषम्यबाद' जैसी कहानियों में पाठक पात्रों की मनोवैज्ञानिक दुनिया में विचरण करते हैं। कहानियों में मनुष्य का मनोवैज्ञानिक चित्रण नयी बात नहीं है पर गीताली बरा की कहानियों में एक व्यापक अमूर्तता मिलती है। उनके पात्र एक अतियथार्थवादी घेरे में घूमते रहते हैं। बरा की कहानियों में जादुई यथार्थवाद का विशेष प्रभाव है। एक निश्चित वाद का उपयोग करके कहानी लिखने से कहानियाँ नीरस बन जाती हैं लेकिन उनकी कहानियाँ अलग हैं। उन्होंने एक अनूठी शैली में जादुई यथार्थवाद का प्रयोग किया है जिससे पाठक कहानियों के साथ एक आंतरिक संबंध स्थापित कर लेते हैं।

(ख) रङा बाछ नीला चाइकेल : कुल शइकीया

यशस्वी कथाकार कुल शइकीया द्वारा 'रङा बाछ नीला चाइकेल' (लाल बस नीली साइकिल) शीर्षक कहानियों के संग्रह में कहानीकार की विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित कुछ कहानियों के साथ–साथ कुछ नयी कहानियाँ भी शामिल हैं। कहानियों का चयन करते समय अनुभवों की विविधता को केंद्र में रखा गया है।

(ग) आने– डॉ. जुरी दत्त

डॉ. जुरी दत्त साहित्य समीक्षा और अनुवाद के क्षेत्र में एक परिचित नाम है। 'आने' उनकी चयनित दस कहानियों का संकलन है। इन कहानियों में विषय वैविध्य है। ये कहानियाँ मानवता की सार्वभौमिक सुंदरता और भावनाओं को दर्शाती हैं। कठिन प्रतीत होने वाले विषय को भी कथाकार अपनी कहानी में सहज रूप देने में सक्षम हुए हैं जिससे पाठकों को भ्रमित नहीं होना पड़ता। सहज भाषा में लिखी गई उनकी इन कहानियों में मानवीय संबंध, जनजातीय जीवन शैली और पात्रों की विशिष्टता स्पष्ट रूप से दृष्टिगत होती है।

(घ) नतुनर गल्प– अभिजित गगै और प्रियम डी ज्योत्स्ना

पूर्वांचल पब्लिकेशंस द्वारा प्रकाशित यह ग्रंथ तीस कथाकारों की तीस कहानियों का संकलन है। इस संग्रह के अंत में सभी कहानीकारों का परिचय दिया गया है। कहानी–संकलन में कुल दो सौ सतासी पृष्ठ हैं।

(ङ) अन्य संकलन :

मणिका देवी का 'साङ', रातुल चंद्र भट्टाचार्य का 'शताब्दीर आबेलि' (सदी की संध्या) आदि इस वर्ष के अन्य प्रकाशित कहानी–संकलन हैं।

समीक्षात्मक ग्रंथ

(क) पुनर पठन आरु अन्यान्य प्रबंध : डॉ. परी हिलैदारी

डॉ. परी हिलैदारी एक अच्छी लेखिका और शिक्षाविद् हैं। वे गुवाहाटी के संदिकै कॉलेज के अंग्रेजी विभाग में सह–प्राध्यापक हैं। अंग्रेजी लेखिका मामाङ दाइ के 'The Legends of Pensam' के असमिया अनुवाद ग्रंथ 'दाँति पारर मानुह' के लिए उन्हें वर्ष 2021 का साहित्य अकादेमी का अनुवाद पुरस्कार प्रदान किया गया है। 'पुनर पठन आरु अन्यान्य प्रबंध' (पुनः पठन एवं अन्यान्य निबंध) शीर्षक निबंध–संकलन में निबंधकार के 'सातसरी', 'गरियसी', 'प्रकाश' आदि असमिया पत्रिकाओं में प्रकाशित निबंध संकलित किए गए हैं। इन निबंधों में साहित्य के अध्ययन में आलोचनात्मक दृष्टिकोण द्वारा पुनः पठन को महत्त्व दिया गया है।

(ख) भाषा–साहित्य–सांस्कृतिक अध्ययनः प्राध्यापक कनक चंद्र चहरीया और डॉ. रेखा राणी देवी

'भाषा–साहित्य–सांस्कृतिक अध्ययन' शीर्षक यह ग्रंथ ज्योति प्रकाशन द्वारा प्राध्यापक कनक चंद्र चहरीया और डॉ. रेखा राणी देवी के संकलन और संपादन में गुवाहाटी विश्वविद्यालय के असमिया विभाग से प्रकाशित 'अन्वेषण' शीर्षक पत्रिका के पहले संस्करण से चौदहवें संस्करण (1994–2022) के आलेखों को एकत्र करके प्रकाशित किया गया है। इस ग्रंथ में असमिया भाषा और साहित्य पर कई मूल्यवान आलेख शामिल हैं।

(ग) शंकरदेव साहित्य अध्ययन : प्राध्यापक कनक चंद्र चहरीया

'शंकरदेव साहित्य अध्ययन' शंकरदेव के साहित्य पर निबंधों का एक महत्त्वपूर्ण संग्रह है। इस ग्रंथ को कनक चंद्र चहरीया द्वारा संकलित और संपादित किया गया है और चंद्र प्रकाश द्वारा प्रकाशित किया गया है।

(घ) येतिया छपाशाल नाछिल : प्राध्यापक बिभा भराली और डॉ. बनानी चक्रवर्ती

'येतिया छपाशाल नाछिल' (जब प्रेस नहीं था) पुस्तक प्राध्यापक बिभा भराली और डॉ. बनानी चक्रवर्ती के संपादन में बांधव द्वारा प्रकाशित है। यह ग्रंथ मुख्य रूप से मध्ययुगीन असमिया पांडुलिपियों, शिलालेखों और अन्य दस्तावेजों के उद्धरणों का संकलन है।

(ङ) अंतर्दृष्टि : प्राध्यापक कमालुद्दीन अहमद

कमालुद्दीन अहमद एक कवि, समीक्षक, अनुवादक और प्राध्यापक हैं। वर्तमान में वे गुवाहाटी विश्वविद्यालय के असमिया विभाग में प्राध्यापक हैं। उनका यह ग्रंथ

असमिया साहित्य की समझ के लिए महत्त्वपूर्ण है।

(च) सांस्कृतिक जगतलै शंकरदेव आरु माधवदेवर अवदान : डॉ. दयानंद पाठक, डॉ. बिमल मजूमदार और डॉ. प्रणव प्रसाद बरा

श्रीशंकरदेव सांस्कृतिक समाज प्रतिवर्ष पुरी के श्रीमंत शंकरदेव नामघर परिसर में महत्त्वपूर्ण कार्यक्रमों के साथ दो दिवसीय 'पुरी महोत्सव' मनाता आया है। यह संस्था धार्मिक और आध्यात्मिक कार्यक्रमों के साथ–साथ शैक्षिक पहलू को आगे बढ़ाने के लिए वर्ष 2014 से राष्ट्रीय स्तर की संगोष्ठियों का आयोजन कर रही है। इस संगोष्ठी में प्रस्तुत किए गए आलेखों को ग्रंथ के रूप में प्रकाशित किया जाता है और पुरी महोत्सव में उनका लोकार्पण होता है। हर साल की तरह इस साल यानी वर्ष 2024 में भी सात सौ अठानवे पृष्ठों की 'सांस्कृतिक जगतलै शंकरदेव आरु माधवदेवर अवदान' (सांस्कृतिक जगत के लिए शंकरदेव और माधवदेव का अवदान) शीर्षक ग्रंथ में चौरासी चयनित आलेख प्रकाशित किए गए हैं। निस्संदेह इस ग्रंथ को श्रीशंकरदेव सांस्कृतिक समाज (पुरी परियोजना) की शैक्षणिक उपलब्धियों में से एक कहा जा सकता है।

(छ) चिठिर कथारे पत्र साहित्यर सुबास : उपेंद्र बरकटकी

'चिठिर कथारे पत्र साहित्यर सुबास' (चिट्ठी की बातों से पत्र साहित्य की सुगंध) शीर्षक ग्रंथ पत्रों के आधार पर तैयार की गई एक जीवनी है। हम इसे बीसवीं शताब्दी के असम के सामाजिक–इतिहास का एक मूल्यवान ग्रंथ भी कह सकते हैं। इस ग्रंथ से कई प्रमुख हस्तियों की जीवन–शैली और उनकी विभिन्न अभिव्यक्तियों के माध्यम से उस समय के समाज को उजागर किया गया है। ग्रंथ में उनकी देशभक्ति देखी जा सकती है। बरकटकी की वर्णन–शैली और भाषा सरल और गतिशील है।

(ज) बिवर्तनर रूपरेखात असमिया चुटिगल्प : डॉ. अनु राणी देवी और अर्णव शर्मा

'बिवर्तनर रूपरेखात असमिया चुटिगल्प' (विकासक्रम में असमिया कहानियाँ) 680 पृष्ठों का एक ग्रंथ है जिसका प्रकाशन पूर्वांचल प्रकाशन ने किया है। दो भागों में विभाजित निबंधों के इस संग्रह के पहले भाग में असमिया कहानियों के प्रारंभिक काल से इक्कीसवीं सदी की कहानियों पर दृष्टि डाली गई है। दूसरे खंड में, उनसठ लेखकों द्वारा लिखे गए निबंधों द्वारा उनसठ असमिया कथाकारों की कहानियों का सूक्ष्म विश्लेषण किया गया है।

(झ) असमिया चुटिगल्प : उत्तरणर नतुन अध्याय : दीपज्योति बरा और चिकमी बरा

'असमिया चुटिगल्प : उत्तरणर नतुन अध्याय' (असमिया कहानियाँ : विकास का नया अध्याय) शीर्षक ग्रंथ असमिया साहित्य अध्ययन के क्षेत्र में एक महत्त्वपूर्ण

उपलब्धि है। इस ग्रंथ में असमिया कहानियों का विकास, स्वातंत्र्योत्तर काल की कहानियों एवं विभिन्न कथाकारों की कहानियों में विषयों और बनावट की विविधताओं को शामिल किया गया है। बनालता, गुवाहाटी द्वारा प्रकाशित इस संग्रह में कुल छत्तीस समीक्षात्मक आलेख हैं जिन्हें तीन खंडों में विभाजित किया गया है। रामधेनु युग के परवर्ती समय को महत्त्व देते हुए विषय का संयोजन करने वाले इस ग्रंथ में उत्तर रामधेनु काल के प्रारंभिक स्तर के कहानीकार शीलभद्र से लेकर समकालीन युवा कहानीकार प्रद्युम्न कुमार गगै तक को समेटा गया है। ग्रंथ के प्रारंभिक हिस्से में असमिया कहानी की धारा की गति–प्रकृति से संबंधित निबंध हैं तो दूसरे हिस्से में चयनित कहानीकारों की समस्त कहानियों और तीसरे हिस्से में चयनित कहानी–संकलनों के आधार पर कहानीकारों की कहानी–कला पर विचार किया गया है। अरिंदम बरकटकी, मनोज शर्मा, परी हिलैदारी, राजीव बरा, मृदुल शर्मा, कमल शइकीया, प्रफुल्ल कुमार नाथ, अजित भराली, दीप्ति ठाकुर, रेखा राणी देवी, गीतांजलि हजारिका, दुलाल चंद्र दास, परितोष चक्रवर्ती, सोमनाथ बरा, दीपामणि हालै महंत, प्रशांत बरा जैसे समीक्षक अध्यापकों के साथ–साथ कई विश्वविद्यालयों के शोधकर्ताओं द्वारा लिखित इस ग्रंथ में असमिया कथा साहित्य के कई अनदेखे पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है।

(झ) एकबिंश शतिकात असम : स्मृतिरेखा भूञाँ

स्मृतिरेखा भूञाँ द्वारा संपादित और गुवाहाटी कॉलेज की हीरक जयंती के अवसर पर प्रकाशित 'एकबिंश शतिकात असम' (उन्नीसवीं सदी में असम) शीर्षक छह सौ अठासी पृष्ठों के इस ग्रंथ में कई शैक्षिक आलेख और व्यक्तिगत निबंधों सहित कुल तिरपन आलेख शामिल हैं। इक्कीसवीं सदी की हमारी नौकरशाही, अधिकारियों के साथ मंत्री के काम करने की रीति, इक्कीसवीं सदी में जातीयतावाद का चरित्र, इक्कीसवीं सदी की अर्थनीति, राजनीति, विज्ञान आदि विषयों का समीक्षात्मक ग्रंथ है 'एकबिंश शतिकात असम'।

(ञ) ऐतिह्य–अनुषंग : डॉ. अरबिन्द राजखोवा

डॉ. अरबिन्द राजखोवा का 'ऐतिह्य–अनुषंग' आँक–बाक प्रकाशन से इस वर्ष प्रकाशित एक मूल्यवान ग्रंथ है। आमतौर पर किसी ग्रंथ का महत्त्व उसमें निहित नये तथ्यों और तर्कों की ताजगी से निर्धारित होता है। यह ग्रंथ व्यवस्थित अध्ययन और विभिन्न स्रोतों से तैयार किए गए शोधधर्मी आलेखों का संग्रह है। इस ग्रंथ की विषयवस्तु पाठक को असम के राष्ट्रीय जीवन के कुछ महत्त्वपूर्ण मुद्दों पर विचार करने और उनके आधार पर नये सिरे से सोचने का अवसर देती है।

(ट) प्रसंगार्थ बिज्ञान आरु असमिया भाषा : डॉ. दीपमणि हालै महंत

सम्प्रीति पब्लिकेशंस द्वारा प्रकाशित डॉ. दीपमणि हालै महंत कृत 'प्रसंगार्थ बिज्ञान आरु असमिया भाषा' (प्रसंगार्थ विज्ञान और असमिया भाषा) शीर्षक ग्रंथ में

संदर्भ के अनुकूल भाषा का प्रयोग तथा उनके अर्थ कैसे निरूपित होते हैं, इस केंद्रीय विषय के साथ भाषा के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है।

(ठ) मैथिली भाषा साहित्यर परिचय : डॉ. दीपमणि हालै महंत

सुप्रभा पब्लिकेशंस द्वारा प्रकाशित डॉ. दीपमणि हालै महंत के 'मैथिली भाषा साहित्यर परिचय' (पहला खंड) (मैथिली भाषा–साहित्य का परिचय) ग्रंथ में मैथिली भाषा का विकास, प्राचीन साहित्यिक उदाहरण और भाषा की विभिन्न विशेषताओं पर लेख शामिल हैं।

यात्रा वृत्तांत

(क) भियेटनामा : युद्ध, जीवन आरु नदीर गल्पकथा : अतनु भट्टाचार्य

वियतनाम दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा कॉफी उत्पादक देश है। यह एशिया का एक छोटा–सा देश है। यह वियतनाम की युद्धग्रस्त स्थिति, स्वतंत्रता का विवरण, भौगोलिक इतिहास–परिधि, समाज, संस्कृति, खानपान, नद–नदी, पहाड़–पुल सहित कई परिदृश्यों का चित्रण करने वाला एक अच्छा यात्रा–वृत्तांत है। कवि और कथाकार अतनु भट्टाचार्य का दूसरा यात्रा–वृत्तांत है वर्ष 2024 के फरवरी में प्रकाशित 'भियेटनामा : युद्ध, जीवन आरु नदीर गल्पकथा' (वियतनामः युद्ध, जीवन और नदी की कहानी)। ग्रंथ की शुरुआत वियतनाम के प्रसिद्ध शहर हो ची मिन्ह से होती है। हो ची मिन्ह नामक एक क्रांतिकारी के नाम के आधार पर इस शहर का नामकरण हुआ था। लेखक ने भारत के साथ हो ची मीन्ह के संबंध का भी विस्तार से वर्णन किया गया है। इसके अलावा, भारत और वियतनाम के बीच कई वर्षों से चले आ रहे संबंधों का भी इस ग्रंथ में खूबसूरती से वर्णन किया गया है। लेखक ने वियतनाम के इतिहास का वर्णन इस तरह से किया है कि इस ग्रंथ को इतिहास से संबंधित ग्रंथ भी कहा जा सकता है। फ्रांसीसी उपनिवेश से लेकर हो ची मिन्ह तक, अर्नेस्ट हेमिंग्वे से लेकर मुराकामी तक– सब कुछ लेखक की कलम ने इसमें समेटा है। उन्होंने यात्रा के दौरान वियतनाम के लोगों के साथ बातचीत के संदर्भ में भूपेन हजारिका के गीतों की कहानी भी प्रस्तुत की है। ग्रंथ के प्रत्येक अध्याय को बीस अध्यायों में विभाजित किया गया है। इसका कारण संभवतः एक लेखक होने का प्रभाव है। लेखक बिना किसी परेशानी के हर दृश्य, हर पल को प्रस्तुत करने में सफल रहे हैं। जिन लोगों को यात्रा–कथाएँ पढ़ना पसंद नहीं है, उन्हें भी यह ग्रंथ पढ़ने से विशेष आनंद मिलेगा। आने वाले समय में इस ग्रंथ को असमिया यात्रा साहित्य में एक महत्त्वपूर्ण ग्रंथ के रूप में जाना जाएगा। इस ग्रंथ की कीमत दो सौ चालीस रुपए है।

अनूदित ग्रंथ

(क) लाचित बरफुकन : अरूप कुमार दत्त

अजेय मुगल शक्ति को रोकने वाले आहोम सेना के सेनाध्यक्ष महावीर लाचित

बरफुकन की वीरगाथा और उनके नेतृत्व में आहोम सेना की गुरिल्ला रणनीति से आज भी बहुत लोग परिचित नहीं हैं। मुगल सेनाध्यक्ष राम सिंह को हराने की गाथा के साथ–साथ दिल्ली की ओर लौटते समय आहोम सेना की प्रशंसा करने के लिए विवश करने वाले लाचित की वीर गाथा को समग्र देश द्वारा अपनी–अपनी भाषा में जानने की सुविधा के लिए असम के मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत बिश्व शर्मा ने असम प्रकाशन परिषद् को विशेष पहल करने की सलाह दी थी। शर्मा ने लाचित बरफुकन के जीवन पर आधारित एक ग्रंथ का भारत की सभी मान्यताप्राप्त भाषाओं में अनुवाद करके उनके गौरव को प्रसारित करने की वकालत की। मुख्यमंत्री शर्मा के सुझाव के अनुसार असम प्रकाशन परिषद् ने यह काम शुरू किया। शिक्षा मंत्री और असम प्रकाशन परिषद् के अध्यक्ष डॉ. रणोज पेगु की देखरेख में यह ग्रंथ लिखने की जिम्मेदारी अंग्रेजी साहित्य के प्रसिद्ध लेखक अरूप कुमार दत्त को दी गई थी। अरूप कुमार दत्त ने निर्धारित समय के भीतर 'Assam's Breavheart Lachit Barfukan' ग्रंथ लिखा और इसे असम प्रकाशन परिषद् को जमा किया था। असम प्रकाशन परिषद् ने असमिया सहित भारत की सभी अन्य संवैधानिक रूप से मान्यताप्राप्त भाषाओं में इस ग्रंथ का अनुवाद करने का काम शुरू किया। इसके लिए भारत की सभी 22 भारतीय भाषाओं के प्रतिष्ठित अनुवादकों से संपर्क किया गया और उन्हें जिम्मेदारी दी गई। इस ग्रंथ का असमिया, बांग्ला, ओड़िया, तेलुगु, तमिल, कन्नड़, मलयालम, कोंकणी, मराठी, गुजराती, राजस्थानी, पंजाबी, कश्मीरी, सिंधी, उर्दू, मैथिली, डोगरी, संताली, मणिपुरी, बोडो, नेपाली, हिंदी और संस्कृत में अनुवाद किया गया है। 22 भारतीय भाषाओं में लाचित बरफुकन की जीवनी का प्रकाशन स्वाभाविक रूप से लाचित बरफुकन की वीरगाथा को एक नया आयाम देगा।

(ख) सातोरङर हात बाउली– दीपज्योति बरा

पूर्बायण प्रकाशन द्वारा प्रकाशित 'सातोरङर हात बाउली' (सतरंगी हाथों का बुलाना) ग्रंथ नयी पीढ़ी के एक प्रमुख अनुवादक दीपज्योति बरा द्वारा सात भारतीय भाषाओं की 17 कहानियों के अनुवादों का संकलन है।

(ग) नेरुडार प्रेम आरु नेरुडार प्रतिबाद : किशोर कुमार दास

'नेरुडार प्रेम आरु नेरुडार प्रतिबाद' (नेरूदा का प्रेम और नेरूदा का प्रतिवाद) किशोर कुमार दास द्वारा किया गया नेरूदा की कुछ कविताओं का अनुवाद है। यह ग्रंथ समन्वय ग्रंथालय, नलबारी, असम से प्रकाशित है।

(ऋ) आत्मकथा

(क) सौंवरणिर बाटे–बाटे : प्रफुल्ल गोविंद बरुवा

पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित असम ट्रिब्यून संस्थान के प्रबंध निदेशक प्रफुल्ल गोबिंद बरुआ की आत्मकथा को असमिया का राष्ट्रीय दस्तावेज माना जाता है। इसमें

असम में आधुनिक पत्रकारिता के उदय की कहानी है। यह आत्मकथा एक साधारण उपन्यास की शैली में लिखी गई है।

नोटः आलेख में कुछ लोकोक्तियों का लिप्यंतरण किया गया है। असमिया भाषा में 'स' उच्चारण वाले दो वर्ण हैं– 'च' और 'छ'। असमिया भाषा में 'स' के लिए कोमल 'ह' का उच्चारण होता है। असमिया के 'स', 'च' और 'छ' इन तीनों वर्णों के लिए हिंदी लिप्यंतरण में क्रमशः 'स', 'च' और 'छ' रखे गए हैं। हिंदी भाषा के 'य' वर्ण के लिए असमिया भाषा में दो वर्ण चलते हैं–एक का उच्चारण 'य' ही है और दूसरे का उच्चारण 'ज' है। असमिया 'य' के लिए हिंदी में भी 'य' रखा गया है। असमिया 'य' के 'ज' वाले उच्चारण के लिए लिप्यंतरण में 'य़' रखा गया है। जहाँ दो 'य' आए हैं, वहाँ पहला 'य़' और दूसरा 'य' है। जैसे धैर्य्य शब्द में पहला 'य़' और दूसरा 'य' है।

❑❑❑

स्वार्थ को इतनी छूट देना ठीक नहीं कि वह विवेक को ही खा जाए।

– मन्नू भंडारी

उर्दू साहित्य

2

डॉ. जुबेदा हाशिम मुल्ला

कहानीकार एवं अनुवादक। प्रमुख कृतियाँ– काव्यांग–विश्लेषण, ऐसी भी होता है, अबाबील (कहानी संग्रह)। अनेक पुरस्कारों से पुरस्कृत। संप्रति–स्वतंत्र लेखन।

हमारा भारत बहुभाषी देश है। इस देश की प्रत्येक भाषा के साहित्य में समानता के दर्शन होते हैं। विविध भाषाओं के बावजूद भारत की प्रत्येक भाषा में भारतीयता की सुगंध पाई जाती है। संस्कृति, सभ्यता एवं संस्कारों के प्रति आदर भाव भारत की प्रत्येक भाषा की विभिन्न विधाओं में मिलता है। विविध भाषाओं में विद्यमान साहित्यिक एकता के कारण ही आज विश्वभर में प्रत्येक भारतीय गर्व से कह सकता है कि 'मेरा देश महान है' 'मेरा भारत महान' और 'सारे जहाँ से अच्छा हिन्दुस्ताँ हमारा'।

'उर्दू' भारत में जन्मी भारतीय भाषा है जिसके साहित्य की प्रत्येक विधा में प्रेम, भाईचारा, त्याग और बलिदान के संस्कार नज़र आते हैं। उर्दू को लश्करी भाषा भी कहा जाता है। फौजी पड़ाव और उनके बाज़ारों में हिंदू–मुसलमान दो संस्कृतियों के योग से दो जुड़वाँ भाषाओं का जन्म हुआ। दोनों भाषाएँ भारत में जन्मी, पली, बढ़ी और जवान हुई हैं। हिंदी और उर्दू इन दोनों जुड़वाँ भाषाओं के नाम हैं। एक भाषा की माँ संस्कृत है जिससे हिंदी भाषा का जन्म हुआ है। दूसरी भाषा की माँ फारसी है जिससे उर्दू भाषा का जन्म हुआ है। दोनों भाषाओं की आत्मा में राष्ट्रीयता, मानवता एवं एकता के लक्षण पाए जाते हैं। भले ही दोनों भाषाओं की लिपियाँ अलग हैं, मगर दोनों की आत्मा एक है। दोनों भाषाओं में बहनावा इतना दृढ़ है कि विदेशों में दोनों भाषाएँ एक ही नाम से जानी–पहचानी जाती हैं। विदेशों में उर्दू को भी हिंदी की भाषा कहा जाता है।

उर्दू शायरी न केवल भारत में अपितु विश्वभर में बहुत लोकप्रिय है। उर्दू शायरी में जो लचक, जो सूज व साज, शब्दों में जो कशिश और उच्चारण का आकर्षण है, अन्यत्र दुर्लभ है। 18 जनवरी 2024 को जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली में प्रो. अखलाख आहन का उर्दू काव्य–संग्रह 'कराबात' का लोकार्पण संपन्न हुआ।

16 जनवरी 2024 को नयी दिल्ली में गालिब अकादमी द्वारा नारंग साखी द्वारा संपादित पुस्तक 'कुँवर महेंद्र सिंह बेदी', 'सहर फ़न' और 'शख्सियत' का लोकार्पण हुआ। 06 फरवरी 2024 को गुलबर्गा शहर में उर्दू के विख्यात साहित्यकार, लेखक तथा कवि वाज़िद अख़्तर सिद्दीकी की चौथी पुस्तक 'नक्शे तहरीर' का लोकार्पण संपन्न हुआ।

मैं सिलसिला हूँ सदाओं के हुर्फ़ बनने का,
तू सोच कर ही, दुबारा सदा बनाना मुझको''

मनमोहन तल्ख़ के इस शेर (पद) पर उर्दू के युवा पाठकों के प्रिय शायर जानुक हफ़ी ने उर्दू के आधुनिक कवि मनमोहन तक़ख के व्यक्तित्व और उनके काव्य साहित्य पर अपनी पुस्तक का शीर्षक रखा है 'मैं सिलसिला हूँ, सदाओं के हुर्फ़ बनने का'। 25 फरवरी 2024 को कोलकाता में उर्दू के शायर डॉ. मासूम शर्की की दो पुस्तकें 'लज्जते संग' गजल–संग्रह और 'सुखन राज' काव्य–संग्रह का तांती बाग एजुकेशनल समाज के ग्रंथालय में लोकार्पण का आयोजन समारोह संपन्न हुआ। 29 अप्रैल 2024 को नयी दिल्ली में प्रो. कौसर मज़हरी का इंतखाब' 'नयी नज़्म नया सफ़र' का लोकार्पण हुआ। इस पुस्तक में सन 1960 से अब तक के 155 कवियों की कविताओं को संग्रहीत किया गया है। यह पुस्तक इस वर्ष की एक श्रेष्ठ कृति सिद्ध हुई है। 22 अप्रैल 2024 में नयी दिल्ली से परवीन शगफ़ का काव्य–संग्रह 'जदांन' प्रकाशित हुआ है जो नयी कविता का एक नया प्रयोग साबित हुआ है।

इस वर्ष अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी अलीगढ़ में सर सैयद अकादमी द्वारा शायर आलम ख़ुरशीद के दो काव्य–संग्रह 'ख्वाब ज़ार' और 'कोई मुसाफत बाक़ी है' का शानदार लोकार्पण संपन्न हुआ। 17 फरवरी 2024 को पटना में पटना यूनिवर्सिटी के उर्दू विभाग में शायर अलख़मा शिबली की शायरी एवं उनके व्यक्तित्व तथा कृतित्व पर आधारित डॉ. मज़हर किब्रिया की पुस्तक 'दर्द का इक़्ताबास' का लोकार्पण हुआ। इस वर्ष टोंक, राजस्थान के शायर हाफ़िज़ अम्मादुद्दीन ख़ान मुराद सईदी की कविताओं की डॉ. सआदत रईस द्वारा संपादित पुस्तक 'ग़ैरत गुलज़ार' पाठकों के लिए उपलब्ध है जो बहुत प्रसिद्ध हुई है। पुस्तक का यह पद पाठकों में काफी चर्चित है।

मरज़ी हक़ पर चले, यों नहीं चाहा पानी,
वरना हर सिम्त से आ जाता बरसता पानी''

14 मई 2024 को नयी दिल्ली में विख्यात शायर मुख़्तार बाबरी का नया काव्य–संग्रह 'इज़्तराब दिल का' पाठकों में खूब सराहना प्राप्त कर चुका है। उर्दू साहित्य में मुहम्मद आलम वारसी की एक विशेष छवि बनी हुई है। आपका काव्य–संकलन 'नग़मा इरफ़ान इश्क' इस वर्ष नयी दिल्ली से प्रकाशित हुआ है जिसका एक पद (शेर) कवि का परिचय देने के लिए काफी है–

मेरा शेवा तो मुहब्बत के सिवा कुछ भी नहीं,
मैं मुहब्बत ही का पैगाम दिए जाऊँगा।।

इस वर्ष नयी दिल्ली से ही शायर सईद अख़्तर आज़मी की ग़ज़लों का नया संग्रह 'शाम के साए' का प्रकाशन हुआ है। इस संग्रह की भावना–प्रधान ग़ज़लें पाठकों को भावविभोर करती हैं।

'बहुत तनहा है दिल, आबाद होगा तेरी यादों से,
अभी सूरज नहीं डूबा, जरा सी शाम होने दो।।'

हैदराबाद निवासी उर्दू के युवा कवि सद्दाम हुसैन मज़मर का प्रथम काव्य–संग्रह 'क़यामत के बावजूद', जो 72 ग़ज़लों और 10 कविताओं का संग्रह है, इस वर्ष पाठकों में लोकप्रिय सिद्ध हुआ है। इस संग्रह की ग़ज़लें और कविताएँ बड़ी सहज और सरल शैली में लिखी गई हैं–

जज़्बात में डूबा करते हो, तुम यार ख़सारा करते हो?
क्या ज़ब्त का बंधन टूटा है, या सिर्फ दिखावा करते हो?

'सहराये ग़ज़ल' इस वर्ष का श्रेष्ठ ग़ज़ल–संग्रह है जिसके ग़ज़लकार हैं डॉ. ए. एम. इजहारूल हक़ अज़हर। इन ग़ज़लों में शायर ने पाठकों को इस दौर की बुराइयों से बचने के लिए नवजागरण का संदेश दिया है–

नए ज़माने का दस्तूर अब है ये अजहर,
दिलों में आग, लबों पर गुलाब रखते हैं।।
हर किसी की आँख से परदाह हटाना चाहिए,
सो गई है क़ौम जो इसको जगाना चाहिए।।

'कुलयात ख़ैर' मौलाना अबूल ख़ैर रहमानी के उर्दू–फ़ारसी कलाम पर आधारित काव्य–संकलन है जिसमें कवि ने उर्दू–फ़ारसी पद्य साहित्य को प्रस्तुत किया है। हैदराबाद के प्रो. डॉ. इफ़्तखार अहमद द्वारा संपादित इस पुस्तक से पाठकों को मौलाना अबुल खैर रहमानी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व की नयी पहचान प्राप्त हुई है। इस वर्ष नयी दिल्ली में विनोद कुमार त्रिपाठी बशर का काव्य–संकलन 'मेरी ज़मीन का चाँद' का लोकार्पण संपन्न हुआ है जो इस पुस्तक का चौथा संस्करण है और इस वर्ष का विख्यात काव्य–संकलन है जो पाठकों की माँग पर प्रकाशित हुआ है। इस वर्ष 17 सितंबर 2024 को नयी दिल्ली में युवा कवि डॉ. अहमद मेअराज का काव्य–संकलन 'सहरा–ए– जुनूँ' का पाठकों द्वारा भव्य स्वागत हुआ है।

28 अक्टूबर 2024 को लखीमपुर खीरी में युवा कवि इलियास चिश्ती के काव्य–संग्रह का दशहरा के रामलीला मेले में आयोजित कवि सम्मेलन में लोकार्पण संपन्न हुआ। इस काव्य–संग्रह का नाम 'किताब इश्क' है। इस संग्रह की कविताएँ लेखन कला के महत्त्व को दर्शाती हैं। निस्संदेह लिखना एक कला है। पठन एक

जुनून है और समझना साहित्य की प्रतिष्ठा है। 19 अप्रैल 2024 को लखनऊ में कवि मशहर गंडवी की 611 पदों के दीर्घ ग़ज़ल शाहकार का लोकार्पण नयी दिल्ली में हुआ है।

सन 2024, 12 नवंबर को बज़्मे अदब उर्दू, दुबई के शारजाह राज्य में भारत के उर्दू कवि की शायरी की प्रथम पुस्तक 'तशबिया' का लोकार्पण संपन्न हुआ है। इस वर्ष 23 नवंबर को दिल्ली में उर्दू की विख्यात कवयित्री डॉ. अना दहलवी की छठी पुस्तक 'आबरू–ए–ग़ज़ल' का पाठकों में भव्य स्वागत हुआ है।

29 नवंबर 2024 को श्रीनगर (कश्मीर) के उभरते हुए शायर सैय्यद आबिद हुसैन गोहर की शायरी की पुस्तक 'आवल अहसास' का लोकार्पण हुआ। 2 दिसंबर 2024 को उर्दू साहित्य की उभरती हुई लेखिका डॉ. नईमा जाफरी पाशा की चार पुस्तकों का लोकार्पण नयी दिल्ली में हुआ। इन पुस्तकों के नाम हैं 1. 'लफ्जों के पीछे छिपी तहजीब', 2. कथा संग्रह 'अब के बरस और दीगर अफसाने', 3. यात्रा वृत्तांत ख्वाब मंजर' तथा 4. बाल कथाएँ 'पुराने जमाने की नयी कहानियाँ'। 5 दिसंबर 2024 को सीमांचल के अररया नामक गाँव में शाहिद आदिल की दो पुस्तकें 'गश्त बर गश्त' और 'बाम बदरा' का लोकार्पण हुआ। शाहिद आदिल उर्दू साहित्य में अपने सकारात्मक विचारों के कारण पाठकों में बहुत सम्मानीय हैं। इस वर्ष नयी दिल्ली में कवि डॉ. मुहम्मद आरिफ हुसैन की नयी कविताओं की पुस्तक 'नियाज दिल' का प्रकाशन हुआ है। इस संग्रह की कविताएँ अत्यंत भावुक विषयों पर आधारित हैं। 12 फरवरी 2024 को नयी दिल्ली में उर्दू की उभरती कवयित्री सबिहा संबल की नयी कविताओं की पुस्तक 'फनअगर मुकम्मिल हो' का लोकार्पण हुआ है। इस वर्ष कवि एम.जे. खालिद की कविताओं का दूसरा संग्रह 'सिताराह शब से हम कलामी' पाठकों के लिए एक उपहार है। कवि एम. जे. खालिद भारत के विश्वप्रसिद्ध इलेक्ट्रानिक मीडिया पत्रकार भी हैं जिनका यह काव्य–संग्रह उर्दू शायरी में अपना विशेष स्थान रखता है। आपका यह पद बहुत खूब है–

मेरा दौर गालिब व मीर से हर एतबार से है जुदा
मैं नयी बुलंदियां कर सकूँ, मुझे इम्तियाज कलाम दे''

बाल साहित्य

भारतीय साहित्य में उर्दू बाल साहित्य का अपना विशेष स्थान है। तोता–मैना की, परियों–राक्षसों की, चूहा–शेर, कुत्ता–बिल्लियों और बंदरों की कहानियों–कविताओं से लेकर आज के गूगल दौर के रोबोट–राकेट और रायफल तक के सभी क्षेत्रों और विषयों पर उर्दू साहित्य में बाल साहित्य उपलब्ध है। इस वर्ष 5 मार्च 2024 को नयी दिल्ली में हबीब–सैफी की बाल साहित्य पर दसवीं पुस्तक 'आसान पहेलियाँ' का लोकार्पण संपन्न हुआ है। यह न केवल बच्चों के लिए, अपितु बड़ों के मन–मस्तिष्क

की मालिश करने वाली सुंदर पुस्तक है। सन 2024 में कवि मतीन अचलपुरी का बाल काव्य–संग्रह "हवा और पानी के तरान" का बाल जगत में भव्य स्वागत हुआ है। यह कविता–संग्रह बच्चों के लिए एक श्रेष्ठ उपहार है जिसमें कवि ने स्वयं कहा है "आज हवा और पानी के प्रदूषण से दुनिया भर के लोग परेशान हैं। हमारे पर्यावरण में व्याप्त जहरीले प्रभाव हवा और पानी में शामिल होने के कारण हवा और पानी भी प्रदूषित हो जाते हैं। आज हवा और पानी को प्रदूषण से बचाना इंसानियत की बड़ी सेवा है।" 'रब का तोहफा' कविता में कवि ने क्या खूब कहा है–

तोहफा है रब का पानी, सब रब के सबका है पानी,
इसकी कीमत जानें हम, जानें और पहचानें हम।।

इस संग्रह की अंतिम कविता 'पानी की फरयाद' सबके लिए एक पाठ है–

अब अपने माहौल को बचाने कदम उठाओ,
कलम उठाओ, ये हमसे घबरा कर बोला पानी,
मुझे बचाओ.... मुझे बचाओ।।

इस वर्ष लेखिका कमर जमाली की प्रथम पुस्तक 'अरीश' बाल साहित्य के क्षेत्र में काफी चर्चित है। उर्दू के विभिन्न लेखकों द्वारा लिखा गया बाल निबंध–संग्रह 'जराहयात' इस वर्ष बच्चों के लिए प्रकाशित अत्यंत ज्ञानवर्धक निबंध–संग्रह है। उर्दू कवि हबीब सैफी की छठी पुस्तक 'रोशन सितारे' सन 2024 का अत्यंत सराहनीय बाल काव्य–संग्रह है जो आठ भागों में विभक्त है। पहला भाग बच्चों की शिक्षा संबंधी विषयों पर आधारित है। दूसरा बच्चों के स्वास्थ्य पर, तीसरा देश–प्रेम पर, चौथा विज्ञान पर, पाँचवाँ बच्चों के आहार पर, छठा अनुशासन, सातवाँ बच्चों की दुनिया, क्रीड़ाओं पर तथा आठवाँ बच्चों के भविष्य एवं कल्याण संबंधी विषयों पर आधारित है। वस्तुतः बाल साहित्य में यह पुस्तक एक मील का पत्थर है। इस पुस्तक द्वारा कवि का बच्चों के लिए एक संदेश यह भी है–

अगर रौशन सितारों जैसा बनना है तुम्हें बच्चो,
सबक इकरा का जहनों में बस तुम बसा रखो बच्चो।।

3 जुलाई 2024 को मुरादाबाद में उर्दू की विख्यात कवयित्री डॉ. अर्चना गुप्ता के दो काव्य–संग्रह 'अक्कड़ बक्कड़' (कविताएँ) और 'हुई चाँद से हमारी बातें' (बाल ग़ज़ल–संग्रह) बाल साहित्य जगत में काफी लोकप्रिय सिद्ध हुए हैं। नयी दिल्ली में इन दोनों पुस्तकों का भव्य लोकार्पण समारोह संपन्न हुआ है। हश्मत कमाल पाशा उर्दू के इस नए दौर के एक नामवर साहित्यकार हैं जो बच्चों के प्रति बड़े गंभीर हैं। इस वर्ष बच्चों के लिए लिखी गई इनकी पुस्तक 'बच्चों की महफिल में गालिब, इकबाल और वाजिद अली शाह' बच्चों के साथ–साथ बड़ों के लिए भी अत्यंत लाभदायक सिद्ध हुई है। यह पुस्तक साहित्य में एक नया प्रयोग है। लेखक ने बच्चों की

महफिल (सभा) में गालिब, इकबाल और वाजिद अली शाह को शामिल करके बच्चों को उत्तम नागरिक बनने का एक उत्तम रास्ता बताया है।

उर्दू साहित्य में बाल पत्रिकाओं की भी कोई कमी नहीं है। 'चंदा मामा' पत्रिका न सही पर 'बच्चों की दुनिया' मासिक पत्रिका द्वारा प्रतिमाह बच्चों को जमीन व आसमान की प्रत्येक वस्तु का ज्ञान प्रदान किया जाता है।

उर्दू गद्य साहित्य

इस वर्ष जामिया इस्लामिया, नयी दिल्ली में उर्दू विभाग के प्रो. शमीम हनफी की चार अध्यायों में विभक्त शोध गद्य पुस्तक 'जदीदीयत की फलसफ़ियाना असास' पाठकों के लिए उपलब्ध है। इस पुस्तक का पहला अध्याय भारत में उर्दू साहित्य में आधुनिकता के प्रारंभिक इतिहास और आधुनिक पद्य क्रांति का विवरण प्रस्तुत करता है। दूसरे अध्याय में आधुनिकता, फलसफ़ियाना असास और बीसवीं सदी के चिंतन का विवरण है। तीसरे अध्याय में आधुनिकता और विज्ञान की समस्याओं तथा आधुनिक टेक्नोलॉजी का विवरण मिलता है। चौथे अध्याय में आधुनिकता, वास्तविकता, मार्क्सवाद और साहित्यिक गतिविधियों का विवरण मिलता है।

इस वर्ष नयी दिल्ली से डॉ. अब्दुल बारी कासमी की आलोचनात्मक पुस्तक 'उर्दू तनखीद और नकूश व नशानात' केंद्रीय प्रकाशन से प्रकाशित पुस्तक पाठकों में उपलब्ध है। सन 2024 में डॉ. अख्तर आजाद द्वारा संपादित पुस्तक 'मंजर कलीमः फन और शख्सियत' का प्रकाशन हुआ है जो चार अध्यायों में विभक्त नयी पुस्तक है जिसमें मंजर कलीम के आलेख, कहानियाँ, शायरी और अन्य विविध विषयों पर आलेखों को संपादित किया गया है। इस वर्ष नयी दिल्ली से ही डॉ. जकी तारी़ख द्वारा संपादित पुस्तक 'मंतशर इफ़कार' का प्रकाशन हुआ है जिसमें संपादक ने विख्यात लेखकों के भारत–पाकिस्तान के संबंध में लिखे आलेखों को संपादित किया है। नारंग सफी इस पुस्तक के संपादक हैं।

इस वर्ष नयी दिल्ली से डॉ. असलम हनीफ की उर्दू गद्य–पद्य की पुस्तक 'वरख वरख नया आहग' का प्रकाशन हुआ है जो पाठकों में बहुत पसंद की गई है। डॉ. असलम हनीफ उर्दू साहित्य के ऐसे प्रथम साहित्यकार हैं जिन्होंने एक साथ गद्य–पद्य का अपनी पुस्तक में संगम कराया है। इस पुस्तक में कुल तेरह (13) अध्याय हैं। पहले और अंतिम अध्याय में साहित्यिक उन्नति एवं अवनति पर प्रकाश डाला गया है। मध्य के अध्यायों में ग़ज़लों, कविताओं तथा विख्यात साहित्यकारों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला गया है।

डॉ. इरशाद अहमद की पुस्तक 'सीवान की अदबी तारीख' इस वर्ष की अत्यंत रोचक पुस्तक है जिसमें कुल 12 अध्याय हैं। सीवान बिहार का एक प्रसिद्ध जिला है जिसमें प्रत्येक अध्याय सीवान जिले की विशेषताओं को दर्शाता है। इस पुस्तक में

लेखक ने सीवान के इतिहास के साथ–साथ इस जिले की आबादी, यहाँ बोली जाने वाली बोलियाँ और भाषाएँ, यहाँ की साहित्यिक गतिविधियाँ, यहाँ के कला–कौशल, जिले की प्रगति में महिलाओं का योगदान आदि कई विषयों पर प्रकाश डाला है।

बिस्मिल्लाह अदीम बुरहानपुरी का निबंध–संग्रह 'इरतबात' सन 2024 का उल्लेखनीय निबंध–संग्रह है जिसमें कुल 19 निबंध हैं। इनमें 16 निबंधों का संबंध बुरहानपुर की साहित्यिक गतिविधियों पर आधारित है। 72 साल के सादा–सरल लेखक बिस्मिल्लाह आदीम बुरहानपुरी ने अपनी इस पुस्तक के माध्यम से सादा जीवन, उच्च विचार का संदेश दिया है। इस वर्ष नयी दिल्ली में डॉ. नसीम अहमद नसीम की आलोचनात्मक पुस्तक 'इज़हार ख़्याल' पाठकों के लिए उपलब्ध है। इस पुस्तक में दो दर्जन लेख संग्रहीत हैं जो किसी भी विषय की समालोचना के महत्त्व पर प्रकाश डालते हैं। नयी पीढ़ी के लेखकों में फ़ीज़ानुक हक़ का नाम अत्यंत प्रसिद्ध है। सन 2024 में इनकी पुस्तक 'मैं सिलसिला हूँ सदाओं के हर्फ बनने का' का नयी दिल्ली में लोकार्पण संपन्न हुआ।

4 मार्च 2024 को नयी दिल्ली से उर्दू के वरिष्ठ पत्रकार सुहेल अंजुम द्वारा संपादित निबंध–संग्रह 'मौलाना मुहम्मद उस्मान फारखलित सहाफी, मनाजिर, मुफकर' का लोकार्पण किया गया। यह पुस्तक मौलाना साहब के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का दस्तावेज है। अप्रैल 2024 में इंजीनियर फैरोज़ मज़फ़र के संपादन में अपने स्वर्गीय पिताजी मज़फ़र के व्यक्तित्व पर संपादित पुस्तक का लोकार्पण हुआ। मज़फ़र हनफ़ी बीसवीं सदी के विख्यात साहित्यकार थे जिन्होंने सबसे पहले अपनी लेखनी बाल साहित्य के क्षेत्र में चलाई। रशीद हसन खान की किताओं का दस्तावेज़ 'मयार व मीजान' है जो इब्राहीम अफसर की नयी संपादित पुस्तक है।

सन 2024 में प्रो. मुहम्मद काजिम द्वारा संपादित पुस्तक 'नयीम अनिस शक़्स इनफराद और अदबी इक़्तसास' उर्दू पाठकों में उपलब्ध है। इस वर्ष डॉ. ग़फनफर इक़बाल द्वारा संपादित पुस्तक 'डॉ. शक़ीब अनसारी इयात और अदबी खिदमात' का नयी दिल्ली में लोकार्पण हुआ। इस पुस्तक के दो भाग हैं। पहला भाग 'फ़न शकीब' नाम से प्रकाशित है जिसमें आपकी सात कहानियाँ संग्रहीत हैं। दूसरे भाग में शकीब अनसारी की अन्य साहित्यिक गतिविधियों पर प्रकाश डाला गया है। साहित्यकार शकीब अनसारी पेशे से डॉक्टर थे। 16 मई 2024 को अलीगढ़ में 'मक़ालाते सर सैयद अहमद खाँ' नामक तीन पुस्तकों का लोकार्पण हुआ जिनमें सन 1866 से 1898 तक लगभग 32 वर्षों का अलीगढ़ विश्वविद्यालय की प्रगति में सर सैयद अहमद खाँ का जो योगदान है, उसका विवरण इन पुस्तकों में उपलब्ध है। 21 मई 2024 को नयी दिल्ली से शाहिद अनवर की तीसरी पुस्तक 'कलाम दीवान शाहिद' का लोकार्पण हुआ। 9 मई 2024 को हैदराबाद में डॉ. मुहम्मद नेहाल अफ़रोज़ द्वारा संपादित

पुस्तक ‘उर्दू और हिंदुस्तानी जुबानें : कसानी व अदबी इरतबात’ का लोकार्पण हुआ। इस पुस्तक में उर्दू भाषा के महत्त्व को उजागर करने वाले आलेखों को संपादित किया गया है।

इस वर्ष 11 मई को अमरावती शहर में उर्दू के साहित्यकार शब्बीर बेग की सुपुत्री वाजिमा बी की ‘मजमूआ–रहबरी (मेरे आइना गुफ्तारी में) पाठकों में अत्यंत लोकप्रिय सुंदर साहित्यिक पुस्तक का लोकार्पण हुआ है। इस पुस्तक में कविताएँ, कहानियाँ और नाटकों को संग्रहीत किया गया है जो पाठकों को बहुत प्रभावित करते हैं। 24 जून 2024 को पटना के भीरूपुर नगर में युवा साहित्यकार एवं पत्रकार कमरूल आजम सिद्दीक़ी का प्रथम निबंध–संग्रह ‘गुंचा अदब’ का पाठकों में स्वागत हुआ। 28 जून 2024 को लखनऊ में मक्का के हरम शरीफ (काबा) की निर्माण परियोजना के कार्यकर्ता तथा मेडिकल डॉक्टर खलीलुलशुजाउद्दीन तमानदार का मक्का शहर में स्थित अपनी गतिविधियों पर आधारित निबंध–संग्रह ‘नकशे हरम’ का लोकार्पण हुआ। 23 जून 2024 को बाराबंकी में उर्दू केंद्र, लंदन के अध्यक्ष डॉ. वाजिद शेख की दो पुस्तकें ‘ताबीर सूसुफी’ और ‘दीवाने इकबाल’ का लोकार्पण संपन्न हुआ। 2 जुलाई 2024 को नयी दिल्ली में अंजुमन तरक्की उर्दू घर में प्रो. अख्तर वासी के निबंधों का संकलन ‘इफ़्का साल अख्तरूल वासी’ (परवीज अहमद द्वारा संपादित) का लोकार्पण हुआ।

इस वर्ष नयी दिल्ली से संपादक नईमुररहमान नईम जलाल पुरी के संपादन में बनी पुस्तक ‘हजरत परताब गढ़ी, अशआर के आइने में’ का पाठकों में भव्य स्वागत हुआ है। 6 जुलाई 2024 को अलीगढ़ में प्रो. सैयद ज़मीर हैदर की पुस्तक ‘कसबा शिकारपुर के मालूम मर्सिया–निगार’ का लोकार्पण हुआ। इस पुस्तक द्वारा लेखक का अपने देश के प्रति प्रेम, साहित्य के प्रति समर्पण तथा परिश्रम स्पष्ट होता है। इस वर्ष 27 जुलाई 2024 को नयी दिल्ली से नदीम महीर की मीडिया पर लिखी पुस्तक ‘सोशल मीडिया फवाइद और नुक्सानात’ पाठकों के सामने प्रस्तुत है। भोपाल में 6 जुलाई 2024 को एक साथ कई उर्दू गद्य साहित्य की उत्तम पुस्तकों का लोकार्पण हिंदी भवन के महादेवी वर्मा हाल में संपन्न हुआ, जिनके नाम हैं– आफ़ाक हुसैन सिद्दीक़ी की पुस्तक ‘उर्दू शायरी में शक्सी मर्सिये’, प्रो. नोमान ख़ान की पुस्तक ‘नायाब हैं हम,’ जिया फारूखी की पुस्तक ‘अगन हिण्डूका’ और रहवान अदब की संपादक प्रो. शहनाज नबी की पुस्तक ’गैर अफसानवी अदब’ का लोकार्पण हुआ।

इस वर्ष पटना के सुल्तान गंज से फकरूद्दीन आरफी की आलोचनात्मक पुस्तक ‘गज़ाल आँखें चुराते हैं’ का भव्य स्वागत अजीमाबाद वालों ने किया। उर्दू के विख्यात लेखक डॉ. मुहम्मद जुबेर का 19 आलोचनात्मक लेखों का निबंध–संग्रह

'ताबीर सुखन' का लोकार्पण हुआ। डॉ. माहनूर जमानी बेगम संपादित डॉ. फहमीदा बेगम की पुस्तक 'उर्दू अदम में तकरार अल्फाज एक जायजा' का लोकार्पण हुआ।

उर्दू कथा साहित्य

इस वर्ष नयी दिल्ली में उर्दू के उभरते हुए कहानीकार शाहीन नजर का 15 कहानियों का कहानी–संग्रह 'कर्बनातमाम' का लोकार्पण हुआ। इस संग्रह की आठ कहानियाँ भारतीय समाज का दर्पण हैं और सात कहानियाँ भारत से बाहर विदेशों में बसे मजदूरी करने वाले लोगों की दासता पर प्रकाश डालती हैं। कहानीकार एक पत्रकार भी हैं। पत्रकारिता के संबंध में लेखक की अक्सर विदेश यात्राएँ होती हैं। अपने यात्रा अनुभव को ही लेखक ने अपनी कहानियों में दर्शाया है। इस वर्ष सन 2024 में सुहेल–जमई की तेरहवीं पुस्तक 'कदम ब कदम' कहानी–संग्रह पाठकों के लिए उपलब्ध है। इस कहानी–संग्रह में कुल 160 कहानियाँ संग्रहीत हैं जो मानव मस्तिष्क की गुत्थियों को सुलझाने में सहायक सिद्ध हुई हैं। 'सोच का आइना', 'खुला दरवाजा', 'तिश्नगी' आदि इस संग्रह की चरित्र प्रधान सामाजिक कहानियाँ हैं। 'नयी दिशा', 'समझौता', 'कैसे बताएँ', डरपोक', 'लमहा', 'फिक्रीया' आदि कहानियों में समाज के निम्न वर्ग के लोगों की त्रासदी पाठकों को हिला देती है। वस्तुतः इस वर्ष का यह एक श्रेष्ठ कहानी–संग्रह है।

इस वर्ष 27 मई 2024 को मध्य प्रदेश के मशहूर शहर भोपाल में विख्यात कहानीकार डॉ. रजिया हमीद के दो कथा–संग्रह 'जिंदगी ए जिंदगी' और 'इंतजार बहार' का लोकार्पण संपन्न हुआ। 13 मई 2024 को बिजनौर में एम.ए. कनोल आफरी का कहानी–संग्रह 'खामोश लब' का तथा कविता–संग्रह 'सीपियाँ टूटी हुई' इन दो पुस्तकों का एक साथ लोकार्पण हुआ। 4 जून 2024 को महाराष्ट्र के मशहूर शहर मुंबई की लेखिका तबस्सुम नाडकर का कहानी–संग्रह 'कहकशाने गम' का पाठकों में स्वागत हुआ। 6 जुलाई 2024 को रोहतास के सहस्राम नगर से एम.जेड. मलिही–जमाँ खान का कथा–संग्रह 'क्वारनटाइन सेंटर' का लोकार्पण हुआ। इस संग्रह में कुल 61 कहानियाँ संग्रहीत हैं जो कोरोना काल की त्रासदी को दर्शाती हैं।

इस वर्ष 12 अक्टूबर 2024 को मालेगाँव में कहानीकार अजमल इकबाल का प्रथम कहानी–संग्रह 'अधूरी तकलीफ' का लोकार्पण हुआ। इस वर्ष 31 मई 2024 को नयी दिल्ली में शगुफ़्ता रहमान सोना का नया उपन्यास 'गूंजती तनहाइयाँ' का पाठकों में स्वागत हुआ है। इस नयी सदी में साहित्य में उपन्यास विधा की गति धीमी चल रही है क्योंकि आज न तो लेखकों के पास दीर्घ लेखन का समय है और न पाठकों में इतनी संवेदना बाकी है कि वे दीर्घ पठन करें। हर कोई लघु कथाओं को सरसरी नजर से पढ़कर पठन कर्त्तव्य से मुक्त होना चाहता है। ऐसे संदर्भ में इशरत जहीर का उपन्यास 'फिक्शन जावे' पाठकों में काफी चर्चित है। इस वर्ष प्रो. इब्ने कंवल की

नयी पुस्तक 'मजीद शगुफ़्तगी' पाठकों में उपलब्ध है। इसमें संस्मरण तथा रेखाचित्रों को संग्रहीत किया गया है। लेखक ने उर्दू के 24 विख्यात साहित्यकारों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को बड़े सुंदर ढंग से कथात्मक शैली में प्रस्तुत किया है।

11 दिसंबर 2024 को संपूर्ण भारत वर्ष में 'भारतीय भाषा उत्सव' मनाया गया। वास्तव में इस भाषा उत्सव के माध्यम से संपूर्ण भारतीय समाज को एक सकारात्मक संदेश दिया गया कि भाषाओं में कोई क्षेत्रीय अथवा धार्मिक सीमा रेखा नहीं पाई जाती। भारतीय भाषाओं में तो परस्पर एक राष्ट्रीय संबंध होता है। भारतीय भाषाएँ दुनिया के कोने—कोने तक पहुँचकर यह सिद्ध करती हैं कि भारतीय भाषाएँ किसी भी भाषा की विरोधी नहीं, अपितु एक दूसरे की पूरक हैं। भारतीय भाषाएँ और बोलियाँ अपना एक विशेष इतिहास रखती हैं। इनमें दूसरी भाषाओं को अपनाने की क्षमता भी होती है। 'भारतीय भाषा उत्सव' एक प्रोत्साहन का माध्यम है। बरसों से भारतीय भाषाओं के इतिहास, विकास और प्रोत्साहन पर प्रकाश डालने का सराहनीय कार्य नयी दिल्ली से केंद्रीय हिंदी निदेशालय भी एक तपस्या के समान बड़ी सहजता से निभा रहा है। 'वार्षिकी' पत्रिका असल में भारतीय भाषाओं का एक 'दस्तावेज' है।

उर्दू पत्रकारिता

पत्रकारिता के क्षेत्र में उर्दू का बड़ा महत्त्वपूर्ण स्थान है। इस वर्ष जाकिर हुसैन की पुस्तक 'उर्दू सहाफत का आगाज व अरत्फा' का प्रकाशन हुआ जो आठ अध्यायों में विभक्त है। संपूर्ण पुस्तक में उर्दू पत्रकारिता के संबंध में कुल 250 लेख संग्रहीत हैं। इस वर्ष महाराष्ट्र मुंबई से मशीर अहमद अंसारी के संपादन में 'उर्दू आँगन' पत्रिका (मासिक) का विशेषांक डॉ. महमूद शेख प्रकाशित हुआ है। लगभग आठ वर्षों से यह मासिक पत्रिका बराबर प्रकाशित हो रही है। इस वर्ष के विशेषांक का यह पद पत्रिका का मुखड़ा है—

शेख महमूद एक अदीब बेमिसाल, इक आलम, रंक मुअलाम बाक़माल।।
इसका तखलीखी, तहकीक़ी अदब, आलमें उर्दू में है लाजवाल।।

'इम्कान' महाराष्ट्र राज्य में उर्दू साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित होने वाली एक पत्रिका है जिसका प्रत्येक अंक शिक्षा एवं साहित्यिक विषयों का ज्ञान प्रदान करता है। लगभग तीन वर्षों से यह पत्रिका उर्दू दुनिया में पाठकों के आकर्षण का केंद्र बनी हुई है। सन 2024 में उर्दू के विख्यात साहित्यकार राजेंद्रनाथ बेदी, सलमा सिद्दीक़ी, साहिर लुधियानवी की निज़ी ज़िंदगियों पर आलेख इस पत्रिका की शोभा बढ़ा रहे हैं।

13 जनवरी 2024 को औरंगाबाद में एम.बी.बी.एस. डॉ. उर्मिला चाकोरकर की मराठी पुस्तक 'गुजरते हुए' का लोकार्पण हुआ। यह पुस्तक उर्दू और हिंदी के विख्यात साहित्यकार प्रो. सादि़क की जीवनी पर आधारित है। प्रो. सादिक नयी दिल्ली से

प्रकाशित होने वाली विख्यात पत्रिका 'उर्दू दुनिया' के प्रधान संपादक थे। पहले यह पत्रिका त्रैमासिक थी, परंतु अपनी उपयोगिता और प्रसिद्धि के कारण अब यह मासिक पत्रिका के रूप में उर्दू दुनिया में अपना उल्लेखनीय स्थान बना चुकी है। 20 अप्रैल 2024 को नयी दिल्ली से 103 सालों के उर्दू निबंधों की पुस्तक एक बृहद् पत्रिका के रूप में 'उर्दू अदब' के नाम से पाठकों के लिए उपलब्ध है जिसमें उर्दू की वर्तनी और शब्दावली के बारे में जानकारी उपलब्ध है।

सन् 2024 में पत्रकारिता के क्षेत्र में डॉ. शफीक अख्तर की पत्रकारिता पर आधारित पुस्तक 'मगरीबी बंगाल में उर्दू सहाफत' एक आलोचनात्मक एवं शोध पुस्तक है जो मगरीबी बंगाल की उर्दू अकादमी, कोलकाता से प्रकाशित हुई है। इस पुस्तक की विशेषता यह है कि पत्रकारिता के प्रारंभ से लेकर अब तक बंगाल की धरती पर जितने भी उर्दू समाचार पत्र, दैनिक, साप्ताहिकी, द्वैसाप्ताहिकी, मासिक, द्वैमासिक, त्रैमासिक, वार्षिकी पत्रिकाएँ जो अब तक प्रकाशित हो चुके हैं और अब भी हो रहे हैं, उन सबका उल्लेख और विवरण इस पुस्तक में उपलब्ध है। लखनऊ में 16 अप्रैल 2024 को पत्रिका 'सूफी बरूतवी' का लोकार्पण हुआ। संपादक मोहसिन रशीद कुरेशी ने इस पत्रिका को सफल बनाया है। अब आपके सुपुत्र वसीफ रशीद इस पत्रिका की प्रगति में निरत हैं।

इस वर्ष सन 2024 में प्रो. अल्ताफ अहमद आज्मी की उल्लेखनीय पुस्तक 'हख़ाफिल ख़ासमी' प्रकाशित हुई है जो प्रो. अलताफ अहमद आज्मी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर आधारित है। 'यादगार मजलाह आलमी योग' यूनानी मेडिसिन पर आपकी पत्रिका इस वर्ष की एक अनमोल देन है। प्रो. अल्ताफ अहमद ने पेशे से अध्यापक, साहित्यकार और हकीम होने के नाते स्वास्थ्य संबंधी विषयों को अपनी पत्रिका में प्रकाशित किया है। इस वर्ष आंध्रप्रदेश से मार्च–अप्रैल 2024 की द्वैमासिक पत्रिका 'दो माही अफसानानुमा' का प्रकाशन हुआ। यह पत्रिका महिला विशेषांक है जिसमें महिलाओं से संबंधित विषयों पर प्रकाश डाला गया है। इस वर्ष 13 अक्टूबर 2024 को महाराष्ट्र राज्य के जिला जलगाँव से बच्चों के लिए एक नयी बाल पत्रिका 'तरजुमाने इत्फाल' का शुभारंभ हुआ जिसमें बच्चों की रुचि, उनकी मानसिकता, अबोध सोच, हृदय परिवर्तन तथा दिमागी संतुलन से संबंधित लेखों को संग्रहीत किया गया है। इस वर्ष की यह एक सुंदर पत्रिका है जो बड़ों का भी मार्गदर्शन करती है।

इस वर्ष 22 अक्टूबर 2024 को बारबंकी के विख्यात उर्दू साहित्यकारों पर 'तजकिराह इस्लाफ बारहबंकी' नामक संस्मरणात्मक पत्रिका रूपी पुस्तक का प्रकाशन गयासुद्दीन किदवाई मेमोरियल से हुआ है। 18 अक्टूबर 2024 को अलीगढ़ में मासूम मुरादाबाद की शोध पुस्तक 'सर सैयद का खयाम मीरठ में' का लोकार्पण हुआ। 31

अक्टूबर 2024 को नयी दिल्ली में उर्दू के हास्य व्यंग्य लेखक फ़याज अहमद फ़ैजी की हास्य–व्यंग्य की पुस्तक 'खंदा जेर लब' और उर्दू के विश्वविख्यात कवि पापुलर मेरठी की प्रथम पुस्तक 'यादों के दरीचे' का लोकार्पण हुआ। 'यादों के दरीचे' कवि की गद्य पुस्तक है।

उर्दू अनुवाद साहित्य

इस वर्ष 12 जनवरी 2024 को हैदराबाद में शाहिद हुसैन की उर्दू पुस्तक 'औराखे माजी' का अंग्रेजी अनुवाद Echoes from the past का लोकार्पण हुआ। प्रो. आमना किशोर ने इस पुस्तक का अंग्रेजी अनुवाद प्रस्तुत किया है। लेखक शाहिद हुसैन ने अपनी इस पुस्तक में प्रिंस मुक्रम जहा बहादुर को जैसा देखा, वैसा उनकी अच्छाइयों एवं त्रुटियों समेत अपनी पुस्तक में प्रस्तुत किया है। किसी भी भाषा का उर्दू अनुवाद मूल रचना के समान प्रभावपूर्ण होता है। इस वर्ष जेमंत मिश्र का संस्कृत से हिंदी में अनूदित कहानी–संग्रह 'संक्षिप्त संस्कृत कहानियाँ' का मुहम्मद खलील द्वारा उर्दू अनुवाद 'मुक्तार संस्कृत कहानियाँ' प्रकाशित हुआ है जिसमें वेद, पुराण, उपनिषद् एवं स्मृति–संग्रह से कहानियाँ संग्रहीत की गई हैं जो बड़ी सुंदर एवं प्रभावपूर्ण हैं। इस वर्ष एफ.एस. एजाज़ की विभिन्न भारतीय तथा अंग्रेजी कविताओं का उर्दू अनुवाद 'पतली बर्फ' नाम से अनूदित पुस्तक के रूप में पाठकों में उपलब्ध है।

प्रारंभ से उर्दू साहित्य में अनुवाद की परंपरा बराबर सक्रिय है। इस वर्ष राम बहादुर राय की उर्दू में अनूदित पुस्तक 'भारतीय संविधान की अनकही कहानी' प्रकाशित हुई है। राम बहादुर की हिंदी में लिखी गई इस पुस्तक का उर्दू अनुवाद जाविद आलम ने 'आइने हिंद की अनकही कहानी' के नाम से प्रस्तुत किया है। यह पुस्तक नयी पीढ़ी के लिए एक अमूल्य भेंट है। इस वर्ष अलीगढ़ में उर्दू के विख्यात साहित्यकार 'मुनीबुररहमान की एक सदी' नामक पुस्तक का लोकार्पण हुआ जिसका संपादन दो लेखकों बेदार बख़्त और अनवर अहमद ने किया है। 340 पृष्ठों में मुनीबुररहमान की सौ–साला जिंदगी का इतिहास इस पुस्तक में उपलब्ध है।

राष्ट्रीय उर्दू भाषा विकास परिषद से सन 2024 में प्रकाशित पुस्तकें :

प्रति वर्ष भारत सरकार के वित्तीय सहयोग से राष्ट्रीय उर्दू भाषा विकास परिषद, नयी दिल्ली से असंख्य पुस्तकों का प्रकाशन होता है। इस वर्ष सन 2024 में इस राष्ट्रीय परिषद् से प्रकाशित प्रमुख पुस्तकों की निम्नलिखित सूची प्रस्तुत है– (1) साहित्यकार अतीखुल्लाह की समीक्षात्मक पुस्तकें 'कशाक इस्तलाहात अदबियात' जिल्द प्रथम, द्वितीय और तृतीय का प्रकाशन संपन्न हुआ। (2) संपादक शेख अखील अहमद द्वारा संपादित पुस्तकें जिल्द (भाग) प्रथम से पंचम तक का प्रकाशन हुआ है। (3) डॉ. सगीर अहमद की पुस्तक 'उर्दू तहक़ीक व तनक़ीद के हवाले से' का लोकार्पण हुआ। (4) संपादक प्रो. कौसर मज़हरी द्वारा संपादित पुस्तक 'नयी नज़्म नया सफ़र'

प्रकाशित हुई है जिसमें सन् 1960 से अब तक के 155 कवियों की कविताओं को 712 पृष्ठों में संग्रहीत किया गया है। 1182 कविताएँ इस पुस्तक में कवि परिचय के साथ उपलब्ध हैं। इस वर्ष की यह एक बृहद् पुस्तक है। (5) डॉ. सरवत नाज़ द्वारा संपादित पुस्तक 'यादे–रक्तगान बहार' का प्रकाशन हुआ है जिसमें सन 2020 से 2023 तक के विख्यात उर्दू साहित्यकारों के साहित्य को संग्रहीत किया गया है (6) इस वर्ष एहतशामुल हक़ फारुकी द्वारा स्वास्थ्य संबंधी विषयों पर आधारित पुस्तक 'जराहयात उमूमि' का संपादन हुआ है जिसमें यूनानी दवाओं, चिकित्सा के साथ–साथ ऑपरेशन की आवश्यकता एवं महत्त्व पर प्रकाश डाला गया है।

इस वर्ष 20 अक्टूबर 2024 को उर्दू के नामवर साहित्यकार डॉ. बदर महमूदी की पुस्तक 'बाद अज़ मुतालिया' का पटना में लोकार्पण हुआ। इस वर्ष राजस्थान के टोंक गाँव के निवासी डॉ. अजीजुल्लाह शेरानी की पुस्तक 'सहरा में गुलजार' का पाठकों में स्वागत हुआ है। इस पुस्तक द्वारा राजस्थान के विख्यात उर्दू साहित्यकारों का परिचय प्राप्त किया जा सकता है।

सन् 2024 में आयोजित उर्दू पुस्तक मेलाः–

6 जनवरी 2024 से उर्दू साहित्य की प्रगति का इतिहास मुंबई राष्ट्रीय उर्दू पुस्तक मेला से प्रारंभ होता है। इस वर्ष राष्ट्रीय उर्दू भाषा विकास परिषद्, नयी दिल्ली के तत्त्वावधान में महाराष्ट्र की राजधानी मुंबई शहर में 6 जनवरी 2024 से 14 जनवरी 2024 तक मुंबई के बांद्रा कुर्ला कांप्लेक्स, एम.एम.आर.डी.ए मैदान में 26वाँ उर्दू किताब मेला का आयोजन संपन्न हुआ। पुस्तक मेले का शुभारंभ परिषद् के अध्यक्ष प्रो. धनंजय सिंह, साहित्य अकादमी, दिल्ली ने रिबन काटकर किया। यह पुस्तक मेले का पहला दिन था जिसमें मुंबई शहर के नामवर उर्दू प्रेमी और साहित्यकार शामिल थे। मेले के दूसरे दिन से उर्दू किताबों के ग्राहकों का मेला शुरू हुआ। साथ में 9 दिन तक विविध प्रकार के मनोरंजक कार्यक्रम भी होते रहे। इस पुस्तक मेले में सैकड़ों नायाब उर्दू पुस्तकों का प्रदर्शन भी हुआ और खूब खरीदारी भी हुई। वस्तुतः यह छब्बीसवाँ उर्दू पुस्तक मेला बड़ा सफल रहा।

इस वर्ष 23 अप्रैल 2024 को राष्ट्रीय उर्दू भाषा विकास परिषद्, नयी दिल्ली की ओर से 'विश्व पुस्तक दिवस' का दिल्ली में आयोजन किया गया। राष्ट्रीय परिषद् के अध्यक्ष श्री रामबहादुर राय की संविधान संबंधी पुस्तक 'आइन हिंदः अनकही कहानी' का लोकार्पण इस शुभ अवसर पर संपन्न हुआ। इस विश्व पुस्तक दिवस के समारोह में दिल्ली के चारों प्रमुख विश्वविद्यालयों से प्राध्यापक तथा उच्च पदों पर आसीन पदाधिकारी एवं गणमान्य व्यक्ति पधारे हुए थे।

राष्ट्रीय उर्दू भाषा विकास परिषद्, नयी दिल्ली और नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया के तत्त्वावधान में 17 अगस्त 2024 से 25 अगस्त 2024 तक कश्मीर की ऐतिहासिक

राजधानी श्रीनगर के चनार शहर में 'चनार पुस्तक महोत्सव' का आयोजन संपन्न हुआ। लगातार नौ दिनों तक पुस्तक महोत्सव का वातावरण बना रहा। हर रोज संगोष्ठियाँ चलती रहीं। बच्चों, युवाओं एवं बुजुर्गों के लिए साहित्यिक मनोरंजन के कार्यक्रम भी बराबर चलते रहे। राष्ट्रीय परिषद् द्वारा प्रकाशित पुस्तकों के कई स्टालों पर पाठकों, लेखकों और प्रशसंकों की भीड़ भी पुस्तक महोत्सव का आनंद उठाती रही। इस वर्ष के इस पुस्तक महोत्सव में उर्दू, हिंदी, डोगरी, कश्मीरी, पंजाबी और अन्य सभी भारतीय भाषाओं की पुस्तकों के 300 से अधिक स्टॉल सजाए गए थे। कश्मीर की जनता ने बड़े उत्साह के साथ इस पुस्तक महोत्सव में पधारे हुए लोगों का स्वागत किया। हर उम्र के लोगों ने इस महोत्सव का आनंद उठाया।

इस पुस्तक महोत्सव में नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया के अध्यक्ष प्रो0. मिलिंद सुधाकर मराठे जी ने अपने भाषण में पुस्तक के संबंध में बड़ी प्यारी बातें बताईं, "किताब की ताकत बहुत बड़ी ताकत होती है। किताब दो–चार अलफाज़ का नाम नहीं है। इसमें एक लेखक की पूरी जिंदगी का निचोड़ शामिल होता है। पढ़ने वाला इंसान हजारों लोगों की जिंदगी जीता है। हजारों प्रकार के अनुभव उसकी निगाह में होते हैं। जो नहीं पढ़ता, वह सिर्फ अपनी जिंदगी जीता है। विचार और सोच दुनिया को बदलने की ताकत रखते हैं।" पुस्तक महोत्सव का यह आयोजन एक बहुत बड़ा वरदान है।

निस्संदेह, ऐसे महान विचारों से ही आज के इस मोबाइल और गूगल वाले, आपाधापी और स्वार्थ से भरे वातावरण में पाठक पढ़ने की ओर प्रोत्साहित हो सकते हैं। लेखन एक कला है तो पठन एक लगन है। लगन के अभाव में कला का कोई अर्थ नहीं होता। अतः आधुनिक पीढ़ी को पठन में रुचि बढ़ानी चाहिए ताकि लेखन कला में निखार आ जाए और प्राचीन पुस्तकों का पुनः नवीकरण हो सके।

❑❑❑

ओड़िया साहित्य

3

डॉ. अरुण होता

प्रमुख कृतियाँ– 'आधुनिक हिंदी कविताः युगीन संदर्भ, 'कविता का समकालीन प्रमेय', 'भूमंडलीकरण, बाजार और समकालीन कहानी, 'समकालीन कविताः चुनौतियाँ और संभावनाएँ'। आचार्य रामचंद्र शुक्ल आलोचना पुरस्कार, प्रथम गोपाल राय स्मृति सम्मान, लमही सम्मान और फकीरमोहन अनुवाद सम्मान से सम्मानित। संप्रति–आचार्य एवं अध्यक्ष, पश्चिम बंगाल राज्य विश्वविद्यालय, कोलकाता।

समकालीन ओड़िया साहित्य की अत्यंत समृद्ध परंपरा रही है। प्रतिवर्ष साहित्य की विविध विधाओं में हजारों पुस्तकें प्रकाशित हो रही हैं। अभी तीन–चार पीढ़ियों के रचनाकार सक्रिय हैं। सन 2024 में प्रकाशित तमाम विधाओं की पुस्तकों पर किसी एक लेख में विचार करना न तो आसान है और न ही काम्य। लेकिन ओड़िया साहित्य की 2024 में प्रकाशित कुछ चुनिंदा पुस्तकों के आधार पर एक सम्यक् विवेचन के माध्यम से भारतीय साहित्य के पाठकों को ओड़िया साहित्य की गति, प्रकृति, प्रवृत्तियों और विशेषताओं से परिचित कराना इस आलेख का प्रमुख उद्देश्य है। इसे विधाओं के अनुसार प्रस्तुत किया जा रहा है ताकि अन्य भाषाओं के पाठक सहज रूप में परिचित हो सकें।

कविता

ओड़िया कविता के अग्रणी कवि हरप्रसाद दास 'अन्न एक गाथा' के रचयिता हैं। अन्न को ब्रह्म कहा जाता है। उक्त कविता–संग्रह में अन्न को नायकत्व प्रदान किया गया है। अन्न को केंद्रित करते हुए उसकी गाथा का अंकन है। कवि के अनुसार–

"हे क्षुधा,
अन्न को अन्नत्व दें
और उनकी स्थापना कर
आपकी महामृत्तिका में तीन
हमारे बुभुक्षु पूर्वजों को
पुनः प्रतिष्ठित करें।"

कवि ने भारतीय पौराणिक कल्पना के नैमिषारण्य के देवता के रूप में 'अन्न' को स्वीकार किया है। उसने अन्न के माध्यम से संसार के भव्य रूप से परिचित कराया है। कवि ने अन्न के साथ ओड़िया कविता में अभूतपूर्व कथाशैली के माध्यम से किंवदंतियों का सृजन संभव बनाया है–

"हे पुण्यश्लोक महामुनि दैदीप्यमान
जिस प्रश्न को निर्वासित कर
प्रजापति ने अन्न की बँटाई की
वह सवाल आपके पवित्र चेहरे पर
लौटते देख मैं कृतार्थ हुआ
यह सवाल है किसने खाया
लेकिन यह सवाल क्या था?
और क्या खाया?
बिना अन्न का भोजन कैसे?"

कवि ने कवयित्री प्रवासिनी महाकुड़ की प्रिय कविताओं को संकलित करते हुए उसे 'प्रवासिनी की प्रिय कविता' (प्रवासिनींक प्रिय कविता) शीर्षक से एथेना बुक्स, भुवनेश्वर से प्रकाशित करवाया है। कवयित्री की संपूर्ण सत्ता में कविता की खोज की जा सकती है। सुगंध और विषादबोध के विरोधाभास में भी प्रवासिनी की काव्य नायिका जीवन का अनुसंधान करती है–

"उस विषाद ऋतु का फूल है प्रियतमा
सुगंध महकती रहती है हवा में वर्ष भर
जी भरकर पीने के पहले मिट जाती है
होठों के पास
आवेग की चिरहरित् प्यास।"

कविता महज कल्पना लोक के पल नहीं। वह स्वप्न के संसार से यथार्थ के मार्ग की ओर प्रेरित करती है। 'लड़की और तितली' (झिअ ओ प्रजापति) कविता का पाठ इस दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। माँ ने जो सपने देखे थे तितली को पकड़ने के, उसे अब वह बेटी का अधिकार मानती है। वह बेटी को तितली को पकड़े रखने की शिक्षा प्रदान करती है। प्रवासिनी की कविता में माँ के गर्भ के साथ हृदय की बात भी अंकित है–

"कविताएँ बहुत लिखी जा चुकी हैं
हृदय को आधार बनाकर

तुम्हारा यह अनुभव
किए जा रहा है चकित।"

'मुझमें किनारा ढूँढ़ता है समुद्र' के कवि हैं प्रह्लाद शतपथी। लगभग पचास कविताओं से भरपूर इस कविता–संग्रह में कवि के विभिन्न भावबोध अंकित हुए हैं। समुद्र का प्रत्येक पृष्ठ उसकी लहरें हैं। हर लहर में कवि समाधिस्थ है। अपने अंदर ही कवि समुद्र से जुड़ना चाहता है। जड़वत् बनते पलों को लेकर कवि कहता है–

"थोड़ी देर बाद तारे उभान हो जाएँगे
पहाड़ की तरह स्थविर हो जाएँगे आदमी
चिड़ियें बदल जाएँगी पेड़ों में
मेरी आँखों में किनारा ढूँढ रहा होगा
बूँद भर आँसू।"

समुद्र की तरह कवि आकाश को भी महसूस करता है। कवि के शब्दों में–

"शब्दों को मैं पहना सकता हूँ
डैनों की जोड़ी और
उड़ान भरने के लिए कहकर
मैं आकाश बन सकता हूँ।"

कवि ने धरती के अनेकानेक चित्र अपने कविता–संग्रह में अंकित किए हैं। कहीं मृदंग की धुन के साथ पृथ्वी के नृत्य का अंकन है तो कहीं अपने आप बहती चली जा रही नदी की कथा का रूपायन हुआ है। इनके बीच अपने को खोजने और पाने का प्रबल आकर्षण कवि की हर एक कविता में दृष्टिगोचर होता है।

कवि की प्रेमाभिव्यक्ति का एक उदाहरण द्रष्टव्य है–

"नदी का पानी अँजुरी में भरकर
छिड़क कर मेरे चेहरे पर
जो लड़की दुष्ट हँसी हँस रही थी
वह हँसी, महज हँसी नहीं
वह है डालखाई गीत।"

(डालखाई––पश्चिम ओड़िया का अत्यंत प्रसिद्ध लोकगीत)

वरिष्ठ कवि नृसिंह षडंगी का कविता–संग्रह 'आधा अधूरा रिश्ता' (आधा आधा संपर्क) विशेष रूप से चर्चित रहा है। नृसिंह की लगभग चालीस कविताओं के इस संग्रह में मेटाफर भरपूर हैं। आदमी की मरती जा रही मनुष्यता को लेकर कवि चिंतित

है। सामाजिक पतनोन्मुखता पर कवि का व्यंग्य है। वे तथाकथित मायाजाल से सम्मोहित नहीं होते। वे उस जाल को काट डालने के लिए शब्दों का अस्त्र–प्रयोग करते हैं। उनकी दृष्टि में एक अच्छे कवि का चेहरा ऐसा होना चाहिए कि उसे देखें तो समझ में आए कि वह एक प्रेमी है, अच्छा प्रेमी। सुबह की तरह सीधा सज्जन, रात की तरह रहस्य रोमांच से भरा हुआ और मध्याह्न की तरह जिद्दी। भाव और शब्द के संयोग को गहराई प्रदान करने में यह कवि सिद्धहस्त है। इतिहास और मिथक के सहारे कवि अपनी चिंता और चेतना को अभिव्यक्त करता है–

"कौन गाँधीवादी....
मैं, तुम, वे?
जो बाँटते हैं पानी
आग में झोंक देते हैं
दस महीनों का कष्ट सहने वाली
किसी की देवकी को।"

नृसिंह षडंगी की कविताओं में तीव्र आवेग है। हाल ही में प्रकाशित उनका कविता–संग्रह 'वंशीवादक' के माध्यम से यह साबित होता है। वह समझ गया कि ईश्वर होने से ज्यादा कष्ट है प्रेमी होने में। कृष्ण अपने ऐश्वर्य में शक्तिवान हो सकते हैं लेकिन प्रेमी रूप में अत्यंत मासूम और बहुत अधिक अकेले हैं। ऐसा प्रतीत हो सकता है कि 'वंशीवादक' का मिथ कृष्ण पर आधारित है लेकिन सच्चाई यह है कि उनका हर एक प्रेमोन्माद किसी आम आदमी के जैविक अनुभवों से कमतर नहीं है। इस कविता–संग्रह में सॉनेट भी शामिल है। प्रेम, संघर्ष, अनुराग, विराग, विच्छेद, स्वप्न, मोहभंग, निस्संगता, मासूमियत, आतुरता आदि में कृष्ण का राधा से प्रेम व्यंजित हुआ है। कृष्ण स्वीकार करते हैं कि वे इस प्रेम के ऋणी हैं। राधा भी कहती हैं–

"तुमसे कुछ पाने की इच्छा नहीं है मेरी
बस इतनी सी बात रखनी मेरी
आए चाहे जितने जन्म और मृत्यु
चिरकाल बाँधे रखना मुझे खुद से।"

कृष्ण का अंतिम अनुनय पढ़ा जा सकता है–

"मेरी देह ढँक दो
नील नदी के किनारे
लौटाए गए वस्त्र से

मेरी वंशी रख दो मेरे पास

सुर रहे तुम्हारे होठों पर।"

शत्रुघ्न पांडव आठवें दशक की ओड़िया कविता और आलोचना का एक परिचित नाम है। अब तक उनके आठ कविता–संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। कविता–सृजन हेतु उन्हें कई पुरस्कारों से नवाज़ा जा चुका है। कवि ने अपनी सौ कविताओं का चयन कर 'स्मरणीय शतक' शीर्षक से प्रस्तुत किया है। इस पुस्तक से गुजरकर कवि के काव्य–वैविध्य से परिचित हुआ जा सकता है। कवि की कविताओं में मिथक और इतिहासबोध का सुंदर समन्वय परिलक्षित होता है। पौराणिक कथा को आज के संदर्भों में नई चेतना के साथ कविता के साँचे में प्रस्तुत करने वाली उसकी रचनाएँ विशेष रूप से चर्चित हुई हैं। आलोच्य पुस्तक में शत्रुघ्न पांडव के लगभग पचास वर्षों के कवि–कर्म की एक बानगी मिल जाती है। दरअसल कवि के इस काव्य–विकास के माध्यम से ओड़िया कविता की विकास परंपरा भी समझी जा सकती है। पांडव की कविताएँ स्वतःस्फूर्त प्रतीत होती हैं। उनकी काव्य–भाषा पर कहीं गाँव–देहात तो कहीं लोक संस्कृति के प्रभाव के साथ–साथ बिंब, प्रतीक आदि के प्रयोग से अभिव्यक्ति की विविधताएँ परिलक्षित होती हैं। मिथकीय चेतना के साथ–साथ कवि की पर्यावरणीय चिंता भी अनेकानेक कविताओं में रूपायित हुई हैं।

अखिल कुमार मिश्र की काव्य–पुस्तक 'विषाद रास्ता' से गुजरकर स्पष्ट कहा जा सकता है कि प्रेम उनका जीवद्रव्य है। अपने अस्तित्व से प्रेम को अलग कर दें तो भला क्या बचा रहेगा? सच है कि यह प्रेम विषाद भी पहुँचाता है। फिर भी वही विषाद पथ में बदल जाता है। प्रेम, निस्संगता, स्वप्न, संभावना, अस्तित्व और जीवन चेतना का साक्षात्कार कराती हैं इस पुस्तक की कविताएँ। जीवन केवल वर्तमान में नहीं होता। अतीत और भविष्य तक उसकी जड़ें व्याप्त रहती हैं। अखिल की कविता की कुछ पंक्तियाँ पढ़ी जा सकती हैं–

"ठंडे हृदय के साथ मैंने

इच्छा के पंख खोल दिए

चलती राह के दोनों ओर

न जाने खिल उठे कितने पारिजात।"

अचानक रिश्ते बँध जाते हैं। जीवन की डोर मजबूत हो जाती है। कभी–कभार यह डोर टूट भी जाती है लेकिन जीवन ठहर नहीं जाता, रुका नहीं रहता। ऐसी जीवनधर्मी कविताएँ अखिल कुमार मिश्र की 'जीवन आइना' पुस्तक में संकलित हैं। कवि के शब्दों में–

"मुट्ठी भर विश्वास
बाँधे रखता है करोड़ों लोगों को
जब तक चलती है जीवन की दौड़
तब तक धरती बची रहती है।"

विश्वास, संवेदनशीलता, प्रेम, सुख–दुःख, आशा, निराशा आदि को कवि ने सांकेतिक शैली में कविता के रूप में व्यक्त किया है। समय की गति के साथ जीवन की गति के तालमेल को भी कवि ने प्रस्तुत किया है।

'महायज्ञ' अखिल कुमार मिश्र का एक अन्य कविता–संकलन है। इसमें विभिन्न भावबोध की कुल पैंतालीस कविताएँ सम्मिलित हैं। समकालीन मनुष्य, उसका जीवन, यंत्रणा और मानवताबोध को उज्जीवित करना अखिल की कविताओं का मूलमंत्र है। उनकी दृष्टि में यंत्रणा इतिहास का जीवाश्म बनकर नहीं आता है। यह यंत्रणा सदा जीवंत है। अखिल की कविताओं में कथाचरित्रों का आज के युगीन संदर्भों में चित्रण मिलता है। उदाहरणस्वरूप 'अहल्या' शीर्षक कविता की कुछ पंक्तियाँ पढ़ी जा सकती हैं–

"मैं हूँ हमेशा
प्रतीक्षारत
अतीत, वर्तमान, भविष्य
और इतिहास की चारदीवारी में।"

कवि ने आँसुओं से स्वप्न के फूल खिलाए हैं। यह स्वप्न विविधवर्णी और अनेक दुःखों का है–

"कुछ स्वप्न हैं
प्रेमिका के लाल होठों जैसे
फीके पड़ जाते हैं
शाम को
कुछ स्वप्न हैं
नीरव खोखले शंख जैसे
फुसफुसाते हैं कानों में।"

बदलते समय के साथ बहुत सारे लोग बदल जाते हैं। रिश्ते भी बदल जाते हैं। फिर भी कुछ ऐसे चरित्र होते हैं जो कभी नहीं बदलते। इन्हें दुनिया बुद्धू समझती है, लेकिन वे पूरी जिंदगी में अपने प्रेम को आधार बनाकर ही जीवित रहते हैं। कवि

के शब्दों में–

"बुद्धू आदमी देखता है
दूसरे का आँसू, दबे हुए कोट
देखता नहीं औरों की भूल
कौन जल्दी आया
कौन जल्दी लौटा
बुकु का घर
सदा रहता है खुला।"

'नदी का पानी दो द्वीपों तक' (नई पाणि दुइ कुदकु) के कवि हैं सत्यवादी राउत अभिनव और चमत्कृत करनेवाले बिंब, रूपक और श्लेष इनकी कविता का मूल वैशिष्ट्य है। उनकी कविता जितनी रोमांटिक है, उतनी ही विषादग्रस्त। प्रकृति, रहस्य, आशा, निराशा आदि भावों से उनकी कविताएँ भरपूर हैं। कवि ने जीवन चित्र के साथ मनुष्य के अंतःकरण का साक्षात्कार किया है। उनकी दृष्टि में–

"आदमी उड़ना जानता है
डूबना जानता है
लेकिन मिट्टी पर चलना नहीं जानता
आदमी बेचता है विवेक
आदमियत
यही अजीब है
जिस बंदर के शरीर पर
थोड़े से रुएँ होते हैं
वही मनुष्य है।"

कवयित्री सस्मिता कर की पुस्तक 'मिलने पर कहूँगा' (देखाहेले कहिबि) ब्लैक ईगल बुक्स, अमेरिका से प्रकाशित है। आम आदमी का जीवनचक्र हो अथवा प्रकृति प्रेम, कवि की रचनाओं में विशिष्ट स्थान प्राप्त है। 'मधुबाबू के साथ लड़ूँगा' एक बेहतरीन कविता है। इस कविता में जातीय अस्मिता का उत्कृष्ट उदाहरण विद्यमान है। पगड़ी पुरुष मधुसूदन दास के त्याग, संघर्ष, ज्ञान, विद्वत्ता आदि को कविता के माध्यम से उकेरते हुए सस्मिता कर लिखती हैं–

''काले घोड़े पर सवार होने
क्यों कहती है माँ

उस दिन समझ न सकी परी
आज खुद बन गई रेस का काला घोड़ा
दौड़ रही है परी
नयागढ़ से नयी सड़क तक।"

सरोजिनी षडंगी की कविता स्त्री जीवन के सुंदर चित्र उकेरती है। इनकी कविताओं में स्त्री की वेदना, हृदय की गहराई और उसकी बेचैनियों को असरदार ढंग से अंकित किया गया है। सरोजिनी की स्त्री ओड़िशा के केंद्रपाड़ा की दुखी सुजाता है तो सतत् संघर्षशील मलाला यूसुफजई भी है। कवयित्री स्त्री को उसकी शक्ति और सामर्थ्य से परिचित कराती हैं–

"नाभि में कस्तूरी है उसकी
मन में असीम शक्ति
चाहे तो परिक्रमा कर सकती है
अंतरिक्ष
भेद सकती है अगम पाताल
दोनों, भूलोक।"

समकालीन कविता में गीतों की रचना दिनोंदिन कम होती जा रही है लेकिन ओड़िया कविता में गीतों का सृजन प्रत्येक कालखंड में होता रहा है। 'गीत शतक' अर्चना नायक के सौ गीतों का संग्रह है। इनमें से सत्तर गीत प्रेमपरक हैं तो तीस गीत भक्तिपरक हैं। प्रेमगीतों में इंद्रियेतर प्रेम की अभिव्यक्ति है और भक्ति पर आधारित गीतों में शुद्ध भक्ति और भजन की। कवयित्री की कविता में उपमा, रूपक और प्रतीकों का सर्वाधिक प्रयोग परिलक्षित होता है। उनके गीत पाठकों के लिए हृदयस्पर्शी हैं। इनमें मान, अभिमान, विषाद, विरह और अकेलेपन के साथ क्षणभंगुरता के चित्र अंकित हैं। प्रेम पर आधारित गीतों में प्रेम कभी नासमझ नदी की तरह मिलन और विरह के दोनों किनारों को छूकर बहता जाता है तो कभी मन–मोहिनी चाँदनी रात की तरह है–

"चकोरी का मन मेरा
लिए चंद्रिका की तृषा
ताकती रहती हूँ आकाश
बूँद भर चंद्र मधु के लिए।"

अर्चना नायक के लिए पहाड़ देवता के समान है तो नदी देवी रूप में और माटी ममतामयी माता का प्रतिरूप है।

समकालीन ओड़िया कविता में स्त्री कवियों की लंबी परंपरा रही है। स्त्री रचनाकारों की कविता लेखन की धारा को आगे बढ़ाने के क्रम में 'कहानी का गाँव' (गपर गाआँ) के साथ सरोजिनी जेना का काव्य—जगत में प्रवेश एक सुखद घटना है। उनकी इधर—उधर से कुछ शब्दों के जोड़—तोड़ से कविता नहीं बनी है। यह कविता लिखने वाली लड़की को भली—भाँति पता है। उसे ही मालूम है कि आँसू को सजाकर रखने में सीने को कितनी खोज करनी पड़ती है। न केवल आँसू बल्कि होठों की हँसी, आवेगों से भरपूर भावों के साथ स्वप्न और स्वप्नभंग, प्रेम और विषादबोध, विश्व और विश्वासबोध को कवयित्री ने सुंदर ढंग से कविता के साँचे में पिरोया है। सरोजिनी की कविता में समाज, जीवन, समय और संबंध की चिंता परिलक्षित होती है।

प्रसिद्ध जर्मन कवि रिल्के ने अपनी 'लेटर्स टू यंग पोएट' में लिखा है कि दुनिया में बहुत सारी बातें न समझी जाती हैं और न कही जाती हैं। प्रायः जो कही नहीं जाती हैं और जहाँ शब्द कभी भेद नहीं सकते हैं, ऐसी अव्यक्त बातें कला का वर्ण्य—विषय हो सकती हैं। दिलीप नायक का सद्यः प्रकाशित कविता—संकलन 'स्मृति का ईश्वर' (स्मृतिर ईश्वर) ऐसे वर्ण्य—विषय को आधार बनाने वाली एक प्रभावशाली पुस्तक है। इसमें एक अनुपस्थित—उपस्थित, एक रहस्यमय 'तुम' की कल्पना और स्मृति का आवर्तन सर्जनात्मक शक्ति के रूप में प्रतिफलित है। इस अनुपस्थित की उपस्थिति को ढूँढना, समझना और उससे निरंतर जूझना आदि के चित्र कविताओं में मौजूद हैं। प्रतीकात्मकता, रूपात्मकता, बिंबधर्मिता और सटीक शब्दावली के प्रयोग के कारण तथा अफोरिस्टिक शैली आदि के प्रयोग से इस संग्रह की कविताएँ ओड़िया कविता की धारा को नया रूप प्रदान करने में समर्थ प्रतीत होती हैं। जिस प्रकार टेनिसन की 'इन मेमोरियम' की आध्यात्मिकता पर विचार करते हुए इलियट ने कहा था कि वे कविताएँ उनके विश्वास की सांद्रता के लिए नहीं बल्कि सहजता और विशुद्धता के लिए आध्यात्मिक कोटि की हैं, ठीक इसी तरह दिलीप नायक की कविताएँ उनके अन्वेषण की सच्चाई के लिए एक प्रकार की विशिष्टता से भरपूर हैं।

ममता दाश ओड़िया कविता की एक स्वनामधन्य कवयित्री हैं। हाल ही में प्रकाशित उनके 'भूमिस्पर्श' कविता—संग्रह ने पाठकों को खूब आकर्षित किया है। समय के साथ परिस्थितियाँ बदल रही हैं लेकिन काव्यनायिका का विरहसंतप्त हृदय पूर्ववत् कायम ही है। विभिन्न समस्याओं तथा दु:ख—कष्ट के वातावरण से यह काव्य—नायिका अत्यंत परिचित है। न केवल परिचित बल्कि इससे परे मुक्ति की कल्पना की दुनिया में उसे लगता है कि इसके जरिए उसे प्रवेश मिलता है। 'आलाप' (संवाद), 'रहस्य', 'राति' (यह रात) शीर्षक कविताओं से गुजरकर कवयित्री के काव्य—वैभव से परिचित हुआ जा सकता है। कवयित्री का मानना है

कि अंधेरा न तो पीछा छोड़ता है और न ही रास्ता छोड़ता है। अत्यंत सहज–सरल ढंग से सत्य को प्रस्तुत करते हुए चमत्कार उत्पन्न करना ममता दाश की कविता का वैशिष्ट्य है–

"सच को झूठ मान लेना
और झूठ को सच
आदत में तब्दील हो चुका
आदत–सा हो गया है
ग्रीष्म की धूप लेपित कर
हँसते–हँसते चलते जाना।"

विद्या पब्लिशिंग इंक, टोरंटो, कनाडा से प्रकाशित धरणीधर त्रिपाठी की 'क्लांत अपराह्न की प्रतिश्रुति' (क्लांत अपराह्न प्रतिश्रुति) में प्रेम से लेकर मिथ तक विविध वर्णों की कविताएँ संकलित हैं। इस कविता– संग्रह का उपशीर्षक है– 'कुछ स्मृतियाँ कुछ स्वप्नों की कविताएँ।' धरणीधर की कविताओं में आवेग और अनुराग तथा स्मृति और स्वप्न घुले–मिले हैं।

कहानी

मटमैला मध्याह्न (धूसर मध्याह्न) जितेंद्र परिड़ा की कहानियों का संग्रह है। इस संग्रह की कहानियों के माध्यम से स्पष्ट है कि समय बदलता है लेकिन समय के साथ सब कुछ बदलता नहीं। जो कुछ भी अपरिवर्तित रह जाता है, वही कहानी की पृष्ठभूमि बनकर सामने प्रकट होता है। कथाकार ने प्रेम को मानव और परा–मानव के रूप में प्रस्तुत किया है। 'संभावना के स्वर' शीर्षक कहानी में कथानायक ने अविनाश की स्त्री के साथ पूर्णिमा की तुलना की है– एक शिक्षित है तो दूसरी अर्ध शिक्षित। एक सामाजिक कुसंस्कार और अंधविश्वास में भरोसा रखती है तो दूसरी कोढ़ की बीमारी से ग्रसित बीमार के साथ रहती है। कई कहानियों से गुजरकर पाठक भाव–विह्वल हो उठता है। कहानीकार के पात्र पाठकों को खूब प्रभावित करते हैं। संग्रह की कुल इक्कीस कहानियाँ कहानीकार की चिंता और चेतना से परिचित कराती हैं।

कथाकार तरुण कुमार साहू की 'प्रार्थना और अन्यान्य' शीर्षक कथा–पुस्तक में संकलित कुल बारह कहानियाँ समकाल जीवन–यथार्थ का चित्र प्रस्तुत करती हैं। असहाय मनुष्य के लिए प्रार्थना ही एकमात्र मार्ग शेष रह जाता है। कहानी–संग्रह की पहली कहानी 'प्रार्थना' है। इसके माध्यम से असहायता का चित्रण किया गया है। यही असहायता कभी–कभी अपराध करने के लिए उकसाती है। ऐसे में मनुष्य को कोई उपाय नहीं सूझता है। इस संग्रह की एक उल्लेखनीय कहानी है 'इज्जत'। इस कहानी में सास कहती है– "एक बड़ा पाप करने के पहले मैंने छुरे से उसका गला

काट डाला।" नाटकीय उत्सुकता बनाए रखने में कहानी समर्थ प्रतीत होती है। साहित्य की दुनिया में पुरस्कार एक धंधे में तब्दील होने लगा है। 'मुखौटा' (मुखा) कहानी में सामाजिक पतनोन्मुखी स्थितियों का अंकन है। नौकरीपेशा बेटे पिता–माता को बोझ समझते हैं। इसे लेखक ने 'विडंबना' शीर्षक कहानी के माध्यम से उकेरा है।

कहानीकार कमलिनी मल्लिक का नया कथा–संग्रह 'उफनती यमुना' (उफणि यमुना) है। अँधेरे से उजाले की यात्रा आसान नहीं होती है। कहानी की नायिका सविता प्रतिकूल परिस्थितियों से जूझते हुए प्रकाशोन्मुखी होने में सफल होती है। डी.सी.पी. राकेश सामंत की काम–वासनाओं से जलकर वह राख नहीं होती। उसने आलोक को जन्म देकर महसूस किया है– "कभी विश्रवा ऋषि के यहाँ रावण तो कभी राक्षस हिरण्यकश्यप के घर भक्त प्रह्लाद का जन्म होता है।" पुस्तक की प्रारंभिक कहानी 'अंधेरे में उजाला' में मातृत्व को कथा–सूत्रों में पिरोया गया है। पिता के हृदय की विशालता को आधार बनाकर 'आकाश जैसे पिता' की अवतारणा की गई है। बहू से अपमानित होकर भी प्रभाकर अपने बेटे को कुछ भी नहीं बताते हैं। बल्कि वे गाँव वालों के सामने बहू–बेटे की प्रशंसा करते हैं। पुत्र अमिय अपने पिता की महनीयता को अच्छी तरह महसूस कर पाता है जब अपने नवजात शिशु पुत्र को देखता है। उसे प्रतीत होता है कि उसके पिता इस शिशु पुत्र के रूप में जन्मे हैं। समाज, समय और संबंधों के विविध चित्र अंकित करने में कमलिनी मल्लिक को विशेष ख्याति अर्जित हुई है।

'कृष्णचूड़ा की हँसी और अन्यान्य गल्प' (कृष्णचूड़ार हंस ओ अन्यान्य गल्प) शीर्षक कहानी–संग्रह वीरेश्वर मोहंती का है। सच है कि जीवन हमेशा सरल और सपाट नहीं होता लेकिन वक्त रहते उसमें सुधार लाया जाए तो उसे अमृतमय बनाया जा सकता है– 'कृष्णचूड़ा की हँसी' कहानी का नायक रतन ऐसा सोचता है। आदमी के साथ आदमी का अपनापन इस पुस्तक में कथा के बहाने प्रस्तुत किया गया है। 'विज्ञापन', 'सुमन का मन', 'अंतिम साक्षात्', 'कुलमणि का कुल–उद्धार' आदि कहानियों में यथार्थ और कल्पना का सुंदर समन्वय है। छोटे आकार की व्यंग्यात्मक कहानियाँ अधिक प्रभावी हैं। इन कहानियों में आशा, आकांक्षा, प्राप्ति, अप्राप्ति, स्वप्न और स्वप्नभंग के अनेक दृश्यों का सुंदर अंकन हुआ है।

कहानीकार गंगाधर विश्वाल की कहानी पुस्तक 'सुकांति का इंदिरा आवास' (सुकांतिर इंदिरा आवास) में पच्चीस कहानियाँ संकलित हैं। इनमें से कई कहानियाँ पाठकों के हृदय को द्रवित करती हैं। एक कहानी जरूरतमंद लोगों के लिए सरकारी योजना का लाभ पहुँचाने को लेकर केंद्रित है। कोरोना काल के भयानक रूप का चित्रण 'आगरे पछरे' (आगे–पीछे) शीर्षक कहानी में हुआ है। सामाजिक प्रतिबद्धता गंगाधर विश्वाल की कहानियों का मूल वैशिष्ट्य है। सामाजिक, आर्थिक और

सांस्कृतिक संदर्भों को अपनी कहानियाँ में प्रस्तुत करने वालों में गंगाधर विश्वाल का नाम आदर के साथ लिया जा सकता है।

'दो बूँद आँसू' (दुइ टोपा लुह) विशिष्ट कहानीकार दाशरथी आचार्य का कहानी–संग्रह है। 'रेडियो' एक प्रतीकात्मक कहानी है। टेपरिकार्डर और टीवी घर लाने के बाद रेडियो की जो हालत होती है, वैसी स्थिति स्नेहलता देवी की है। यह निश्चित तौर पर एक मार्मिक कहानी है। रिश्ता कब किससे मजबूत हो जाए, इसे केवल समय ही जानता है। 'दो चूड़ियाँ' शीर्षक कहानी में यमुना और विजया के रिश्ते में भी ऐसा घटित होता है। दोनों एक–दूसरे से पराजित होने जैसा महसूस करती हैं। कहानीकार की कई कहानियों में नाटकीयता है। कहानियों में जीवन के भिन्न–भिन्न दृश्य मौजूद हैं।

कहानीकार प्रद्युम्न पट्टनायक ने 'शुचिस्मिता की कहानी' पुस्तक में सामाजिक जीवन और अंगों से निभाए गए अर्थात् अनुभवों को कथा के बहाने व्यंजित किया है। उन्होंने हर तरह के पात्रों को अपनी कहानियों में चित्रित किया है तथा इन पात्रों और चरित्रों का प्रतीकात्मक रूप प्रस्तुत किया है। सिंदूर, कुत्ते आदि का प्रतीकात्मक शैली से वर्णन किया है। मसलन कुत्ते के साथ मनुष्य का रिश्ता कितना गहरा और मजबूत हो सकता है, उसे 'कुकुर' कहानी के माध्यम से समझा जा सकता है। इधर प्रचलन में आए 'लिव इन रिलेशन' को आधार बनाकर इस संबंध के विविध पहलुओं को 'सहवास' शीर्षक कहानी में रूपायित किया गया है। इस रिश्ते की संभावनाओं और सीमाओं तथा चुनौतियों और सामर्थ्य को कथाकार ने बड़ी खूबसूरती के साथ उकेरा है। पुस्तक की शीर्षक कहानी में शुचिस्मिता के व्यक्तित्व, प्रेम और साहित्य के क्षेत्र में उसके उत्थान को सुंदर ढंग से पिरोने में कहानीकार सफल रहा है। कहना न होगा कि प्रद्युम्न के कथा–लेखन में वैविध्य है। यह विविधता कथा–प्रसंग और उसकी शैली में परिलक्षित होती है। उनके पास कथा कहने की अपनी शैली है। संवेदनाओं के विविध धरातल पर प्रद्युम्न पट्टनायक की कहानियाँ विशेष रूप से ध्यान आकर्षित करती हैं।

कथा–लेखन में अपनी विशिष्ट पहचान बनाने वालों में राधामोहन महापात्र का नाम भी लिया जा सकता है। इधर उनका नया कहानी–संग्रह प्रकाशित हुआ है। इसका शीर्षक है 'मेरी जंगल की कहानियाँ और जन की कथाएँ' (मो वन काहाणी और जन कथाणी)। जैसा कि शीर्षक से स्पष्ट है, इस संग्रह में दो तरह की कहानियाँ संकलित हैं। पहले भाग में जंगल से जुड़ी कहानियाँ तो दूसरे भाग में जन से संबंधित कहानियाँ हैं। बाल्यकाल में बाघ, चीता, अजगर, हाथी आदि वन्य–प्राणियों के संबंध में तमाम कथाएँ सुनाई जाती हैं। चीते की चतुराई, अजगर की पीठ पर सवार होकर सफर करना, हाथी का हत्यारा रूप, बाघ को मामा के रूप में ऐसी जाने कितनी कथाएँ

प्रचलित हैं। इन कहानियों में रहस्य और रोमांच का समन्वय दिखाई पड़ता है। दूसरे प्रकार की रचनाओं में परिवार, समाज, समय आदि से जुड़ी समस्याओं को कथावस्तु का आधार बनाया गया है। इनमें व्यंग्य और यथार्थ के माध्यम से कथाकार की रचना–दृष्टि का परिचय मिलता है। दोनों प्रकार की कहानियों में लेखक का सार्वजनीन मूल्यबोध विद्यमान है।

इक्कीसवीं सदी तक आते–आते धर्म, साधु, मठ, मंदिर, गिरजाघर आदि के प्रति समाज की दृष्टि में बड़ा बदलाव आया। इस बदलाव के लिए धार्मिक संस्थानों के कुकृत्य जिम्मेदार हैं। यूँ तो साधु–संत, फ़क़ीर के भेष में भोली–भाली जनता को धर्म के नाम पर लूटना सदियों पुराना है लेकिन भूमंडलीकरण के बाद लूट, हत्या, शोषण आदि में इन संस्थानों ने बड़ी सक्रियता दिखाई। इस परिदृश्य को सविता पट्टनायक ने 'ईश्वर पुत्र' (ठाकुर पुअ) शीर्षक कहानी में प्रस्तुत किया है। कथाकार की दृष्टि में धर्मगुरु, बाबा, आश्रम और मठ मनुष्य को सही रास्ता दिखाते हैं, यह कहना तो मुश्किल है लेकिन यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि वे मनुष्य को लूटते अवश्य हैं। 'ईश्वर पुत्र' कहानी में इस भावबोध का खुलासा किया गया है। इसकी निम्न पंक्तियाँ पठनीय हैं– "मठ कहो, मंदिर कहो, वहाँ बिताए गए दिन बड़ी सास के लिए असह्य थे। दिन में उपवास रहकर ठाकुर की सेवा करना और रात में पुजारी के शारीरिक पीड़न से गुजरना। इससे उनके मन में जीवन के प्रति एक नकारात्मक सोच उत्पन्न हो गई थी।" इसी तरह बुजुर्ग दम्पति के सुख–दुःख भरे जीवन संग्राम के चित्र 'युद्धपिता' कहानी में अंकित हैं। आजीवन प्रतिकूल परिस्थितियों से जूझते हुए भी इस दम्पति को किसी से कोई शिकायत नहीं है। घर, परिवार, प्रेम से संबंधित कहानियों के साथ–साथ सामाजिक और आर्थिक संदर्भों से जुड़ी हुई कहानियों को भी इस संग्रह में स्थान दिया गया है।

देवव्रत मदनराय ओड़िया कथा साहित्य का एक अत्यंत परिचित नाम है। उनके सद्यः प्रकाशित कहानी–संग्रह 'साबरमती का गीत' (साबरमतीर गीत) में परिवर्तित सामाजिक मूल्यबोध और व्यक्ति चरित्र के बहुविध वैचित्र्य से साक्षात्कार होता है। मानववादी चेतना, चरित्र–चित्रण संबंधी सूक्ष्मता, संवेदनशील बेचैनी, आवेगमयी भाषा एवं शैली के कारण उक्त संग्रह की कुल पंद्रह में से अधिकांश कहानियाँ जीवंत प्रतीत होती हैं। 'साबरमती का गीत' शीर्षक कहानी की साबरमती को पाठ याद नहीं होता पर वह अच्छा गीत लिखती है। घर की दीवारों पर भी वह अनजाने में कितने गीत रच डालती है। वह बी.ए. पास नहीं कर पाती। विवाह के लिए अच्छे प्रस्ताव नहीं आते। उसके कष्ट को सुनीता के पिता महसूस कर पाते हैं। आदर्श, आवेग और क्रूर यथार्थ को 'साबरमती का गीत' कहानी प्रस्तुत करती है।

मन के दुःख और विषाद बाँटने में एक उल्लासबोध होता है। ऐसा चितरंजन

बेहेरा के 'अपने–अपने दुःख' (निज–निज दुःख) कहानी–संग्रह से गुजरकर प्रतीत होता है। कुल चौदह कहानियों के माध्यम से कहानीकार ने अपने जीवनानुभव को व्यक्त किया है। कहानियों के पाठ से लेखक की चिंता और चेतना का परिचय मिलता है। गाँव और ग्रामीण जीवन के यथार्थ को भी कहानी के माध्यम से अंकित किया गया है। प्रत्येक मनुष्य का अपना–अपना दुःख होता है। दुःख भुगतने वाला आदमी हर पल सुख की तलाश कर रहा होता है। कहानी के कलेवर में पात्र घूमते हुए नजर आते हैं लेकिन कथाकार की गाँव और उससे संबंधित पात्रों पर आधारित कहानियाँ अधिक जीवंत और मार्मिक हैं। इस संग्रह से स्पष्ट पता चलता है कि दुःख भी एक सुंदर, शिष्ट और समन्वित जीवन जीने के लिए आह्वान करता है।

उपन्यास

'किशोरी अस्मिता की हत्या का रहस्य' (किशोरी अस्मितार हत्या रहस्य) शीर्षक पुस्तक स्वरूप कुमार नायक की रहस्य–रोमांच से भरपूर कथा है। संस्कारवान पिता–माता की अस्मिता के अपहरण और हत्या के प्रसंगों को लेखक ने बड़ी खूबसूरती से उकेरा है। इस मामले की तहकीकात युवा पुलिस अधिकारी स्वरूप कुमार करते हैं। उनका सहयोगी पार्थ है। किशोरी की हत्या का मामला अत्यंत संवेदनशील होने के चलते स्वरूप कुमार और पार्थ तमाम मुश्किलों का सामना करने पर भी खोजबीन जारी रखते हैं। तमाम संदिग्ध पात्रों से पूछताछ जारी रहती है। इससे कथा–औत्सुक्य बढ़ जाता है। इस रहस्य कथा से उपन्यास की गतिशीलता ही नहीं बल्कि किसी अनुसंधानकारी को कैसी तैयारी करनी पड़ती है, उसका भी सविस्तार वर्णन मिलता है। स्वरूप कुमार पार्थ से जो कहते हैं, वह उपन्यास का मूल तत्व है– "संदेह हमेशा सभी पर बनाए रखना। कोई भी किसी भी हालत में संदेह से परे नहीं है।"

'आकाश के लिए सीढ़ी' (आकाशकु शिड़ि) एक उपन्यास है। इसके रचनाकार गुणग्राही दास हैं। आम आदमी को विकास और विनाश के बीच फर्क का पता कम चल पाता है। यह इसलिए कि वह अपने दुःख और कष्ट से लड़ रहा होता है। इस संदर्भ में सरकार नहीं बल्कि संवेदनशील मनुष्य का दायित्वबोध उनके कष्टों को थोड़ा हल्का करता है। परदेश में रहने वाला उपन्यास का नायक सृजन अपने गाँव वालों के मन को हल्का कर देता है। इस उपन्यास में काल्पनिक विकास नहीं बल्कि सच्चे विकास के लिए संघर्षपूर्ण कहानी का ताना–बाना बुना गया है। इसमें आम आदमी के विकास और प्रचलित व्यवस्था में निरंतर चलने वाली टकराहटों को विशेष रूप से अंकित किया गया है। आज के युगीन यथार्थ को उपन्यासकार ने प्रभावी ढंग से व्यक्त किया है।

पत्र–शैली में रचा गया शुभश्री शुभस्मिता मिश्र का उपन्यास 'इति, तुम्हारी मैं'

प्रेम की व्याप्ति को उद्घाटित करता है। यह देह और देहातीत प्रेम के द्वंद्वात्मक सूक्ष्म विचार को स्पष्ट करता है। उपन्यास में प्रेम में पारस्परिक सम्मानबोध का सर्वाधिक महत्त्व दर्शाया गया है। इस पुस्तक में प्रयुक्त भाषा में काव्यमयी प्रवाह है जो पाठक को उल्लसित करने में समर्थ है। इसके प्रारंभ से ही पाठक की उत्सुकता और कौतूहल बना रहता है। पाकर खोने और खोकर पाने के सहज वैचिष्य से पाठक परिचित होता है। कथा नायिका कहती है– "तुम रहो अदृश्य और मैं नीरव कोलाहल की तरह। प्रेम को अपवित्र कहने वाले समाज हमें निर्वासित करो। इसमें क्या हानि है? यह रात ही तो हमारे हिस्से में बची हुई है। यह तुम्हारे होने का भ्रम बना रहे।"

नाटक

अंधेरे की विभीषिका (अंधारर बिभीषिका) विजय कुमार शतपथी की चर्चित पुस्तक है। आजादी के बाद गाँधीवाद का जो पराभव शुरू हुआ था, इक्कीसवीं सदी तक उसमें और भी गिरावट आई। बावजूद इसके, तमाम प्रतिकूल हालातों से जूझते हुए गाँधी युग का एक आदर्शवादी योद्धा नरहरि सीना तानकर खड़ा हो जाता है। पल्टन मैदान में गुंडों ने गाँधी की प्रतिमा तोड़ दी तो नरहरि टूट–से जाते हैं। वे कहते हैं– "बोलो मैं कहाँ जाऊँ? मेरे मंदिर में तो देवता नहीं हैं। मैं कहाँ जाऊँ? फूल–चंदन किसे चढ़ाऊँ? किसकी पूजा करूँ? गाँधी महात्मा, गोपबंधु, वन विद्यालय का गुरुकुल, पूज्य नेता नव कृष्ण चौधरी, भगवती पाणिग्राही..... किसने तोड़ीं उनकी मूर्तियाँ... किसने?" नरहरि का मरते दम तक यह विश्वास था कि गाँधीवाद की कोई मृत्यु नहीं है। गाँधीजी ने अपनी अंतिम घड़ी में 'हे राम' कहा था। नरहरि के अंतिम शब्द थे– "अंधेरे की सुरंग.......कहाँ है प्रकाश की शिखा?" उनका मानना था कि एक दिन अंधकार का मार्ग जरूर खत्म होगा। शुभ घड़ी आएगी। 'अंधेरे की विभीषिका' मंचन तथा पठन–पाठन की दृष्टि से सफल नाटक है। पात्रानुकूल भाषा और नाटकीय उत्कंठा के कारण पाठक अथवा दर्शक इस नाटक से बँधे रहते हैं।

एकांकी त्रयी (एकांकिता त्रयी) के लेखक सीतेश त्रिपाठी हैं। जैसा कि पुस्तक के शीर्षक से जाहिर होता है, इसमें तीन एकांकी संकलित हैं। ये हैं– ईश्वर भस्मासुर उपाख्यान, युद्ध शेष है (युद्ध सरिनाहिं) और नये विप्लव का नक्सा (नुआ विप्लवर नकसा)। पुराण के बहाने आतंकवाद की रोमांचक कथा को पहली एकांकी में प्रस्तुत किया गया है। अमेरिकी पूँजी तथा अस्त्र–शस्त्रों से शक्तिशाली बना तालिबान ओसामा–बिन–लादेन के नेतृत्व से भस्मासुर बन गया था। दूसरे एकांकी में कारगिल में पाकिस्तान से युद्ध की कथा को आधार बनाया गया है। तीसरे एकांकी में अमानवीयता के विरुद्ध जंगल के जीव–जंतुओं की विद्रोह–कथा का चित्रण हुआ है। कहना न होगा कि तीनों एकांकियों के माध्यम से व्यक्ति और राष्ट्र के लिए जागरूकता का संदेश दिया गया है।

निबंध

निबंध और आलोचना विधाओं पर केंद्रित संघमित्रा मिश्र की पुस्तक 'श्रद्धा का उत्तर दिगंत' (श्रद्धार उत्तरित दिगंत) पाठकों का ध्यानाकर्षण करती है। इसमें 'अग्निः निष्ठा और उज्ज्वल का प्रतीक' एक उल्लेखनीय निबंध है। कहीं सांप्रदायिकता की आग में स्वस्थ और सुंदर समाज भस्म हो रहा है तो कहीं ईर्ष्या की अग्नि में भाईचारा और बंधुत्व की भावना राख बनती जा रही है। इसका आशय यह नहीं है कि अग्नि विध्वंसकारी है। संघमित्रा ने अग्नि के सकारात्मक रूप को चित्रित किया है। उन्होंने 'ओड़िया के सामाजिक इतिहास को जगन्नाथ दास का अवदान' शीर्षक आलोचनात्मक लेख में न केवल सामाजिक जीवन की चर्चा की है बल्कि इसने परवर्ती साहित्य को किस रूप में प्रभावित किया है, इसका आकलन करते हुए यह स्थापित किया है कि ओड़िया कहानी पर भागवत का प्रभाव अतुलनीय है। ओड़िया संगीत पर केंद्रित निबंध भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। इस पुस्तक में लेखिका ने मध्यकालीन साहित्य से लेकर समकालीन ओड़िया साहित्य की चर्चा की है। एक ओर जगन्नाथ दास, अच्युतानंद दास की कृतियों पर विचार है तो दूसरी ओर समकालीन रचनाकार रवि पट्टनायक, शांतनु कुमार आचार्य आदि की कृतियों का सम्यक् विवेचन है।

भाषा साहित्य को आधार बनाकर निबंध और आलोचना की पुस्तक 'दृष्टि और दृष्टिकोण' में लेखक प्रसन्न कुमार मोहंती ने साहित्य के सैद्धांतिक, तथ्यात्मक, विचारपरक विश्लेषण प्रस्तुत किए हैं। ओड़िया भाषा–साहित्य, लिपि संस्कार, कहानी, कविता, उपन्यास, व्यंग्यात्मक रचना आदि को भी केंद्रित करके आलोचनापरक निबंध लिखे गए हैं। इसके जरिए कुछ प्रमुख साहित्यकारों की कृतियों के सौष्ठव एवं विशिष्टताओं का उल्लेख मिलता है। लेखकों के साहित्यिक जीवन और जीवन–दृष्टि को 'मेरा जीवन और मेरा साहित्य' शीर्षक अध्याय में विवेचित किया गया है। पुस्तक के अंतिम भाग में साहित्येतिहास लेखन संबंधी एक आकलन को प्रस्तुत किया गया है।

'सरस रस' ललित निबंध पुस्तक है। सुभाष पट्टनायक इसके लेखक हैं। दरअसल 'सरस रस' नामक एक स्तंभ लेखक ने समाचार पत्र में लिखना शुरू किया था। इस स्तंभ के अंतर्गत निबंधों में निहित जीवन–दर्शन और आकर्षक शैली ने पाठकों को खूब लुभाया था। इस स्तंभ के अंतर्गत प्रकाशित निबंधों में से सौ ललित निबंधों का चयन करते हुए उसे पुस्तकाकार रूप दिया गया है। लेखक ने निबंधों के रचनाकाल की जगह उन्हें अकारादि क्रम में पुस्तक में शामिल किया है। इन निबंधों में प्रसंगानुकूल देहाती बोली, मुहावरे, कहावतें, शायरी, कविता, गीत, श्लोक आदि का प्रयोग किया गया है। यह लेखक की अनन्यता और सफलता का उदाहरण है। कम से कम शब्दों में छोटे वाक्य के सहारे बड़ी बात कहने का सामर्थ्य पाठकों को चमत्कृत

करता है। जीवन, मृत्यु, हास्य–क्रंदन, सही–गलत, बाल्यकाल, वृद्धावस्था, पाप–पुण्य, धर्म–विज्ञान, त्याग–स्वार्थपरता आदि तमाम विषय लेखक के ललित निबंधों में सुंदर रूप से उभरे हैं। जीवन के विविध कष्ट, हताशा, नकारात्मकता के बीच सौंदर्यबोध का अन्वेषण करते हुए उम्मीद और सकारात्मक सोच को बढ़ावा देना उनके निबंधों का मूल वैशिष्ट्य तथा लेखकीय रचनादृष्टि का उत्कृष्ट उदाहरण है।

'गौरहरि दास की सृष्टि समीक्षा' (गौरहरि दासंक सृष्टि समीक्षा) ज्योति साहू की संपादित पुस्तक है। इसमें गौरहरि दास की कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध आदि विधाओं का आलोचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। इस पुस्तक के माध्यम से गौरहरि दास के रचना–संसार से भली–भाँति परिचित हुआ जा सकता है।

आलोचना

'उत्तर अस्सी : गल्प विभव' ओड़िया कहानी पर केंद्रित आलोचनात्मक पुस्तक है। समकालीन ओड़िया कहानी नई चिंता और चेतना से पुष्ट है। इसके केंद्र में मनुष्य है। उसके जीने की कला को कहानीकारों ने सुंदर ढंग से रूपायित किया है। इस पुस्तक में 1980 की परवर्ती कहानियों के वैभव को प्रस्तुत किया गया है। बदलते परिदृश्य में कहानी की बदलती धारा के बारे में लेखक का मानना है कि 1991 के बाद का कथा साहित्य भूमंडलीकरण के प्रभाव से मुक्त नहीं हो पाया है। संपूर्ण विश्व को एक ग्राम की दृष्टि से देखना, मुक्त जीवन–शैली को प्रोत्साहित करना आदि के प्रभावों को कहानियों में अन्वेषित किया गया है। प्राचीन परंपरा और संस्कृति को किस प्रकार भूमंडलीकरण प्रभावित कर रहा है, इसका भी विश्लेषण अस्सी के परवर्ती कथा साहित्य में अन्वेषित किया गया है। ओड़िया कथा साहित्य की अद्यतन गति और प्रकृति को समझने के लिए यह पुस्तक अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो सकती है।

'आधुनिक ओड़िया गीति कविता' में केशवचंद्र दलाई में 1950 से 2000 तक रचित ओड़िया गीति कविता का अनुशीलन किया है। इसमें गीति कविता, उसके स्वरूप और प्रकार भेद के बारे में सविस्तार विश्लेषण किया गया है। आधुनिक गीति कविता की पृष्ठभूमि और विकास–यात्रा को कालक्रमानुसार विवेचित भी किया गया है। प्रमुख ओड़िया गीतकारों–शिवव्रत दास, जीवनानंद पाणि, नारायण प्रसाद सिंह, गुरुकृष्ण गोस्वामी, नंदकिशोर सिंह, गौर पट्टनायक, शरत् चंद्र रथ आदि की जीवनी, उनके रचना–संसार और काव्यगत विशेषताओं पर भी प्रकाश डाला गया है।

स्वातंत्र्योत्तर काल में कथाशिल्पी किशोरीचरण दास का ओड़िया साहित्य–संसार में उल्लेखनीय स्थान है। किशोरीचरण के जन्मशताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में देवव्रत मदनराय और विजयानंद सिंह के संपादन में यशस्वी कथाकार के रचनाजगत को केंद्रित करते हुए 'शताब्दी के कथाशिल्पी किशोरीचरण' शीर्षक पुस्तक का प्रकाशन

हुआ है। लगभग आधी शताब्दी की अपनी रचना–यात्रा में बीस कहानी–संग्रह, आठ उपन्यास, छह निबंध–संग्रह, दो काव्य–पुस्तकों के अलावा यात्रा वृत्तांत, आत्मकथा और अनुवाद द्वारा इस साहित्य को समृद्ध करने में इस साहित्यकार के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। किशोरीचरण की कहानियों में निहित कहानीपन, व्यंजना, कला और मनोवैज्ञानिक तत्वों को उद्घाटित किया गया है तो उनके उपन्यासों में व्यक्त गाँधीवादी विचारों का भी विवेचन किया गया है। ओड़िया साहित्य के महत्त्वपूर्ण रचनाकारों यथा प्रतिभा राय, विमल प्रसाद दास, मानसी दास, जगन्नाथ प्रसाद दास, अमरेश पट्टनायक, गौरहरि दास आदि के लेखन से सुसज्जित इस संपादित पुस्तक का विशेष महत्त्व है।

'उत्तर आधुनिकता और ओड़िया साहित्य' क्षीरोद चंद्र बेहरा की आलोचनात्मक पुस्तक है। संपूर्ण विश्व में उत्तर आधुनिकता सर्वाधिक चर्चित विषय है। लेखक ने इस विचारधारा के आधार पर ओड़िया साहित्य का आकलन प्रस्तुत किया है। उत्तर आधुनिकता की अवधारणा और स्वरूप पर भी उसने सविस्तार चर्चा की है। इसमें आधुनिकता और उत्तर आधुनिकता को समृद्ध करने वाले विभिन्न कथा साहित्य की भी आलोचना की गई है। फकीरमोहन सेनापति की कहानी 'सभ्य जमींदार' में औपनिवेशिक आधुनिकता को आधार बनाया गया है। इसी तरह उत्तर आधुनिक 'सरीसृप' का विश्लेषण किया गया है। राजकिशोर पट्टनायक, जगदीश मोहंती, गिरि दंडसेना आदि की कृतियों को भी इस पुस्तक में आलोचना के अंतर्गत रखा गया है। कविता के क्षेत्र में उत्तर आधुनिक विचार के आलोक में आलोचक ने विपिन नायक के काव्य लेखन को आधार बनाया है।

कथेतर विधा

'स्वयंसिद्धा की आत्मकथा' (स्वयंसिद्धार आत्मकाहाणी) कथेतर विधा की एक चर्चित पुस्तक है। गिरीश बाला मोहंती ने अपने जीवन के विविध अंगों, संघर्षों और सफलताओं के माध्यम से अपने समय और समाज का चित्रण किया है। इसमें स्मृतियाँ तो हैं लेकिन इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह आपबीती से अधिक जगबीती है। आत्मकथा में अपनी कथा से अधिक अपने समय और समाज की मौजूदगी है।

गोविंद चंद्र सामल एक नामी बाल (रोग) चिकित्सक हैं। वे मेडिकल कॉलेज के अध्यक्ष के रूप में भी काम कर चुके हैं। उनके जीवन में घटनाओं का बाहुल्य है। उन्होंने अपनी जीवन–यात्रा की कुछ स्मृतियों और अनुभवों के आधार पर आत्मकथा लिखी है– 'एक मुसाफिर की अनुभूतियाँ' (एक अभियात्रीर अनुभूति)। लेखक ने अपने बचपन और किशोरवय की स्मृतियों एवं शिक्षा, ग्राम जीवन के तीज–त्योहार, धार्मिक परंपरा, डॉक्टरी शिक्षा के दौरान अनुभव, वैयक्तिक जीवन, शोध, पेशेवर जीवन आदि को अत्यंत सहज और सुंदर ढंग से अभिव्यक्त किया है। यह आत्मकथा जितनी

लेखक की है उतनी उनके समय और समाज की भी। लेखक ने गुरु और शिष्य के संबंध के बारे में और अपने शैक्षिक माहौल के बारे में बड़ी तत्परता और तटस्थता के साथ जिस तरह से चित्रण किया है, उससे मौजूदा दौर की विसंगतियाँ और विडंबनाएँ स्वतः उभरकर सामने आती हैं। लेखक के समय के बरक्स आज का समय मूर्त हो उठता है। यह आत्मकथाकार के लेखन की सफलता है।

उपर्युक्त लगभग पचास पुस्तकों पर संक्षेप में चर्चा करने के पश्चात् निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि पिछले वर्षों की तरह 2024 में प्रकाशित पुस्तकों में ओड़िया साहित्य ही नहीं, भारतीय साहित्य को भी समृद्ध करने की दिशा में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने का पूरा सामर्थ्य है। इस वर्ष प्रकाशित ओड़िया साहित्य बहुवर्णी, बहुवस्तुस्पर्शी और विविध संदर्भों और परिप्रेक्ष्य से समृद्ध है।

❑❑❑

नियति लिखती है हमारी पहली कविता और जीवन भर हम उसी का संशोधन किए जाते हैं।

— मनोहर श्याम जोशी

कन्नड़ साहित्य

4

डॉ. टी.जी. प्रभाशंकर 'प्रेमी'

हिंदी अंग्रेजी और कन्नड़ में लेखन और अनुवाद–कार्य। प्रमुख कृतियाँ– 'आधुनिक हिंदी कविता पर गांधीवाद का प्रभाव', 'कन्नड़ और हिंदी साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन।

वर्ष 2024 में प्रकाशित कन्नड़ साहित्य की सभी कृतियाँ (मौलिक, अनूदित, संपादित और साहित्येतर) वैविध्यपूर्ण रही हैं। ये कृतियाँ रोचक, ज्ञानवर्धक, भावप्रधान भी हैं। साहित्येतर कृतियाँ भी विशेषरूप से ज्ञान–विज्ञान विषयक सामग्री को सरल और सुबोध शैली में कन्नड़ पाठकों को पहुँचाने में विशिष्ट जिम्मेदारी निभा रही हैं।

2024 में कई कन्नड़ साहित्यकार नवाजे गए। 2024 का साहित्य अकादेमी पुरस्कार डॉ. के. वी. नारायण जी को उनकी साहित्यालोचना कृति के लिए प्रदान किया गया और बाल साहित्य पुरस्कार 'छूमंतरद कथेगळु' के लिए श्री कृष्णमूर्ति बिळिगेरे को प्राप्त हुआ। 2023 की कुवेंपु भाषा पुरस्कार से डॉ. एच.एम. कुमारस्वामी को सम्मानित किया गया।

कविता

'ए... यारल्लि...?' (कौन है वहाँ...?) (दिल की आड़ में) यह श्री हनुमंतोजी राव का कविता–संकलन है। यह उनका तीसरा कविता संकलन है। यह एक ऐसे कवि का संकलन है जो पेशे से शारीरिक शिक्षा के प्रशिक्षक हैं। जीवन के संघर्ष, दुःख–दर्द आदि के अनुभव ने ही कविता का रूप धारण किया है। जो भी हो, लोकानुभव के चित्रण के क्रम में शब्दों पर कवि की पकड़ देखते ही बनती है।

'बदलायिसुव ताकत्तु साहित्यक्कल्लदे मत्तावुदक्किदे
बल्लवरु ओदुवुद बरेयुवद मरेयुवुदिल्ल'
(बदलने की ताकत साहित्य में नहीं तो और किस में है
जो जानकार है पढ़ना लिखना भूलते नहीं)
कवि भावुक होकर अपने पिता के बारे में कहता है–
'तंदेय हेगलु सिंहासनव मीरिसुवंतह/मत्तोंदु आसन
जगत्तिनल्लि यावुदादरू इरुवुदेनु?'

(पिता के कंधे रूपी सिंहासन से बढ़कर / और कोई आसन जग में कोई है क्या?)

'हेळदेउळिदद्दु' (कहे बिना रह गईं बातें) सौम्या काशि की रचना है। 'भावनेगळु कविगळल्लि इरुवुदक्किंत ओदुव मेलु दनियल्लि... पदगळ नडुवे इरुव आ मौनदल्लि इरुत्तदेयंते' (भावनाएँ जो कविताओं में हैं उससे अधिक पढ़ने की धीमी आवाज़ में.... पदों के बीच के उस मौन में रहती हैं)। इस प्रकार कवयित्री भावनाओं को अनकही में, मौन में अधिक तीव्र रूप में देखती हैं। इस यांत्रिक जीवन में भी शब्दों में व्यक्त भावनाओं को इस संग्रह की सुंदर कविताओं में देखा जा सकता है।

'जरिलंगद हुडुगी मत्तु इतर कवनगळु' (ज़री लहंगा पहने लड़की और अन्य कविताएँ) हृदयशिव जी द्वारा रचित कविताएँ हैं। इस पंक्ति को देखिए– 'अवळु उसिरु बिट्टिद्दाळे / इदेके / हीगे हेळुत्तिदे नन्नी शव? (उसने साँस छोड़ दी है / ऐसा क्यों / ऐसा कह रही है मेरी लाश?) ऐसी रोचक और आधुनिकता बोध कविता देखने को मिलती है इस संकलन में।

'प्रीतिय चिट्टेय बेन्नेरी' (प्यारी पतंग की पीठ चढ़कर) मंगल एम. नाडिग की कविताओं का संकलन है। मूडनाडु चिन्न स्वामी जी की रचना 'आ महा मुगुळु नगे' (वह महा मुस्कान) कविता संकलन भी उल्लेखनीय है।

बाल कविताः

'बिसि बिसि बातु' (गर्म गर्म भात) राजशेखर कुक्कुंदा द्वारा रचित बाल–गीतों का संग्रह है। बच्चों के लिए गाने योग्य कविताएँ यहाँ संकलित हैं। आकर्षक चित्र कल्पना के पंख खोल देते हैं। छंदोबद्ध कविताएँ कंठस्थ करने के लिए अनुकूल हैं। घर, पर्यावरण, नजदीक के व्यक्ति, वृत्ति सब इस संकलन में हैं। 'बिसि बिसि बात' कविता में 'गुपचुप खाओ' नामक कविता सभी माताओं की रटी हुई है।

कहानी

'सर्वे नं–97' कथा–संकलन है। इसके लेखक हैं अनिल गुन्नापुर। इस संकलन में छह कहानियाँ हैं। इसमें आत्मसाक्षी और आत्मगौरव मुख्य पात्र हैं। यहाँ की कहानियाँ खिन्न भाव को शाश्वत रूप में व्यक्त करती हैं। हळदिउंगुर (हल्दी अंगूठी) कहानी में मूढ़ता और विश्वास के बीच हमेशा लाभ लेनेवाले धोखेबाजों के विरुद्ध लड़ते हुए एक युवा जब अपनी बलि दे देता है तो मन सुन्न हो जाता है। यहाँ की कहानियाँ विजयपुर–बागलकोटे के आस–पास की मिट्टी से जुड़ी हैं जो पाठकों को बरबस आकर्षित करती हैं।

'बणमि' श्री कपिल पी. हुमनाबाद जी द्वारा रचित कथा संकलन है। इस संकलन की कई कहानियाँ पाठक को अपनी तरफ आकर्षित करती हैं। कहानी के पात्र हमारे आसपास के हैं। जैसे रेत में पैर धंस जाता है, वैसे ही मन कहानी में धंस जाता है। यहाँ का अनुभव हमारा–आपका भी हो सकता है। यहाँ मनुष्य–केंद्रित प्रज्ञा के साथ

संघर्ष दिखाया गया है।

'एल्लेगळ दाटिदवळु' (सीमोल्लंघन) कथा संकलन श्रुति बी.आर. द्वारा रचित है। यहाँ की कहानियाँ कुछ नयापन लेकर उत्सुकता और विविधतायुक्त है। इनमें स्त्री–केंद्रित कहानियाँ भी हैं। 'एल्ले दाटिदवळु' (सीमोल्लंघन) कहानी में स्त्री अपनी अस्मिता की चौखट पारकर आगे बढ़ती है।

'कनसुगळे एद्दु बन्नी' (सपनों में जागिए) यह कहानियों का संकलन नरेंद्र पै जी द्वारा रचा गया है। मनुष्य भावभावुक और भ्रम में रहनेवाला है। मनुष्य जगत का निर्माण भी इनसे ही होता है। यहाँ की कहानियाँ 'निर्गमन', ओंदु हनि प्रीतिगागि' (एक बूँद प्यार के लिए), 'नानु नानल्स' (मैं मैं नहीं हूँ), 'काल' शीर्षक कहानियाँ पाठकों की पसंद की हैं।

'मूवत्तुमूरु कथेगळु' (तैंतीस कहानियाँ) के लेखक माविनकेरे रंगनाथ जी कन्नड़ के सृजनशील साहित्यकार हैं। उन्होंने अपनी कहानियाँ रुक्मिणी, उत्तरायण, मिथुन, उळिदद्दु आकाश (जो रह गया आकाश) और शंबुलिंग के साथ अन्य कहानियाँ जोड़कर तैंतीस कहानियों का यह संकलन प्रकाशित किया है। कहानियाँ समाजमुखी होकर अपने पर्यावरण को सूक्ष्मदृष्टि से देखती हैं। यहाँ के पात्र अपनी समस्याओं के साथ निरंतर जूझते नजर आते हैं। कुल मिलाकर इन कहानियों में व्यक्ति का अकेलापन, उसकी पीड़ा के साथ–साथ अन्याय के खिलाफ प्रतिरोध की ध्वनि भी मुखर हुई है। 'ई वरेगिन कथेगळु' (अब तक की कहानियाँ) श्रीधर बनवासी द्वारा रचित है। हर कहानी में मनोवैज्ञानिक विश्लेषण के लिए उत्तम सामग्री विद्यमान है। मन के वैविध्यमय आयामों के स्पर्श करने के साथ ही विचार भाव–मूर्तन के लिए सामग्री भी उपलब्ध है। हर कहानी अर्थपूर्ण है। इसमें जीवन की सार्थकता दिखानेवाली आध्यात्मिकता प्रधान कहानियाँ भी हैं। अधिकतर कहानियाँ काम–केंद्रित हैं।

'जयंतीपुरदकतेगळु' (जयंतीपुर की कहानियाँ) श्रीधर बनवासी की रचना है। इसमें एक ही बस्ती की कहानियाँ निहित हैं।

उपन्यास

'हम्मा हू' श्रीदेवी कळसद जी का उपन्यास है। यह उपन्यास धारवाड़ की बोली में है और वह दोड्डवाड की जिंदगी का परिचय कराता है। धारवाड़ और दोड्डवाड के बीच की कथा में कुछ उपकथाएँ भी आती हैं। विशारदा अपने बेटे के साथ गाँव आती है तो जो कुछ बदलाव हुए हैं, देखती है। अपने बचपन के स्मरण में कथा निरूपित करते हुए वह गाँव के विक्षिप्त पात्रों के बारे में बताती हैं। हनुम, फूलवारी आदि पात्रों के बीच ही उपन्यास विकसित होता है। महिला को सबल बनाने का मतलब आर्थिक रूप से सबल बनाना ही नहीं, आत्मविश्वास से आगे बढ़ना भी है। इसका निरूपण इस उपन्यास की स्त्री पात्र करती हैं।

'कोप्परिगे मने' (सूखे घास से आच्छादित घर) डॉ. न. मोगसाले जी का उपन्यास है। इसमें दक्षिण कन्नड़ की हव्यक संस्कृति का अनावरण हुआ है। यह कथा उस समय की है जब रास्ते नहीं थे। उस समय मंगलूर खपरैल तैयार करने का समय था। इसमें हव्यक संस्कृति का वर्णन हुआ है। हव्यकों की भाषा, आहार, घर, गहने, पीठोपकरण, सुपारी, नारियल का बगीचा, नौकर, दैव आदि का समग्र चित्रण इस उपन्यास में हुआ है। इसमें गांधी–प्रभाव भी है और समाज सुधार, बदलाव आदि का निरूपण भी है। इसमें स्वतंत्रता संग्राम के संदर्भ का भी चित्रण हुआ है। उपन्यास में स्त्री पात्रों का स्त्री सुधार भावना से चित्रण हुआ है।

'किल्लंग' उपन्यास नगरकेंद्रित जीवन का चित्रण करता है। इसके लेखक हैं श्री जयरामाचारी। इसमें नगरकेंद्रित जीवन का चित्रण है। इस उपन्यास में मेट्रो रेल पर गिरकर आत्महत्या करनेवाले को अपनी आँखों से देखनेवाले मेट्रो चालक की मनःस्थिति को लेखक ने सूक्ष्मता से चित्रित किया है।

'रेश्मे बट्टे' (रेशमी कपड़ा) रेशम के बारे में बतानेवाला उपन्यास है। उपन्यासकार है वसुदेंद्र। इसमें रेशमी कपड़े का जन्म, भारत में इसका आगमन आदि का वर्णन दिलचस्प है। उपन्यास का हर अध्याय नया प्रकाश देता है। इसमें आहार, संस्कृति, कला, चित्रकला, कशीदा के विकास का विवरण है। दूसरी शती से शुरू होकर यह वर्णन अपनी सीमा पार करता जाता है। उस समय की जिंदगी के चित्रण के साथ समणों का काम, मित्रवंदक का प्रेम, मधुमाया का प्यार, हविनेम का बलिदान, सगनेमि की महत्त्वकांक्षा, कथा के पीछे पात्र के साथ उस समय की राजनीति का भी चित्रण है।

'बेरु' (जड़) श्रीधर बनवासी का उपन्यास है। यह वर्तमान समय के जीवन पर लिखा गया है। इसमें बुरे लोग बदल जाते हैं और असहाय लोग नया विश्वास प्राप्त करते हैं। जीवन रूपी वृक्ष का सार ही अच्छाई में है। 'हरट कषाय' (गप एक कषाय है) उपन्यास के लेखक है राजु अढ़कहळ्ळी। यह जीवन संभ्रम के लिए टॉनिक है। इसमें रोज की घटना है जिसमें लघु हास्य है। थोड़ा–सा 'पन' भी है जिससे कषाय का स्वाद और गप में अभिरुचि बढ़ी है।

'निगूढ़' (अत्यंत रहस्यमय) 18 लेखकों का 'खो' उपन्यास है। इसके संपादक है हु. वा. प्रकाश। यह उपन्यास पर्यावरण पर है। यह भावुक परिवार से संबंधित उपन्यास है।

'प्राप्ति' वसुमति उडुप का उपन्यास है। 'परऊरिनवरू' (दूसरे गाँव के) के. एन. सुब्रह्मण्य जी द्वारा रचित उपन्यास है। 'पडुवण कडल तीरदल्लि' (पश्चिमी सागर तट में) जानकी सुत रंगप्पा जी द्वारा रचित है। महाभारत के 18 दिन पर लिखा उपन्यास है 'आ हदिनेंटु दिनगळु' (वे अठारह दिन)। इसके लेखक हैं श्री के. एस. नारायणाचार्य।

'पीजी' सुशीला डोणूर जी का उपन्यास है। यह उपन्यास भाव–प्रधान हैं, पात्र एक

बहाना मात्र है। इस उपन्यास की विषयवस्तु नई है, अभिव्यक्ति कुतूहल बढ़ानेवाली है।

'मागध' इतिहासविषयक उपन्यास है। लेखिका हैं सहना विजयकुमार। यह प्रियदर्शी अशोक के जीवन के निर्णायक क्षण पर आधारित है। इस सुदीर्घ उपन्यास में कई पात्र उपन्यासकार की नई सृष्टि हैं। अशोक का प्रशासन धर्मशास्त्र पर आधारित है। 'वातापी' संतोषकुमार मेंहंदले द्वारा रचित ऐतिहासिक उपन्यास है। इसमें पुलकेशी द्वितीय के रोचक इतिहास का चित्रण है।

अन्य उपन्यासों में उल्लेखनीय है– 'शातिग्राम' जिसके लेखक हैं सिरिमूर्ति कासलवळ्ळी।

गद्य लेखन

'दलित जानपद' मोगळ्ळी गणेश के लेखनों का संग्रह है। इसमें 13 लेख हैं। इनमें 'विद्रोहद गोविनहाडु' (विद्रोह का गउ गीत), 'बलिदानद काव्य क्के दनियादवरु' (बलिदान के काव्य की ध्वनि बने), 'ए.के. रामानुजमर द्रविड शोध' (ए.के. रामानुजम का द्रविडशोध) उल्लेखनीय हैं। इसमें शोधकर्ता जीशंप और ए.के. रामानुजम के कन्नड़ लोक साहित्य के लिए किए गए योगदान का स्मरण किया गया है।

'अल्लम मत्तु शिशुनाळ शरीफ़ (निर्बयलोळगोंदु बयलु)', अल्लम और शिशुनाळ शरीफ (निशून्य में एक शून्य) अरुणाचल के रचित अल्लम और शिशुनाळ शरीफ के जीवन–तत्व–विचार पर लिखा निबंध है। अल्लम 12वीं शती के अनुभवी योगी थे तो शिशुनाळ शरीफ़ 19वीं शती के अनुभवी योगी थे। दोनों योग साधक थे। यह उन पर लिखी ज्ञानवर्धक कृति है।

'हूविनोळगोंदु कैलासवरळि' (फूल में खिलता एक कैलास) ज्ञानपीठ से पुरस्कृत चंद्रशेखर कंबार के साहित्य पर संकलित विचारप्रधान निबंधों का संकलन है। इसके संपादक हैं डॉ. वीरेश बडिगेर।

अभिनंदन ग्रंथ :

'अनंतमुखी' डॉ. सुकन्या सूनहळ्ळी जी द्वारा संपादित अभिनंदन ग्रंथ है। कन्नड़ साहित्य के वैज्ञानिक लेखकों में डॉ. टी.आर. अनंतरामु लोकप्रिय हैं। वे भू–विज्ञानी थे। विज्ञान को आम लोगों के लिए सरल भाषा में प्रस्तुत करनेवालों में अनंतरामु जी प्रमुख हैं। उनपर प्रकाश डालने वाले कई लेख इस ग्रंथ में हैं। इस ग्रंथ के प्रमुख लेखकों में डॉ. न. सोमेश्वर, डॉ. वी.एस. शैलजा, टी.जी. श्रीनिधि आदि हैं। नागेश हेगडे जैसे पत्रकार के लेख भी इसमें हैं। अनंतरामु के जीवन और साधना पर कई अध्याय हैं। डॉ. सुकन्या सूनहळ्ळी जी के सुंदर संपादन में यह ग्रंथ विशेष महत्त्व रखता है।

संस्मरण ग्रंथ :

'विज्ञान रसयात्री' डॉ. टी.आर. अनंतरामु द्वारा संपादित संस्मरण ग्रंथ है जो कन्नड़ कृषि विज्ञान साहित्य में रुचि रखनेवाले प्रो. जे. आर. लक्ष्मणराव पर उनके दोस्त

और हितैषी बंधुओं का लिखे लेखों का संकलन है। विज्ञान को सरल सुबोध शैली में आम लोगों तक पहुँचाने का श्रेय लक्ष्मणरावजी को जाता है। प्रो. लक्ष्मणराव जी के लिखे और संपादित 38 ग्रंथों का परिचय भी इसमें है। इस ग्रंथ में आठ खंड हैं जो बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। विज्ञान विषय में अभिरुचि रखने वाले युवा पाठकों के लिए ये लेख अत्यंत उपयोगी हैं।

यात्रा–संस्मरण:

'अलेदाटद अंतरंग' (घुमक्कड़ी का अंतरंग) के लेखक हैं नवीनकृष्ण एस. उप्पिनंगड़ी। इसमें केरल का सुंदर और विस्तार से वर्णन है। इसकी निरूपण शैली हृदयस्पर्शी है।

बोळुवारु कुंञ का एक यात्रा संस्मरण है जिसका शीर्षक है 'ऐला महिकाळ पवित्र पेट्टिगे' (ऐला मल्लिका की पवित्र पेटी)। इसमें बोळुवारु जी की देश–विदेश की यात्राओं का वर्णन है। इनमें प्रमुख हैं मक्का, अबिसीनिया, तेहरान, अल मस्तान, बगदाद, कुवैत, दुबई, न्यू जर्सी, न्यूयार्क, सियाटल, सान फ्रांसिस आदि। ये कन्नड़ साहित्य में पहली बार मुसलमानों के जीवन का वर्णन करनेवाले लेखक हैं।

'जेरुसलेम' कन्नड़ साहित्यकार श्री रहमत तरीकेरे का यात्रावृत्त है। 'कवितेय कै हिडिदु' (कविता का हाथ पकड़कर) भी उनका यात्रा–वृत्तांत है। इसमें कवि श्री मूडनाडु चिन्नस्वामीजी को अपनी कविताओं के कारण जो विदेशयात्रा करनी पड़ी और वहाँ कविता सुनाने का मौका मिला, उसका रोचक वर्णन है। इस सिलसिले में उनके द्वारा वेनेजुएला, निकारागुवा और आगे इंग्लैंड और फ्रांस की यात्रा का भी वर्णन है।

जीवनी :

'अभिनव शारदे जीवनागाथे' अभिनव शारदे जयंती पर रचित जीवन गाथा है। इसके लेखक हैं के. सदाशिव शणय।

अनुवाद :

'अनुभवद आकाशदल्लि चंद्र' लीलाधर जगूड़ी के कविता संकलन (साहित्य अकादेमी पुरस्कार से पुरस्कृत) 'अनुभव के आकाश में चाँद' का कन्नड़ अनुवाद है। इसकी अनुवादक उषारानी जी हैं। यह साहित्य अकादेमी से प्रकाशित है। इसमें विषय–वैविध्य, प्रयोगशीलता और व्यक्तिनिष्ठता निहित है। यह 74 कविताओं का संकलन है। रचना के मूल आशय को अनुवादक द्वारा कन्नड़ में लाने का कार्य स्तुत्य है।

ई बदुकिनल्ली (इस जिंदगी में) कविता की कुछ पंक्तियाँ–

अक्षर, वाक्य गळिगिंत
श्रेष्ठवागिदे ई बदुकु
सालुगळिगिंत, होत्तिगे गळिगिंत

श्रेष्ठवागिदे ई बदुकु
आदरे इदर उत्पन्नवु
इदकिंत घन वागिदे
आर्थिक लाभदिंद
जीवनद कष्ट अळेयलागुत्तिदे।

(अक्षर, वाक्यों से श्रेष्ठ है यह जिंदगी, पंक्तियों से, पुस्तकों से श्रेष्ठ है यह जिंदगी। यह जिंदगी इससे भी ज्यादा महत्त्वपूर्ण है। आर्थिक लाभ से जीवन की हानि तोली जा रही है।)

बाल–कहानियों का अनुवादः

'महि नीलि बेट्टगळ मेले हारिद आने' (महि, नीलपहाड़ों पर चढ़ा हाथी) आनंद नीलकंथन जी का कथा–संकलन है। इसका कन्नड़ अनुवाद रतीश बी.आर. जी ने किया है। नन्हा–सा हाथी अपने माँ–बाप को छोड़कर पहाड़ों की ओर निकलने का प्रयत्न करता है। इस क्रम में नन्हा–सा पक्षी उसका दोस्त बन जाता है। हाथी महि का सपना, साहस और जंगल की कथा इसे रोचक बनाते हैं। यह कथा बच्चों के लिए है। कहानियों में रोचकता और मनोरंजन है।

'हळदि जीरुंडे लारा' (हल्दी जीरुंडे (कीड़ा) लारा) लारा मार्ता इवान्स की रचना है। इसका अनुवाद श्वेता राणी एच. के. ने किया है। यह छोटे–छोटे वाक्यों में बच्चों को पढ़ने की खुशी देती है। लाल जीरुंडे समूह में लारा हल्दी जीरुंडे भी शामिल है। वह भी लाल बनना चाहती हैं और लाल रंग पोत लेती है। वह भी दूसरों जैसा बनना चाहती है। बच्चों को यह खुशी देनेवाली कहानी है।

केंद्र साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली से 'प्राप्ति' शीर्षक से छोटी कहानियों का संग्रह ओड़िया भाषा से कन्नड़ में अनुवादित हुआ है। मूल लेखक हैं पारमिता सत्पथी और उसका कन्नड़ अनुवाद श्रीमती स्नेहलता रोहिडेकर ने किया है। कहानियाँ अपनी रोचकता के कारण पाठकों को आकर्षित करती हैं। यह एक महत्त्वपूर्ण कार्य है। 'अनिरीक्षित कथेगळु' (अप्रत्याशित कहानियाँ) रोआल्ड राहुल की छोटी कहानियों का संकलन है। इसका अनुवाद जी.वी. कार्ले जी ने किया है। ये कहानियाँ बच्चों को भी आकर्षित करती हैं।

'आने डॉक्टर और अन्य कहानियाँ' (हाथी डाक्टर और अन्य कहानियाँ) जेय मोहन जी की कृति है। इसमें पाँच कहानियाँ हैं जो मूलतः तमिल में हैं। इसका कन्नड़ अनुवाद एस. नारायणन् जी ने किया है। हम जीवन में जो घटनाएँ रोज देखते हैं, वे ही कथा के पात्र हैं। पात्रों का विवरण मर्मस्पर्शी है। 'आने डाक्टर' कहानी में डॉक्टर के चिकित्सा करने का प्रसंग कुतूहलपूर्ण है।

'नमगे तिळियद गांधीजी' (हमसे अज्ञात गांधीजी) लेखों का संकलन है। इसके

लेखक हैं कोडूरि श्री राममूर्ति। कुछ ऐसे विषय यहाँ बताए गए हैं जो कहीं भी वर्णित नहीं हैं। इसमें नौ लेख हैं। 'गांधीजी कैसे महला वने' लेख में उनका बचपन से महात्मा के रूप में बढ़ने तक का विवरण है जिसमें बताया गया है कि वे दूसरों से कैसे भिन्न थे। इसमें गांधीजी को प्रभावित करने वाले ग्रंथ और कई व्यक्तिविषयक लेख हैं। उसमें काफी सामग्री है। यह तेलुगु की मूल कृति का अनुवाद है। अनुवादक हैं एस जगन्नाथराव बहुळे। अनुवाद की भाषा सरल होने के कारण यह कृति पठनीय है।

नाटकानुवादः

'आ लय ई लय' नाटक द रिदम ऑफ वॉयलेन्स का कन्नड़ में अनुवाद है। इसके मूल लेखक हैं दक्षिण अफ्रीका के लूयी नाकोसी और इसका कन्नड़ अनुवाद श्री नटराज होन्नवल्लि जी ने किया है। नाकोसी जी पेशे से अध्यापक और पत्रकार भी हैं। यह नाटक बहुत लोकप्रिय है। राजनैतिक विडंबना से परिपूर्ण यह नाटक सृजनशील चिंतन से युक्त है। नाटक में तीन अंक और आठ दृश्य हैं। जनसमुदाय में असमानता को ध्वनित करनेवाला यह नाटक दमनकारी शासन की हिंसा की याद दिलाता है।

'कोनेय काणिके' (अंतिम तोहफा) अंग्रेजी में यह आई. एस. जौहर द्वारा रचित नाटक का अनुवाद है। इसका कन्नड़ रूपांतर बी.जी. सुवर्णा ने किया है। पाकिस्तान के प्रधानमंत्री जुल्फिकार अली भुट्टो और उससे संबंधित घटनावली का नाटक रूप ही 'कोनेय काणिके' (अंतिम तोहफा) है।

आत्मकथा का अनुवादः

मनाल एम ओमर की आत्मकथा 'बरिगालल्लि बाग्दाद' (नंगे पाँव बगदाद में) का कन्नड़ अनुवाद डॉ. विजय सुब्बराज जी ने किया है। इसमें मध्यप्रांत की महिला के जीवन का चित्र है।

उपन्यासानुवादः

'स्वर्ग न कंडंते' (स्वर्ग जैसा मैंने देखा) अंग्रेजी से अनूदित उपन्यास है। अंग्रेजी उपन्यास 'दि हेवन एज आई सॉ' के लेखक हैं डॉ. रंजन पेजावर। इसका कन्नड़ अनुवाद सत्यकाम शर्मा कासरगोडु ने किया है। यह काल्पनिकता से वास्तविकता की ओर बढ़ते मृत्यु और जीवन पर चिंतन करनेवाला उपन्यास है।

'व्यास भारतद द्रौपदी' मलयालम कृति का कन्नड़ अनुवाद है। यह कृति मलयालम में प्रो. पी. एन. मूडिताय द्वारा रची गई है। इसका कन्नड़ अनुवाद श्री आर हरि ने किया है। यह नेशनल बुक ट्रस्ट, दिल्ली से प्रकाशित है। इसमें अग्निकन्या द्रौपदी अपने धैर्य और सहनशीलता से जिस तरह स्त्री समाज के लिए आदर्श बनी है, उसका चित्रण है।

अन्य अनुवाद

'सत्तवन सोल्लु' (मृत का कथन) हिंदी की कृति—आशुतोष भारद्वाज द्वारा रचित

'दि डेथ स्क्रिप्ट' का कन्नड़ अनुवाद है। इसके अनुवादक है श्री कार्तिक आर। रामायण में लिखित दंडकारण्य ही आज बारूद की आवाज से कांप रहा है। वर्चस्व की लड़ाई से जंगल क्षीण हो रहा है। वहाँ जन–जीवन नष्ट हो रहा है। ऐसी जगह में प्रवेश कर वहाँ लोगों की हालत को समझने की कोशिश लेखक आशुतोषजी ने अपनी कृति 'दि डेथ स्क्रिप्ट' में की है। सात अध्यायों में वहाँ के हालातों का वर्णन हुआ है। साथ ही इसमें वहाँ के आदिवासियों के जीवन की दारुण स्थिति का हृदयस्पर्शी वर्णन भी है।

साहित्येतर कृतियाँः

'शेअरु हूडिके' (शेअर पर धन विनियोग) श्री के. जी. कृपाल जी की कृति है। यह नई कृति है 'शेअर विनियोग सीखो और आनंद लो'। इसमें कई छोटे–छोटे लेख हैं जो सरल भाषा में शेअर की जानकारी देते हैं। यह धन–विनियोग के प्रकार, शेअर बाजार की वस्तुस्थिति आदि शेअर के स्वरूप को समझने में मददगार है। शेअर में धन–विनियोग के इतिहास पर भी प्रकाश डाला गया है। सरल भाषा से यह कृति पठनीय बनी है।

'नर वानर' चिम्पांजी समूह के बीच होनेवाले कुतुहलपूर्ण व्यवहार को लेकर रची गई कृति है। इसके लेखक हैं प्रदीप केंजिगे। ये जगत के विस्मयों के बारे में लिखनेवाले पाठकों को नए लोक में ले जानेवाले लेखक हैं। वन्यजीवों के भी कई राज हैं, यह काल्पनिक बात नहीं। इस पर जीवन विज्ञान के लेखक प्रासंडी वाल जी ने 'चिम्पांजी पालिटिक्स' नामक पुस्तक लिखी है। इसमें कुल 13 लेख हैं। यह निरूपण शैली में है। नागेश हेगड़े जी इसके बारे में बताते हुए लिखते हैं कि 'नायकत्व के लिए स्पर्धा, कुर्सी के लिए पक्षांतर, भिन्नमत, चमचागीरी केवल मनुष्य में ही नहीं, चिम्पांजी जगत में भी विद्यमान है।'

अंतर्जल के बारे में प्राचीन और आधुनिक परिकल्पना पर श्रीधर हेगडे जी ने 'नेलदाळद नीरु' कृति (अंतर्जल) में लिखा है। डॉ. सी. आर चंद्रशेखर जी ने 'ओळ्ळेय अध्ययन विधान, उत्तम नेनपिन शक्ति' (अच्छा अध्ययन विधान और उत्तम स्मृति–शक्ति) शीर्षक से छात्रों के लिए व्यक्तिगत सेहत और परीक्षा की तैयारी से संबंधित जरूरी लेखन किया है।

'आधुनिक मनोविज्ञानद प्रवर्तकरु' (आधुनिक मनोविज्ञान के प्रवर्तक) डॉ. एम. बसवण्णा जी द्वारा रचित इस कृति से विश्व में इस शती के प्रमुख मनोवैज्ञानिकों के बारे में जानकारी मिलती है।

❑❑❑

5

कश्मीरी साहित्य

डॉ. महाराजकृष्ण 'भरत'

तीन कविता–संग्रहों के अतिरिक्त नौ पुस्तकें प्रकाशित। सन् 1997 में 'फिरन में छिपाए तिरंगा' संग्रह हेतु माननीय राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित, कई संस्थाओं से सम्मानित एवं पुरस्कृत। कश्मीरी विस्थापन कविता पर विशेष शोध कार्य, जम्मू कश्मीर के क्लस्टर विश्वविद्यालय में सह–आचार्य पद से सेवानिवृत्त। संप्रति– स्वतंत्र लेखन।

प्रत्येक भाषा की अपनी संरचना होती है, लिखने और बोलने का ढंग भी भिन्न ही होता है। सभी अपनी मातृभाषा में सहजता का अनुभव करते हैं और बिना किसी हिचक के धाराप्रवाह रूप से बोलते हैं, पर कहीं–कहीं अभ्यास छूटने पर लिखने या पढ़ने के समय कठिनाई का अनुभव करते हैं। अर्जित भाषा के विषय में यह कहा जा सकता है कि इसे व्यवहार में लाते समय किसी सीमा तक सतर्कता बरतनी पड़ती है। जैसे अन्य भाषाओं के बनने की एक प्रक्रिया रही है, वैसे ही कश्मीरी भाषा की भी अपनी एक कथा है, इतिहास है। कश्मीरी भाषा के साथ जो एक दुर्घटना घटी है, शायद यह अन्य भाषाओं के साथ न घटी हो कि मध्यकालीन कश्मीर के रक्तरंजित इतिहास में विदेशी आक्रमणकारियों ने न केवल वहाँ की भाषा के स्वरूप को बदल डाला वरन् जीवन के हर रंग को बेरंग कर दिया। जिस कश्मीरी भाषा की मूल लिपि प्राचीन शारदा लिपि रही है वही कालांतर में विलुप्त हो गई और उसका स्थान नस्तालीख लिपि ने ले लिया जो लेखन शैली में उर्दू–फारसी लिपि के समकक्ष दिखती है। चौदहवीं शताब्दी के मध्य तक तो संस्कृत वहाँ की राजभाषा रही है और शारदा लिपि का वर्चस्व भी था।

इस आलेख में इन तथ्यों की चर्चा इस कारण भी हो रही है कि आज भले ही कश्मीरी भाषा के बोलने वालों की संख्या अधिक हो सकती है पर उस अनुपात में साहित्य में इसके प्रयोग करने वाले कम ही दिखेंगे। इस लिपि के जानकारों के अभाव में लेखक अपनी पुस्तकों को देवनागरी लिपि में छाप रहे हैं और कहीं पर पुस्तक पुरस्कार श्रेणी में भेजने के लिए देवनागरी के साथ–साथ नस्तालीख का भी प्रयोग किया जाता है, कुछ पुस्तकें मूल नस्तालीख लिपि में ही प्रकाशित हो रही हैं।

कश्मीरी साहित्य–2024 का संक्षिप्त ब्यौरा यहाँ दिया जा रहा है–

1. हर्फ कचताम रूद्य तोति बाकि	–	ओमकार नाथ शबनम
2. पायि छु जुलमात बुजान	–	अजम फारूक
3. स्याह अगर छु गाश	–	नासिर मुन्नवर
4. कोंग् जार	–	वली मुहम्मद असीर
5. सोंतुक परतव	–	गंगाधर भट्ट देहाती
6. विरुद ओश फ्यरय्न हुँद	–	कमर हमीदुल्लाह
7. जेरिलब	–	राशिद रशीद
8. नागबल	–	शफी अहमद
9. म्यान कथ वति व्यठ वैशाली तॉम	–	ओमकारनाथ शबनम
10. वोन्य दिथ बाक्थ	–	गुलाम नबी आतिश
11. मराज	–	गुलाम नबी आतिश
12. कुलयाते शम्य	–	अब्दुल्ल रहीम शमस कुलगानी
13. हुसन कोजागार	–	सोहन लाल कौल
14. भांड	–	सोहन लाल कौल
15. अजब मलिक	–	सोहन लाल कौल
16. हाशिया	–	अनुवादक ब्रजनाथ बेताब
17. नवयुगुक कॅरियधर	–	अनुवादक कंदलकृष्ण लिट्टू

कश्मीरी साहित्य–2024 में कविता, कहानी, आलोचना, अनुवाद तथा पाठ्यपुस्तकों के परिप्रेक्ष्य में पुस्तकें प्रकाश में आई हैं। कहीं से उपन्यास की भी दस्तक मिली थी, पर जानकारी उपलब्ध नहीं हो पाई। जितनी जानकारी एकत्र हो पाई है, उसका संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत हैः–

कविता–संग्रह

'हर्फ कचताम रूद्य तोति बाकि' (कुछ एक शब्द रहे फिर भी शेष) ओमकार नाथ शबनम का कविता संग्रह है जिसमें शब्द सौंदर्य तथा सामाजिक ताने–बाने की बात नये ढंग से की गई है। 'पायि छु जुलमात वुजान' में अजम फारूक का पहला संग्रह है जिसका अर्थ है कि 'उसका पता अंधेरों से मिलता है।' नासिर मुन्नकर का संग्रह 'स्याह अगर छु गाश' का अर्थ है 'अंधेरा यदि रोशनी हो'।

वली मुहम्मद असीर किश्तवाड़ी का संग्रह 'कोंग्जार' प्रकाश में आया है जिसे रसा जायदानी मेमोरियल लिटरेरी सोसाइटी ने प्रकाशित किया है। पुस्तक का मूल्य 500 रुपए है। इसमें कवि की पूर्व में प्रकाशित संग्रहों की भी रचनाएँ शामिल हैं। विशेष रूप से ईश वंदना पर अधिक रचनाएँ हैं जिनमें हम्द, मुनाजात आदि उल्लेखनीय हैं।

गंगाधर भट्ट देहाती का 'सोंतुक परतव' शीर्षक से संग्रह छपा है। कवि ने

कश्मीरी भाषा में अफसाने (कहानियाँ) भी लिखे हैं, यह उनका पहला कविता–संग्रह है, जो 186 पृष्ठों में संकलित है। 'सोंतुक परतव' शीर्षक का अर्थ है 'वसंत का प्रतिबिंब'। 'विरुद् ओश फ्यस हुँद' रचना कमद हमीदुल्लाह की है जिसका अर्थ है 'अश्रु बूँदों को रटना'।

कहानी संग्रह–

'जेरिलब' (होठों तले) राशिद रशीद का अफसाना संग्रह है, वहीं शफी अहमद ने 'नागबल' शीर्षक से संग्रह छापा है। 'नागबल' के शाब्दिक अर्थ पर यदि जाएँ तो यह एक ऐसा पावन शब्द है जो किसी कुंड से संबंधित है जहाँ देवी–देवताओं का भी वास होता है।

आत्मकथा–

कश्मीरी भाषा में आत्मकथाएँ कम ही मिलती हैं। इस ओर प्रयास कर ओमकार नाथ शबनम ने कश्मीरी साहित्य में वृद्धि की है। उनकी पुस्तक का नाम है 'म्यान कथ वति व्यठ वैशाली तॉम' (मेरी बात सड़क से वैशाली तक)। लेखक महानगर दिल्ली में रहते थे। उसको केंद्र में रखकर उन्होंने अपनी यात्राओं, निजी अनुभवों को आत्मकथा में उकेरा है।

आलोचना साहित्य

कश्मीरी भाषा में आलोचना से संबंधित दो पुस्तकें उपलब्ध हो पाई हैं। एक है 'मराज़' और दूसरी पुस्तक है– 'वोन्य दिथ बावथ' (देख–परखकर अभिव्यक्ति)। 'मराज' एक क्षेत्रचालक शब्द है।

अनुवाद कार्य–

इस वर्ष शैलेंद्र सिंह के डोगरी उपन्यास हाशिया तथा महेंद्र सिंह सारना के कहानी–संग्रह 'नवयुग दे वारिस' का क्रमशः कश्मीरी भाषा में अनुवाद ब्रजनाथ बेताब और कंवल कृष्ण लिट्टू ने किया है। दोनों अनुवादक कश्मीरी भाषा साहित्य के सिद्धहस्त आलोचक एवं लेखक हैं। दोनों अनुवादकों में एक साम्य रहा है कि वे आकाशवाणी केंद्रों के माध्यम से अपनी सेवाएँ देते रहे हैं और अब साहित्य साधना के प्रति समर्पित हैं। बेताब एक कवि और चर्चित समाचार वाचक भी रहे हैं जबकि श्री लिट्टू आकाशवाणी केंद्रों में कार्यक्रम अधिकारी भी रहे हैं। श्री लिट्टू ने इससे पहले भी संस्कृत, हिंदी, अंग्रेजी और उर्दू भाषाओं से भी कश्मीरी में अनुवाद किया है।

साहित्य अकादेमी हर वर्ष उन पुस्तकों का अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद कराती है जो पुरस्कृत हैं। ये दोनों रचनाएँ अकादमी से पुरस्कृत हैं। 'हाशिया' उपन्यास 162 पृष्ठों पर आधारित है तथा इसमें एक श्रमिक के बेटे की कथा पिरोई गई है कि वह कम संसाधनों में कैसे एक प्रतिष्ठित पद तक पहुँच जाता है। 'नवयुगिक वॉरिसदर' (नवयुग दे वारिस) में 25 कहानियाँ हैं जो 198 पृष्ठों की पुस्तक में संकलित

हैं। दोनों पुस्तकें साहित्य अकादेमी दिल्ली द्वारा प्रकाशित हैं। महेंद्र सिंह सारना प्रतिदिन की परिस्थितियों और घटनाओं का बारीकी से अध्ययन कर उन्हें कथा कहानियों में पिरोते रहे हैं।

मोनोग्राफ

कश्मीरी भाषा साहित्य के प्रतिष्ठित लेखक 'सोमनाथ भहवीर' पर अशोक दिलबर ने मोनोग्राफ लिखा है जो साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशित है। 82 पृष्ठों पर लेखक वीर की साहित्यिक यात्रा पर सारगर्भित आलेख लिखे गए हैं। इसमें लेखक के पद्य, गद्य साहित्य के अतिरिक्त उनके व्यक्तित्व के कई आयामों को उजागर किया गया है। सोमनाथ महावीर एक कवि, लेखक तथा आकाशवाणी के प्रसारणकर्त्ता भी थे।

कश्मीरी भाषा साहित्य के प्रचार–प्रसार और उत्थान के लिए अनेक पत्र–पत्रिकाओं की अपनी विशेष भूमिका है जिनमें उल्लेखनीय है नयी दिल्ली से प्रकाशित 'कोशुर समाचार', जम्मू से प्रकाशित 'शुद्धविधा', 'वाख', 'ज्येष्ठा संक्षेप' तथा 'अंतरजाल' के माध्यम से प्रकाशित अन्य ई–पत्रिकाएँ। इन्हीं ई–पत्रिकाओं में से 'वितस्ता' के नवीनतम अंक–2024 के कश्मीरी अनुभाग का उल्लेख करना समीचीन होगा। इसमें कवि रमेश निराश, अनिल कौल, जीतेंद्र रैना तथा प्रतिष्ठित कवि सर्वानंद कौल प्रेमी की रचनाओं को प्रकाशित किया गया है। कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं–

'असि येति कॉत्याह ग्यवु चांग्य जॉली
बेय अम्यि अज देवॉलीये
अन्यमय अज योर लाल फॅल्स सॉरी
बेय आयि अज देवॉलीये'

सर्वानंद कौल प्रेमी अपनी रचना 'देवॉली' (दीवाली) में कहते हैं कि–

'हमने यहाँ कितने घी के दीये जलाए
फिर आई आज दीवाली रे
ले आए यहाँ बाल बच्चे सारे
फिर आई आज दीवाली रे'

इस भजन का अंतिम अंश है–

'प्रेमी' प्रारान ह्यर्थ पोशि डॉली
पादन अर्पण वन्दुहस प्राण
भक्ति कोसम त्रावस नॉली
बेय आयि अज देवॉलीये'

अर्थात्–

'प्रेमी' प्रतीक्षारत है फूल गुच्छा लेकर
चरणों को अर्पण करता प्राण

भक्ति की माला पहनाता
फिर आई आज दीवाली रे'

रमेश निराश द्वारा रचित दो रचनाएँ 'कुंजि रोस कुलुफ' (चाबी के बिना ताला) तथा 'यी वाच्यूनुम ती म्यूनुम' (जो आभासित हुआ वही पाया) भी इस ई–पत्रिका में संकलित है। श्रीनिराश एक कवि, सामाजिक कार्यकर्ता के साथ–साथ व्यावसायिक दृष्टि से एक संगीतज्ञ हैं तथा आकाशवाणी तथा दूरदर्शन के केंद्रों से संगीत के क्षेत्र में अपनी महती भूमिका निभा रहे हैं।

जीतेंद्र रैना की कश्मीर से संबंधित एक कविता भी सम्मिलित की गई है जिसके बोल हैं–

'वोत तुल कलम लेख तकदीर पनुन
यति अज छु लोगमुत जूने ग्रहुन'

× × ×

यति दोदस रातस फर्क ना केह
यति सुबहन सपदन श्याम मत्यो

अर्थात्–

'उठो कलम से लिखो भाग्य अपना
यहाँ आज चंद्रमा को ग्रहण लगा है

× × ×

यहाँ दिन और रात में न अंतर कुछ
यहाँ सुबह ही शाम में ढल जाती है

भारतीय भाषाओं की इस साहित्यिक यात्रा में कश्मीरी भाषा समृद्ध हो, ऐसी आशा की जानी चाहिए।

❑❑❑

इस पार प्रिये, मधु है, तुम हो,
उस पार न जाने क्या होगा।

– हरिवंश राय बच्चन

6

कोंकणी साहित्य

डॉ. चंद्रलेखा डि'सौझा

तुलनात्मक साहित्य में विशेष अभिरुचि। प्रमुख रचनाएँ–'धर्मवीर भारती और प्रकाश पड़गाँवकर की कविताओं का तुलनात्मक अध्ययन', 'कोंकणी काव्य चेतना (अनुवाद)' आदि अनेक अनूदित रचनाएँ प्रकाशित। संप्रति–स्वतंत्र लेखन।

कृतियाँ तो प्रकाशित होती रहती हैं पर उनमें साहित्यिक स्तर होना अनिवार्य होता है जो कृतियों में होता ही नहीं। सिर्फ जुमले मिलाने से काव्य नहीं बन जाता। उनमें काव्यात्मक गुण, हमारा आज, आज का समय, हमारा वास्तविक और आभासी विश्व, गोवा में खदान और कोयले का प्रदूषण, सामान्य जन, प्रकृति का संघर्ष–कोंकणी साहित्य 2024 में अधिकांशतः नजर आते ही नहीं!

कोंकणी कवि काशिनाथ शांबा लोलयेंकार के पाँच काव्य–संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं–

I- "काशि म्हणटा" काशी बोलता है – 1982

II- "काशिक म्हणचेंच पडटा" अर्थात् काशी को बोलना ही पड़ता है –1997

III- "काशिन म्हणपाचें सोडूंक ना" अर्थात् काशी ने बोलना छोड़ा नहीं 1999

IV- "काव्य सूत्र" 2009

V- "काशिखंड" 2010

चौदह साल बाद इनका काव्य–संग्रह "उत्रांबित्रां" अर्थात् शब्द–शब्द 2024 में प्रकाशित हुआ है। प्रस्तुत काव्य–संग्रह पर अपने विचार प्रकट करते हुए सखाराम शेणवी बोरकार, 14 जनवरी 2024, "भांगरभूंय" में लिखते हैं जिसका भावार्थ यहाँ देती हूँ–

"उत्रांबित्रां" काव्य–संग्रह के मुखपृष्ठ पर नजर दौड़ाएँ तो कवि की विद्रोही प्रवृत्ति को हम देख पाते हैं। मॉडर्निस्ट कवि के रूप में उन्हें देखा जा सकता है। काव्य–संग्रह को पढ़ते हुए इसकी पुष्टि हो ही जाती है। खास रूप में "चैट जीपीटी" कविता को देखा जा सकता है। आने वाले समय में इसके हानिकारक परिणामों के बारे में कवि चिंतित दिखते हैं।

प्रस्तुत काव्य–संग्रह पर अपने विचार प्रकट करते हुए कोंकणी लेखक दत्ता दामोदर नायक भी अपनी प्रतिक्रिया देते हैं ("गोमंतक," 25 फरवरी, 2024)। लेख मराठी में है, उसका कुछ अंश भावार्थ के रूप में प्रस्तुत है–

"कुछ यश प्राप्ति के बाद कवि और लेखक अपने ही शैली विश्व में अनुकरणीय संदर्भों में एक ठहराई भूमिका में ही भ्रमण करते हैं.... उस कक्षा से बाहर निकलने में कवि को सफलता मिली है जिसे वे escape velocity कहते हैं। कवि की इस सफलता के लिए उनका अभिनंदन।"

शैलेंद्र मेहता कोंकणी साहित्य में बहुचर्चित नामों में से एक नाम है। "विजनवासांतलो भोंवडेकार" अर्थात् निर्जनवास का यात्री, इस रूप में कवि अपनी यात्रा का चिंतन हमारे सामने रखते जाते हैं। इस कवि के पहले काव्य–संग्रह को सन् 2019 में कोंकणी अकादेमी का पुरस्कार भी मिल चुका है। उस काव्य–संग्रह में जीवन की असंगति को तथा विफलताओं को चित्रित किया गया है तो निर्जनवास के यात्री में कवि द्वारा अपने आपको ही अज्ञातवास में धकेलकर, जीवन के अवकाश में किया गया गहन चिंतन है। लगता है, कवि आज के समय के संत्रास, अस्वस्थता, अजनबीपन, अकेलेपन की व्यथा को वाणी दे रहे हैं। प्रस्तुत काव्य–संग्रह को पढ़ते हुए लगता है कि कोंकणी काव्य–विश्व में कवि शैलेंद्र मेहता, अपनी नयी राह तराशते नजर आते हैं। उनका अभिनंदन।

कोंकणी काव्य–विश्व में बिंब प्रकाशन ने विजय नवीन शेळडेकार द्वारा रचित "स्मृतीमंथन" को प्रकाशित किया है। अविनाश कुंकळकार द्वारा रचित "उतराची रांगोळी" अर्थात् शब्दों की रंगोली के साथ–साथ इन्होंने नाटक 'बालनवलिका' का भी प्रकाशन किया है जिनका उल्लेख उनके अनुक्रम में किया जाएगा।

मान्युएल फर्नांडीस द्वारा लिखित "सपनाळें गोंय" अर्थात् सपनों का गोवा काव्य–संग्रह का प्रकाशन हुआ। इस कवि ने कोंकणी के आंदोलनों में भी हिस्सा लिया था तो जाहिर है कि सब कविताएँ गोवा और गोवा के विषयों से संबंधित ही हैं। पूर्ण काव्य–संग्रह में गोवा की कोंकणी भाषा के संवर्धन के भी अनेक चित्र व्यक्त हुए हैं। आज के गोवा में गोवावासियों की स्थिति–

"स्वतंत्र गोवा के गुलाम हम सिर्फ नाम के वास्ते ही फिरते मौन होकर सी लिए अपने होंठ गोवावासी बन गए हैं मवाली गुंडे"

प्रस्तुत काव्य–संग्रह में प्यार, प्रकृति, गोवा की सामाजिक, राजकारिणी स्थिति, गोवा में बढ़ता प्रदूषण, सपनों की चुरचुर में अपना अस्तित्व ही खो रहे गोवा का राग, द्वेष दूर हो, ऐसी प्रार्थना कवि मान्युएल ईसामसीह से करते नजर आते हैं। क्या गोवावासियों का यही सपना था कि अपने शहर का विध्वंस देखें?

पेशे से मेडिकल डॉक्टर नूतन देव ने अपने विचार लेख और काव्य के माध्यम से व्यक्त किए हैं। मराठी और कोंकणी भाषा में इन्होंने पाँच पुस्तकों को प्रकाशित किया है। इन पुस्तकों में नूतनजी ने डॉ. सुनील काकोडकार के चित्रों को देखकर उन्हें काव्य–रूप दिया है। चित्रकार अपने चित्रों में क्या कहना चाहते हैं, इसे समझना, आत्मसात करना और उन्हें काव्य रूप में साकार करना बड़ा ही कठिन कार्य है। नूतन

जी ने यह कार्य कर दिखाया है, साथ–साथ काव्य चित्रों और चित्र–काव्य की नवीन आंतरशाखीय शैली का भी आविष्कार किया! मेडिकल डॉक्टर के रूप में उन सालों के अपने कार्य के बाद निवृत्त होते ही इन नवीन काव्य–चित्रों को साकार किया। कुल मिलाकर 45 चित्रों पर काव्य–चित्र रचे गए! पाठकों के सामने भी नये विचारों को प्रस्तुत किया गया। वैसे तो काव्य पर चित्र प्रस्तुत करने के प्रयोग सेमिनारों में किए जाते थे, पर यहाँ पर तो नूतन जी ने चित्रों को देखकर काव्य–रूपों को उजागर किया है। इस नए साहित्यिक आविष्कार के लिए चित्रकार डॉ. सुनील काकोडकार और डॉ. नूतन देव दोनों को बधाई!

"काळजांतली कवनां" अर्थात् दिल के गीत काव्य–संग्रह के कवि रजत हेगडे हैं। सामाजिक संदर्भों से जुड़ी इन कविताओं में कवि अपना आशय व्यक्त करते जाते हैं। कोंकणी साहित्य में साहित्य रचा तो जाता है पर नये प्रयोग, आशय विस्तृति वैश्विक संदर्भ न के बराबर होते हैं। भारतीय भाषाओं का चिंतन शायद इन साहित्यकारों ने पढ़ना जरूरी समझा हो, ऐसा लगता नहीं। न कोई नया प्रवाह द्रष्टव्य होता है, न ही विज्ञान या तकनीकी आविष्कारों का प्रभाव या उनके सरोकार दूर–दूर तक इन रचनाओं में कहीं भी पाए नहीं जाते! खैर, आने वाले समय में कोंकणी साहित्यकार कुछ नया और यथार्थ चिंतन दे पाएँ, यही आशा रखी जा सकती है!

कोंकणी काव्य– जगत् का एक और नाम समीर झांट्ये द्वारा रचित काव्य–संग्रह "लगोरी : समग्र जीवन अनुभव" हाल ही में प्रकाशित हुआ है। "लगोरी" बचपन में खेले जाने वाले बहुत सारे खेलों में से एक है। (यह एक विडंबना है कि इन खेलों को आजकल के बच्चे या तो बहुत कम खेलते हैं, या फिर खेलते ही नहीं! पूरा दिन और शाम मोबाइल नाम का राक्षस ही खा जाता है।) इस खेल को सतोलिया या लागोरी भी कहा जाता है। सात बड़े–छोटे पत्थरों को बड़े से छोटे के अनुक्रम में एक के ऊपर एक रखा जाता है और गेंद से निशाना साधकर इन्हें गिराने की कोशिश की जाती है। ऐसे खेलों में निशाना साधना अर्थात् एकाग्रता से उस निशाने पर गेंद को फेंकना होता है।

"गूगल माँ" पर सर्च किया तो पता लगा कि यह खेल दक्षिण भारत में शुरू हुआ और अब दुनिया के कई देशों में इसे खेला जाता है। अगर पत्थर न मिले तो दूसरे विकल्प भी लिए जाते हैं। इसी खेल को कोंकणी भाषा में "लगोरी" कहा जाता है। खैर अब आते हैं लगोरी काव्य–संग्रह पर और समग्र जीवनानुभव में कवि समीर झांट्ये क्या बताना चाहते हैं। प्रस्तुत पुस्तक के बारे में मराठी अखबार गोमंतक में (11 सितंबर 2024) उदय नाईक अपनी प्रतिक्रिया लिखते हैं–

पूर्ण रूप से नयी राह तलाशते हुए कवि की फेस–बुक, सेल्फी, सेल्फ पोट्रेट शीर्षक वाली कविताएँ समसामयिक समय का यथार्थ चित्रण देती हैं। पहली ही कविता

के शीर्षक "तुरुप" में जो संदेश है वह यह कि पत्ते के खेलों में तुरुप के पत्ते का एक विशेष महत्त्व होता है। जीवन के खेल में भी, आयुष्य के विविध पत्ते होते हैं, उनमें से "तुरुप" के पत्ते की पहचान होना अति आवश्यक है।

कवि उदय म्हांबरो के तीन काव्य–संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। चौथा काव्य–संग्रह "सपनांतल्या गांवची वाट" अर्थात् सपनों के गाँव की राह का लोकार्पण हुआ। प्रस्तुत काव्य–संग्रह में कवि संयमी मनुष्य के रूप में अपना रचना–संसार चित्रित करते नजर आते हैं।

कवि एडवीन फर्नांडीस चार पंक्तियों की कविताओं का संग्रह प्रकाशित कर रहे हैं। "चारोळी" अर्थात् चार पंक्तियों की रचनाएँ होती हैं। कवि एडवीन अंग्रेजी में भी लेखन करते हैं। कोंकणी भाषा में उनके लेख, कहानियाँ, नाटक, कविता, चरित्र लेखन आदि हैं। प्रस्तुत पुस्तक में उनकी रचनाओं के फूल महक रहे हैं।

कोंकणी भाषा प्रचार सभा (कोची) में 20 अक्तूबर, 2024 को एनएम सरस्वतीबाई पुरस्कार दिए गए। सन् 2022 के इन पुरस्कारों में गोवा की लेखिका माया अनिल खरंगटे को उत्कृष्ट कोंकणी साहित्य कृति का पुरस्कार मिला। सन् 2023 का पुरस्कार कोची की संध्या वि. प्रभू को दिया गया। इसी कार्यक्रम में एन बालकृष्ण माल्या द्वारा रचित "सत्याची किरणां" (सत्य की किरणें) का लोकार्पण हुआ। प्रस्तुत काव्य–संग्रह के बारे में विशाल सिनाय खांडेपारकार ने (20, अक्टूबर, 2024, "भांगरभूंय" कोंकणी के अखबार) में लेख लिखा है। एन. बालकृष्ण माल्या ने सन् 2013 में "जीव संकल्प" तथा सन् 2019 में "आत्मगत" काव्य–संग्रह दिए हैं। "सत्याची किरणां" उनके द्वारा रचित तीसरा काव्य–संग्रह है। प्रस्तुत काव्य–संग्रह में सत्य और उसकी किरणें शीर्षक बताता है कि कवि आत्माभिव्यक्ति के साथ–साथ सत्य, ज्ञान, यथार्थ, सत्य की व्यथा, सत्य का दुख, सत्य को स्वीकार करता है। ज्ञान–अज्ञान के कारण मनुष्य को चाहिए कि वह इस द्वंद्व को समझे, सही का चयन कर उसे परखे, आत्मसात कर उसे अपने जीवन का हिस्सा बनाए, तभी सत्य का सौंदर्य सही राह दिखाता है। वही सौंदर्य कल्याणकारी बनकर जीवन को संजोता है। प्रस्तुत काव्य–संग्रह के बिंब और प्रतीक भी कोची की कोंकणी शैली को उजागर करते हैं। कोंकणी भाषा की महिमा गाते हैं। अपने शहर के पक्षी, प्रकृति, खेत, अनाज, पेड़, प्राणी तथा अपने समाज के मनुष्यों का गुणगान कवि गाते हैं। विशाल सिनाय खांडेपारकार ने इस काव्य–संग्रह का प्रणयन बखूबी किया है।

भिकू नायक– यह नाम कोंकणी साहित्य में बहुत ही प्रसिद्‌ध है। पिछले 48 सालों से वे कोंकणी साहित्य में अपना योगदान दे रहे हैं। कविता, निबंध, पत्रकारिता के क्षेत्र में वे कार्यरत रहे। इस साल वे काव्य–संग्रह लेकर आए हैं, जिसका शीर्षक है– "तासो ताणशेता रे...."

प्रस्तुत काव्य–संग्रह में कवि "तासो" आनी "ताणशेता" शब्द को अनेक अर्थों में रखने की कोशिश में नजर आते हैं। "तास" अर्थात् हीरे को तराशना, मनुष्य के गुण, एक घंटे का समय दर्शनी, ऐसे अनेक अर्थों में उपयोग में है। आज की हमारी सामाजिक, राजकीय स्थिति को देखते हुए सामान्य मनुष्य को अपने आप पर गुस्सा आना, स्थितियाँ बदल न पाने का संत्रास, सामान्य जन करे तो क्या करे? स्मार्ट सिटी के नाम पर खुदाई जिसका कोई अंत ही नहीं.... सालों–साल तक चलती खुदाई, मिट्टी पर पड़े रहते मिट्टी के ढेर... क्या यही मनुष्य चाहता है कि आते–जाते, घर के सामने यही देखे? सत्ताधारी पार्टी बदलते रहे, वाशिंग मशीन धुलाई करती रहे.... और रुपए इकठ्ठे होते रहें...। मोहभंग की स्थिति में जीना, यही जिंदगी बन गई।

कोंकणी भाषा आज भी पाँच अलग–अलग लिपियों में लिखी जा रही है.... नागरी, कन्नड़, रोमन, मलयालम, पर्शियो अरेबिक जिसे नवायती कहा जाता है। लिपिवाद की वजह से पॉलिटिक्स ऑफ स्क्रिप्ट भी एक वास्तविक कड़वी सच्चाई है। एक कविता जो यू–ट्यूब और वॉट्सएप पर डिजिटल फॉर्म में अपनी वास्तविकता दर्शा रही है जिसके कवि वल्ली क्वाडूस हैं।

प्रस्तुत डिजिटल कविता कोंकणी भाषा और स्क्रिप्ट पॉलिटिक्स के बारे में वर्णन करती नजर आती है। स्क्रिप्ट A और B एक तरफ और C अकेला उस तरफ अर्थात् नागरी लिपि वाले और रोमन लिपि वाले गोवा में तथा कन्नड लिपि कर्नाटक में, पर जिसे तीनों लिपियाँ आती हों, वह क्या करे? किसका समर्थन करे? है तो कोंकणी ही। शायद इसीलिए कवि खुद आशावादी प्रकाशन और पयणारी.कॉम द्वारा तीनों लिपि में कार्यक्रम करते रहते हैं! "कोंकणी बियोन्ड स्क्रिप्ट" का नारा लेकर डिजिटल कोंकणी को आगे बढ़ाने में अपना योगदान देते हैं।

साहित्यकार, पत्रकार, बहुभाषी व्यक्तित्व, मराठी, कोंकणी अंग्रेजी भाषा के जानकार संदेश प्रभुदेसाय इस साल अपना काव्य–संग्रह "साठ" लेकर आए हैं। प्रस्तुत काव्य–संग्रह में प्रस्तावना इब्राहीम अफगाण की है तथा मानक भाषा और बोली भाषा पर दृष्टिकोणात्मक टिप्पणी प्रो. गणेशदेवी द्वारा दी गई है। उदाहरणों के साथ 27 पृष्ठों की कारण मीमांसा दी गई है।

प्रस्तुत "साठ" काव्य–संग्रह में प्रस्तावना लिखने वाले इब्राहीम अफगाण लिखते हैं कि कविता सिर्फ मनोरंजन नहीं करती पर अपने समय को उजागर करती है। सृजनात्मक लोगों के मुँह पर, सामाजिक माध्यमों पर, पत्रकारों की लेखनी पर, विचारों पर, आवाज पर सत्ता द्वारा ताला लगा दिया गया है। कहीं उस पर भी लिखना, आवाज उठाना आवश्यक हो जाता है... अपने समय की अस्वस्थता को आवाज देने का काम भी कविता ही करती है।

कोंकणी काव्य जगत में अशोक कामत "आवाज स्वासाचो" अर्थात् साँसों की

आवाज में अपने आसपास के विश्व को अपनी कविता में व्यक्त करते नजर आते हैं। तुकाराम शेट "महानगर" में जैसा जीवन लोग जी रहे हैं, उनकी समस्याओं को उजागर करते हुए मानवीय संवेदनाओं को, बदलते सामाजिक, आर्थिक मूल्यों को, जीवन समस्याओं को चित्रित करते जाते हैं। महानगरीय जीवन में विषमताएँ जैसे कुंडलिनी मारकर बैठ जाती हैं! न जीवन जीते बनता है, न मौत आती है! भीड़ के साथ भागना ही जैसे नियति बन जाती है। एक न खत्म होने वाली दौड़....अपने आशय को व्यक्त करने में कवि और निबंधकार सफल हुए हैं।

कोंकणी कहानी

कोंकणी साहित्य में कहानी का विश्व जैसे एक ऐसे बिंदु पर है जहाँ डायनामाइट करके ही इसकी साहित्यिक विधाओं के सब छोरों को नए विचारों के धागों में गूँथना आवश्यक हो गया है। वैसे भी कोंकणी कहानी के कहानीकार भी बहुत कम हो गए हैं।

इस साल 2024 में निलीमा मुंगे द्वारा रचित "सर्गातल्यो गांठी" अर्थात् स्वर्ग के सोपान हैं। प्रस्तुत कहानी–संग्रह में कुल दस कहानियाँ हैं। एक बात साफ है कि सब कहानियाँ भावस्पर्शी हैं पर सिर्फ भाव–स्पंदनों से ही कहानी का गठन सुदृढ़ नहीं होता। कोंकणी साहित्यकार जब तक अपने विचारों के क्षितिज को विस्तृत नहीं बनाते, दूसरी भारतीय भाषाओं के साहित्य को पढ़ते नहीं, उनके अनुवाद का क्षेत्र विस्तृत नहीं होता, तब तक नयी विचारधारा या शैली पनपना संभव नहीं दिखता।

कहानीकार एडवीन फर्नांडीस का कहानी–संग्रह है– "सावट" अर्थात् गहरी परछाई। वैसे तो एडवीन कवि हैं, कोंकणी और अंग्रेजी में भी इन्होने लेखन कार्य किया है। अलग–अलग साहित्यिक विधाओं में इन्होंने लेखन किया है। इनकी कविताएँ पणजी– रेडियो केंद्र पर सुनवाई जाती हैं। जीवन की अनेक घटनाओं पर आधारित इन कहानियों में एडवीन फर्नांडीस ने अपने सामाजिक सरोकारों, समाज में चलती समस्याएँ, उनके अर्थशास्त्रीय संदर्भों को चित्रित किया है।

कोंकणी भाषा के विशिष्ट साहित्यकार दामोदर मावजो को जिन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार भी मिल चुका है, कोंकणी प्रेमी "भाई" के नाम से पुकारते हैं। उम्र के 80 सालों का अनुभव जिस लेखक ने पचाया है, उनके अनुभवों का निचोड़ प्रस्तुत दोनों कहानी–संग्रहों में प्रकाशित किया गया है, इनके शीर्षक हैं "पोन्नो बाजार" अर्थात् पुराना बाजार और "पोस्ट कोविड"।

पुराना बाजार में बीस कहानियाँ हैं। पिछले पचास सालों में भाई ने जो कुछ लिखा, उसमें से जो अप्रकाशित रह गया है, उन्हें संग्रहीत करके इसका प्रकाशन किया गया है। "मेरे लिए उन कहानियों में फिर से चक्कर लगाने का मतलब था, जैसे मैं किसी पुराने बाजार में चक्कर लगा रहा हूँ या फिर जैसे पुरानी बुक शॉप में, मैं अपने

जीवन के उन क्षणों को फिर से जी रहा हूँ, इसलिए इस कहानी–संग्रह को "पोन्नो बाजार" अर्थात् पुराना बाजार शीर्षक दिया गया है।"

"पोस्ट कोविड" कहानी–संग्रह में दस कहानियाँ हैं जो कोरोना काल में लिखी गई हैं या फिर सीधे–सीधे कोविड परिस्थिति से जुड़ी हुई हैं।

"कुपां जिणेरूपां" अर्थात् बादल जीवन के रूप, कहानी–संग्रह के लेखक फादर जोजफ क्लारो रोद्रिगीश हैं। क्युरेट बुक्स प्रकाशन संस्था द्वारा प्रस्तुत कहानी–संग्रह को प्रकाशित किया गया है। कहानीकार कहते हैं कि प्रस्तुत कहानी–संग्रह में दो कहानियों को गोवा में लिखा गया और बाकी की आठ उन्होंने रोम शहर में रहते हुए लिखी हैं। कोंकणी साहित्य के वरिष्ठ लेखक देविदास कदम ने कहा कि किसी भी भाषा का लेखक सिर्फ एक ही भाषा का, प्रांत का नहीं होता, पर वह तो पूरे विश्व का होता है। वैसे भी किसी भी भाषा के साहित्यकार को सीमाओं में बाँधा नहीं जा सकता। प्रस्तुत कहानी–संग्रह में मनुष्य जीवन के अलग–अलग रंगों तथा रूपों को सूक्ष्मता से निरीक्षणात्मक रूप में चित्रित किया गया है। फादर जोजफ क्लारो रोद्रिगीश का यह पहला ही कहानी–संग्रह है। भविष्य में कोंकणी साहित्य को और बेहतर कृतियाँ मिलेंगी, ऐसी आशा रखते हैं।

कोंकणी कहानी जगत में दत्ता दामोदर नायक द्वारा रचित "गांधारी" कहानी–संग्रह में "कथिका" में गांधारी, उर्मिला, एकलव्य, अहल्या, अभीर, धृष्टद्युम्न, बुद्धगीता, अंबा, पांचाली, कर्ण, श्रीराम अग्निदिव्य और धर्मांतर हैं तो बोधकथा, प्राणीकथा, व्यक्ति कथा, विनोदी कथा तथा भूतकथा भी हैं। पौराणिक पात्रों की कहानी तथा व्यक्ति–रेखा के साथ बहुत कुछ अलग संदर्भों में परिपक्वता से किया हुआ लेखकीय निरीक्षण है जो कि उनके अनुभवों का संचयन है। महाभारत लिखने का कार्य गणपति को सौंपा गया था, यह हम जानते ही हैं। उसी को ध्यान में रखकर गणपति के मन में उठती शंकाएँ तथा व्यास मुनि के उत्तर जहाँ आज के अनुभवों से लेखक का विश्लेषण हर चरित्र के साथ नया स्पंदन देता जाता है, यही लेखक की विशेषता है।

"धर्मांतर" (पृ. 55–56) पढ़ते हुए स्वामी विवेकानंद के शब्द जेहन में गूँज उठे.... हमारी जाति प्रथा, ऊँच–नीच के भेद, अंधश्रद्धा, सामाजिक कुप्रथाएँ... आज भी हमारे पास वैज्ञानिक सोच कहाँ? लेखक दत्ता दामोदर नायक, अपने समय में बहुत आगे की सोच रखते हैं.... इन्हें समझकर, अपने जीवन में उतारने वाले कितने हैं? लेखक को सलाम ही नहीं, प्रणाम!

कोंकणी रंगमंच

तियात्र

गोवा के रंगमंच में 'तियात्र' का स्थान देश और परदेश में समांतर रूप में विकासमान होता द्रष्टव्य होता है। दुबई, कतर, दोहा तथा यूनाइटेड किंगडम अर्थात्

यूके में भी इसके मंचन होते हैं। "पास्ट इज पास्ट" तियात्र के बारे में यही सच्चाई है। यूके गोवा के तियात्र के लिए दूसरा पीहर है। गोवा और यूके में इस तियात्र के विनोदी कलाकार आगुस्तीन ने इसे निर्देशित किया है। रंगमंचीय कला का काम ही मनोरंजन के साथ–साथ सामाजिक संदेश देना होता है। तियात्र की शुरुआत तो मुंबई में हुई पर उसका विकास तो गोवा में ही हो पाया। समाज को जगाने के उद्देश्य से ही इसे रचा जाता है। आज भी तियात्र अपने सामाजिक उद्देश्य में सफल ही माना जाएगा! इसीलिए इसके मंचन– मुंबई, पुणे, अहमदाबाद, दिल्ली, कारवार, सिंधुदुर्ग, गल्फ, लंदन, अमेरिका, कनाडा में होते रहते हैं।

गोवा के मनोरंजन उद्योग में तियात्र का स्थान महत्वपूर्ण है। हर साल तकरीबन 30 से 40 संस्थाएँ अपने तियात्र रंगमंच पर प्रस्तुत करती हैं। उनमें से बहुत सारे तियात्र सौ मंचन पार कर चुके हैं। एक साल में तियात्र के दो मौसम होते हैं। बारिश के बाद पहला मौसम शुरू हो जाता है, जो कार्निवल तक चलता है। दूसरा मौसम Lent– (लेंट) के बाद अर्थात् ईस्टर के पहले के चालीस दिन से लेकर सितंबर तक चलता है। तकरीबन चार महीने तक इस छोटे सीजन को 'मानसून सीजन' भी कहा जाता है। ये तियात्र थियेटरों में ही प्रस्तुत किए जाते हैं। इनमें नेपथ्य और पूरा निर्माण बहुत ही सजधज वाला होता है। इन चार माहों में अपना उत्कृष्ट प्रस्तुतीकरण वे करते हैं। अच्छे कांतार अर्थात् गीत, अच्छे कॉमेडियन को अपने तियात्र में शामिल करके स्तरीय मंचन किए जाते हैं। इस साल निम्नलिखित तियात्र मंच पर प्रस्तुत किए गए–

प्रस्थापित तियात्र अभिनेत्री और गायिका डोला मास्कारेन्हस ने "सुपर स्टार" के निर्माण के साथ–साथ लेखन और निर्देशन की जिम्मेदारी भी संभाली है। डोला जी को बहुत–बहुत बधाई। इन्होंने अपने तियात्र में कुछ न कुछ नया देने की पहल की है, चाहे कथानक, नेपथ्य, कांतार, विनोद, प्रकाश संयोजन, संगीत सबमें नयापन को ही चुना है। समाज में बदलाव, राजकीय स्थिति का अवलोकन इनकी विशेषताएँ हैं।

सेबी दी दिवार राजकीय कांतार अर्थात् गीतों के लिए मशहूर हैं। आज तक इन्होंने पाँच तियात्र मंच पर प्रस्तुत किए हैं। दर्शकों ने भी इनके तियात्रों को हमेशा सराहा ही है। "कोणाच्या चुकीक लागोन" अर्थात् 'किसकी गलती के कारण' उनका छठा तियात्र है जो धूम मचा रहा है।

सेमी तावारीस का तियात्र "ग्रैंडमा" सातवाँ तियात्र है। इसकी विशेषता यह है कि इसमें संगीतकार नॉर्मन कार्दोज के मार्गदर्शन में लड़कियों का बैंड तियात्र के गीतों को संगीत का साथ देता है। सबका अभिनंदन। इनका मार्ग उज्ज्वल हो।

तियात्र में इस साल एक नया प्रयोग किया गया है। प्रसिद्ध तियात्र लेखक और निर्देशक मिनीन द–बांदार ने सन् 1984 में "सुकोरिना" (लड़की का नाम है) तियात्र का मंचन किया था। उस समय इस तियात्र ने बहुत सफलता प्राप्त की थी। एक

लड़की पर होने वाले अत्याचारों को इसमें चित्रित किया गया था। तियात्र के लेखक के विरोध में कोर्ट में मुकदमा भी किया गया था। इसके बावजूद इस तियात्र ने 300 से ऊपर प्रयोगों की सफलता प्राप्त की थी। मिनीन द बांदार को "किंग ऑफ ट्रिपल सेंच्युरीज" का खिताब भी दिया गया था! उसी तियात्र को 40 साल बाद फिर से रंगमंच पर सजाया गया है। पर इस बार महाविद्यालयीन युवक–युवतियों को कलाकार के रूप में लिया गया है। इतना ही नहीं, प्रस्तुत तियात्र में संगीत देने वाला बैंड भी महाविद्यालयीन विद्यार्थियों का ही है। इसका एक आकर्षण यह भी है। अब तक इसके चार प्रयोग हो चुके हैं। दर्शकों ने इस बार भी इस तियात्र को पसंद किया है। निर्देशक और लेखक मिनीन द बांदार का कहना है कि एक समय जिस तियात्र ने इतिहास रचा था, वह फिर से धूम मचा रहा है। गल्फ में भी इसके प्रयोग हुए थे, वैसे इस बार भी हों, यही शुभकामनाएँ! कोंकणी तियात्र से मनोरंजन तो होता ही है पर उनमें जो कॉमेडी या साइड शो, जिसे आज के संदर्भ में सोचते हैं तो लगता है कि यह कॉमेडी है? यह प्रश्न भी उठते ही रहते हैं।

तियात्र को व्यावसायिक रंगभूमि माना गया है। बहुत सारे तियात्रों को सिनेमा का रूप भी दिया जा सकता है। एक ही संहिता प्रकाशित न होने के कारण रुकावटें आती हैं, का राग अलापा गया है। इस क्षेत्र में एक कलाकार प्रेमानंद आ. लोटलीकार का नाम बहुत ही प्रसिद्ध है। इन्होंने सौ से अधिक तियात्रों में भूमिका निभाई है। इन्होंने सात तियात्र लिखे पर उनमें से एक ही संहिता के रूप में प्रकाशित हुआ है "लज आनी दुख" अर्थात् लज्जा और दुख, जो उनके सात तियात्रों में से पहला तियात्र था। प्रस्तुत तियात्र को नाटक की शैली में लिखा गया है। कितने ही तियात्र रंगभूमि पर खेले गए पर उनकी संहिताओं का पुस्तक रूप में प्रकाशन न होने के कारण उन्हें आने वाली पीढ़ी के लिए सुरक्षित रखा नहीं गया जिससे आज उनके बारे में युवा पीढ़ी कुछ नहीं जानती! न ही उनके मंचन आज हो सकते हैं। आशा करते हैं कि गोवा की 'तियात्र अकादेमी' इस पर गंभीरता से चिंतनात्मक कार्य करेगी।

तियात्र जगत् में एक नया तियात्र धूम मचा रहा है जिसका शीर्षक है "गॅर्राक न्होय वॉर्राक मेलो" अर्थात् युद्ध में नहीं, पर मारा गया प्रतिष्ठा में! प्रस्तुत तियात्र पर अपने विचार प्रकट करते हुए सिल्वीया आल्मेदा लिखती हैं–

समाज को सुंदर संदेश देने वाले इस तियात्र के लेखक फ्रांसीस द तपयें हैं। आज के माता–पिता अपने बच्चों को पूरी सुख सुविधा देने के पागलपन में भूल जाते हैं कि बच्चे अपनी नासमझी में रास्ता भटक भी सकते हैं। मोटर बाइक चलाकर अंधाधुंध स्पीड से भगाते हैं और अपनी जान जोखिम में डालते हैं। कसीनो में जाते हैं, ड्रग्स के शिकार होते हैं। (22 अगस्त, 2024, भांगरभूंय")

जब बिना मेहनत किए जरूरत से ज्यादा मिले तो बच्चे श्रम का महत्त्व समझ

नहीं पाते और अपनी जिंदगी तबाह कर लेते हैं। परिवार बिखर जाता है। इस संदेश को देते हुए प्रस्तुत तियात्र अपनी राह बना रहा है। इसमें जो "कांतार" हैं अर्थात् गीत हैं जिसके कारण तियात्र और भी प्रशंसा प्राप्त कर रहा है। पॉलिटिकल कांतारां के कारण वह समसामयिक परिस्थितियों तथा आज के राजकीय व्यवस्था पर भी प्रकाश डालता है। समाज को सावधान रहने की राह दिखाने का कार्य करता है। अपनी खोखली प्रतिष्ठा में मरनेवालों के लिए यह तियात्र नयी राहें तलाशता है।

नाटक

नाटक अलग–अलग रसायनों का संयोजन होता है। सबल टीमवर्क जिसमें कलाकार, निर्देशन, नेपथ्य, संगीत वेशभूषा, रंगसज्जा, पटकथा, निर्माता, थियेटर, दर्शक इन सबका योगदान होता है। एक सफल नाटक उसके अनेक प्रयोगों के बाद ही अधिक सफलता पाता है। कोंकणी नाटक के क्षेत्र में इस साल "आमच्या लग्नाचे खतखते" अर्थात् 'हमारी शादी की मिक्स भाजी' नाटककार महेश चंद्रकांत नाटक द्वारा लिखा गया है। आज तक इन्होंने उनतीस नाटक लिखे हैं। प्रस्तुत नाटक तीसवाँ है। शादी, जब मिक्स भाजी में तबदील होती है तब जो दृश्य तैयार होगा, वह निश्चित रूप से कॉमेडी ही होगा। वैसे भी कोंकणी नाटकों में आज तक ऐसे ही फार्सिकल नाटक चलते हैं। नाटकों की स्पर्धा में भी अनूदित नाटक ज्यादा होते हैं, मौलिक नाटकों का निर्माण बहुत ही कम होता है। नया वातायन कब तैयार होगा, यह तो आने वाला समय ही बता पाएगा।

रचनाकार "कॉफ्र"– अर्थात् हर माह दी जाने वाली रकम, फंड, निधि – इसे गुल्लक भी कह सकते हैं। प्रस्तुत नाटक में रचनाकार संजय बोरकार ने अपने गाँव में जो पुरानी प्रथा थी उसे याद करके, गाँव में विद्यमान श्रद्धा और अंधश्रद्धा को उजागर किया है। रचनाकार का यह पहला ही नाटक है। पैसों को बचाना, उससे संबंधित सामाजिक कार्य करना, गाँव में विकास कार्य करना आदि बातों पर चर्चा की गई है। भविष्य में भी कोंकणी साहित्य के लिए रचनाकार और भी साहित्यिक कृतियाँ रचेंगे, ऐसी आशा है।

कला चेतना, वळवय, गोवा की नाट्य संस्था का नाटक "गाँव जालो जाण्टो" अर्थात् 'गाँव हो रहा बुड्ढा' ने लंदन में नाट्य–मंचन करने के लिए गोवा से लंदन की उड़ान भर ली है। गोवा में हाऊसफुल मंचन के बाद अब वहाँ पर भी यह नाटक सफलता पाएगा, इसमें कोई दो राय नहीं। गोवा का रंगमंच नाटक और तियात्र दोनों हिस्सों में अपने दर्शकों को रिझाता रहता है। गोवा में नाटक देखने ज्यादातर हिंदू दर्शक जाते हैं और तियात्र का दर्शक ईसाई समुदाय का होता है पर प्रस्तुत नाटक में तियात्र शैली को भी अपनाया गया है अर्थात् नाटक शैली और तियात्र शैली को मिलाकर संहिता लिखी गई है जो दर्शकों को पसंद आ रही है। आशा है, भविष्य में

नाटक रचने वाले तियात्र भी रचेंगे और तियात्र रचने वाले नाटक भी रचेंगे, तभी दर्शक भी मिले–जुले रूप में आएंगे!

सन् 2024 का यह लेख लिखते हुए दिसंबर महीना चल रहा है। 10 दिसंबर, 2024 कोंकणी अखबार "भांगरभूंय" में समाचार है कि प्रस्तुत नाटक के 123 मंचन हो चुके हैं। जनवरी, 2025 में यह नाटक मुंबई में भी डंका बजाने जा रहा है।

कोंकणी नाट्य जगत में दिपराज सातोर्डेकर युवा नाट्यकार के रूप में बहुत ही जाना माना नाम है। इनके द्वारा रचित एक नाटक अप्रैल महीने की 17 तारीख, सन् 2018 को "कला चेतना नाट्य महोत्सव" में शामिल था। उस समय उस नाटक को बहुत ही सराहा गया था। नाट्यकार की सराहना करने वालों में एक नाम था, पुंडलीक नारायण नायक। कोंकणी नाटकों में यह नाम ज्येष्ठ नाट्यकार के रूप में लिया जाता है जिन्होंने कोंकणी रंगभूमि की नींव को मजबूत बनाया, उसे यथार्थ चिंतन से जोड़ा तथा गाँव के आम आदमी की समस्या को उजागर किया। प्रस्तुत नाटक का शीर्षक "सरण जळटाना" अर्थात् 'चिता जलते हुए' था। उसी नाटक को अब पुस्तक रूप में प्रकाशित किया गया है। दिपराज सातोर्डेकार का यह नाटक पहली बार पुस्तक का आकार पाता है पर दिपराज जी कोंकणी नाट्य जगत में इससे पहले चार नाटक प्रस्तुत कर चुके हैं। नाटक की संहिता ही इतनी परिपक्व है कि इसकी मंचीय क्षमता, संवाद के कारण ही प्रभावित होती दिखती है। जमींदारों की शोषण–दोहन की प्रवृत्ति और शोषित वर्ग की समस्या को लेकर नाटक अपने समय का यथार्थ चित्रण करता है।

कोंकणी उपन्यास

कोंकणी भाषा की अलग–अलग लिपियों में जब उपन्यास विधा पर सोचते हैं तो पता चलता है कि कन्नड़ लिपि की कोंकणी में आशय विषय की विविधता द्रष्टव्य होती है, वैसे ही रोमन लिपि की कोंकणी में भी अपने आशयों की विस्तृतता के कारण एक नया क्षितिज दिखाई देता है। जैसे 'दोन झुजां: एक जैत'– एक हार अर्थात् दो युद्धः एक विजय–एक पराजय, जिसके लेखक, हैं पिओ फेर्नांडीस। कथानक में गल्फ में नौकरी के दौरान घर और ऑफिस दोनों क्षेत्र के तनावों का चित्र उजागर होता है। नायक इन्हीं उलझे धागों में अपना सजग चित्रण करता जाता है। मारियो की पत्नी गुजर चुकी है। ऐसे में जीवन ही एक युद्ध बन जाता है। इसी रस्साकशी को झेलते–झेलते उपन्यासकार अपनी संवेदना से पाठकों को जगाते रहता है। प्रतीकात्मक रूप से दो पेड़ और दोनों को अलग–अलग किस्म के कीट लगते हैं। जीवन–मृत्यु के प्रश्नों को सुलझाते जाने की दास्तान बयान होती है। सुखी जीवन में एक ही रोग प्रवेश करता है और घर, परिवार, अस्पताल में बँटती यह कहानी हार–जीत का संघर्ष, गल्फ से शुरू होकर केरल तक की यात्रा, नानी के रूप में उभरता पात्र, गोवा और मंगलुरु की स्त्रियों की स्थिति पर विकसित होता हुआ दिखाई देता है। इतना विस्तृत

कथापट ही इसकी शक्ति है।

उसी तरह "लुझीन मांय" अर्थात् लुझीन माँ भी एक संघर्ष गाथा है। कहानी की शुरुआत अमेरिका की महानता दर्शाने से होती है। लुझीन माँ की 28 साल की बेटी लुईजा विश्व रिसेशन के समय "सॉटेक इंटरनेशनल लिमिटेड" कंपनी की सी.ई.ओ., अपनी कंपनी को किस तरह से बचाती है, यह भारतीय संस्कृति के रूप में चित्रित किया गया है।

गोवा की नागरी लिपि की कोंकणी भाषा में उपन्यास का इतना विस्तृत कथा–पट द्रष्टव्य नहीं होता। किसी भी भाषा का साहित्य प्रादेशिकता में पनपे, यह जरूरी है पर उस साहित्य को विश्व से जुड़ना भी उतना ही आवश्यक होता है।

भालचंद्र गाँवकार महाविद्यालय में कोंकणी पढ़ाते हैं। सन् 1993 से कोंकणी लेखन कर रहे हैं। अब सन् 2024 में भालचंद्र जी "पनवती" अर्थात् पनौती नवलिका लेकर आए हैं। प्रस्तुत पुस्तक का समय 1980–1990 का दर्शाया गया है। इसे सन् 2024 में यथावत् छापा गया है। औद्योगिक स्थापनाओं के बाद गाँव के कायापलट में उसकी आत्मा ही छलनी हो जाती है। मनुष्य का विकास न हो पाया पर उसकी अधोगति हो गई। लेखक उस गाँव के बारे में अपनी चिंता व्यक्त करते हैं। कृति का उद्देश्य तो अच्छा है पर शैली, आशय, प्रकृति के बदलाव, वातावरण–इन सबमें बहुत कुछ छूटा हुआ है।

कोंकणी साहित्यिक गतिविधि जो कोंकणी की रोमन लिपि में हो रही है, उसे सजाने, सँवारने में, दालगाद अकादेमी का योगदान है। कोंकणी भाषा की नागरी लिपि के साहित्य के लिए गोवा कोंकणी अकादेमी कार्यरत है तो रोमन लिपि के लिए दालगाद कोंकणी अकादेमी कार्यरत है, जो कोंकणी भाषा की रोमन लिपि के साहित्यकारों को अनुदान देती है, साथ–साथ पुरस्कार देने का कार्य भी करती है। इस साल सन् 2024 में उपन्यासकार अँथनी मिनेझिस को उनके उपन्यास "हांव घोवाची बायल" अर्थात् 'मैं अपने पति की पत्नी' को प्रदान किया गया।

रोमन लिपि के कोंकणी उपन्यास की शुरुआत "क्रिस्तांव घराबो"– ईसाई परिवार से मानी जाती है जिसके उपन्यासकार एदुआर्द ब्रुनो द सौजा हैं। इन्होंने कोंकणी की रोमन लिपि में प्रस्तुत उपन्यास का उनकी मृत्यु के बाद सन् 1911 में प्रकाशन किया। अब इसका लिप्यंतरण कोंकणी नागरी लिपि में भी हो चुका है जिसे गोवा कोंकणी अकादेमी ने सन् 2009 में प्रकाशित किया। सन् 2024 में उपन्यासकार अँथनी मिनेझिस उपन्यास की विषयवस्तु, शैली में आशय–आकार का विकास कर रहे हैं। आशा है, कोंकणी भाषा की रोमन लिपि में आने वाले समय में और बेहतर साहित्य रचा जाएगा।

सावियो पिंटो ने सन् 2024 में कोंकणी की रोमन लिपि में अपना छठा उपन्यास "मांय–पायचे बेसांव" अर्थात् 'माता–पिता का आशीर्वाद' नाम से प्रकाशित किया है।

सन् 2023 में "नाच बाई नाच" और इस साल "मांय– पायचें बेसांव" अर्थात् 'माता–पिता का आशीर्वाद' उपन्यास में उपन्यासकार धर्म को महत्त्व न देकर सब धर्मों को समानता और सम्मान देकर समाज में उसका महत्त्व स्थापित करना चाहते हैं। अंतरजातीय शादी को समय की माँग मानते हैं। सावियो पिंटो अपने उपन्यासों में विस्तृत फलक में समसामयिक प्रश्नों का, यथार्थ का, राजकीय सरोकारों का चित्रण करते हुए युवावर्ग दिशाहीनता, मनुष्य पर होते अत्याचार, मूकजाति पर होते आक्रमण, समाज में आते बदलाव, धर्म, धर्मगुरु, राजगुरु, शिक्षण, व्यवसायों के विकास मार्ग में आती मुसीबतें, इन सब पर अपनी विकासात्मक सोच से, अपना नया विचार लोगों के सामने रखते हैं। अपने अहम् को छोड़कर घर, परिवार, समाज, देश में एकता लाने का आह्वान करते हैं। सन् 2015 से सन् 2024 तक इनके उपन्यासों में उपन्यासकार की सामाजिक दृष्टि प्रेम, पाप, हमारा राज्य, राजकीय समस्याएँ, किसान, खेती, कृषिविज्ञान की आवश्यकता, जमीन पर सीमेंट कंक्रीट के जंगल के स्थान पर हरी–भरी फसल को देखती है। सबको अनाज पर्याप्त मात्रा में मिले, ऐसा संदेश उपन्यासकार देते हैं। अपने पूर्वजों के कार्य को व्यवसाय को आशीर्वाद मानकर वह हमारे लिए कल्याणकारी हो जाता है, ऐसा चिंतन सावियों पिंटो के लिए ही नहीं वरन् सबके लिए महत्त्वपूर्ण मार्गदर्शन बनता है।

कोंकणी लोकवेद

चिन्मयी गोपाळ सावंत द्वारा संकलित आसगाँव (शहर का नाम) के "धालो गीतां" का लोकार्पण हुआ। मंदिर के गीत मार्गशीर्ष और पूस के महीने में मंदिर के प्रांगण में यह लोकनृत्य स्त्रियों द्वारा किया जाता है। इस लोकनृत्य में जीवन, प्रकृति, पर्यावरण संबंधी गीतों को गाया जाता है।

"धालो" की तरह ही एक और लोकनृत्य प्रकार "फुगडी" भी है। इस नृत्य में लड़कियाँ या औरतें हाथों में हाथ पकड़कर गोल–गोल चक्कर लेती हैं। चक्कर में घूमते हए "फू–फू" कहते हुए, आहिस्ता–आहिस्ता बैठती और उठती हैं... अंत में बैठ जाती हैं। इसीलिए इस पुस्तक का नाम भी "फु–फु फुगडी" रखा गया है। लेखिका सुष्मिता सुभाषचंद्र गावस ने इन गीतों को शब्दबद्ध रूप दिया है, इससे मौखिक गीतों का संकलन, आनेवाली पीढ़ी के लिए बहुत ही उपयोगी सिद्ध होगा। प्रस्तुत पुस्तक में लोकसंस्कृति, लोकवेद, लोककला को संजोने का कार्य किया गया है।

आत्मकथा / जीवनी

पादरी विताल मिरांडा के जीवन पर आधारित "जिवीत आनी वावर" अर्थात् जीवन और कार्य का प्रकाशन हुआ है। इस पुस्तक को कवि एडवीन फर्नांडीस द्वारा लिखा गया है। वैसे भी पादरी का जीवन समाज कल्याण के लिए ही होता है। अपने जीवन के तीस साल उन्होंने अपना पुरोहितपन ईश्वर की आज्ञा के अनुरूप ही व्यतीत किया।

उस उपलक्ष्य में पादरी विताल का सम्मान करते हुए, प्रस्तुत पुस्तक का लोकार्पण किया गया। लेखक ने पादरी जीवन के अनुभवों को शब्दबद्ध किया है। ईश्वर आज्ञानुसार ही उनका संदेश लोगों तक पहुँचाया है। प्रस्तुत पुस्तक में कल्याणकारी जीवन संदेश दिया गया है।

"अस्तुरगाथा" अर्थात् 'स्त्रीगाथा' पुस्तक में स्त्री की गाथा को चित्रित किया गया है। लेखिका श्रद्धा गरड अपने स्वास्थ्य की बहुत सारी मर्यादाओं के बावजूद जिस जिजीविषा से कार्य कर रही हैं, वह वाकई काबिले–तारीफ है। प्रस्तुत पुस्तक में उन्नीस कर्मठ महिलाओं के जीवन संघर्ष को उजागर किया गया है। प्रस्तुत पुस्तक की विशेषता यह है कि इसमें हर कर्मठ व्यक्ति का इतिहास तो है पर यह पुस्तक ऐतिहासिक नहीं है। आत्मकथन होते हुए भी आत्मकथा नहीं है। हर स्त्री की गाथा को आज के संदर्भों में देखा–परखा गया है। उनके संघर्ष के तीन पीढ़ी के इतिहास को संजोया गया है। श्रद्धा ने अपनी व्हील चेयर पर बैठकर ही सबको मोबाइल पर ही अपने प्रश्नों को भेजा और सब कर्मठ सखियों ने अपने जवाबों को मोबाइल पर भी लिख भेजा।

हरेक कर्तृत्ववान रचनाकार के रचना विश्व का अपने कॅलिडोस्कोपिक रूप में हर पल, हर शब्द, एक नया सजीव चित्र प्रस्तुत करने में लेखिका श्रद्धा गरड का शब्द–शैली संयोजन का चमत्कार दिखता है जो हर कर्मठ स्त्री की सफलता सोपान की विकास यात्रा को दिखाता है। कहीं कवि तो कहीं लेखक, लोकवेद की बौछार तो फिर शिक्षकों की यात्रा, जिससे सफल विद्यार्थी 'अपना विकास मार्ग तय करते हैं.... उन सबकी अपनी–अपनी पहचान की गौरव गाथा यह पुस्तक है।

"प्रेमानंद लोटलीकार– विचार, नगर, करणी" प्रेमानंद लोटलीकार – विचार दृष्टि और कार्य पुस्तक में विन्सी क्वाद्रूस द्वारा प्रेमानंद लोटलीकार जब तियात्र में काम करते थे, तब अलग–अलग पत्रिका अखबार में जो लेख छपते थे उनका विवरण दिया गया है। चरित्रात्मक रूप में यह किताब चरित्र के साथ–साथ उस समय के तियात्र, उनका इतिहास, समाज, संस्कृति कलाकार सबका विवरण भी देती है।

कोंकणी भाषा की रोमन लिपि में इस साल "रोमन कोंकणींतले सर्गस्त सेवक" अर्थात् रोमन कोंकणी के स्वर्गस्थ सेवक का प्रकाशन हुआ जिसमें सन् 1549 में जन्मे पादरी थॉमस स्टिफनस द्वारा लिखित क्रिस्त पुराण और दोत्रिना क्रिस्ता अर्थात् डॉक्टरीन ऑफ क्राइस्ट का उल्लेख किया गया है। सन् 1836 में जन्मे लेखक कोंकणी की रोमन लिपि में सबसे पहला उपन्यास लिखने वाले तथा पत्रकारिता में लेखन करने वाले एदुआर्द जुजे ब्रुनो द सौज हैं। इसके बाद 1844 में जन्मे शब्दकोशकार और भाषा–विज्ञानी पादरी आग्नेल माफेय तथा कोंकणी भाषा की दिशा तय करने वाले, चहुँ ओर से इस भाषा का विकास करनेवाले मॉन्स्योर सेबास्त्यांव रुदोल्फो दाल्गादो, जिनका जन्म सन् 1855 में हुआ था। इस तरह से प्रस्तुत पुस्तक में 120 लेखकों के व्यक्ति–चित्रण पाए जाते हैं जो

आज की पीढ़ी के नये अनुसंधानकर्ताओं के लिए भी महत्त्वपूर्ण हैं।

डायरी आत्मकथात्मक लेखन का एक रूप है। इसमें लेखक अपनी गतिविधियों का, अपने समय की सामाजिक, व्यक्तिगत अंतरंगता को भी उजागर करता जाता है। कोंकणी साहित्य में शांताराम आमोणकार की रचना इस साल प्रकाशित की गई है। प्रस्तुत पुस्तक में आमोणकार जी द्वारा जीवन के छह वर्षों का अर्थात् जब वे मुंबई में 14/08/1947 से 01/10/1953 तक रह रहे थे, तबके समय का उनका संघर्ष, कोंकणी भाषा के प्रति उनकी क्रियाशीलता को उजागर किया गया है। पोट्रेट पेंटिंग के ये कलाकार जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट्स से मास्टर डिग्री प्राप्त कर चुके थे। कला और संस्कृति में उनके योगदान के लिए इन्हें सन् 1986–87 के लिए राज्य संस्कृति पुरस्कार से नवाजा गया था।

जीवनी के रूप में प्रकाशित एक पुस्तक तियात्र के मंच पर योगदान देनेवाली रोझी आल्वारीस पर आधारित है कोंकणी थियेटर के तियात्र के इतिहास में जिन्हें "ज्वेल ऑफ द कोंकणी स्टेज" से नवाजा गया है। उनकी बेटी स्कायला कॉर्त ने इसे लिखा है। पुस्तक को "खेळा मोळार थावन तियात्र माचयेर" अर्थात् खेल के मैदान से तियात्र मंच पर इस शीर्षक से प्रकाशित करवाया है। राष्ट्रीय स्तर पर खो–खो खेलकर प्रसिद्धि हासिल करनेवाली रोझी को अपने जीवन–यापन का साधन तियात्र को बनाना पड़ा! सिर्फ चौदह साल की उम्र में इन्होंने तियात्र के मंच पर पदार्पण किया! तियात्र का इतिहास गवाह है कि जब मराठी नाटकों में भी स्त्री कलाकार नहीं थी, तब गोवा के तियात्र मंच पर सबसे पहली स्त्री कलाकार रेजिना फर्नांडीस थी! इनके बाद जो स्त्री कोंकणी रंगमंच पर आई, उनमें रोझी आल्वारीस एक नगीने के रूप में मानी गई थीं। अपने जीवन में गरीबी, कष्ट और काँटे पानेवाली, "स्कूल में बेस्ट स्पोर्ट्स वुमन" नाम से मशहूर होने वाली, आगे चलकर तियात्र के मंच पर इतना नाम कमाएगी, यह बात किसी ने सोची नहीं होगी! इस कलाकार ने अपने जीवन में जो संघर्ष झेला, उसे लोगों के सामने रखने के लिए, परिजनों ने रोझी की याद में जीवनी को प्रकाशित करवाने का निर्णय लिया। प्रस्तुत जीवनी में 33 अध्यायों में इस जीवन संघर्ष को चित्रित किया गया है।

इस साल सन् 2024 में आत्मकथनात्मक शैली में लिखा हुआ एक कहानी–संग्रह भी प्रकाशित हुआ है। लेखक का नाम प्राध्यापक वसंत सैल है। इन्होंने "कोमुल" नाम से आत्मचरित्रात्मक उपन्यास भी लिखा है जिसके बारे में मैंने 2022 के लेख में लिखा है। इस साल वे "मळायलीं फुलां" अर्थात रोप–वाटिका के फूल लेकर आए हैं। अपने बचपन की वाटिका से लेखक जिन फूलों को स्मृति की गंध के रूप में चित्रित करते हैं, वह गंध कारवार के आसपास के गाँवों की मिट्टी की सौंधी खूशबू है। कोंकणी भाषा की कारवारी शैली में, अपने गाँव शेजेबाग माजाळी (कारवार), किसान परिवार

में जन्म, उस समय का वह गाँव, उनका बचपन, उनकी पाठशाला, शिक्षा प्राप्त करने के लिए किए गए संघर्ष इन सबका बेहद प्रभावी चित्रण है। प्रस्तुत कहानी–संग्रह की शैली पूरी तरह से आत्मकथनात्मक होने के कारण इसे आत्मकथा और जीवनी में स्थान दिया गया है। पुस्तक के लेखक इसे खुद ही अपने बचपन की यादों के रूप में मानते हैं। यादों को कहानी का रूप देते हुए उन्हें जिस साहित्यिक विधा में पिरोने का प्रयत्न हुआ है वह प्रथम पुरुष शैली में है जिस कारण उसका स्वरूप आत्मकथनात्मक ही बन पाया है। कहानी है पर उसकी शैली कथनात्मक नहीं, आत्मकथनात्मक ही है।

गौरीश वेर्णेकार कोंकणी साहित्य में काफी प्रचलित नाम है। वे कवि, मूर्तिकार, चित्रकार, गीतकार, नाट्य दिग्दर्शक और शिक्षक के रूप में अपना योगदान देते हैं। इन्होंने जब अपना 50वाँ जन्मदिन मनाया, तब चित्रकार ज्युलियट इ. वाझ कारनेरा के संपादन में गौरीश– अर्थात् बहुमुखी प्रतिभासंपन्न गौरीश– पुस्तक का लोकार्पण हुआ। गौरीश जी के जीवन में उन्होंने जितने क्षेत्रों में कार्य किया है, उनका लेखा–जोखा लेते हुए संपादक ज्युलियट ने चित्रों के माध्यम से गौरीश जी को मिले राष्ट्रीय तथा राज्यस्तरीय, पुरस्कार और उनके योगदान आदि पर प्रकाश डाला है।

अनुवाद / लिप्यंतरण

ओड़िआ लेखिका गायत्री सराफ के कहानी–संग्रह 'धधकता शिखर' का अनुवाद अनुवादक स्नेहलता भाटीकार द्वारा किया गया है जिसका कोंकणी शीर्षक "भगभगते तेमूक" दिया गया है। अनुवादक का कहना है कि उन्होंने अंग्रेजी भाषा में इन कहानियों को पढ़ा था जिनसे वे प्रभावित हुईं, तब उन्होंने अंग्रेजी से यह अनुवाद कोंकणी भाषा में किया। ओड़िया लेखिका गायत्री सराफ का चिंतन यथार्थवादी है, जन–सामान्य की जिंदगी से जुड़ा है।

शैलेंद्र मेहता अनुवादक के रूप में भी कोंकणी साहित्य जगत में अपना नाम कमा चुके हैं। इस साल 2024 में इन्होंने चौदह वैश्विक कहानियों का अनुवाद "संवसारीक कथांचो कोंकणी अणकार" शीर्षक से किया है। प्रस्तुत पुस्तक में स्पेनिश, पुर्तगाली, रशियन, अंग्रेजी, जापानी, इटालियन आदि भाषाओं के प्रसिद्ध लेखकों की कहानियों को कोंकणी भाषा में अनुवाद करके कोंकणी साहित्य को विश्व कहानी साहित्य के साथ जोड़ने का कार्य किया गया है।

कत्थक और ओडिसी नृत्य को प्रस्तुत करने वाली पार्वती दत्ताजी ने अंग्रेजी में "नृत्य गाथाः स्टोरी ऑफ इंडियन डांस" नाम से पुस्तक लिखी। इसमें चित्रों के साथ भारतीय शास्त्रीय नृत्य प्रकारों की जानकारी आसानी से मिलती है जिसे आज की पीढ़ी एक धरोहर के रूप में याद रखेगी। इसका कोंकणी अनुवाद, कोंकणी मासिक बिंब के संपादक दिलीप बोरकार ने किया है। प्रस्तुत पुस्तक में कत्थक, ओडिसी कुचिपुडी, भरतनाट्यम, मोहिनीअट्टम, कथकली, मणिपुरी, सत्रीय और छाऊ नृत्यों की

जानकारी दी गई है। इस पुस्तक को बिंब प्रकाशन ने प्रकाशित किया है। प्रस्तुत पुस्तक का अनुवाद अनेक भारतीय भाषाओं के साथ–साथ चीनी, जापानी भाषाओं में भी हुआ है।

शैलेंद्र मेहता द्वारा अनूदित कृति "मुंबयचो वेपारी" अर्थात् मुंबई का व्यापारी अपने सकारात्मक चिंतन को व्यक्त करती है जिसके मूल लेखक के.जी. मल्ल्या हैं। प्रस्तुत अनुवाद उपन्यास रूप में है इसलिए उसे अनुवाद के अंतर्गत रखा गया है। व्यापारी राम कामती के जीवन से प्रेरित यह उपन्यास उनके व्यापारिक कौशल को उजागर करता है। राम कामती का जीवन काल 1650 से लेकर 1725 तक का है। उस जमाने में उनके पानी के जहाज चलते थे जिनमें से एक नाम "द बॉम्बे मर्चेंट" था। इसी नाम पर अनुवादक शैलेंद्र मेहता ने इस उपन्यास का शीर्षक 'मुंबई का व्यापारी' रखा है। राम कामती व्यापारी किसान और परोपकारी जीव भी थे। उस जमाने में उन्होंने वालकेश्वर मंदिर का पुनर्निर्माण करवाया था। मुंबई के लिए वे कुछ भी करने के लिए हमेशा तैयार रहते थे। राम कामती के चाहने वालों के साथ–साथ कुछेक उनके द्वेषी भी थे जिन्होंने मिलकर इस बहुआयामी व्यक्ति को फर्जी केस में फँसाया था। अपने जीवन की संध्या में वे आजीवन कारावास में ही रहे। उस जमाने में उनकी लाखों की संपत्ति जब्त कर ली गई! विधि की विडंबना तो देखिए कि उनकी मृत्यु के 23 साल बाद उन्हें निर्दोष करार दिया गया! प्रस्तुत उपन्यास के लेखक के. जी. मल्ल्या के विचारों को व्यक्त करते हुए अनुवादक शैलेंद्र मेहता ने इन बातों को उजागर किया है। कोंकणी भाषा में "मुंबईचो वेपारी" का स्वागत ही है। आज की पीढ़ी इस चरित्र से बहुत कुछ सीख पाएगी!

सन् 2024 में कोंकणी साहित्य की अनुवाद विधा में गणेशदेवी लिखित महाभारत की कृति महत्त्वपूर्ण है जिसका कोंकणी अनुवाद दिलीप बोरकार जी ने "महाभारत महाकाव्य आनी राष्ट्र" अर्थात् महाभारत महाकाव्य और राष्ट्र नाम से किया है। प्रस्तुत ग्रंथ में महाभारत पूर्व के भारत में आदिवासियों द्वारा भारत की खोज करने पर अपना ध्यान केंद्रित किया है। इतिहास, भाषा, धर्म के बारे में, उनके प्रभाव के बारे में अलग ही दृष्टि से चिंतन किया है। इसी की वजह से दिलीप जी ने यह कोंकणी अनुवाद किया है। प्रस्तुत महाकाव्य की खोज यात्रा में प्रो. गणेशदेवी ने सही मायनों में महाभारत के समय का भारत, उसमें आदिवासी समय में महाभारत का प्रस्तुतीकरण देखकर उन पर 'आऊट ऑफ द फ्रेम' जाकर एक नया दृष्टिकोण विकसित करके चिंतन किया है। प्रो. गणेश देवी के इस चिंतन को कोंकणी भाषा में अनूदित करके कोंकणी भाषा और चिंतन को दिलीप जी ने नया आयाम दिया है।

बोरकार जी ने एक और कृति का मराठी से कोंकणी में अनुवाद किया है। मराठी भाषा के लेखक माधव गाडगिळ, जिन्हें पद्मभूषण से नवाजा भी गया था, पर्यावरण

प्रेमी थे। भारत के अग्रगण्य वैज्ञानिक भी थे। प्रस्तुत पुस्तक इनकी सात दशकों की यात्रा, उनका जीवन और कार्य आत्मचरित्र रूप में, कोंकणी भाषा में "दोंगरांतली पासयः सैमा सांगतान" अर्थात् पर्वत शृंखला में एक घुमक्कड़ी प्रकृति के साथ में एक नया पर्यावरणीय संदर्भ उजागर करती है। पश्चिम घाट को बचाने में माधव गाडळ जी का योगदान बहुत ही महत्त्वपूर्ण बगिता है।

मूलतः हिदीं में रचित "हिरोशिमा की याद एवं अन्य कविताएँ" कवि सुरेश ऋतुपर्ण की कविताओं का कोंकणी अनुवाद रमेश वेळुस्कार द्वारा किया गया। प्रस्तुत काव्य–संग्रह को कोंकणी में "हिरोशिमाची याद आनी हेर कविता" शीर्षक से प्रकाशित किया गया है। यह अनुवाद रमेश वेळुस्कार जी ने अपने अंतिम दिनों में किया था। जाते–जाते इन्होंने कोंकणी साहित्य को एक अमूल्य साहित्य रत्न प्रदान किया है। हिरोशिमा शहर पर 06 अगस्त, 1945 के दिन अणुबम गिराया गया था। इस विस्फोट के विध्वंसकारी परिणाम मानव जाति आज तक भोग रही है! ऋतुपर्ण जी पृ. 67 पर सही चित्र देते हैं कि.... ''अतीत के बिना/ कोई वर्तमान नहीं होता/और भविष्य/ वर्तमान की गोद में ही खेलता है..." रमेश वेळुस्कार जी अपनी पूरी कवि संवेदना के साथ हिरोशिमा के दर्द के साथ एकरूप होकर कोंकणी अनुवाद को साकार कर पाए हैं।

अनुवाद के क्षेत्र में मराठी से कोंकणी में अनुवाद करने वाले डॉ. पांडुरंग फळदेसाय कोंकणी साहित्य में लोकगीत तथा कोंकणी लोककलाओं पर पुस्तकें लिख चुके हैं। प्रस्तुत पुस्तक का शीर्षक "फादर थॉमस स्टीफन्स के सांस्कृतिक भाईचारे का अंकुरण" सांस्कृतिक संदर्भ में उसके विकसित रूप को उजागर करता है। संस्कृतीकरण की प्रक्रिया में प्रथम चरण होता है दो संस्कृतियों की पहचान, दूसरे में संघर्ष तथा तीसरे चरण में आत्मसातीकरण। यहाँ पर मानवीय कल्याण की चीजें बचती हैं और जो मनुष्य के लिए अकल्याणकारी तत्व हैं, उन्हें छोड़ दिया जाता है। उसी क्रम में प्रस्तुत पुस्तक सांस्कृतिक भाईचारे को विकसित करती नजर आती है। डॉ. सिसिलिया कार्व्हाल्य ने इसे मराठी में लिखा है।

सन् 2024 के कोंकणी दालान में बहुत ही महत्त्वपूर्ण पुस्तक का अंग्रेजी से हिंदी में अनुवाद भारतीय भाषा लोक सर्वेक्षण संस्था द्वारा "गोवा की भाषाएँ" (खंड 8, भाग–1) कोंकणी भाषा और उसकी विविध बोलियों के रूप में किया गया है जिसके मुख्य संपादक गणेश देवी, खंड संपादक माधवी सरदेसाय, दामोदर मावजो तथा अनुवाद संपादक किरण बुडकुले हैं। प्रस्तुत पुस्तक में कुल 21 लेखों में कोंकणी भाषा पर उसके भाषा समुदाय पर कल–आज और आने वाले कल के रुझानों पर चिंतन किया गया है। ऐतिहासिक, सामाजिक, प्रादेशिक कोंकणी की बोलियाँ, लोक संस्कृति, साहित्य, कोंकणी भाषा पर भारतीय तथा पाश्चात्य भाषाओं

का प्रभाव आदि संदर्भों में विचार किया गया है। हाशिए पर के समुदायों की भाषा को समझना तथा जंगलों में रहनेवाले समुदायों की बोलियों का दस्तावेजीकरण करना इस पुस्तक का केंद्र बिंदु है। कोंकणी भाषा तथा भारतीय भाषाओं के लिए यह संस्था महत्त्वपूर्ण कार्य कर रही है। इसकी खसलत यह है कि सिर्फ समृद्ध भाषा ही नहीं बल्कि आदिवासी लोगों की बोलियों, तटवर्ती क्षेत्रों की बोलियों को भी यह ध्यान में रख रही है।

राजर्षि से ब्रह्मर्षि तक की यात्रा तय करनेवाले, गायत्री मंत्र के रचयिता "विश्वामित्र" के जीवन के पहलुओं को उजागर करने वाला यह उपन्यास हिंदी से कोंकणी में अनूदित किया गया है। हिंदी में इसे रचनाकार ब्रजेश के. वर्मन ने लिखा है जिसका अनुवाद डॉ. चंद्रलेखा डिसूजा ने किया है। ब्रजेश जी ने विश्वामित्र को समझने के लिए जो लिखा है वह कोंकणी अनुवादक ने पृ.11 पर अनूदित किया है– आज से हजारों साल पहले अपने विकल्पों को खोजकर प्रयोगों पर प्रयोग करते हुए एक ऋषि ने इंद्र के वर्णवादी कुशासन को आह्वान दिया... सेना सजाई... युद्ध किया पर पराजित हुए.... ऋषि ने फिर से प्रयत्न किया.. फिर से इंद्र और रावण को आह्वान दिया, जनगणना का स्वप्न सजाया और राम का साथ लेकर जीत हासिल की! लेखक का उद्देश्य विश्वामित्र की वैचारिक यात्रा को रेखांकित करना है।

इस साल कोंकणी अनुवाद / लिप्यंतरण के क्षेत्र में, कोंकणी की कन्नड़ लिपि से अधिकृत नागरी लिपि में कहानीकार स्टेन अगेरा की कहानियों का लिप्यंतरण हुआ जिसका शीर्षक "धांपल्लीं घडितां" अर्थात् अवगुंठित घटनाएँ है। प्रस्तुत कहानीकार की कहानियाँ अलग–अलग घटनाओं से संबंधित हैं। इसमें साहित्यिक मूल्य इतना गहन नहीं पाया जाता पर पाठकों की रसमयता को बरकरार रखने में वे कामयाब हुए हैं। हालाँकि इन कहानियों में यथार्थता बहुत कम रूप में दिखाई पड़ती है।

समीक्षा

कोंकणी साहित्य में एक पुस्तक प्रकाशित हुई थी जो काव्यात्मक सौंदर्य की चर्चा करती है। "काव्यसौंदर्य" शीर्षक इस पुस्तक के लेखक पंढरीनाथ दामोदर लोटलीकार हैं। प्रस्तुत पुस्तक में लेखक कवि, काव्य, कविता, अलंकार, लय–ताल, संगीत, भावना, विलास, काव्यानंद के बारे में चर्चा करते हैं। कोंकणी की रोमन लिपि में यह पुस्तक सन् 2018 में प्रकाशित हुई थी। बाद में नागरी लिपि में भी उसका लिप्यंतरण किया गया था। वैसे ही सन् 2021 में, "कोंकणी काव्यें: रूप आनी रूपकां" अर्थात् कोंकणी काव्य : रूप और रूपक, जिसके रचनाकार एच्चेम पेरनाळ थे। इस साल सन् 2024 में देखते हैं कि कोंकणी साहित्य के समीक्षा विश्व में कौन सी पुस्तकें आई हैं।

गत् साल अर्थात् सन् 2023 में समीक्षा के अंतर्गत "सावळ" डॉ. प्रकाश वजरीकार रचित पुस्तक का जिक्र किया गया था। इन्होंने ही सन् 2010 में "वज्रघात" शीर्षक से

आस्वादकीय पुस्तक लिखी थी। "सावळ" में शब्द का अर्थ ही देखें तो वह है– सुपारी का पत्ता या फिर खाद के रूप में उपयोगी पत्ते या फिर एक तरफ से हल्की सी कालिमा जिससे उजाला स्पष्ट नहीं हो पाता। कोंकणी समीक्षा क्षेत्र की इस पुस्तक से स्पष्ट हो जाता है कि पंद्रह लेखों में कहीं–कहीं एक समीक्षात्मक दृष्टि की झलक भी मिल जाती है।

विशाल खांडेपारकार कोंकणी साहित्य के उभरते साहित्यकार हैं। इस साल सन् 2024 में उनकी समीक्षात्मक रचना "निर्माल्य" प्रकाशित हुई है। प्रस्तुत पुस्तक में 36 लेखकों की कृतियों पर उन्होंने लेख लिखे हैं। विशाल जी सातत्य से कोंकणी अखबारों में अपना चिंतन प्रस्तुत करते रहते हैं। "निर्माल्य" पुस्तक में अलग–अलग आशयों की कृति पर लेखक ने अपनी विवरणात्मक या फिर विश्लेषणात्मक दृष्टि स्थिर करके अपने विचारों को व्यक्त भी किया।

वैचारिक लेख

"लोकशाही हाय हाय!" और "लोकशाही...? क्या है वह?" इन दो पुस्तकों को लेकर लेखक अरविंद भाटीकार ने वैचारिक लेखन में अपना नाम जोड़ लिया है। प्रस्तुत पुस्तक में लेखक राजकीय व्यवस्था की समसामयिक स्थिति को लेकर अपना मंतव्य, विश्लेषणात्मक रूप में लिखते हैं। सही मायने में लोकशाही क्या होनी चाहिए, उस पर अपना चिंतन देने में लेखक सफल हुए हैं। जनता के स्वभाव का विश्लेषण करके बाद में उनके अलग–अलग स्तरों पर अपना मंतव्य देकर लेखक अपने विचारों को व्यक्त करते हैं। समाज को अपने कर्तव्यों की याद दिलाने वाले ये लेख समाज के लिए कल्याणकारी हैं।

श्रीमद्‌भगवद्‌गीता का अर्थ घटन "गीतार्थ" पुस्तक में संपदा कुंकळकार द्वारा किया गया है। कोंकणी साहित्य में तकरीबन ग्यारह अनुवाद उपलब्ध हैं। संपदा जी के इस "गीतार्थ" पुस्तक में उनकी निष्ठा और छह साल की उनकी मेहनत स्पष्ट दिखाई देती है। मनुष्य को सरलता से समझ में आए, ऐसी भाषा का प्रयोग किया गया है। तत्त्वज्ञान को सरल शब्दों में कहने के लिए उस ज्ञान को पचाना पड़ता है, तब जाकर यह हेतु सिद्‌ध हो सकता है।

समीक्षा शिरोड़कार ने "अंतरंग" नाम से ललित लेखों का संग्रह प्रकाशित करवाया है। विषयों का चयन और अभिव्यक्ति का सौंदर्य इन दोनों के कारण इनके लेख अच्छे बन पाए हैं। भविष्य में इनसे और परिपक्व कृतियों की आशा की जा सकती है।

मिनीन आल्मेदा कहानीकार हैं जो कोंकणी की रोमन लिपि और नागरी में लिखते रहते हैं। बच्चों के लिए भी इनकी लेखनी चलती ही रहती है। इस साल सन् 2024 में इन्होंने हिंदी, कोंकणी, मराठी और अंग्रेजी भाषा से सुविचारों को चुनकर इन्हें

दो–दो पंक्तियों के रूप में काव्य रूप में रखा है। इन सुविचारों के "विचार काव्य" से कोंकणी भाषा समृद्ध हुई है। इन्हें पढ़ते हुए जीवन के प्रति एक अलग ही अभिगम पाया जाता है जो लेखक की सफलता मानी जाएगी।

कोंकणी साहित्य विश्व में हर्षा शेटये बहुत ही चर्चित नाम है। इन्होंने कविता, कहानी–संग्रह, बाल कहानियाँ लिखी हैं। इनका सबसे बढ़िया और अनोखा कार्य है कि उन्होंने गोवा के पक्षियों की पहचान "गोंयची सवणी" पुस्तक द्वारा कराई है। इनके यात्रा–वर्णन भी उतने ही सुंदर हैं। इस साल हर्षा शेटये रचित "आमुरचंवर" अर्थात् अमराई बौराई का लोकार्पण 18 मई 2024 को हुआ। प्रस्तुत पुस्तक में लेखों का चयन विविधता से हुआ है। लेखिका ने कुल बीस लेखों में अपने विचारों को साकार किया है। विचारों की अमराई में गोवा का इतिहास, संस्कृति, यहाँ के फूल, तितली समाज आकार पाते हैं। उदाहरणस्वरूप देखें तो बच्चों के लिए बनाई जाती रंगबिरंगी गुदड़ी, जिसमें घर के सब सदस्यों का प्यार, अनुराग छुपा होता है, बाजार में मिलती गुदड़ी से बिलकुल भिन्न है। प्रस्तुत पुस्तक में इनका वर्णन, आनेवाली पीढ़ी को ध्यान में रखकर किया गया है। सावन के मास में आते हुए त्योहार, उनका महत्त्व, उनके सांस्कृतिक महत्त्व को भी लेखिका उजागर कर रही है। इन्हें सन् 2024 के लिए साहित्य अकादेमी का बाल साहित्य पुरस्कार भी मिला है।

गत साल शिल्पा लाड ने विद्यार्थियों के लिए पुस्तक लिखी थी। इस साल सन् 2024 में वे "कोंकणी निबंदमाला" अर्थात् 'कोंकणी निबंधमाला' लेकर आई हैं। प्रस्तुत पुस्तक सही मायनों में कोंकणी विद्यार्थियों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

अरुण साळकर सोशल माध्यमों पर बहुत ही सक्रिय हैं। समय–समय पर वे ब्लॉग भी लिखते रहते हैं। इस साल वे "साळकां" अर्थात् कमल शीर्षक से अपना वैचारिक चिंतन लेकर आए हैं। प्रस्तुत पुस्तक उनकी तीसरी कृति है। 36 लेखों को लेकर इस कृति को सजाया गया है। इनमें से कुछ लेख विनोदी हैं तो कुछ लेख अलग–अलग आशयों को लेकर लिखे गए हैं, जैसे– फिल्म संगीत, सिनेमा, नाटक आदि। हर विषय पर वे बहुत ही चाव से लिखते हैं। सबसे बड़ी बात इनकी शैली की है जो घटनाओं को इस तरह बयान करती है जैसे वाक्य अभी–अभी घटित हो रहा हो!

एक और लेख संग्रह इस साल सन् 2024 में प्रकाशित हुआ स्मिता तिंबले का "व्यक्ती तितल्यो प्रकृति," अर्थात् जितने लोग उतनी प्रकृति, व्यक्ति–चित्र में व्यक्ति–विशेष की विशेषताओं को इस तरह से चित्रित किया जाता है कि उस व्यक्ति के व्यक्तित्व के नए रूप को पाठक पूर्णतः महसूस करें। इन व्यक्ति चित्रों की एक खासियत यह भी है कि सब अपने–अपने व्यवसायों को सँभालकर, साथ–साथ में अपनी प्रिय प्रकृति को भी सींचनेवाले हैं। इन सब चरित्रों से समाज में एक सकारात्मक संदेश प्रसारित होता है, जीवन को सँवारने का संदेश।

विचारों से ज्ञान भंडार से अंकुरित और विचारों को विकसित करने वाला निबंध संग्रह "धागे" लेखक फादर रोमान रॉड्रिग्स हैं। कुल मिलाकर प्रस्तुत पुस्तक में 60 निबंध हैं जो समय की महत्ता को दोहराते हैं.... प्रकृति अपने समय पर ही फूलों को उगाती है, फलों को पकाती है.... जीवन और मृत्यु एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। सामाजिक तथा मानवीय मूल्यों को लेकर भी फादर रोमान नए विचारों को इन मूल्यों के साथ ही स्वीकारने का संदेश देते हैं। इन्हें जीवन में जब तक आत्मसात नहीं करेंगे, तब तक बदलाव की आशा करना मिथ्या है। लेखक फादर रोमान के ये धागे मनुष्य को अपना जीवन सँवारने का संदेश देते हैं।

कोंकणी साहित्य में मूकेश थळी अनुवादक, साहित्यकार, निबंध लेखक, कोशकार के रूप में प्रसिद्ध हैं। ये मराठी और अंग्रेजी भाषा में भी लेखन कार्य करते रहे हैं। इस साल वैचारिक लेखन में इन्होंने "शिवरंजनी" शीर्षक से निबंध संग्रह लिखा है। इनके द्वारा लिखी गई कोंकणी पुस्तकों में यह सातवीं कृति है। इनकी खसलत इनकी आनंददायी लेखन शैली है।

हम सब जानते हैं कि शिवरंजनी राग में 'शिव' और 'रंजनी' का युग्म है। संगीत विशेषज्ञ के विचार से संतों ने यह राग गाया। इनके गान का समय मध्य रात्रि है। इस राग के शांत रस में दुःख, विरह और गहन प्रेम को उजागर किया जाता है। आत्मिक अनुभूति भी इसकी विशेषता है। लेखक मूकेश थळी को संगीत का ज्ञान है तो जाहिर है कि अपने वैचारिक लेखन में भी बहुत सोच–समझकर ही अपना शीर्षक चुना होगा। संगीत, नाट्य, साहित्य इन्हें विरासत में ही मिले हैं। प्रस्तुत पुस्तक में कुल 24 लेख हैं। तीन–चार व्यक्ति–चित्रण भी इसमें किए गए हैं।

कोंकणी साहित्य में इस साल सन् 2024 में एक पुस्तक पत्र–लेखन शैली में है जिसके लेखक दत्ता दामोदर नायक हैं तथा उस पुस्तक का शीर्षक है– "चिटपाकुलीं" अर्थात् तितली– नाजुक सी! प्रस्तुत पुस्तक ऐरॉग्राम के रूप में है जोकि एक पिता के रूप में अपनी बेटी, जो नॉर्थ अमेरिका में अपने पति और बेटे के साथ रह रही है, को भेजी गई है। लेखक के मत से चिट्ठी छोटी–सी हो सकती है पर चिट्ठी पक्षी नहीं, पर वह तो नाजुक सी तितली है! रंग–बिरंगी! नन्ही–नन्हीं, कोमल, छुई–मुई अपनी उड़ान में मस्त! (पृ. 04)

बेटी भी जवाब में लिखती है– नाजुक तितली उड़ते–उड़ते यहाँ तक पहुँच ही गई! उससे बात करके मैं आनंदित हुई!

इसी तरह पिता–पुत्री में हर विषय पर जैसे गोवा का समाज, संस्कार, त्योहार, मौसम, इतिहास, पर्यटन, घुमक्कड़ी, संस्कृति, देश–विदेश, पक्षी, फूल, पत्ते, वृक्ष, आकाश, जमीन, पुराण, पुस्तक, रोड, अध्यात्म, गरीबी, पॉलिटिक्स आदि पर बात होती है। एक शब्द जो मुझे छू गया वह है "Bapucracy" बेटी, पिता से कहती है। यह शब्द

लेखक आर्थर को एस्लर का है, जिसे उन्होंने महात्मा गाँधी के संदर्भ में लिखा है, जिसका अर्थ है अपने विचार या अपने संबंधों में बड़ापन दिखाना! यहाँ पर भी पिता–पुत्री का संबंध दोस्तों जैसा है जिसमें आत्मीयता कूट–कूटकर भरी है। (पृ. 17)

साहित्यकार रामदास केळकर जिन्होंने आज तक 35 पुस्तकों का लेखकीय योगदान दिया है, वे इस साल 36वीं पुस्तक "आविष्कार" लेकर आए हैं। इनकी पुस्तक में विद्यार्थियों को आज की शिक्षा नीति, आज की तारीख में अलग–अलग व्यवसायों की जानकारी, वोकेशनल विषयों का मार्गदर्शन दिया गया है।

शब्दकोश

कोंकणी शब्दकोश का इतिहास बहुत पुराना है। सबसे पहला शब्दकोश जो कोंकणी भाषा में पाया जाता है, वह है रायतूर की सेमिनारी में वहाँ के पादरियों ने पंद्रह हजार शब्दों का 'कोंकणी पुर्तुगीज़ कोश' जो सन् 1557 में तैयार किया था। इसे देशी भाषा का पहला शब्दकोश माना जाता है। इसके पश्चात् सत्रहवीं शताब्दी में दो कोशों की रचना हुई थी। सन् 1626 में रायतूर की सेमीनारी में हस्तलिखित रूप में रचा गया शब्दकोश 'कोंकणी– पुर्तुगीज़ तथा पुर्तुगीज़– कोंकणी शब्दकोश' था। इटालियन जेझुइस्ट पादरी आंजेलो फ्रांसिस्क शावियेर माफेय (1844–1899) मंगलुरु में इस शब्दकोश को छापा था। इंग्लिश– कोंकणी (कोंकणी भाषा की रोमन लिपि) में यह कोश रचा गया था। कोंकणी भाषा का यह कोश सबसे पहला छपा हुआ कोश माना जाता है।

कोविड काल में जब जन–जीवन पूर्णतया ठप्प हो गया था तब गोवा विश्वविद्यालय के दो प्राध्यापक डॉ. कार्लोस फर्नांडिस और मिलिंद म्हामल ग्रंथालय की जानकारी से संबंधित इंग्लिश– कोंकणी शब्दकोश तैयार करने में व्यस्त थे। 4 अप्रैल 2023 गोवा विश्वविद्यालय में शब्दकोश को प्रकाशित किया गया। ग्रंथशास्त्रीय (Library Science) शब्दों के तकरीबन चार हजार शब्दों का यह शब्दकोश बना है। इतना ही नहीं, एक हजार इंग्लिश शब्द के लिए कोंकणी शब्द भाषा बोलने वालों के लिए भी यह शब्दकोश बहुत उपयोगी सिद्ध होगा। कोंकणी भाषा के लिए "बृहत् कोंकणी– कोंकणी शब्दकोश" की आवश्यकता है जिसमें कर्णाटक, केरल राज्य की कोंकणी के शब्दों का समावेश हो। रोमन कोंकणी के शब्दों को भी इनमें रखना जरूरी है।

कोंकणी भाषा के शब्दकोशों के इस इतिहास में सन् 2024 में इजिदोर दांतेस कोंकणी– इंग्लिश शब्दकोश देकर अपना योगदान दे रहे हैं– "Contemporary Konkani English Dictionary" प्रस्तुत शब्दकोश में लेखक प्रथम पृष्ठ पर ही लिखते हैं कि–

- इस शब्दकोश में 16,000 शब्द हैं
- जो वर्तमान समय में उपयोग में हैं

• कोंकणी की बोलियों के शब्दों को यहाँ पर स्थान दिया गया है

• इस शब्दकोश में ऐसे शब्द भी हैं जो पहले बोली में शामिल थे।

शब्दकोशकार इजिदोर अपने विचार व्यक्त करते हुए लिखते हैं कि प्रस्तुत शब्दकोश में ऐसे शब्दों को चुना गया है जो शब्द पहले प्रचलन में थे, आज नहीं है। खास करके गोवा के बाहर रहने वाले कोंकणी लोगों को वे शब्द समझ नहीं आते, उनके लिए यह शब्दकोश उपयोगी सिद्ध होगा। अनुवाद के लिए भी इसकी आवश्यकता महसूस हो रही थी। कोंकणी भाषा में संस्कृत, पुर्तुगीज़, फारसी, प्राकृत, अरबी, उर्दू, कन्नड़, ग्रीक, लैटिन, फ्रेंच, तमिल तुळू शब्द भी हैं, जिनकी जानकारी देने की कोशिश की गई है। "मलम" शब्द का उदाहरण देकर लेखक कहते हैं कि यह शब्द आगे–पीछे दोनों रूपों में एक ही रहते हैं! ऐसे शब्दों को भी इस शब्दकोश में स्थान दिया जा रहा है।

बाल साहित्य

कोंकणी भाषा के बाल साहित्य को समृद्ध करने के लिए दिनांक 18 दिसंबर, 2023 को बाल साहित्य: स्वरूप और आने वाला कल इस विषय को लेकर कार्यशाला का आयोजन, बार्देस अस्मिताय केंद्र म्हापसा, गोवा कोंकणी अकादेमी और एनसीईआरटी पर्वरी के संयुक्त तत्त्वावधान में किया गया था। बाल साहित्य की आवश्यकता पर इसमें गंभीरता से विचार किया गया था। सन् 2024 में, फरवरी की 15 और 16 तारीख को कोंकणी भाषा मंडल पाँचवी बाल साहित्य परिषद् का आयोजन करने जा रहा है। गोवा के बाल साहित्य के स्तर को बेहतर बनाने के लिए पिछले पाँच सालों से यह आयोजन होता आया है। बच्चों में पढ़ने की इच्छा जागृत करने तथा उन्हें समय के अनुरूप साहित्य मिले, इसलिए कोंकणी भाषा मंडल सन् 2017 से इसका आयोजन करवा रहा है। इस आयोजन में राष्ट्रीय स्तर के लेखकों को तथा जो बालसाहित्य के क्षेत्र में बच्चों का मार्गदर्शन करने के लिए कार्यरत हैं, उन्हें बच्चों का मार्गदर्शन करने के लिए निमंत्रित किया जाता है। शिक्षक, लेखक, पाठक, बाल साहित्य के प्रेमी सब इसमें हिस्सा ले सकते हैं।

कोंकणी भाषा की रोमन लिपि में इस साल बाल साहित्य में, मिनीन आल्मेदा द्वारा रचित "एक आसलें रिशेल आनी हेर काण्यो" अर्थात् 'एक थी रिशेल और अन्य कहानियाँ' इस पुस्तक का लोकार्पण किया गया। कहानीकार ने अपनी बेटी रिशेल का स्वर्गवास होने पर उसकी याद में इन कहानियों को रचा है। प्रस्तुत बाल कहानियों में कहानीकार बच्चों के लिए कहानी के साथ–साथ उसका संदेश भी बताते जाते हैं। रोमन लिपि के साथ कोंकणी भाषा की नागरी लिपि के लिए भी इनकी लेखनी चलती रहती है। इस पुस्तक में बच्चों के लिए रंगीन चित्रों के साथ–साथ छह कहानियों को रचा गया है। साथ–साथ इस कहानी–संग्रह में लेखक ने अपनी बेटी रिशेल द्वारा

रचित कहानी, कविता, कांतार अर्थात् गीत को भी संग्रह में स्थान दिया है। यह गीत प्रकार सामान्य गीत से अलग होता है। यहाँ पर सिर्फ समझने के लिए कांतार को गीत कहा गया है, पर कोंकणी कांतार अपने आपमें, अपने इतिहास और संस्कृति को लेकर एक अलग प्रकार का माहौल तैयार करता रहता है।

कुमुद भिकू नायक द्वारा रचित कहानियों का संग्रह इस साल प्रकाशित हुआ है। जिसका शीर्षक है– "आजी बरी, अपुरबाय करी" अर्थात् 'नानी बहुत प्यार करती है'। दादा–दादी, नाना–नानी, और परिवार के बड़े होते हैं, वे अपने जीवन के अनुभवों से आने वाली पीढ़ी के अपने अनुभवों का पिटारा देकर जाते हैं। बड़ों का प्यार ही बच्चों के जीवन में आत्मविश्वास और ऊर्जा भरता है। उन्हें अपने समय के लिए तैयार भी करता है। उसी अर्थ में प्रस्तुत बाल कहानियाँ अपना मार्ग तय करती हैं।

कोंकणी भाषा में बाल साहित्य तो है पर बाल विज्ञान साहित्य की कमी महसूस हो रही है! विज्ञान से संदर्भित जो साहित्य है भी, वह बहुत कम है। 11 नवंबर, 2024 को कोंकणी अखबार "भांगरभूंय" में विज्ञानदूत श्रीकांत शंभू नागवेंकार जी ने "कोंकणी बाल विज्ञान साहित्यः एक आह्वान" पर लेख लिखा था, उसी के कुछ अंश अनुवाद रूप में रख रही हूँ–

हमारा भविष्य टेक्नोलॉजी और विज्ञान के हाथों में रहेगा! बच्चों पर वैज्ञानिक नीति मूल्यों तथा वह दृष्टि निर्माण करना आवश्यक हो जाता है। बाल मानस में हजारों सवाल उठते रहते हैं.... समय–समय पर बच्चों के लिए साहित्य रचा गया... कभी 'हितोपदेश', 'चंदामामा', 'ऐलिस इन वंडरलॅण्ड', 'टॉम–जॅरी'... 'सिंदबाद'... आज हम टेक्नोलॉजी का उपयोग बालसाहित्य के लिए कैसे करें, इसे ध्यान में रख़कर बालसाहित्य रचना चाहिए।

14 नवंबर, 2024 को महामहिम राज्यपाल श्री श्रीधरन पिल्लई के करकमलों द्वारा श्रद्धा गरड लिखित बाल कहानियाँ "माणकुणीं आनी शिस्त" अर्थात नन्हें–मुन्ने और अनुशासन का लोकार्पण हुआ। प्रस्तुत पुस्तक को श्रद्धा ने खुद अंग्रेजी में अनूदित किया है। इतना ही उसका अनुवाद मलयालम में भी किया गया जो आर. एस. भास्कर ने किया है। ब्रेल लिपि में इसका अनुवाद सुनेत्रा जोग ने किया है। प्रस्तुत पुस्तक में कुल 15 कहानियाँ हैं, जो बच्चों को अनुशासन का महत्त्व समझाती हैं। बाल साहित्य में योगदान देकर श्रद्धा ने अपने आपको एक उच्च मकाम तक पहुँचाया है।

बाल–साहित्य में "जंगल शाळा" अर्थात् 'जंगलशाला का स्वागत है' (मूल लेखक दत्ता दामोदर नायक हैं) जिसका अनुवाद कोंकणी भाषा की उभरती साहित्यकार मानसी प्रेमानंद धाऊस्कार ने किया है– इन्होंने प्रस्तुत पुस्तक का अनुवाद अंग्रेजी से कोंकणी में किया गया है। इस पुस्तक में आधुनिक हितोपदेश की 37 कहानियाँ हैं।

अनुवादक मानसी धाऊस्कार जो कि कोंकणी पत्रिका "बिंब" की सह संपादक हैं,

ने अपना संपादकीय कार्य करते हुए महसूस किया कि कोंकणी बाल साहित्य के लिए नयी आधुनिक कहानियों की जरूरत है तो उन्होंने जंगल शाला को अनूदित किया! बोलते प्राणी और बच्चे उनके इस विश्व में बाल सुलभ जिज्ञासाएँ हैं। पक्षियों की चहचाहट है तो आकाशीय गोवा दर्शन, वह भी गरुड़ के साथ! बच्चों की दुनिया को, बच्चों की निगाहों से ही साकार करनेवाले लेखक तथा अनुवादक दोनों का अभिनंदन!

कोंकणी डिजिटल साहित्य

आशावादी प्रकाशन कोंकणी डिजिटल साहित्य में बहुत समय से कार्यरत है। इस साल सातवें डिजिटल कहानी एलबम का लोकार्पण हुआ। कोंकणी साहित्यकार डॉ. एडवर्ड नजरेथ की बीस कहानियों को चुनकर संजोया गया है। इस डिजिटल कहानी–संग्रह का शीर्षक "मृगजल" रखा गया है। हर भारतीय भाषा में ऐसे डिजिटल साहित्य की आवश्यकता है। आज तक आशावादी प्रकाशन ने डिजिटल माध्यम से जो साहित्यिक कार्य किया है, वह सही मायनों में काबिले तारीफ है। प्रिंट मीडिया के पढ़ने वाले दिन–ब–दिन कम हो रहे हैं, यह वैश्विक सत्य है। कोंकणी भाषा का साहित्य तो अलग–अलग पाँच लिपियों में प्रकाशित होता रहता है। पाँचों लिपियों को पढ़नेवाला मिलना मुश्किल ही है, पर अगर इसे ई–बुक रूप में, ऑडियो रूप में डिजिटली प्रस्तुत किया जाए तो लिपि की समस्या को सुलझाया जा सकता है। कोंकणी भाषा प्रेमी को सिर्फ सुनना ही हो तो उसे यू–ट्यूब पर अपनी सहूलियत से सुना जा सकता है। मोबाइल, यह आज की पीढ़ी के लिए अनिवार्य बन चुका है। वह अपने कार्यक्रमों को अपने समयानुसार कभी भी, कहीं भी सुन सकता है तो फिर कहानियों को क्यों नहीं? आशावादी प्रकाशन अब तक 50 ई–बुक्स, 08 ऑडियो बुक्स और 275 कहानियों को डिजिटल रूप में दे चुका है। "कथापट" सिरीज के रूप में, आज तक "कथापाठ–5" तक की यात्रा इस प्रकाशन ने तय की है, तथा ऑडियो एलबम के रूप में–

- 2018 / 19 में, "कथादायज" (वल्ली क्वाडूस)
- 2019 / 20 में, "सूर्य उदेता" (राष्ट्रीय पट की 27 कहानियों का संकलन)
- 2020 / 21 में," मायानगरी" (वल्ली क्वाडूस की कहानियाँ जो मुंबई के जीवन पर रची है)
- लॉकडाउन (काव्यसंग्रह)
- 2021 / 22 में, "कथामृत" (क्लेरेन्स कैकंबा की 20 लघु कहानियाँ)
- 2021 / 22 में, "सूर्यउदेला" (राष्ट्रीय पट की कहानियों का संकलन)
- 2022 / 23 में, "कथाझर" (160 कहानियों का संकलन)
- 2023 / 24 में, "मृगजल" (डॉ. एडवर्ड एल. नजरेत की लघु कहानियाँ)
- कथाहार (कोंकणी की पुरानी कहानियाँ (35 कहानियाँ)

- कथन (कॅथलिक पादरी कहानीकारों की कहानियाँ)
- स्टेन अगेरा (कहानियाँ)
- डॉ. एडवर्ड एल. नजरेत (गोलीमार की कहानियाँ)

आशावादी प्रकाशन इस साल पच्चीसवें साल में प्रवेश कर रहा है। दिसंबर की चौदह तारीख को इस संस्था द्वारा 03 पुस्तकें प्रिंटेड रूप में, 07 डिजिटल रूप में ई–बुक्स तथा 02 ऑडियो फॉर्म में लोकार्पण किया गया। अपने वेबिनार में उन्होंने यह भी कहा कि अगले साल रजत जयंती के समय 25 पुस्तकों का लोकार्पण किया जाएगा।

सन् 2015 में मुंबई में "पयणारी–कोम" संस्था शुरू हुई जिसने अब दस साल पूरे किए हैं। "पयणारी डिजिटल–7" जर्नल, जो कि कन्नड़ और नागरी लिपि में प्रकाशित होता है, का लोकार्पण किया गया।

गोवा सरकार कथा कोंकणी समाज अपने–अपने तरीकों से इसे विकसित करने के मार्ग खोज ही रही है। इस राह पर कोंकणी नाटक संगीत अकादेमी ने गीत संगीत वीडियो एलबम महोत्सव का आयोजन किया था। इतना ही नहीं, भक्ति गीत और भावगीत विभाग में जीतनेवालों को पुरस्कार भी दिए गए! (10 जून, 2024 "भांगरभूंय") इस कार्यक्रम का आयोजन, उभरते गीत, संगीत, नृत्य, नाट्य कलाकारों को प्रोत्साहन देने के हेतु से ही किया गया है। इन कलाकारों द्वारा जो वीडियो एलबम तैयार होंगे, उन्हें गोवा की "कोंकणी नाटक और संगीत अकादेमी" के उपक्रम में संकलन करने का उद्देश्य भी रखा गया है। ऐसे ही डिजिटल उपक्रम भाषा, साहित्य, संस्कृति, शिक्षा, समाज हरेक क्षेत्र में होने से आज की पीढ़ी को शिक्षित करने के साथ–साथ, अनुभवी कलाकारों द्वारा अपने सांस्कृतिक अनुभवों को चित्रबद्ध करने का उनका संकलन आनेवाली पीढी के लिए संजोया भी जा सकता है।

गोवा के व्यंग्य चित्रकार आलेक्सीज अपना जन्मदिन 24 अक्तूबर को मनाने जा रहे हैं। पिछले पचास सालों से यह व्यंग्यकार अपने हाथों से बनाए इन रेखाचित्रों में अपनी रेखाओं से, स्याही से तथा रंगों से मनुष्यों को सोचने पर मजबूर करते रहे हैं।

ऐसे ही कोंकणी के अनगिनत कलाकार हैं जिनके कारण कोंकणी गौरवान्वित होती है। काश! कोंकणी लिपिवादी अक्षरों, स्वरों, अनुस्वारों, ह्रस्व–दीर्घ के झमेले से बाहर आकर इस संगीत को ही आत्मसात कर पाएँ, तभी कोंकणी भाषा बची रहेगी! सुनने के लिए कर्णप्रिय काफी है जो अंतःस्थल तक "पयण" अर्थात यात्रा कराती है. .... शाश्वत.... समय से परे.... जय कोंकणी संगीत, काव्य, नाटक, तियात्र, सिनेमा की... यही बचेंगे!

❑❑❑

7

गुजराती साहित्य

प्रो. दीपेंद्रसिंह जाडेजा

हिंदी विभाग (कला संकाय), महाराज सयाजीराव विश्वविद्यालय ऑफ बड़ौदा, गुजरात।

गुजराती साहित्य की एक सुदीर्घ परंपरा रही है जो 11वीं शताब्दी से चली आ रही है। इसमें भक्ति से लेकर लोक साहित्य तथा आधुनिक काल में सभी विधाओं में भरपूर लिखा गया है। जहाँ तक गुजराती भाषा की बात है तो उसकी जड़ें अपभ्रंश भाषा में हैं। गुजराती का प्रारंभिक साहित्य जैन धर्म से प्रभावित था। गुजराती में सबसे पहले जैन मुनियों ने रचनाएँ दीं। इसमें जैन तीर्थंकरों और अन्य धार्मिक–आध्यात्मिक महापुरुषों के जीवन का वर्णन किया गया है।

12वीं शताब्दी में शालिभद्र सूरि द्वारा रचित 'भारतेश्वर बाहुबली' रास गुजराती साहित्य की प्रारंभिक रचनाओं में से एक है। जैन आचार्य हेमचंद्र उस समय के प्रसिद्ध वैयाकरण रहे। पुरानी गुजराती का दौर 12वीं से 14वीं सदी तक चला। इस कालखंड में गुजराती साहित्य में लोक साहित्य तथा मौखिक आख्यान काव्य का अत्यधिक प्रभाव रहा। गुजराती साहित्य का द्वितीय उत्थान 14वीं शताब्दी से माना जाता है। हिंदी साहित्य की तरह गुजराती साहित्य में भी मध्यकाल में भक्ति आंदोलन लोकप्रिय हुआ। इस कालखंड की अधिकांश कविताएँ विष्णु के अवतारों से विशेषकर भगवान कृष्ण से संबंधित हैं। नरसिंह मेहता इस युग के सबसे लोकप्रिय कवियों में से एक हैं। उन्हें गुजराती का 'आदिकवि' भी कहा जाता है। उनका लिखा साहित्य विशेषकर भजनादि काफी प्रसिद्ध हुए। "वैष्णव जन तो तेने कहिए जे पीर पराई जाणे रे" के द्वारा महात्मा गांधी ने स्वतंत्रता की अलख जगाई थी। मीराबाई एक क्षत्रिय राजकुमारी और भगवान कृष्ण की प्रखर भक्त थीं। उन्होंने हिंदी और राजस्थानी साहित्य में प्रचुर मात्रा में लिखा। गुजराती पर भी उनका व्यापक प्रभाव पड़ा। गुजरात साहित्य पर उन्होंने अमिट छाप छोड़ी। प्रेमानंद गुजराती साहित्य के सर्वाधिक लोकप्रिय कवि थे। उन्होंने कृष्ण भक्ति परंपरा तथा भारतीय आख्यानों की परंपरा को सर्वश्रेष्ठ ऊँचाई प्रदान की। 'ओखा हरण' भालण भी इस युग के बड़े कवि थे जिनकी गुजराती साहित्य में सक्रिय भूमिका रही। 'बाहुबली रास' और 'गौतमगीता' उनकी

प्रसिद्ध कृतियाँ हैं। दयाराम भक्तिकाल के अंतिम कवि हैं। गुजरात की लोकप्रिय गरबा नृत्य परंपरा में दयाराम ने गरबी रचनाओं से खूब ख्याति अर्जित की। गरबी गीतों में कृष्ण और गोपियों के बीच प्रेम को दर्शाया गया है।

गुजराती साहित्य का आधुनिक काल 19वीं शताब्दी से शुरू होता है। विशेषकर इस युग में गद्य की सभी विधाओं में प्रचुर मात्रा में लिखा गया। इसे भारतीय पुनर्जागरण से प्रभावित भी माना जाता है। यह युग अनेक प्रकार के सामाजिक, राजनीतिक परिवर्तन का साक्षी रहा है। नर्मद आधुनिक गुजराती साहित्य के क्रांतिकारी रचनाकार रहे। उन्होंने भाषा के क्षेत्र में भी महत्त्वपूर्ण सुधार किए। उन्होंने सबसे पहले जातिगत अन्याय और नारी के अधिकारों के बारे में लिखा। उनकी प्रसिद्ध आत्मकथा गुजराती साहित्य की पहली आत्मकथा में से एक है, वस्तुतः 'मारी हकीकत' आधुनिक गुजराती साहित्य की महत्त्वपूर्ण कृति है। गोवर्धनराम त्रिपाठी आधुनिक गुजराती साहित्य के प्रमुख हस्ताक्षर हैं। उनकी ख्याति का आधार 'सरस्वतीचंद्र' उपन्यास है। प्रेम और सामाजिक सुधार सरीखे विषयों को केंद्र में रखकर प्रस्तुत उपन्यास लिखा गया है। दयाराम मध्यकाल के अंतिम कवि हुए। मध्यकाल में एक और प्रखर कवि हुए अखा, जिन्होंने निर्गुण ज्ञानमार्ग को अपनाकर तत्कालीन सामाजिक तथा राजनतिक व्यवस्था पर प्रहार किया। अखा मुख्य रूप से मुक्तक स्वरूप की रचनाएँ जिन्हें 'छप्पा' कहा जाता है, लिखते रहे। अखा की लेखनशैली और विषयवस्तु में कबीर की छाप देखने को मिलती है। अतः अखा को गुजरात का कबीर कहा जाता है। संपूर्ण मध्यकालीन साहित्य में एक 'फागु' साहित्य भी रचा गया। यह विशेषकर वसंत वर्णन का साहित्य है जिसमें श्रृंगार रस प्रधान है।

गुजराती साहित्य के आधुनिक युग में दो प्रमुख साहित्यकार हुए दलपतराम और नर्मद। दलपतराम रचित काव्य 'वापानी पीपरा' आधुनिकता का निर्देश करता हुआ पहला काव्य है। दूसरी तरफ नर्मद ने अपने लेखन तथा व्याख्यानों के माध्यम से आधुनिक गुजराती साहित्य को दिशा प्रदान की।

वर्ष 2024 में गुजराती साहित्य के विविध विषयों में अनेकानेक पुस्तकों का प्रकाशन हुआ है। इन तमाम पुस्तकों की चर्चा एक आलेख में संभव नहीं। अतः विषय–वस्तु के आधार पर चर्चित पुस्तकों का लेखा–जोखा प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। इससे गुजराती भाषा से इतर भाषा–भाषी साहित्यप्रेमियों को एक सामान्य जानकारी मिल सकेगी।

लोक साहित्य– गुजराती साहित्य में लोकसाहित्य के विविध आयामों को लेकर निरंतर लिखा जा रहा है। गुजराती में लोकसाहित्य की एक समृद्ध परंपरा रही है। 2024 में भी अनेक पुस्तकें इन विषयों पर आई हैं। चतुर पटेल ने 'चरोतर नी अनोखी लोककथाओं' नामक पुस्तक का संपादन किया है। चतुर पटेल लोकसाहित्य के जाने–माने अध्ययनकर्ता है। वे कवि के साथ–साथ छोटे पर्दे के उम्दा अभिनेता भी

है। वर्तमान में अमरिका में रहते हैं। उन्होंने बचपन में सुनी वार्ताओं को स्मृति के आधार पर नया रूप प्रदान कर 'चरोतर नी अनोखी लोककथाओ' को संपादित किया है जिसमें सत्रह वार्ताएँ संकलित हैं। वार्ताओं के चयन का आधार चरोतर प्रदेश का समग्र समाज है। इसमें चरोतर के वणकर, नवाब, मोची, बनिया, पटेल, बरोट, भगत, मुसलमान, दरबार आदि जातियों की लाक्षणिकताओं का परिचय मिलता है। समाजशास्त्रीय रूप से इसे प्रस्तुत किया गया है। हरेक लोकवार्ता में भाषा की समृद्धि, लोकपरंपरा, मिथक, सांस्कृतिक आदान–प्रदान आदि विशेषताओं का दर्शन मिलता है। लोककथा–वार्ता में एक और बहुचर्चित नाम है गोपाल बारोट का। इस वर्ष उन्होंने 'पाल्लिया अने पाल्लियाकथाओ' के माध्यम से लोकवार्ता के नायकों को साक्षात् सजीव रूप में प्रस्तुत किया है। इस पुस्तक में उन्होंने ऐतिहासिक खोज प्रक्रिया के जरिए शिलालेख की भाषा को पढ़ना, खांभी के संदर्भों को तलाशना आदि के माध्यम से लोकमानस से लगभग अदृश्य इतिहास को पुनर्जीवित करने का प्रयास किया है। इन कथाओं में राष्ट्र के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर देने वाले सौराष्ट्र प्रांत के वीर सपूतों की अमर गाथा का चित्रण किया गया है जो आज सौराष्ट्र प्रांत के प्रत्येक गाँव में पत्थर की मूर्तियों के रूप (पालिया) में अपनी कहानी कह रहे हैं। गुजरात राज्य में सौराष्ट्र अपनी लोक सांस्कृतिक परंपरा के लिए जाना जाता है। वैसे ही कच्छ की लोकसंस्कृति की बेजोड़ है। कच्छ की भूमि के कण–कण में लोक बसा है। कच्छी और सिंघा लोकसंस्कृति तथा भाषा के मर्मज्ञ डॉ. जेठो लालवाणी की बहुचर्चित पुस्तक 'कच्छी–सिंधी लोकसंस्कृति परंपरा' का अनुवाद प्रो. रमेश लुहाणा ने किया है। कच्छी लोककला, नृत्य, गीत, संगीत, रीति–रिवाज, रहन–सहन को जानने–समझने की दृष्टि से यह पुस्तक अत्यंत उपयोगी है।

उजमभाई पटेल गुजराती लोकसाहित्य के लब्धप्रतिष्ठ लेखक हैं। 'तेजरेखा तल्लपदनी' उनकी ताजा प्रकाशित कृति है। प्रस्तुत पुस्तक में उन्होंने ग्रामीण जीवन में श्रम का महत्त्व स्थापित किया है। वे एक जगह लिखते हैं 'नमन श्रम देवताने' नयी पीढ़ी के लिए 'ज्ञानगीता' है। श्रमेव जयते, हाथ–पैर ठीक तो सब ठीक आदि बातें श्रम के महिमागान को स्पष्ट करती हैं। उजमभाई पटेल ग्रामवासी किसान हैं। उनमें आज भी ग्रामीण संस्कार आदि जस का तस विद्यमान है। यह पुस्तक ग्रामीण लोकजीवन का दस्तावेज है जिसके माध्यम से बहती, बिखरती, विस्मृत परंपरा को पुनः सजीवन करने का प्रयास किया गया है। अरविंदभाई पटेल तथा सुधाबहन पटेल ने 'छोडिया लोकवार्ताओ' पर अनुसंधानपरक पुस्तक लिखी है जिसमें घोडिया जाति की 8 वार्ता का संशोधन तथा 12 शोधलेख संग्रहीत है।

कविता और ग़ज़ल संग्रह– कविता साहित्य गुजराती साहित्य की पसंदीदा विधा रही है। इस वर्ष भी बहुत सारे में कविता–संग्रह प्रकाशित हुए हैं। सब का परिचय तो यहाँ नहीं दिया जा सकता। कुछ संग्रहों का परिचय प्रस्तुत है। 'डमरीना

देशमा' कच्छ के विलक्षण परिवेश को केंद्र में रखकर रचा गया है। इस संग्रह में रचयिता धीरेंद्र महेता गुजराती साहित्य का बहुचर्चित नाम है। विशेषकर कच्छ की भौगोलिक स्थिति उसका रण, पर्वत, दरिया आदि के माध्यम से कच्छी खाखा जाति की मनोदशा का वर्णन है। यहाँ कवि ने रण, रेतू, आँधी, दरिया, रात्रि तथा ऊँट को खाखा जाति की जीवनचर्या से जोड़ते हुए कच्छी परिवेश का सुंदर शब्दचित्र खींचा है जिसका कदाचित गुजराती कविता में पहली बार प्रयोग हुआ है। 'शब्द नो उजासा' जिज्ञा महेता द्वारा लिखित काव्य–संग्रह है। वैसे इसमें गीत से ज्यादा ग़ज़ल हैं। 66 ग़ज़ल, 13 गीत और 21 गद्य काव्य के साथ संवेदना–शतक का रूप धारण कर यह 'शब्द नो उजासा' अर्थात् शब्द का प्रकाश फैला रही है। इसमें एक साथ तीन स्वरूपों को साधकर कवयित्री ने पाठक को विस्मित किया है। वे लिखती हैं कि "प्रत्येक कविता मेरे द्वारा जी जानेवाली जिंदगी का प्रमाणपत्र है तथा मेरी आंतरिक मुक्तता और इसके भीतर जाग्रत संवेदनाओं की अनुभूति है। प्रत्येक पृष्ठ पर उनके भीतर के प्रकाश, उजास का सच चित्रित है। ग़ज़ल देखिए–

'अंक हकीकत खुल्ली पडता,
जग आखामां लजवाई छु,
अेक तरफ संसार हतो ने,
बीजे पल्ले राख मुकी छे।"

2024 में अनेक कवयित्रियों के ग़ज़ल संग्रह प्रकाशित हुए। इसी क्रम में 'क्यां खबर हती' शीर्षक से किरण जोगीदास 'रोशन' की 101 ग़ज़लें भी प्रकाशित हुई हैं। व्यवसाय से योगशिक्षिका किरण की ग़ज़लों का सारत्व यह है कि लग्न के निमित्त नारी सिर्फ अपना पीहर नहीं छोड़ती बल्कि अप्रत्यक्ष रूप से उसे और भी बहुत कुछ त्यागना पड़ता है। कवयित्री पारुल खखर ने इसके बारे में कहा है कि इनकी ग़ज़लों को नारी विमर्श के चश्मे से देखने की जरूरत नहीं है। इसी क्रम में पूर्वी अपूर्व ब्रहमभट्ट अपनी 105 ग़ज़लों के संग्रह "पहेली सवार छे" को लेकर उपस्थित हुई है। एक गृहिणी से कवयित्री की सुबह अलग होती ही है। कवयित्री उषा उपाध्याय ने इस संग्रह के लिए लिखा है कि 'पाठक मोहित न हो जाए, यही आश्चर्य है। उन्होंने नयी पीढ़ी की मजबूत आवाज को कलम दी है।'

चंद्रकांत टोपीवाला गुजराती साहित्य के बहुचर्चित कवियों में से एक हैं जिन्होंने 50 से अधिक वर्षों से लिखने की निरंतरता बनाए रखी है। उनका नौवा काव्यसंग्रह 'कालवेग' 2024 में आया है। बीते हुए समय और शेष जीवन की आधारशिला पर इस काव्यसंग्रह को रचा गया है। चंद्रकांत टोपीवाला गुजराती साहित्य के मूर्धन्य आलोचक भी हैं। वे कवि और आलोचक की परस्पर पूरक धाराओं को समेट कर चल रहे हैं। उनकी कविता में विद्वत्ता और वेदना (संवेदना) दोनों मिलती है। 'कालवेग' काव्यसंग्रह में कुल 41 कविताएँ है। इसमें 15 कविताएँ हस्तलिखित हैं। उनकी लिखने

की उत्कंठा इतनी प्रबल है कि वे 85 वर्ष की आयु में भी निरंतर लिख रहे हैं। उनका जीवन उनके काव्य जितना ही रोमांच पैदा करता है। इस संग्रह की एक कविता देखिए–

'हुँ अवतरीश

त्यारे कोई नवजात नगर मारी सामे खिलखिल करतु हशे।'

अन्य कविता–संग्रहों का केवल नामोल्लेख यहाँ किया जा रहा है। पूर्वा शुक्ल ने 'उड़ान' शीर्षक से 77 ग़ज़लें लिखी हैं। 'अश्वत्थामा' शीर्षक से यशवंत मेहता ने 70 लंबी कविताएँ लिखी हैं। 'अजवालु दीठयुं मधराने' गोपाल धकाण के 75 गीतों का संग्रह है। 'छेल्लो श्वास' उल्फत राधनपुरी की 78 ग़ज़लों का संग्रह है। 'अवली गंगा तरी जवी छे' ललित त्रिवेदी द्वारा लिखित 102 ग़ज़लों का संग्रह है। 'आस–पास' दक्षा पटेल कृत 63 कविताओं का संग्रह है। 'ऋणानुबंध' दिनेश कानाणी की 214 ग़ज़ल का संग्रह है। इसी वर्ष 'प्रेमपदारथ' किशोर जिकादरा का 101 ग़ज़लों का संग्रह तथा सोनल सांज ढले' ब्रजलाल ब्रह्मभट्ट कृत 94 कविताओं का संग्रह प्रकाशित हुआ है।

कथा साहित्य– हिमांशी शेलत गुजराती उपन्यास विधा का सबसे बड़ा नाम है। उनका नया उपन्यास 'भूमिसूक्ता' वर्तमान परिवेश को समझने के लिए अत्यंत उपयोगी कृति है जो पाठक को झकझोर देती है। कर्मशील और कर्मशीलता (Activist and Activism) विषय पर गुजराती साहित्य में संभवतः यह पहला उपन्यास है। जनमानस में एक तरह से उपेक्षित किंतु मूल्यवान क्षेत्र Activism का दर्शन अत्यंत कुशलता एवं तीव्रता से लेखिका करवाती है। इस उपन्यास के मुख्य पात्र तीन प्रकार के कर्मशीलों का प्रतिनिधित्व करते हैं। एक अगन–आरभ में अस्पष्ट और परिवार को नहीं छोड़ना चाहते ऐसे नवयुवा। दूसरे संपूर्ण समर्पण, स्पष्टता और दृढ़ मनोबल से सातत्य से काम करनेवाले। तीसरे हताश, कर्मवृद्ध। यह इस देश के संदर्भ में भी उतना ही सच है।

कहानी विधा गुजराती साहित्य की समृद्ध विधा रही है। 2024 में भी सैकड़ों कहानी–संग्रह प्रकाशित हुए हैं। कुछ मेरी जानकारियों में आए हैं, उनका विवरण इस प्रकार है। 'कोतरमा रात' हिमांशी शेलत का नवीन कहानी–संग्रह है। उन्होंने उपन्यास, आत्मकथा, संस्मरण, आलोचना, अनुवाद तथा संपादन आदि सभी क्षेत्रों में लिखा है। उनके आजतक 12 कहानी–संग्रह प्रकाशित हुए हैं। इस नवीन कहानी–संग्रह में 15 कहानियाँ संकलित हैं। अधिकांश कहानियाँ चार से पाँच पृष्ठों की हैं। इसमें वर्तमान समाज की दशा और दिशा का चित्रण है। ये समाज के विविध क्षेत्रों में होते शोषण, अन्याय, अत्याचार, अनीति, नारी दमन, बलात्कार, राजनीतिक अपराध आदि को समेटे हुए हैं।

कहानी लेखन कला से संबंधित एक पुस्तक 'वार्ताकला' दिवान ठाकोर लिखित है जो वार्ताकला की खूबियों को ध्यान में रखकर वार्ताकला के विविध पहलुओं के बारे

में बताती है। लेखक कहता है कि वार्ता लिखने की इच्छा रखने वाले व्यक्ति के मन में वार्ता को श्रेष्ठ बनाने की समझ होनी चाहिए। साहित्य में वार्ता का स्वरूप सहज नहीं है। उसे समझने के लिए अनेक वार्ताओं का अनुशीलन–अध्ययन आवश्यक है। वार्ता के तत्त्वों की स्पष्ट समझ के अभाव में उसे लिखना निरर्थक है। वार्ता में भाषा की भूमिका महत्त्वपूर्ण है, उसे आत्मसात किए बिना वार्ता लेखन संभव नहीं। इस पुस्तक के लेखन का मूल ध्येय वार्ता (कहानी) के तत्त्व, कथन, पात्र, परिवेश, भाषा–संवाद आदि की स्पष्ट समझ देना है जिससे कोई भी वार्ता उत्तम साबित होती है।

अन्य उपन्यासों में जगदीश रथवी के उपन्यास 'वेदनांनी संवेदना' में निशा नायक जैसी अनेक स्त्रियों में शारीरिक समस्याओं के साथ संघर्षरत रहते हुए मानसिक संतुलन करने की जो कुशलता है, उसका चित्रण किया गया है। 'त्रीजी मुलाकात' बालेंदुशेखर जानी की प्रेमकथा पर आधारित उपन्यास है। 'वामनराव नाइट्स' रमेश दवे कृत उपन्यास है जो सामान्य मनुष्य की असामान्य जीवनकथा कहता है। महाबलिदान गुणवंतराय आचार्य कृत उपन्यास है जिसमें कच्छ प्रदेश की शौर्यगाथा तथा समर्पण की ऐतिहासिक कथा है। कहानी–संग्रहों में 'उघड़ती दिशा' संजय चौधरी की 15 की कहानियों का संग्रह है। 'सांकला' धरमाभाई श्रीमाली द्वारा लिखित 14 कहानियों का संकलन है।

आलोचना–अनुसंधान कार्य – डॉ. भगवानदास पटेल कृत 'उत्तर गुजरात ना भील आदिवासियोनु स्वातंत्र्य आंदोलन' भील संस्कृति–समाज–इतिहास और मौखिक साहित्य के संदर्भ में उत्कृष्ट अनुसंधानपरक पुस्तक है। वर्तमान में गुजराती लोक–साहित्य के ख्यातनाम लेखक के रूप में डॉ. भगवानदास पटेल का नाम गौरव से लिया जाता है। साधु–संतों, गायकों, भगतों के सान्निध्य में रहने के कारण उनके मानस में मौखिक रूप में संग्रहित सत्वशील और मूल्यवान साहित्य समय–समय पर अनुसंधान के माध्यम से प्राप्त हुआ है। वे कहते हैं कि सच्चे मन से जो जोर लगता है तो लोक की तरफ उसका प्रयाण अपने आप हो जाता है। उनकी दूसरे पुस्तक में तंदुरुस्त अभिगम के साथ समतावादी जीवन–दर्शन को जीने वाले आदिवासी समाज का चित्रण है। 17वीं तथा 18वीं सदी की अस्थिर, सामाजिक तथा राजनीतिक स्थिति के चलते आदिवासी समाज को भी अपने अस्तित्व को टिकाए रखने के लिए तथा स्वायत्त रहने के लिए आंदोलन की आवश्यकता खड़ी हुई। पुस्तक इन्हीं बातों का चित्रण प्रस्तुत करती है।

यात्रा साहित्य – जयंत डांगेदरा गुजराती के चर्चित कवि हैं। उनके दो काव्य–संग्रह अबतक प्रकाशित हैं। वर्ष 2024 में उनके कश्मीर प्रवास पर आधारित पुस्तक 'कश्मीरनी भीतरमा' प्रकाशित हुई है। यह उनके द्वारा 2010 में किए गए कश्मीर प्रवास की स्मृतियों के आधार पर लिखी गई है। प्रस्तावना में जयंतजी लिखते

हैं कि "यहाँ कश्मीर के सौंदर्य का वर्णन है तो उसकी पीड़ा का वर्णन भी है।" प्रस्तुत पुस्तक की प्रस्तावना गुजराती साहित्य के प्रसिद्ध लेखक नरोत्तम पलाण ने लिखी है। इसमें कश्मीर के भीतर भारत विरोधी तथा पाकिस्तान विरोधी मानस है जिसे समझने में यह पुस्तक उपयोगी सिद्ध होगी। अलगाववाद, आतंकवाद, अफवाहें तथा लश्करी दबंग के बीच कश्मीर प्रवास है।

दक्षा व्यास गुजराती भाषा साहित्य के विद्वान अध्यापक व लेखक हैं। वे कविता, आलोचना अनुसंधान, अनुवाद, संपादन के क्षेत्र में जाना–माना नाम हैं। उत्तरांचल के प्रवास पर वे पहले एक पुस्तक लिख चुकी हैं। यात्रा–साहित्य विधा को लेकर यह उनकी दूसरी पुस्तक है जिसमें हिमाचल के वर्णन के साथ–साथ, गोवा, अंडमान, लक्षद्वीप तथा दक्षिण भारत के तीर्थस्थानों का भी वर्णन है। इसमें सत्य साईंबाबा के आश्रम की भव्य यात्रा का अनुभव भी वर्णित है। 'यात्रापंथे' पुस्तक के अंत में लेखिका कहती हैं कि बाह्य यात्रा के साथ–साथ अंतरयात्रा भी उतनी ही महत्त्वपूर्ण है।

अनुवाद– वर्ष 2024 में अन्य भाषाओं से गुजराती में प्रकाशित महत्त्वपूर्ण अनूदित पुस्तकों का परिचय दिया जा रहा है। 'हूँ जीवन छु' वस्तुतः तिब्बती विस्थापित क्रांतिकारी कवि 'तेनजीन त्सुन्दु' की चर्चित पुस्तक का अनुवाद है जिसे वंदना शांतुइन्दु ने किया है। वंदना जी ने इसके पूर्व कश्मीरी विस्थापित लेखिका क्षमा कौल के हिंदी उपन्यास 'दर्दपुर' का भी गुजराती में अनुवाद किया है। मूलरूप से इस अनुवाद में तिब्बती तेनजीन की खुमारी की कथा है जिसने अपने देश तिब्बत को देखा भी नहीं है। वह भारत में ही जन्मे हैं और तिब्बत को चीन के चंगुल से आजाद करने का दृढ़ मनोबल लेकर काम कर रहे हैं। अन्य अनुवादों में 'द लिटल प्रिन्स' का भावानुवाद नीतिन भट्ट ने किया है। मूल रूप में इसे फ्रेंच लेखक ओन्टवन द–शा अक्ज्युपेरी ने लिखा है। पाथेर पांचाली जो बांग्ला भाषा का उपन्यास है, इसका अनुवाद अनिला दलाल ने किया है। 'खैय्याम की सुराही' मूलतः खैय्याम की रुबाइयों के अंग्रेजी अनुवाद से किया गया गुजराती अनुवाद है जो सुरेश परमार ने किया है।

संपादन– इस वर्ष की चर्चित संपादित पुस्तकों का परिचय इस प्रकार है– 'चुटेली कविताओ–दक्षा व्यास का संपादन गुजराती साहित्य की उत्तर आधुनिक युग की सुविख्यात लेखिका पन्ना त्रिवेदी ने किया है। पन्ना गद्य और पद्य में समांतर पकड़ रखनेवाली साहित्यकार हैं। वे कहानीकार तो हैं ही, साथ ही कवयित्री, आलोचक, अनुवादक तथा संपादन के क्षेत्र में भी अधिकार रखती हैं। उनके संपादकत्व में प्रकाशित इस काव्यसंग्रह में 60 कविताओं की चर्चा है। इसमें सर्वप्रथम दक्षा व्यास के कृतित्व पर सम्यक् प्रकाश डालते हुए लगभग 25 पृष्ठों का विश्लेषण पन्ना ने प्रस्तुत किया है। पन्ना त्रिवेदी लेखक के साथ–साथ अध्यापक भी हैं, अतः उनके विवेचन में अध्यापकीय कृष्टि का परिचय पाठक को मिल जाता है। वे स्वयं बड़ी रचनाकार हैं। उनकी रचनाएँ अनेक भारतीय भाषाओं में अनूदित होती रही हैं जैसे– मैथिली, पंजाबी,

हिंदी, असमिया, ओड़िआ आदि। दक्षा व्यास भी अध्यापिका हैं। दक्षिण गुजरात उनका कर्मक्षेत्र है। पन्ना भी वर्तमान में दक्षिण गुजरात के एक विश्वविद्यालय में कार्यरत हैं। अतः दोनों की भौगोलिक तथा संभवतः मानसिक समरूपता का प्रतिबिंब इस पुस्तक में देखने को मिलता है। पन्ना हिंदी में भी लिख रही हैं। उनके काव्यसंग्रह का स्वयं के द्वारा किया गया अनुवाद 'ढाई इंच का चाँद है जिसमें 81 कविताएँ संग्रहीत हैं। इस संग्रह में अपने–अपने नसीब के चाँद के बारे में बताते हुए उनके हिस्से के ढाई इंच का चाँद को वह पूरा चाँद मानती है। यही संतोषप्रदा पन्ना का जीवन है।

एक अन्य महत्त्वपूर्ण संपादित पुस्तक है 'कला और कलाकार का चित्रण' (लाभुबहन महेता)। इसका संपादन वर्षा दास ने किया है। लाभूबहन महेता की जन्मशताब्दी के अवसर पर 'कला और कलाकार' पुस्तक का संपादित संस्करण गुजराती साहित्य अकादमी ने प्रकाशित किया है। लाभुबहन महेता गुजराती साहित्य की अग्रणी लेखिका रही हैं जिन्होंने भारत के कला क्षेत्र की 28 जानी–मानी हस्तियों का साक्षात्कार लिया था। इसका प्रारंभ प्रथम साक्षात्कार के रूप में जनवरी 1950 में उस्ताद बड़े गुलाम अली खां साहब से किया गया था। फिर धीरे–धीरे कुल 28 कलाक्षेत्र के बड़े नामों से मुलाकात करते हुए उनके जीवन तथा कलायात्रा के विविध पड़ावों का शब्दचित्र प्रस्तुत किया गया। आज इस पुस्तक का आर्काइव मूल्य है। काकासाहब कालेलकर ने इस पुस्तक के बारे में कहा था कि 'लाभुबहन ने कलाकारों का साक्षात्कार लिया, उसमें उनकी भी कला प्रकट हुई। इसी कला से उन्होंने कलाकार के संकोचरूपी कवच से पर्दा उठाकर उनको अपने बारे में खुलकर व्यक्त कराया तथा इस संभाषण से उनके जीवन का तत्त्वज्ञान और अनुभवों का प्रकट करवाया, इस पुस्तक को वर्षादास ने संपादित किया है जो आज के तथा भविष्य के कलाकारों तथा कलारसिकों को प्रेरणा एवं मार्गदर्शन देता रहेगा।

प्रवीण दरजी और बलवंत जानी कृत 'शब्द अने श्रुत' गुजरात के प्रसिद्ध साहित्यकार कुमारपाल देसाई का अभिनंदन ग्रंथ है। 'चंथरे बिटया रतन' माणेकलाल पटेल के लेखों का संग्रह है। 'ऊँचा–ऊँचा इडगढ़ना कांगरा' दिनेश परमार द्वारा लोकगीतों का संपादन है।

अन्य विधाएँ– इनमें निबंध, संस्मरण, हांस्य–व्यंग्य, लघुकथा, बालकथा, साहित्यिक चिंतन आदि का सामान्य परिचय प्रस्तुत है। 'अनुभावन' गुजरात साहित्य अकादमी के अध्यक्ष भाग्य ज्हा द्वारा लिखित पुस्तक है। गुजरात में ज्हा जी की गणना प्रबुद्ध आई.ए.एस. अफसर के रूप में होती रही है। अब वे साहित्यिक जगत में सक्रिय व्यवस्थापक एवं लेखक के रूप में अपनी भूमिका का निर्वाह कर रहे हैं। उनकी 'अनुभावन' पुस्तक में साहित्य को मनुष्य की सृजनात्मक ऊर्जा मानते हुए उसे सत्य, शिव और सुंदर की उपासना का प्रगटीकरण बताया गया है। इसके साथ वे वाचन के महत्त्व को प्रतिपादित करते हुए वाचन को साक्षात् आनंद बताते हैं और कहते हैं कि

कुछ आत्मसात करने के लिए कृति को पढ़ना जरूरी है।

आत्मकथा विधा में मणिलाल न. पटेल की आत्मकथा 'निरालुजीवन मारं' चर्चित है। हरेश ढोलकिया के समीक्षात्मक लेखों की पुस्तक 'परिमल' नाम से है। 'गुजराती सॉनेट' डॉ. मेरु वाठेल की रचना है। हास्य निबंध–संग्रहों में 'रेती रोटली' शीर्षक से 31 हास्य निबंध ज्योतींद्र दवे ने लिखे हैं। 'विवाह पुराण'– सुनिल भीमाणी की रचना है जिसमें कुँआरों की पीड़ा का हास्यवर्णन है।

यह वर्ष गुजराती साहित्य के किए शुभदायी रहा है। आधुनिक गुजराती साहित्य के अग्रणी कवि दिलीप झवेरी को 'भगवान नी वातों' काव्यसंग्रह के लिए 2024 का अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ। इसके पूर्व उनके द्वारा लिखित तीन काव्य–संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। 'पांडुकाव्यों अने इतर', 'खंडित कांड अने पंछी' तथा 'कविता विशे कविता' गुजराती साहित्य की सुप्रसिद्ध कथाकार हिमांशी शेलत को 'कुवेंपु राष्ट्रीय पुरस्कार' से सम्मानित किया गया।

अतः कहा जा सकता है कि गुजराती साहित्य के लिए 2024 का वर्ष अत्यंत समृद्ध रहा। साहित्य की विविध विधाओं में इसके उत्कर्ष का प्रमाण मिलता है। इस वर्ष की अधिकांश रचनाएँ काफी उपलब्धिपूर्ण रहीं जिसका स्वागत रसिक पाठकवर्ग ने भी किया।

❑❑❑

भाषा मेरा उद्धार करती है और मैं भाषा का उन्मेष करता हूँ। मेरी ललाट–लिपि वही है जो मेरे देश की इस राष्ट्रभाषा की नियति है।

– रमेश कुंतल मेघ

8

डोगरी साहित्य

ओम गोस्वामी

लेखन, संपादन, अनुवाद, शोध तथा चित्रकला में विशेष अभिरुचि। सौ से अधिक मौलिक तथा संपादित पुस्तकें प्रकाशित। साहित्य अकादमी (बाल साहित्य पुरस्कार) तथा जम्मू–कश्मीर राज्य की कला, संस्कृति तथा भाषा अकादमी द्वारा विभिन्न पुरस्कारों से सम्मानित। संप्रति–स्वतंत्र लेखन और प्रकाशन–कार्य में संलग्न।

प्रत्येक वर्ष 22 दिसंबर की तिथि को डोगरी–भाषी क्षेत्र में ''मान्यता दिवस'' के रूप में मनाया जाता है। इस दिन डोगरी भाषा को भारतीय संविधान की आठवीं अनूसूची में सम्मिलित किया गया था। ऐसा होना एक लंबे संघर्ष के उपरांत संभव हो पाया था। मान्यता के शुभ दिन को डोगरी–भाषी लोग और डोगरी लेखक तब से एक शुभ पर्व की भाँति मनाते आए हैं।

मान्यता के पश्चात् न केवल साहित्य–संरचना की गति तेज हुई अपितु प्रकाशित पुस्तकों की संख्या भी तेज हुई। मान्यता से पूर्व के कालखंड में जितनी पुस्तकें चार–पाँच वर्षों में प्रकाशित होती थीं, मान्यतोत्तर समयखंड में यह मात्र एक वर्ष में प्रकाशित होने लगीं। मान्यता से पूर्व के वर्षों में बाल–साहित्य का अभाव था किंतु मान्यता के बाद के वर्षों में बाल–पाठकों को ध्यान में रखकर प्रतिवर्ष अनेक पुस्तकें लिखी और छापी जाने लगीं।

मान्यतोत्तर काल में महिला–वर्ग का साहित्यिक योगदान कई गुना बढ़ गया। महिला कलमों की संख्या भी पर्याप्त रूप से बढ़ी। मान्यता से पूर्व के वर्षों में डोगरी साहित्य में कविता विधा अन्य विधाओं की तुलना में बहुत आगे थी, जबकि बाद के वर्षों में, गद्य की समस्त विधाओं का अनापेक्षित विकास होने से गद्य और पद्य में सामंजस्य दिखाई देने लगा।

वर्ष 2024 ई. में मुद्रित और प्रकाशित होने वाली पुस्तकों की संख्या उत्साहित करने वाली रही है। उपन्यास और कहानी विधा में हुए कम योगदान को यदि दर–किनार कर दें तो अन्य विधाओं के खाते में भरपूर वृद्धि हुई है। काव्य की 'गीत' शैली में प्रचुर गीतों की आमद उत्साह का विषय है। इसी भाँति नाटक विधा में भी कुछ नये प्रयोग हुए हैं।

डोगरी के अधिकांश लेखक बहु–विधायी लेखक हैं। उनकी प्रतिभा मात्र एक विधा तक सीमित न रहकर अपनी प्रांजल अभिव्यक्ति हेतु विभिन्न विधाओं का आश्रय लेती रहती है। वे नाटक, निबंध आदि विधाओं में भी सफल रचनात्मक योगदान दे रहे हैं। प्रत्येक विधा में उनकी रचनात्मक प्रतिभा के दर्शन होते हैं। वे लिखने का अद्‌भुत सामर्थ्य रखते हैं। उनके प्रयास इस दृष्टि से अत्यंत सराहनीय हैं कि इससे डोगरी के समृद्‌धि–यज्ञ में निरंतर स्तरीय आहुतियाँ दी जा रही हैं। इससे उनकी अभिव्यंजना का विषय–क्षेत्र भी विस्तार पा रहा है।

डोगरी भाषा की समृद्‌धि हेतु किए जा रहे रचनात्मक यज्ञ में डोगरी लेखकों का समाज जी–जान से जुटा हुआ है। उनकी अभिलाषा है कि–

(i) डोगरी भाषा में उच्च स्तर के साहित्य का प्रणयन हो।

(ii) इस भाषा की कृतियाँ विश्व की उन्नत भाषाओं की कृतियों की बराबरी कर सकें।

(iii) कविता, कहानी, उपन्यास, निबंध आदि का स्तर इतना शानदार हो कि उनकी मातृ–भाषा की रचनाएँ 'नोबेल प्राइज' प्राप्त कृतियों के बराबर खड़ी हो सकें।

(iv) साहित्य चूँकि संस्कृति का अंग होता है इसीलिए डोगरी लेखकों की उत्कट अभिलाषा रहती है कि उनकी रचनाएँ डोगरा–संस्कृति का सुचारु परिलक्षण करती रहें।

भाषा–प्रेम की इस भावना के चलते दर्जनों डोगरी लेखक साहित्य–सृजन में ईमानदारी से जुटे हुए हैं। इनके इस साहित्य एवं संस्कृति–प्रेम के चलते वे अपनी पुस्तकों के प्रकाशक भी स्वयं ही बन जाते हैं। इसी भाव के रहते वे अपनी पुस्तकों का प्रकाशन एवं निःशुल्क वितरण करते भी देखे जाते हैं।

भाषा–प्रेम की इस अद्‌भुत भावना का उदाहरण डॉ. निर्मल विनोद और यशपाल निर्मल के प्रयासों में देखा जा सकता है। डॉ. विनोद ने इस एक वर्ष में सात और यशपाल निर्मल ने सात डोगरी पुस्तकों को प्रकाशित करवाकर एक प्रतिमान स्थापित किया है। निश्चय ही उनके पास वर्षों से पांडुलिपि रूप में पड़ी सामग्री तो सामने आई ही है किंतु डोगरी के समृद्‌धि–यज्ञ में यह प्रयास एक गुणात्मक वृद्‌धि भी सिद्‌ध हुआ है। प्रगति–पथ पर चलते हुए युवा लेखक जगदीप दूबे ने भी एक साथ तीन पुस्तकों का प्रकाशन किया है।

इन वर्षों में बाल–साहित्य के प्रकाशन की गति तेज हुई है। कभी इस बात पर अफसोस प्रकट किया जाता था कि डोगरी में बाल–साहित्य का लेखन का प्रकाशन बहुत धीमा है किंतु डोगरी को संवैधानिक मान्यता मिलने के पश्चात्

यह गति स्वतः तीव्रतर हो गई है। वर्तमान समय–खंड में इस बात पर जोर दिया जा रहा है कि बच्चों को डोगरी बोलने और इसका साहित्य पढ़ने के लिए प्रेरित किया जाए। पहले कभी–कभार बाल पाठकों के लिए पुस्तक मुद्रित हो पाती थी। अब यह स्थिति बदल चुकी है।

आज के बाल–पाठक ही कल के युवा एवं पक्व बुद्धि के पाठक और नागरिक होंगे। बाल–साहित्य की आवश्यकता इसलिए भी बढ़ती हुई प्रतीत हो रही है क्योंकि युवा पीढ़ी 'इंटरनेट' द्वारा प्रदत्त मनोरंजन में उलझकर मुद्रित बाल–साहित्य से विमुख होती जा रही है। अतएव, पुस्तक के पठन–पाठन की परंपरा को मिटने से बचाने के लिए आवश्यक है कि बाल–मानस में पठन की रुचि को बढ़ाने के लिए उन्हें सरल, रोचक और सचित्र पुस्तकें प्रदान की जाएँ। यह संतोष का विषय है कि डोगरी के लेखकों ने इस आवश्यकता को भाँपकर इसकी भरपाई के पग उठाने शुरू कर दिए हैं। इन वर्षों में बाल–कहानियाँ और बाल–कविताएँ लगातार छपकर सामने आ रही हैं। निश्चय ही यह एक सराहनीय कदम है।

बाल–साहित्य

फुल्ल ते कंडे[1]– यह इस वर्ष प्रकाशित होने वाला बाल–कविताओं का महत्त्वपूर्ण संग्रह है। इससे पूर्व लेखक श्यामलाल खजूरिया का 'चन्न तारे' शीर्षक बाल–कविता संग्रह 2018 ई. में प्रकाशित हो चुका है। 'फुल्ल ते कंडे' की कविताओं की भाँति उनके प्रथम बाल–कविता संग्रह को भी बेहद सराहा गया था। कविताओं की लोकप्रियता का प्रमाण यह है कि स्कूल के बाल–विद्यार्थी इन कविताओं को स्कूल के सांस्कृतिक कार्यक्रमों में पढ़कर सुनते–सुनाते और गाते रहे हैं।

'फुल्ल ते कंडे' मे कुल 76 बाल–कविताएँ संग्रहीत हैं। कवि ने बाल–मनोविज्ञान को ध्यान में रखते हुए कविताओं के विषय–क्षेत्र का निर्धारण किया है। बाल–साहित्य के रचनाकार के लिए आवश्यक है कि उसे बाल–मन की गहन जानकारी हो। इन कविताओं से ऐसे विषयों का ज्ञान प्राप्त होता है जो बाल–पाठक के विद्या–प्रेम और ज्ञान को बढ़ाने वाले हैं। बाल–मन अपने चौगिर्द जिन वस्तुओं को पाता है, उन्हें कविता में वर्णित पाकर आनंद और उत्साह बढ़ जाता है। कविताओं में देश–प्रेम का संदेश तथा निज–भाषा प्रेम की प्रेरणा भी उपलब्ध होती है। कविताओं में रिश्ते–नातों को बेहद कारीगरी से परिभाषित करने के अलावा ज्ञानवर्धक विषयों को भी रखा गया है। तमाम कविताओं को आकर्षक रेखाचित्रों के संग प्रमाणित किया गया है जो उनकी महत्ता बढ़ा देता है।

बित्ती टोला[2]– गिल्ली–ठंडे की बालक्रीड़ा को डोगरी में ''बित्ती टोला'' नाम से जाना जाता है। यह 51 बाल–कविताओं का संग्रह है। यद्यपि यशपाल निर्मल का यह संग्रह 2024 ई. में प्रकाश में आया है किंतु पुस्तक के भीतर प्रकाशन सन् 2023 ई. दिया गया है। इसमें कुछेक लोरियों के अतिरिक्त वर्तमान काल–खंड से संबद्ध तमाम मुख्य सरोकारों पर कविताएँ बुनी गई हैं। तमाम विषय ऐसे हैं जिनसे आजकल के बच्चों का वास्ता पड़ता रहता है, यथा– पर्यावरण, कंप्यूटर, रिश्ते–नाते, मेले–त्योहार, घड़ी, पढ़ना–लिखना, खिलौने, खान–पान आदि।

बाल–कवि ने बाल–पाठक के मनोविज्ञान को देखते हुए कविताओं में सादा–सरल भाषा के प्रयोग की मर्यादा का पालन किया है। यह निश्चय ही सफल और रोचक प्रयास है।

गद्य–धारा

चिंतन[3]– डोगरी साहित्य के समग्र उन्नयन में जिन साहित्यकारों का विशेष योगदान है, उनमें शिवदेव सिंह 'सुशील' का नाम भी है। उन्होंने कविता, कहानी, उपन्यास तथा नाटक विधाओं में एकाधिक पुस्तकें प्रकाशित करवाई हैं। उनके उपन्यास 'बक्खरे–बक्खरे सच्च' पर साहित्य अकादेमी पुरस्कार (1998 ई.) के अतिरिक्त राज्य की कल्चरल अकादेमी का सम्मान (1997 ई.) मिल चुका है। सन् 2022 ई. से वे "डुग्गर दर्शन" नामक डोगरी पत्रिका का संपादन एवं प्रकाशन कर रहे हैं। अब इसके 10 अंक प्रकाशित हो चुके हैं।

"सोच–बचार" नामक पुस्तक में उनके 12 आलेख संग्रहीत हैं। ये लेख साहित्य एवं संस्कृति के विविध पहलुओं पर प्रकाश डालते हैं। मोहन सिंह, केहरि सिंह 'मधुकर' तथा डॉ. ज्ञान सिंह के व्यक्तित्व एवं लेखन पर लिखे तीनों लेख पठनीय हैं। डोगरी साहित्य में समाजी सरोकारों की तलाश में लिखा गया लेख सराहनीय प्रयास है। इसके अलावा पुस्तक के अन्य लेखों में डोगरी रंगमंच, डोगरी बाल–साहित्य की स्थिति और भविष्य तथा बीसवीं सदी के अंतिम दशक की छंदमुक्त डोगरी कविता पर सविस्तार चर्चा की गई है। एक लेख लोक–साहित्य में नुक्कड़ नाटक की अवस्थिति को लेकर है। डुग्गर के प्रसिद्ध लोकनाट्य हरण पर एक परिचयात्मक आलेख भी मौजूद है। कुल मिलाकर यह एक अच्छी पुस्तक है।

हठीली स्मृतियाँ[4]– मूलतः और मुख्यतः कहानीकार के रूप में प्रसिद्ध साहित्यकार ललित मंगोत्रा की सद्यः प्रकाशित यह पुस्तक उनके संस्मरणों और यात्रा–लेखों का संग्रह है जो "जिद्दी चेत्तें" शीर्षक से प्रकाशित हुआ है। बतौर वरिष्ठ लेखक, उनके पास संस्मरणों का अकूत जखीरा है। स्मृतियों के इस

भंडार से उन्होंने सात आलेख इस पुस्तक में प्रस्तुत किए हैं। अपने अनुभव से गुजरी घटनाओं को जब विशद ईमानदारी से पेश किया जाए तो वे मूल्यवान संस्मरण का आकार धारण कर लेती हैं। ये तमाम आलेख इस आवश्यकता की पूर्ति करते हुए बेहद रोचक बन पड़े हैं। लेखक ने अपने अनुभवों की गलियों से गुजरे ऐसे चरित्रों का हृदयहारी चित्रण प्रस्तुत किया है जिनकी अमिट छवि उसकी स्मृतियों के झरोखों में आकर ठहर जाया करती हैं। इन आलेखों के प्रामाणिक अनुभव और जीवंत किरदार पाठक के हृदय पर अमिट छाप छोड़ जाते हैं। इनमें प्रयुक्त लेखन–शैली विश्वसनीय प्रभाव डालने में सक्षम है। इस शैली की विशेषता यह है कि प्रत्येक घटना या चरित्रों के विषय में उत्सुकतावश उभरे प्रश्नों की कतार लेखक के मन को गंभीरता का आयाम देते हुए, उनके उत्तरों में प्रामाणिकता भर देती है। इस शैली के चलते चरित्र का समग्र विश्लेषण कहानी की भाँति रोचक हो उठता है। ऐसे अविस्मरणीय चरित्रों में घुटको, 'लंबड़' तथा 'पीर' पाठक के मन पर अमिट छाप छोड़ जाते हैं। ये ऐसे किरदार हैं जिन्होंने लेखक के बाल–मन में उत्सुकता और परिवेश संबंधी प्रश्नों को जन्म दिया था। इन्हीं चरित्रों ने जीवन की गंभीर समझ दी थी। अपने स्कूल की यादों वाला लेख 'रणवीर हाई स्कूल' भी एक रोचक रचना है। यह सूचनाप्रद भी है। यह स्वीकार करना पड़ेगा कि लेखक अपनी कलम का सामर्थ्यपूर्वक प्रयोग करते हुए साधारण घटना को स्मृतियों की सत्यता के बल पर रोचक बनाने की कला पर विशेष अधिकार रखता है।

यात्रा–लेख वाले खंड में चार यात्रा–लेख सम्मिलित किए गए हैं जोकि किसी डाक्यूमेंट्री फिल्म का–सा प्रभाव डालते हैं। ये रोचक भी हैं और ज्ञानवर्धक भी हैं। '2009 ई. की स्वीडन यात्रा' तथा 'बोलोविया के चौगान और गलियारे' अत्युत्तम यात्रा–विवरण प्रस्तुत करने वाले लेख हैं। भद्रवाह से बसोहली यात्रा वाले लेख में लेखक की सांस्कृतिक–चेतना का दिग्दर्शन होता है। लेखक पर्वतीय क्षेत्र की प्राकृतिक सुंदरता का वर्णन करके अभिभूत कर देता है। इसके अलावा, क्षेत्र के जन–जीवन की समुचित जानकारी भी प्रदान करता है। 4 जनवरी, 1987 'तैंतीस वर्ष उपरांत की यात्रा' साहित्यिक दृष्टि से उच्चकोटि की रचना है। यह पुस्तक निःसंदेह डोगरी की संस्मरण तथा यात्रा लेख विधा में स्तरीय वृद्धि करने वाली है।

सुख का श्वास[5]– शंभुराम 'प्यासा' लेखन के क्षेत्र में कविता के माध्यम से उतरे थे किंतु शीघ्र ही वे कहानियाँ भी लिखने लगे। 'त्रिप–त्रिप अत्थरूं' (2002 ई.) तथा 'तंदां रिश्तें दियां' (2009 ई.) उनके पहले कहानी–संग्रह थे। तदुपरांत, सन् 2016 ई. में उनकी कविताओं का संग्रह 'चेत्तें दी बुछकड़ी' प्रकाशित

हुआ। 'अशीरवाद' शीर्षक से उनके पाँच लघु नाटकों का संग्रह भी प्रकाशित हुआ था। सन् 2023 ई. में उन्होंने बाल–कहानियों का संग्रह 'ञ्यानें बड़े स्याने' प्रकाशित करवाया। अभिव्यक्ति की प्रबल आकांक्षा के वशीभूत इस वर्ष उन्होंने अपने यात्रा–लेखों का संग्रह 'सुखा दा साह्' प्रकाशित करवाकर अपनी बहुमुखी प्रतिभा का परिचय दिया है।

इस यात्रा–लेख संग्रह में 'प्यासा' द्वारा भारत के भीतर नौ स्थानों की यात्रा–संबंधी आलेखों में अपने अनुभवों को विस्तार से वर्णित किया गया है। इनका एक आलेख उनकी 'नेपाल यात्रा' के विषय में है। कुछ यात्रा–लेख स्थान–विशेष की यात्रा का वर्णन करते हैं, कुछ में किसी पर्यटन–स्थल का रोचक वर्णन भी मिलता है। कुछेक यात्रा–लेख किसी तीर्थस्थल की यात्रा को लेकर लिखे गए हैं। ''सुद्ध महादेव'', ''शिव खोड़ी'', ''हरिद्वार कुंभ'' बेहद दिलचस्प लेख हैं। माछीवाड़ा लुधियाना (पंजाब) के सुप्रसिद्ध तीर्थ–स्थल 'होला म्हल्ला' की प्रेरक प्रथाएँ पाठक के मन को मोह लेती हैं।

नाट्य संसार

तीन डोगरी नाटक[6]– यह पुस्तक तीन डोगरी नाटकों का संग्रह है। इन तीन नाटकों के विषय में इनके रचयिता डॉ. सुधीर महाजन का कथन है– "ये तीन नाटकों "मैं भगत सिंह", "नमां तैंत्तर" (नया तंत्र) तथा "मन चंगा ते (तो) कठोती च (में) गंगा" प्रयोगवादी नाटक हैं जो मात्र रंगमंचीय प्रयोग न होकर नाटक के कथानक, भाषा, संवाद, शैली, नाटकीय व्यापार तथा नयी–नयी युक्तियों द्वारा नाटक को आगे बढ़ाने का प्रयोग करते हैं।"

प्रथम नाटक 'मैं भगत सिंह' एक–पात्री नाटक है जिसमें आरंभ से अंत तक चले एकालाप में क्रांति की न केवल पृष्ठभूमि स्पष्ट होती है बल्कि इसकी ऐतिहासिक भाव–भूमि तथा विद्रोह की सार्थकता को भी स्पष्ट किया गया है। नाटक में भगत सिंह के विद्रोह भाव पर समुचित प्रकाश डाला गया है।

द्वितीय नाटक "नया तंत्र" मात्र छह पात्रों का आसरा लेकर आगे बढ़ता है। नाटकीय तत्त्वों का आश्रय लेते हुए नाटककार कथानक की सफलता से आगे बढ़ता है। हास्य–व्यंग्य के यथोचित स्पर्श नाटक के कथानक को रोचक बनाए रखते हैं। नाटकीय तत्त्वों की दृष्टि से यह निश्चय ही सफल नाटक है।

तीसरा नाटक संत रविदास के प्रसिद्ध कथन "मन चंगा तो कठौती में गंगा" के सार्वकालिक संदेश पर बुना गया एक सफल नाटक है। संवाद बेहद सार्थक और भावोत्तेजक हैं। मुख्य कथानक में मीरा के भक्ति–भाव का संचयन करके नाटक को शानदार परिणति दी गई है।

नाटककार नाटक–विधा की सूक्ष्मताओं से परिचित ही नहीं, अपितु एक जाने माने नाट्य–निर्देशक भी हैं। उनकी विशेषज्ञ दृष्टि का भरपूर लाभ इन नाट्य–रचनाओं का मिलना स्वाभाविक है।

प्रतीकचंद के प्रतीक और अकलमंद लोग[7]– राजेश्वर सिंह 'राजू' डोगरी के समांतर हिंदी में भी लिखते रहे हैं। उनके कविता–संग्रह और कहानी–संग्रह इन दोनों भाषाओं में प्रकाशित हो चुके हैं। साहित्य की अन्य विधाओं में भी उनकी गहरी पकड़ है। द्विभाषी लेखक के रूप में इनकी 25 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। इनके अनेक रेडियो नाटक तथा वार्ताएँ आकाशवाणी से प्रसारित हो चुकी हैं। प्रकाशन–मीडिया के माध्यम से इन्होंने सराहनीय योगदान दिया है। बीच–बीच में अंग्रेजी में भी कलम चलाते रहे हैं।

'प्रतीकचंद दे प्रतीक' राजेश्वर सिंह 'राजू' के दो मंचीय नाटकों का संग्रह है। नाटकों की यह उनकी प्रथम पुस्तक है। 'अकलमंद लोक' के विषय में लेखक का कथन है– "यह मानवीय संबंधों पर आधारित नाटक है। हम स्वयं को जितना चाहें सभ्य घोषित करें किंतु जब इसे सिद्ध करने का अवसर आता है तो सत्य सामने आ ही जाता है।" मानव का चरित्र एवं व्यवहार परिवर्तनशील है। इसी तथ्य पर आधारित इस नाटक का कथानक रोचकता के क्षणों को बढ़ाते हुए आगे बढ़ता है।

"प्रतीकचंद दे प्रतीक" इस संग्रह का प्रथम नाटक है। इस नाटक में व्यंग्य द्वारा हास्य की सहज सृष्टि हुई दिखाई पड़ती है। डोगरी भाषा के हितैषी बनने वाले ऐसे छद्म भेषधारी लेखकों पर तीखा व्यंग्य किया गया है जिनकी करनी और कथनी में जमीन आसमान का अंतर है। यह एक रोचक नाटक है।

गल्प साहित्य

घरान[8]– चमनलाल खजूरिया नवोदित प्रतिभावान लेखक हैं। 'घरान' नामक पुस्तक उनकी 30 कहानियों का संग्रह है। इससे पूर्व, उनका एक कविता–संग्रह प्रकाश में आ चुका है। इस बार परिपक्व कहानियाँ देकर अपनी बहुमुखी प्रतिभा को संज्ञापित किया है। एक संजीदा डोगरी लेखक के रूप में अपनी अलग पहचान बना चुके इस लेखक को बहुमुखी प्रतिभा का धनी कहा जाए तो पूर्णतया उपयुक्त होगा। चमनलाल खजूरिया भारतीय सेना में सैनिक हैं। सेना के सक्रिय जीवन से कुछ समय निकालकर वे अपनी रचनाशीलता को अभिव्यक्ति प्रदान करते हैं। यह एक सराहनीय कृत्य है।

इस संग्रह की तमाम कहानियाँ अलग तरह के कथानक लेकर सामने आई हैं। इसके लिए लेखक बधाई का पात्र है। कथानक रोचक हैं और दैनिक जीवन की घटनाओं से जुड़े हुए हैं।

कहानियों की भाषा मुहावरेदार है। इनमें ठेठ डोगरी शब्दावली प्रयोग में लाई गई है। इसके साथ ही यदि मानक हिज्जों का प्रयोग किया जाता तो ग्रामीण जीवन–शैली का प्रामाणिक चित्रण करती। डोगरा–संस्कृति के विविध पहलुओं से जुड़ी ये कहानियाँ निश्चित रूप से एक सराहनीय प्रयास हैं। 'घरान', 'परतैनी दा तंदुर', 'नरकै च सुर्ग' 'लछमन दा बनवास', 'बुआ दा थान' आदि बेहद रोचक कहानियाँ हैं। लेखक डुग्गर की सांस्कृतिक विशेषताओं की पर्याप्त जानकारी रखता है जो कहानियों के रूप में विकसित की गई हैं। लेखक से पूरी आशा है कि भविष्य में वह और अधिक रुचिकर कहानियों से इस विधा को समृद्ध करेगा।

दोहरी[9]– विगत कुछ वर्षों में प्रकाशित होने वाले स्तरीय उपन्यासों की संख्या निरंतर आगे बढ़ी है। उपन्यास को किसी भी भाषा की उन्नति का प्रतिमान माना जाता है। इधर डोगरी साहित्य के चर्चित वर्ष में, इंदरजीत केसर जो डोगरी के गणमान्य लेखकों में परिगणित होते हैं, ने डोगरी साहित्य को 'दोहरी' शीर्षक उपन्यास दिया है। विगत दो दशकों से प्रतिवर्ष उनकी एक या दो पुस्तकें नियमित रूप से प्रकाशित होती रही हैं। उनके उपन्यासों के अतिरिक्त 13 कविता–संग्रह, 2 कथा–संकलन तथा निबंध, यात्रा–लेख बालोपयोगी पुस्तकें तथा साक्षात्कार आदि विधाओं में पुस्तकें सामने आई हैं। बतौर कहानीकार उनकी अलग पहचान रही है।

'दोहरी' उनका नवम उपन्यास है। इसमें डोगरा–समाज में प्रचलित वैवाहिक कुरीति को केंद्र में रखकर सामाजिक कुप्रथा पर कुठाराघात किया गया है। रोचक कथानक को प्रवाहमान भाषा में बयान किया गया है। उपन्यास को पठनीय बनाने में ठेठ भाषा का प्रबल योगदान है। मूल कथानक में उपकथाओं का संचयन बेहद कारीगरी से किया गया है। इस उपन्यास के माध्यम से लेखक बतौर उपन्यासकार, पाठक मन पर अमिट छाप छोड़ पाया है। डोगरा–समाज की सांस्कृतिक खूबियों को भी कथानक में यथोचित रूप से उभारा गया है। पाठक को यह रचना डोगरा–समाज का साहित्यिक दस्तावेज प्रतीत होती है। इस कृति की जितनी प्रशंसा की जाए, कम है। डोगरी उपन्यास जगत में इस उपन्यास को एक कलात्मक वृद्धि माना जाएगा, इसकी पूरी आशा है।

जीवनी–विनिबंध–

रंगीले ठाकुर[10]– यह वृहद विनिबंध भारतवर्ष में शास्त्रीय संगीत की दुनिया में जम्मू का नाम रोशन कर चुके विजय सिंह संब्याल के व्यक्तित्व एवं योगदान पर केंद्रित है। विजय सिंह संब्याल को संगीत–जगत में 'रंगीले ठाकुर' नाम से जाना जाता है। इस संगीतज्ञ का जीवन संगीत को समर्पित रहा है। यह

विनिबंध जीवनी–विधा में स्थान पाता है।

जीवन की कठिन डगर पर आगे बढ़ते हुए रंगीले ठाकुर ने अपने संगीत समर्पण के आड़े आने वाली तमाम रुकावटों का दृढ़ निश्चय से सामना करके जीत हासिल की थी। संगीत की राह को तजने का जब दबाव बढ़ा तो उन्होंने घर को तजना उचित समझा और बाध्य होकर अपने संग तानपुरा लिए बिना मंजिल की सुध–बुध के अंधियारी रात में निकल पड़े। बचपन से ही परा–विद्याओं के प्रति रुचि थी और दिव्य व्यक्तियों के प्रति आर्कषण भी था। अंततः संगीत का अनुराग वाराणसी ले आया। यहाँ कलाकारों, चित्रकारों, गायकों, वाद्य–वृंद विशेषज्ञों, कवियों–लेखकों के संपर्क में आने से संगीत–संसार में उड़ान को विस्तार मिला। वैरागियों–संन्यासियों, महंतों, ब्रह्मचारियों, अघोरियों तथा विभिन्न प्रकार के लोगों के संपर्क में आने और जीवन को जानने का सुअवसर मिला।

बरसों गंगा किनारे संगीत का अभ्यास करके दक्षता प्राप्त की। अध्यात्म और योग के प्रति आकर्षण बढ़ा। वह युवा विजय सिंह जो बिजली विभाग में चपरासी की नौकरी पाने को आतुर था, संघर्षों के चौराहे से गुजरते हुए वर्ष 2016 में 31 जुलाई को बतौर "स्टेशन डायरेक्टर आकाशवाणी" के जम्मू केंद्र से सेवा–निवृत्त हुआ।

जीवन की मीठे–कड़वे अनुभव इस संगीतज्ञ की जीवन–कथा को उपन्यास की भाँति रोचक बना देते हैं। यह जीवनी प्रेरणा देती है कि यदि आपका निश्चय अटल है, चरित्र में ईमानदारी है, तो सफलता निश्चय ही आपके कदम चूमेगी।

सेवा–निवृत्ति के पश्चात् रंगीले ठाकुर जम्मू की सरूहींसर झील के निकटस्थ गाँव के बाहर एक आश्रम बनाकर एकांत–साधना में लीन हैं। संन्यासियों का सा जीवन जीते हुए, वे अपने शिष्यों–प्रशिष्यों को संगीत और योग के क्षेत्र में निःशुल्क मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। इस पुस्तक में उनके प्रेरक जीवन की कहानी सविस्तार प्रस्तुत की गई है।

अनुवाद

वर्ष 2024 ई. में यशपाल निर्मल द्वारा अनूदित चार पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। इनमें से तीन अनुवाद हिंदी से डोगरी में तथा एक अनुवाद डोगरी से हिंदी में प्रस्तुत किया गया है। यह चारों अनुवाद कविता–विधा से संबद्ध हैं।

(क) हिंदी से डोगरी में–

- यादें पिता की (चेत्ते पिता दे)– डॉ. अमिता दूबे
- माँ होना (माँ होई जाना)– डॉ. अमिता दूबे
- हथेली पर प्राण (तली'र जान)– डॉ. सुधाकर अदीब

(ख) डोगरी से हिंदी में

• शब्द अमरत (शब्द अमृत) मुहम्मद यासीन बेग

इन चारों पुस्तकों का प्रकाशन सर्वभाषा प्रकाशन, नई दिल्ली द्वारा किया गया है।

'यादें पिता की' की कविताओं को अपने जन्मदाता पिता (पापा) की स्मृति के अलावा, जगत के परमपिता परमेश्वर पर भी केंद्रित किया गया है। परमेश्वर के ब्रह्मा, विष्णु, महेश रूपों के अतिरिक्त धर्म और मर्यादा के प्रतिमान पिता रूप श्रीराम, श्रीकृष्ण तथा बुद्ध पर भी सारग्राही कविताएँ मौजूद हैं। कवयित्री ने भावना और बुद्धि से उपजे मनोभावों को दक्षता से पेश किया है। 'पिता मेरे पिता' में निहित दार्शनिक भाव कविता में विशेष निखार ले आता है।

'माँ हो जाना' का अनुवाद एक निश्चित भाव–सरणि पर रचित कविताओं में कवयित्री के भाव–संसार को सुचारु रूप से प्रस्तुत करता है। इसमें मातृत्व की धात्री माँ के नारीत्व को प्रभावी रूप से उभारा गया है। वह पाँच शास्त्रोक्त मातृरूपा स्त्रियों को नारीत्व का प्रतीक बनाकर अपने मनोभाव प्रकट करती है। कवयित्री के अनुसार– ''मुझे यों लगता है कि स्त्री का सबसे सुंदर स्वरूप माँ का है– अहिल्या, तारा, मंदोदरी, कुंती और द्रौपदी–माँ की ममता को अपने आँचल में समेटते हुए पूजनीय हुई।'' अपनी इस अवधारणा की पुष्टि हेतु कवयित्री 'ब्रह्मपुराण' के एक श्लोक का आश्रय लेती है–

"अहल्या, द्रौपदी, तारा, कुंती, मंदोदरी तथा
पंचकन्याः स्मेरतन्नित्यं महापातक नाशनम्।।"

इन तत्त्वों के अलावा, कवयित्री ने अपनी जन्मदात्री माता की पुण्य–स्मृति में भी कविताओं का सृजन किया है।

'हथेली पर प्राण' डॉ. सुधाकर अदीब की मूल हिंदी कविताओं का अनुवाद 'तली 'र जान' शीर्षक के अंतर्गत किया गया है। कविताओं में माता विषयक चिंतन के विविध आयाम झलकते हैं। 'कोटि–कोटि माहनुएँ दी पुकार' तथा 'दिखदा ऐ राजपथ गी' इस चिंतन–धारा को गंभीरता से रेखांकित करने वाली कविताएँ हैं। यह पठनीय पुस्तक है। अनूदित पुस्तकों में कहीं–कहीं मूल भाषा के ऐसे शब्दों का प्रयोग किया गया है जिनके विकल्प डोगरी भाषा में सहज उपलब्ध हैं। बहरहाल, अनुवादक का प्रयास सराहनीय है।

'शब्द अमृत' नाम्नी पुस्तक मुहम्मद यासीन बेग की लंबी डोगरी कविता का हिंदी अनुवाद है। इससे पहले भी लोगों ने इसे हिंदी में अनुवादित करने के प्रयास किए हैं। 'शब्द अमृत' वस्तुतः मानव–मानस की ऐसी उद्भावना है जिसमें डुग्गर के जन–जीवन, संस्कृति तथा परंपराओं को भारतीय एवं विश्व–मानस

के संदर्भ में आंका गया है। यह कविता मुहम्मद यासीन का एक श्रेष्ठ प्रयास है। इसकी सांस्कृतिक भूमिका में केशव मोहन पांडेय ने सत्य कहा है– 'शब्द अमृत' की सबसे बड़ी विशेषता इसमें निहित दर्शन है। इसमें जीवन और अस्तित्व के बारे में गहन विचार और दर्शन प्रस्तुत किया गया है जो पाठकों को सोचने पर मजबूर करता है।'' अनुवाद का यह सराहनीय प्रयास है।

शतक–त्रय[11]

भारतीय साहित्य और संस्कृति में भर्तृहरि का सर्वोच्च स्थान है। 570 ई. में उज्जैन (मालवा) में जन्मे इस महान वैयाकरण एवं भाषाविद् विद्वान को 'वाक्यपदीय' के अतिरिक्त तीन शतक रचनाओं के कारण विशेष प्रतिष्ठा प्राप्त है। इनके बहुचर्चित शतक हैं– "नीति शतक", "वैराग्य शतक" तथा "शृंगार शतक"। संस्कृत–साहित्य और दर्शन में इनका अद्वितीय स्थान है। इन तीन शतकों के अनुवादक प्रकाश प्रेमी डोगरी–भाषा के गणमान्य कवि हैं जिनके महाकाव्य ग्रंथ 'बेद्‌दन धरती दी' पर उन्हें साहित्य अकादेमी द्वारा पुरस्कृत किया जा चुका है।

उक्त तीनों शतकों को एक जिल्द में रखकर डोगरी भावानुवाद किया गया है। अनुवादक ने इन रचनाओं के संदेश और साहित्यिक स्तर को पूरी सफलता से डोगरी में प्रस्तुत किया है। स्मरणीय तथ्य है कि डोगरी लोकवार्ता में भर्तृहरि विषयक लोककथाएँ तथा लोकगाथाएँ सदियों से प्रचलित चली आती हैं। भर्तृहरि के छोटे भाई उज्जैन नरेश राजा विक्रमादित्य के विषय में भी डोगरा लोक–मानस में अनेक लोक–कथाएँ प्रचलित हैं। उज्जैन के राजा भर्तृहरि को रानी पिंगला के विश्वासघात के कारण वैराग्य–पथ का अनुगमन करना पड़ा। संन्यस्त होकर उन्होंने मनन–चिंतन के समुद्र में उतरना बेहतर समझा। तदुपरांत उन्होंने संस्कृत के माध्यम से धर्म, दर्शन, साहित्य को समृद्ध किया।

अनुवाद मुख्यतः मुक्त छंद में प्रस्तुत किया गया है। छंद–प्रबंध से मुक्त होने के बावजूद अनुवाद में तेज भाव–प्रवाह अक्षुण्ण रह पाया है किंतु कहीं–कहीं स्वतः छंदोबद्धता चली आई है।

अनुवादक प्रकाश प्रेमी ने इस पुस्तक की भूमिका में भर्तृहरि के जीवन से संबद्ध प्रसंगों का सविस्तार वर्णन करते हुए उस मूल–कथा का उल्लेख भी किया है जिसने उज्जैन के राजा को वैराग्य–पथ का अनुगमन करने के लिए बाध्य किया था। अनुवादक जोकि संस्कृत भाषा के विद्वान् भी हैं, उन्हें ये तीनों शतक इतने मनभावन प्रतीत होते रहे हैं कि वे वर्षों से इस लालसा को मन में पाले हुए थे कि कभी इन तीनों का डोगरी में अनुवाद करेंगे। अंततः इन्हें शतक त्रय के रूप में प्रस्तुत करते हुए उन्होंने आत्मिक तुष्टि पाई है।

हम आशा रखते हैं कि वे संस्कृत साहित्य की अन्य अनमोल रचनाओं के अनुवाद भी डोगरीभाषा में देने के लिए प्रवृत्त होंगे।

काव्य–संसार

खरा फकीरी ठाठ[12]– डॉ. निर्मल विनोद प्रयोगवादी तबीयत के स्वामी कवि हैं। कबीर के संत स्वभाव को दर्शाने वाली इस उक्ति पर नामित यह पुस्तक अलग प्रकार की कविताओं का संग्रह है। कवि उन्हें सांस्कृतिक रचनाएँ कहकर प्रस्तुत करता है। निर्मल ने भारतीय–संस्कृति की समृद्ध विरासत के विविध पग–चिन्हों की सफलतापूर्वक शिनाख्त करते हुए उन्हें इस कविता–संग्रह में संजोया है। सनातन संस्कृति की सदियों की यात्रा को कविताबद्ध करने का यह सराहनीय प्रयास है। हिंदू अस्मिता की दिग्दर्शक परंपराओं, विश्वासों और धर्म–पद्धतियों का गहराई में पैठ कर काव्यात्मक अध्ययन किया गया है।

इस विशेष संग्रह में, वेद–पुराण तथ उपनिषदों की दिव्य अनुभूति के दर्शन तो होते ही हैं, साथ ही वैष्णव–धारा के मुख्यावतारों, ऋषियों, संतों–संन्यासियों की देन को भी रेखांकित किया गया है। शिव–शंभु, विष्णु, श्रीराम, श्रीकृष्ण की महिमा का गुणानुवाद मानवता के लिए कल्याणकारी और प्रेरक उपाख्यान है। भारत जिसे विभिन्न भारतीय धर्मों की जन्मभूमि होने का श्रेय प्राप्त है, अनगिनत मनीषियों की धरा रही है। कविमानस मानवता के इन अग्रजों के समक्ष नतमस्तक होकर श्रद्धा–सुमन अर्पित करता है। इसमें भगवान् बुद्ध, तीर्थंकर महावीर, बाबा नानक, संत कबीर, संत रविदास प्रभृति विभूतियों के अलावा रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानंद, स्वामी दयानंद सरस्वती जैसी महान आत्माओं की भी सश्रद्ध स्तुति की गई है।

वेद की ऋचाओं का यथावसर भावानुवाद इस संग्रह के साहित्यिक–दार्शनिक मूल्य को दोगुना कर देता है। वर्तमान युग में जबकि भारतीय मानस पर आधुनिकता के नाम पर वामपंथी–साम्यवादी विचारों का मुलम्मा चढ़ाने का दुराग्रह जारी है, ऐसे में इस प्रकार की रचनाओं का प्रकाशित होना स्वागत–योग्य है। संभवतः, यह पुस्तक डोगरी में सनातन–आस्था एवं धर्म–दर्शन के पुनर्जागरण एवं पुनरुत्थान का उद्घोष करने वाला प्रथम प्रयास है। डोगरी–साहित्य में इसका भरपूर स्वागत होगा, इसकी पूरी आशा है।

स्वर्ण कण[13]– ये उस छंदमुक्त विधान की कविताओं का संग्रह है जिन्हें कवि ने मुक्तछंद की कविताएँ भी कहा है। इन कविताओं में लेखक की स्मृतियों में बहुधा उभरने वाले शुद्ध भावों को संयोजित किया गया है। अपनी स्मृतियों से कुछ अमूल्य बिंब कलमबद्ध करके कवि पाठक को भावविभोर कर देता है। "तवी" नदी विषयक कविताओं (यथा– 'जि'नें दिनें' तथा 'फिकरें च') में निहित

विशुद्ध दार्शनिक और आत्मिकभाव सराहनीय है। एक अन्य कविता में कविमन सूर्यपुत्री तवी नदी को माता मानकर उसके ममतामयी उपकारों से उपकृत होकर अपनी कृतज्ञता व्यक्त करते हुए कहता है– "तू तो वही है, कृपा का भंडार, किंतु हमीं (मानव) कृतघ्न हो गए हैं।" इसी कविता में तवी की सांस्कृतिक महत्ता को उजागर करते हुए वह शाखाएँ प्रवाहित करने आई कन्याओं के बिंब सृजित करके अपने निर्मल मनसोद्गार प्रकट करता है। तवी तो वही है, किंतु उसके महत्त्व को बिसराने वाले नशेड़ी, उसका मूल्य क्या जानें? एक अन्य कविता में तवी की बाढ़ में चार यथार्थवादी भाव–बिंब सृजित किए गए हैं।

इस संग्रह की प्रायः तमाम कविताएँ अनुभूति के अलग स्तर को रूपायित करती हैं, तथापि 'कनीतके', 'स्टंट बनाम छांटे', 'खताब सरगने दा' आदि वर्तमान समय की नब्ज़ पहचानकर ऐसे यथार्थ चित्र उकेरती हैं जो शायद इससे पूर्व किसी ने सृजित नहीं किए हों। यह डोगरी–काव्य में किया गया एक अच्छा प्रयास है।

भविक्खी खतोले[14]– 104 पृष्ठों की इस अजिल्द पुस्तक में 89 कविताएँ संग्रहीत हैं जिनमें प्रत्येक पंक्ति का अंत तुकांत शैली में किया गया है। यद्यपि ये रचनाएँ गद्य रूप में नहीं है, तथापि कवि (ध्यान सिंह) इन्हें गद्य में पद्य कहता है। हमारी दृष्टि से ये मात्र कविताएँ हैं। इनमें से अधिकांश का अभिप्रेत अत्यंत गूढ़ है जिसके कारण इनका संदेश ढूँढ़ पाना बेहद कठिन है। दुरूहता के कारण कहीं–कहीं ये दुर्भेद्य किला प्रतीत होती हैं। गद्य का न्यून–मात्र अंश नहीं मिलता। यों प्रतीत होता है, कवि किसी रहस्यवाद की सृष्टि का प्रयास कर रहा है। ऐसी बहुत कम कविताएँ हैं जो सहज प्रसाद गुण से संपन्न हों। ऐसी विरल कविताओं में "कविता दा गु'ज्जा भेत" (अर्थात् कविता का गुप्त रहस्य) ऐसी सशक्त कविता है जिसमें कविता का अभिप्राय साफ–साफ समझ में आता है। इस कविता के अंत में कवि कहता है "कविता एक सुलगे हुए उपले की भाँति होती है। इसका कोई नारा या ध्वज नहीं होता।" यह कथन बेहद महत्त्वपूर्ण है। इसमें कवि पूर्वकाल की अपनी विचारधारा का पूर्णरूपेण खंडन करता दिखाई पड़ता है जब वह मार्क्सवाद के समर्थन में साहित्य–सृजन की वकालत किया करता था। कवि की वैचारिकता में यह सूक्ष्म परिवर्तन है।

प्रसाद गुण से संपन्न इस कविता में कवि ने जिस वैचारिक–अवधारणा का जिक्र किया है, उसके अनुसार कविता के मुख्य उद्देश्य इस प्रकार हैं–

(i) यह मानसिक अभिव्यक्ति होती है।
(ii) प्यासे के लिए यह पानी के घूँट की भाँति होती है।
(iii) यह अंधियारे से प्रकाश की ओर ले जाती है।

(iv) इसमें परनिंदा, क्रोध, अफसोस और विरोध प्रकट किया जाता है।

(v) यह सिरदर्द की दवा होती है।

(vi) इसमें गहन चिंतन का संधान करना पड़ता है आदि।

कविता की इस परिभाषात्मक व्याख्या के पश्चात् कवि इसकी भूमिका का बखान यों करता है–

- कविता एक सामाजिक दस्तावेज है।
- यह आम आदमी के सपनों को यथार्थ में अनूदित करती है।
- सपनों को साकार करती है।
- मेरी कविता में आम आदमी के गुप्त–प्रगाढ़ रहस्य निर्दिष्ट होते हैं।

विशेष कविता के समान इस संग्रह में और भी कुछेक रचनाएँ ऐसी हैं जिनमें कवि ने अपनी वैचारिकता को सरल शब्दावली में अभिव्यक्त किया है।

रंगीले मौसमों की देन[15]– स्वच्छंद कविताओं के इस संग्रह में 48 कविताएँ संकलित हैं। ये तमाम रचनाएँ पठनीय एवं सराहनीय हैं। इनमें भी कुछेक विशेष पाठकीय अहसास अर्थात् आनंद का सृजन करने में सक्षम हैं।

'सत्तरंगें फंगें आह्ली मुस्कान', 'मेरा कोठा', 'इश्क समुंदर इक कली', 'मशुए च में' बेहतरीन कविताएँ है। यों प्रतीत होता है कि शिवराम 'दीप' ने स्वच्छंद कविता को जहाँ तक पहुँचाया था, उससे आगे बढ़ाने का बीड़ा कवि निर्मल विनोद ने उठा लिया है। 'हवन' शीर्षक की दोनों कविताएँ अलग भाव–भूमि पर रची गई कविताएँ हैं। यह कविता–संग्रह इस तथ्य का प्रमाण है कि कवि विनोद गहराई में उतरकर गंभीर मनन के पश्चात् कविता समुद्र में डुबकी लगाकर पाठक के लिए सच्चे मोतियों के समान मूल्यवान कविताएँ बाहर निकाल लाते हैं। यह पुस्तक निश्चय ही स्वच्छ कविता के क्षेत्र में आगे की छलांग है। निश्चय ही यह एक स्वागत–योग्य प्रयास है।

हँसते हैं जल तरंग[16]– इस नये ग़ज़ल संग्रह का डोगरी में आना स्वागत योग्य है। विभिन्न काव्य–शैलियों में अपनी प्रयोगधर्मा लेखनी से अनेक प्रयोग कर चुके डॉ. विनोद जो पहले से लेखन–पथ पर गतिशील तो थे किंतु गति उतनी तेज न थी जैसे कि उम्र की इस पक्वावस्था में आकर हुई है। संभवतया, इसका यह कारण हो सकता है कि आजीवन लेखन में जुटे रहने के कारण वर्तमान में उनकी रचनाओं का भंडार उफनने लगा हो इसलिए एकाएक अपनी अन्य पुस्तकों के अलावा उन्होंने अपने रचनात्मक जल–तरंग की स्वर लहरियों को पाठकों के संग साझा करना बेहतर समझा होगा। इस संग्रह की ग़ज़लों का भाव–संसार सराहनीय है। एक शेर देखें–

"धुखदी रौंह्दी अगरबत्ती,

मैह्‌कदा रौंह्‌दा मेरा अंदर।"

अर्थात्– अगरबत्ती तो सुलगती रहती है किंतु मेरा अंतस् महकता रहता है।

इस प्रकार के सूक्ष्म–भाव इस संग्रह में अन्यत्र भी बिखरे पड़े हैं। निर्मल की ग़ज़लों की विशेषता यह है कि इनमें सांस्कृतिक प्रतीकों का भरपूर प्रयोग किया गया है जिससे इनमें विशेष निखार चला आता है–

"सत्यम् शिवम् ते सुंदरम्, अस भुल्ली बिस्सरी गे
अ'न्नी गली च भटकदी, पुट्‌ठी कची ऐ सोच।"

अर्थात्– "सत्यं, शिवं, सुंदरम् के आर्ष–वाक्य को भुलाकर मानवता अहितकर विचारों के संग अंधियारी गलियों में भटक रही है।" और भी ऐसे मूल्यवान शेर इस संग्रह में भरे पड़े हैं।

सिंदूरी सांझ और दूधों नहाई रात[17]– ग़ज़ल विधा में डॉ. निर्मल विनोद का यह दूसरा पग है। इससे पूर्व इसी वर्ष इनका प्रथम ग़ज़ल संग्रह 'हसदे न जल तरंग' प्रकाशित हो चुका है। वर्तमान पुस्तक में भी उन्होंने अपने मनोभावों को बड़ी कलात्मक शैली में प्रस्तुत किया है। अपनी ओर से कवि ने ग़ज़लियात के नियमों का भरसक पालन करने का प्रयास किया है।

डोगरी–ग़ज़ल में परंपरा रही है कि इश्क और मुहब्बत के भावों को मर्यादित ढंग से बयान किया जाए। डॉ. विनोद ने इस परंपरा का पालन बेहद शालीनता से किया है। हालाँकि उनकी ग़ज़लों में श्रृंगार के संयोग–वियोग दोनों पक्षों का चित्रण यथोचित रूप से उपलब्ध हो जाता है।

"जगमन–जगमन करै रसोई, इत्थें तूं ऐं।"

यह पंक्ति उनके परिष्कृत प्रेम–भाव की साक्षी है। ऐसे भाव–संसार का सृजन कोई सुलझी हुई लेखनी ही कर सकती है। इसी भाँति, प्रेम–भाव की व्याख्या में रचा गया शेर दृष्टव्य है–

"निर्मल तवी चन्हांऽ दी ऐ तसीर हेजली,
इश्कै दै किस्से उत्थुआं ड्रूरे, मठोई गे।"

अर्थात्– "तवी और चिनाब नदियों की प्रेमासक्त तासीर है। इनमें इश्क की कई दास्तानें अंकुरित होकर पुष्पित–पल्लवित हुईं।

डुबकियाँ ही डुबकियाँ[18]– अब्दुल कादिर 'कुंडरिया' को कविता के सरोवर में उतरे हुए अब कई वर्ष हो चले हैं। रचनात्मकता के स्नान की यह उनकी प्रथम पुस्तक है। कुंडरिया रिवायती किस्म की कविता लिखने में महारत रखते हैं। पुरानी शैली का प्रयोग करते हुए भी वे आधुनिक विषयों को उठाना भूलते नहीं हैं। डोगरी–भाषा पर उनका अधिकार है। ठेठ शब्दावली पर उनकी

पकड़ प्रशंसनीय है। कविता के माध्यम से वे बेरोजगारी की मार झेल रहे युवा वर्ग की पीड़ा के प्रवक्ता बने दिखाई पड़ते हैं।

कुंडरिया भारतीय–संस्कृति के प्रशंसक भी हैं। इस धरती पर विभिन्न धर्मावलंबी प्रेम और सद्भावना से धर्म–निरपेक्षता के सुरों को बुलंद रखे हुए हैं। 'मगरमच्छ' इस संग्रह की श्रेष्ठ व्यंग्यात्मक रचना है। 'बचपन', 'माँ', 'बसंत बहार', 'बरासत', 'ब्हारां', 'झंडा तरंगा' कवि–हृदय को भावों की शाब्दिक अभिव्यक्ति देने वाली अच्छी कविताएँ हैं। कवि ने अधिकांश काव्य–रचनाओं के माध्यम से मानवता को संदेश भी दिया है। 'लालच' शीर्षक कविता की आरंभिक और समाहारिक पंक्तियों का संदेश है–

"लालच न कर हे मानव, संग क्या ले जाएगा?
ऊँचे महल–चौबारे छोड़, कूच यूँ ही कर जाएगा।"

जुगनू[19]– टटैह्ने (अर्थात् जुगनू) नामक इस संग्रह में 450 'कतौता' संग्रहीत हैं। 'कतौता' शैली का यह प्रथम संग्रह है जो डोगरी काव्य–जगत में प्रकाशित हुआ है। जैसे जुगनू टिमटिमा कर रोशनी करते हैं, उसी भाँति इस क्षणिका रूपी रचना के विषय में कहा गया है कि 5–7–7 वर्णक्रम की इस त्रिपदी काव्य–रचना में कुल 19 अक्षरों की संपूर्ण कविता बनती है। 'कतौता' से पूर्व जापानी कविता के प्रभाव से डोगरी में 'हाइकु' शैली में प्रयास किए जाते रहे हैं। इन दोनों शैलियों के अलावा, कुछ प्रतिभाशाली कवि अपनी रुचि का प्रकाशन 'तांका', 'चोका', 'सदोका', 'रेंगा', 'हाइबुन' आदि प्राचीन जापानी काव्य–शैलियों में भी लिखने का प्रयास करते रहे हैं।

तीव्रगामी जीवन के चलते कवियों और पाठक–वर्ग दोनों के पास समय का अभाव है। ऐसे में साहित्य में न केवल बहु–खंडीय उपन्यासों तथा लंबी कहानियों का प्रचलन कम हुआ है अपितु महाकाव्य, खंडकाव्य तथा लंबी कविताओं को पढ़ने की फुर्सत भी कम हुई है। ऐसी दशा में 'हाइकु' तथा 'कातौता' जैसी क्षणिक या लघु आकार की प्राचीन जापानी काव्य–शैलियों की ओर उन्मुखता बढ़ी है।

'कातौता' में मात्र एक ही भाव की झलक दिखाई पड़ती है। इस संग्रह में संकलित तमाम 450 रचनाएँ किन्हीं दृश्यों, भावों, मनोभावों अथवा अनुभवों के लघु आकार में सफलता से प्रतिबिंबित होती हैं। यह डोगरी–भाषा में 'कतौता' शैली का प्रथम प्रयास है। देखना यह है कि क्या अन्य कवि इस शैली का अनुसरण करते हैं। यदि यह शैली जड़ पकड़कर आगे बढ़ती है तो निश्चय ही यह मात्र फैशन–परस्ती न होकर एक सकारात्मक कदम कहलाएगा।

तू ही तू बस[20]– इस शब्द–पद का डोगरी शब्दानुवाद है 'बस तूं गै

तूं ऐं'। यही भाव इस कविता–संग्रह का शीर्षक बनाया गया है। लेखक यशपाल निर्मल की पहचान बाल–साहित्यकार तथा अनुवादक से आगे बढ़कर एक रचनाशील कवि के रूप में भी है। 56 कविताओं के इस संग्रह में हिना महाजन, डॉ. रतन बसोत्रा तथा डॉ. आशु शर्मा के भूमिका आलेख प्रकाशित किए गए हैं। कविताओं का स्वरूप कहीं छंदोबद्धता की परिसीमा का पालन करता है, तो कहीं छंद–मुक्त होकर तेज धारा–प्रवाह को पकड़ लेता है। अंतस् के भावों और बौद्धिक उफानों को कवि ने सफलतापूर्वक शब्दबद्ध किया है। वैसे तो इसमें संकलित तमाम कविताएँ पाठक को विरल अनुभव प्रदान करती हैं। तथापि, 'बस तूं गै तूं' शीर्षक कविता के संग 'जीवन भर', 'में निर्मल आं' आदि कविताएँ इस संग्रह की उपलब्धियों में शुमार की जानी चाहिए।

'रब्ब' शीर्षक कविता वैसे तो सार्वजनिक मूल्यों का परिपालन करने के कारण एक आदर्श कविता बन जाती है किंतु अपने धर्म से इतर मतावलंबियों की धार्मिक–आस्था पर दो टूक कुछ कहने से परहेज करना ही उचित है। हिंदुओं के सांस्कृतिक विश्वास को सर्वत्र लागू करना वस्तु–स्थिति से अनभिज्ञता दर्शित करता है।

बहरहाल, कविता के समाहार में निहित यह भाव प्रशंसनीय है कि मेरा भगवान, अल्लाह, गॉड, वाहे–गुरु और रब सज्जन–पुरुषों के हृदय में रहता है। यही इस कविता का संदेश भी है जो संपूर्ण मानवता के लिए महत्त्व रखता है। 'तपस्या' शीर्षक कविता में कवि का आत्मविश्लेषण इस कविता–संग्रह की एक उपलब्धि है।

गीतों की माला

गीत सुहामे[21]– यह गीत–संग्रह कवि रामपाल डोगरा 'पाली' की तीसरी काव्य–पुस्तक है। इससे पूर्व उनकी कविताओं के दो संग्रह प्रकाश में आ चुके हैं। उनकी प्रथम पुस्तक "गीत पटारू" में कविताओं के साथ–साथ गीत भी संकलित थे। दूसरे संग्रह "मित्ती दी खश्बो" में पर्यावरण तथा धरती से जुड़े विषयों पर सहज–भाव की कविताएँ संग्रहीत थीं।

सुहाने भाव–संसार की बातों को लेकर आया नया काव्य–संग्रह 'सुहामें गीत' 55 गीतों का एक दिलकश संग्रह है। 'पाली' चूँकि डोगराभूमि के लोकजीवन से उभरे कवि हैं इसलिए उनकी रचनाओं में गहराई के साथ–साथ प्रामाणिकता भी झलकती है। उनके कुछेक गीत रेडियो और दूरदर्शन पर प्रसारित हो चुके हैं। इन गीतों को सुप्रसिद्ध गायक–गायिकाओं द्वारा स्वर प्रदान किए गए हैं। ये गीत श्रोता–वर्ग में भी लोकप्रियता पा चुके हैं।

पुस्तक के आरंभ में कवि पाली ने अपने जीवन तथा साहित्य की यात्रा

के विषय में विस्तार से लिखा है। इससे उनके व्यक्तित्व विषयक पर्याप्त जानकारी मिलती है। इस आत्मकथा में कवि के जीवन से संबद्ध अज्ञात पहलू सामने आते हैं। डुग्गर के लोक–जीवन से कवि का गहरा मेल–जोल है, इसी से वह लेखन के विषयों को सँवारता–सुधारता रहा है। अपनी जन्मभूमि डुग्गर के विषय में कवि–अंतस् में भावना है। वह न केवल यहाँ के वासियों की अंतरात्मा को सही ढंग से समझता और उसे गीतों का पहरावा पहनाता है, अपितु उनके वीरभाव की भूरि–भूरि प्रशंसा भी करता है। यहाँ की नारी के रूप और चरित्र की वह बढ़–चढ़कर सराहना करता है। रोमानवाद इन गीतों का मुख्य विषय है। हमें आशा है, भविष्य में इस प्रतिभाशाली कलम से हमें और अधिक बढ़िया गीत मिलेंगे।

गीत–हंस में[22]– इस शीर्षक का अर्थ है कि "मैं गीत रूपी हंस हूँ।" गीतकार निर्मल विनोद ने इस संग्रह में गीत और नवगीत दोनों शैलियों की रचनाएँ संकलित की हैं। 60 रचनाओं को पाँच भागों में विभक्त किया गया है। ये उपवर्ग हैं–

(i) गीतों का मैं राजा– परंपरागत काव्य–बिंबों के प्रयोग से कवि ने अपनी मनः स्थितियों और मनोभावों की सुचारु अभिव्यक्ति प्रदान की है। नव–कविता के प्रतिमानों का कवि ने सफलतापूर्वक प्रयोग किया है।

(ii) संजोगः तेरी अंगुलियाँ छेड़ें तार– इस उपवर्ग में मात्र सात नवगीत और गीत रखे गए हैं। कुछेक गीतों को कविता का स्वरूप देकर उनका रंग–रूप निखारा गया है। पाठक को लगने लगता है मानों पुराने दृश्यों को कवि नये लेंस के माध्यम से दिखा रहा है।

(iii) हमारे भीतर के थूहर– 19 नवगीतों के उपखंड में नये और रोचक प्रयोग किए गए हैं। गीत के स्वरूप को निखारने के लिए कवि ने परंपरागत काव्य–प्रतीकों की नवीन पृष्ठभूमि सृजित की है।

(iv) यादेंः कुछ मीठी कुछ कड़वी– स्मृतियों के झंझावात के मध्य से गुजरते हुए कवि संयोग और वियोग के अहसासों को रोचक शैली में परिभाषित करता है। यह इस पुस्तक का श्रेष्ठ उपखंड है। गीत–नवगीत बेहद सराहनीय हैं।

(v) हाल–हवाल– पाँचवें भाग में 9 नवगीत संकलित हैं। इन्हें पढ़ने पर लगता है कि मानो कवि अंतश्चेतना में मग्न होकर अपने परिवेश को समझने और परिभाषित करने का प्रयास कर रहा है। वर्तमान सामाजिक परिदृश्य को सफलतापूर्वक शब्दबद्ध किया गया है। नवगीत, नव–कविता की परिसीमा का स्पर्श करते दिखाते हैं।

रंग रंगीला भारत देश[23]– डोगरी गीतों के इस संग्रह में देशप्रेम का स्वर प्रमुख है। राष्ट्रप्रेम डोगरी कवियों की विशेष पहचान है। देशप्रेम के गीतों की संख्या बहुतायत होने के कारण ही इस गीत–संग्रह को इसका शीर्षक मिला है। डोगरी साहित्य के पाठकों में ऐसे शौकीन लोगों की संख्या अधिक है जो डोगरी के गीतों के रसिया हैं। इसी कारणवश बहुत से संजीदा पाठक डोगरी को रसीले गीतों की भाषा कहते हैं। संभवतया इसी महत्त्व को पहचानकर गीतकार डॉ. निर्मल विनोद इस दिशा में अग्रसर हुए होंगे किंतु पुस्तक की भूमिका में गीतकार कवि ने गीतों की ओर अपनी उन्मुखता को इन शब्दों में मुखर किया है– "जम्मू संभाग के शिक्षण संस्थानों में विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रमों में देशभक्ति, एकता, पर्यावरण, प्रकृति–प्रेम, संस्कृति तथा पर्व–त्योहारों आदि विषयक डोगरी गीतों की कमी अनुभव की जाती है।"

इस तथ्य से स्पष्ट है कि गीतकार का अभिप्राय इस अभाव की पूर्ति का प्रयास करना भी है। देश–प्रेम की भावोत्तेजक स्वर–लहरियों के अलावा पुस्तक में सांस्कृतिक तथा धार्मिक चेतना के पर्याप्त गीत मौजूद हैं। सामयिक प्रसंगों में सांस्कृतिक प्रतीकों का सफल प्रयोग किया गया दिखता है। रावण रूपी आतंक को रघुपति की हुंकार द्वारा ललकारा जाना ऐसे ही प्रतीक–प्रयोग है। वीर–बहादुरों की पूज्या माता आदि–भवानी की स्तुति भी एक स्तुत्य प्रयोग है। देश की कौमी एकता के दृष्टिगत कवि यहाँ के समस्त क्षेत्रीय योद्धाओं को भारत की आन–बान की सुरक्षा का परमधर्म याद दिलाते हुए कहता है–

"डोगरे, पंजाबी, मरहट्टे, जट्ट, बुंदेले, बंगाली,
जोधे, असमी, राजस्थानी, गुज्जर, गोरखे, गढ़वाली।"

यह संग्रह डोगरी के गीत–साहित्य में एक स्तरीय वृद्धि है।

मनै दे आले[24]– अर्थात् 'मन की आवाजें' नामक यह संग्रह बृजमोहन की आजीवन काव्य–साधना का प्रमाण है। यह कवि गीतकार वर्षों से कविता लिखता आया है। कॉलेज के जमाने से गीत और कविता में रुचि थी किंतु आगे चलकर इस प्रतिभाशाली कवि का रुख संगीत की ओर इस कदर मुड़ गया कि जम्मू में उनकी संगीत–संयोजक के रूप में विशिष्ट पहचान बन गई। इस क्षेत्र में आकंठ डूबने का नतीजा यह हुआ कि गीत और कविताओं के प्रकाशन का कार्य पीछे छूट गया। अंततः 70 वर्षों की पक्वावस्था में उनकी चुनिंदा रचनाओं का संकलन प्रकाशित हो पाया।

वर्तमान समय में बृजमोहन एक प्रख्यात संगीत संयोजक है। देर बाद मुद्रित, प्रकाशित होने के बावजूद यह संग्रह लोकप्रियता के क्षितिज छू पाएगा, इसकी पूरी आशा है।

पुस्तक का आरंभ चार भूमिकाओं से होता है। इन भूमिकाओं के लेखक हैं– ललित मंगोत्रा, डॉ. अरविंदर सिंह अमन, डॉ. अनिल कुमार महाजन, कवि बृजमोहन स्वयं। इन भूमिकाओं में पुस्तक में संग्रहीत गीतों एवं कविताओं के महत्त्व को स्पष्ट किया गया है। यद्यपि पुस्तक के मुखपृष्ठ पर भीतरी सामग्री की कविता के नाम से पहचान दी गई है, तथापि मूल रूप से इसमें सम्मिलित सामग्री को इन वर्गों में रखा गया है– गीत–44; भेंट–1; लोरी–1; बालगीत–2; पर्वगीत–9 तथा 'विश्वविद्यालय जम्मू' तथा 'डोगरी संस्था जम्मू' का एक–एक तराना। इसके अतिरिक्त संग्रह में 17 कविताएँ भिन्न–भिन्न शीर्षकों के अंतर्गत प्रस्तुत की गई हैं।

कौड़ तेरी मेरे ताईं चास[25]– डोगरी गीतों का यह संग्रह कुलदीप किप्पी की प्रकाशित होने वाली दूसरी साहित्यिक कृति है। इससे पूर्व उनकी ग़ज़लों का संग्रह ('कोसा पानी') 2009 ई. में प्रकाशित हो चुका है। प्रस्तुत गीत–संग्रह में 60 गीतों का संकलन किया गया है। वैचारिक दृष्टि से यह गीत नयापन लेकर आया है। गीत कहीं–कहीं बौद्धिकता का आभास देते हैं। इनका स्वरूप और प्रस्तुतिकरण कुछ ऐसा है जैसे कोई मर्यादित व्यक्ति अपने–आप से बातें कर रहा हो। कहीं–कहीं अंतर्द्वंद्व की मनःस्थिति सामने आती है।

गीत–विधा के विषय में गीतकार का कथन है कि– "गीत में मन को झिंझोड़ने की सामर्थ्य होती है जोकि मस्तिष्क पर गहरा प्रभाव डालती है। पाठक के हृदय में अपना स्थान बनाने के लिए गीत की भाषा का कोमल, शिष्ट और लोकानुगत एवं काव्यात्मक होना आवश्यक है।"

कवि वर्तमान समयखंड में अश्लीलत्व की सीमा लांघ रहे उन गीतों का समर्थक नहीं है जिनका प्रयोग धमाचौकड़ी के कार्यक्रमों हेतु किया जाता है और जिनकी वर्तमान समय में बाढ़–सी आई हुई है। कवि मर्यादित शब्दावली में मनोभावों को गीत के माध्यम से प्रस्तुत करने का समर्थन करता है। गीतकार को गीतों की कोमल–कांत विधा की ओर प्रेरित करने में उनकी बालपन की उस वृत्ति ने भूमिका निभाई है जब वे शौकिया तौर पर गीत गाया करते थे।

भूमिका में गीतकार की स्वीकारोक्ति द्रष्टव्य है– "छोटी उम्र से ही मुझे गाने का शौक था। स्कूल के लगभग हर फंक्शन में गाने का जुनून था। मैं गवैया बनना चाहता था। शायद यही शौक आगे चलकर गीत–लेखन में परिवर्तित हुआ हो।" गीतकार अपने लेखन–सामर्थ्य को परिभाषित करने का आकांक्षी भी है।

इन गीतों की परिधि विशाल है। कवि अनेक भावों, विचारों तथा विषयों को अपने गीतों में चित्रात्मक शैली में व्यक्त कर पाया है। अन्य गीतकारों की

भाँति कुलदीप किप्पी ने भी श्रृंगार–रस को गीतों का विषय बनाया है। संयोग ओर वियोग के दोनों पक्षों के गीत इस संग्रह में संग्रहीत हैं।

डोगरी कवियों में यह प्रवृत्ति रही है कि वे डोगरा कौम, डोगरा–संस्कृति तथा डोगरी–भाषा के विषय में अवश्यमेव भावाभिव्यक्ति किया करते हैं। इस परंपरा को इस पुस्तक में भी समुचित ढंग से निभाया गया है। एक उदाहरण प्रस्तुत है–

"पिट्ठी पर तीर निं चलांदे डोगरे,
अनखी जुआंटड़े, खोआंदे डोगरे।"

अर्थात् "डोगरे पीठ के पीछे घात नहीं करते। वे अपनी आन के कारण वीर–योद्धा कहलाते हैं।"

मेरे चेत्ते च[26]– इस गीत–संग्रह में गीतकार सुभान मोहम्मद ने अपनी यादों के भंडार से 118 गीत चुनकर प्रस्तुत किए हैं। इनमें कवि की स्मृतियाँ एवं अनुभव पिरोए गए हैं। गीतकार सुभान मोहम्मद मूल रूप से लोक–गायक के रूप में प्रसिद्ध रहे हैं। युवावस्था में आकाशवाणी तथा दूरदर्शन के जम्मू केंद्रों पर गीत गाया करते थे। गायन की कला ईश्वर प्रदत्त थी। उनके कथनानुसार– "गाने का शौक मुझे बचपन से था। मैं गायक बनना चाहता था। पर बन न पाया। गीत गाने के इस शौक को परिवार में अच्छी निगाह से नहीं देखा जाता था। इसके बावजूद शौकिया तौर पर शादी विवाह और अन्य महफिलों में गाता रहा। रेडियो और टी.वी. पर भी गाने का अवसर मिलने लगा। मंच पर फिल्मी गीत और गज़लें भी गाता रहा। गायन–कला किसी उस्ताद से नहीं सीखी। यह 'गॉड गिफ्ट' (ईश–प्रदत्त) थी।"

आगे चलकर लिखने का शौक पनपा। वर्ष 1981 ई. में 'शीराजा डोगरी' के संपादक ने प्रोत्साहनार्थ उनकी रचनाएँ प्रकाशित कीं तो लेखन का सफर अबाध रूप से चल निकला। उस समय से लेकर वर्ष 2020 ई. तक लिखे गीतों में से कुछ चुनिंदा गीतों को वर्तमान पुस्तक में प्रकाशित किया गया है।

इन गीतों को एक नेक और भावुक कवि के हृदय के उद्गार कहा जाना चाहिए। पुस्तक में कुछेक भजन भी संकलित हैं जो कवि की खुली सोच के प्रतीक हैं। उदाहरणार्थ– तीन गीतों की आरंभिक पंक्तियों का भावानुवाद देखें–

I. "मैं तेरे दर्शन को आया,
जै–जै–जै वैष्णो माता।"

II. "ले–ले बंदे, नाम प्रभु का,
जीवन न बेकार गंवा।"

III. "कलजुगी दुनिया में, जीवन हो गया भारा,

कलजुग के कष्टों से, जाने कब होगा छुटकारा।"

कुछेक गीत श्रृंगार की संयोग और वियोग दशाओं पर भी रचे गए हैं। कुछ गीतों में प्रकृतिचित्रण की छटा सामने आती है। कुछ और गीतों में डोगरा–देस तथा डुग्गर और डोगरा जाति का गुणगान उपलब्ध होता है। कवि ने डोगरा लोगों की वीरता और सद्‌भाव की भी बेहद प्रशंसा की है। कवि का ह्रदय देश–प्रेम से अभिभूत है। एक गीत में भारत के सौंदर्य और देश की आन–बान की प्रशंसा की गई है–

"यह धरती हमें प्राणों से प्यारी है,
जिएं–मरेंगे इसके लिए, यह फर्जदारी है।"

समाहार– डोगरी के प्रतिभाशाली लेखकों में जगदीप दूबे और शिवदेव सिंह सुशील अपने सृजनात्मक प्रयासों से भाषा की साहित्यिक उन्नति से जुटे हुए दिखाई देते हैं। वर्ष 2004 ई. में जगदीप दूबे के दो नाटक क्रमशः 'कनीज' और 'नोटिस' शीर्षकों से प्रकाशित हुए हैं। 'नोटिस' नाटक पर इन्हें श्रेष्ठ नाट्‌य–पांडुलिपि प्रतियोगिता में राज्य की अकादेमी का पुरस्कार 1990 ई. में मिल चुका है। इनके 15 नाटक दूरदर्शन पर खेले जा चुके हैं। इसी भाँति 100 के लगभग 'रेडियो नाटक' भी प्रसारित हो चुके हैं। इसी प्रकाशन वर्ष में दूबे का एक कथा–संग्रह 'दऊं अद्‌दे इक्क पूरा' भी प्रकाशित हुआ। इसमें 14 कहानियाँ संग्रहीत हैं। वर्तमान समयखंड में जगदीप दूबे को डोगरी के श्रेष्ठ कहानीकारों में शुमार किया जाता है। कथानक से वे संदेश देने वाली रोचक कहानियाँ बुनने का सामर्थ्य प्रदर्शित कर चुके हैं।

शिवदेव सुशील समर्पित लेखक के अलावा भाषा–प्रेमी भी हैं।

इस प्रकाशन वर्ष में जम्मू–कश्मीर कल्चरल अकादेमी की साहित्यिक पत्रिका "शीराजा डोगरी" और वार्षिकी "साढ़ा साहित्य" का एक भी अंक प्रकाश में नहीं आ पाया। यह एक चिंतनीय स्थिति है। 'डुग्गर दर्शन' शीर्षक एक त्रैमासिक पत्रिका के चार अंक छपकर पाठकों के पास पहुँचे हैं– इस निजी प्रयास के लिए शिवदेव सिंह सुशील सराहना के पात्र हैं। डोगरी भाषा की सर्वोच्च गैर सरकारी संस्था 'डोगरी संस्था' की पत्रिका 'नमी चेतना' का प्रकाशन भी बंद रहा। इस अरसे में संस्था ने छात्रों के पठनार्थ कुछेक पुस्तकों का पुनर्मुद्रण मात्र किया। बहरहाल, इस सबके बावजूद यह सराहनीय तथ्य है कि इस वर्ष डोगरी में प्रकाशित पुस्तकों की संख्या का रिकार्ड–तोड़ प्रकाशन हुआ है।

संदर्भ सूची।

1. फुल्ल ते कंडे (फुल्ल और कांटे), श्यामलाल खजूरिया, वार्ड नं.–16, शिवागनर कठूआ (ज.क.)

2. बित्ती टोला; (गिल्ली–डंडा) यशपाल निर्मल, सर्वभाषा प्रकाशनः नई दिल्ली।
3. सोच–बिचार (चिंतन), शिवदेव सिंह सुशील
4. जिद्दी चेत्ते (हठीली स्मृतियाँ), ललित मंगोत्रा, हाइब्रो पब्लिकेशंस, 78/11, बाड़ी ब्राह्मणां, जम्मू
5. सुखा दा साह् (सुख का श्वास), शंभुराम प्यासा, हाइब्रो पब्लिकेशंस, 78/11, बाड़ी ब्राह्मणां, जम्मू
6. त्रै डोगरी नाटक (तीन डोगरी नाटक), डॉ. सुधीर महाजन; हाइब्रो पब्लिकेशंस, 78/11 बाड़ी ब्राह्मणां, जम्मू।
7. प्रतीकचंद दे प्रतीक ते अकलमंद लोक (प्रतीकचंद के प्रतीक और अक्लमंद लोग, राजेश्वर सिंह राजू, माया संसार पब्लिकेशंस, सुरक्षा बिहार, टाप पलोह्ड़ा, जम्मू–181121।
8. घरान, चमनलाल खजूरिया, हाइब्रो पब्लिकेशंस, 78/11, बाड़ी ब्राह्मणां, जम्मू
9. दोह्री; इंदरजीत केसर, हाइब्रो पब्लिकेशंस, 78/11, बाड़ी ब्राह्मणां, जम्मू
10. रंगीले ठाकुर, ओम गोस्वामी, हाइब्रो पब्लिकेशंस, 78/11, बाड़ी ब्राह्मणां, जम्मू
11. शतक–त्रय, प्रकाश प्रेमी, प्रकाशक रचनाकार, कला–साहित्य अकादमी, ठंडा पद्धर, उधमपुर (जम्मू–कश्मीर)
12. खरा फकीरी ठाठ, डॉ. निर्मल विनोद, हाइब्रो पब्लिकेशंस, 78/11, बाड़ी ब्राह्मणां, जम्मू–कश्मीर।
13. कनियां सुन्ने दियां (स्वर्ण कण), डॉ. निर्मल विनोद, हाइब्रो पब्लिकेशंस, 78/11, बाड़ी ब्राह्मणां, जम्मू
14. भविक्खी खतोह्ले (भविष्य का औत्सुक्य), ध्यान सिंह, लंगेह् प्रकाशन, बटैह्ड़ा, जम्मू–181206
15. देन रंगले मौसमें दी (रंगीले मौसमों की देन), डॉ. निर्मल विनोद, हाइब्रो पब्लिकेशंस, 78/11, बाड़ी ब्राह्मणां, जम्मू
16. हस्सदे न जल तरंग (हँसते हैं जल–तरंग), डॉ. निर्मल विनोद, हाइब्रो पब्लिकेशंस, 78/11, बाड़ी ब्राह्मणां, जम्मू
17. सं ञ संधूरी दुधली रात (सिंदूरी सांझ और दूधो नहाई रात), डॉ. निर्मल विनोद, हाइब्रो पब्लिकेशंस, 78/11, बाड़ी ब्राह्मणां, जम्मू
18. गोत्ते गै गोत्ते (डुबकियाँ ही डुबकियाँ), अब्दुल कादिर कुंडरिया, कुंडरिया प्रकाशन, डाकखाना–डेरा बाबा बंदा ब्हादर, तहसील–जिला–रियासी, पिन–182301, जम्मू
19. टटैह्ने (जुगनू), यशपाल निर्मल, सर्वभाषा प्रकाशन, नई दिल्ली

20. तूं गै तूं (तूं ही तूं बस), यशपाल निर्मल, सर्वभाषा प्रकाशन, नई दिल्ली
21. गीत सुहामें (सुहावने गीत) रामपाल डोगरा 'पाली', बिमला प्रकाशन, कुंजवानी बाईपास, जम्मू
22. गीत हंस में (मैं गीत रूपी हंस हूँ), डॉ. निर्मल विनोद, हाइब्रो पब्लिकेशंज़, बाड़ी ब्राह्मणां, जम्मू
23. रंग रंगीला भारत देश (बहुरंगी भारत देश), डॉ. निर्मल विनोद, हाइब्रो पब्लिकेशज़, 78/11 बाड़ी ब्राह्मणां, जम्मू
24. मनै दे आले (मन की आवाजें), बृजमोहन, हाइब्रो पब्लिकेशंज़, 78/11, बाड़ी ब्राह्माणां, जम्मू
25. कौड़ तेरी मेरे ताईं चास (तेरी कड़वाहट मेरे लिए मिठास), कुलदीप किप्पी, अलीश पब्लिकेशंस, होड़ कैंप, हीरानगर कठूआ–184148 (जम्मू–कश्मीर)
26. मेरे चेत्तें च (मेरी यादों में), सुभान मोहम्मद, हाइब्रो पब्लिकेशंज़, बाड़ी ब्राह्मणां, जम्मू

❑❑❑

मानसिक बीमारयों से बचने का एक ही उपाय है कि हृदय को घृणा से और मन को भय–चिंता से मुक्त रखा जाए।

– आचार्य श्रीराम शर्मा

तमिल साहित्य

9

डॉ. बी. संतोषी कुमारी

हिंदी सहित कई भाषाओं की जानकार। 'रामकुमार वर्मा का नाट्यरंगः रंग एवं प्रयोग' पुस्तक प्रकाशित। अनेक पुरस्कारों से पुरस्कृत। संप्रति–स्वतंत्र लेखन।

वर्तमान तमिल साहित्य अपनी ऐतिहासिक और सांस्कृतिक धरोहर से प्रभावित होते हुए आधुनिकता और नवोन्मेष की ओर अग्रसर हो चुका है। यह न केवल तकनीकी और सामाजिक बदलावों के साथ एक नई दिशा में चल रहा है बल्कि इसमें नए साहित्यिक रूपों और शैलियों का भी उदय हुआ है। तमिल साहित्य में इक्कीसवीं सदी में खासकर सामाजिक मुद्दों जैसे जातिवाद, महिला अधिकार, पर्यावरणीय संकट, राजनीतिक भ्रष्टाचार और अन्य सामाजिक असमानताओं को प्रमुखता से उठाया गया है। लेखक अब अपने लेखन में न केवल पारंपरिक विषयों बल्कि समकालीन समस्याओं का भी गहन रूप से विश्लेषण करते हैं। इक्कीसवीं सदी में तमिल साहित्य ने अनेक बदलाव देखे हैं और यह विभिन्न सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक कारकों से प्रभावित हुआ है। यहाँ कुछ और पहलुओं पर ध्यान केंद्रित किया गया है।

इंटरनेट और सोशल मीडिया के प्रसार ने तमिल साहित्य को एक नया रूप दिया है। अब तमिल साहित्य केवल किताबों और पत्रिकाओं तक सीमित नहीं रहा। ब्लॉग्स, फेसबुक, ट्विटर और इंस्टाग्राम जैसी डिजिटल प्लेटफॉर्म्स ने नए लेखकों और कविता/कहानी लिखने वालों को अपनी आवाज़ देने का एक नया मौका दिया है। इससे लेखकों के बीच संवाद और विचारों का आदान–प्रदान बढ़ा है। उदाहरणस्वरूप तमिल साहित्य में सोशल मीडिया पर वायरल होने वाली कहानियाँ और कविताएँ युवाओं के बीच लोकप्रिय हो रही हैं।

तमिल साहित्य में राजनीतिक और सामाजिक प्रतिबद्धता की स्पष्ट छाप देखने को मिलती है। यह समय विशेष रूप से तमिलनाडु के सामाजिक और राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में एक परिवर्तन का था जहाँ जातिवाद, लैंगिक असमानता और कास्ट्रेशन जैसे मुद्दों पर लेखकों ने खुले तौर पर लिखा है। लेखकों का ध्यान न केवल

व्यक्तिगत मुद्दों पर बल्कि समग्र सामाजिक सुधार की दिशा में भी था।

इस समय के तमिल साहित्य में आधुनिक काव्य और उपन्यासों का भी प्रमुख योगदान रहा है। समकालीन तमिल कवियों ने अपने कविता–संग्रहों के माध्यम से न केवल अपने समय की सामाजिक और राजनीतिक समस्याओं का चित्रण किया है बल्कि भावनात्मक और मानसिक तनावों को भी गहरे तरीके से व्यक्त किया है। उपन्यासों में जहाँ पारंपरिक शैली का अनुसरण किया जा रहा है, वहीं उसमें आधुनिकतावादी विचारधारा और नए रूपों का भी समावेश हुआ है। तमिल साहित्य में भाषा का उपयोग भी बहुत विविधतापूर्ण हो गया है। जहाँ एक ओर शास्त्रीय तमिल और काव्यशास्त्र की विद्वत्तापूर्ण परंपरा कायम है, वहीं दूसरी ओर भाषा की सरलता, संवादात्मकता और परिपक्वता को भी तवज्जो दी गई है। कई लेखकों ने भाषा को आधुनिक दृष्टिकोण से फिर से परिभाषित किया और यह सुनिश्चित किया कि यह आम पाठकों तक सहजता से पहुँच सके।

हम निम्नलिखित रूप में विभिन्न विधाओं के आधार पर वर्ष 2024 की रचनाओं को देख सकेंगे जिसमें विषयों तथा भाषा का वैविध्य है–

उपन्यास विधा

उनमैयगल, पोईगल, करपनईगल (सच्चाइयाँ, झूठ और कल्पनाएँ) एक प्रसिद्ध तमिल उपन्यास है जिसे हरिशंकर ने लिखा है। यह उपन्यास मानवीय संवेदनाओं, मानसिक उलझनों और समाज की वास्तविकताओं को बहुत गहराई से पेश करता है। इसमें जीवन के विभिन्न पहलुओं जैसे सच्चाई, झूठ और कल्पना को एक साथ जोड़कर कहानी की परतों को उधेड़ा गया है। प्रस्तुत उपन्यास एक ऐसे व्यक्ति की कहानी है जो अपने जीवन की सच्चाई और झूठ के बीच संघर्ष करता है। कहानी में पात्रों की मानसिक स्थिति, उनके आंतरिक द्वंद्व और समाज से जुड़ी उनकी वास्तविकताएँ प्रमुख रूप से सामने आती हैं। कहानी के पात्र अपने व्यक्तिगत संघर्षों, असफलताओं और भ्रमित विचारों से जूझते हुए सच्चाई और झूठ के बीच उलझे होते हैं। इस उपन्यास में कल्पनाओं और वास्तविकता के बीच की सीमाएँ धुँधली हैं और यह दिखाया गया है कि कैसे एक व्यक्ति अपने अस्तित्व को समझने की कोशिश में अपनी वास्तविकता को एक नया रूप देता है। उपन्यास का मुख्य उद्देश्य यह है कि हम जिस दुनिया में जीते हैं, वह केवल हमारी वास्तविकता नहीं है बल्कि उसमें हमारी कल्पनाएँ, धारणाएँ और भावनाएँ भी मिश्रित होती हैं। हर व्यक्ति अपनी स्थिति, अनुभवों और संवेदनाओं के आधार पर दुनिया को अलग तरीके से देखता है। इस उपन्यास में मानव मनोविज्ञान, सामाजिक दबाव और व्यक्तिगत संघर्षों को गहराई से छेड़ा गया है। यह कहानी पाठकों को यह समझाने की कोशिश करती है कि हम जो मानते हैं, वह हमेशा सच नहीं होता और कभी–कभी जो हम सोचते हैं, वह सिर्फ हमारी कल्पना हो सकती

है। उपन्यास में यह दिखाया गया है कि लोग अक्सर अपनी स्थिति और समाज से प्रभावित होकर सच्चाई और झूठ के बीच भटकते हैं। कहानी में यह भी दर्शाया गया है कि हमारे अनुभव और हमारी मानसिक स्थिति हमारी वास्तविकता को कैसे आकार देती हैं। उपन्यास में मानव मानसिकता और उसके संघर्षों का गहराई से चित्रण किया गया है।

गुण कवीयलगन कृत अपलल ओरु नीलम (एक और भूमि) एक प्रसिद्ध तमिल उपन्यास है। इस उपन्यास में ग्राम्य जीवन, कृषि और समाज के विभिन्न पहलुओं को खूबसूरती से दर्शाया गया है। कहानी ग्रामीण समाज की सच्चाई, संघर्ष और प्रेम को बहुत संवेदनशील तरीके से प्रस्तुत करती है। प्रस्तुत उपन्यास एक छोटे से गाँव की पृष्ठभूमि पर आधारित है। उपन्यास में मुख्य रूप से एक किसान परिवार की जीवन शैली, उनके संघर्ष और पारिवारिक रिश्तों को उजागर किया गया है। यह उपन्यास दिखाता है कि कैसे किसान अपने खेतों के साथ गहरा संबंध रखता है और उनके लिए भूमि केवल एक जीविका का साधन नहीं बल्कि जीवन का अभिन्न हिस्सा होती है। उपन्यास में मुख्य पात्र एक किसान है जिसका अपनी भूमि के साथ एक गहरा भावनात्मक संबंध है। यह उपन्यास दिखाता है कि कैसे वह अपने खेतों की देखभाल करता है और खेती की कठिनाइयों का सामना करता है। उसका जीवन भूमि के प्रति अडिग प्रेम और समर्पण से भरा हुआ है। यह उपन्यास किसानों की माँगों, सपनों और संघर्षों को गहराई से दिखाता है। साथ ही यह भी दर्शाता है कि कैसे बाहरी दबावों और सामाजिक परिवर्तन के कारण उनके पारंपरिक जीवन में बदलाव आता हैं। उपन्यास के माध्यम से समाज में बदलाव, आधुनिकता और ग्रामीण जीवन के बीच के अंतर को भी उजागर किया गया है। यह उपन्यास यह बताता है कि कैसे भूमि और कृषि के महत्त्व को लेकर किसान और शहरी समाज के बीच के दृष्टिकोण अलग होते हैं। उपन्यास में भूमि को केवल एक संसाधन नहीं बल्कि एक सांस्कृतिक और भावनात्मक धरोहर के रूप में दर्शाया गया है। यह कहानी किसानों के जीवन के संघर्ष, उनके दर्द और उनके सपनों को बहुत संवेदनशील तरीके से प्रस्तुत करती है। उपन्यास यह भी दर्शाता है कि कैसे आधुनिकता और सामाजिक परिवर्तन किसानों की पारंपरिक जीवनशैली को प्रभावित करते हैं। इसमें पारिवारिक रिश्तों और भूमि के साथ गहरे संबंधों को भी दिखाया गया है। प्रस्तुत उपन्यास की कथा संवेदनशील और गहरी है जो ग्रामीण जीवन की जटिलताओं और संघर्षों को उजागर करती है, साथ ही भूमि और पारंपरिक जीवन के महत्त्व को भी दर्शाती है।

अम्बुलिमामा ऊँजल– यह एक प्रसिद्ध तमिल उपन्यास है जिसे वेलविजी (Velvizhi) ने लिखा है। इस उपन्यास में पारिवारिक रिश्तों, मानव संवेदनाओं और समाज में बदलाव के पहलुओं को एक दिलचस्प और गहरे तरीके से प्रस्तुत किया गया

है। प्रस्तुत उपन्यास की कथा एक वृद्ध महिला ''अम्बुलिमामा'' के जीवन के इर्द–गिर्द घूमती है। अम्बुलिमामा एक छोटे गाँव में रहती है और उपन्यास की शुरुआत में हम उसे एक पारंपरिक और साधारण जीवन जीते हुए पाते हैं। ''ऊँजल'' का अर्थ तमिल में 'झूला' है और यह उपन्यास में एक प्रतीक के रूप में कार्य करता है जो जीवन के उतार–चढ़ाव, सुख और दुःख को दर्शाता है। कहानी में अम्बुलिमामा की वृद्धावस्था, पारिवारिक रिश्तों और समाज में उसकी स्थिति को केंद्रित किया गया है। वह अपने परिवार के साथ एक शांत और परंपरागत जीवन जीती है लेकिन जैसे–जैसे समय बदलता है, वह देखती है कि उसके परिवार और समाज में बहुत बदलाव आ रहे हैं। उसकी बेटियाँ और परिवार के अन्य सदस्य पारंपरिक जीवनशैली से अलग हो रहे हैं और आधुनिकता की ओर बढ़ रहे हैं। उपन्यास में यह दिखाया जाता है कि कैसे वृद्ध लोग समाज के नए बदलावों और तकनीकी विकास के बीच अपनी पहचान बनाए रखते हैं। अम्बुलिमामा के झूले का प्रतीकात्मक अर्थ यह है कि जीवन के झूलते और बदलते हालात के बावजूद उसकी जड़ें और पारंपरिक मूल्य उसे अपने परिवार और समाज के लिए स्थिरता देने में मदद करते हैं।

उपन्यास में यह दिखाया गया है कि वृद्धावस्था में परिवार से जुड़ाव और उनके संघर्षों का सामना करना कितना मुश्किल हो सकता है, खासकर जब परिवार के सदस्य सामाजिक और सांस्कृतिक बदलावों से गुजर रहे हों। उपन्यास यह दर्शाता कि कैसे समाज की बदलती धारा और आधुनिकता वृद्धों के जीवन पर प्रभाव डालती है और कैसे वे अपने मूल्यों और परंपराओं को बनाए रखने की कोशिश करते हैं। 'अम्बुलिमामा ऊँजल' में यह संदेश दिया गया है कि समाज में परंपराओं और आधुनिकता के बीच संतुलन बनाए रखना जरूरी है, और वृद्धों का अनुभव और ज्ञान समाज के लिए अमूल्य होते हैं। उपन्यास जीवन की सरलता और संघर्षों को दर्शाता है। साथ ही यह भी बताता है कि कैसे व्यक्ति कठिनाइयों के बावजूद अपनी जड़ों से जुड़े रहते हुए एक अच्छे जीवन की तलाश करता है।

प्रस्तुत उपन्यास की कथा संवेदनशील है जो समाज के बदलावों, पारिवारिक संबंधों और परंपराओं के संघर्ष को दर्शाती है। यह पाठकों को जीवन के जटिल पहलुओं पर विचार करने के लिए प्रेरित करती है और यह सिखाती है कि पारिवारिक प्रेम और मूल्यों की अहमियत कभी नहीं घटनी चाहिए।

<u>वालकै ओरु इनिया वरम</u> एक प्रसिद्ध तमिल उपन्यास है जिसे तमिलरुवी मणियन ने लिखा है। यह उपन्यास जीवन की उपलब्धियों, संघर्षों और आध्यात्मिकता को बड़े सुंदर तरीके से प्रस्तुत करता है। उपन्यास का शीर्षक 'वालकै ओरु इनिया वरम' का अर्थ है 'जीवन एक मीठा वरदान है'।

प्रस्तुत उपन्यास की कथा एक व्यक्ति के जीवन के उतार–चढ़ाव, संघर्ष और

आत्मनिर्भरता की यात्रा को दर्शाती है। यह उपन्यास जीवन के सरल और जटिल पहलुओं को बहुत ही गहरे तरीके से सामने लाता है। कहानी में मुख्य पात्र एक सामान्य व्यक्ति है जो अपने सपनों को पूरा करने के लिए संघर्ष करता है और साथ ही वह यह समझता है कि जीवन का असली मतलब क्या है। कहानी का मुख्य विषय यह है कि जीवन को एक वरदान के रूप में देखना चाहिए, चाहे परिस्थितियाँ कैसी भी हों। जीवन में सफलता और असफलता दोनों ही पहलुओं का सामना करते हुए व्यक्ति को हमेशा सकारात्मक दृष्टिकोण बनाए रखना चाहिए। उपन्यास में यह संदेश दिया गया है कि जीवन के कठिन समय में भी हमें अपने भीतर की ताकत और उम्मीद को बनाए रखना चाहिए क्योंकि यही जीवन का असली वरदान है। कहानी में पात्र अपने संघर्षों के बीच यह समझते हैं कि आध्यात्मिकता, प्रेम और धैर्य जीवन के सबसे महत्त्वपूर्ण तत्व हैं। यह उपन्यास पाठकों को यह सिखाता है कि सच्ची खुशी उन चीजों में है जो हमें भीतर से संतुष्टि और शांति प्रदान करती हैं, न कि बाहरी सफलता में।

उपन्यास जीवन के संघर्षों और सफलता की जटिलताओं को समझाने का प्रयास करता है और यह बताता है कि हमें जीवन के हर क्षण को एक वरदान के रूप में देखना चाहिए। इसमें पात्रों के माध्यम से यह सिखाया गया है कि आध्यात्मिक दृष्टिकोण से जीवन को देखना और धैर्य रखना बहुत महत्त्वपूर्ण है। जीवन में कई बार हमें चीजें जल्दी नहीं मिलतीं लेकिन धैर्य और आत्मविश्वास से हम अपने लक्ष्य को पा सकते हैं। यह उपन्यास इस बात को भी उजागर करता है कि सच्ची खुशी और संतुष्टि बाहरी चीजों से नहीं बल्कि हमारे भीतर की शांति और प्रेम से आती है। हमें जीवन को सरलता से समझना चाहिए और हर पल का आनंद लेना चाहिए। यह उपन्यास यह भी दर्शाता है कि जीवन में प्रेम का क्या महत्त्व है और यह हमें हमारी आत्मा को शुद्ध करने और जीवन को पूरी तरह से जीने के लिए प्रेरित करता है।

'वालकै ओरु इनिय वरम' एक गहरी और प्रेरणादायक कहानी है जो जीवन के असली मूल्य, संघर्ष, आध्यात्मिकता और संतोष को समझाती है। यह पाठकों को यह सिखाती है कि चाहे जीवन में कठिनाइयाँ हों, हमेशा सकारात्मक दृष्टिकोण और आत्मविश्वास बनाए रखना चाहिए क्योंकि जीवन वास्तव में एक मीठा वरदान है।

'उलगै वीलई केल' एक प्रसिद्ध तमिल उपन्यास है जिसे राजेश कुमार ने लिखा है। यह उपन्यास समाज, पारिवारिक रिश्तों और मानव मनोविज्ञान की गहरी समझ को प्रस्तुत करता है। 'उलगै वीलई केल' का अर्थ है ''दुनिया का मूल्य पूछो''।

'उलगै वीलई केल' की कहानी एक ऐसे व्यक्ति के जीवन के इर्द–गिर्द घूमती है जो जीवन के असली अर्थ और दुनिया के मूल्य को समझने की कोशिश करता है। मुख्य पात्र अपने जीवन में विभिन्न संघर्षों, उलझनों और भ्रमों का सामना करता है और

यहीं उसकी यात्रा की शुरुआत होती है। उपन्यास में यह दिखाया गया है कि कैसे व्यक्ति अपने जीवन के फैसले लेने में कठिनाइयों का सामना करता है और वह किस प्रकार अपनी पहचान और अपने अस्तित्त्व को समझने के लिए कोशिश करता है। उपन्यास में मुख्य पात्र की यात्रा एक आध्यात्मिक, मानविक और सामाजिक दृष्टिकोण से होती है। वह बाहरी दुनिया के आकर्षणों और सामाजिक अपेक्षाओं से जूझते हुए अंत में यह समझता है कि दुनिया की असली कीमत क्या है। क्या केवल भौतिक वस्तुएँ ही हमारे जीवन का उद्देश्य हैं या क्या कुछ और भी है जो हमारी सच्ची पहचान और खुशी को परिभाषित करता है? उपन्यास का केंद्रीय विषय यह है कि हर व्यक्ति को अपनी वास्तविकता और अपने जीवन के उद्देश्य को समझने के लिए समय देना चाहिए। समाज में आए बदलाव, रिश्तों की जटिलताएँ और व्यक्तिगत संघर्षों को समझते हुए कहानी यह सिखाती है कि जीवन का असली मूल्य बाहरी चीजों में नहीं बल्कि आत्मा की शांति और संतुष्टि में है।

उपन्यास का मुख्य संदेश यह है कि किसी भी चीज का मूल्य केवल उसके भौतिक पहलू से नहीं आंका जा सकता। असली मूल्य तब समझ आता है जब हम जीवन के गहरे अर्थ और अपने अस्तित्व को समझने की कोशिश करते हैं। यह उपन्यास इस बारे में भी है कि व्यक्ति को अपनी आंतरिक शक्ति और उद्देश्य को पहचानने के लिए आध्यात्मिक मार्ग की तलाश करनी चाहिए जो उसे सच्ची शांति और संतोष दे सकता है। कहानी में सामाजिक दबावों और व्यक्तिगत संघर्षों को भी बहुत गहरे तरीके से प्रस्तुत किया गया है। इसमें यह दिखाया गया है कि समाज की अपेक्षाओं से जूझते हुए भी हमें अपने आत्मसम्मान और उद्देश्य को बनाए रखना चाहिए। उपन्यास यह भी दर्शाता है कि कैसे रिश्ते और मानवीय भावनाएँ जीवन में सबसे महत्त्वपूर्ण होती हैं। इन रिश्तों में संतुलन बनाए रखना जरूरी है।

'उलगै वीलई केल' गहराई से सोचने पर मजबूर करने वाली कहानी है जो पाठकों को अपने जीवन और समाज को नए दृष्टिकोण से देखने के लिए प्रेरित करती है। यह उपन्यास जीवन के सच्चे मूल्य, मानव रिश्तों और आध्यात्मिक खोज के बारे में मार्गदर्शन करता है।

'आने मलई' एक प्रसिद्ध तमिल उपन्यास है जिसके लेखक प्रिशांत वी है। यह उपन्यास एक अनूठी और गहरी कहानी प्रस्तुत करता है जो मानव संघर्षों, समाज और प्राकृतिक परिवेश से जुड़ी हुई है। 'आने मलई' का अर्थ हैं ''हाथी की पहाड़ी'' (इसी नाम से पहाड़ी भी प्रसिद्ध है)। यह एक प्रतीकात्मक संदर्भ है जो कथा में प्रमुख स्थान रखता है। 'आने मलई' की कहानी एक छोटे गाँव के संदर्भ में बुनी गई है जहाँ मुख्य पात्र के जीवन में कई मोड़ आते हैं। कहानी एक युवा व्यक्ति की है जो समाज की सच्चाइयों, पारिवारिक संघर्षों और व्यक्तिगत चुनावों के बीच जीवन जीने की कोशिश

करता है। कहानी में प्रकृति का भी महत्त्वपूर्ण स्थान है। आने मलई (हाथी की पहाड़ी) को एक प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया गया है जो मुख्य पात्र के जीवन की कठिनाइयों और संघर्षों को दर्शाता है। पहाड़ी का प्रतीक यह दर्शाता है कि जीवन में आने वाली चुनौतियाँ कभी–कभी बहुत बड़ी और अप्रत्याशित होती हैं; जैसे एक विशाल पहाड़ी, लेकिन किसी भी मुश्किल को पार करना संभव है, अगर व्यक्ति उसमें अपने विश्वास और साहस को बनाए रखे। कहानी में मानव रिश्तों, समाज का दबाव और आध्यात्मिक संघर्ष को गहराई से पेश किया गया है। पात्र अपनी आकांक्षाओं और अपने जीवन के उद्देश्य को समझने की कोशिश करता है। साथ ही वह बाहरी दुनिया और समाज के साथ तालमेल बनाने की कोशिश करता है। उपन्यास में यह दिखाया गया है कि किस प्रकार एक व्यक्ति अपनी स्थिति, जीवन और आत्मा को समझने की प्रक्रिया में यात्रा करता है।

समाज के दबाव और व्यक्तिगत संघर्ष के बीच संतुलन बनाए रखने की कठिनाई उपन्यास का मुख्य विषय है। वह यह सिखाता है कि व्यक्ति को समाज से मिल रही अपेक्षाओं से बाहर निकलकर अपने अस्तित्व को पहचानने की आवश्यकता होती है। यह पहाड़ी केवल एक भौतिक रूप में नहीं है बल्कि यह जीवन के मनोवैज्ञानिक और आध्यात्मिक संघर्षों का प्रतीक भी है। कहानी में मुख्य पात्र अपनी आंतरिक यात्रा और आत्मविकास की ओर बढ़ता है। यह उपन्यास उन जीवन–शिक्षाओं को व्यक्त करता है जो हमें अपने जीवन में खुशी, संतुलन और शांति पाने के लिए जरूरी होती हैं।

'अरवल्ली' उपन्यास के लेखक हैं– जे जयपांडियन। 'अरवल्ली' उपन्यास का कथानक तमिलनाडु के एक छोटे से गाँव से संबंधित है जहाँ परंपराओं और संस्कृति का विशेष महत्त्व है। उपन्यास की नायिका अरवल्ली एक युवा लड़की है जो अपने परिवार और समाज के दबाव में जीवन जीती है। वह अपने सपनों और आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए संघर्ष करती है लेकिन उसके इर्द–गिर्द के लोगों की अपेक्षाएँ और परंपराएँ उसे रोकती हैं। एक दिन अरवल्ली को एक अनहोनी का सामना करना पड़ता है जो उसके जीवन को पूरी तरह से बदल देता है। वह अपने परिवार और समाज से अलग होकर एक नए जीवन की शुरुआत करने का फैसला करती है। अरवल्ली की यात्रा में वह कई चुनौतियों का सामना करती है लेकिन वह अपने सपनों को पूरा करने के लिए दृढ़ रहती है। वह अपने आसपास के लोगों से सीखती है और अपने जीवन को नए सिरे से बुनती है। इस उपन्यास के मुख्य बिंदु हैं– तमिलनाडु की संस्कृति और परंपराओं का वर्णन, महिला सशक्तीकरण, समाज में परिवर्तन की आवश्यकता का प्रदर्शन।

'कडली' उपन्यास के लेखक हैं– ए. मुथुलिंगम। 'कडली' उपन्यास का कथानक तमिलनाडु के एक छोटे से गाँव पर आधारित है जहाँ परंपराओं और संस्कृति का विशेष

महत्त्व है। यह कहानी एक युवा लड़के कडली की जिंदगी के संघर्षों और सफलताओं को दर्शाती है। कडली एक गरीब परिवार से ताल्लुक रखता है लेकिन वह अपने सपनों को पूरा करने के लिए दृढ़ है। वह अपने गाँव में एक छोटे से कारखाने में काम करता है लेकिन वह अपने जीवन को बेहतर बनाने के लिए पढ़ाई करना चाहता है। कडली को अपने परिवार और समाज से कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है लेकिन वह हार नहीं मानता। वह अपने सपनों को पूरा करने के लिए संघर्ष करता है और अंत में सफलता प्राप्त करता है। उपन्यास में मुख्य रूप से तमिलनाडु की संस्कृति और परंपराओं का वर्णन, गरीबी और संघर्ष की कहानी, शिक्षा के महत्त्व का प्रदर्शन किया गया है। 'कडली' उपन्यास एक प्रेरणादायक कहानी है जो गरीबी और संघर्ष के बावजूद सफलता प्राप्त करने की संभावना को दर्शाती है।

'ओरु नाधि ओरु पायनम' के लेखक हैं एस. रामकृष्णन। ओरु नाधि ओरु पायनम उपन्यास में भी तमिलनाडु की ग्रामीण परंपराओं और संस्कृति का महत्त्व दर्शाया गया है। यह कहानी एक युवा लड़के राहुल की जिंदगी के संघर्षों और सफलताओं को दर्शाती है। राहुल एक गरीब परिवार से ताल्लुक रखता है लेकिन वह अपने सपनों को पूरा करने के लिए दृढ़ है। वह अपने गाँव में एक छोटे से कारखाने में काम करता है लेकिन वह अपने जीवन को बेहतर बनाने के लिए पढ़ाई करना चाहता है। राहुल को अपने परिवार और समाज से कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है लेकिन वह हार नहीं मानता। वह अपने सपनों को पूरा करने के लिए संघर्ष करता है और अंत में सफलता प्राप्त करता है। उपन्यास का केंद्र तमिलनाडु की संस्कृति और परंपराओं का वर्णन, गरीबी और संघर्ष की कहानी, शिक्षा के महत्त्व का प्रदर्शन इत्यादि है।

'कथापुरुष' के लेखक हैं– आर. जयपाल। यह उपन्यास समाज, मानव मनोविज्ञान और पारिवारिक संघर्षों पर आधारित है। कथापुरुष का अर्थ होता है ''कहानी का नायक''। इस उपन्यास में यह नाम मुख्य पात्र को संदर्भित करता है जो समाज और अपने व्यक्तिगत जीवन के संघर्षों से जूझता है। 'कथापुरुष' की कहानी एक व्यक्ति की यात्रा को दर्शाती है जो अपने आंतरिक संघर्षों, समाज की अपेक्षाओं, और पारिवारिक रिश्तों के बीच संतुलन बनाने की कोशिश करता है। यह उपन्यास एक व्यक्ति के जीवन में विभिन्न बदलावों और परिपक्वता की प्रक्रिया को प्रस्तुत करता है जिसमें वह खुद को समझने और समाज में अपनी जगह बनाने की कोशिश करता है। कहानी में मुख्य पात्र का जीवन कई कठिनाइयों और संघर्षों से भरपूर है। वह अपने आध्यात्मिक संघर्ष और आत्मविकास की ओर बढ़ता है। बाहरी दुनिया से उसे लगातार दबाव और विरोध का सामना करना पड़ता है। उपन्यास में समाज की सामाजिक असमानताओं, पारिवारिक रिश्तों और व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर विचार किया

गया है। इसमें यह दिखाया गया है कि कैसे समाज में व्यक्ति अपनी स्वतंत्रता और उद्देश्य को खोजता है। कहानी में यह भी दर्शाया गया है कि आध्यात्मिकता और आत्मज्ञान किस तरह से किसी व्यक्ति के जीवन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उपन्यास में कथापुरुष अपनी पहचान और अस्तित्व के बारे में गहरे विचारों और आत्ममंथन से गुजरता है और अंततः वह अपने जीवन के उद्देश्य को पहचानने में सफल होता है। उपन्यास का एक बड़ा हिस्सा मुख्य पात्र के आध्यात्मिक और मानसिक संघर्ष पर आधारित है। वह अपनी अस्मिता और अपने जीवन के उद्देश्य को खोजने की कोशिश करता है। इसमें उपन्यास में यह दिखाया गया है कि कैसे समाज और परिवार के दबाव व्यक्ति को अपनी स्वाभाविक इच्छाओं और जीवन के लक्ष्यों के बीच संतुलन बनाने की चुनौती देते हैं। ''कथापुरुष'' में स्वतंत्रता, आत्मनिर्भरता और व्यक्तिगत पहचान के महत्त्व को उजागर किया गया है। यह दिखाया गया है कि कैसे व्यक्ति समाज के नियमों से मुक्त होकर अपनी वास्तविकता को समझने की कोशिश करता है। कहानी में आध्यात्मिकता और आत्मज्ञान का अनुसरण करते हुए मुख्य पात्र यह समझता है कि सच्चा संतोष और शांति तब ही मिल सकती है जब वह अपने अंदर के संघर्षों और भ्रमों को पार कर लेता है।

'कथापुरुष' सोच–समझकर लिखी गई एक गहरी कहानी है जो मानव संघर्षों, आध्यात्मिक यात्रा और पारिवारिक संबंधों को बड़े प्रभावशाली तरीके से प्रस्तुत करती है। यह उपन्यास पाठकों को यह सिखाता है कि जीवन में चुनौतियाँ और संघर्ष स्वाभाविक हैं लेकिन सही दिशा और आत्मविश्वास से हम किसी भी समस्या का समाधान खोज सकते हैं।

'कथेययर' एक प्रसिद्ध तमिल उपन्यास है जिसे राजेश्वरी ने लिखा है। यह उपन्यास मानव जीवन, समाज के मुद्दे और मनुष्य के भीतर के संघर्षों को लेकर गहराई से लिखा गया है। उपन्यास में एक ऐसे व्यक्ति की यात्रा को दर्शाया गया है जो अपने जीवन के अर्थ को समझने की कोशिश करता है साथ ही वह समाज और अपने आसपास की दुनिया में संतुलन बनाने की कोशिश करता है। 'कथेययर' की कहानी मुख्य रूप से कथाकार (यानि कथेययर) के जीवन के इर्द–गिर्द घूमती है जो एक युवा और संवेदनशील व्यक्ति है। वह अपनी दुनिया, समाज और परिवार के भीतर होने वाली समस्याओं और संघर्षों से जूझ रहा है। उपन्यास में यह दिखाया गया है कि कैसे एक व्यक्ति अपने जीवन के विभिन्न पहलुओं को समझने की कोशिश करता है जिसमें उसकी आध्यात्मिकता, समाज के दबाव और पारिवारिक समस्याएँ शामिल होती हैं। कहानी का एक प्रमुख हिस्सा उस समय के सामाजिक परिवेश और उन चुनौतियों पर आधारित है जो एक व्यक्ति को अपने जीवन के दौरान झेलनी पड़ती हैं। कथेययर का जीवन अनेक संघर्षों और गलतफहमियों से भरपूर है जो उसे जीवन के

सच्चे उद्देश्य और आत्मा की वास्तविकता को समझने में मदद करते हैं। उपन्यास में यह दिखाया गया है कि कैसे मुख्य पात्र समाज के दबावों और अपनी आंतरिक इच्छाओं के बीच संतुलन बनाए रखता है। साथ ही कथेयर यह समझने की कोशिश करता है कि समाज में उसे जो कुछ भी सौंपा गया है, उसका उद्देश्य क्या है और वह अपने जीवन में कैसे खुश रह सकता है। उपन्यास में यह दिखाया गया है कि कैसे समाज और परिवार के दबावों का सामना करते हुए कथेयर अपनी राह तय करता है। उसकी यात्रा आध्यात्मिक और मानविक संघर्षों से भरी हुई है। उपन्यास में आत्मविकास और आध्यात्मिक खोज को प्रमुख रूप से दिखाया गया है। कथेयर के लिए जीवन के वास्तविक उद्देश्य को समझने के लिए एक गहरे आत्ममंथन और आंतरिक संघर्ष की आवश्यकता है। कथेयर के जीवन में रिश्तों का भी बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान है। उपन्यास यह दर्शाता है कि रिश्तों में विश्वास, प्यार और समझ का होना कितना आवश्यक है, खासकर जब एक व्यक्ति समाज की चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों से जूझ रहा होता है। उपन्यास इस बात पर भी प्रकाश डालता है कि स्वतंत्रता और संतुलन की खोज एक व्यक्ति के जीवन के लिए कितनी महत्त्वपूर्ण है। मुख्य पात्र अपने व्यक्तिगत संघर्षों से सीखता है कि जीवन में सफलता और संतोष पाने के लिए संतुलन बनाए रखना कितना जरूरी है।

'कथेयर' एक संवेदनशील और गहरी कहानी है जो मानव संघर्ष, समाज में बदलाव और आध्यात्मिक यात्रा के विषय में विचार करती है। यह उपन्यास पाठकों को यह सिखाता है कि जीवन के सभी उतार–चढ़ाव के बीच हमें अपने भीतर की शक्ति को पहचानना चाहिए और समाज की अपेक्षाओं से बाहर जाकर अपने असली उद्देश्य को समझने की कोशिश करनी चाहिए।

कविता विधा

''अन्बिन पुष्प'' एक लोकप्रिय बाल कविता है जिसे विशेष रूप से बच्चों के लिए लिखा गया है। यह कविता भगवान के प्रति प्रेम और भक्ति को सरल और सुंदर तरीके से प्रस्तुत करती है। कविता का मुख्य संदेश है कि भगवान के प्रति सच्ची भक्ति बाहरी पूजा–अर्चना से नहीं बल्कि दिल से की जाती है। कवि का कहना है कि अगर दिल में सच्चा प्रेम और भक्ति हो तो वही प्रेम भगवान को सबसे प्रिय है। कविता में यह बताया जाता है कि भगवान के प्रति भक्ति को किसी बड़े या महँगे उपहार के रूप में नहीं बल्कि एक प्रेमपूर्ण और निष्कलंक हृदय के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। कविता में फूल का उदाहरण दिया गया है जिसे हम भगवान को अर्पित करते हैं। यहाँ पर ''अन्बिन पुष्पम्'' (प्रेम का फूल) का प्रतीकात्मक रूप से प्रयोग किया गया है। यह फूल भगवान के प्रति भक्त के दिल का प्रतीक होता है जो कि अपने प्रेम और श्रद्धा से भरा हुआ होता है। कविता बच्चों को यह सिखाती है कि अगर हम सच्चे दिल से

भगवान से प्रेम करते हैं और उन्हें अपने दिल का पुष्प अर्पित करते हैं तो यही सबसे बड़ी भक्ति है। यह कविता सरल भाषा में भक्ति के गहरे अर्थ को समझाने का प्रयास करती है ताकि बच्चे आसानी से इसे समझ सकें।

'तामराई' कविता–संग्रह के कवि हैं राजगोपालन। 'तामराई' कविता–संग्रह में कवि ने तमिलनाडु की संस्कृति, प्रकृति और जीवन के विभिन्न पहलुओं को दर्शाया है। कविताओं के मुख्य विषय प्रकृति की सुंदरता, जीवन की चुनौतियाँ, प्रेम और संबंध, सामाजिक न्याय, आत्मखोज हैं। 'तमाराई' (तितली), 'मल्लिगाई' (जूही), 'कडलूरम' (समुद्र), 'नीलम' (नीला आकाश), 'उयिरे' (जीवन) आदि इस कविता–संग्रह की प्रमुख कविताएँ हैं। तमिलनाडु की संस्कृति और प्रकृति का वर्णन, जीवन के विभिन्न पहलुओं का चित्रण, सुंदर और अर्थपूर्ण भाषा, कविताओं में गहराई और भावनाएँ संग्रह के मुख्य विषय है।

'वनक्कम' कविता–संग्रह के कवि हैं– के. राघवन। 'वनक्कम' कविता–संग्रह में कवि ने तमिलनाडु की संस्कृति, प्रकृति और जीवन के विभिन्न पहलुओं को दर्शाया है। कविता का मुख्य विषय हैं– प्रकृति की सुंदरता, जीवन की चुनौतियाँ, प्रेम और संबंध, सामाजिक न्याय, आत्म–खोज। इस कविता–संग्रह की प्रमुख कविताएँ हैं– 'वनक्कम' (नमस्कार), ''तमिल थाय वाज्ह्थु' (तमिल माता की पूजा), ''कडलूरम'' (समुद्र), ''नीलम'' (नीला आकाश), 'उयिरे' (जीवन)।

'काव्यभारती' कविता–संग्रह के कवि हैं– एस. रमेश। काव्यभारती कविता–संग्रह में कवि ने जीवन के विभिन्न पहलुओं को दर्शाया है। इस कविता–संग्रह के मुख्य विषय हैं– प्रेम और संबंध, सामाजिक न्याय, आत्मखोज, प्रकृति की सुंदरता, जीवन की चुनौतियाँ। इस कविता–संग्रह की प्रमुख कविताएँ हैं– प्रेम की धुन, संबंधों की गहराई, सामाजिक न्याय की पुकार, आत्म–खोज की यात्रा, प्रकृति की सुंदरता।

पूवोम कविता–संग्रह के कवि हैं– जी. देवदासन। कविता–संग्रह में तमिलनाडु की संस्कृति, प्रकृति और जीवन के विभिन्न पहलुओं को दर्शाया गया है। इस कविता–संग्रह की कुछ प्रमुख कविताएँ हैं– पूवोम (फूल) तमिल थाय वाज्थु (तमिल माता की पूजा), कडलूरम (समुद्र), नीलम (नीला आकाश), उयिरे (जीवन)।

'नीलम' कविता के कवि हैं ए. श्रीनिवासन। इस कविता–संग्रह में कवि ने जीवन के विभिन्न पहलुओं को दर्शाया है। कविता–संग्रह की कुछ प्रमुख कविताएँ हैं– नीलम (नीला आकाश), प्रेम की धुन, संबंधों की गहराई, सामाजिक न्याय की पुकार, आत्म–खोज की यात्रा।

लघुकथा विधा

'आतिकुडिमक्कलुम आल्कलुम' एक प्रसिद्ध लघुकथा है जिसे धर्मराज ने लिखा है। यह कहानी समाज के विभिन्न वर्गों के जीवन को दर्शाती है और सामाजिक

भेदभाव, जीवनशैली और नैतिकता के पहलुओं को उजागर करती है। इस लघुकथा में दो प्रमुख पात्र हैं 'आतिकुडि' और ''आल्कल''। आतिकुडि (ग्रामवासी) और आल्कल (शहरी लोग) के बीच एक अंतर है जो उनकी जीवनशैली, संस्कृतियों और दृष्टिकोणों में स्पष्ट रूप से दिखता है। यह कहानी उन दोनों के बीच के अंतर और समाज में हर वर्ग की स्थिति को उजागर करती है। कहानी में यह दिखाया गया है कि कैसे आतिकुडि लोग अपनी परंपराओं, संस्कृति और सरल जीवन को महत्त्व देते हैं जबकि आल्कल लोग शहरी जीवन की आधुनिकता और सुख–सुविधाओं को ज्यादा पसंद करते हैं। हालाँकि दोनों वर्गों के बीच भिन्नताएँ हैं लेकिन कहानी का मुख्य उद्देश्य यह बताना है कि हर वर्ग का जीवन एक अलग तरह का संघर्ष होता है और दोनों के संघर्षों का सम्मान किया जाना चाहिए। इस लघुकथा में नैतिकता और सहानुभूति का संदेश दिया गया है। यह दर्शाती है कि चाहे कोई शहरी हो या ग्रामीण, हर व्यक्ति का जीवन किसी न किसी तरीके से चुनौतीपूर्ण है। कहानी का संदेश यह है कि समाज को इन विभिन्न वर्गों के संघर्षों को समझना चाहिए और एक दूसरे के दृष्टिकोण का सम्मान करना चाहिए। 'आतिकुडिमक्कलुम आल्कलुम' एक सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से गहरी लघुकथा है जो समाज के विविध पहलुओं और जीवनशैली के बीच संतुलन और समझ की आवश्यकता को व्यक्त करती है।

'इवलवावू दा निंग' एक प्रसिद्ध तमिल लघुकथा है जिसे राजेश कुमार ने लिखा है। यह कहानी मानव रिश्तों, संघर्ष और सामाजिक जीवन के बारे में है जिसमें लेखक ने समाज के जटिल पहलुओं को बहुत ही सरल और प्रभावशाली तरीके से प्रस्तुत किया है। 'इवलवावू दा निंग' की कहानी एक आम व्यक्ति के जीवन के संघर्षों और उसकी जीवनशैली पर आधारित है। कहानी का नाम 'इवलवावू दा निंग' का अर्थ है ''इतने ही तो हो तुम लोग'' और इसका संदर्भ कहानी के उस हिस्से से जुड़ा है जब मुख्य पात्र समाज और अपने परिवार से जुड़े कुछ फैसले करता है। यह वाक्य समाज में आमतौर पर लोगों द्वारा की गई अपेक्षाओं और दबावों को लेकर एक तरह का असंतोष और विरोध दर्शाता है। कहानी में एक व्यक्ति या परिवार की स्थिति को दिखाया गया है जो अपनी सामान्य जीवनशैली को लेकर समाज के दबाव और उम्मीदों के बीच संघर्ष कर रहा है। उपन्यास में यह प्रश्न उठता है कि क्या असल में हमें समाज की अपेक्षाओं के अनुसार अपने जीवन को जीना चाहिए या क्या हमें अपने व्यक्तिगत संघर्षों और संतुष्टि को प्राथमिकता देनी चाहिए। कहानी में नायक अपने जीवन के पहलुओं से जूझते हुए यह समझता है कि समाज की आदर्श छवि को अपनाने की कोशिश में वह अपनी वास्तविकता और खुशी खो रहा है। वह खुद को समाज की अपेक्षाओं से मुक्त कर अपने असली अस्तित्व को खोजने की कोशिश करता है।

उपन्यास समाज की अपेक्षाओं और व्यक्तित्व के संघर्ष को दर्शाता है जिसमें मुख्य पात्र को अपनी व्यक्तिगत इच्छाओं और सामाजिक दबावों के बीच संतुलन बनाने की कठिनाई का सामना करना पड़ता है। यह कहानी यह दिखाती है कि एक व्यक्ति को समाज में स्वीकार्यता प्राप्त करने के लिए अपने आत्मसम्मान और वास्तविकता से समझौता करना नहीं चाहिए। वास्तविक खुशी और संतोष तभी मिलता है जब हम अपनी इच्छाओं और आंतरिक शांति के साथ तालमेल बिठाते हैं। कहानी में यह भी दिखाया गया है कि रिश्ते और पारिवारिक जीवन में समझौते और संघर्ष होते हैं और कैसे व्यक्ति अपने परिवार और समाज से जुड़ी जिम्मेदारियों को निभाते हुए व्यक्तिगत निर्णय लेता है।

'इवलवावू दा निंग' एक ऐसी कहानी है जो मानव संघर्षों, समाज के दबावों और व्यक्तिगत आत्मनिर्भरता की गहरी समझ को उजागर करती है। यह पाठकों को यह सिखाती है कि सच्ची खुशी और संतुष्टि अपने अस्तित्व को पहचानने और समाज से बाहर निकलकर अपने मार्ग पर चलने में है।

❑❑❑

उठो धरा के अमर सपूतों, पुनः नया निर्माण करो।
जन–जन के जीवन में फिर से, नई स्फूर्ति नव प्राण भरो।
नया प्रात है, नई बात है, नई किरण है, ज्योति नई।
नई उमंगें, नई तरंगें, नई आस है, साँस नई।
युग–युग के मुरझे सुमनों में, नई–नई मुस्कान भरो।

– द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी

10

तेलुगु साहित्य

डॉ. गुर्रमकोंडा नीरजा

पत्र–पत्रिकाओं में कई रचनाएँ प्रकाशित। सह–संपादक, 'स्रवंति' पत्रिका। संप्रति–एसोसिएट प्रोफेसर, उच्च शिक्षा और शोध संस्थान, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, चैन्नई।

तेलुगु भाषा के साहित्य का एक समृद्ध इतिहास रहा है। हमेशा की तरह वर्ष 2024 में भी तेलुगु साहित्यकारों ने विविध विधाओं में साहित्य सृजन किया है।

तेलुगु साहित्यकार निरंतर अपनी रचनाओं के माध्यम से साहित्य के क्षेत्र को समृद्ध करते रहे हैं। उनकी सक्रियता के लिए उन्हें विशिष्ट सम्मानों से नवाजा गया है। 2024 में अनेक साहित्यिक विधाओं में पुस्तकें सामने आईं हैं। इस क्रम में कविता, कहानी, उपन्यास, निबंध, जीवनी, आत्मकथा के साथ–साथ पत्रकारिता, फिल्म, बाल साहित्य, विमर्शात्मक साहित्य और अनूदित साहित्य पाठकों के समक्ष उपस्थित हुआ। यहाँ वर्ष 2024 में प्रकाशित सभी पुस्तकों पर विस्तृत चर्चा तो संभव नहीं है। अतः कुछ प्रमुख पुस्तकों का परिचय मात्र दिया जा रहा है।

तेलुगु भाषा और साहित्य पर शुरुआती दौर से गौर करेंगे तो यह स्पष्ट होता है कि कविता तेलुगु साहित्यकारों की प्रिय विधा रही है। इस क्षेत्र में कवि तरह–तरह के प्रयोग करते रहते हैं। कविता साहित्य का वह रूप है जिसके माध्यम से व्यक्ति अपनी आंतरिक भावनाओं को अभिव्यक्त करता है। अक्सर यह कहा जाता है कि कवि वहाँ विचरने लगता है जहाँ सूरज की किरणें भी नहीं पहुँच पातीं (जहाँ न पहुँचे रवि, वहाँ पहुँचे कवि)। तुकबंदी, रूपक, उपमा, लय, छंद, मानवीकरण आदि का प्रयोग करते हुए कवि–मानस कल्पना की उड़ानें भरता रहता है। वर्ड्सवर्थ भी कह गए हैं कि 'कविता प्रबल भावनाओं का सहज प्रवाह है जो शांत मनःस्थिति में उभरता है।' दरअसल तेलुगु साहित्यकार छंदोबद्ध कविता के प्रति निसर्गतः ही आकर्षित रहे हैं। बाद में प्रगतिशील विचारों के कवियों ने हर एक वस्तु को काव्य के लिए उपयोगी समझा और कविता के परंपरागत मानदंडों को तोड़ते हुए गद्य कविता का सृजन किया। कहना न होगा कि इक्कीसवीं सदी में वचन कविता या गद्य कविता ने अपना एक सुनिश्चित स्थान बना लिया है। 2024 में तेलुगु साहित्य में मुख्य रूप से कविता–संग्रहों की प्रचुरता रही।

तेलुगु कवि जहाँ एक ओर प्रेम और रिश्तों को कविता का विषय बनाते हैं, वहीं दूसरी ओर सामाजिक विसंगतियों एवं विद्रूपताओं पर प्रहार भी करते हैं। बोब्बिली श्रीधर कृत 'मोदटि परिमलम् वैपुकि' (प्रथम सुगंध की ओर) शीर्षक कविता–संग्रह में संकलित कविताओं में प्रेम आलंबन के रूप में उपस्थित है। उनकी कविताओं में निहित प्रेम वैयक्तिक धरातल से ऊपर उठकर वैश्विक धरातल पर पहुँचता दिखाई देता है। इन कविताओं में औदात्य का स्वर मुखरित है। कवि की दृष्टि मानववादी है। 'भूमंडलीकरण' के कारण क्षरण हो रहे मानवीय मूल्यों के प्रति वे चिंतित दिखाई देते हैं। अतः गुहार लगाते हैं कि 'सूर्योदय औ' सूर्यास्त को/छुपा लेंगे अपने श्वास में/समाधि में शाश्वत निद्रा में लीन होने से पहले ही/जन्म देने वाली मिट्टी को प्रेम करेंगे/श्रम से प्रेम करेंगे।' बोब्बिली श्रीधर अपनी मिट्टी से जुड़े हुए रचनाकार हैं। प्रकृति के हर रूप में वे मानवीय रिश्तों को देखने का प्रयास करते हैं। वे कहते हैं कि जब धरती पर गिरे हुए बेजान पुष्पों को देखता हूँ तो उन बहू–बेटियों की याद आती है जिनके सुहाग ने इस देश की रक्षा करने के लिए सरहद पर अपने प्राण न्यौछावर किए हैं।

बोब्बिली श्रीधर ने ढाई आखर प्रेम को जहाँ कविताओं के माध्यम से व्यक्त किया है, वहीं स्वप्नप्रिया गंजि ने उस प्रेम के स्वरूप को 'नालो उन्न प्रेम' (मेरे अंदर का प्यार) शीर्षक उपन्यास में चित्रित किया है। उपन्यासकार ने यह दर्शाया है कि प्रेम सिर्फ दो व्यक्तियों के बीच का वैयक्तिक संबंध नहीं है अपितु दो परिवारों के बीच स्थापित होने वाला मधुर संबंध है।

गड्डम मुरली कृष्ण ने एक परिवार के मधुर संबंधों तथा आपसी रिश्तों को अपने उपन्यास 'वीडनी बंधालु मट्टि मानुषलु' (अटूट संबंध मिट्टी का मनुष्य से) में बखूबी दर्शाया है। इस उपन्यास की पृष्ठभूमि में गोदावरी जिले में स्थित एक गाँव है, वहाँ की मिट्टी से जुड़ी जनता है। इसमें उनकी व्यथा–कथा है। 25 वर्ष पूर्व राघव अपनी पत्नी के साथ अमरीका जाकर बस जाता है। इन 25 वर्षों में वह न ही अपने गाँव की चर्चा करता है, न ही माता–पिता की सुध लेता है और न ही अपने परिवार के बारे में गाँव वालों को सूचित करता है लेकिन उसका बेटा माधव अपनी जड़ों के बारे में सोचता रहता है। अमेरिका में जन्म लेने के बावजूद वह बचपन से ही मिट्टी, पेड़–पौधे, प्रकृति और कृषि से संबंधित बातें करता रहता है। इतना ही नहीं, कृषि विज्ञान से उच्च पढ़ाई करने के लिए वह विश्वविद्यालय में प्रवेश लेता है। राघव को अपने बेटे में पिता रामय्या की छवि दिखाई देती है। जिस गाँव को और जिस पिता को राघव ने बरसों पहले पीछे छोड़ दिया था, उन माधव की हरकतों के कारण वह याद करने लगता है। इस उपन्यास के माध्यम से मुरली कृष्ण ने यह रेखांकित किया है कि प्रवासी भारतीयों की नई पीढ़ी अपनी जड़ों की ओर वापस लौटना चाह रही है।

उत्तरी अमेरिका, इंग्लैंड, ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, सिंगापुर, दक्षिण अफ्रीका, यूरोप के कुछ क्षेत्रों में बसे हुए प्रवासी साहित्यकारों की रचनाओं को अमेरिका स्थित वंगूरि फाउंडेशन प्रोत्साहित कर रहा है। वह इन साहित्यकारों की रचनाओं को गत 17 वर्षों से पुस्तकाकार प्रकाशित करके पाठकों के सामने ला रहा है। 2024 में वंगूरि चेट्टेनराजु और दीप्ति पेंड्याला के संपादन में 'डायस्पोरा तेलुगु कथनिका 18' (डायस्पोरा तेलुगु कहानी 18) शीर्षक से प्रकाशित कहानी–संग्रह में वहाँ की सभ्यता, संस्कृति के साथ–साथ अपनी जड़ों से दूर होने की पीड़ा, सांस्कृतिक पहचान की खोज तथा अपनी मातृभाषा को सुरक्षित रखने की प्रवासी भारतीयों की छटपटाहट को देखा जा सकता है।

एटूरि नगेंद्र राव ने 'अला आगु कासेपु' (एक क्षण रुको) शीर्षक कविता–संग्रह में मानव जीवन से संबद्ध अनेक यथार्थ स्थितियों को स्पष्ट रूप से शब्दबद्ध किया है। मुक्तिबोध की कविता 'अँधेरे में' में जिस प्रकार एक रक्तालोक–स्नात पुरुष जिंदगी के अँधेरे कमरों में चक्कर लगाता है, उसी प्रकार एटूरि नगेंद्र राव की कविताओं में एक अज्ञात ब्रह्मराक्षस संसार से सूखते जा रहे मानवीय मूल्यों को सुरक्षित रखने के लिए लगातार अट्टहास करते हुए घूमता दिखाई देता है। वह बार–बार पूछता है कि 'पंचेंद्रियों की शक्तियाँ / क्या गरीबी को झेलने / सहज रूप से जीवनयापन करने के लिए / पर्याप्त हैं?' जीवन और मरण का अटूट संबंध है। मृत्यु जीवन का परम सत्य है। जो मनुष्य इस मृत्युभय को लाँघ लेता है, वह इन सांसारिक दुखों से मुक्त हो जाता है। यही 'एक क्षण रुको' शीर्षक कविता–संग्रह में सम्मिलित कविताओं का मूल भाव है।

आजकल हम सब एक ऐसे समाज में जी रहे हैं जहाँ चारों ओर मानवीय संबंध लुप्त होते जा रहे हैं और अपने अस्तित्व को बचाने की जद्दोजहद में व्यक्ति भीड़तंत्र में बदलता जा रहा है। परिणामस्वरूप वह मानसिक तनाव का शिकार होता जा रहा है। मानसिक तनाव से जब व्यक्ति ग्रस्त होता है तो उसका जीवन कष्टदायक बन जाता है। डॉ. बंडी सत्यनारायण ने अपने कविता–संग्रह 'ओंटिकालु परुगु' (लँगड़ी दौड़) में आज के व्यक्ति की तमाम स्थितियों को काव्यमय ढंग से उजागर किया है। यहाँ 'ओंटिकालु परुगु' (लँगड़ी दौड़) रूपक है जिसे तनावग्रस्त जीवन के प्रतीक के रूप में अंकित किया गया है। उन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से यह दर्शाया है कि श्रम का कोई विकल्प नहीं है। कवि ने अपनी कविताओं के माध्यम से समाज में व्याप्त दुहरे चरित्र वाले व्यक्तियों का पर्दाफाश भी किया है।

तनाव और अवसाद से ग्रस्त व्यक्ति अपनी स्वार्थपूर्ति के लिए किसी भी हद तक जा सकता है। वह इतना स्वार्थी हो जाता है कि लगातार पाप करता जाता है। उसके पाप का घड़ा इस हद तक भरता जाता है कि उसे यमलोक के पास स्थित वैतरणी को

पार करना कठिन प्रतीत होता है, इसीलिए अंतिम क्षणों में गोदान करवाया जाता है। कवनमालि ने छोटी–छोटी कहानियों के माध्यम से मनुष्य की इस स्वार्थपूरित प्रवृत्ति को उजागर किया है। ये कहानियाँ 'वैतरणी ओड्डन' (वैतरणी के तट पर) शीर्षक से प्रकाशित हैं।

आडिगोपुल वेंकटरत्नम् के कविता–संग्रह 'निलुवेत्तु संतकम्' (हस्ताक्षर) में संकलित हर कविता में मानवीय मूल्य, मानव की वेदना, दुख–दर्द, गरीबी उन्मूलन, सत्ता वर्चस्व से त्रस्त मानवीयता, हाशियाकृत समुदायों की पीड़ा आदि को रेखांकित किया जा सकता है।

अपर्णा तोटा ने कन्याभ्रूण से लेकर एक सशक्त स्त्री बनने तक की स्त्री–यात्रा के चित्र को 'जेन्नी' शीर्षक कविता–संग्रह में संकलित छोटी–छोटी कविताओं के माध्यम से बखूबी उकेरा है। इस कविता–संग्रह में संकलित कविताओं को पढ़ते समय पाठक के सामने एक कथा चलती रहती है– स्त्री के गर्भ में कन्याभ्रूण का पलना, विषम परिस्थितियों में पैदा होना, पुरुष वर्चस्व के विरुद्ध संघर्ष करना, अपनी अस्मिता एवं अस्तित्व को कायम रखने की जद्दोजहद में लहूलुहान होना आदि। स्त्री विमर्श की दृष्टि से ये कविताएँ उल्लेखनीय हैं।

स्त्री की व्यथा–कथा का चित्रण कडलि ने अपने उपन्यास 'चिकलिट' (चिक = युवती/स्त्री तथा लिट = लिटरेचर/ साहित्य अर्थात् स्त्री साहित्य–स्त्रियों के लिए स्त्री द्वारा रचित साहित्य) में बखूबी किया है। स्त्री की मानसिक वेदना, स्त्री संघर्ष, स्त्री अस्मिता का प्रश्न, स्त्री सशक्तीकरण, राजनीति और समाज में स्त्री की सार्वजनिक भूमिका आदि का चित्रण इस उपन्यास में देखा जा सकता है। शालिनी, ऋषि, कीर्तना, अश्विनी, भारती आदि पात्रों के संवादों के माध्यम से उन्होंने स्त्री से संबंधित अनेक पहलुओं को उजागर किया है। इस उपन्यास में स्त्री मनोभावों और लिंगभेद के कारण उत्पन्न समस्याओं पर भी उपन्यासकार ने प्रकाश डाला है। सामान्य रूप से स्त्री विमर्श कहते ही पुरुष सत्ता के विरुद्ध खड़ी स्त्री दिखाई देती है लेकिन कडलि अपने उपन्यास के माध्यम से यह निरूपित करती हैं कि स्त्री विमर्श का अर्थ है– स्त्री–पुरुष के समान अधिकार। उन्होंने यह स्पष्ट किया है कि पुरुष का विरोध करना स्त्री विमर्श का लक्ष्य नहीं है अपितु स्त्री का पुरुष के साथ कंधे से कंधा मिलाते हुए कम्फर्ट ज़ोन में रहना तथा अपने अधिकारों के लिए जहाँ आवश्यक हो, वहाँ बेबाक होकर संघर्ष करना स्त्री विमर्श की विशेषता है।

समाज में स्त्री सुरक्षित नहीं है। यह केवल आज की बात नहीं है। सदियों से ही उसकी सुरक्षा खतरे में रही है। रक्षा करने के नाम पर उसकी स्वतंत्रता का हनन किया गया। ज़बान होते हुए भी वह गूँगी बन गई। उसे एक काँच की गुड़िया बना दिया गया। वह शोषण का शिकार होती रही। समाज की बात छोड़िए, वह तो अपने

ही घर पर सुरक्षित नहीं है। चाहे 3 वर्ष की मासूम हो या 30 वर्ष की युवती या फिर 80 वर्ष की वृद्धा, दरिंदे को इससे कोई मतलब नहीं। उसे तो बस स्त्री–देह चाहिए। उसका वहशीपन तो बढ़ता ही जा रहा है। इस तरह के जघन्य अपराधों को रोकने के लिए अनेक कानून बने लेकिन क्या फायदा! 'शिकारी' दिन–दहाड़े छुट्टा घूम रहा है और 'शिकार' अपने आपको तथा अपनी नियति को कोसते हुए अँधेरे में जीने के लिए अभिशप्त है। निर्भया, आयशा, भँवरी देवी नाम कुछ भी हो, इन्हें तो शिकार होना ही पड़ा और अपने प्राणों से हाथ भी धोने पड़े। 2019 में हैदराबाद में एक डॉक्टर का सामूहिक बलात्कार करके उसे बेरहमी से मौत के घाट उतार दिया गया था। इस कृत्य ने पूरे भारत को फिर से एक बार हिला दिया था। उस बलात्कार केस में प्रमुख आरोपियों का एनकाउंटर किया गया था। इसी घटना को आधार बनाकर सतीश चंद्र ने 'बृहन्नल वेटा' (बृहन्नला का शिकार) नामक उपन्यास का सृजन किया है।

नरेंद्र शीलम ने अपने उपन्यास 'नड्डूरि मिद्दे' (गाँव के बीच का भवन) में समाज में व्याप्त विसंगतियों को दर्शाया है। रायलसीमा अंचल की भाषा में रचित इस उपन्यास में ग्रामीण जीवन–शैली, जातिगत भेदभाव, गरीबी से संघर्ष आदि मुखरित हैं। इस जातिगत भेदभाव से सदियों से जनता त्रस्त है। अस्पृश्यता निवारण हेतु संविधान में अनेक प्रावधान किए गए लेकिन यह विकल्प के रूप में आज भी समाज में अपना फण फैलाए फुफकार रहा है। दलितों की स्थिति तो सोचनीय है। उनमें भी अनेक ऐसे वर्ग बन गए हैं कि क्या कहना! कुछ वर्ग तो दलितों में भी दलित हैं। दलितों की व्यथा–कथा, उनका आक्रोश, उनका संघर्ष आदि को आवाज देते हुए कत्ति पद्माराव के 'कुलमः प्रत्यान्मय संस्कृति' (जाति : वैकल्पिक संस्कृति) शीर्षक चर्चित वैचारिक निबंध–संग्रह को 2024 में पुनःमुद्रित किया गया है। इससे इस पुस्तक की प्रासंगिकता स्वयंसिद्ध है। दलित विमर्श के अध्येताओं के लिए यह एक संग्रहणीय दस्तावेज है।

दलित विमर्श की बात हो और डॉ. भीमराव अंबेडकर को छोड़ दें तो समीचीन नहीं होगा। अंबेडकर के सिद्धांतों से ही प्रेरित होकर दलित इस समाज में अपना एक सुनिश्चित स्थान पाने में सफल हो सके। पानुगुमट्ठल् विष्णुमूर्ति ने अपने शोधपरक ग्रंथ 'अमरज्योति डॉ. अंबेडकर' में उनसे जुड़े अनेक पहलुओं को वैज्ञानिक एवं व्यवस्थित ढंग से उजागर किया है।

आज साहित्य के क्षेत्र में भी स्वानुभूति और सहानुभूति की बात सामने आ चुकी है। उत्तर आधुनिकता के कारण अनेक समुदाय अपने अस्तित्व की लड़ाई लेकर सामने आए। उनमें प्रमुख हैं– स्त्री, दलित, अल्पसंख्यक और आदिवासी। तेलुगु साहित्य में स्त्री और दलितों की उपस्थिति इन विमर्शों के आरंभ होने से पहले से ही रेखांकित की जा सकती है। ताल्लपाक तिरुमलम्मा, तरिगोंडा वेंगमांबा से लेकर वोल्गा, मालती चंदूर, रंगायणकम्मा और वासिरेड्डी सीतादेवी जैसी अनेक स्त्री साहित्यकारों ने बेबाकी से

अपनी अनुभूतियों और अनुभवों को साझा किया तथा समाज को जागृत करने में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। उत्तर आधुनिक विमर्श के दौर में दलित लेखक और अल्पसंख्यक लेखक अपनी अनुभूतियों को पाठकों के सामने लाने में सक्षम हुए। आज आदिवासी समुदायों से भी संवेदनशील साहित्यकार सामने आ रहे हैं। उनमें से एक हैं आत्राम मोतीराम। उन्होंने अपने समुदाय की पीड़ा को बखूबी व्यक्त किया है। जल–जंगल–ज़मीन के लिए हमेशा ही आदिवासियों को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ा। विकास के नाम पर उन्हें अपनी ही भूमि से विस्थापित किया गया। अपने भीतर घर कर गए आक्रोश को आदिवासी समुदाय की पढ़ी–लिखी पीढ़ी मुखर रूप से अभिव्यक्त कर रही है। आत्राम मोतीराम ने आदिवासी समुदाय के लिए काम करने वाले एक सशक्त कार्यकर्ता राठोड भीमराव की गाथा को अपनी पुस्तक 'गिरिजन बाटसारी राठोड भीमराव' (आदिवासी पथिक राठोड भीमराव) में उजागर किया है। आदिवासी विमर्श पर काम करनेवाले शोधार्थियों और शोध निर्देशकों के लिए यह पुस्तक अत्यंत उपयोगी है।

तेलुगु साहित्यकार समय–समय पर आसपास की परिस्थितियों का आकलन करते रहते हैं और जनता को जागृत करते रहते हैं। एक शताब्दी पूर्व गुरजाडा अप्पाराव ने अपनी कहानियों के माध्यम से भगवान के नाम पर भोली–भाली जनता को ठगने और धोखा देने वाले ढोंगी बाबाओं की प्रवृत्ति को उजागर करने के साथ–साथ उन पर प्रहार किया था। गुरजाड़ा से अनेक साहित्यकार प्रभावित हुए। आज की पीढ़ी भी उस महान साहित्यकार से प्रभावित दिखाई देती है। उन्हीं की प्रेरणा से अनेक लोगों ने व्यवस्था के खिलाफ आवाज उठाई, गलत को गलत कहने की हिम्मत जुटाई। साहित्य के क्षेत्र में जिंबो के नाम से प्रसिद्ध मंगरी राजेंद्र ने अपनी कहानियों के माध्यम से समाज में व्याप्त विसंगतियों पर प्रहार किया है। व्यवसाय के स्तर पर वे मूलतः कानून से संबद्ध हैं। न्यायालय में हो रही घटनाओं से वे इस कदर प्रभावित हैं कि उन्होंने उनके विरुद्ध लेखनी उठाई। एक न्यायाधीश होते हुए न्याय व्यवस्था के बारे में लिखना ख़तरे से खाली नहीं है। जिस प्रकार श्रीलाल शुक्ल ने प्रशासनिक व्यवस्था में रहते हुए उस पर करारा व्यंग्य किया है, उसी प्रकार जिंबो ने न्याय व्यवस्था पर प्रहार किया है। 'नेनु ना नल्लकोटु' (मैं और मेरा काला कोट) शीर्षक कहानी–संग्रह में संकलित कहानियों के माध्यम से उन्होंने न्याय व्यवस्था में व्याप्त अराजकता पर गुरु हथौड़ा हाथ में लेकर प्रहार किया है। पाठकों की जानकारी के लिए यहाँ कुछ कहानियों की चर्चा की जा रही है।

'चेप्पुको लेनि वाल्ल बाधा' (गूँगे लोगों की पीड़ा) शीर्षक कहानी के माध्यम से कहानीकार जिंबो उन व्यक्तियों की आवाज बनकर सामने आए जिनके मुँह से जबान खींच ली गई है। अपने साथ हुए अन्याय के खिलाफ लड़ते हुए इंसाफ के लिए कानून

का दरवाजा खटखटाने वालों को जब न्याय देवता के यहाँ भी न्याय नहीं मिलता तो वह आखिर जाएगा कहाँ? इस तरह अनेक प्रश्नों से इस कहानी में पाठक दो–चार होता है।

लोकतंत्र का प्रमुख स्तंभ है न्याय व्यवस्था। यदि इसी स्तंभ की नींव खोखली होती जाएगी तो स्वस्थ भवन कैसे निर्मित हो सकता है! लोकतंत्र में व्याप्त भ्रष्ट नीति के बारे में कहानीकार ने 'प्रजास्वाम्य राजु' (लोकतंत्र का राजा) शीर्षक कहानी में बखूबी व्यक्त किया है।

सामान्य रूप से हम सब देखते हैं कि जब किसी व्यक्ति को परेशान करने का निश्चय कर लिया जाता है तो उसे हर तरह से हर स्तर पर परेशान किया जाता है। उसके चरित्र पर भी वार किया जाता है। आम जनता की धारणा यही होती है कि न्यायालय में न्याय प्राप्त होगा ही, लेकिन न्याय मिलना तो दूर, न्यायालय में काम करने वाले कर्मचारियों, वकीलों, न्यायाधीशों को जब राजनैतिक सत्ता के आगे घुटने टेकने पड़ें तो सोचने की बात है। न्याय के लिए अहर्निश सच का रास्ता अपनाने वाले वकीलों और न्यायाधीशों को लोहे के चने चबाने पड़ते हैं। राजनीतिज्ञों के सामने उन्हें अपना ईमान भी बेचना पड़ सकता है। जो व्यक्ति अपना ईमान नहीं बेचता, उसे जिंदगी से भी हाथ धोना पड़ सकता है। इन सारी बातों का कहानीकार ने इस संग्रह में संकलित कहानियों में खुलासा किया है।

'ओक गद्द आत्मकथा' (एक बाज की आत्मकथा) शीर्षक कहानी बहुत मार्मिक है। बाज मृत शरीर को नोच–नोचकर माँस का भक्षण करता है। बाज को प्रतीक के रूप में चित्रित करते हुए कहानीकार जिंबो ने यह स्पष्ट किया है कि सत्ताधीश और मठाधीश भोली–भाली जनता को ठगते हैं और उसके शरीर से खून की आखिरी बूँद को भी चूस लेते हैं।

मनुष्य सहज रूप में यात्राएँ करना पसंद करता है और वह भी विदेशी भ्रमण हो तो क्या कहना। अपनी यूरोप की यात्रा से जुड़ी मधुर स्मृतियों को हर्षवर्धन ने 'हर्षयानम्' (हर्ष की यात्रा) नाम से साझा किया है। इस यात्रावृत्त के माध्यम से एक ओर प्रकृति के प्रति लेखक के रुझान का पता चलता है, तो दूसरी ओर यूरोपीय देशों की सभ्यता और संस्कृति के बारे में भी रोचक जानकारी प्राप्त होती है। शामीर जानकी देवी ने अपनी यात्राओं के बारे में तथा अपने अनुभव जगत को 'मेमु मा यात्रलु' (हम और हमारी यात्राएँ) शीर्षक से प्रस्तुत किया है।

फिल्मी जगत से संबंधित घटनाओं को भी कुछ लेखकों ने पुस्तकाकार प्रस्तुत किया है। 'मन सिनेमा फर्स्ट रील' (सिनेमा की पहली रील) शीर्षक से रेंटाल जयदेव ने दक्षिण भारतीय भाषाओं की प्रथम फिल्मों और फिल्मकारों के बारे में रोचक जानकारी प्रस्तुत की है।

चिन्नपनेनी विद्यासागर भारतीय जनता पार्टी के एक प्रमुख नेता हैं। उन्होंने राजनीतिज्ञ के रूप में देश की उन्नति के लिए महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। 1999 में अटल बिहारी वाजपेयी के मंत्रिमंडल में केंद्रीय गृह राज्य मंत्री थे। बाद में उनका पोर्टफोलियो केंद्रीय वाणिज्य और उद्योग राज्य मंत्री में बदल दिया गया। 2014 से 2019 तक की अवधि में महाराष्ट्र के राज्यपाल के रूप में उन्होंने अपनी सेवाएँ दी। उन्होंने अपनी जीवन यात्रा को 'उनिका' (अस्तित्व) शीर्षक से प्रस्तुत किया है। इस आत्मकथा को पढ़ने से पाठक यह समझ सकता है कि तेलंगाना के छोटे से गाँव में जन्मे विद्यासागर राजनीति के क्षेत्र में कैसे सफल नेता बने।

व्लादिमिर इल्यिच उल्यानोव को समस्त विश्व लेनिन के नाम से जानता है। लेनिन का नाम लेते ही रूस की बोल्शेविक क्रांति की याद आती है। रूसी साम्यवादी क्रांति और लेनिन एक–दूसरे के पर्याय हैं। बुर्जुआ की कटु आलोचना और श्रमिकों के समर्थन में वे हमेशा खड़े हुए। उन्होंने अपनी लेखनी से समाज को चेताया। नागभूषण ने 'ओक स्पुट्निक कथा' (स्पुतनिक की कहानी) शीर्षक से लेनिन की जीवनी को मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है।

बाल साहित्य की बात न करें तो सर्जनात्मक साहित्य की चर्चा अधूरी ही रह जाएगी। मूल्लपूड़ी श्रीदेवी ने बड़ों के आस्वादन के लिए बाल साहित्य का सृजन किया है। हम बड़े बनने के बाद बाल साहित्य पढ़ना पसंद नहीं करते। और तो और, यह भी कह लेते हैं कि अब हम बच्चे नहीं रहे। लेकिन यह धारणा गलत है। यदि हम बाल साहित्य का अध्ययन नहीं करेंगे तो अपने बच्चों को क्या समझाएँगे! मूल्लपूड़ी श्रीदेवी ने बड़े ही रोचक ढंग से बड़ों के लिए बाल साहित्य का सृजन 'नेमरेसे स्टोरीज़' (यादगार कहानियाँ) शीर्षक से किया है। इस संकलन में वे कहानियाँ संकलित हैं जो हम सबने बचपन में दादा–दादी और नाना–नानी से सुनी हैं। इसी प्रकार 'काकुलु दूरनि कारडवि' (कव्वे से दूर घना जंगल) जूटूरी तुलसीदास द्वारा रचित बाल कहानियों का संग्रह है। डॉ. एन. गोपि की बाल कविताएँ 'कीलुगुर्रम' (काठ का घोड़ा) शीर्षक से प्रकाशित हैं तो टी. शांता भास्कर ने बच्चों के लिए भगवत्गीता का सृजन 'बालल कोसम भगवत्गीता' (बच्चों के लिए भगवत्गीता) शीर्षक से सचित्र किया है।

तेलुगु साहित्यकार साहित्येतर विधाओं में भी सफल रचनाएँ प्रस्तुत कर रहे हैं। कथा साहित्य के क्षेत्र में अपने लिए सुनिश्चित स्थान बना चुके एंडमूरी वीरेंद्रनाथ ने आपदा प्रबंधन पर तेलुगु में 'अमीबा' नाम से लिखा है। तेलुगु भाषा में आपदा प्रबंधन पर केंद्रित यह पहली पुस्तक है। अफ्रीकी देशों में कॉर्पोरेट क्षेत्र को एक नया रूप देने वाले अग्रणी उद्यमी मोटपर्थी शिवराम वरप्रसाद की कहानी को लेखक ने अपनी अनूठी शैली में 'अमीबा' के रूप में प्रस्तुत किया है। वित्तीय योजनाकार एम. रामप्रसाद ने अपनी पुस्तक 'पैसल मुच्चट्टलु' (पैसों की कहानी) में 73 सूत्र प्रस्तुत किए हैं जिनकी

सहायता से हम आसानी से अर्थ से जुड़ी शंकाओं का निवारण कर सकते हैं।

इन पुस्तकों के अतिरिक्त काकतीय शासन पर आधारित मत्ति भानुमूर्ति के ऐतिहासिक उपन्यास 'जय सेनापति', प्राकृतिक आपदा सुनामी पर आधारित गीता हरिहरन का नाटक 'पोटेत्तिन सुनामी' (सुनामी की लहर), चिकित्सा शास्त्र से संबंधित डॉ. एनमदला मुरलीकृष्ण की पुस्तक 'एच आई वी : एड्स', पर्यावरण विमर्श पर केंद्रित सोमेपल्ली सुबय्या स्मृति ग्रंथ 'हरित संतकम' (हरित हस्ताक्षर), तेलुगु साहित्य के इतिहास के संधियुग पर आधारित आचार्य फणींद्र का ग्रंथ 'क्षीण युगम् कादु उषोदय युगम्' (क्षीण युग नहीं, उषोदय का युग), चीकोलु सुंदरय्या कृत 123 पुस्तकों की समीक्षात्मक कृति चदिवि चूद्दाम (पढ़कर देखेंगे), वराल आनंद द्वारा कवियों एवं विभिन्न कलाकारों से समय–समय पर की गयी चर्चाएँ 'करचालनम' (हाथ मिलाना), जी. रामुलु कृत 'नक्सलिज़्म नाकेम नेर्पिंदि?' (नक्सलिज़्म् ने मुझे क्या सिखाया?), कोडारु पुला रेड्डी कृत ऐरोपा शिल्पकला वैभवम (यूरोपीय शिल्पकला वैभव), एरुव् श्रीनाथ रेड्डी के कहानी–संग्रह डब्बु अम्मबडुनू (धन बेचा जाएगा), डॉ. मज्जि भारती के कहानी–संग्रह वेकुवा (भोर), द्रविड मुन्नेट्र कज़गम के शक्तिशाली नेता करुणानिधि की जीवनी 'द्रविड सूर्युडू' (द्रविड सूर्य), हथकरघा उद्योग पर आधारित कोंडम पवन कुमार के निबंध–संग्रह 'चेमट पोगुल कलनेता' (पसीने से तरबतर हथकरघा) आदि ग्रंथ भी 2024 के उल्लेखनीय तेलुगु साहित्य में शुमार हैं।

तेलुगु के क्षेत्र में अनूदित पुस्तकों को भी प्रोत्साहित किया जा रहा है। अनुवाद पुनः सृजन है। इसके माध्यम से संस्कृति का अंतरण होता है। रूसी साहित्यकार निकोलाई गोगोल की कहानियों का नंडूरी राममोहन राव ने 'शनिदेवता रथचक्रम्' (शनिदेव का रथचक्र) नाम से अनुवाद किया है। उन्होंने एडगर वेल्स की कहानियों का 'अरुणवलयम्' (सूर्यचक्र) नाम से तथा स्कॉटिश लेखक रॉबर्ट माइकल बैलेंटाइन कृत 'मार्टिन रैटलर' का तेलुगु में 'एडवेंचर ऑफ मार्टिन रैटलर' नाम से अनुवाद किया है। पेरिशेट्टि श्रीनिवास राव ने काशीनाथ सिंह के प्रसिद्ध उपन्यास 'रेहन पर रग्घू' का अनुवाद 'ताकट्टुलो रघुनाथ' नाम से किया है। निस्संदेह सृजनात्मक एवं अनूदित कृतियाँ भी तेलुगु भाषा और साहित्य को निरंतर समृद्ध कर रही हैं।

❑❑❑

11

नेपाली साहित्य

ज्ञानबहादुर छेत्री
लेखक एवं अनुवादक

नेपाली भाषा एवं साहित्य अपनी वैभवशाली विरासत के बावजूद कई समस्याओं से आक्रांत है। प्रकाशन एवं विक्रय–वितरण सुव्यवस्थित न होना इसका मुख्य कारण है। पुस्तक प्रकाशन भी एक व्यवसाय है और जब तक यह मुनाफे का सौदा नहीं होगा, प्रकाशक इस घाटे के व्यवसाय में अपनी पूँजी का निवेश नहीं करेगा। सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि किसी भी भाषा का साहित्य शैक्षिक पठन–पाठन व्यवस्था से संबंधित है। हमारे देश में सिक्किम और दार्जिलिंग के अलावा अन्य किसी भी क्षेत्र में विद्यालयों में नेपाली भाषा में पठन–पाठन की सुव्यवस्था नहीं है परंतु खुशी की बात है कि भारत सरकार की शिक्षा नीति–2020 के तहत बच्चे मातृभाषा माध्यम से शिक्षा का लाभ उठा सकेंगे।

वर्ष 2024 नेपाली साहित्य के लिए एक खास उपलब्धि का वर्ष माना जा सकता है क्योंकि इसी वर्ष दार्जिलिंग नेपाली साहित्य सम्मेलन के सौ साल पूरे हुए। भव्य रूप में शताब्दी समारोह की तैयारी हो रही है। उसी तरह असम नेपाली साहित्य सभा और डुवर्स नेपाली साहित्य विकास समिति के 50 वर्ष पूरे होने पर स्वर्ण जयंती वर्ष के रूप में मनाया गया। स्वर्ण जयंती समारोह में कई साहित्यिक कार्यक्रमों के साथ बहुसंख्यक पुस्तकों का लोकार्पण संपन्न हुआ।

कविता

हर साल विभिन्न विधाओं की जितनी किताबें छपती हैं, इनमें सबसे ज्यादा कविता की किताबें होती हैं। आलोच्य वर्ष में भी ज्यादातर कविता की पुस्तकें छपकर आई हैं। 'जूनको पर्खाइमा' निलीमा आचार्य के इस कविता–संग्रह की कविताओं में जीवन में रोजमर्रा के विभिन्न अनुभवों और सुखात्मक–दुखात्मक पहलुओं की अभिव्यक्ति हुई है। साथ ही इस काव्य–संग्रह में नारी मन की छुपी हुई व्यथा–कथा का चित्रांकन हुआ है। आधुनिक सभ्यता कैसे ग्रामीण परिवेश को दूषित कर रही है, इसका संकेत इस कविता में हुआ है–

हिजोआज गाउँ सहरतिर लागेको छ
पिठ्यूमा सपनाको साम्राज्य बोकेर
गाउँका प्रत्येक बाटा, गोरेटा, सडक
सबै सहरतिर जाँदैछन्। (अरू सबै ठिकै छ)
अर्थात्
आजकल गाँव शहर की ओर जा रहा है
पीठ पर सपनों का साम्राज्य ढोकर
गाँव के हरेक गली, राह, सड़क
सब के सब शहर को जा रहे हैं

'फेरि मुस्कुराइन प्रकृति'– इस कविता–संग्रह के लेखक है टीकाराम थापा। इनकी कविता प्रकृति, पर्यावरण, सामाजिक विसंगति, विनाशकारी युद्ध जैसे विषयों पर केंद्रित हैं। लेखक चाहता है युद्ध समाप्त हो, समाज में शांति स्थापित हो इसीलिए उनका आह्वान है–

अब त बन्दुकको नाल शत्रुको छातीबाट फर्काइदेऊ
धैरै बग्यो रगत
रगतको आहाल सुक्न देऊ
धेरै भयो नरसंहार
आँसुका थोपा सुक्न देऊ
रुँदैछिन धरती माता
शांतिको बिगुल बजाइ देऊ। (आह्वान)
अर्थात्
अब तो बंदूक की नाल शत्रु की छाती से हटा दो
बहुत हुआ खून खराबा
खून के तालाब को सूखने दो
बहुत हुआ नरसंहार
आँसू की धार को सूखने दो
रो रही है धरती माँ
शांति का बिगुल बजा दो।

असम के चर्चित लेखक राम दाहाल ग़ज़लकार के रूप में भी सुपरिचित हैं। उद्भव और राँको– दो ग़ज़ल–संग्रह पहले ही प्रकाशित हो चुके हैं। आलोच्य वर्ष में उनकी चयनित ग़ज़लों का संकलन 'अडान' को लोगों ने खूब सराहा। ग़ज़ल के माध्यम से सामाजिक कुप्रथाओं को निर्मूल करना राम दाहाल का ध्येय है। निम्नलिखित ग़ज़ल में समाज से नारी–पुरुष का भेदभाव हटाने का आह्वान है–

छोरालाई काखमा छोरीलाई पाखामा नराखौं।
दुबैलाई आँखाको मणिमा राखे चलन होस।।
श्रीमती मर्दा श्रीमानले झट्टै बिहे गरे जस्तै।
विधवाले पनि झट्टै घर बसाल्ने चलन होस।।

'एकैछिन पर्ख न जुनेली' (थोड़ी देर रुक जाना जुनेली)– लक्ष्मण प्रधान के इस कविता संग्रह में प्रगतिवादी एवं जातीय भावधारा की कविताएँ संकलित है। 2024 वर्ष में प्रकाशित हाल की प्राप्त कुछ कविता विधा की उल्लेख्य पुस्तकें हैं–

नारी अनि नारी– नारद प्रसाद उपाध्याय, समय को बारुद– कविता शर्मा, सुगंधी माटो– मोहन सुबेदी, साँझका सुस्केराहरू– बालाकृष्ण शर्मा पौडेल।

निबंध

वर्ष 2024 नेपाली साहित्य के लिए ऐतिहासिक उपलब्धि का वर्ष रहा क्योंकि इस साल सिक्किम के साहित्यकार टी.बी. चंद्र सुब्बा की जीवन भर की साधना का फल 2300 पृष्ठ के बृहत्तम ग्रंथ 'विश्व मानव सभ्यताः जातीय बृहत् इतिहास, संस्कृति, परंपरा' प्रकाशित हुआ है। इस ग्रंथ के प्रकाशक हैं किनार प्रकाशन, सिक्किम। इस ग्रंथ में मानव जाति की उत्पत्ति, विकास क्रम का इतिहास दर्शाते हुए बृहत्तर नेपाली जाति की अनेक जनजातियों की भाषिक और सांस्कृतिक विशेषताओं पर प्रकाश डाला गया है। नेपाली भाषा, साहित्य और संस्कृति के अन्वेषक, शोधार्थी और पाठकों के लिए यह ग्रंथ अवश्य पठनीय और अनमोल संदर्भ बन सकता है।

राष्ट्रीय–अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में बहुचर्चित नेपाली कवि राजेंद्र भंडारी के अध्ययन के दायरे में विश्व साहित्य का परिचय मिलता है। प्रश्नहरूको घेरा (अंतर्वार्ता) में इसकी झलक मिलती है। महेश परसाई, संतोष आले, किसन छेत्री, गीता त्रिपाठी, सुदर्शन श्रेष्ठ, सुवास दीपक और वासुदेव पुलामी द्वारा ली गई अंतर्वार्ता में भारतीय एवं विश्व साहित्य की विभिन्न धाराएँ, आंदोलनवाद आदि के बारे में विस्तृत चर्चा की गई है। 'सृजन संदर्भ' आलोच्य वर्ष में प्रकाशित भंडारी का ही दूसरा निबंध–संग्रह है। जनपथ प्रकाशन, गांतोक से प्रकाशित इस ग्रंथ में भंडारी के 'जेन माटो हाइकु फूल', 'बिंब अनि नेपाली कविताको संदर्भ', 'संस्कृति सभ्यता बदलिदो विश्व परिवेश', 'साहित्य पर्यावरण', 'बर्लिनमा नेपाली कविता', 'रोम सिरियाइ शरणार्थी कविता', 'घनश्याम नेपालको आख्यानको कुराबारे केही कुरा', 'भारतमा नेपाली भाषाको विकास एउटा कैरन', 'नोर्ज्याड स्याङदेनका कविताहरू' 'समीरण छेत्री प्रियदर्शीका कथामा मृत्युचिंतन' कुल दस निबंध हैं।

तारापति उपाध्याय के जीवन की अंतिम पुस्तक 'संक्षिप्त विश्व इतिहास' नेपाली साहित्य में एक अभूतपूर्व संयोजन है। दुखद है कि पुस्तक के लोकार्पण से पहले लेखक का देहांत हो गया। इस ग्रंथ में लेखक उपाध्याय ने विश्व की अनेक सभ्यता,

महान व्यक्तित्व और प्राचीन–अर्वाचीन भारतीय संस्कृति की गरिमा को दिखाया है।

'सुमति उदय होस्' ज्ञानबहादुर छेत्री के प्रस्तुत निबंध–संग्रह में 'व्यक्तित्व र अमरत्व की चाह', 'कोरोना का त्रास', 'स्वतंत्र लेखकों का साहस', 'ईको साहित्य', 'सभ्यता और संस्कृति', 'डायस्पोरा' आदि विषयों पर कुल मिलाकर इक्कीस निबंध संकलित हैं। इस संग्रह में लेखक के बांग्लादेश और न्यूजीलैंड भ्रमण के प्रसंग रोचक एवं पठनीय हैं।

कहानी

कहानी सबसे ज्यादा लोकप्रिय एवं लिखी जाने वाली साहित्यिक विधा है। पिछले साल नेपाली कहानी की ढेर सारी किताबें प्रकाशित हुई हैं। 2024 वर्ष का साहित्य अकादेमी पुरस्कार 'छिचिमिरा' शीर्षक कहानी–संग्रह के लिए सिक्किम के लेखक युवा बराल को प्राप्त हुआ।

मनप्रसाद सुब्बा साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित कवि, कथाकार एवं आलोचक है। आलोच्य वर्ष में इनका 'मिसाम' नाम का कहानी–संग्रह प्रकाशित हुआ है। किरात मूलीय लिंबु जनजाति के 'मिसाम' शब्द का अर्थ होता है 'आग का हंस'। इस संग्रह की कहानियाँ किरात जनजाति के मिथकों पर आधारित हैं। लिंबु जनजाति का जीवन चक्र मुंधुम (लिंबु जाति का वेद) से संचालित होता है। इन कहानियों में तीस्ता, रंगीत, रुङदुङ आदि पहाड़ी नदियों के जरिए लेखक सुब्बा ने पर्यावरण पर पाठकों का ध्यानाकर्षक किया है। पर्यावरण समस्याओं के अध्ययन, मानव–प्रकृति संबंधों पर चिंतन के माध्यम से पारिस्थितिकी साहित्य पाठकों को पर्यावरण संबंधी विचारों से अवगत कराता है और पृथ्वी ग्रह पर उनके प्रभाव के बारे में लोगों को अधिक जागरूक बनने के लिए अभिप्रेरित करता है। पर्यावरण की दृष्टि से सुब्बा का यह कहानी–संकलन अत्यंत उपयोगी साहित्यिक ग्रंथ है। देवीचरण सेंडाइ की 'अवचेतन मस्तिष्क' शीर्षक रहित बावन लघु कहानियों का संकलन है। इनकी कहानियाँ समकालीन युग की समस्याओं को अभिव्यक्त करती हैं। लेखक ग्रामीण पृष्ठभूमि के व्यापक परिदृश्य की तरफ इशारा करता है। भाषा–साहित्य–संस्कृति का संरक्षण एवं विकास, कुसंस्कार और अंधविश्वास जैसी सामाजिक व्याधि दूर करना इनका उद्देश्य प्रतीत होता है। कवि एवं नाटककार के रूप में ख्यातिप्राप्त गुरुप्रसाद उपाध्याय का इस वर्ष 'मान्छेको मन' प्रकाशित हुआ जिसमें हारमति, सपना जस्तै, लाइफ ऑफ ट्रेजेडी, दाबी, फलेदाको फूल, अचानक, चक्रासन, काफल पाक्यो, माकुराको बच्चो, बादलको छायाँ, अर्को रूप, मान्छेको मन, एउटा आँखो, तल्लो तह, सहस्राब्दीको अन्त्य–पंद्रह कहानियाँ संकलित हैं।

परी प्रकाशन, गांतोक द्वारा प्रकाशित 'गंतव्य' उषा शर्मा का दूसरी कहानी–संग्रह है। इस संग्रह में संकलित कुल पंद्रह कहानियाँ सामाजिक विसंगति, मादक पदार्थ

सेवन के दुष्परिणाम, साइबर संस्कृति, प्रेम, राजनीति, यौन शोषण, नारी समस्या जैसे विषयों पर आधारित हैं। कम शब्दों में भाव को व्यक्त करना लेखक की विशिष्टता है। आकाशवाणी में समाचार वाचिका के रूप में सेवारत होने के कारण उनकी कहानियों में इसकी झलक दिखती है। पुस्तक के बारे में अपने विचार में उन्होंने स्वयं इस बात को स्वीकार करते हुए कहा है कि उनकी कहानियाँ कुछ नए पुराने समाचारों से लिए गए विषयों को साहित्यिक परिधान से सजाने का प्रयास है। जो भी हो, सरल तथा आकर्षक शैली में लिखी गई संदेशमूलक कहानियाँ रोचक हैं। आलोच्य वर्ष में प्रकाशित समशेर अली का कहानी–संग्रह 'द लास्ट डांस' भी चर्चा में आया है।

उपन्यास

उपन्यास पाठकों का न केवल मनोरंजन ही करता है, बल्कि मनुष्य की चेतना और संवेदना का विस्तार भी करता है। आलोच्य वर्ष में नेपाली भाषा में कम संख्यक उपन्यास प्राप्त हुए। 'राग–अनुराग–विराग' खेमराज नेपाल का डेबु उपन्यास वसंत स्मृति प्रकाशन, विश्वनाथ के तहत प्रकाशित हुआ है। इस उपन्यास में लेखक ने नेपाल की स्वाधीनता के पिछले और अगले दो दशक यानि लगभग चालीस वर्ष में असम के शोणितपुर जिला क्षेत्र की सामाजिक, राजनैतिक गतिविधियों की झाँकी प्रस्तुत की है। उपन्यास में कुछ ऐतिहासिक स्थान व चरित्रों का जिक्र है परंतु यह ऐतिहासिक उपन्यास नहीं है क्योंकि इसमें वर्णित घटनाएँ काल्पनिक हैं। प्रकाश भट्टराई मूलतः कवि है, निबंधकार के रूप में भी आपकी ख्याति है। पाठक उनके 'मूलाङ' डेबु उपन्यास को भिन्न–भिन्न तरीकों से व्याख्यायित करते हैं। यह लेखक की आपबीती और शैशव और किशोर काल के ग्रामीण संस्मरण है। उपन्यास में लेखक ने पहाड़ी गाँव का सजीव चित्र अंकित किया है। ग्रामीण परिवेश में अशिक्षित लोगों के बीच बोली जाने वाली भाषा का प्रयोग इसकी विशेषता है। एक परिवार के माध्यम से समाज और राष्ट्र के निर्माण में माँ का सजीव चित्र अंकित किया है। ग्रामीण परिवेश में अशिक्षित लोगों के बीच बोली जाने वाली भाषा का प्रयोग इसकी विशेषता है। एक परिवार के माध्यम से समाज और राष्ट्र के निर्माण में माँ की भूमिका सबसे महत्त्वपूर्ण होती है। इसीलिए एक माँ को शिक्षित होना अति आवश्यक है। गंगारानी दाहाल भंडारी का 'आमा नारी' शिक्षा पर आधारित उपयोगी उपन्यास है। इसके अलावा ख्यातिप्राप्त लेखक हरीश मोक्तान अल्लारे का 'कैंशका चोर आँखा' और छुदेन काबिमो का 'उरमाल' नामक उपन्यास प्रकाशित होने की सूचना मिली है।

नाटक

नेपाली नाटक के लिए आलोच्य वर्ष निराशाजनक रहा। तीन एकांकी संग्रह और दो नाटकों के प्रकाशित होने की सूचना मिली परंतु केवल एक नाटक ही प्राप्त हुआ। 'लव जिहाद' शीर्षक नाटक के रचनाकार राम उपाध्याय हैं। इस नाटक में जिहाद के

नाम पर कुछ लोग कैसे समाज में अशांति फैला रहे हैं, उसे दिखाया है। संत्रास फैलाने वाले उग्रवादी संगठन आई एस आई एस का एजेंट सैफुल्ला भेष बदलकर साधु दीनदयाल के आश्रम में घुस जाता है और गलत काम करता है। एक उग्रवादी लव जिहाद के नाम पर उर्मिला को भगाकर ले जाता है और इस्लाम कबूल करने के लिए दबाव देता है। उर्मिला के न मानने पर मुँह में गोमाँस डाल देता है। आश्रम के पंडित दीनदयाल के सरल व्यवहार और बातों से उग्रवादी सैफुल्ला उर्फ कृष्ण का हृदय परिवर्तन होता है। वह गलत काम करना छोड़ देता है। वह उर्मिला को छुड़वाने में सफल होता है परंतु यह बात उसके गिरोह तक पहुँच जाती है और नतीजा, उसकी हत्या कर दी जाती है। उसकी हत्या की जाएगी, यह बात उसको मालूम थी, लिहाजा वह दीनदयाल जी से प्रार्थना करता है कि मृत्यु के पश्चात् उसके शरीर को कब्र न देकर पवित्र गंगा जी में बहा दिया जाए।

इस नाटक में भारतीय आध्यात्मिक दर्शन के गरिमामय स्वरूप को दिखाया गया है। नाटककार राम उपाध्याय इस नाटक के जरिए यह संदेश देना चाहते हैं कि भारतीय आध्यात्मिक दर्शन विश्व से हिंसा को समाप्त कर सकता है।

असम सरकार ने पूर्ण कुमार शर्मा को नाटक विधा में महत्त्वपूर्ण योगदान के लिए शिल्पी पुरस्कार से सम्मानित किया है।

समालोचना

आलोच्य वर्ष में नेपाली भाषा में समालोचना विधा के कई महत्त्वपूर्ण ग्रंथ प्रकाशित हुए हैं। नवीन पौडेल नेपाली समालोचना के चर्चित एवं जाने–माने लेखक हैं। 'सिर्जन समीक्षण' आलोच्य वर्ष में प्रकाशित उनका समालोचना विधा का एक उल्लेखनीय ग्रंथ है। इस ग्रंथ में पौडेल के कुल पंद्रह समालोचनात्मक आलेख संकलित हैं।

'समालोचकीय ऐनामा सिर्जनाका प्रतिबिंब' इंद्रेणी प्रकाशन से प्रकाशित हुआ है। इसकी रचयिता हैं नैना अधिकारी। कवि के रूप में सुपरिचित अधिकारी का यह प्रथम समालोचना ग्रंथ है। इस ग्रंथ में लेखक ने लीलबहादुर क्षेत्री के नाटक, नवसापकोटा की 'मणिकुट' (कविता), लीलबहादुर सोनार की 'यस्तो एउटा सूर्य' (कविता), अशोक रोका की 'सुनयना' (कहानी), शांति थापा की 'माया' (गीत), मोहन सुबेदी की 'नीलो चरो र अन्य कविता', पुरुषोत्तम उपाध्याय की 'लोहितकिनार का गोठ र गोठालाहरू' (कहानी), इंदुप्रभा देवी की 'तबेलामा घोडाहरू' (कविता), कृष्णनील कार्की की 'कविताको सिमसिमे झरी' (कविता), हिरण्य पौडेल की 'विसङ्गत समय' (कविता), रिना सुब्बा की 'परिवर्तित अनुहार' (कविता)– कुल मिलाकर ग्यारह पुस्तकों की परिचयात्मक टिप्पणी की है।

'प्रगतिवाद – कला र साहित्य' के लेखक अविकेशर शर्मा ने अपने इस ग्रंथ में साहित्य को प्रगतिवादी सिद्धांत के आधार पर परखा है। उनके विचार में विश्व के

ज्यादातर लोग श्रमजीवी हैं। अतः श्रमजीवी लोगों के जीवन को दर्शाने वाला साहित्य ही प्रकृत साहित्य है। मार्क्सवादी सौंदर्य शास्त्र, ट्रेड यूनियन आंदोलन एवं चिया मजदूर आंदोलन पर लेखक ने सविस्तार चर्चा की है।

'भारतेली नेपाली प्रगतिवादी साहित्य'– शीर्षक से ही पता चलता है कि प्रगतिवादी धारा का यह एक महत्त्वपूर्ण ग्रंथ है। इस ग्रंथ में 1917 के रूस विप्लव से लेकर लगभग सौ वर्षों की प्रगतिवादी लेखन परंपरा का इतिहास प्रस्तुत किया गया है। गणेशलाल सुब्बा, बद्रीप्रसाद प्रधान, असीत राई, मोहन दुखुन, नरबहादुर दाहाल, समीरण छेत्री, रूपनारायण पाठक, जमदग्नि उपाध्याय, जय क्याक्टस, मिङ लिवाङ, राजा पुनियानी, मनोज बोगटी, सुभद्रा बंजन आदि शताधिक सर्जकों ने नेपाली प्रगतिवादी साहित्य को अलग पहचान दी है। इस ग्रंथ में कुमार नेपाली, योगेश खाती, अविकेशर शर्मा, विजय कुमार सुब्बा, भक्त प्रसाद गौतम, हरि लुइँटेल, रत्न बान्तवा, जीवन थिङ, राजकुमारी दाहाल, सरस्वती मोहरा, जनार्दन थापा, अर्जुन पीयूष, मोहन सुबेदी, रुद्र बराल, रुपेश शर्मा, राजबहादुर राई, राज कुमार छेत्री, मोहन पी. दाहाल, उष्णम पांडे आदि लेखकों के प्रगतिवादी साहित्य पर अन्वेषणपरक लेख और प्रगतिवादी पुस्तकों की समीक्षा है। इस बृहत् ग्रंथ के संपादकगण में अविकेशर शर्मा, रुद्र बराल और भक्त प्रसाद गौतम हैं। असमेली नेपाली समालोचना (खंड 3)– (संपादक ढाकाराम काफले, नैना अधिकारी) एवं पिछले वर्ष में प्रकाशित इसके खंड एक और खंड दो में असम प्रांत से प्रकाशित समकालीन नेपाली साहित्य की रूपरेखा मिलती है।

बाल साहित्य

बाल साहित्य विशेष रूप से बच्चों के लिए लिखा जाता है। इसमें कहानियाँ, कविताएँ, नाटक, गीत, चित्रकथा और अन्य विधाएँ शामिल हो सकती हैं। बाल साहित्य का उद्देश्य बालक–बालिकाओं का मनोरंजन करना, उन्हें उचित शिक्षा देना और उन्हें अच्छा विश्व–नागरिक बनाना है। परंतु दुख की बात है कि नेपाली भाषा में बाल साहित्य की पुस्तकें बहुत ही कम मात्रा में प्रकाशित हो रही हैं। लिहाजा बच्चों का मातृभाषा के प्रति आकर्षण कम होता जा रहा है। नेपाली भाषा के लेखकों को इस विषय पर ध्यान देना आवश्यक है।

नारायण शर्मा का बाल उपन्यास 'छहारी' 14–16 आयु वर्ग के बच्चों के लिए उपयोगी है। बुजुर्ग पाठक भी इस उपन्यास से लाभ उठा सकते हैं। लेखक ने छहारी उपन्यास के जरिए बताया है कि बालक–बालिकाओं के मानसिक विकास में सामाजिक एवं पारिवारिक परिवेश की महत्त्वपूर्ण भूमिका रहती है इसीलिए शिक्षक और अभिभावकों को स्वस्थ बाल समाज के निर्माण में जागरूक एवं सकारात्मक भूमिका निभानी चाहिए। एक आदर्श शिक्षक जो बालकों के गुणों का पारखी है, वह बालकों के जीवन की कायापलट कर सकता है। उपन्यास में अच्छे दोस्त, बाल स्वाधीनता, अनुशासन, प्यार,

सामाजिकता और विद्यार्थियों का महत्त्व भी उभरकर आया है। साथ में यह भी स्पष्ट है कि हमारी अज्ञानता, अदूरदर्शिता और लापरवाही से प्रतिभाशाली बालक भी नष्ट–भ्रष्ट हो सकते हैं। लेखक ने अनेक उदाहरणों के माध्यम से समकालीन पर्यावरणीय संकटों को आइने में रखा है और इससे आज के बाल समाज में पड़ने वाले भयानक दुष्प्रभावों के बारे में बताया है। उन्होंने पर्यावरणीय संकटों से बचने के उपायों का उल्लेख करते हुए किशोरों को पेड़ लगाने के लिए प्रेरित किया है। इस सिलसिले में उपन्यासकार शर्मा ने पिपलांत्री नामक गाँव का जिक्र किया है। लेखक विश्व में हरित क्रांति की तरफ इशारा कर रहे हैं। उनका संदेश है कि आज का बालक कल का नागरिक है। लिहाजा उनके सद्गुणों का विकास कराते हुए उनमें पर्यावरणीय चेतना जगानी होगी तभी विश्व में शांति और स्वच्छता कायम रहेगी। लिहाजा कहा जा सकता है कि छहारी उपन्यास में बाल मनोविज्ञान को बारीकी से उभारने में लेखक सफल हुआ है। समकालीन वैश्विक समस्याओं पर आधारित कौतुहलपूर्ण कहानी से परिवेष्टित इस उपन्यास में बिंब–प्रतीक, उपमान–उपमेय के सरल प्रयोग के साथ उसकी भाषा–शैली किशोरों के लिए बोधात्मक और रुचिकर है।

2024 वर्ष में प्रकाशित बाल साहित्य की अन्य कुछ पुस्तकें इस प्रकार हैं–

'छुकछुक करती रेलगाड़ी'– कृष्णप्रसाद भट्टाराई, बाल रामायण– विष्णु शास्त्री, चाक चारब्रा (कहानी–संग्रह) – मुक्ति गौतम, 'कोपिलाहरू' (कविता–संग्रह)– बिमला प्रधान जोशी, 'गांधी चित्रकथा' (मूल हिंदी सरला देवी मजूमदार) अनुवाद– कृष्णलाल शर्मा।

अनुवाद

अनुवाद एक भाषिक प्रक्रिया है जिसका केंद्र बिंदुभाषा है। अनुवाद में स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा दोनों की भूमिका अनिवार्य रूप से रहती है। हर भाषा की ध्वनि, शब्द, कहावतें आदि विशेषताएँ उसकी मौलिक पहचान को दर्शाती हैं। अनुवादक के लिए भाषा की इन विशेषताओं को समझना आवश्यक है। सफल अनुवाद के लिए स्रोत भाषा एवं लक्ष्य भाषा पर पूरा अधिकार होना जरूरी है। इसलिए अनुवादक ऐसी भाषा सृजे जिसमें मूल पाठ अपने पूरे परिवेश एवं जातीयता के साथ लक्ष्य भाषा में बिंबित हो सके।

अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित अनुराधा शर्मा पुजारी असमिया साहित्य की प्रतिष्ठित लेखिका व पत्रकार हैं। इस वर्ष में उनके दो उपन्यास नेपाली भाषा में अनूदित हुए। उनके बहुप्रशंसित उपन्यास 'इयात एखन अरण्य आछिल' (यहाँ एक जंगल था) को यहाँ 'एउटा जंगल थियो' शीर्षक देकर पूजा आचार्य ने नेपाली भाषा में अनुवाद किया है। लोगों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता पैदा करने वाले इस उपन्यास की कहानी अत्यंत आकर्षक एवं रोचक है। नेपाली अनुवाद की भाषा सरल और सुबोध होने के कारण अनुवादिका पाठकों का दिल को छू लेने में सफल रही हैं। 'साहेबपुराको झरी'

अनुराधा शर्मा पुजारी का ही दूसरा चर्चित उपन्यास है। इस उपन्यास का नेपाली भाषा में अनुवाद किया है तिलक ओली ने।

भारत तथा विश्व की विभिन्न भाषाओं से नेपाली भाषा में अनूदित ग्रंथों की संख्या संतोषप्रद नहीं है। कुछ महत्त्वपूर्ण संपादित पुस्तक एवं पत्रिकाएँ इस प्रकार हैं–

असम नेपाली साहित्य सभा द्वारा प्रकाशित पुस्तकें – 'असमेली नेपाली एकांकी यात्रा'– संपादक पूर्ण कुमार शर्मा, 'पूर्वोत्तर भारत को नेपाली उपन्यास, विचार–विमर्श'– संपादक ज्ञानबहादुर छेत्री, इंदुप्रभा देवी, 'असमीया भाषा साहित्य–गोर्खा सर्जक' संपादक राम उपाध्याय, प्रकाश कोइराला, 'हाम्रो संस्कृति हाम्रो स्वभिमान'– संपादक युद्धवीर राणा, छत्रमान सुब्बा, 'बिज्ञान प्रबंध विविधा'– संपादक संजीव उपाध्याय, चिंतामणि शर्मा, 'असमेली नेपाली निबंध यात्रा'– संपादक बद्री गुरागाईं, चंद्र घिमिरे, 'चयनित असमेली नेपालही व्यंग्य निबंध'– संपादक धर्मानंद उपाध्याय, अर्जुन निरोला। 'असमेली नेपाली कथा संचयन'– संपादक लक्ष्मण अधिकारी, दक्षिणा देवी गजुरेल, 'निरुपमा निरु स्मृतिग्रंथ'– संपादक इंदुप्रभा देवी, 'पुरस्कार वृतांत'– संपादक राम उपाध्याय, 'लिंबु सरल वर्णमाला'– लेखक छत्रमान सुब्बा, 'सजिलो नेपाली व्याकरण तथा अभिव्यक्ति'– लेखक चिदानंद उपाध्याय, 'पूर्वोत्तर नेपाली कविता कुंज'– संपादक चंद्र घिमिरे, 'नेपाली कथा सँगालो'– संपादक कमल सेडाई, तिलक शर्मा, 'शेरमान थापा रचना समग्र'– संपादक नवप्रभा अधिकारी, 'डंबर दाहाल अभिनंदन ग्रंथ'– संपादक चिंतामणि शर्मा, 'सभा बुलेटिन'– संपादक मदन थापा आदि।

इंद्रेणी

'इंद्रेणी' पत्रिका इन दिनों लोकप्रिय हो रही है। शुद्ध भाषिक प्रयोग के साथ स्तरीय साहित्य का सृजन और विशेषकर नारी और युवा लेखकों को प्रोत्साहित करना इसका लक्ष्य है। मुखपत्र इंद्रेणी के नियमित प्रकाशन के अलावा पिछले दो सालों में नवीन एवं प्रवीण लेखकों की विभिन्न विधाओं की सत्ताईस पुस्तकें भी प्रकाशित हुई हैं। भारतेली नेपाली प्रगतिवादी साहित्य और असमेली नेपाली समालोचना (खंड 3) 2024 वर्ष में इंद्रेणी प्रकाशन से प्रकाशित उल्लेख्य ग्रंथ हैं।

इस वर्ष इंद्रेणी पत्रिका (संख्या 7) नारी विशेषांक के रूप में प्रकाशित हुई है। इस अंक में नारी लेखकों और नारी सर्जकों की पुस्तकों की चर्चा की गई है। इस अंक की संपादक निलीमा आचार्य, दुलुमणि देवी, पूजा आचार्य सब नारी लेखक हैं। नारी लेखकों को प्रेरित करने के लिए यह एक अनुकरणीय पहल है।

इस वर्ष प्राप्त अन्य कुछ पुस्तकें–

'त्रिविधा' (निबंध)– छविलाल उपाध्याय, 'मंतव्यविहीन यात्री' (कविता–संग्रह) – लोकनाथ शर्मा (धमला), 'एक्लो पथिक' (कविता–संग्रह)– वसुंधरा शर्मा, 'लोक गायक इंद्र थपलिया'– देविका सुब्बा खवास, 'पद्मश्री सानु लामा' (दो खंडों में)– संपादक

रत्नबहादुर रसाइली, 'नंद हाङ्खिम' (तीन खंडों में)– संपादक रत्नबहादुर रसाइली, कृष्ण सापकोटा, 'प्रयात खगेंद्र दाहात स्मृतिग्रंथ'– संपादक मंडल पत्र–पत्रिका, स्मृति ग्रंथ आदि हैं।

पुरस्कार

साहित्य अकादेमी पुरस्कार

पिछले साल का साहित्य अकादेमी मूल पुरस्कार नेपाली 'लोकसाहित्य–लोकसंस्कृतिको परिचय' (निबंध) के लिए युद्धवीर राणा को प्राप्त हुआ था। 2024 वर्ष के पुरस्कार के लिए सिक्किम के साहित्यकार युवा बराल का 'छिचिमिरा' (कहानी–संकलन) चयनित हुआ है। आलोच्य वर्ष का बाल साहित्य पुरस्कार वसंत थापा को उनके 'देश र फुच्चे' (कविता–संग्रह) के लिए और सुवा पुरस्कार – सूरज चापागाई को उनका 'क्यानभासको क्षितिज' (कविता–संग्रह) के लिए प्राप्त हुआ है।

साहित्य अकादेमी के अलावा अन्य कुछ अन्य साहित्य संस्थाएँ भी साहित्यकारों को पुरस्कार से सम्मानित करती हैं। इनमें कुछ पुरस्कार और प्राप्तकर्त्ता के नाम इस प्रकार हैं–

तुलसी कश्यप स्मृति पुरस्कार, सिक्किम (2024) डा. जीवन नामदुंग (सत्ताईस सालका हाम्रा सात साहित्यकार)

परी प्रकाशन पुरस्कार, सिक्किम–

गीता निरौला– कश्यप का महाकाव्यहरूको कृतिपरक अध्ययन, निबंध।

भीम ठटाल– अभिव्यक्तिको सत्ता (कविता–संग्रह)।

असम नेपाली साहित्य सभा पुरस्कार–

अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार– डॉ. देवी नेपाल (काठमांडौ)।

राष्ट्रीय पुरस्कार– डॉ. खेमराज नेपाल (असम)।

विभिन्न क्षेत्रों में राजकीय पुरस्कार प्राप्त करने वाले लेखक हैं– प्रकाश कुइकेल, प्रकाश कोइराला, पूजा उपाध्याय, पूजा आचार्य, राम उपाध्याय, अनूप शर्मा, यमुना दाहाल, हिरण्य पौडेल।

पत्र–पत्रिका, स्मृतिग्रंथ आदि

'परी' सिक्किम से प्रकाशित वार्षिक साहित्यिक पत्रिका है। इस पत्रिका में स्तरीय शोधपरक लेख प्रकाशित होते हैं। आलोच्य वर्ष 2024 में परी का तीसरा अंक प्रकाशित हुआ जिसके संपादक हैं रत्नबहादुर रसाइली। उसी तरह असम नेपाली साहित्य सभा का मुखपत्र 'सभा दर्पण' (संपादक संजीव उपाध्याय) प्रकाशित हुआ। 2024 वर्ष में असम नेपाली साहित्य सभा का अधिवेशन स्वर्ण जयंती के रूप में मनाया गया। इस उपलक्ष्य में कई मानक ग्रंथ प्रकाशित हुए, जो निम्नवत् हैं–

स्वर्ण–यात्रा असम नेपाली साहित्य सभा की स्वर्ण जयंती उपलक्ष्य में रिसेप्शन

समिति से प्रकाशित स्मारिका है। लगभग आठ सौ पृष्ठ के इस ग्रंथ में असम नेपाली साहित्य सभा के संक्षिप्त इतिहास से लेकर शताधिक साहित्यिक एवं साहित्येतर लेख संकलित हैं। नेपाली, असमिया और अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित यह ग्रंथ भविष्य में एक ऐतिहासिक ग्रंथ के रूप में समादृत हो सकता है। स्वर्ण–यात्रा के मुख्य संपादक हैं गोपाल श्रेष्ठ।

अभिव्यक्ति (अंक 51) संपादक– बालकृष्ण उपाध्याय। दुलियाजान कला–साहित्य मंच की यह पत्रिका कई सालों से निरंतर प्रकाशित हो रही है। असम नेपाली साहित्य, दक्षिण जामुगुडि शाखा के मुखपत्र 'सिर्जना' के संपादक नारायण शर्मा अधिकारी हैं। 'पूर्वोदय' त्रैमासिक पत्रिका 'पूर्णांक' 10 प्रकाशित हुआ है, इसके संपादक हैं संजीव उपाध्याय।

❑❑❑

भारत में रहने वाला और इसके प्रति ममत्व की भावना रखने वाला मानव समूह एक जन हैं। उनकी जीवन प्रणाली, कला, साहित्य, दर्शन सब भारतीय संस्कृति है। इसलिए भारतीय राष्ट्रवाद का आधार यह संस्कृति है। इस संस्कृति में निष्ठा रहे, तभी भारत एकात्म रहेगा।

– पं. दीनदयाल उपाध्याय

बांग्ला साहित्य

12

प्रो. राम आह्लाद चौधरी

प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में कई आलेख प्रकाशित। संप्रति–प्रोफेसर एवं पूर्व विभागाध्यक्ष (हिंदी), कलकत्ता विश्वविद्यालय।

बांग्ला भाषा में विगत साल (सन् 2024) में महत्त्वपूर्ण पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। बांग्ला भाषा और साहित्य का पूरी दुनिया में अपना खास स्थान है। इस भाषा में कथा साहित्य काफी लोकप्रिय हुआ है। विगत साल में बांग्ला भाषा की कई महत्त्वपूर्ण किताबें प्रकाशित हुई हैं। इस साल में जो भी पुस्तकें छपी हैं, उन पुस्तकों पर विचार करने से पता चलता है कि अन्य सालों की अपेक्षा इस साल विज्ञान–धर्म–इतिहास की पुस्तकें काफी छपी हैं, साथ ही 2024 में बांग्ला में रचनावली काफी छपी है।

बांग्ला की प्रकाशन दुनिया में एक खासियत यह है कि इस भाषा के रचनाकारों के समग्र लेखन को संचयन के रूप में छापने की परंपरा है। इस दृष्टि से कई प्रमुख लेखकों के संचयन ग्रंथ प्रकाशित हुए। बांग्ला में उपन्यास लेखकों की सूची अधिक है। सन् 2024 में कई उपन्यासकारों की पुस्तकें छपी हैं। नये उपन्यासकारों के उपन्यासों ने बांग्ला कथा साहित्य को एक नया रूप दिया है। कथा–साहित्य के अंतर्गत कई महत्त्वपूर्ण कहानी–संग्रह और लघुकथाएँ छपी हैं। नाटक एवं प्रबंध की किताबों ने भी इस साल पाठकों का ध्यान अपनी ओर खींचा है। इस साल जीवनी साहित्य की कई महत्त्वपूर्ण किताबें छपी हैं। यात्रा–वृत्तांत पर भी कई पुस्तकें छपी हैं। भाषा के अंतर्गत इस बार एक महत्त्वपूर्ण पुस्तक छपी है जिसका नाम है– 'प्राचीन भारते चिकित्सा विज्ञान' यानी 'प्राचीन भारत में चिकित्सा विज्ञान'। इस पुस्तक को आनंद पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड ने छापा है। इस पुस्तक में प्राचीन भारत में इलाज करने की परंपरा पर विचार किया गया है। यह पुस्तक जिस तरह से ज्ञान को रेखांकित करती है, ठीक उसी तरह इस पुस्तक से पता चलता है कि समाज में चिकित्सा की कितनी जरूरत है। इस पुस्तक के रचनाकार हैं– श्यामल चक्रवर्ती। श्यामल चक्रवर्ती ने विज्ञान की कई पुस्तकें लिखी हैं। इस पुस्तक में चिकित्सा विज्ञान का आलोचनात्मक और परिचयात्मक विवरण प्रस्तुत किया गया है।

हाउयाकल पब्लिशर्स ने 'शरत् समग्र' प्रकाशित किया है। 'शरत् समग्र' को एक नये रूप में छापा गया है। सप्तर्षि प्रकाशन ने कई महत्त्वपूर्ण पुस्तकों को छापा है। रवि घोष की पुस्तक 'आपनमने', लिलि चक्रवर्ती की पुस्तक 'आमी लिलि' जैसी किताबों को सप्तर्षि प्रकाशन ने प्रकाशित किया है। हेमंत मुखोपाध्याय के जीवन को नये ढंग से देखते हुए इस प्रकाशन की ओर से 'आनंदधारा' शीर्षक से किताब छापी गई है।

'आनंद' ने कथा साहित्य से संबंधित कई महत्त्वपूर्ण किताबों को पाठक समाज के बीच प्रस्तुत किया है। खासकर 'विश शतकेर प्रथम आलोय बंगनारी' शीर्षक से इस प्रकाशन ने एक पुस्तक छापी है। इस पुस्तक में बंगाल की कृतिमान महिलाओं का जिक्र किया गया है। निखिल सुर ने यह पुस्तक लिखी है। इंद्रनील सान्याल की 'पंचाशटी गल्प' पुस्तक प्रकाशित हुई है। नन्दिता बागची ने 'दशटी उपन्यास' नामक किताब में दस उपन्यासों को संगृहीत किया है। इसी प्रकाशन ने मैत्री राय मौलिक की पुस्तक 'शून्य दृशमानता' नामक पुस्तक छापी है।

राजश्री पब्लिकेशन ने इस साल कहानी और आलोचना की कई किताबें छापी हैं। फाल्गुनी मुखोपाध्याय की कहानियों का संग्रह 'डाकातः रघु डाकत– विशे डाकात' शीर्षक से तथा शिवराम चक्रवर्ती का कहानी–संग्रह 'लाभेर वेलाय घंटा' शीर्षक से पुस्तक इसी प्रकाशन ने निकाला है। अवनींद्रनाथ ठाकुर की कई कहानियों को संगृहीत किया गया है। इस संग्रह का नाम रखा गया है– 'भूतपतरीर देश'।

राजश्री पब्लिकेशन ने कई विशेष आलोचनात्मक किताबें छापी हैं। 'वनफुलेर छोटगल्पः जीवन व शिल्प रूप' शीर्षक से प्रकाशित पुस्तक के लेखक हैं– डॉ. मृणालकांति शतपथी। अमित देवनाथ के संपादन में एक खास पुस्तक आई है, इस पुस्तक का नाम है– 'जारा विवेकानंदके देखेछिलेन।' अमित देवनाथ ने एक और पुस्तक का संपादन किया है। इस पुस्तक का शीर्षक है– 'जारा रामकृष्णदेव के देखेछिलेन।' महेंद्रनाथ दत्त, स्वामी सदाशिवानंद ने संयुक्त रूप से 'काशीधामे स्वामी विवेकानंद' नामक पुस्तक लिखी है। यह पुस्तक भी इसी प्रकाशन से छपी है। सौमक पोद्दार के संपादन में 'नटी विनोदनीः आमार कथा' नामक किताब भी आई है। इसी लेखक ने 'रामकृष्णदेवेर आलोक नाट्य चर्चा गिरिशचंद्र' शीर्षक से एक किताब का संपादन किया है। इस पुस्तक में नाटक के संबंध में आलोचना की गई है।

पत्रलेखा कोलकाता का एक प्रसिद्ध प्रकाशन है। सुभाषचंद्र बोस, आशुतोष मुखर्जी, बौद्ध धर्म, ब्रिटिश राज इत्यादि विषयों पर इस प्रकाशन की ओर से किताबें छापी गई हैं। सौमव्रत दाशगुप्त की पुस्तक 'सुभाषचंद्रेर रानी झांसीवाहिनी नथिपत्र' व 'स्मृतिचारने', सैकत नियोगी की पुस्तक 'हिटलर आर्जेटिनाय', राधाकुमुद मुखोपाध्याय की पुस्तक 'भारतेर नौ शिल्प' जैसी किताबों को प्रकाशित किया गया है। रमेशचंद्र

मजूमदार की पुस्तक 'हिंदू मुस्लिम संस्कृति', निकुंज सेन की पुस्तक 'जेलखानार कारागार' शीर्षक से किताब छपी है।

इस वर्ष सुशोभा देवी द्वारा अनूदित 'श्रीरामचरितमानस' को पाँच खंडों में प्रकाशित किया गया है। सन् 2024 को यह गर्व प्राप्त हुआ कि इसी साल पहली बार श्री 'रामचरितमानस' ग्रंथ बांग्ला में प्रकाशित हुआ। शुद्धसत्व घोष ने 'महाभारत' को 9 खंडों में प्रकाशित किया है। इस प्रकाशन की ओर से समीरण दास का उपन्यास दो खंडों में प्रकाशित हुआ है। इस उपन्यास का नाम है– 'फूलगुलो सरिये नाउ।' सैयद शमसुल हक़ का उपन्यास 'खेलाराम खेले जा' प्रकाशित हुआ है। सैयद शमसुल हक़ का एक और उपन्यास छपा है जिसका शीर्षक है– 'द्वितीय दिनेर कहानी।' मोस्ताफिज कारीगर का उपन्यास 'वस्तवर्ग' शीर्षक से छपा है। कमल चक्रवर्ती का उपन्यास 'कुकुर' शीर्षक से छपा है। समीर दास का उपन्यास 'गणेश परमेश' आया है और देवयानी घोष का उपन्यास 'अंतहीन अजानाय' प्रकाशित हुआ है।

इस प्रकाशन की ओर से थ्रिलर भी प्रकाशित किए गए हैं। बाप्पी खान का थ्रिलर 'निनाद' प्रकाशित हुआ है। मारूफ होसेन ने तीन खंडों में 'थ्रिलर अभियान' छापा है। थ्रिलर पर इस प्रकाशन की ओर से दस पुस्तकें छपी हैं। थ्रिलर के अतिरिक्त कविता, कहानी, निबंध, बाल साहित्य, राजनीति, आत्मजीवनी विधाओं पर भी पुस्तकें छपी हैं। रुद्र गोस्वामी का कविता–संग्रह 'थेको ह्रदये', आलोक सरकार का कविता–संग्रह 'शोनो जवाफूल', आलोक रंजन दाशगुप्त का कविता–संग्रह 'वास्तुहारा पाहाड़तली', गौरीशंकर बंद्योपाध्याय का काव्य–संग्रह 'आमार संगे आइंस्टाइन', तुषार राय का कविता–संग्रह 'बैंडमास्टर', राजीव पाल का काव्य–संग्रह 'गानई आमार प्रथम भालोबासा' इत्यादि पुस्तकें भी इसी वर्ष छपी हैं।

इसके अतिरिक्त स्वप्नमय चक्रवर्ती का कहानी–संग्रह 'प्रेमेर गल्प', अंसार–उद्दीन का कहानी–संग्रह 'हारानो गंधेर खोजे', प्रत्यूष सरकार का कहानी–संग्रह 'लुकिंग ग्लास', कृष्णेंदु पालित का कहानी–संग्रह 'प्रेमेर गल्प' प्रकाशित हुए हैं। रजत पाल की आलोचनात्मक पुस्तक भी छपी है जिसका नाम है– 'चैतन्य शेष कोथाय'? सुव्रत कुमार राय ने 'सिनेमाय अन्य प्रेमेर चविवश फ्रेम' शीर्षक से सिनेमा पर एक आलोचनात्मक ग्रंथ लिखा है। मोहम्मद जिकराउल ने 'साहाविदेर काव्यचर्चा' नामक एक पुस्तक लिखी है। इस पुस्तक ने आलोचना जगत के पाठकों को अपनी ओर खींचा है। अभिजीत राय की पुस्तक 'नेताजी सुभाषचंद्र बसुर महानिष्क्रम पटभूमि और इतिहास' पुस्तक छपी है। परमाश्री दाशगुप्त ने 'पुरनो दिनेर मेयेदेर लेखा' तथा 'मेयेदेर निये लेखा' आलोचनात्मक ग्रंथ छापे हैं।

बाल साहित्य भी इस वर्ष काफी प्रकाशित हुआ है। बाल साहित्य के अंतर्गत सायनदेव मुखोपाध्याय की पुस्तक 'फाँपा कार्तुज' नामक पुस्तक छपी है। सायनदेव

मुखोपाध्याय की पुस्तक 'प्रवालेर हाड़' और 'उकुनेर नाच' पुस्तकें भी छपी हैं। पार्थ बंद्योपाध्याय की राजनीति पर एक पुस्तक छपी है जिस का नाम है— 'भारतः शेष ध्वंसेर संधाने'।

आदम बांग्ला का एक प्रसिद्ध प्रकाशन है जिसने कई कविता—संग्रह प्रकाशित किए हैं। इस प्रकाशन ने 21 कविता—संग्रहों को इस साल प्रकाशित किया है। इसके अतिरिक्त इस प्रकाशन ने गद्य को विकसित करने के लिए भी कई किताबों को छापा है। रणजीत गुहा, दीपेश चक्रवर्ती, सुधीर दत्त, रामचंद्र प्रामाणिक, प्रशांत माजी, भास्वती राय चौधुरी, शंकर चक्रवर्ती जैसे रचनाकारों की पुस्तकें भी प्रकाशित हुई हैं। इसी प्रकाशन की तरफ से गौतम बसु और गौतम मंडल के संपादन में साक्षात्कार—संग्रह प्रकाशित किया गया है। दयामयी मजूमदार, आलोक रंजन दाशगुप्त, दीपक राय, भूमेंद्र ग्रह की जीवनी भी प्रकाशित हुई है। जीवनीमूलक उपन्यास भी प्रकाशित किया गया है। इस उपन्यास का शीर्षक है— दूरेर बंधु। इस उपन्यास के लेखक हैं— शंभू रक्षित और दीपक राय। इस वर्ष अनुवाद की किताबों को भी प्रकाशित किया गया है। 'भिनदेशी फूल' शीर्षक से विभिन्न देशों की कविताएँ प्रकाशित हुई हैं। आलोकरंजन दाशगुप्त तथा आलोक सरकार ने इन कविताओं का अनुवाद किया है। पीयूष पोद्दार ने अमृता प्रीतम की कविताओं का अनुवाद बांग्ला में किया है। हेमंत बंद्योपाध्याय की अनूदित पुस्तक प्रकाशित हुई है। इस पुस्तक का नाम है— 'कबीर शतक'।

अनुष्टुप प्रकाशन की ओर से कई आलोचनात्मक पुस्तकें छपी हैं। 'बड़ो वेदनार मतोः यंत्रणा दर्शन' शीर्षक से अरिन्दम चक्रवर्ती की पुस्तक आई है। 'भारतीय महाकाव्य' धर्म, नीति, युक्ति विषयक पुस्तक विमल कृष्ण मतिलाल की है। इस पुस्तक की भूमिका अरिन्दम चक्रवर्ती ने लिखी है। कुमार राणा की पुस्तक 'भग्नसंधि समयेर भावनाः प्रबंध संकलन' प्रकाशित हुई है। संदीप बंद्योपाध्याय ने 'आदिवासी पुराणकथा' शीर्षक से एक पुस्तक का संपादन किया है। कुमार राणा और बड़ो बास्की द्वारा 'आदिवासी भारती' पुस्तक का संपादन किया गया है। इसके अतिरिक्त इस प्रकाशन ने आधुनिक 'बांग्ला गल्प' नामक पुस्तक तीन खंडों में छापी है।

डॉ. अलकनंदा गोस्वामी की पुस्तक 'मुग्धमुहुर्त', दीपंकर सरकार की पुस्तक 'नीरव आयार कोलाहल' तथा चंदन राय की 'प्रश्न व पिपासा' नामक पुस्तक प्रकाशित हुई हैं। शुभेंदु दास मुंशी और अनिल आचार्य द्वारा संपादित 'अन्यो रवींद्रनाथ' शीर्षक से पुस्तक प्रकाशित की गई है। प्रसाद सेन गुप्त की पुस्तक 'विशोप हेवारेर कलकाता' तथा सोमेश्वर भौमिक की पुस्तक 'मृणाल सेनः शतवर्षेण देखा' प्रकाशित की गई है। सोमेश्वर भौमिक ने मृणाल सेन पर इस पुस्तक का संपादन किया है। प्रसाद रंजन राय ने 'पुरुनो कलकातार मद्यपानः एक असंपूर्ण इतिहास एवं यत्किंचित' नामक पुस्तक

प्रकाशित की है।

सुप्रकाश प्रकाशन की तरफ से एक पुस्तक प्रकाशित की गई है जिसका नाम है 'बांग्लाए स्मृति पेशा ओ पेशा जीविरा।' इस पुस्तक का संपादन सुजन बंद्योपाध्याय ने किया है। इसी प्रकाशन से मिहिर सेन गुप्ता की पुस्तक 'सिद्धि गंजेर मोकाम' पुस्तक आई हुई है। आनंद पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड ने अमलेश त्रिपाठी के निबंधों का संकलन प्रकाशित किया है।

कल्पविश्व पब्लिकेशंस ने 'अप्रागैतिहासिक', 'प्रथम पर्व इश्वरेर बागान' नामक उपन्यास प्रकाशित किया है। इस उपन्यास के लेखक हैं सोहम गुहा। वैदेशिक प्रकाशन ने 'करुणा' नामक उपन्यास छापा है जिसके लेखक हैं राखाल दास बंद्योपाध्याय। स्कंदगुप्त के सेनापति भानुमित्र की पत्नी करुणा इस उपन्यास में प्रमुख पात्र है लेकिन उपन्यास में स्कंदगुप्त और उसके परिवार को केंद्र में रखकर कथा की बुनावट की गई है। कल्पविश्व पब्लिकेशन ने यशोधरा राय चौधरी के उपन्यास 'कमला रांगेर रोद' नामक उपन्यास छापा है। इस उपन्यास में दिलीप राय चौधरी के जीवन से संबंधित घटनाक्रम को रखा गया है। अभियान पब्लिशर्स ने उत्तम पाल के उपन्यास 'आत्मनिर्भर' को प्रकाशित किया है। इस उपन्यास में नौकरी को केंद्र में रखा गया है। नौकरी को आधार बनाकर नौजवानों में आत्मनिर्भर बनने के सपने को दिखाया गया है। जीवन की अनुभूतियाँ इस उपन्यास में प्रकट हुई हैं। बोधिसत्व पब्लिशर्स ने 'आमि यशोधरा बोलची' उपन्यास को छापा है। इस उपन्यास की लेखिका हैं– आरती राय। इस उपन्यास में यशोधरा के जीवन को वर्णित किया गया है। कथा में यह बताया गया है कि गौतम बुद्ध को हर कोई पहचानता है लेकिन यशोधरा के जीवन के संबंध में लोग कम जानते हैं। इस उपन्यास में उनके विवाह, दांपत्य जीवन और निर्वाण की कथाएँ हैं। मान्दास पब्लिकेशंस ने सायंतन ठाकुर की पुस्तक 'कागजेर नौका' नामक उपन्यास छापा है। इस उपन्यास का नायक अविनाश है जो एक डॉक्टर है। उसके जीवन की घटनाओं को इस उपन्यास में वर्णित किया गया है। अंकिता के उपन्यास 'कुहुककाल' को कल्पविश्व पब्लिकेशंस ने छापा है। इस उपन्यास का कथानक कल्पना पर आधारित है। इसमें यह भी बताया गया है कि यथार्थ और कल्पना के बीच टकराव क्यों होता है। शेख रफीकुल इस्लाम की पुस्तक 'घूर्णावर्त' मूलतः उपन्यास है। यौवन के उत्ताल को सत्य के सामने में रखने का प्रयास इस उपन्यास में किया गया है। राजनीतिक हत्या, बलात्कार, सामाजिक विघटन इत्यादि मुद्दे इस उपन्यास में लक्षित होते हैं। 'चाट्टि रहस्य' उपन्यास सुखमय मुखोपाध्याय द्वारा प्रणीत है जिसे वैदेशिक प्रकाशन ने छापा है। मान्दास से 'छायाछविर शेषांश संवादेर' उपन्यास छपा है। इसके लेखक हैं– अनिर्वान बसु। इस उपन्यास में सातवें दशक से लेकर नयी सदी के आरंभिक दिनों की घटनाओं का जिक्र है।

'जलेर भतेर जलेर विसर्जन' नामक उपन्यास मुकिद चौधरी का है। इस उपन्यास को अभियान पब्लिशर्स ने छापा है। जीवन एक युद्ध क्षेत्र है। इस युद्ध को सभी लोग नहीं जीत पाते हैं और जो व्यक्ति यह युद्ध हार जाते हैं, उन्हें अंधेरे के अतल में जाना पड़ता है। इस उपन्यास में उस हारे व्यक्ति द्वारा प्रत्येक दिन जीने की विडंबना का चित्रण किया गया है। उसके अंतरदाह और भयानक परिणति के संबंध में लिखा गया है।

'तमस्वीयुगतुगींश' उपन्यास शांतनु जाना का प्रसिद्ध उपन्यास है। इस उपन्यास में वाणिज्य, कृषि, नदीपथ, नगर की कथाएँ हैं। फेनार राज्य एक अनूदित उपन्यास है। इस उपन्यास के मूल लेखक हैं– इयेफ्रेमव। शुभमय घोष ने इसका अनुवाद किया है तथा कल्पविश्व पब्लिशर्स ने यह पुस्तक छापी है। इस उपन्यास में रूस की काल्पनिक वैज्ञानिक कहानी छापी गई है। राखालदास का उपन्यास 'मयूख' प्रकाशित हुआ है। वैदेशिक ने इसे छापा है। हुगली जिले के सप्तग्राम की कहानी इस उपन्यास की मूल कथा है। इस उपन्यास में पुर्तगाली उपनिवेशवाद की कहानी है। नौ–संग्राम की कथा इस उपन्यास का केंद्रबिंदु है।

शंकर लाल सरकार द्वारा लिखित 'तलोयार' उपन्यास एकपर्णिका प्रकाशनी ने छापा है। दो हजार तीन सौ साल पहले पाटलिपुत्र से तक्षशिला तक जो कारा भवन था, उसकी कथा के आधार पर यह उपन्यास लिखा गया है। इस उपन्यास में असंख्य लोगों के षड्यंत्र, कापौरुष, राजनीतिक संकट इत्यादि को उभारा गया है।

वैदेशिक द्वारा प्रकाशित तथा पंचानन रायचौधुरी द्वारा लिखित 'नवीन सन्नासीर गुप्तकथा' नामक उपन्यास प्रकाशित हुआ है। इस उपन्यास में नायक को सबसे पहले मातृहीन बना दिया जाता है जिसके पिता का भी निधन हो जाता है। अपने आत्मीय लोगों के पास वह नायक जाता है। फिर उसके साथ छल होता है और उसका आश्रय छिन जाता है। विभिन्न तरह की घटनाएँ उसके जीवन में घटती हैं और वह संन्यास ग्रहण करता है। धीरे–धीरे यह उपन्यास ऐतिहासिक बन जाता है क्योंकि इस उपन्यास के नायक को ब्रिटिश उपनिवेश से टकराना पड़ता है। उस संन्यासी के जीवन को समाज का ज्वलंत दस्तावेज बना दिया जाता है।

पत्रलेखा नाथ के इतिहास की तलाश करने के बहाने भीरासत ने एक उपन्यास लिखा है। इस उपन्यास का नाम है 'बड़ो कम्पानिर पिस्तल लूट ब हरिदास दत्ता।' इस उपन्यास में कंपनी की पिस्तौल की लूट के संबंध में लिखा गया है। इस घटना के नायक थे– हरिदास दत्त। आजादी के बाद हरिदास दत्त और क्रांतिकारी गणेश घोष के बीच बातचीत होती थी। इस उपन्यास में लेखक ने पत्रलेखा नाथ के इतिहास को बाहर निकालने का प्रयास किया है।

अभियान द्वारा प्रकाशित 'हेंतालचरेर पाला' उपन्यास के लेखक का नाम

निखिलेश है। इस उपन्यास में सुंदरवन इलाके की नदियों का जिक्र किया गया है। वनजीवी लोगों के संघर्ष को इस उपन्यास में विस्तार से बताया गया है। नदी के कारण जीवन संघर्ष बढ़ता है। जीवन संघर्ष की परिधि को भी विस्तार से इस उपन्यास में दिखाया गया है।

मान्दास से 'अंधकारेर शाह जाहान' नामक कहानी—संग्रह प्रकाशित हुआ है। बोधिसत्व भट्टाचार्य ने यह कहानी—संग्रह लिखा है। इस कहानी—संग्रह में यथार्थ ने कल्पना के हाथों को पकड़ा है। विरासत द्वारा 'आई हैव हैंड एनफ ऑफ यू' नामक कहानी—संग्रह प्रकाशित हुआ है। इस कहानी—संग्रह की लेखिका हैं— सोमा बासु। इस कहानी—संग्रह में छह कहानियाँ संगृहीत है। जीवन के अज्ञात सच को समझने की बात इस कहानी—संग्रह में उठाई गई है। दीप घोष द्वारा संपादित 'आर्थर सी क्लार्क गल्प समग्र'— एक साइंस फिक्शन जैसी कहानियों का संग्रह है। मिता दे द्वारा लिखित 'आलो छायार देश' कहानी—संग्रह को आरेंज पब्लिशर्स ने प्रकाशित किया है। इस कहानी में मानव जीवन के विभिन्न रंगों को सजाया गया है। मानव मन की विशेषताओं को इस कहानी—संग्रह में व्यक्त किया गया है। दरअसल लेखिका मिता दे ने इस कहानी—संग्रह को मानव के मन का दस्तावेज बनाने का प्रयास किया है। यह प्रयास पूरी तरह से सफल हुआ है। जीवन के रंगीन क्षणों को इस कहानी—संग्रह में व्यक्त किया गया है।

हिनानीश गोस्वामी द्वारा लिखित 'किट्टु लाहिड़ी' समग्र कहानी—संग्रह को कल्पविश्व पब्लिशर्स ने छापा है। इस कहानी—संग्रह में एक गुप्तचर की कहानी है। अभियान पब्लिशर्स ने वृष्टिछाया नामक कहानी—संग्रह छापा है। इस कहानी—संग्रह के लेखक हैं— देवव्रत नाथ। इस कहानी—संग्रह में युगीन समस्याओं के बीच प्रेम की यात्रा कठिन हो गई है। इस यथार्थ को इस कहानी—संग्रह की विषय—वस्तु बनाया गया है। यह प्रेम सिर्फ नारी—पुरुष का प्रेम नहीं है। घर—परिवार—कार्य स्थल पर प्रेम के समक्ष कठिनाइयाँ पैदा हुई हैं। 'नाउ भासिये उजानस्रोते' कहानी—संग्रह प्रकाशित हुआ है। इस कहानी—संग्रह के लेखक हैं— देवव्रत दाश जिन्होंने निम्नवर्ग और मध्यमवर्ग के लोगों को काफी नजदीक से देखने का काम किया है। लोगों की पीड़ाएँ क्यों बढ़ती जाती हैं; इस प्रश्न पर इस कहानी—संग्रह में विचार किया गया है। इस कहानी—संग्रह की सभी कहानियों के जरिये सामाजिक संदेश देने की कोशिश की गई है।

'रवि ठाकुर चाननि बलेई' कहानी—संग्रह के रचनाकार का नाम है— निर्माल्य विश्वास। इस कहानी—संग्रह को बई टार्मिनस ने छापा है। कहानी—संग्रह में दस कहानियाँ हैं। इस कहानी—संग्रह की भूमिका चुमकी चट्टोपाध्याय ने लिखी है। रवि ठाकुर के विश्वासों के आधार पर लेखक ने कहानियाँ लिखी हैं जिन्हें इस कहानी—संग्रह में संकलित किया गया है। आलोक बसु के कहानी—संग्रह का नाम है— 'राजामशाई

एकटी बालिका चाहिलो।' इस कहानी–संग्रह में प्रेम की असुरक्षा, चारित्रिक पतन, लालसा, अर्थ–पिपासा इत्यादि को कथा का केंद्र बनाने की चेष्टा की गई है।

वर्ष 2024 में ही 'सर्वनाशित स्वाद' नामक कहानी–संग्रह प्रकाशित किया गया है। इस कहानी–संग्रह के रचनाकार हैं– सौम्यदीप बंद्योपाध्याय। लोगों के जीवन में अंधेरा क्यों होता है, इस प्रश्न का उत्तर इस कहानी–संग्रह में है। कभी–कभी यह अंधेरा लोगों को नियंत्रित करने लगता है। इसी विषय को इस कहानी–संग्रह में केंद्रित किया गया है। 'स्वप्नेर रामधनु' कहानी–संग्रह सुरंजना चट्टोपाध्याय द्वारा रचित है। लोगों के जीवन में दुःख, प्रेम, विरह है। विरह की यंत्रणा से जीवन क्षत–विक्षत हो उठता है। यदि सच्चा प्यार है तो वही प्यार जीवन को बनाता है। इस सच्चे प्यार को जीवनमुखी बनाना कठिन होता है। यह जीवन बहुमूल्य है। इस कहानी–संग्रह की सभी कहानियों से जीवन के नये मूल्यों की तलाश की जा सकती है। यही आनंद जीवन को सरल और सुगम बनाने का काम करता है।

इस तरह देखा जा सकता है कि इस बार जीवन के विभिन्न पहलुओं को बांग्ला कहानियों में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। इस प्रयास को देखने से यह स्पष्ट होता है कि बांग्ला में कथा–साहित्य की विकासधारा जारी है।

इस वर्ष कविता–संग्रह की भी कई पुस्तकें प्रकाशित हुईं हैं। अनिमय बारूई द्वारा लिखित 'आमार अलीक इच्छागुली' नामक कविता–संग्रह प्रकाशित हुआ है। इस कविता–संग्रह में मानवता का बीज बोया गया है। कवि की प्रेरणा यही रही है कि यदि समाज में मानवता को बढ़ावा दिया जाता है तो समाज से हिंसा दूर हो सकती है। कवि ने इस काव्य–संग्रह में मानव समाज के चारों तरफ बढ़ते विद्वेष पर चिंता व्यक्त की है। राजीव पाल के कविता–संग्रह 'गानई आमार प्रथम भालोवासा' छपा है। इस कविता–संग्रह में कवि राजीव पाल ने प्रकृति, प्रेम, विरह, स्वप्न, सफलता, आनंद, यथार्थ अनुभूति आदि को विषय बनाया है। हाबीब ईमन का काव्य–संग्रह है– 'दूरेर मानुष आमी दूरेई थेके जाच्छि।' इसमें लोगों के जीवन में जो संकट है, उसी के बारे में कवि ने अपनी अनुभूति व्यक्त की है। लोगों के जीवन में कष्ट आता है, लोग इसे देखकर रुक जाते हैं लेकिन अपनी यात्रा बंद नहीं करते हैं। इसी विषय को कवि ने अपनी कविताओं में स्थान दिया है। 'मृत मानुषेर अंक' कविता–संग्रह के रचनाकार आमिनूर इस्लाम हैं। प्रेम, विरह, अलगाव, इच्छा, गर्व, संगम, देश, धर्म, राजनीति, लोभ, क्षमता इत्यादि विषयों को कविता में रखने का प्रयास किया गया है। पाठकों को सदा आगे बढ़ने की सलाह इस काव्य–संग्रह में दी गई है। पारूलबई ने रणजीत देव द्वारा संपादित 'राधाकृष्ण दास वैरागीर गोमानी मंगल काव्य' संग्रह प्रकाशित किया है। 'रिनी तोर अपेक्षाय' कविता–संग्रह संजीत दास का है। कवि की आस्था रिनी के प्रति है। रिनी कवि के विश्वास की तरफ बढ़ती है लेकिन सामाजिक क्षरण उसे रोक लेता है।

इसी कथा को इस काव्य–संग्रह में स्थान दिया गया है।

आरेंज पब्लिशर्स ने रूपा डे का 'संविक्ति' काव्य–संग्रह छापा है। इस कविता–संग्रह की भाषा सहज है। जीवन की विचित्र विषय–वस्तुओं को काव्य–संग्रह की विषय–वस्तु बनाया गया है। सामाजिक मूल्यों को काव्य–संग्रह में स्थान दिया गया है।

इस बार बांग्ला में कई महत्त्वपूर्ण आलोचना की पुस्तकें छपी हैं। सोमनाथ सिंह की पुस्तक 'अग्निस्नातक' प्रकाशित हुई है। बैदेशिक ने इस ग्रंथ को छापा है। आजादी की लड़ाई में शामिल कई क्रांतिकारियों के जीवन को इस पुस्तक में संजोने का प्रयास किया गया है। इस पुस्तक में तीस आलेख हैं। भगिनी निवेदिता के क्रांतिकारी क्रियाकलाप, पराधीन भारत में पहली बार जाली हस्ताक्षर, बैंक, डकैती जैसे विषय इस पुस्तक में शामिल हैं।

'शतवर्ष नीरेंद्रनाथ चक्रवर्ती' शीर्षक से एक पुस्तक प्रकाशित हुई है जिसका आलापन बंद्योपाध्याय और सोनाली चक्रवर्ती बंद्योपाध्याय ने संपादन किया है। नीरेंद्रनाथ चक्रवर्ती नागरिक समाज के लोकप्रिय व्याख्याता थे। वह उत्तर उपनिवेश काल के साहसी कवि थे। कवि नीरेंद्रनाथ चक्रवर्ती की मृत्यु से बांग्ला साहित्य संसार में शोक छा गया। उनके व्यक्तित्व, कृतित्व का मूल्यांकन इस पुस्तक में किया गया है। साथ ही बंग संस्कृति की झलक भी इस पुस्तक में दिखाई गई है।

अनिर्बाण भट्टाचार्य की आलोचना पुस्तक 'षोलो कलाम' छपी है। इस पुस्तक में आलेख और साक्षात्कार है। साथ ही अभिषेक चट्टोपाध्याय की पुस्तक 'उर्मिमर्मर विजयनगर' भी प्रकाशित हुई है। विजय दास के संपादन में 'चित्रकलाः शिल्प, शिल्पी व दर्शन' पुस्तक छापी गई है। इस पुस्तक में कलाकार के कलादर्शन पर प्रकाश डाला गया है। इस पुस्तक को कलिखाता ने छापा है। प्रशांत सेन की पुस्तक 'देशप्रहरणधारिणी' छपी है। यह पुस्तक वैदेशिक से प्रकाशित हुई है। इस पुस्तक में यह बताया गया है कि दुर्गा सिर्फ एक पौराणिक देवी नहीं हैं। दुर्गा बंगाली जीवन का एक बोध है। इस पुस्तक में दुर्गा के विभिन्न रूपों का वर्णन किया गया है।

जीवनानंद दास के कृतित्व– व्यक्तित्व पर एक पुस्तक छपी है। इस पुस्तक के लेखक हैं– विकास मैत्र। पारुल बई ने इस पुस्तक को छापा है। आनंद ने कृष्णप्रिय भट्टाचार्य की पुस्तक 'पश्चिमबंगेर जनजाति' नामक पुस्तक छापी है। इस पुस्तक में पश्चिम बंगाल की जनजाति की समस्याओं के बारे में लिखा गया है। यह पुस्तक एक शोधग्रंथ की तरह है।

पवित्र कुमार सरकार की पुस्तक 'बंदे मातरम् थेके जनगनमन' व 'सेकाल स्वकाल' प्रकाशित हुई है। लोक सेवा शिविर ने इस पुस्तक को छापा है। इस पुस्तक में पवित्र कुमार सरकार ने साढ़े छह दशकों से जो प्रबंध, निबंध, फीचर लिखे हैं, उनमें

से 46 को इस पुस्तक में संग्रहीत किया गया है। यह रचना मुख्य रूप से फीचर है। डेरोजिओ, राममोहन, विद्यासागर, रवींद्रनाथ, विवेकानंद, नजरूल के व्यक्तित्व–कृतित्व के जरिये एक कालखंड पर प्रकाश डालने की कोशिश की गई है।

बुद्धदेव दाशगुप्तः 'बहुमुखी स्वप्पेर भूवन' पुस्तक का संपादन दीप्ति दास और आलोक सरकार ने किया है। इस पुस्तक में कवि, गद्यकार, सिनेमा निर्देशक बुद्धदेव दाशगुप्त के व्यक्तित्व– कृतित्व का विवेचन किया गया है।

जीवनानंद दास पर विकास मैत्र की एक और संपादित पुस्तक छपी है। इस पुस्तक का शीर्षक है– 'बेला अबेला कालबेला, प्रेम और मानवतार चेतनाय।' इस पुस्तक में जीवनानंद दास की 125वीं जयंती के मौके पर पाठकों के बीच उनकी कविता के प्रति प्रेम काफी बढ़ा है। इसके संबंध में लेखक ने अपना मत प्रकट करते हुए विचार–विश्लेषण प्रस्तुत किया है।

अक्षर प्रकाशनी ने रूशती सेन के संपादन में 'मेयेदेर कथा मायेदेर कथा–2' पुस्तक छापी है। इस पुस्तक में ग्यारह बंगाली महिलाओं की जिंदगी से संबंधित कई तथ्यों को छापा गया है। बोधिसत्व पब्लिशर्स ने 'मुक्ति संग्राम मूलनिवासी जनजाति' नामक पुस्तक छापी है।

आरेंज पब्लिशर्स ने 'अजाना पथेर पथिक' शीर्षक से यात्रा–वृत्तांत पर पुस्तक छापी है। इस पुस्तक के लेखक हैं– अतीन चक्रवर्ती। उज्जैन से अफ्रीका, चंडीगढ़ से थाइलैंड की यात्राओं का वर्णन इस पुस्तक में है। प्रदीप माश्चरक की पुस्तक जो यात्रा–वृत्तांत पर आधारित है, को 'एंकरे कयेकदिन' शीर्षक से छापा गया है। वैदेशिक की ओर से यह पुस्तक सिर्फ यात्रा–वृत्तांत नहीं है। इस पुस्तक में राजनीति, संस्कृति, धर्म का भी वर्णन किया गया है। आनंद ने 'जेरूसालेम पथे' नामक यात्रा–वृत्तांत पुस्तक छापी है। इसके लेखक पांथजन है।

इतिहास से संबंधित कई पुस्तकें छपी हैं। 'नदियार इतिहास वैचित्र्य' नामक ग्रंथ अक्षर प्रकाशनी ने छापा है। ओरियंट बुक कंपनी ने 'नदियार 500 बछर' नामक पुस्तक छापी है। इस पुस्तक के लेखक हैं– प्रवीर राय।

आत्मकथा और जीवनी से संबंधित आठ पुस्तकें छपी हैं। उन पुस्तकों में उल्लेखनीय हैं– 'अपराजय रासबिहारी' (एक और दो खंड)। शमीकस्वप्न घोष इस पुस्तक के लेखक हैं। पारूलबई ने यह पुस्तक छापी है। विज्ञान, काल्पनिक विज्ञान, बाल साहित्य, संगीत जैसे विषयों पर भी पुस्तकें छपी हैं। बांग्ला भाषा में इन दिनों अनुवाद पर भी पुस्तकें अधिक मात्रा में छपने लगी हैं। इस बार भी अनुवाद पर कई अच्छी किताबें प्रकाशित हुई हैं।

'आमादेर चिड़ियाखाना' पुस्तक के अनुवादक हैं– रेखा चट्टोपाध्याय और विजय पाल। इस पुस्तक के मूल लेखक हैं– भेरा चापलिना। कल्पविश्व पब्लिकेशंस ने यह

पुस्तक छापी है। निकोलाई नोसव की पुस्तक का बांग्ला अनुवाद 'अनाड़ी कांडकारखाना' शीर्षक से हुआ है। पुस्तक के अनुवादक हैं–अरुण सोम।

इसके अतिरिक्त कई अन्य विषयों को केंद्र में रखकर पुस्तकें छपी हैं, जैसे 'मिष्ठान पाठ', 'श्मशान की यात्रा', 'पाक शास्त्र'।

सन् 2024 में बांग्ला की प्रकाशित पुस्तकों का सर्वेक्षण करने से यह पता चलता है कि मानव जीवन को बेहतर बनाने में पुस्तक की भूमिका सबसे अहम होती है। मानव समाज को उन्नतशील एवं समृद्ध बनाने हेतु पुस्तकों को और लोकप्रिय बनाना समय की मांग है।

❑❑❑

"मैं भी हूँ, मुझमें जो कुछ नूतनता है, उसे मुझे इसी क्षण में कह डालना है, क्योंकि वह भविष्य की वस्तु है, मैं उसे कहे बिना रुक नहीं सकता और सोचने का समय नहीं–क्षण का अस्तित्व कितना?"

— अज्ञेय

13

बोडो साहित्य

प्रो. स्वर्णप्रभा चैनारी

साहित्यिक समीक्षा, गद्य, व्याकरण, अनुवाद और भाषा आदि पर कई पुस्तकें प्रकाशित। साहित्य अकादमी के अनुवाद पुरस्कार (बोडो) से सम्मानित। संप्रति– प्रोफेसर, बोडो विभाग, गुवाहाटी विश्वविद्यालय।

हर वर्ष बोडो साहित्य में अनगिनत किताबें प्रकाशित होती रही हैं। 2024 में प्रकाशित किताबें अन्य वर्षों की तुलना में कम नहीं हैं। इस साल नये और पुराने अनेक लेखकों ने अलग–अलग विधाओं में अपना योगदान दिया है। कविता से लेकर लघु कहानी तक, नाटक से लेकर शिशु साहित्य तक, उपन्यास से लेकर गद्य लेख तक, लेखकों ने अपनी–अपनी रचनाओं के जरिए बोडो साहित्य को समृद्ध करने की कोशिश की है। यहाँ नए–पुराने लेखकों के बोडो साहित्य में योगदान के बारे में बताया गया है।

बोडो साहित्य की उल्लेखनीय विधाओं में कविता का स्थान सबसे अग्रणी है क्योंकि हर साल कविता की किताबें ही बोडो भाषा में ज्यादातर प्रकाशित होती हैं। इस साल के कवियों में से एक प्रमुख कवि हैं रोनजै स्वर्गियारी। रोनजै एक युवा कवि हैं और 'थायखि अखा' (टपकती बारिश) उनकी द्वितीय प्रकाशित किताब है। इस किताब में कुल 100 कविताएँ संकलित हैं। इस किताब के प्रकाशक स्वयं लेखक ही हैं। रोनजै व्यक्तिपरक कविताएँ लिखने में रुचि रखते हैं। उनकी अधिकांश कविताओं की भाषा बहुत सरल और सहज है जिसे कोई भी आसानी से समझ सकता है।

समय के साथ समाज और संस्कृति दोनों में बदलाव आते हैं। कुछ चीजें गायब हो जाती हैं तो कुछ नयी तरह से उभरने लगती हैं। बोडो समाज की संस्कृति में भी बदलाव आया है और समय के साथ कुछ चीजें विलुप्त हो गई हैं। यह देखकर कवि–मन अंदर ही अंदर रोने लगता है और उन्हें फिर से जीवित करने के लिए विचार करता है। इसलिए उन्होंने अपनी कविता में लिखा हैः

इतिहास तुम कहाँ हो,
कहाँ हो तुम संस्कृति,
मैं मादल बजा–बजा कर तुमको ढूँढता हूँ,
बाँसुरी बजा–बजा कर तुम्हारा आह्वान करता हूँ,

मुझे सिर्फ सुनने को मिलती हैं,
परंतु तुम नहीं मिल पाते,
क्यों आँखों से देख नहीं पाता?
(सुनी हुई आवाज)

कवियों में से दूसरे कवि हैं रमान्सि दाउ। यह उनका असली नाम नहीं है, बल्कि उपनाम है। उनका एक कविता–संग्रह जनवरी, 2024 में प्रकाशित हुआ है। इस संग्रह का नाम है ''आं दिनै हरसेया उन्दुनो ओंखाराखै'' (मुझे आज रातभर नींद नहीं आई है)। इसे प्रकाशित किया है एन.एल. पब्लिकेशंस ने। रमान्सि दाउ कविता के साथ–साथ लघुकथा, उपन्यास और गद्य भी लिखते हैं और वे अपनी जगह खैराबारी में एक प्रसिद्ध नाम हैं। इस संग्रह में कुल 92 कविताएँ और 112 पृष्ठ हैं। जीवन और समाज की ज्यादातर समस्याओं, सुख–दुख इन सभी को उनकी कविताओं में स्थान मिला है। ऐसी ही एक कविता है ''हांमा लाना सुजुनाय मिजिं'' (दर्द में घुली हुई आशा)। इसमें कवि ने लिखा है।

वह समय...
आसमान के तारे देखा हुआ घर में शोकर,
भूख की वजह से शांति से सो नहीं पा रहा हूँ।
माँ गाली देती हैं– पिताजी घर में कुछ भी नहीं ला सकते,
गाली–गलौज से मन में शांति नहीं है,
परंतु जाऊँ तो किसके घर जाऊँ?

कविता के बाद साहित्य की विधाओं में लघुकथा का नाम आता है। इस साल बहुत से नये और पुराने लेखकों ने इस विधा में अपना योगदान दिया है। इनमें से पहला नाम है अनिमा बसुमतारी। जनवरी, 2024 में उनकी लघुकथा की किताब ''गोसोम खुन्दुंनि ताबिज'' (काले धागे का ताबीज) प्रकाशित हुई है। इसे प्रकाशित किया है महेश बसुमतारी ने। बसुमतारी ज्यादातर लघुकथाएँ लिखती हैं। इसके अलावा वे उपन्यास भी लिखती हैं और कई अनुवाद कार्य भी किए हैं। 2017 में प्रकाशित उनका एक उपन्यास है ''बिमा नों अन्थाइ बिखा'' (माँ, तुम पत्थर दिल हो), ''जिउनि गुबुन मोनसे मुङा बोहैथि दैमा'' (जिंदगी का दूसरा नाम बहती धारा है, 2018), और ''नों थानाय मोनब्ला'' (अगर तुम होते, 2020)। अनुवाद में ज्यादातर आध्यात्मिक किताबें रही हैं। उनकी किताब ''गोसोम खुन्दुंनि ताबिज'' में कुल 13 लघुकथाएँ संकलित हैं। यह उनकी 15वीं किताब है।

अनिमा बसुमतारी की ज्यादातर लघुकथाओं में समाज की विभिन्न समस्याएँ और सामाजिक अंधविश्वासों का चित्रण किया गया है। किताब के शीर्षक के आधार पर एक लघुकथा है जिसमें लेखिका ने समाज में फैले अंधविश्वास को ही दर्शाया है।

लघुकथा के अनुसार, एक परिवार जो गाँव से गुवाहाटी आकर थोड़ी सी जमीन खरीदकर अपने घर में रहता है, खुशहाल जीवन बिता रहा था। समय के साथ, पत्नी ने अपने छोटे भाई को गुवाहाटी बुला लिया और अपने पति से कहकर उसे एक छोटी–सी नौकरी दिलवा दी। सब कुछ अच्छा चल रहा था लेकिन फिर परिवार में एक दुख आ जाता है। पत्नी के छोटे भाई में कुछ बदलाव नजर आते हैं– वह न तो ऑफिस जाता है, न ठीक से नहाता है, न ही किसी से ठीक से बात करता है। अपनी भाई की इस हालत को देखकर उसकी बड़ी बहन पर दुखों का पहाड़ टूट पड़ता है। वह अपनी एक सहेली के साथ पास के एक मंदिर में रहने वाली योगिनी के पास जाती है। योगिनी से घटना की वजह जानकर वह अपने घर लौटकर चिल्ला–चिल्लाकर अपने एक पड़ोसी को गालियाँ देने लगती है। योगिनी के अनुसार, उसके भाई की यह हालत पड़ोस की विधवा नौकरानी के कारण है। बड़ी बहन अपने दोस्तों को लेकर उस विधवा नौकरानी के पास जाती है और उसे दोषी ठहराती है जिसके बाद लड़का पागल हो जाता है। गाँव वाले दुखी हो जाते हैं क्योंकि लड़का पढ़ाई और काम में बहुत अच्छा था।

इस लघुकथा के अलावा, अन्य लघुकथाओं में भी अनिमा बसुमतारी ने गाँव के लोगों के सुख–दुख और पाना–खोना को प्रमुख रूप से दर्शाया है। सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि उनकी अधिकांश लघुकथाओं में महिलाओं की अहम भूमिका देखने को मिलती है। उनकी कुछ उल्लेखनीय लघुकथाओं में ''जोथोब'' (दहेज), ''हष्टेल'' (हॉस्टल) आदि शामिल हैं।

जब लघुकथा लेखकों के नाम आते हैं तब मुकुत प्रसाद बर' का नाम भी उन लेखकों में शामिल होता है। बर' असल में एक प्रसिद्ध लघुकथाकार हैं। 1995, 2002 और 2003 में भी उनकी लघुकथा की किताबें प्रकाशित हुई थीं। जनवरी, 2024 में प्रकाशित उनके लघुकथा संग्रह का नाम है ''दिदोमस्रिनि आद्रा संसार'' (दिदोमस्रि की आधी दुनिया)। इस किताब के प्रकाशक दुलुमनि बसुमतारी हैं। प्रस्तावना में लेखक ने उल्लेख किया है कि वह लंबे समय से लघुकथा लेखन से लगभग बाहर हो चुके थे लेकिन समाज और लोगों ने उन्हें चुपचाप बैठने का मौका नहीं दिया। ऑल इंडिया रेडियो, गुवाहाटी ने भी उन्हें लघुकथा पढ़ने के कार्यक्रम में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया था। इस तरह लेखक को फिर से लिखने का शौक जागा और इसका परिणाम यह किताब है। इस संग्रह में कुल 15 लघुकथाएँ संकलित हैं।

संग्रह की पहली लघुकथा है ''गुस जाग्रा पियन'' (घूसखोर पियन)। इस कथा के अनुसार, रिनदाव नामक एक युवक एक डायरेक्टर के हस्ताक्षर के लिए एक ऑफिस में जाता है। वह बहुत गरीब है और एक साल में सिर्फ एक जोड़ा कपड़ा ही खरीद सकता है। उसके लिए गाड़ी में बैठकर जाना या किसी को घूस देना असंभव

है। फिर भी, वह डायरेक्टर के ऑफिस गया है क्योंकि उसे हस्ताक्षर की सख्त जरूरत थी। जब वह ऑफिस पहुँचता है तो उसे पता चलता है कि आफिस के एक पियन, डायरेक्टर से मिलने गए सभी व्यक्ति से पचास–सौ रुपये लेकर पीछे के लोगों को आगे जाने देता है। रिनदाव के पास पैसे नहीं थे इसलिए पियन ने उसे अंदर जाने नहीं दिया। अंत में रिनदाव ने यह ठान लिया कि जब तक वह ऑफिसर से नहीं मिलेगा, वह भूख हड़ताल पर बैठेगा। रिनदाव का यह कदम देखकर पियन डर गया क्योंकि इस बार उसका घूसखोरी का चरित्र ऑफिसर के सामने आ जाएगा और उसे नौकरी से निकाल दिया जाएगा। पियन बार–बार रिनदाव से अनुरोध करता है लेकिन रिनदाव ने उसे नजरअंदाज किया। रिनदाव के मन में यह ख्याल आया कि पियन का भी परिवार है, उसके बच्चे हैं, लेकिन फिर भी वह ऑफिसर से मिलने का इंतजार करता है क्योंकि बाद में जो भी होगा, वह देखा जाएगा। यह कथा आज के समाज में फैले भ्रष्टाचार, गरीबों के संघर्ष और सामाजिक असमानता को उजागर करती है।

उनकी दूसरी लघुकथा है ''मोनसे फन कल'' (एक फोन कॉल)। इस कथा में कथाकार ने समाज में रोज सामने आने वाली एक ज्वलंत समस्या को लोगों के सामने लाने की कोशिश की है। माँ–बाप अपने बच्चों को इस उम्मीद से जन्म देते हैं कि वे बुढ़ापे में उनका सहारा बनेंगे, जरूरत के समय उनकी सेवा करेंगे और उनका नाम रोशन करेंगे लेकिन बच्चों की सोच और व्यवहार में बदलाव आता है और वे अपनी मर्जी के मालिक बन जाते हैं जिससे माँ–बाप के सपने चूर–चूर हो जाते हैं। यही हुआ है खोमथा और दिदोमस्रि के जीवन में।

खोमथा और दिदोमस्रि के एक बेटा और दो बेटियाँ हैं। वे चाहते थे कि बच्चों को पढ़ाकर अच्छा इंसान बनाएँ लेकिन उनके इस सपने को बेटे ने चकनाचूर कर दिया। बेटे के पास अपने माँ–बाप के लिए थोड़ा–सा भी सम्मान और दया नहीं थी। वह अपने पिता से एक महँगी बाइक की माँग करता है और अगर उसे बाइक नहीं मिली तो वह पढ़ाई छोड़ने की धमकी देता है। बेटे के लिए अब घर की सुख–शांति सब कुछ खत्म हो चुकी थी। शायद बाइक मिलने से उसका पढ़ाई में मन लगे, यह सोचकर पिता ने भी कर्ज लेकर बेटे को बाइक दिलवाने का फैसला किया लेकिन असल में यह सब तो एक बहाना था। बाइक लेने के बाद बेटा एक लड़की के प्यार में पड़ जाता है और वह लड़की भी कैसी संस्कारी होगी जो बिना सोचे–समझे इस लड़के से प्यार करती है? माँ–बाप को इस पर भी कोई आपत्ति नहीं थी। उनका मानना था कि अगर शादी के बाद लड़की अपने पति को सही रास्ते पर ला सके तो कोई फर्क नहीं पड़ता लेकिन क्या ऐसा हो पाएगा? उनका बेटा तो बिगड़ चुका था, और अब उनका भरोसा लड़की पर था। उनकी एकमात्र आशा यही थी कि शायद लड़की उसे ठीक से पढ़ाई करवा सके लेकिन क्या यह संभव था?

अंत में एक दिन पुलिस का फोन आता है और बेटे के पिता को यह दुखद खबर मिलती है कि उनका बेटा एक बाइक एक्सीडेंट में मारा गया है। लेखक की यह लघुकथा समाज में रोज घटित हो रही एक गंभीर समस्या को उजागर करने की कोशिश करती है जिसमें आजकल के युवा अपने परिवार के संस्कारों और मूल्यों से दूर हो रहे हैं और इसका असर उनके भविष्य और जिंदगी पर पड़ता है।

जनवरी, 2024 में बनमाली बसुमतारी की किताब "आइखासर" (जादू टोना करके या दवाई पिलाकर किसी को मारना) प्रकाशित हुई थी। अब तक बसुमतारी की केवल दो किताबें प्रकाशित हुई हैं। पहली है "आसानि जेवारि" (आशा का दीपक, 2021) और दूसरी है "आइखासर"। "आसानि जेवारि" एक सानेट कविता की किताब है। एक उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक बसुमतारी कविता और लघुकथा में गहरी रुचि रखते हैं। इस संग्रह में कुल 16 लघुकथाएँ संकलित हैं। इनमें से एक है ''हलंगा'' (जो अलंबार यानी ध्रुवतारा का विकृत रूप है)।

खैराबारी नामक एक स्थान के पास कुछ ज्ञानी लोगों ने मिलकर और क्षेत्र में विद्यालय की कमी को पूरा करने के लिए एक विद्यालय की स्थापना की थी। इसे देखकर शरणीया बने लोग उस विद्यालय को घृणा की दृष्टि से देखने लगे थे। विद्यालय का नाम रखा गया था अलंबार गेजेर फरायसालि लेकिन एक बुजुर्ग महिला ने गलती से अलंबार शब्द का सही उच्चारण न कर पाने के कारण उसे हलंगा बोल दिया था। ऐसा बोलता सुनकर शरणीया बने लोग मजाक करते हुए इस विद्यालय को हलंगा कहकर पुकारने लगे थे। न केवल विद्यालय के नाम को लेकर बल्कि कभी–कभी तो उनकी यूनिफॉर्म के रंग को लेकर भी पास के गाँव के लोग छात्रों को चिढ़ाते थे।

पहले विद्यालय का रूप एक झुग्गी जैसा था जो बाँस और छप्पर से बना हुआ था लेकिन धीरे–धीरे जब यह सरकारी सहायता से प्रादेशिकीकृत हुआ तो सरकार की मदद से विद्यालय भवन पक्का हो गया और वह अब देखने लायक हो गया। इसके बाद, जो छात्र–छात्राएँ इस विद्यालय से पास हुए, उनमें से कई अब डॉक्टर और इंजीनियर बन चुके हैं। विद्यालय की इस उन्नति को देखकर पहले जिन लोगों ने इस विद्यालय से नफरत की थी, वे अब अपने बच्चों को यहाँ दाखिला कराने के लिए भेज रहे हैं।

लेखिका जिस स्थान से है, उसी स्थान पर इस लघुकथा की कहानी आधारित है और जिस विद्यालय की बात की गई है, वह एक बोडो माध्यम विद्यालय है। इससे यह स्पष्ट होता है कि लेखिका को अपनी मातृभाषा और मातृभाषा के विद्यालय के प्रति गहरी आस्था और प्रेम है। इस लघुकथा के अलावा उनकी अन्य लघुकथाओं में भी बोडो समाज के सुख–दुख और रोज़मर्रा की समस्याओं को प्रमुख रूप से

दर्शाया गया है।

इस साल के अन्य एक लघुकथा लेखक हैं खनिल बर'। उनकी लघुकथा किताब का नाम है "जिउ लामायाव" (जिंदगी की राह पर)। यह किताब 6 जनवरी, 2024 को प्रकाशित हुई और प्रकाशक खुद लेखक हैं। यह लेखक की पहली लघुकथा की किताब है जिसमें कुल 15 लघुकथाएँ शामिल हैं। कथाकार ने अपनी स्वीकारोक्ति में बताया है कि किताब को रूप देने का उनका पहले से ही सपना था लेकिन आर्थिक समस्याओं के कारण यह संभव नहीं हो पाया था। फिर भी, 2024 में कई प्रयासों के बाद उनकी लघुकथाएँ किताब के रूप में प्रकाशित हो सकीं। उन्होंने यह भी स्वीकार किया कि समाज से कुछ चित्र लेकर भी उनकी सभी कहानियाँ काल्पनिक हैं क्योंकि उन्होंने साहित्य का स्वाद डालने की पूरी कोशिश की है। कथाकार ने यह भी कहा कि साहित्यिक रूप पाने के लिए उनके लेखों को जितना रुचिकर होना चाहिए था, वह उतना नहीं हो पाया और इसलिए उन्हें यह पूरी तरह संतुष्टिदायक नहीं लगा।

हालाँकि, लेखक द्वारा यह कहा जाना स्वाभाविक हो सकता है लेकिन हमें यह स्वीकार करना पड़ेगा कि ऐसे विचारों के लिए अंततः पाठक ही निर्णायक होते हैं। वे जो सोचते हैं, जो स्वीकार करते हैं, वही लेखक के लिए सबसे बड़ा तोहफा होता है। इस संग्रह की पहली लघुकथा है "अननाय" (प्यार)। इस कथा में कथाकार ने जीवन की रोजमर्रा की कहानी को एक माध्यम के रूप में प्रस्तुत करने की कोशिश की है। आजकल का ज़माना मोबाइल का है और इसी मोबाइल के जरिए लोग एक–दूसरे से मिलते हैं और कभी–कभी शादी के बंधन में बँध जाते हैं, यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है। दैमासा और अनजु के बीच भी यही हुआ था। हालाँकि मोबाइल के जरिए बात करते हुए उनकी शादी परिपक्व उम्र में हुई थी। दैमासा एक बी.ए. पास लड़का था और अनजु एक एम.ए. पास लड़की थी। दोनों ने कोर्ट मैरिज की थी और बाद में उनके परिवार ने धूमधाम से शादी भी करवाई थी लेकिन दैमासा को अपनी पत्नी पर हमेशा संदेह रहता था। वह सोचता था कि शादी के बाद भी अनजु किसी और लड़के के साथ घंटों–घंटों बात करती है। अनजु की यह आदत दैमासा के लिए असहनीय होती जा रही थी। एक दिन, जिस लड़के से अनजु घंटों बात किया करती थी, वह लड़का दैमासा के घर आ जाता है और तब दैमासा को पता चलता है कि वह लड़का कोई और नहीं बल्कि अनजु का मुँहबोला भाई है। इस बात को जानकर दैमासा को शर्म महसूस होती है और उस दिन से वह अपनी पत्नी पर पूरा भरोसा करने लगता है और उससे प्यार करने लगता है।

लेखक की दूसरी लघुकथा "जोंहानि नखर" (हमारा परिवार) में पीढ़ियों में आए फ़र्क को दिखाने की कोशिश की गई है। इस कथा में जगेस्वर नामक एक वृद्ध व्यक्ति और उसकी पत्नी के चार बच्चे हैं। जैसा कि सभी माता–पिता सोचते हैं कि

बुढ़ापे में उनके बच्चे खासकर बेटा उनका सहारा बनेगा लेकिन उनका बेटा न तो पढ़ाई में अच्छा था, न ही खेती–बाड़ी में। वह रोज शराब पीता, मोबाइल में लड़की से बात करता और फिर उन्हें टाउन–सिटी में घुमाकर अपने बूढ़े पिता से पैसे ले लेता था। तीन बेटियाँ भी उससे कम नहीं थीं। वे भी पढ़ाई में ध्यान नहीं देती थीं और अपना समय बेकार घूमने में बिताती थीं। जिस उम्र में उन्हें अपनी बूढ़ी माँ का हाथ बँटाना चाहिए था, वे अपना समय बिना किसी उद्देश्य के बर्बाद करती थीं। एक दिन वृद्धा ने अपने पति से कहा, ''इन आलसी बच्चों के लिए हम कोई संपत्ति नहीं छोड़ेंगे। एक–एक करके सब कुछ बेचकर हम दोनों अपना दम तोड़ देंगे।'' पति ने भी कहा, ''इन बच्चों के बारे में सोचकर कोई फायदा नहीं है, इससे अच्छा है कि हम खाना खाएँ और आराम से सो जाएँ क्योंकि वे हमारी कुछ नहीं सुनने वाले हैं।''

असम के बाकसा जिले में जन्मे कमल खुंगुर बर' भी एक उभरते हुए युवा लेखक हैं। उनकी लघुकथा किताब "गोसोथोनायनि बिसार" (प्यार का न्याय) 6 जनवरी, 2024 को प्रकाशित हुई थी और इसके प्रकाशक लेखक स्वयं हैं। लेखक के अनुसार, इस किताब में संलग्न अधिकांश लघुकथाएँ उनके स्कूल और हाईस्कूल के दिनों में लिखी गई थीं। उन्होंने यह भी साझा किया कि जब उन्होंने ये लघुकथाएँ लिखी थीं, उस समय उन्हें लघुकथा के बारे में बहुत कम जानकारी थी। इसलिए वे यह कहते हैं कि इन कथाओं को वास्तविक लघुकथा के रूप में स्वीकारा जाए या नहीं, इसका निर्णय पाठकों पर छोड़ते हैं। कमल खुंगुर बर' ने अपनी किताब में 14 लघुकथाएँ सम्मिलित की हैं और कुल पृष्ठों की संख्या 72 है। इन लघुकथाओं की अधिकांश लंबाई 2–3 पृष्ठों की है क्योंकि ये आमतौर पर पत्रिका के लिए लिखी गई थीं। कुछ लघुकथाएँ 8–9 पृष्ठों की भी हैं। हालाँकि लेखक यह मानते हैं कि लघुकथा की गुणवत्ता उसकी लंबाई या पृष्ठों से नहीं बल्कि उसकी साहित्यिक श्रेष्ठता से निर्धारित होती है।

किताब की एक लघुकथा है "चोर", जो ग्रामीण समाज की एक दिलचस्प कहानी प्रस्तुत करती है। इस कथा में एक पत्नी अपने पति से आग्रह करती है कि घर के दरवाजों की ठीक से मरम्मत कराएँ क्योंकि हाल ही में गाँव में एक चोर आ गया। चोर रात को गाँव में घुसकर सिर्फ कुछ घरों के दरवाजों को ढकेलकर चला जाता है, खासकर उन घरों के दरवाजे जहाँ लड़कियाँ सोती हैं। चोर के डर से बच्चों ने देर रात तक जागकर पढ़ाई करना छोड़ दिया है और यह स्थिति परीक्षा के नजदीक आने के साथ और भी गंभीर हो गई है। इस पर गाँव के स्कूल के प्रधान शिक्षक ने सचिव से कहा कि यदि चोर पकड़ा जाए तो उसे भी बुलाकर सबक सिखाना चाहिए क्योंकि चोर के डर से बच्चों ने पढ़ाई छोड़ दी है।

अगस्त, 2024 में प्रकाशित लघुकथा की किताबों में बुद्धदेव नार्जारी की "दोंसे लामा नागिरनानै" (एक राह की तलाश में) उल्लेखनीय है। बुद्धदेव नार्जारी एक युवा

लेखक हैं और यह उनकी पहली किताब है जिसे नीलिमा प्रकाशनी ने प्रकाशित किया है। लेखक के अनुसार इस किताब की लघुकथाएँ 2023–24 के बीच लिखी गई हैं। इस किताब में कुल 21 लघुकथाएँ शामिल हैं। अधिकांश कथाएँ समाज की दैनिक घटनाओं से प्रेरित हैं और इसमें समाज में व्याप्त अंधविश्वासों को उजागर करते हुए जागरूकता फैलाने का प्रयास किया गया है।

किताब की एक लघुकथा "सनिवार" (शनिवार) में पति–पत्नी के बीच एक दिलचस्प संवाद को दिखाया गया है। इस कहानी का मुख्य किरदार एक ऐसा पति है जिसे शनिवार बहुत पसंद है जबकि उसकी पत्नी शनिवार को अशुभ मानती है। पति जहाँ भी जाता है, वह कामों की शुरुआत शनिवार को ही करता है जबकि पत्नी का मानना है कि शनिवार को किया गया कोई भी काम अच्छा नहीं होता। एक दिन जब पति अपने बेटे को हॉस्टल से लाने के लिए शनिवार को निकला तो पत्नी अपने सारे सामान के साथ मायके जाने की योजना बनाती है लेकिन पति उसे समझाता है कि शनिवार को वह क्यों पसंद करता है, क्योंकि इस दिन को अशुभ मानकर लोग कम बाहर निकलते हैं और उसे काम में कोई परेशानी नहीं होती। पत्नी इस समझ को स्वीकार कर लेती है और पति के साथ बेटे को हॉस्टल से ले आने के लिए निकल जाती है।

इस किताब की अन्य लघुकथाओं में भी समाज की विभिन्न समस्याओं जैसे मादक पदार्थों का सेवन, मोबाइल गेम्स की लत, बच्चों का अपने बुजुर्ग माता–पिता को ओल्ड एज होम में भेजने जैसी समस्याओं पर विचार किया गया है। बुद्धदेव नार्जारी एक युवा लेखक हैं और हमें उम्मीद है कि वे भविष्य में और अधिक उत्कृष्ट लघुकथाएँ लिखकर बोडो साहित्य के विकास में योगदान देंगे।

साल 2024 में उपन्यास ने भी बोडो साहित्य के भंडार को मजबूत करने की कोशिश की है। इनमें से एक उपन्यास है "तुलाराम सान्थ्रि गाहाइ" (सेनापति तुलाराम)। जनवरी, 2024 में प्रकाशित इस किताब के लेखक हैं डॉ. तुलन मुसाहारी। किताब के प्रकाशन का दायित्व बी.जे. पब्लिकेशंस ने सँभाला है। पेशे से लेखक एक कॉलेज में शिक्षक हैं। शिक्षण के साथ–साथ वे साहित्य सृजन में भी सक्रिय रहते हैं। इसका परिणाम यह है कि अब तक गद्य, उपन्यास, अनुवाद और संपादन के साथ–साथ भाषा चर्चा में भी उन्होंने अपने आपको व्यस्त रखा है। प्रकाशन की दृष्टि से यह उनका तीसरा उपन्यास और बारहवीं किताब है।

तुलाराम दिमापुर राज्य के एक सेनापति थे। उस समय दिमापुर में कृष्ण चंद्र के बाद उनके भाई गोविंद चंद्र ने राज्य का भार सँभाला था। गोविंद चंद्र की पत्नी एक मणिपुरी राजकुमारी थीं। शादी के बाद उन्होंने गोविंद चंद्र के दिमापुर राज्य को मणिपुर राज्य से जोड़ने के लिए एक योजना बनाई थी। मणिपुरियों के साथ तुलाराम

सेनापति का भी एक गहरा संबंध था क्योंकि उन्हें राजा बनने की बहुत लालसा थी और यही लालसा उन्हें मणिपुरियों के साथ खड़ा कर देती थी। हालाँकि, अंत में उन्हें ज्यादा कुछ हासिल नहीं हुआ जो पहले उनके हाथ में था, वही जिम्मेदारी उन्हें सौंप दी गई थी– यानि सिर्फ उत्तर कछाड़ को संभालने का दायित्व। अपनी लालसा में वह शत्रुओं के साथ मिलकर अपने हरे–भरे प्रदेश को नष्ट कर चुके थे। लेखक ने इस उपन्यास के जरिये तुलाराम सेनापति के चरित्र को इतिहास पर आधारित करके प्रस्तुत करने की कोशिश की है।

इस वर्ष प्रकाशित एक उपन्यास "जिउनि बोहैलांनाय" (जिंदगी का स्रोत) है जिसको लिखा है उदीयमान लेखिका निजिरा मुसाहारी ने। यह उपन्यास Assam Institute of Research for Tribals and Scheduled Castes द्वारा प्रकाशित किया गया है। इस उपन्यास की मुख्य किरदार जिरि है जो गान्दारु और मिना की सबसे छोटी बेटी है। गान्दारु और मिना के दो बेटे और चार बेटियाँ हैं। मिना अपनी सभी संतान से बराबर प्यार करती है जबकि गान्दारु केवल अपने बेटों से ही प्यार करते हैं। वह आदिम मानसिकता के साथ बेटों और बेटियों में भेदभाव करते हैं और उन्हें बराबरी से सुविधाएँ देने में घबराते हैं लेकिन मिना इसके विपरीत सभी बच्चों को समान रूप से प्यार करती हैं और उनका ध्यान रखती हैं।

गान्दारु का ध्यान केवल बेटों पर था लेकिन समय के अनुसार उनका यह तरीका गलत था। उनका बड़ा बेटा शराब की लत में फँस गया और छोटा बेटा जो पहले पढ़ाई में अव्वल था, अब अपनी असल पहचान को भूलने लगा। इसके विपरीत, उनकी चार बेटियों में से तीन ने भले ही कम शिक्षा प्राप्त की हो लेकिन वे हार नहीं मानीं और अपने आत्मविश्वास और मेहनत के बल पर आगे बढ़ने की कोशिश करती हैं। अंत में, सबसे छोटी बेटी जिरि अपनी माँ के कारण प्रेरित होती है और वह आईएएस अधिकारी बनकर अपने पति, बेटी और सास–ससुर के साथ एक खुशहाल जीवन जीने लगती है।

लेखिका खुद एक बेटी हैं और इस उपन्यास के माध्यम से वह समाज में स्त्री शिक्षा के महत्त्व को उजागर करना चाहती हैं। उनका मानना है कि आज के समय में समाज में सिर्फ लड़कों का ही नहीं, बल्कि लड़कियों का भी आगे बढ़ना जरूरी है। अब यह समय है जब नारी–पुरुष में भेदभाव समाप्त हो चुका है और लड़कियाँ भी वही काम कर सकती हैं जो लड़के करते हैं। इस उपन्यास के जरिये लेखिका ने समाज को जागरूक करने की कोशिश की है और हमें आशा है कि उनका यह प्रयास समाज में जागरूकता फैलाने में सहायक होगा।

साल 2024 में साहित्य आलोचना की भी कुछ महत्त्वपूर्ण किताबें प्रकाशित हुई हैं। उनमें से एक है युवा लेखक अनिला स्वर्गीयारी की "गोजाम–गोदान खन्थाइ आरो

सावरायथाइ" (नया–पुराना काव्य और आलोचना) जो सितंबर, 2024 में प्रकाशित हुई थी। इस किताब के प्रकाशक है नीलिमा प्रकाशनी। इससे पहले अनिला स्वर्गीयारी ने "फासि होजानाय सिमाँ" (फांसी पर लटका हुआ सपना) नामक किताब भी प्रकाशित की थी। अनिला साल 2022 में PM YUVA Mentorship Scheme 1.0 के लिए भी मनोनीत हुए थे। इस समय वे अपनी पीएचडी रिसर्च में व्यस्त होने के बावजूद साहित्यिक चर्चाओं में सक्रिय हैं और इसका परिणाम है उनकी यह नई किताब।

इस किताब में कुल 16 गद्य शामिल हैं जिनमें से 15 गद्य विभिन्न लेखकों की कविताओं पर चर्चा करते हैं और एक गद्य बोडो साहित्य में महिला लेखकों के योगदान पर आधारित है। अनिला स्वर्गीयारी का बोडो साहित्य में यह योगदान बेहद महत्त्वपूर्ण है और हम उम्मीद करते हैं कि भविष्य में भी वे बोडो साहित्य के विकास में योगदान देंगे।

इस वर्ष प्रकाशित एक अन्य महत्त्वपूर्ण गद्य संग्रह है "सुंद'सलंनि सम्राट नीलकमल ब्रह्म आरो थुनलाइ सोरजि" (लघुकथा के सम्राट नीलकमल ब्रह्म और उनकी साहित्य सृजन) जिसे डॉ. मंगलसिं हाज'वारि ने संपादित किया है। इस किताब का प्रकाशन 17 मार्च, 2024 को हुआ और इसका प्रकाशन नीलिमा प्रकाशनी द्वारा किया गया है। इस किताब में कुल 21 गद्य संकलित हैं। इस संपादन में 18 लेखकों ने अपना योगदान दिया है जिनमें से तीन लेखकों ने दो–दो गद्य प्रस्तुत किए हैं।

यह किताब बोडो लघुकथा के महान साहित्यकार नीलकमल ब्रह्म की लेखनी पर आधारित है। नीलकमल ब्रह्म मुख्य रूप से कवि और लघुकथाकार थे और विशेष रूप से लघुकथा के क्षेत्र में उन्होंने अपनी पहचान बनाई। उनकी लघुकथाओं में गहरे स्वाद और विविधता का समावेश है, साथ ही बोडो समाज के अलावा उन्होंने अन्य समाजों और स्थानों की भी सजीव तस्वीरें खींची हैं। उनकी लघुकथाओं में समाज के विभिन्न वर्गों, उच्च और निम्न घरानों, अशिक्षित और शिक्षित लोगों की झलकियाँ मिलती हैं। इनकी लघुकथाओं का एक प्रमुख पहलू यह है कि उनमें नारीवाद को प्रमुखता से चित्रित किया गया है और पुरुष पात्रों की उपस्थिति बहुत कम है।

इस संपादन में शामिल लेखकों ने नीलकमल ब्रह्म के लेखन की विभिन्न दिशाओं पर विचार किया है। इन लेखों में नवीन और अनुभवी दोनों प्रकार के लेखक शामिल हैं जिससे किताब में विचारों और दृष्टिकोणों की विविधता देखने को मिलती है। अधिकांश लेखकों ने नीलकमल ब्रह्म की लघुकथाओं पर अपने विचार प्रस्तुत किए हैं जबकि कुछ ने उनकी कविताओं पर भी चर्चा की है। कुछ लेखकों ने उनकी जीवन यात्रा पर प्रकाश डाला है जबकि कुछ ने उनकी साहित्यिक शैली और नारीवाद पर विचार व्यक्त किए हैं। इन सभी दृष्टिकोणों के कारण यह किताब सामाजिक और साहित्यिक दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण बन जाती है। हमें उम्मीद है कि भविष्य में भी

हम इस प्रकार के मूल्यवान संपादन और किताबें पढ़ने का अवसर प्राप्त करेंगे।

इसके अलावा, इस वर्ष डॉ. इंदिरा बर' ने "रायथाइहाला" (गद्य की माला) नामक एक संग्रह प्रकाशित किया है जो उनका 11वाँ गद्य–संग्रह है। डॉ. इंदिरा बर' बोडो साहित्य सभा के प्रबन बरगयारी साहित्य पुरस्कार और साहित्य अकादमी के अनुवाद पुरस्कार से सम्मानित एक कवि, गीतकार, अनुवादक और समालोचक हैं। इस किताब में कुल 17 गद्य संकलित हैं जिन्हें लेखक ने चार भागों में विभाजित किया है। पहले भाग में चार गद्य संकलित हैं जिनमें से एक गद्य बोडो साहित्य के पुराने काल की एक पत्रिका पर आधारित है, दूसरा बोडो साहित्य की उन्नति में पत्रिकाओं की भूमिका पर है और तीसरा गद्य बोडो साहित्य सभा की स्थापना में नेताओं के योगदान पर आधारित है।

दूसरे भाग में कुल तीन गद्य संकलित हैं। पहला गद्य अनुवाद साहित्य पर आधारित है। आजकल अनुवाद न केवल एक कला है बल्कि यह एक महत्त्वपूर्ण विषय भी बन गया है जिसे विश्वविद्यालयों में पढ़ाया जाता है। लेखक ने बोडो साहित्य में हुए अनुवादों की स्थिति पर और इस क्षेत्र में किए गए काम पर गहराई से विचार किया है। दूसरा गद्य बुनाई और कढ़ाई पर आधारित है जबकि तीसरा गद्य मौखिक साहित्य पर केंद्रित है।

तीसरे भाग में कुल सात गद्य हैं जिनका विषय विविध है। कुछ गद्य किसी व्यक्ति की जीवनी पर आधारित हैं जबकि कुछ गद्य कविताओं, शिशु साहित्य और विभिन्न संगठनों पर केंद्रित हैं। इस भाग में हम विभिन्न विषयों की गहराई से चर्चा करते हुए कई विचारों और दृष्टिकोणों का सामना करते हैं जो इसे अत्यधिक विविध और रोचक बनाता है।

अंतिम भाग (चतुर्थ भाग) में तीन गद्य हैं। पहला गद्य बोडो लोगों के उत्सव 'बैसागु' पर आधारित है, दूसरा शिक्षक दिवस पर है और तीसरा गद्य लेखक के अपने 'ऑल इंडिया रेडियो' में काम करने के अनुभव पर आधारित है। इन सभी गद्यों के माध्यम से इस किताब में जीवन के विभिन्न पहलुओं को छुआ गया है जो इसे एक विचित्रतापूर्ण और समृद्ध संग्रह बनाता है।

जुलाई, 2024 में साहित्य समालोचना की एक और किताब प्रकाशित हुई थी। किताब का नाम है "थुनलाइयारि बिजिरलु रायथाइ" (साहित्यभित्तिक समालोचना गद्य)। लेखक हैं राखाउ बसुमतारी और प्रकाशक हैं सिरां पब्लिकेशंस बर्ड। बोडो साहित्य में राखाउ बसुमतारी एक प्रसिद्ध समालोचक के रूप में जाने जाते हैं। उन्होंने बोडो साहित्य समालोचना की विधा में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। थुनलाइयारि बिजिरलु रायथाइ भी ऐसी ही एक महत्त्वपूर्ण किताब है। इसमें कुल 35 गद्य संकलित हैं और कुल पृष्ठों की संख्या 187 है। लेखक ने अन्य लेखकों से अलग

हटकर इस किताब में साहित्य की विभिन्न विधाओं जैसे– कविता, लघुकथा, उपन्यास, नाटक के अलावा नई जमाने के साहित्यिक सिद्धांतों, जैसे उत्तर उपनिवेशवाद, पारिस्थितिक नारीवाद, स्त्री सिद्धांत आदि पर भी ध्यान केंद्रित किया है। इसके अलावा किताब में बोडो कविता, बोडो महिला उपन्यासकारों का इतिहास, बोडो के बड़े साहित्यकारों आदि पर भी चर्चा की गई है।

इस किताब के माध्यम से बोडो साहित्य की शुरुआत से लेकर 21वीं शताब्दी के साहित्यिक सिद्धांतों तक की जानकारी पाठकों को मिल सकती है। इस दृष्टि से इस किताब का सामाजिक और साहित्यिक मूल्य अतुलनीय है जिसे हम आसानी से महसूस कर सकते हैं। लेखक ने अपनी जिंदगी की शुरुआत से लेकर आज तक, विशेष रूप से अपने शिक्षक जीवन के अनुभवों के साथ–साथ समाज को कुछ देने के उद्देश्य से पूरी मेहनत से काम किया है और इसलिए हम उनके प्रति आभार व्यक्त करते हैं।

इस साल की एक और महत्त्वपूर्ण किताब है "सावरायनाय थुनलाइ" (समालोचना साहित्य) जिसका संपादन डॉ. प्रतिमा ब्रह्म ने किया है। यह किताब जनवरी, 2024 में प्रकाशित हुई और नीलिमा प्रकाशनी ने इसे प्रकाशित किया है। इस किताब में संपादक के साथ–साथ अन्य सात लेखकों ने अपना योगदान दिया है। गद्य का विषय एक नहीं बल्कि विभिन्न हैं। कुछ लेखकों ने आधुनिकतावाद पर, कुछ ने भारतीय साहित्य पर, कुछ ने मौखिक भाषा पर तो कुछ ने उपन्यास के नारी चरित्र पर या असम की भाषाओं पर विचार किया है। एक तरह से यह किताब भाषा और साहित्य के अलग–अलग दृष्टिकोणों पर विचार करने की कोशिश करती है। यह संकलन इसलिए भी महत्त्वपूर्ण है क्योंकि कॉलेज और विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में इन सभी विषयों की जरूरत है।

29 दिसंबर, 2024 को एक और गद्य संकलन प्रकाशित हुआ है। इसका नाम है ''राव, थुनलाइ आरो हारिमुनि जौगालु महर'' (भाषा, साहित्य और संस्कृति का विकासशील रूप) । इसका संकलन किया है प्रो. इंदिरा बर' और डॉ. लाइश्री महिलारी ने। इस किताब का प्रकाशन थुनलाइ पब्लिकेशंस ने किया है। इस किताब में शामिल सभी लेख 19 और 20 जनवरी, 2023 को बोडोलैंड विश्वविद्यालय और गौहाटी विश्वविद्यालय के बोडो विभाग द्वारा आयोजित एक संगोष्ठी पर आधारित हैं। किताब में कुल 27 गद्य हैं जिनमें से 23 गद्य बोडो भाषा में और 4 गद्य अंग्रेजी में हैं। किताब के नाम में ही भाषा, साहित्य और संस्कृति शब्द जुड़ा हुआ है इसलिए किताब के लेख भी इन तीन विषयों पर आधारित हैं। इसके अलावा, इस संकलन की एक महत्त्वपूर्ण दिशा यह है कि इसमें नए और पुराने सभी लेखकों ने अपना योगदान दिया है। एक ओर जहाँ भाषा संबंधित लेखों ने अपना स्थान बनाया है, वहीं दूसरी ओर बच्चों के

खेल–कूद और बोडो महिलाओं की वेशभूषा की व्यापारिक दिशा पर भी लेख हैं। इसके अलावा, शब्दभंडार से लेकर पारिस्थितिकी तक के विषयों पर भी चर्चा की गई है। यह किताब विशेष रूप से विश्वविद्यालयों के बोडो विभाग के विद्यार्थियों के लिए लाभकारी सिद्ध होगी, यह हमारा मानना है।

नाटक विधा में नाटक के नवीनतम रूप पर आधारित एक थेङिया नाटक प्रकाशित हुआ है। यह बोडो समाज का एक विशिष्ट नाट्य रूप है जिसमें एक ही अभिनेता अलग–अलग किरदार निभाता है। नाटक का नाम है "गोरोन्थिया सोरनि" (गलती किसकी है) और नाटक के लेखक बिनेन बसुमतारी हैं। यह नाटक बोडोलैंड विश्वविद्यालय के बोडो विभाग द्वारा प्रकाशित किया गया है और इसका प्रकाशन 23 मार्च, 2024 को हुआ। बिनेन बसुमतारी को "आदा फाजा" के नाम से भी जाना जाता है और उन्होंने पहले भी एक थेङिया नाटकों का प्रदर्शन किया है। "गोरोन्थिया सोरनि" उनका पहला प्रकाशित एक थेङिया नाटक है जिसे उन्होंने 1991 में लिखा था। इस नाटक में एक ही कलाकार 18 अलग–अलग किरदार निभाता है और यह नाटक हास्य और लघु घटनाओं से भरा हुआ है। इस प्रकार के नाट्य प्रदर्शन में बीच में केवल एक स्क्रीन होती है जिससे कलाकार अपनी वेशभूषा पीछे जाकर बदलता है और आगे आकर अलग–अलग पात्रों का अभिनय करता है। नाटक में राजा–रानी, राजकुमारी और अन्य काल्पनिक पात्र होते हैं। यह नाटक ग्रामीण क्षेत्रों में विशेष रूप से प्रचलित है जहाँ दर्शक वर्ग इसे बहुत पसंद करते हैं।

इस नाटक की विशेषता यह है कि इसमें अभिनेता एक ही समय में अलग–अलग किरदार निभाता है और उसकी संवाद अदायगी भी किरदार के अनुसार बदल जाती है। यह नाटक न केवल दृश्य और अभिनय की कला में माहिर होता है बल्कि इसे प्रस्तुत करने में शारीरिक और मानसिक कौशल की भी आवश्यकता होती है।

साल 2024 में बाल साहित्य ने कम संख्या में होते हुए भी अपनी पहचान बनाई है। जनवरी, 2024 में राजेंद्र बसुमतारी द्वारा संगृहीत ''खुदियाफोरनि सल''' (बच्चों की कहानियाँ) एक महत्त्वपूर्ण बाल साहित्य–संग्रह है जिसे नीलिमा प्रकाशनी ने प्रकाशित किया। इस किताब में कुल 16 कहानियाँ शामिल हैं जो विभिन्न देशों और प्रदेशों से ली गई हैं जैसे अमेरिका, अफ्रीका, जर्मनी, नेपाल आदि।

इस किताब की एक विशेष कहानी ''भालू और बकरी की सात बच्चों की कहानी'' है। इस कहानी में भालू की चालाकी और बकरी की मासूमियत को बड़े ही रोचक तरीके से प्रस्तुत किया गया है। कहानी का कथानक इस प्रकार हैः

एक बकरी के सात बच्चे थे और बकरी को डर था कि भालू उनके बच्चों को खा सकता है इसलिए वह अपने बच्चों को घर के अंदर ठीक और होशियार होकर रहने को बोलकर खुद बाहर निकल जाती है। जैसे ही बकरी बाहर गई, भालू ने बकरी

की आवाज़ की नकल करके बच्चों को बुलाने की कोशिश की लेकिन बच्चों को यह पता था कि उनकी माँ की आवाज़ कैसी होती है इसलिए वे दरवाजा नहीं खोलते। फिर भालू ने दुकान से चॉक पेंसिल खरीद कर उसे हाथ में लगा लिया और फिर बच्चों को ललचाने की कोशिश की लेकिन बच्चों ने फिर से समझ लिया कि यह उनकी माँ नहीं है। भालू ने हार नहीं मानी और तीसरी बार आटे की दुकान से आटा खरीदकर अपने हाथ में लगा लिया और बकरी जैसी आवाज़ को नरम करके बच्चों को धोखा देने की कोशिश की। इस बार बच्चों ने माँ को आया समझकर दरवाजा थोड़ा खोला और भालू तुरंत अंदर घुस आया।

भीतर घुसते ही भालू ने एक–एक करके छह बच्चों को खा लिया जबकि एक बच्चा जो आकार में सबसे छोटा था छिपकर बच गया। जब बकरी लौटी तो उसने बच्चों के नाम पुकारकर देखा लेकिन किसी ने जवाब नहीं दिया। उसे डर लगा और अंत में वह छुपा हुआ बच्चा सामने आया और उसने पूरी कहानी माँ को बताई कि भालू ने सभी बच्चों को कैसे खा लिया।

इस कहानी के माध्यम से लेखक ने बच्चों को नैतिक शिक्षा देने का प्रयास किया है। बच्चों को यह संदेश दिया गया है कि वे किसी के धोखे में न आएँ और हमेशा सतर्क रहें, खासकर जब कोई उन्हें ललचाने की कोशिश करे। यह कहानी न केवल बच्चों को साहस और चतुराई सिखाती है बल्कि यह भी बताती है कि हमें किसी भी परिस्थिति में अपनी पहचान को खोने नहीं देना चाहिए।

कुल मिलाकर, ''खुदियाफोरनि सल''' बच्चों के लिए एक बहुत ही मनोरंजक और शिक्षाप्रद किताब है जो उन्हें जीवन के अहम् पाठ सिखाने में मदद करती है।

साल 2024 के अनुवाद साहित्य में भी एक उल्लेखनीय कार्य हुआ है जब कनिस्क हाज'वारी ने डॉ. बंशीधर बर' की असमिया भाषा में लिखी कविता को बोडो भाषा में अनूदित किया। इस अनूदित किताब का नाम ''नील दैमानि सेर सेर'' (नील नदी के तीर में) है और इसे जनवरी, 2024 में नीलिमा बर' ने प्रकाशित किया। डॉ. बंशीधर बर' एक चिकित्सक होने के बावजूद साहित्य में गहरी रुचि रखते हैं और अपनी कविता में उन्होंने समाज की सुख–दुख की बातें और मेडिकल साइंस से जुड़ी बातें भी समाहित की हैं। कनिस्क हाज'वारी ने इन सभी पहलुओं को बोडो भाषा में बेहतरीन तरीके से अनुवाद किया है। यह किताब विशेष रूप से उन पाठकों के लिए है जो असमिया और बोडो साहित्य का संगम चाहते हैं।

कनिस्क हाज'वारी ने इससे पहले भी असमिया साहित्यकार ज्योति प्रसाद आगरवाला की नाटक ''शोनित कुँवरी'' को बोडो में ''श'नित खुंग्री'' नाम से अनुवाद किया था। उनकी इस अनुवाद क्षमता को और बेहतर तरीके से समझा जा सकता है जब हम इस कविता का उदाहरण देखते हैं।

"सिर्फ कहने लिखने और सुनने में ही अच्छा है
सभी का तेज लाल है
बातें थीं
पायदान में चलते–चलते
बातें किया करते थे
एक घर बनाने को
एक रसोईघर बनाने को।" (क्यों हम एकजुट नहीं हो पाए)

इस कविता में समाज के संघर्षों और इच्छाओं को दर्शाया गया है और कनिस्क हाज'वारी ने इसे बोडो में उतने ही अच्छे तरीके से अनुवादित किया है जैसा कि मूल कवि ने लिखा था।

साल 2024 में प्रकाशित अन्य किताबों में कई और महत्त्वपूर्ण साहित्यिक कार्य शामिल हैं, जैसेः

1. अनजु की ''रायथाइ आरो सावरायथाइ'' (गद्य और समालोचना)

2. मीरा ब्रह्म का कविता–संग्रह ''थाखोमानाय बरादनि सेर सेर'' (छिपे हुए नसीब के आस पास)

3. डॉ. इंदिरा बर' की समालोचना साहित्य पर आधारित किताब ''थुनलाइयाव समाज सान्थौ आरो गुबुन गुबुन'' (साहित्य में समाज दर्शन और अन्यान्य)

4. भार्जिन जेक'भा मुसाहारी की ''रायथाइ लिरथुम'' (गद्य संकलन)

5. सुनीति बसुमतारी की ''दांग्रिसे खन्थाइ–मेथाइ बिदां'' (गीत और कविता का समूह)

परंतु, इन सभी किताबों की कॉपी हाथ में न होने के कारण इन किताबों पर यहाँ अपनी बात नहीं रख पाई हूँ।

इस वर्ष में प्रकाशित किताबों ने बोडो साहित्य में विविधता और विकास को दर्शाया है और हमें यह उम्मीद है कि आने वाले समय में और भी महत्त्वपूर्ण साहित्यिक कार्य सामने आएँगे और बोडो साहित्य अपनी प्रगति की ऊँचाइयों तक पहुँचने में कामयाब होगा।

❑❑❑

14

मणिपुरी साहित्य

थाङजम शितलजीत सिंह

हिंदी भाषा एवं साहित्य में विशेष रुचि।
संप्रति– हिंदी अध्यापक, मणिपुर।

डॉ. एलाङबम विजय लक्ष्मी

पत्र–पत्रिकाओं में कई रचनाएँ प्रकाशित।
संप्रति– मणिपुर विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में सह आचार्य के पद पर कार्यरत।

रचनाकार अपने परिवेश से अनुभवों को संचित कर उसे कल्पना के रंगों से सजाकर अपनी रचना को रूपाकार देता है। वह अपने परिवेश से गहरे रूप से प्रभावित होता है। समाज का राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और सामाजिक वातावरण रचनाकार के विचारों, दृष्टिकोणों और लेखन के विषयों को प्रभावित करता है। निश्चित ही, परिवेश और साहित्य दोनों एक–दूसरे से गहरे रूप से जुड़े हुए हैं। साहित्य किसी समाज या कालखंड के परिवेश का प्रतिबिंब होता है। साहित्य और परिवेश एक–दूसरे के अंश होते हैं और उनका संबंध जीवन की गहरी समझ को प्रस्तुत करने में मदद करता है। आलोच्य वर्ष 2024 मणिपुर के लिए व्याकुलताओं और अनिश्चितताओं से भरा रहा है। 2024 में मणिपुर अनेक विकट परिस्थितियों से होकर गुजरा है। विदेशी घुसपैठियों के कारण मणिपुर लगभग दो सालों से अशांत है। अनेक हिंसात्मक गतिविधियों से मणिपुर का साक्षात्कार हुआ है। हिंसा का दौर 3 मई 2023 से शुरू हुआ जिसने मणिपुर के जनजीवन को पूरी तरह प्रभावित किया है। मणिपुर के साहित्यकारों ने अपने जीवनानुभवों को भली–भाँति अपनी रचनाओं के माध्यम से व्यक्त किया है। प्रत्येक रविवार को स्थानीय अखबारों में प्रकाशित होने वाली साहित्यिक रचनाओं में मणिपुर की वर्तमान स्थिति में लोगों की विवशता, विस्थापन की पीड़ा और व्याकुल हृदय के वर्तमान प्रवाहों को रचनाकारों ने अपनी सृजनशीलता से व्यक्त किया है। आगे आलोच्य वर्ष में प्रकाशित विविध विधाओं की प्रमुख रचनाओं की चर्चा की जाएगी।

कविता

पूर्व वर्षों की तरह आलोच्य वर्ष में भी सर्वाधिक रूप से कविता–संग्रह प्रकाशित हुए हैं। कहना गलत नहीं होगा कि मणिपुर में साहित्यिक विधाओं में सर्वाधिक प्रिय

विधा कविता ही है। प्रतिवर्ष अनेक कविता–संग्रहों का प्रकाशन होता है जिनमें स्थापित साहित्यिक संस्थाओं की भूमिका भी रहती है और व्यक्तिगत स्तर पर भी प्रकाशन होता है। आलोच्य वर्ष में प्रकाशित कुछ काव्य–संग्रहों में कवि लाइरेनलाक्पम ङौबा द्वारा रचित 'लैचिल्लक्ता लोत्खबी सूईतीया' (बादलों की ओट में सूईतीय) प्रकाशक– अईबा लुप असम, होजाय/नाओरेम लोकेश्वर सिंह की काव्यकृति 'अचाथोइ अमसुङ लाइचनुरा', प्रकाशक– नाओरेम ओङबी थबा देबी एवं नाओरेम सिलविना, मणिपुरी लिटरेरी सोसायटी/ जितेंद्र क्षेत्री की रचना 'अचुम्बगी मचु', प्रकाशक– याइबिरेन कम्यूनिकेशन, इंफाल वेस्ट/एम.डी. नाजिर अहमद की कृति 'नाथैखबा येनिङथा', प्रकाशक – नाओरेम राजेंद्र सिंह, सेक्रेट्री, मणिपुरी लिटरेरी सोसायटी, इंफाल/थाङजम इबेमु की 'कङलैरोनगी कुम्मै', प्रकाशक– के.एस.एच. सन्जित, पेट्रिओटिक राइटर्स फोरम/राजकुमारी मीना देवी की रचना 'तङ ताद्रबा', राजकुमारी मीना देवी/निङथौजम शरतचंद्र का काव्य–संग्रह 'नखोईगीनी पुन्सी चेङजेन से', प्रकाशक – प्रोग्रेसिव राइटर एसोसिएशन/ कवयित्री लाईश्रम रनधोनी द्वारा रचित 'लंबिसिदा', प्रकाशक – पब्लिक लाइब्रेरी, मयाङ, इंफाल/कवयित्री सोईबम सोबिता देबी द्वारा रचित 'चेतना पायू फिजिसे', प्रकाशक – साहित्य थौपाङ लूप/ कवि– डॉ. एल. शशिकुमार का 'नुङ–हिक्न मपाओ' (गीति काव्य), प्रकाशक– डॉ. वाई सुंदरी देवी/मैस्नाम केशो लुवाङ का काव्य–संग्रह 'कुमुदिनी महारानी', प्रकाशक – मैस्नाम चनु रेबिका देवी/खाईदेम लंदनबाला की काव्यकृति 'लंबिसिदा ङाईरकली' (गीति–काव्य), प्रकाशक– वाहेङबम तिकेन, मणिपुरी लिटरेरी सोसायटी, इंफाल /दोनेश्वर कोनसम की रचना 'येनिङथा लोईद्रि', प्रकाशक– अरिबम बोर सिंह, 'सेक्रेटरी, पब्लिक लाइब्रेरी, मयाङ, इंफाल/ भाबिनी अरिबम का काव्य–संग्रह '21 शुबा चहीचागी ईमा' (इक्कीसवीं सदी की माँ), प्रकाशक – अरिबम शांति शर्मा, नागमपाल शिङजुबुङ, इंफाल/कोनसम ओङबी लैबाक लैमा का काव्य–संग्रह – 'थवानमिचाक की लैकोलदा', प्रकाशक– पुखंबम हेरोजीत सिंह, प्रोग्रेसिव राइटर एसोसिएशन, मणिपुर/ओइनाम कुबेर की कृति 'पुन्सिगी पाउखोङ', प्रकाशक – वाहेङबम सखि देवी, असाङबा कम्युनिकेशन, इंफाल/ए.के. जितेन की रचना 'खोयुम नोङदम काओ', प्रकाशक–मणिपुरी लिटरेरी सोसायटी/राहुल हिदङ का 'महौसागी इफुत', प्रकाशक–हिदङमयुम चंद्रकुमार शर्मा, साहित्य थौगल्लुप, इंफाल/थाङजम मुनिन्द्रो का काव्य–संग्रह 'नहाक्तना हेलम्मी ईमा', प्रकाशक–अशाङबम कम्युनिकेशन/के.बी. ईङारेम्बा का 'लाक्लबरा नङबु येन्नीङथा', प्रकाशक–जि. तप्पनकुमार शर्मा, सेक्रेटरी, जयदीप मेमोरियल फाउंडेशन/जिक लोंजम्बा का 'खूनू अङौबी' (लघु कविता), प्रकाशक–मणिपुरी राइटर्स फोरम/प्रो. एस. लनचेनबा मीतै का 'नसुङलाङगी' (गीति काव्य), प्रकाशक– डॉ. एल. इबेतोम्बी देवी, लायुम पब्लिकेशन/एम.डी. नाजिर अहमद की रचना 'नाथैखबा येनिङथा', प्रकाशक

नाओरेम राजेंद्र सिंह, सेक्रेट्री, मणिपुरी लिटरेरी सोसाइटी, इंफाल / थाङजम इबेमु की रचना 'कङलैरोनगी कुम्मै', प्रकाशक– के.एस.एच. सन्जित, पेट्रिआटिक राइटर्स फोरम।

इन काव्य–संग्रहों में से कुछ प्रमुख कवियों और कविताओं की चर्चा यहाँ की जा रही है। कवि लाइरेनलाक्पम ङौबा द्वारा रचित ''लैचिल्लक्ता लोतखबी सूईतीय'' (बादलों की ओट में सूईतीय) में संकलित इसी शीर्षक की कविता में कवि अपनी दुःखभरी गाथा का काव्यात्मक बयान करते हैं। खक ङौबा अपनी स्वर्गवासी दोनों पत्नियों राजकुमारी कलासना देवी व खेमाबति देवी की स्मृति में अपनी वेदना में डूबा रहता है। उस शोक से उबरना उसके लिए अत्यंत कठिन प्रतीत होता है। ''सूईतीया'' लेखक द्वारा अपनी प्रेमिका को दिया हुआ गुप्त नाम है। अपनी प्रियतमा से बिछुड़ने पर विरह से पीड़ित व्याकुल मन को व्यक्त करने के लिए कवि ने स्वप्न–शैली का सहारा लिया है। अपने मन की कामनाओं को निद्रा देवी के सहारे व्यक्त कर कविता को पूर्ण किया है। निःस्वार्थ आध्यात्मिक प्रेम से प्रेरित होकर कवि ने भी अपने विलाप को कविता के रूप में दर्शाया है। कवि सच्चे प्रेम को उच्च स्थान देते हैं। राधा–कृष्ण के प्रेम को नवयुवक–युवती के प्रेम से भिन्न मानते हैं। कवि ने राधा कृष्ण के प्रेम को ईश्वर–प्राप्ति का मार्ग बताया है। जीवन के हर सुख–दुःख में साथ देने वाली प्रियतमा के अचानक इस संसार को छोड़कर चले जाने से हृदय को जो पीड़ा का अनुभव होता है, उसे सहन करना अत्यधिक कठिन होता है। कवि ने अपने व्यक्तिगत अनुभवों का वर्णन करते हुए इन कविताओं को रचा है। उन्होंने मुख्यतः प्रेम, स्वप्न, जीवन से संबंधित घटनाएँ, कल्पना और शांति–मार्ग की खोज को कविता की विषय–वस्तु के रूप में चुना है। कवि अपनी वेदनाओं को काव्य रूप में व्यक्त करते हैं। ऐसा लगता है जैसे कवि अपने बहते आँसू की बूँदों को बादल में परिवर्तित कर पाठकों के आकाश रूपी मन को आच्छादित करने का प्रयास कर रहे हैं।

जित लोंजम्बा के कविता–संग्रह का शीर्षक 'खूनू अङौबी' है। 'खूनू अङौबी' का अर्थ है सफेद कबूतर। कबूतर शांति एवं निश्छलता का प्रतीक माना जाता है। इस संग्रह की 'खूनू अङौबी' शीर्षक कविता में कवि ने एक सफेद कबूतर का चित्रण किया है जो पिंजरे में कैद है। कवि ने आम जनता को कबूतर के माध्यम से व्यक्त किया है। समाज में कमजोर, लाचार व निर्दोष को दबाकर रखने की एक प्रवृत्ति रही है जो आज भी प्रचलित है। इसी का संकेत कवि अपनी कविताओं में व्यक्त करता है। कवि दिखाता कि इस प्रवृत्ति ने सत्ता के दम पर लोगों की स्वतंत्रता के अधिकार को छीन लिया है। कविता में राक्षस का भी उल्लेख किया है जो बड़े–बड़े नेताओं, पूँजीपतियों का प्रतीक है। कविता के अंत में कवि कहता है कि समय रहते हुए अपने अधिकार और स्वतंत्रता के लिए लड़ना चाहिए। विद्वान सज्जनों से भी कवि अनुरोध करते हैं कि समाज को सही मार्ग दिखाएँ। यह लघु कविताओं का संग्रह है। इस संग्रह की

कविताओं में कठिन शब्दों का भरपूर प्रयोग मिलता है। वीर रस और करुण रस प्रधान कविताएँ इस संग्रह की विशेषताएँ हैं। राजकुमारी मीना देवी की काव्य–कृति 'तङ ताद्रबा' शब्द का तात्पर्य है अनिश्चितता। कविता में कवयित्री ने ऐसी स्थिति को दर्शाया है जो अस्थिर, उथल–पुथल से भरी है और अशांत है। कवयित्री वर्तमान मणिपुर की स्थिति से अत्यधिक दुःखी है। अतः उन्होंने अपनी रचनाओं को मुख्यतः उन वीर देशभक्तों को समर्पित किया है जिन्होंने अपने प्रदेश के लिए प्राण त्याग दिए। कवयित्री ने अपनी रचनाओं में मणिपुर राज्य की वर्तमान परिस्थितियों का चित्रण किया है। पिछले दो वर्षों से मणिपुर जल रहा हैं। भयानक दंगे–फसाद का क्रम लगातार चल रहा है जिससे अनेक लोगों की जानें चली गई हैं। अनेक लोग बेघर हो गए हैं। कविताओं में प्रशासन की असफलताएँ एवं सत्ता की अयोग्यताओं को दर्शाया गया है। आज भी अनेक लोग अपनों से बिछड़े हुए रिलीफ कैंपों में जीवन गुजारने को मजबूर हैं। कवयित्री देश के भविष्य को लेकर चिंतित है, इसी का वर्णन वह अपनी कविताओं में कर रही है।

मैस्नाम केशो लुवाङ द्वारा रचित 'कुमुदिनी महारानी' मणिपुर के ऐतिहासिक प्रसंगों को केंद्र में रखकर रची गई है। महारानी कुमुदिनी मणिपुर के इतिहास में न्यायप्रिय और कुशल राजनीतिज्ञ के रूप में पहचानी जाती हैं। इस कविता में महारानी कुमुदिनी की योग्यता का वर्णन किया गया है। यह कविता–संग्रह मणिपुर के प्रसिद्ध राजा चुड़ाचांद महाराज की माता रानी चाओबियाइमा निङथेमचा के जीवन पर आधारित है। एक कविता में राजदरबार से संबंधित अनेक गतिविधियों के बारे में भी वर्णन किया गया है। साथ ही मणिपुर की तत्कालीन राजनीतिक एवं प्रशासनिक परिस्थितियों के बारे में बताया गया है। आज की कठिन परिस्थिति में साहित्यकार अपने गौरवशाली अतीत को याद करते हुए वर्तमान परिस्थिति के साथ तुलना कर रहे हैं। साहित्यकार जीवन जीने के नैसर्गिक अधिकार के लिए अपनी–अपनी रचनाओं के माध्यम से आवाज उठाते प्रतीत हो रहे हैं।

उपन्यास

मणिपुरी साहित्य में उपन्यास हमेशा से कम ही लिखा जाता रहा है। प्रतिवर्ष की तरह इस वर्ष भी उपन्यास कम ही लिखे गए हैं। इस वर्ष प्रकाशित उपन्यासों में है– अराम्बम ओङबी मेमचौबी का उपन्यास 'नोङथ्रै परेङ' / चोङथाम अचौबा का 'वारोईपोत', प्रकाशक– नारेङबम प्रियोबर्ता / चोङथाम दिपु का 'वाङमा वाङमागी थमोई अनी', प्रकाशक – अङोम निङथौ प्रिजर्वेसन सेंटर, इंफाल। लाईश्रम मेमो सिंह द्वारा अनूदित 'पद्मा नदी का नाविक', प्रकाशक– क्षत्रिमयुम याईमा मेमोरियल ट्रस्ट (के.वाई.एम.टी)।

उपन्यासकार अराम्बम ओङबी मेमचौबी मूलतः कवयित्री हैं। मणिपुरी साहित्य के

आधुनिक युग की कवयित्रियों में मेमचौबी का विशेष स्थान है। स्त्रीवादी कवयित्री मेमचौबी अपनी कविताओं में वस्तु एवं शिल्प पर लगातार प्रयोग करती रही हैं। अतीत प्रसंगों के सुंदर प्रतीकात्मक प्रयोग इनकी कविताओं की विशेषता रही है। उन्होंने इस बार कविता के क्षेत्र से निकलकर उपन्यास पर अपनी लेखनी चलाई है। उनका पहला उपन्यास नोङथ्रै परेङ 24 दिसंबर, 2024 को प्रकाशित हुआ। यह उपन्यास मणिपुर में विद्रोही या क्रांतिकारी आंदोलन पर एक नया दृष्टिकोण प्रस्तुत करने का प्रयास करता है। इस उपन्यास के कथानक के माध्यम से आंदोलन की जटिलताओं और उसकी सूक्ष्म बारीकियों को भी उतारने का प्रयास किया गया है। ऐसा करके उपन्यास न केवल विद्रोह की बहुमुखी प्रकृति को उजागर करता है बल्कि उसके सामाजिक संदर्भ पर एक व्यापक टिप्पणी भी प्रदान करता है जिसमें यह मौजूद है। अपने विस्तृत अन्वेषण के माध्यम से लेखिका उपन्यास के पाठकों को क्रांतिकारी आंदोलन और मणिपुरी समाज दोनों के भीतर चल रही गतिविधियों से रू–ब–रू करवाती है। ''नोङथ्रेई पैरेंग'' के प्रकाशन के साथ, अराम्बम मेमचौबी ने उपन्यास लेखन के क्षेत्र में कदम रख दिया है जो एक लेखक के रूप में उनकी बहुमुखी प्रतिभा और गहराई को प्रदर्शित करता है। ''नोङथ्रेई पेरेङ'' के बारे में एक बयान में मेमचौबी ने अपने विकसित होते दृष्टिकोण के बारे में जानकारी साझा करते हुए कहा, ''हमने केवल विद्रोहियों की आलोचना की है लेकिन पिछले साल 3 मई से हमने महसूस किया है कि आंदोलन सच्चाई पर आधारित है और लोग अब उन्हें अलग तरह से देखते हैं।'' यह आत्मनिरीक्षण और परिवर्तन उपन्यास की विषयगत गहराई और सामाजिक जटिलताओं की खोज का संकेत देता है।

मणिपुरी साहित्य में उपन्यास की धारा संकरी ही रही है। इस वर्ष बंगाल के उपन्यासकार माणिक बंद्योपाध्याय द्वारा रचित 'पद्मा नदिर माझी' नामक उपन्यास का लाईश्रम मोमो सिंह ने मणिपुरी भाषा में अनुवाद किया है। इसमें स्वतंत्रतापूर्व भारत और बंगाल विभाजन के पूर्व के देशकाल वातावरण का वर्णन किया गया है। भारत में अंग्रेजी उपनिवेश के समय तथा स्वतंत्रता आंदोलन की चरम स्थिति का वर्णन किया गया है। उपन्यास में मार्क्सवाद की झलक देखने को मिलती है। उपन्यासकार माणिक स्वयं साम्यवाद पर विश्वास रखते थे। तत्कालीन समाज में प्रचलित जमींदारी प्रथा, रीति–रिवाज और उसके प्रति लोगों की घृणित मनोदशा को स्पष्ट रूप से दर्शाया गया है। लेखक द्वारा एक नये समाज का सृजन करने की चाह देखने को मिलती है जहाँ जनता के बीच असमानता न रहे। उपन्यास का मुख्य पात्र कुबेर एक मछुआरे के किरदार में नजर आता है जो संपूर्ण निम्न गरीब वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है। एक परिश्रमी व्यक्ति होने के साथ–साथ वह ईमानदार और अपने काम के प्रति समर्पित इंसान था। अधिक परिश्रम करने पर भी वह तरक्की नहीं कर पाता अपितु गरीबी की

ओर बढ़ता जाता है। वह इसलिए कि मछली पकड़ने के लिए वह जिस नाव का प्रयोग किया करता था। वह किसी अमीर सेठ की थी और उनके द्वारा मेहनत से लाई गई मछलियाँ किसी और द्वारा बाजार में बेची जाती थीं। उन्हें केवल मुनाफे में से कुछ हिस्से पगार के रूप में मिलते थे जिससे जीवन का गुजारा कठिनाई से हो पाता था। नायिका माला के अपाहिज होने पर भी उसके प्रति नायक की सच्ची प्रेम–भावना को भी स्पष्ट रूप से दिखाया गया है। उपन्यास में विवाहित जीवन में दरार, दंपतियों के बीच एक दूसरे को लेकर शंकाएँ आदि का मार्मिक चित्रण देखने को मिलता है। तलाकशुदा स्त्री की परिस्थिति व पराये मर्द की ओर आकर्षित होने तथा जीवन बिताने की संभावनाएँ आदि का भी वर्णन किया गया है।

कहानी

कविता के बाद मणिपुरी साहित्य में कहानी को सर्वाधिक पसंद किया जाता है। इस वर्ष प्रकाशित कहानी–संग्रहों में हाओबम प्रियोकुमार का कहानी–संग्रह 'वारी हैरोन', प्रकाशक– मोईराङथेम नोटिलाल सिंह, सेक्रेटरी, राइटर्स फोरम, इंफाल/आर. के. नाओरिया का कहानी–संग्रह 'ताङगोई ओनखबदा', प्रकाशक–आर. के. नाओरिया (self publication)/ असेम मेमचा का 'नुङशिमन्दुना', 'हुईद्रोम ईबोथे', पब्लिक लाइब्रेरी मयाङ, इंफाल/जि.ए. घनप्रिया– 'मङदाबा', प्रोग्रेसिव पब्लिकेशन सोसाइटी, इंफाल आदि प्रमुख हैं।

इस वर्ष प्रकाशित कहानी–संग्रहों में हाओबम प्रियोकुमार का कहानी संग्रह 'वारी हैरोन' में विविध विषय–वस्तु को केंद्र में रखकर लिखी गई कहानियाँ संकलित हैं। 2019 दिसंबर तथा 2020 की शुरुआत में संपूर्ण विश्व कोविड–19 महामारी से ग्रस्त हो गया था। 2020 की शुरुआत में इस महामारी की चपेट में मणिपुर भी आया। देश भर में लॉकडाउन के चलते जन–जन को घर में कैद होकर रहना पड़ा। हाओबम प्रियोकुमार का कहानी–संग्रह 'वारी हैरोन' इसी कालखंड की देन है। घर से बाहर न निकलने की स्थिति में घर बैठे–बैठे लेखक ने अपने मन में उठने वाले विचारों को व्यक्त करने के लिए कहानी विधा को चुना। इस संग्रह में कुल 303 लघु कथाएँ संकलित हैं– जिनमें प्रमुख हैं– 'खोङदाफम' (कदम रखने का स्थान), 'अचुंबगी चौना' (सत्य की पीड़ा), 'हैनौ मनूङगी तिन' (कुएँ का मेंढक), 'शाजै' (लाठी) आदि। जीवन के विभिन्न मोड़ पर प्राप्त अनुभवों को फिर से जीकर तथा अनुभूत घटनाओं, इच्छाओं तथा मनपसंद क्रियाओं को आधार बनाकर कहानियों को रूपाकार दिया गया है। इस संग्रह में लेखक ने विविध विषय–वस्तुओं को केंद्र में रखा है। पहली कहानी 'खोङदाफम' हास्य–व्यंग्य प्रधान कथा है। इसमें नवविवाहित दंपति के जीवन की कहानी कही गई है। पति के नाटे कद का होने के कारण पत्नी को कई बार लज्जा महसूस होती है। विवाह के दौरान भी दूल्हे के कद को लेकर मजाक बनाया गया था।

एक दिन जब पति स्कूटी चलाकर अपने घर पहुँचा तब आंगन से लगी ड्योढी पर उसकी पत्नी की सहेलियाँ जूते–चप्पल उतार रही थीं जिससे पति मुस्कराते हुए आँगन में स्कूटर गोल–गोल घुमाता रहा। दरअसल कद छोटा होने के कारण वह सीढ़ी के सहारे स्कूटी से उतरता था। 'अचुम्बगी चौना' (सत्य की पीड़ा) कहानी सच बोलने पर मिलने वाली पीड़ा को दिखाने वाली है। 'हैनौ मनूङगी तिन' (कुएँ के मेंढक) कहानी में दिखाया गया है कि संसार में परिश्रम करने वालों से ज्यादा दूसरों की खामियाँ निकालने वाले लोगों की संख्या है। वे लोग हमेशा खुद को सबसे बेहतर समझते हैं। किसी की मेहनत से प्राप्त सफलता कोई मायने नहीं रखती। इस कहानी में सुनील नाम का एक लड़का पूरे तीन–चार साल लगाकर दौड़ने का अभ्यास करता है। वह 100 मीटर की रेस जीत जाता है और उसे इनाम में एक कप मिलता है। जब वह अपने मित्र को वही कप दिखाने जाता है तब उसके मित्र ने बिना सोचे समझे बड़े हल्के में कहा कि तुम तीन–चार साल से इतने छोटे से कप के लिए अपने हाथ पैर तुड़वा रहे थे? उससे ज्यादा बड़ा कप बाजार में मिल जाएगा, कल खरीदकर तुम्हें दिखाता हूँ। संग्रह की कहानी 'शाजै' (लाठी) मध्यवर्गीय मानसिकता को व्यक्त करने वाली है। मध्य वर्ग की एक प्रवृत्ति दिखावे की प्रवृत्ति है। कुछ लोग दिखावे के लिए अपनी हैसियत से ज्यादा पैसे खर्च करने को तैयार रहते हैं पर समाज कल्याण के लिए छोटी–सी रकम भी दान करने में कंजूसी करते हैं। इस कहानी में दिखाया गया है कि वातावरण को साफ रखना हम नागरिकों का दायित्व है। जिस तरह बैल या गाय को सही दिशा में ले चलने के लिए लाठी की जरूरत पड़ती है, उसी तरह हम इंसानों को भी सही राह पर चलाने के लिए कभी–कभार लाठी की जरूरत पड़ती है। एक सुबह दो मित्र आपस में बातें करते हुए सड़क पर टहल रहे थे तब एक कार अचानक सड़क के किनारे रुकी और वहाँ कचरे की पोटली फेंककर तुरंत निकल गई। इसे देख दोनों चौंक गए। दोनों में से एक ने कहा, इतनी महँगी कार चलाते हैं पर डस्टबिन के लिए महीने का 200 रुपए तक खर्च नहीं कर सकते। ऐसे लोगों को सीधा करने के लिए लाठी की सजा दी जानी चाहिए।

कथेतर साहित्य

कविता और कथा साहित्य के अलावा कथेतर साहित्य में विविध विधाओं की रचना से आलोच्य वर्ष समृद्ध है। इस वर्ष प्रकाशित कुछ निबंध–संग्रहों में 'लाइयेकपगी ताईबङदा', लेखक– थोइदिङजम तोम्बी सिंह, प्रकाशक – मोईराङथेम नोटिलाल सिंह, सेक्रेटरी, राइटर्स फोरम, इंफाल / 'थायोन सकनायबा'– प्रो. एस. लनचेनबा मीतै, प्रकाशक– डॉ लाइश्रम ईबेतोम्बी देवी, लायुम पब्लिकेशन, इंफाल / मीतै थौरमलोन अरीबा – प्रो. एस लनचेनबा मीतै, प्रकाशक– डॉ लाइश्रम इबेतोम्बी देवी / अचाथोइ अमसुङ लाइचनुरा– नाओरेम लोकेश्वर सिंह, प्रकाशक– नाओरेम ओङबी थबा देबी

एवं नाओरेम सिलविना, मणिपुरी लिटरेरी सोसाईटी/ककचिङताबम गुणचंद्र शर्मा की पुस्तक 'कबो तंपाक अइखोयगीनि' (कबो घाटी हमारी है), प्रकाशक– ककचिङताबम गुणचंद्र शर्मा आदि उल्लेखनीय हैं।

थोइदिङजम तोम्बी सिंह की पुस्तक 'लाइयेकपगी ताइबङदा' (चित्रकार की दुनिया में) में मूल रूप से एक समाज या समुदाय के ऐतिहासिक विकास की प्रक्रिया में चित्रकला एवं चित्रकारों के योगदान को रेखांकित किया गया है। लेखक के अनुसार चित्रकला कलाओं की आत्मा है। एक समाज को प्रगतिशील होने पर विज्ञान की जितनी आवश्यकता होती है, उतना ही कला का होना भी जरूरी है। विश्व भर के अनेक देशों की सभ्यता के पीछे कहीं न कहीं चित्रकला के विकसित होने के इतिहास को दर्शाया जाता है। निबंध में मुख्यतः चित्रकारों की सोच व विचार, उनके कर्तव्य, बाल चित्रकार, आज के जमाने में चित्रकारों के स्थान आदि की बारीकी से चर्चा की गई है। इसके अतिरिक्त चित्रकला में आधुनिकता एवं उत्तराधुनिकता और मणिपुर में चित्रकला का उद्गम स्रोत आदि के बारे में भी पुस्तक में अवगत कराया गया है। इसमें लेखक द्वारा स्थानीय से लेकर अंतरराष्ट्रीय स्तर तक के प्रसिद्ध चित्रकारों के नाम और उनके कामों का उल्लेख किया गया है जिसमें लिओनार्डो द विन्सी का चित्र मोनालिसा भी है। लेखक का यह मानना है कि कला एक विचार है, सोच है, न कि वह दृश्य जो हमें दिखाई देता है। लेखक ने भौतिकतावाद की तुलना में अद्वैतवाद पर अधिक बल दिया है। प्राचीन भारतीय सभ्यता में थियेटर और फाइन आर्ट्स के योगदान को भी दर्शाया गया है।

प्रो. एस. लनचेनबा मीतै की 'थायोन सकनायबा' मणिपुर की ऋतुओं से संबंधित छोटी–सी पुस्तक मणिपुरी पुया लेखन शैली को अपनाकर रची गई है। इस पुस्तक में चार प्रकार के महीनों का वर्णन किया गया है। इस पुस्तक में यह बताया गया है कि पहले मीतै जाति की प्रथा में कुल सात ऋतुएँ हुआ करती थीं। सातवीं ऋतु को 'ऊरी वाओरीबा' के नाम से जाना जाता था। प्रत्येक महीने से संबंधित देवी–देवताओं के बारे में भी उल्लेख किया गया है।

प्रो. एस. लनचेनबा मीतै की ही दूसरी पुस्तक 'मीतै थौरमलोन अरीबा' मणिपुरी समाज एवं संस्कृति की व्यवस्था और क्रियाकलापों पर केंद्रित है। इस ग्रंथ में 'थौरमलोन' यानि पूजा–पाठ के बारे में उल्लेख किया गया है। मणिपुर में वैष्णव धर्म की पूर्वप्रचलित पूजा–पद्धति एवं उससे संबंधित मान्यताओं के बारे में वर्णन किया गया है। लेखक ने इस पुस्तक में प्रमाणित किया है कि अनादि काल से हमारे पूर्वजों द्वारा इस भूमि की जलवायु, प्राकृतिक अवस्था, जीवन–शैली और मानव स्वभाव को ध्यान में रखते हुए इस भूमि की आबादी के लिए उचित धर्म निर्धारित किया गया था।

ककचिङताबम गुणचंद्र शर्मा की पुस्तक 'कबो तंपाक एइखोयगीनि' (कबो घाटी हमारी है) में मणिपुर के इतिहास में कबो जो वर्तमान में म्यांमार में स्थित है, के बारे में ऐतिहासिक तथ्यों का उल्लेख करते हुए बताया है कि यह इलाका मणिपुर के राजाओं के शासन काल में किस तरह मणिपुर का अभिन्न हिस्सा हुआ करता था। लेखक द्वारा इस पुस्तक–निर्माण का उद्देश्य अपने राज्य के इतिहास को भलीभाँति जानने के लिए प्रोत्साहित करना है। हमारे पूर्वजों द्वारा हासिल किए गए राष्ट्रीय धन, उपलब्धियाँ आदि के बारे में भी यहाँ उल्लेख किया गया है। सन् 1467 में मणिपुर के प्रसिद्ध राजा मैदिङू क्याम्बा का राज्याभिषेक हुआ था और 1470 के युद्ध में कबो क्याङ पर विजय प्राप्त की थी। तब से राजा क्याम्बा नाम से मशहूर हो गए थे। पोङ का शासक राजा चौफा किखोम्बा और राजा क्याम्बा दोनों के समझौते के अनुसार कबो घाटी का हिस्सा मणिपुर को सौंप दिया गया जो आज के बर्मा (म्यांमार) प्रदेश के अंतर्गत आता है। इससे पहले भी मणिपुर के राजा मैडिङू गरीबनिवाज़ (पामहैबा) के शासनकाल में भी अवा (बर्मीज) लोगो के ऊपर आक्रमण कर उन्हें पराजित किया गया था। इसी कारण उनको तेदोङम्बा नाम से भी जाना जाता था। उन्होंने बर्मा की राजधानी में बने महल के द्वार पर तलवार के निशान लगाते हुए मणिपुर की सीमा का निर्धारण किया था। इस तरह के इतिहास की जानकारियों को एकत्रित कर सब देशवासियों को अवगत कराने की अनिवार्यता का लेखक ने अपनी रचना में उल्लेख किया है परंतु लेखक का मानना है कि आज हमारे इतिहास को संरक्षित करने वालों की संख्या पहले की तुलना में बहुत कम नजर आती है। इस पुस्तक निर्माण का उद्देश्य भविष्य के लिए इतिहास की जानकारियों के स्रोत प्रदान करना है।

''कबो घाटी हमारी'' पुस्तक का शीर्षक सन् 1948 के 18 अक्टूबर में संपन्न मणिपुर स्टेट एसेंबली की बैठक में महाराज बोधचंद्र के कथन के आधार पर रखा गया है। लेखक ने इसका मनमर्जी से उपयोग नहीं किया। इस पुस्तक में महाराज चुड़ाचांद और महाराज बोधचंद्र द्वारा रखी गई याचिका 'कबो घाटी हमारी है और होनी भी चाहिए' भी मौजूद है। रचनाकार ने मूल रूप से पुस्तक में मणिपुर का सीमा क्षेत्र, कबो–मैते के संबंध, बर्मा और मणिपुर के बीच कबो घाटी को लेकर विवाद तथा चही तरेत खुंताक्पा अर्थात् सात वर्षों की वीरानी के बारे में बताया है। चही तरेत खुंताक्पा मणिपुरी इतिहास का वो कालखंड है जो अंधकार युग माना जाता है।

नाटक

आलोच्य वर्ष में दो ही नाट्यकृतियाँ उपलब्ध हैं। फुंगा हेरिज इन एसोसिएट विथ मणिपुरी साहित्य परिषद् द्वारा प्रकाशित मुनिश निङथौजम का 'अरोनबा खुजिन थौराङ' और अराम्बम ओङबी मेमचौबी द्वारा रचित नाटक 'तुतेङलोन'। 'तुतेङलोन' इस वर्ष प्रकाशित दूसरी नाट्य–कृति है। मेमचौबी का यह नाटक ऐतिहासिक

आख्यानों पर आधारित और सांस्कृतिक अंतर्दृष्टि को व्यक्त करने वाला है। नाटक के बारे में मेमचौबी ने स्वयं स्पष्ट किया, ''यह एक ऐसा नाटक है जो एक न्यायप्रिय और सत्यवादी राजा के बारे में है। यह नाटक इतिहास के ऐसे पाठ पर आधारित है जो हमारे गौरवशाली अतीत के बारे में अनेक जानकारी देता है।'' तुतेङलोन के माध्यम से मेमचौबी दर्शकों को प्राचीन इतिहास की एक आकर्षक झलक प्रदान करती है जिसमें कल्पना को तथ्यात्मक तत्त्वों के साथ जोड़ा गया है।

आलोचना

आलोच्य वर्ष में आलोचनात्मक पुस्तकें कम ही प्रकाशित हुई हैं। इनमें निङोम्बम नंदो सिंह की पुस्तक 'मणिपुरी खोरिरोलदा लनाई मितयेङ', प्रकाशक– पुखंबम शिल्ला, अशाङबा कम्यूनिकेशन, वाङखै, इंफाल/सलाम शांतिबला देवी की पुस्तक 'ताबुनुङगी ही–याई', प्रकाशक– सलाम शांतिबला देवी, सेक्रेटरी, पलेम–पनथौ कल्चरल ट्रस्ट, इंफाल उल्लेखनीय हैं। पूर्व के वर्षों से आलोच्य वर्ष में समीक्षात्मक पुस्तकें बहुत कम लिखी गई हैं। इन दो पुस्तकों में 'मणिपुरी खोरिरोल दा लन्नाइ मित्येङ्' इस वर्ष की महत्त्वपूर्ण समीक्षात्मक पुस्तक है। नंदो ऐसे युवा रचनाकार हैं जिन्होंने मणिपुरी गीतों की रचना में अपनी प्रतिभा का परिचय देकर अपना एक निश्चित स्थान बनाया है। इस पुस्तक से कहा जा सकता कि निङोम्बम नंदो मणिपुरी साहित्य के क्षेत्र में उभरते हुए समीक्षक भी बन गए हैं। इस पुस्तक में कुल ग्यारह आलेखों का संचयन किया गया है। लेखक ने मणिपुरी साहित्य के नवजागरण काल से लेकर वर्तमान के प्रमुख साहित्यकारों, जिनमें कवि ख्वाइराकपम चाओबा, हिजम अङाङहल, श्रीबिरेन, नबकिशोर, ओलेल मैतै, चाखोमइ और क्षेत्री राजेन की रचनाओं का गहराई से अध्ययन करते हुए उनकी विचार–दृष्टि, रचना–कौशल और चिंतन–पद्धति का भलीभाँति विश्लेषण किया है। साथ ही अपनी सूक्ष्म दृष्टि से अपने विचारों को प्रामाणिकता के साथ व्यक्त किया है।

यात्रा वृत्तांत

मोइरेङजम ओङबी बसंती, सिङ एंड सन पब्लिशर्स, हाइलाकांदि के प्रकाशन में सुब्राम द्वारा रचित 'सिलेटता नुमित तरेतनी' शीर्षक यात्रा वृत्तांत इस वर्ष प्रकाशित एकमात्र ऐसी पुस्तक है जिसमें बांग्लादेश की यात्रा का वर्णन किया गया है। रचनाकार सुब्राम एक प्रसिद्ध लेखक के रूप में लोकप्रिय हैं। उन्होंने अनेक विधाओं पर अपनी लेखनी चलाई है परंतु यह उनका प्रथम यात्रा–वृत्तांत है। यह पुस्तक ग्यारह भागों में विभाजित है जिसमें उन्होंने सिलेट अर्थात् बंगलादेश यात्रा की कहानी कही है। लेखक बंगलादेश में आयोजित मणिपुर शॉर्ट स्टोरी सोसायटी इंडिया के पच्चीसवें लघु कथा सम्मेलन में भाग लेने के लिए गए थे। सम्मेलन समाप्त होने के पश्चात् तीन दिन और वहाँ ठहरकर सिलेट में बसने वाले मैते के कुछ गाँवों में जाकर

वहाँ के लोगों से मिले और कुछ पौराणिक व ऐतिहासिक स्थानों का भी भ्रमण किया। वहाँ उन्होंने सुरमा नदी का दर्शन किया, साथ ही मणिपुर के प्रसिद्ध मार्गदर्शक जननेता हिजम इरावट की प्रतिमा को भी देखा। मणिपुर के पूर्व शासक राजा मार्जित के निवास स्थान का भी दर्शन किया। इसके अतिरिक्त कई स्थानों का भी भ्रमण किया। लेखक की यात्रा सन 2022 के 24 दिसंबर की सुबह असम राज्य के जारिबोन लाईश्रम नामक एक छोटे से गाँव से प्रारंभ हुई थी और 30 दिसंबर को वे वापस भारत लौट आए थे। उस यात्रा में लेखक के साथ पाँच अन्य लोग भी थे जिनमें से एक महिला सदस्य थीं।

राष्ट्रीय भाषा दिवस के अवसर पर आयोजित साहित्यिक समारोह 2024 में तीन वर्ष का पुरस्कार प्रदान किया गया। मणिपुरी लैंग्वेज डे स्टेट लेवल सेलिब्रेशन कमेटी कला–संस्कृति विभाग तथा डायरेक्टोरेट ऑफ लैंग्वेज प्लानिंग एंड इंप्लिमेंटेशन के संयुक्त तत्त्वावधान में मणिपुरी भाषा के आठवीं अनुसूची में शामिल होने के संबंध में 20 अगस्त 2024 को मणिपुरी फिल्म डेवलपमेंट सोसायटी के सभागार में 37वाँ मणिपुरी भाषा दिवस मनाया गया। इस आयोजन में तीन वर्षों से स्थगित साहित्यिक पुरस्कार– मणिपुरी स्टेट एवार्ड फॉर लिटरेरी सन 2021, 2022, 2023 प्रदान किए गए। सन 2021 के लिए डॉ इरुङबम देबेन को काव्य पुस्तक (मालङबना करि हायरि), सन 2022 के लिए माईबम नबकिश्वर को लघु कथा पुस्तक (थम्मोईगी मरी) तथा सन 2023 के लिए प्रो. नहाकपम अरुणा देवी को आलोचना पुस्तक (अहिङबा उपन्यास) के लिए पुरस्कृत किया गया। इस कार्यक्रम में राज्यस्तरीय समारोह समिति के अध्यक्ष वर्तमान शिक्षा मंत्री श्री बसंत कुमार, सभाध्यक्ष, कार्य मंत्री श्री गोबिंदास कोन्थौजम, प्रधान अतिथि तथा राज्य सभा विधायक श्री लैशेम्बा सनाजाओबा और पहारी क्षेत्र समिति के अध्यक्ष श्री दिगाङलुङ गाङमै मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। इस तरह के आयोजन निश्चित रूप से साहित्य रचना को प्रोत्साहित करेंगे। अतः साहित्य रचना में जुड़े सभी प्रतिभाशाली रचनाकारों के लिए इस तरह के आयोजन की व्यवस्था प्रतिवर्ष की जानी चाहिए।

❑❑❑

15

मराठी साहित्य

डॉ. पी. विठ्ठल

कवि, आलोचक और उपन्यासकार, कविताओं के अंग्रेजी, हिंदी, गुजराती, पंजाबी और उर्दू में अनुवाद, कई महत्त्वपूर्ण पुरस्कार प्राप्त। संप्रति–स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाड़ा विश्वविद्यालय, नांदेड़ (महाराष्ट्र) के भाषा विभाग में प्रोफेसर।

मराठी भाषा भारतीय भाषाओं में एक महत्त्वपूर्ण भाषा है। महाराष्ट्र के साथ–साथ गोवा में भी मराठी भाषा बोली जाती है। दुनिया भर में मराठी भाषा बोलने वालों की संख्या बहुत अधिक है। 2011 की जनगणना के अनुसार मराठी भाषा बोलने वालों की जनसंख्या लगभग 14 करोड़ है। 1961 की जनगणना के अनुसार यह संख्या लगभग साढ़े तीन करोड़ के आसपास थी। इसका मतलब यह है कि महाराष्ट्र राज्य के गठन के बाद के पाँच–छह दशकों में मराठी भाषा बोलने वालों की संख्या में अत्यधिक वृद्धि हुई है। किसी भी समाज में क्षेत्रीय या मातृभाषा का उपयोग बढ़ना एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण घटना है। हालाँकि, मराठी भाषा के सामने अंग्रेजी और हिंदी जैसी भाषाओं के साथ–साथ अन्य भाषाओं की चुनौती खड़ी है। फिर भी, मराठी दुनिया में दसवीं और भारत में तीसरी सबसे बड़ी भाषा बन गई है।

मराठी भाषा के लिए 2024 का वर्ष कई मायनों में महत्त्वपूर्ण रहा है क्योंकि इसी वर्ष केंद्र सरकार ने मराठी भाषा को 'अभिजात भाषा' का दर्जा दिया है। मराठी भाषा एक अत्यंत प्राचीन भाषा है। इस भाषा की उम्र लगभग दो हज़ार वर्ष है। मराठी भाषा ईसा पूर्व में अस्तित्व में थी, इसके कई प्रमाण विद्वानों ने दिए हैं। 3 अक्टूबर 2024 को केंद्र सरकार ने मराठी भाषा की अभिजातता पर मुहर लगाई जिससे मराठी भाषा बोलने वालों में बहुत उत्साह है क्योंकि इस निर्णय से हमारी भाषा की प्रतिष्ठा बढ़ेगी, ऐसी अपेक्षा हर मराठी व्यक्ति को है। भाषा के आधार पर प्रांतों के गठन के अनुसार महाराष्ट्र राज्य का निर्माण 01 मई 1960 को हुआ था लेकिन इससे पहले भी सैकड़ों वर्षों तक मराठी भाषा में उत्कृष्ट और शास्त्रीय ग्रंथों की रचना हुई है। 'गाथा सप्तशती', 'विवेकसिंधु', 'लिळाचरित्र', 'ज्ञानेश्वरी' से लेकर 21वीं सदी की साहित्यिक कृतियों तक मराठी भाषा की समृद्ध परंपरा प्रवाहित होती दिखाई देती है। हालाँकि, पिछले हज़ार–बारह सौ वर्षों में मराठी भाषा पर कई संकट आए। इसका अस्तित्व खतरे में पड़ गया लेकिन मराठी भाषा समाप्त नहीं हुई। यह हर युग में विकसित होती

रही। मराठी भाषा को कुछ बदलावों को अपनाना पड़ा। बदलते समय के साथ मराठी भाषा को नया रूप धारण करना पड़ा। प्राचीन संप्रदायों ने मराठी भाषा में लेखन करके इसे समृद्ध किया। मराठा साम्राज्य के दौरान मराठी भाषा को राजकीय प्रतिष्ठा के साथ–साथ बड़ी लोकप्रियता भी मिली। इस दौरान कई कवियों और मराठी शायरों ने मराठी भाषा में ग्रंथों की रचना की। ब्रिटिश शासन काल में यानी 19वीं सदी में मुद्रण तकनीक और पत्र–पत्रिकाओं के कारण मराठी भाषा को नया वैभव प्राप्त हुआ। भाषा के विकास को गति मिली। ब्रिटिश शासन काल में यानी आधुनिक काल में मराठी भाषा के लिए अनुकूल स्थिति रही लेकिन इस दौरान 'भाषा शुद्धि आंदोलन' भी चलाया गया क्योंकि हर युग में भाषा में कुछ परिवर्तन होते हैं। ये परिवर्तन मनुष्य के सामाजिक और व्यावहारिक जीवन से उत्पन्न होते हैं।

19वीं और 20वीं सदी में मराठी भाषा का दायरा और बढ़ गया। विशेष रूप से स्वतंत्रता पूर्वकाल की साहित्यिक परंपरा ने मराठी भाषा को एक अलग पहचान दिलाई। स्वतंत्रता के बाद के काल में भी महाराष्ट्र राज्य के गठन के बाद मराठी साहित्य में उत्पन्न विभिन्न प्रवाहों (दलित, ग्रामीण, स्त्रीवादी, आदिवासी आदि) ने मराठी भाषा को दुनिया भर में पहुँचाया। आज मराठी भाषा दुनिया भर में मराठी लोगों के जीवन और प्रगति की भाषा बन गई है। हालाँकि, भाषा के प्रति डर का भाव अभी भी लोगों के मन में है लेकिन अभिजात भाषा का दर्जा मिलने से मराठी भाषा के प्रति आत्मविश्वास मजबूत होगा। इससे भाषा का प्रसार बढ़ेगा और जीवन के सभी क्षेत्रों (जैसे शिक्षा, प्रशासन, ज्ञान–विज्ञान, शोध, मीडिया, साहित्य और कला, कानून आदि) में मराठी भाषा का उपयोग बढ़ने की संभावना है। भाषा के प्रति पूर्वाग्रह को दूर रखा जाए तो मराठी भाषा ज्ञान की भाषा बन सकती है, यह जागरूकता मराठी भाषा बोलने वालों को रखनी चाहिए। मराठी भाषा को अभिजात भाषा का दर्जा मिलने के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 'एक्स' माइक्रोब्लॉगिंग साइट पर प्रतिक्रिया व्यक्त की– "यह सम्मान मराठी भाषा द्वारा हमारे देश के इतिहास को दिए गए समृद्ध सांस्कृतिक योगदान का सम्मान है। मराठी भाषा हमेशा भारतीय विरासत की आधारशिला रही है"। मराठी भाषा को अभिजात भाषा का दर्जा मिलने से यह भाषा अब तमिल, संस्कृत, तेलुगु, कन्नड़ और मलयालम जैसी अभिजात भाषाओं की परंपरा में शामिल हो गई है।

मराठी भाषा को अभिजात भाषा का दर्जा मिलने से पहले एक और अत्यंत महत्त्वपूर्ण घटना घटी, वह यह कि महाराष्ट्र सरकार ने भाषा नीति को मंजूरी दी। श्री लक्ष्मीकांत देशमुख की अध्यक्षता में 2021 में गठित 'भाषा सलाहकार समिति' ने महाराष्ट्र राज्य के अगले पच्चीस वर्षों की नीति तैयार की थी। मराठी भाषा और मराठी संस्कृति के विकास और मराठी भाषा को ज्ञान और रोजगार की भाषा के रूप में और

विकसित करने के लिए इस 'भाषा नीति' में कई महत्त्वपूर्ण बातें शामिल हैं। विभिन्न साहित्यिक संस्थाओं, विश्वविद्यालयों, भाषा से जुड़े संगठनों, भाषाविदों और विद्वानों के साथ चर्चा करके 'मराठी भाषा नीति–2023' को अंतिम रूप दिया गया था। पठन संस्कृति और पुस्तकालय आंदोलन के संदर्भ में भी इस नीति में कई सिफारिशें की गई हैं। इस 'भाषा नीति' की अंतिम रिपोर्ट अप्रैल 2023 में सरकार के मराठी भाषा विभाग को सौंपी गई थी। इस नीति के मसौदे को 13 मार्च 2024 को मंत्रिमंडल ने मंजूरी दी। इस नीति की मराठी भाषा बोलने वालों को लंबे समय से प्रतीक्षा थी। इस नीति का सख्ती से क्रियान्वयन होने पर मराठी भाषा को देश में सम्मानजनक स्थान मिलेगा, ऐसी भावना व्यक्त की जा रही है। 'भाषा नीति' भारत के संविधान की प्रस्तावना के उद्देश्यों और सिद्धांतों के अनुरूप है और भाषा के आधार पर प्रांतों के गठन के पीछे के दृष्टिकोण को रेखांकित करती है। 'यह भाषा नीति केवल मराठी भाषा बोलने वालों के भौगोलिक निवास पर आधारित नहीं है, बल्कि समग्र मराठी भाषा बोलने वालों के सांस्कृतिक और भावनात्मक एकता के दृष्टिकोण से बृहन्महाराष्ट्र की अवधारणा को केंद्र में रखती है। देश के विभिन्न प्रांतों और दुनिया भर के विभिन्न देशों में रहने वाले मराठी भाषा बोलने वालों की महाराष्ट्र से अपेक्षाओं पर भी विचार किया गया है और इस संदर्भ में कई महत्त्वपूर्ण सिफारिशें की गई हैं। इस नीति का मूल सामाजिक न्याय, लैंगिक समानता और विविधता में एकता जैसे मूलभूत मूल्यों की सुरक्षा और संवर्धन में भाषा की भूमिका को ध्यान में रखकर मराठी भाषा नीति तैयार की गई है। यह भाषा नीति के मसौदे में उल्लेखित है। इस नीति से मराठी भाषा को और अधिक प्रवाही और विचारवान बनना चाहिए, ऐसी अपेक्षा समिति ने व्यक्त की है। विशेष रूप से भारतीय स्वतंत्रता के शताब्दी समारोह वर्ष (2047) तक यानी अगले 25 वर्षों में मराठी भाषा को अपने मूल सामर्थ्य के साथ ज्ञान और रोजगार की भाषा के रूप में स्थापित करना, यह लक्ष्य इस नीति में उल्लेखित है।

मराठी विश्वविद्यालय की स्थापना की सिफारिश 'भाषा सलाहकार समिति' ने की थी। इस सिफारिश को सरकार ने तुरंत लागू किया और विदर्भ के अमरावती जिले के रिद्धपुर में विश्वविद्यालय स्थापित करने का निर्णय लिया गया। वरिष्ठ विचारक डॉ. सदानंद मोरे की अध्यक्षता में 'मराठी विश्वविद्यालय निर्माण समिति' गठित की गई थी। इस समिति ने गहन अध्ययन करके सर्वोत्तम दूरदर्शिता वाला मसौदा सरकार को सौंपा था। इसके अनुसार इस विश्वविद्यालय को मान्यता दी गई। रिद्धपुर गाँव में मराठी भाषा विश्वविद्यालय की स्थापना करने के पीछे एक विशेष कारण है। महानुभाव पंथ के संस्थापक चक्रधर स्वामी के 'लिळाचरित्र' ग्रंथ की रचना इसी गाँव में हुई थी। महानुभाव पंथ की काशी के रूप में रिद्धपुर की पहचान है। यह विश्वविद्यालय मराठवाड़ा के अंबाजोगाई में होना चाहिए, ऐसी मांग भी थी। हालांकि, सरकार ने

रिद्धपुर गाँव को प्राथमिकता दी। इस विश्वविद्यालय के पहले कुलपति के रूप में डॉ. अविनाश आवलगावकर को चुना गया है। इस विश्वविद्यालय से मराठी भाषा, साहित्य, संस्कृति और शोध को व्यापक गति मिलेगी। यह विश्वविद्यालय भविष्य में वैश्विक स्तर पर अपनी छाप छोड़ेगा, ऐसी अपेक्षा है।

साहित्य सम्मेलन मराठी भाषा बोलने वालों के लिए एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण घटना है। लगभग सौ वर्षों से अधिक की परंपरा वाला अखिल भारतीय मराठी साहित्य सम्मेलन अगले दो वर्षों में शताब्दी पूरी करेगा। मराठी के अलावा दुनिया या देश की किसी भी भाषाई–सांस्कृतिक परंपरा में इतनी लंबी परंपरा वाले सम्मेलन दुर्लभ हैं। 19वीं सदी के अंत में न्यायमूर्ति महादेव गोविंद रानाडे ने 1878 में लोकहितवादी के सहयोग से उस समय के लेखकों को एकत्र करने का निर्णय लिया था। ग्रंथ प्रसार और साहित्यिक चर्चा इसका उद्देश्य था। इसके अनुसार 11 मई 1878 को पुणे में लेखकों का पहला सम्मेलन आयोजित किया गया था। 1878 से 2024 तक लगभग डेढ़ शताब्दी (146 वर्ष) में देश के विभिन्न हिस्सों में 97 साहित्य सम्मेलन आयोजित किए गए हैं। 2024 में वरिष्ठ उपन्यासकार डॉ. रवींद्र शोभणे की अध्यक्षता में फरवरी के पहले सप्ताह में अमळनेर में 97वाँ अखिल भारतीय मराठी साहित्य सम्मेलन आयोजित किया गया था। यह सम्मेलन अखिल भारतीय साहित्य महामंडल, मुंबई और अमलनेर के प्रताप महाविद्यालय द्वारा आयोजित किया गया था। विशेष रूप से अमळनेर में ही डॉ. वासुदेव मुलाटे की अध्यक्षता में 'विद्रोही' साहित्य सम्मेलन भी उत्साहपूर्वक आयोजित किया गया।

'महाराष्ट्र राज्य साहित्य और संस्कृति मंडल' ने 2024 में तर्कतीर्थ लक्ष्मणशास्त्री जोशी के समग्र साहित्य का एक अत्यंत महत्त्वाकांक्षी प्रोजेक्ट पूरा किया है। तर्कतीर्थ लक्ष्मणशास्त्री जोशी महाराष्ट्र के एक वरिष्ठ विचारक और लेखक के रूप में लोकप्रिय थे। विश्वकोश मंडल के पहले अध्यक्ष रहे जोशी का ज्ञान अद्भुत था। भारत सरकार ने उन्हें 'पद्मभूषण' और 'पद्मविभूषण' से सम्मानित किया था। बुद्धिवादी विचारक के रूप में प्रसिद्ध जोशी 1960 से महाराष्ट्र राज्य साहित्य और संस्कृति मंडल के अध्यक्ष भी थे। उनकी रचनाएँ अत्यंत मौलिक हैं। डॉ. सुनीलकुमार लवटे जी ने तर्कतीर्थ लक्ष्मणशास्त्री जोशी के समग्र साहित्य के लगभग 18 खंड संपादित किए हैं। लगभग 11000 पृष्ठों का यह साहित्य विविधतापूर्ण और विशिष्ट है। इन सभी खंडों में जोशी द्वारा लिखित मराठी विश्वकोश की प्रविष्टियों को शामिल किया गया है, साथ ही उनके भाषण, लेख, साक्षात्कार, शोध प्रबंध और जीवनियाँ, मराठी और संस्कृत भाषा की विभिन्न पुस्तकों के लिए उनकी प्रस्तावनाएँ, समीक्षाएँ, पत्र और भारतीय संविधान का संस्कृत अनुवाद भी शामिल है। साथ ही जोशी के संदर्भ में कुछ सम्मानपरक लेख और आलोचनात्मक लेख भी इन खंडों में हैं। इन अठारह खंडों से तर्कतीर्थ जैसे महान

विद्वान का महाराष्ट्र को नए सिरे से परिचय मिलेगा। साथ ही उनका समग्र साहित्य शोधकर्ताओं को एक साथ अध्ययन करने में सहायक होगा। डॉ. लवटे मराठी के एक महत्त्वपूर्ण लेखक और शोधकर्ता हैं। उन्होंने बहुत मेहनत से इन 18 खंडों का संपादन किया है। इस संपादन से पाठकों, शोधकर्ताओं और विद्वानों को एक बड़ा साहित्यिक खजाना आसानी से उपलब्ध हो गया है। प्रत्येक खंड के लिए लवटे ने स्वतंत्र प्रस्तावना लिखी है। महाराष्ट्र राज्य साहित्य और संस्कृति मंडल ने इस प्रोजेक्ट को आर्थिक सहायता दी जिससे यह बड़ा काम संभव हो सका। साहित्य और संस्कृति को समृद्ध करने वाला यह एक महत्त्वपूर्ण प्रोजेक्ट है।

भालचंद्र नेमाडे मराठी के एक प्रसिद्ध लेखक हैं। भारतीय स्तर के 'ज्ञानपीठ' पुरस्कार से उन्हें 2015 में सम्मानित किया गया था। उपन्यासकार, आलोचक, कवि, विचारक के रूप में उनकी पहचान है। उनकी समग्र साहित्यिक रचना यात्रा बहुत ही अनोखी रही है। इस वर्ष उनका 'सट्टक' शीर्षक से कविता–संग्रह प्रकाशित हुआ है। 'लोकसंगीत की लय को अपने अंदर समेटती यह कविता मौखिक परंपरा को अपने साथ जोड़कर संत परंपरा को अपना बनाती है और अपना नया स्वरूप गढ़ती है। 'सट्टक' कविता–संग्रह मराठी कविता को एक नयी ऊर्जा प्रदान करता है'। यह इस कविता संग्रह के संदर्भ में शोभा नाईक जी ने कहा है।

अमोल पालेकर भारतीय सिनेमा को समृद्ध करने वाले एक महत्त्वपूर्ण अभिनेता, निर्देशक और चित्रकार के रूप में प्रसिद्ध हैं। हाल ही में उनकी 'ऐवजः एक स्मृतिबंध' पुस्तक प्रकाशित हुई है। उनके 80वें जन्मदिन के अवसर पर इस आत्मकथात्मक पुस्तक का प्रकाशन हुआ। इस पुस्तक में पालेकर ने अपने जीवन के विभिन्न पहलुओं के साथ भारतीय सिनेमा का चित्र प्रस्तुत किया है। व्यक्तिगत यादों के साथ विभिन्न फिल्मों के संदर्भ में उनकी यादें इस पुस्तक में संकलित हैं। सत्तर के दशक के प्रायोगिक नाटक आंदोलन जैसी कई बातों को पालेकर ने इस पुस्तक में उजागर किया है। मराठी सिनेमा के एक अन्य निर्देशक चंद्रकांत कुलकर्णी की पुस्तक इस वर्ष प्रकाशित हुई है। 'चंद्रकांत कुलकर्णी सादर करीत आहे' उनकी नाट्य यात्रा की पुस्तक है। कुलकर्णी ने मराठी सिनेमा और नाटक को एक अलग पहचान दिलाई है इसलिए उनकी इस पुस्तक के प्रति पाठकों में विशेष रूप से नाटक और सिनेमाप्रेमियों में बहुत उत्सुकता है।

'मराठी कवितेचा कोलाज' वर्जेश सोलंकी द्वारा संपादित कविता–संग्रह 2024 का एक महत्त्वपूर्ण योगदान है। मराठी भाषा की लगभग 200 कवियों की कविताओं का गुजराती भाषा में अनुवाद किया गया है। मूल मराठी भाषा की कविता और उसका गुजराती अनुवाद इस संग्रह में पढ़ने को मिलता है। अश्विनी बापट ने बहुत मेहनत से मराठी कविताओं का गुजराती अनुवाद किया है। लगभग साढ़े छह सौ

पृष्ठों का यह संपादित संग्रह पठनीय और संग्रहणीय है। 'स्त्री साहित्याचा मागोवा' (खंड 5, ई.स. 2011 से 2020) डॉ. मंदा खांडगे द्वारा संपादित एक और महत्त्वपूर्ण ग्रंथ है। साहित्यप्रेमी भगिनी मंडल, पुणे की इस संस्था का यह प्रोजेक्ट शोधकर्ताओं के लिए अत्यंत उपयोगी साबित होगा। इससे पहले इस प्रोजेक्ट के चार खंड प्रकाशित हो चुके हैं। डॉ. ज्योत्स्ना आफले, डॉ. विद्यागौरी टिलक, अंजली कुलकर्णी और डॉ. रूपाली शिंदे जैसे समकालीन शोधकर्ताओं ने इस प्रोजेक्ट के लिए बहुत मेहनत की है।

'फुले आंबेडकरी साहित्य कोश' महेंद्र भवरे और संपादक मंडल द्वारा संपादित एक महत्त्वपूर्ण ग्रंथ (कोश) है। इस साहित्य कोश में प्रगतिशील और प्रगतिवादी विचारों के 560 स्त्री–पुरुष लेखक, विचारक, पत्रकार, कवि, आंबेडकरी जलसाकार, नाटककार, आलोचक आदि के बारे में संदर्भ सहित प्रविष्टियाँ शामिल हैं। शुरुआत से 2022 तक के कालखंड के लेखकों की प्रविष्टियाँ इस कोश में हैं जिससे यह कोश संदर्भपूर्ण है। इसके अलावा प्रसिद्ध नाटककार महेश एलकुंचवार का 'बिन्दुनादकलातीत' शीर्षक से ललित निबंध–संग्रह प्रकाशित हुआ है। मूल रूप से एलकुंचवार नाटककार के रूप में प्रसिद्ध हैं लेकिन उनका ललित गद्य भी पठनीय है। प्रो. यशवंत सुमंत का 'स्त्रीवादाची ओळख : स्त्रीमुक्तीकडून मानव मुक्तीकडे' शीर्षक से छोटी सी पुस्तक स्त्रीवादी आंदोलन और उदारवादी तथा मार्क्सवादी (समाजवादी) स्त्रीवाद पर प्रकाश डालती है। समकालीन शोधकर्ता नीलकंठ कदम की 'कविताः आस्वाद आणि समीक्षा' पुस्तक प्रकाशित हुई है। कदम ने जिन कवियों की कविताएँ पसंद कीं या उन्हें विशिष्ट लगीं, उन कवियों पर लिखे लेख इसमें शामिल हैं। साथ ही 'निशाणी डावा अंगठा' साक्षरता अभियान पर लिखे गए रमेश इंगळे उत्रादकर के उपन्यास का नाट्य रूपांतर 'निशाणी डावा अंगठा' (दो अंकीय नाटक) के नाम से मंगेश बनसोड ने किया है। साहित्यिक कृति के माध्यमांतरण के रूप में यह कृति महत्त्वपूर्ण है। डॉ. दिलीप धोंडगे के संत तुकाराम और अन्य साहित्यिक विषयों पर चिंतन से संबंधित पुस्तक का संपादन डॉ. नंदकुमार मोरे ने किया है। 'फोडिले भांडार' इस पुस्तक का नाम है और इसे कोल्हापुर की 'भाषा विकास शोध संस्था' ने प्रकाशित किया है। 'तुकोबांच्या अभंगाची शैली', 'मी माणसा', 'तुका म्हणे', 'चिंतनाशी नलगे वेळ', 'नव्हे माझा शब्द एक देशी' इन चार भागों में कुल अठारह लेख इस संपादन में संकलित हैं।

2024 में सैकड़ों पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं लेकिन सभी पुस्तकों का उल्लेख करना संभव नहीं है। हालाँकि, कुछ महत्त्वपूर्ण पुस्तकों का संकेत करना चाहिए। 'हिंदुत्व नव्हे भारतीयत्व' (लक्ष्मीकांत देशमुख), 'आर्टिफिशियल इंटेलिजन्स' (नीलांबरी जोशी), 'बांधावरची झाडे' (व्ही.एन. शिंदे), 'धरणसूक्त' (विलास शेलके), 'सुरांची साम्राज्ञी लता मंगेशकर' (डॉ. मृदुला दाढे), 'हिंदुत्व मार्क्सवाद आणि भारत' (विजय आपटे), 'विवाह

नाकारताना' (विनया खडपेकर), 'वाणी आणि लेखणी' (दिलीप माजगावकर), 'मेड इन चायना' (गिरीश कुबेर), 'दिशा आणि वाटाः काही प्रवासनोंदी' (आशुतोष जावड़ेकर), 'चोखोबांचा परिवारः एक शोध' (माधव पुटवाड), 'भूत वर्तमान आणि स्मृति' (श्रद्धा कुंभोजकर), 'महात्मा फुले विचारधारा आणि मराठी साहित्य' (संपादक वंदना महाजन और अन्य), 'धूळधाण' (गंगाधर गायकवाड), 'सत्य, सत्ता आणि साहित्य' (जयंत पवार), 'इतर गोष्टी' (प्रसाद कुमठेकर), 'एक पाय जमिनीवर' (शांता गोखले), 'नागकिन्नरी' (किशोर तरवडे), 'बुद्धाच्या हस्तमुद्रेतील रहस्य' (रवींद्र इंगले चावरेकर), 'मांजरखिंड' (मारुती ज्ञानू मांगोरे), 'माणसांच्या गोष्टी' (छाया महाजन), 'पुरोगामी साहित्य समीक्षेचे राजकारण' (मिलिंद कसबे), 'लोकपरंपराः नाट्य आणि अभिव्यक्ति' (श्रीकृष्ण काकडे), 'हैदराबाद मुक्तिसंग्रामातील झुंजार महिला' (डॉ. उर्मिला बोधनकर–चाकूरकर), आंबेडकरी शिक्षणाचा परिप्रेक्ष (डॉ. गिरीश मोरे), 'तट्टयाची शाळा' (डॉ. संजय कुलकर्णी), 'उच्च शिक्षण धोरण: आव्हाने आणि दिशा' (डॉ. डी. एन. मोरे), 'बंधाटी' (नवनाथ गोरे) जैसे कई लेखकों और शोधकर्ताओं की विविध पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं।

इसके अलावा इस वर्ष 'उलट्या कडीचे घर' (सुनील उबाले), 'स्मशानात फुलं वेचताना' और 'घेतलय स्टेअरिंग हाती' (पद्यरेखा धनकर), 'शब्दांच्या पसाऱ्यातील अर्थाच्या आत्महत्या' (सुनीता झाडे), 'अस्वस्थतेपार' (शशिकांत हिंगोणेकर), 'बाई बाई सांग अर्थात् बाईच्या कविता 2' (किरण येले), 'असण्याचे सुंदर ओझे', 'शाबूत राहो ही लव्हाळी' (अंजली कुलकर्णी), 'अथांग' (महावीर जोंधले), 'माती मागतेय पेनकिलर' (सागर जाधव जोपूलकर), 'दंगल होतेच कशी?' (गौतम ढोके), 'जामिनावर सुटलेला काळा घोडा' (धनाजी धोंडीराम घोरपडे), 'नवी लिपी' (राजेंद्र गोणारकर)', 'भुंडया डोंगराचे दिवस' (रवी कोरडे), 'मृगपक्षी' (बाबासाहेब सौदागर), 'मावळत्या गावाचे गाणे' (तीर्थराज कापगते) जैसे कुछ उत्कृष्ट कविता–संग्रह प्रकाशित हुए हैं।

उपर्युक्त सभी भाषाई और सांस्कृतिक घटनाओं का मराठी संस्कृति पर बड़ा प्रभाव रहा है। मराठी भाषा को 'अभिजात' दर्जा मिलने से साहित्य सम्मेलन के साथ–साथ अन्य महत्त्वपूर्ण कार्यक्रमों में भाषा से संबंधित चर्चा, सेमिनार आदि कार्यक्रमों का बड़े पैमाने पर आयोजन किया गया। दिसंबर महीने में पुणे के फर्ग्युसन कॉलेज में नेशनल बुक ट्रस्ट ने 'पुणे बुक फेस्टिवल' आयोजित किया था। इस दौरान भाषा के संदर्भ में व्यापक चर्चा हुई। विशेष रूप से इस पुस्तक महोत्सव को पाठकों ने भरपूर प्रतिसाद दिया। कई नये–पुराने प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित पुस्तकों की बड़ी मात्रा में बिक्री हुई। ऑनलाइन और ऑडियो बुक्स के युग में यह एक सुखद बात है। इसके अलावा महाराष्ट्र के विभिन्न हिस्सों में साहित्य सम्मेलन, पुस्तक चर्चा, भाषा से संबंधित कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। साथ ही इस वर्ष प्रकाशित पुस्तकों ने पाठकों को नई चेतना दी, ऐसा कहा जा सकता है। साहित्य का प्रभाव क्षेत्र अब

विस्तृत हो गया है। साहित्य और संस्कृति का बड़े पैमाने पर विकेंद्रीकरण हुआ है। डिजिटल और सोशल मीडिया के युग में अभी भी पाठक पुस्तकें पढ़ते हैं, यह एक सुखद बात है।

2024 में कई पुस्तकों को देश स्तर पर महत्त्वपूर्ण पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। इनमें मुख्य रूप से साहित्य अकादेमी, दिल्ली; राज्य वाङ्मय पुरस्कार, मुंबई; महाराष्ट्र फाउंडेशन, अमेरिका; आपटे वाचनमंदिर, इचलकरंजी; महाराष्ट्र साहित्य परिषद, पुणे; मराठवाड़ा साहित्य परिषद, छत्रपति संभाजीनगर; विदर्भ साहित्य संघ, नागपुर; मनोरमा साहित्य पुरस्कार, सोलापुर; स्व. गणेश चौधरी काव्य पुरस्कार, जळगाँव; दक्षिण महाराष्ट्र साहित्य सभा, कोल्हापुर; जैसे कई पुरस्कार शामिल हैं। हालाँकि सभी पुस्तकों का उल्लेख करना संभव नहीं है, लेकिन कुछ चुनिंदा पुस्तकों का परिचय इस अवसर पर लिया जा सकता है।

भारत सासणे मराठी के एक महत्त्वपूर्ण लेखक हैं। गहन लेखन करने वाले सासणे ने कहानी, उपन्यास, नाटक, बालसाहित्य जैसे कई साहित्यिक विधाओं में लेखन किया है। उनका लेखन अत्यंत प्रभावशाली होता है। पाठकों की भावनाओं को झकझोर देने वाले लेखक के रूप में उनकी छवि है। सासणे के 'समशेर आणि भूत बंगला' उपन्यास को बालसाहित्य के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार इस वर्ष प्राप्त हुआ। यह उपन्यास नई पीढ़ी के बच्चों और किशोरों के लिए लिखा गया है। इसी तरह नई पीढ़ी के प्रतिभाशाली लेखक देविदास सौदागर के 'उसवण' उपन्यास को युवा पुरस्कार से सम्मानित किया गया। देविदास सौदागर मराठवाड़ा के तुलजापुर के रहने वाले हैं। सिलाई का काम करने वाले इस युवा लेखक ने दर्जी के जीवन और उसके संघर्ष को उपन्यास में प्रस्तुत किया है। सौदागर के दो कविता संग्रह भी प्रकाशित हैं। इस वर्ष के अंत में मराठी के वरिष्ठ आलोचक डॉ. सुधीर रसाल के 'विंदांची गद्यरूपे' पुस्तक को साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। रसाल को गंभीर आलोचक के रूप में जाना जाता है। उन्हें पुरस्कार मिलने से मराठी पाठकों में खुशी की लहर है। 'नई राहें तलाश करने वाले कवि' उनकी इसी वर्ष प्रकाशित एक महत्त्वपूर्ण पुस्तक है।

❑❑❑

16

मलयालम साहित्य

प्रो. बी. अशोक

अध्ययन–अध्यापन कार्य में संलग्न। एक मौलिक रचना और दो अनूदित रचनाएँ प्रकाशित। अनुवाद के लिए अभयदेव पुरस्कार और हिंदी की सेवा के लिए विशिष्ट सेवा सम्मान। संप्रति– आचार्य, यूनिवर्सिटी कॉलेज, तिरुवनंतपुरम तथा संपादक 'भारत' पत्रिका।

मलयालम भारतीय राज्य केरल, लक्षद्वीप और पुदुच्चेरी के मोह जिले में बोली जाने वाली भाषा है। यह द्रविड़ भाषा परिवार से संबंधित है। मलयालम भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में उल्लिखित बाईस भाषाओं में से एक प्रमुख भाषा है। यह भाषा केरल राज्य की मातृभाषा है। केरल और लक्षद्वीप के अलावा खाड़ी, सिंगापुर, मलेशिया जैसे देश की केरलीय विरासत के कई लोग मलयालम भाषा का प्रयोग करते हैं।

मलयालम भाषा की उत्पत्ति के संबंध में अस्पष्ट दस्तावेज मौजूद हैं। ऐसा माना जाता है कि मलयालम तमिल का परिवर्तित रूप है। यद्यपि मलयालम–भाषी आबादी को सामान्यतः मलयाली कहा जाता है लेकिन मलयालम भाषा की केरलीय परंपरा को देखते हुए उन्हें केरलीय भी कहा जाता है। विश्वभर में 3.5 करोड़ लोग मलयालम बोलते हैं। द्रविड़ भाषा परिवार से संबंधित मलयालम का संस्कृत और तमिल जैसी अन्य भारतीय भाषाओं से स्पष्ट संबंध है।

आधुनिक मलयालम साहित्य को पश्चिमी साहित्य के प्रभाव के कारण आए परिवर्तनों के रूप में परिभाषित किया जाता है। औपनिवेशिक शासन के दौरान यूरोपीय भाषाओं को सीखने और उन भाषाओं की कृतियों को पढ़ने के अवसरों ने कुछ साहित्यिक पुनर्जागरण संबंधी विचारों का मार्ग प्रशस्त किया। शब्दकोशों, व्याकरण की पुस्तकों और प्रकाशन उपकरणों की उपलब्धता से समाचार पत्रों को बढ़ने में मदद मिली। औपनिवेशिक सरकारों द्वारा लागू की गई शिक्षा प्रणालियों के कारण वैज्ञानिक और तकनीकी विषयों में प्राप्त ज्ञान और राष्ट्रीय चेतना ने आधुनिक साहित्य की दिशा निर्धारित की। कालांतर में आधुनिकता के सभी गुण उसमें सम्मिलित हुए।

मलयालम की उत्तर आधुनिक साहित्यिक कृतियों में पारंपरिक तरीकों से आमूलचूल बदलाव देखा जा सकता है। मलयालम में उत्तर आधुनिक साहित्यिक

कृतियों की परिभाषा क्या है, इस पर आलोचकों में मतभेद है। प्रख्यात कथाकार ओ. वी. विजयन ने मलयालम साहित्य को आधुनिकता से उत्तर आधुनिकता की ओर ले जाने में क्रांतिकारी भूमिका निभाई। संतोष इचिक्कनम जैसे युवा लेखकों ने इसे नये आयाम देने में उल्लेखनीय भूमिका निभाई। हालाँकि, इनमें से अधिकांश रचनाएँ इस तरीके से लिखी गईं हैं कि पाठक के लिए उन्हें समझ पाना कठिन है। साहित्यिक आलोचक यह भी तर्क देते हैं कि इस सचेत शैली के पीछे पारंपरिक ढाँचे और रूढ़ियों को तोड़ने का प्रयास छिपा है। जो भी हो, मलयालम की उत्तर आधुनिक साहित्यिक कृतियाँ मानव मन की साहित्यिक पिपासा के लिए नये मार्ग तलाशती हैं।

यहाँ वर्तमान वर्ष में प्रकाशित मलयालम साहित्य की लोकप्रिय रचनाओं पर विचार किया गया है।

केवल मनुष्य (वेरुम मनुष्यर) यह मुहम्मद अब्बास की आत्मकथा है। यह पुस्तक पागलपन से जकड़े जीवन से गुजर रहे एक साधारण व्यक्ति के संघर्ष का दस्तावेज है। इसमें प्रेमियों, प्रेमिकाओं, बकरियों से भरे नरक, वासना और अंतहीन जुनून से भरा एक ज्वलंत जीवन विद्यमान है।

इस आत्मकथ्य में लेखक ने अपने जीवन को खुला रखा है। आजीविका के लिए छोटी उम्र में तमिलनाडु से उत्तर केरल पहुँचने वाले लेखक अपने जीवन अनुभवों को इस आत्मकथा में अंकित करते हैं। लेखक खुद बयान करते हैं कि जब आप व्याकरण की दृष्टि से गलत विचारों को किसी ऐसी भाषा में संप्रेषित करते हैं जिसे आपने स्वयं सीखा है तो आप पाएँगे कि बहुत–सी चीजें खो गई हैं। कृपया अपने अंदर साहित्यिक सौंदर्य की तलाश न करें। कथा शैली का मजाक न उड़ाएँ। कुछ जीवन, नहीं, कई जीवन, ऐसे ही होते हैं। बस याद रखने लायक कुछ भी नहीं है। मैंने हाल ही में एक किसान के जूते की तस्वीर देखी थी जो बिजली गिरने से मर गया। तार से सिले हुए वे जूते ही उसके अकेले जूते नहीं थे। ये लाखों लोगों के जूते हैं जिनमें मेरे भी शामिल हैं। मैं केवल वही जीवन कहानियाँ बता सकता हूँ जो वे जूते बता सकते हैं।

बीमार धन [रोगप्पणम] (जयकृष्णन टी)

यह उपन्यास आठ अध्यायों में विभाजित है। डॉ. जयकृष्णन एक जन–स्वास्थ्य विशेषज्ञ हैं जो सामुदायिक चिकित्सा पर अध्ययन, अध्यापन और लेखन करते हैं। पुस्तक में स्वास्थ्य को एक वस्तु बनाने के पहलुओं पर विस्तार से चर्चा की गई है। चर्चा की शुरुआत स्वास्थ्य के महत्त्वपूर्ण सामाजिक, राजनीतिक और वाणिज्यिक आयामों पर माइकल मर्मोट के प्रासंगिक दृष्टिकोणों का हवाला देकर होती है। इसमें यह भी बताया गया है कि स्वास्थ्य संबंधी मुद्दों का आकलन करते समय दान–कार्य पर जोर देने से सामाजिक–राजनीतिक परिस्थितियों से ध्यान हट जाता है। इस बात पर दृढ़ता से विचार किया जाना चाहिए। क्या सरकारी अस्पतालों में न्यूनतम उपचार

शुल्क लेने की प्रथा अत्यंत गरीब लोगों को उस सुविधा का उपयोग करने से रोकेगी? उन्होंने यह भी चेतावनी दी है कि लोगों को स्वास्थ्य क्षेत्र में व्याप्त सार्वजनिक–निजी भागीदारी परियोजनाओं में छिपे खतरों के प्रति जागरूक होना चाहिए। साथ ही, भारत में चिकित्सा उपचार की लागत अमीर देशों की तुलना में बहुत कम है। दूसरा खतरा तब पैदा होता है जब यहाँ चिकित्सा पर्यटन के माध्यम से विशेष रूप से उनके लिए सुविधाएँ तैयार की जाती हैं। चूँकि अस्पताल उद्योग का ध्यान पर्यटन पर केंद्रित है, इसलिए कुछ अस्पताल एक या दो स्थानीय परिवारों के हाथों में जा रहे हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि कई स्थानों पर चर्चा अधूरी है, शायद इसलिए क्योंकि एक साथ कई मुद्दों पर चर्चा हो रही है। कुछ स्थानों पर दोहराव और प्रमाण की कठिनाई के अलावा, यह पुस्तक स्वास्थ्य विपणन की राजनीति पर चर्चा करने के लिए एक अच्छा प्रारंभिक बिंदु है।

एक भारतीय मुसलमान की काशी यात्रा

(यात्रावृत्त)–पी षानवास

षानवास एक पत्रकार हैं जो कि नारायण गुरु और श्री एम से होकर सूफी परंपराओं की यात्रा में स्वयं को मुक्त करने का प्रयास करते रहे हैं। आज भी उनकी आध्यात्मिक और भौतिक यात्राएँ जारी हैं जिनमें स्थापित धर्मों, मीडिया दृष्टिकोणों और सत्ता के रूपों की कड़ी आलोचना की जाती है। उन्होंने कभी भी अपने मूल्यों से समझौता नहीं किया बल्कि निरंतर आध्यात्मिक संघर्षों में निरत रहे। तथाकथित मुस्लिम भय के इस युग में एक भारतीय मुसलमान द्वारा संचालित काशी यात्रा पूर्णतः आकर्षक तथा खतरनाक रही।

षानवास ने मलप्पुरम भू–भाग को चित्रित करने का प्रयास किया है। मानचित्र का विवरण, इतिहास और वर्तमान को गहराई से वर्णित किया है। अरबों के आगमन से लेकर जमोरिन जाति और उसके बाद कम्युनिस्ट पार्टी और मुस्लिम लीग की स्थापना के इतिहास तक, मलप्पुरम के गलत समझे गए ऐतिहासिक महत्त्व को स्पष्टता से उल्लिखित किया है। राजनीति की जोरदार आलोचना के बजाय, षानवास रचनात्मक चेतना की रंगीन सरणि को चित्रित करने का प्रयास करते हैं जो मलप्पुरम को सांस्कृतिक विविधता का केंद्रीय स्थान बनाती है।

गीतों के साथ–साथ चित्रकला भी षानवास की कथाओं में शामिल है। षानवास ने चित्रों के उदाहरणों के साथ मालाबार के लोगों और पोंनानी की प्रकृति के प्रति पणिक्कर के अटूट प्रेम को प्रकट किया है। दूसरी ओर, यह पुस्तक इंडियन यूनियन मुस्लिम लीग के गठन के इतिहास का वर्णन करते हुए, लीग के बाद के पतन और संपूर्ण मुस्लिम समुदाय के अपनी सूफी परंपराओं से दूर होते जाने के दर्द को भी साझा करती है। आत्म–वार्ता की सुंदरता इस यात्रा संस्मरण को आकर्षक तथा पठनीय बनाती है।

ध्वनि संहति [साउंड सिस्टम]

(कहानी संग्रह)—शफीक मुस्तफा

कथ्य को भावनाओं के धरातल पर घुमा फिराकर यथार्थ को दबाने की कला से 'साउंड सिस्टम' कहानी संग्रह पूरी तरह बचता दिखाई पड़ता है। शफीक मुस्तफा की कहानी की दुनिया रोमांटिक भाषा से नहीं बुनी गई है। ये रचनाएँ अलंकरण और काव्यात्मक अभिव्यक्तियों से पूरी तरह बचती हैं तथा इसके स्थान पर सामान्य कहानी कहने की भाषा और शैली का उपयोग करती हैं। कहानीकार को विषय चुनते समय या उससे कथानक विकसित करते समय औचित्य की सीमाएँ परेशान नहीं करतीं। इन सबके परिणामस्वरूप, वह एक ऐसी दुनिया बनाने में सक्षम होता है जो अदृश्य और अद्वितीय है जैसे वीणा बजाने वाला ऑर्फियस। यह कहानी अपने आसपास की दुनिया की नयी व्याख्या करने के साथ ही पाठकों को नये अनुभव प्रदान करती है।

काँव [क्रा] (कहानी संग्रह)—दिन्नु जॉर्ज

'व्लादिमीर की खिड़की' (दिन्नु जॉर्ज) के कहानी—संग्रह की सर्वश्रेष्ठ कहानी है। यह एक ऐसी कहानी है जो कथा की सूक्ष्मता और नवीनता को मूर्त रूप देती है। कथावाचक लेखक है जो शासन के अधीन लॉज रूम की वास्तविक खिड़की और अवास्तविक खिड़की के बीच भ्रम में फँस गया है। उसे व्लादिमीर ने वर्षों पहले लॉज रूम की दीवार पर चित्रित किया था। कथावाचक होटल प्रबंधक कुलकर्णी पर भरोसा नहीं करता, अपनी पत्नी पर संदेह करता है, केवल सरकार पर भरोसा करता है। यह विश्वास समर्पण की लालसा को दर्शाता है। कहानीकार समकालीन लेखकों में फैली राज्य के प्रति अनिच्छुक निष्ठा की विफलता की आलोचना करता है।

कहानी 'क्रा' एक बेतुकी दुनिया की असुरक्षा में फँसे लोगों की चीख से पाठकों को मोहित कर लेती है। दिन्नू जॉर्ज ने इस कहानी में एक कथात्मक रणनीति तैयार की है जो भारतीय मान्यताओं में पुनर्जन्म की संभावना और काफ्का की बेतुकी दुनिया को जोड़ती है। कहानी 'क्रा' मूलतः काफ्का की लेखन शैली और उनके उपन्यास 'मेटामोर्फोसिस' की देन है। यह मौलिक उधार, जिसे लेखक स्वयं स्वीकार करता है, 'क्रा' कहानी के स्तर को ऊँचा उठाता है। चूँकि माँ की मृत्यु पिता और बच्चे के परिवर्तन का कारण है, इसलिए 'क्रा' मृत्यु के साथ आने वाली अनिश्चितता की कहानी भी है।

दिन्नू जॉर्ज ने 'क्रा', 'शब्ददंगल' जैसी कहानियों की बेतुकी कथात्मक शैली को 'कुरिशिन्ते वजी' कहानी में जारी रखा है। कहानी को बेतुकी कथात्मक शैली में कहते हुए भी लेखक ने इस बात का ध्यान रखा है कि कहानी बहुत जटिल न हो जाए। 'द वे ऑफ द क्रॉस' बेबीचन की कहानी है जो अपने मित्र कोचुकुंजू के साथ अपनी चिंता साझा करता है। जिसे उन्होंने मारा था, वह मारा नहीं गया था। दिन्नू जॉर्ज ने

समय के साथ यीशु के क्रूस तक के सफर की कहानी को दो हत्यारों के जीवन में पिरोया है। इस कहानी की पूरी कथावस्तु ही बेतुकी हो जाती है।

अक्कम्मा के माध्यम से तीन जुँओं को स्वतंत्रता के बालों वाले जंगल में जाने देकर दिन्नू जॉर्ज दार्शनिक अंतर्दृष्टि को सामने रखते हैं कि 'प्राण' एक ही है। 'प्रणाम' कहानी में दिन्नू जॉर्ज ने इस बशीरियन मिथक को अतियथार्थवादी तरीके से प्रस्तुत किया है कि छिपकलियाँ, तिलचट्टे और साँप सहित सभी जीवित जंतु युद्ध के देवता के वंशज और पृथ्वी के उत्तराधिकारी हैं। दिन्नू जॉर्ज अपनी कहानी के लिए बशीर के उपन्यास 'शब्ददंगल' का शीर्षक अपनाते हैं और 'प्रणाम' कहानी में वे बशीर की शैली और चरित्र को उधार लेते हैं। यह उधारी 'प्रणाम' की कहानी को कमजोर बनाती है। 'ओरु गर्भम' ऐसी कहानी है जिसे कथा में अपूर्णता के कारण गर्भावस्था के दौरान छोड़ दिया गया था। बिना किसी संदेह के यह कहा जा सकता है कि कहानी संग्रह 'क्रा' की सबसे खराब कहानी 'ओरु गर्भम' है।

फिलिस्तीनः शिकारों के शिकार [पालस्टीनः इरकलुडे इरकल]

(लेख) सं. कमलराम सजीव

2020 में एक सौ तीन वर्ष की आयु में फिलिस्तीन के येरुशलम में रिफ्का की मृत्यु हो गई जिससे उनका स्वतंत्र फिलिस्तीन का महान सपना अधूरा रह गया। रिफ्का, फिलिस्तीन के ज़ायोनी उपनिवेशीकरण से भी पुराना है। शायद यही कारण है कि नये अमेरिकी कवियों में से एक, मोना रिफके द्वारा लिखित भूमिका का शीर्षक है, प्रेम ''इज़राइल'' से भी पुराना है। इजराइल, आधुनिक विश्व इतिहास में अभूतपूर्व पैमाने पर, फिलिस्तीन में रंगभेद और नरसंहार जैसी मानव–विरोधी प्रथाओं को लागू करना जारी रखे हुए है।

फिलिस्तीन के खिलाफ युद्ध मूल्यांकन इस ऐतिहासिक सत्य के आधार पर किया जाना चाहिए कि इजरायल आधुनिक इतिहास में सबसे भयानक उपनिवेशवादी शक्ति है। जब फिलिस्तीन मानव सभ्यता के सामने चिल्लाता है तो उसे धरती के चेहरे से मिटा दिया जाता है। यह तथ्य इस संपादित रचना का मूल है। पुस्तक में लोकप्रिय भावनाओं की राजनीति को जोड़कर गहराई से समझने की कोशिश की गई है। फिलिस्तीन के विरुद्ध इजरायल का युद्ध जारी है। फिलिस्तीन को राज्य का दर्जा देने संबंधी प्रस्ताव को संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा अनुमोदित कर दिया गया। फिलिस्तीन के समर्थन में अमेरिकी परिसरों में शुरू हुआ छात्र विरोध प्रदर्शन दुनियाभर के परिसरों में फैल रहा है। कमलराम सजीव द्वारा संपादित और रैट बुक्स द्वारा प्रकाशित 'विक्टिम्स ऑफ विक्टिम्स' फिलिस्तीन के भविष्य और कब्जे की राजनीति की जाँच करती है जो समकालीन वैश्विक राजनीति का केंद्रबिंदु बन गया है।

हृद्द्वार खोलते वक्त (हृदय कवाडम तुरक्कुम्बोल)

(कविता संग्रई)—जॉर्ज

यह जॉर्ज की हास्य से रँगे समकालीन अक्षरों की चमक को जताती कविताएँ हैं। अमेरिकी धरती पर बैठकर केरल के परिवेश की प्रेरणा से कविता लिखते समय वह एक देश की धड़कन बन जाती है। भूतकाल का घटनाक्रम वर्तमान काल से जुड़े हुए भविष्य पर नजर डालने वाला काव्यमय हृदय का उद्‌गार है 'हृद्द्वार खोलते वक्त'। हृदय का द्वार खुल जाएगा, क्रिसमस, चंद्रिकाचर्चित मन, क्रिसमस रात, हेलोवीन का डरावना मीठा हदन, सातवें समुद्र के पार, जागो, पुथुमारन का ओणम, सातवें समुद्र के पार, भ्रष्टाचार छंद, बेथलहम आकाश का तारा, हृदय की वेदी पर, समुद्र के उस पार, मेरे प्यार, अस्तबल की ओर, गाइडेड स्टारलाइट जैसी कविताओं के माध्यम से धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण और स्नेहिल स्पर्श प्रदान करना कवि का लक्ष्य है।

मौत का गड्‌ढा (मृत्युगर्तम)

(उपन्यास)—नसीरा

मानवजाति एक महामारी की तुलना में युद्ध से अधिक आतंकित होती है। शांत और सुंदर राष्ट्रीय भू—भाग पर संघर्ष भयानक बन जाता है। यह हमने यूक्रेन—रूस हमले में भी देखा। वहाँ राक्षसीपन को सटीक रूप से देखा जा सकता है। जहाँ समकालीन इतिहास बदल दिया गया। नाज़िरा ने युद्ध के अनुभव को बहुत ही शक्तिशाली ढंग से 'मौत का गड्‌ढा' उपन्यास में दिखाने का प्रयास किया है। युद्ध को खूनी बना दिया गया। उपन्यास में रूस की अतृप्त रक्तपिपासा को सूक्ष्मता और सच्चाई के साथ वर्णित किया गया है। दुनिया में शांति के लिए शोर मचाने वाले साम्राज्य ही नरहत्या के लिए उद्यत हैं।

कल्पना हारून, सिद्धार्थ इसाबेल जैसे कितने दुर्भाग्यपूर्ण जन्म अंतहीन पीड़ाओं से जूझ रहे हैं। पृथ्वी के विभिन्न कोणों से ज्ञान की पिपासा शांत करने के लिए यूक्रेन पहुँचा हुआ युवा इस भीषण नरहत्या का शिकार बन रहा है। उपन्यासकार के इस प्रश्न के सामने सब लज्जित हो जाते हैं कि क्या शांति की माँग कर रहे विश्व के राष्ट्र यह नहीं जानते?

इस प्रकार 2024 के मलयालम साहित्य ने अपनी समृद्ध परंपरा का अनुसरण करते हुए इस साल भी भारतीय साहित्य जगत में अपनी अमिट छाप छोड़ी है।

❑❑❑

मैथिली साहित्य

17

वैद्यनाथ झा

दो मैथिली बाल कथा–संग्रह तथा एक हिंदी बाल कथा–संग्रह प्रकाशित। पंजाबी से चार उपन्यासों, कथा–संग्रहों और एक बाल कथा–संग्रह, संस्कृत की सौ बाल–कथाओं के संग्रह और एक ओड़िया कविता–संग्रह का मैथिली में अनुवाद। तीन साहित्यिक पुरस्कार प्राप्त।

मैथिली साहित्य की सभी विधाओं में विपुल रचनाएँ प्रकाशित हो रही हैं पर सर्वाधिक प्रकाशन कविता विधा में हो रहा है। यह आम धारणा है कि कविता मन–मस्तिष्क पर त्वरित प्रभाव डालती है।

इस आलेख में आलोच्य वर्ष 2024 में मैथिली में प्रकाशित सभी विधाओं की प्रकाशित पुस्तकों की चर्चा की जाएगी। वैसे यह एक व्यावहारिक सच है कि किसी भाषा के साहित्य के एक वर्ष के संपूर्ण प्रकाशन को एक आलेख में समेटना मुश्किल है, फिर भी यथासंभव प्रयास किया गया है।

कविता

इस वर्ष मैथिली में कविता–संग्रह 'कालिदास' प्रकाशित हुआ है। कविताओं का चयन व संकलन भावना मिश्र ने किया है। इसमें 43 मैथिली कवियों की कविताएँ संकलित हैं। इन सभी कविताओं का केंद्र संस्कृत के प्रसिद्ध महाकवि कालिदास का व्यक्तित्व और कृतित्व है। महाकवि कालिदास अपनी शैली, शिल्प और छंद–प्रयोग की कुशलता के लिए विख्यात हैं। उपमा अलंकार के सिद्धहस्त प्रयोग में वे अप्रतिम थे। प्रकृति–सौंदर्य और कल्पनाशीलता उनके काव्यों के मुख्य भाव रहे हैं। पौराणिक चरित्र भी उनकी कृतियों के वर्ण्य–विषय रहे हैं। मैथिली के विभिन्न कवियों ने कालिदास की इन विशिष्टताओं को अपनी रचनाओं में समेटा है।

वैज्ञानिक और प्रौद्योगिकी क्रांति ने समाज, संस्कृति और अर्थव्यवस्था को ही नहीं अपितु साहित्य को भी प्रभावित किया है। विज्ञान और तकनीक ने मनुष्य को हर क्षेत्र में सुविधाएँ दी हैं और एक नई सभ्यता विकसित की है। बदलती जीवन–शैली ने बहुत–सी समस्याओं को भी जन्म दिया है। इसने जीवन के मूलभूत तत्त्व–हवा, पानी, मिट्टी, जंगल सबको प्रदूषित किया है तथा यह जीव–जंतुओं और प्राकृतिक उपादानों के आपसी संतुलन को भी बिगाड़ रही है। इस खतरे की ओर वे साहित्यकार आगाह कर रहे हैं जो स्वयं वैज्ञानिक हैं। यह एक शुभ संकेत है कि वैज्ञानिक और टेक्नोक्रेट

भी साहित्य–सृजन में उतर रहे हैं। वे खतरों के प्रति अपनी कविताओं, कथाओं, नाटकों, उपन्यासों के माध्यम से हमें सचेत कर रहे हैं।

ऐसे ही एक वैज्ञानिक श्री राजकिशोर मिश्र हैं जिन्होंने एक काव्य–संग्रह की रचना की है। संग्रह का नाम 'ऊर्जस्विनी' है। इस खंडकाव्य में इन्होंने ऊर्जा को नायिका बनाया है। कविताओं के माध्यम से उन्होंने ऊर्जा के संरक्षण, वस्तुनिष्ठ, तार्किक उपयोग और प्रदूषण की भयावहता की ओर ध्यान आकर्षित किया है। विज्ञान आज की सभ्यता का आधार है, ऐसा उनका मानना है– "विज्ञान पर अछि ठाढ़, ई नव सभ्यता/वर्तमान जुग सुख–सुविधाक रचयिता" (पृ0 36)। प्रदूषण मानव सभ्यता के अस्तित्व पर प्रश्नचिह्न लगाता है। इसके कारण पारिस्थितिकी तंत्र का संतुलन बिगड़ रहा है। मनुष्य की कई गतिविधियों पर बुरा प्रभाव पड़ता है– "उजड़ि जेतै व्यापार/बिलटि जेतैक उद्योग/तकनीक सुविधा संग उठतै सबहक भोग (पृ0 105) निश्चय ही विज्ञान और साहित्य का यह गठजोड़ मानव का कल्याण करेगा।

एक कविता संग्रह 'अमावस्याक दीप सन स्त्री' प्रकाश में आया है। कामिनी इस संग्रह की रचयिता हैं। इस संग्रह में 45 कविताएँ हैं। नवारंभ प्रकाशन ने इस संग्रह को प्रकाशित किया है। संग्रह के शीर्षक 'अमावस्याक दीप सन स्त्री' में अमावस्या स्पष्टतः अंधकार का द्योतक है और अंधकार स्त्री के समक्ष चुनौतियों, कठिनाइयों, विवशताओं और संघर्ष का प्रतीक है। स्त्री का मान–सम्मान, अस्मिता दाँव पर है और इसकी रक्षा उसे स्वयं करनी है। कवयित्री स्त्रियों को जगाती है और आत्मनिर्भरता का आह्वान करती है।

'दाइ! अपन सम्मान/जँ अहाँ अपनहि/नहि करब/तँ के करत आन/अपन भावनाक मान/जँ अपनहि/नहि राखब मान/तँ के राखत आन' कवयित्री का मानना है कि व्यावसायिक, शैक्षणिक तथा तकनीकी क्षेत्रों में भागीदारी या स्वतंत्र योगदान देने के बाद भी स्त्री को लैंगिक असमानता का शिकार होना पड़ता है। कामिनी कहती हैं कि 'उठो द्रौपदी शस्त्र उठाओ, अब गोविंद न आएँगे' की तर्ज पर खुद संघर्ष और प्रतिरोध करना पड़ेगा।

कामिनी का स्त्री–विमर्श जहाँ अस्मिता व आत्मसम्मान के लिए संघर्ष का आह्वान करता है, वहीं स्नेह/प्रेम का प्रतिदान देने और उसे मान देने की माँग करता है। इस संग्रह की एक कविता 'सिनेहक धार' में वे घर–परिवार में मिलते स्नेह को मान्यता देती हैं– 'ई की कयलहुँ अहाँ/शाहजहाँ अपन घरवाली लेल/ताजमहल बनेलक/आ अहाँ हमरा लेल/ई बरतन–बासन ओरियेलहुँ/ओहि पर नाम गोदेलहुँ'। (आपने यह क्या किया। शाहजहाँ ने अपनी बेगम के लिए/ताजमहल बनवाया/और आपने मेरे लिए/इन बरतनों का इंतजाम किया/उन पर नाम खुदवाया)

कामिनी का ही एक और कविता–संग्रह प्रकाश में आया है– 'छाहरियो मंगैय छाहरि' जिसमें पचास कविताएँ हैं। इन कविताओं में कई तरह की अनुभूतियाँ, पुराने संस्कारों की स्वीकृतियाँ और दृश्यों की काव्यात्मक व्यंजना है। इस संग्रह की कुछ

कविताएँ, जैसे– 'ब्राहमण आ डोम', 'पिंजरे के पंछी....','गाछ सँ टूटल पात', 'भूमिका' और निर्वस्त्र भाषा' आदि काफी भावप्रवण कविताएँ हैं।

एक कविता संग्रह 'आँजुर मे अमृत' भी प्रकाश में आया है। इस संग्रह की कविताओं की रचना चर्चित कवयित्री पूनम झा 'सुधा' ने की है। संग्रह में कुल 51 कविताएँ जो सीधे–सीधे कही गई हैं, यथार्थ के धरातल पर खड़ी हैं। पर्यावरण की चिंता में वे कहती हैं– 'कने सोचियौ / जहिया धरती पर / चिड़ै चुनमुनी नहि रहतैक / तँ चाँइ–चुँइक आवाज / कोना सुनाइ देतैक / हरियर बाध–बोन नहि हेतैक तँ सनन सनन हवाक आवाज / कोना सुनाइ देतैक'। सभी कविताएँ सामयिक विषयों पर एक विशेष शैली में रची गई हैं। इसके अतिरिक्त कविता विधा में 'मोन पड़ैय गाम' (उदय शंकर झा), 'थोड़ेक छैक बाकी' (धीरेंद्र कुमार झा), 'जोगाएल चेफड़ी', 'धुन कंगना रे' (डॉ. प्रमोद कुमार), 'कोसीक कछेर पर' (राम कुमार सिंह), 'विद्रोही बसात' (रामकृष्ण परार्थी), 'अर्थहीन–नग्न गाछ' (संतोषानंद), 'पेपरवेटक फूल सन जिनगी' (मनीषा झा मृडानी), 'जोहा गाछ' (कामिनी), 'प्रेमगीत विद्यापति' (वीरेंद्र मलिक), 'शुभ काव्यात्मक परिचय' (शुभकुमार बर्णवास), 'आल रंग आखर' (गीत–अजित आजाद) के अतिरिक्त एक महाकाव्य 'प्रस्तर नारी' (शंभूनाथ मिश्र आसी) और एक खंडकाव्य 'पांचाली' (शंभूनाथ मिश्र 'आसी') प्रकाशित हुए हैं।

बालसाहित्य

इस वर्ष 2024 में मैथिली में बालसाहित्य विधा में कई पुस्तकें प्रकाशित हुईं। 'चलू फुलबाड़ी' बालकविता संग्रह का प्रकाशन हुआ है जिसकी रचना चर्चित कवयित्री पूनम झा 'सुधा' ने की है। इस संग्रह में 64 बाल कविताएँ संग्रहित हैं। कविताओं के विषय बच्चों के परिवेश की वस्तुएँ, परिजन, उनको लुभानेवाली वस्तुएँ, पशु–पक्षी, बूढ़ी नानी–नाना, बाबा–दादी, माँ, फौजी, जंगल, डॉक्टर, त्योहार आदि हैं। बच्चों के मनोरंजन के लिए गेय, कौतुकपूर्ण कविताएँ हैं। कविताओं के पद भी रोचक हैं। मैथिली और हिंदी की प्रसिद्ध कवयित्री निवेदिता झा का एक बाल कविता–संग्रह है जिसका नाम 'हमरो चाही पाँखि' है। यह 53 कविताओं का संग्रह है। इस संग्रह के पदों की भाषा सरल है और बच्चों को सरलता से समझ में आने योग्य है। 'गामक कोरा मे' एक बाल कविता संग्रह भी है। श्रीमती सुधा ठाकुर इस बाल कविता–संग्रह की लेखिका हैं। यह संग्रह बच्चों में देशप्रेम की भावना, नैतिकता और सच्चरित्रता की शिक्षा देने का काम करता है। बाल कविता के क्षेत्र में एक और महत्त्वपूर्ण पुस्तक प्रकाशित हुई है–'सूतय बौआ सुखक निनिया'। इन कविताओं के लेखक वाचस्पति ठाकुर सृजित हैं। इस संग्रह में 42 कविताएँ हैं। संपूर्ण पुस्तक तीन भागों में बँटी है– लोरी, अभियान गीत और बालरुचि। बाल साहित्य में साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त श्री वीरेंद्र झा का एक बालकथा संग्रह 'चल घोड़ा टिक टिक' प्रकाशित हुआ है। बाल साहित्य विधा में वर्ष 2024 का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण प्रकाशन साहित्य अकादेमी द्वारा किया गया है और वह है 'मैथिली बाल कविता संचयन' जिसका संकलन व संपादन

सियाराम झा 'सरस' ने किया है। इस संकलन में 80 मैथिली बाल कवियों की 249 रचनाएँ संकलित हैं। इसके अतिरिक्त 'अपन होटल छै मोबाइल' (लक्ष्मी सिंह ठाकुर), 'भरि बाटी दूध' (दीपिका झा) की बाल कहानियाँ, 'शुभे बाल पोथी' (शुभ कुमार बर्णवाल), 'मीठी दाइ' (अमित मिश्र) के बाल कविता–संग्रह और वीरेंद्र झा का 'अगत्ती' बाल नाटक भी प्रकाशित हुए हैं।

उपन्यास

मैथिली उपन्यास में प्रसिद्ध लेखक अनुवादक व रंगकर्मी प्रदीप बिहारी के एक उपन्यास 'अबे छी कने कालमे' ने अपनी शैली, शिल्प और संवेदनशील कथावस्तु से धूम मचा रखी है। वस्तुतः उपन्यास के कथानक में एक प्रेमकथा है जो असमान आयु के 27 वर्षीया स्त्री और 52 वर्षीय पुरुष के बीच उपजे प्रेम की परिणति है। दोनों ने एक दूसरे को देखा नहीं है। दोनों कलाकार हैं। लड़की अविवाहित है और पुरुष विवाहित है। लड़की अपने घर के सदस्यों के बीच सामंजस्य नहीं बैठा पाती और अंदर ही अंदर टूटने लगती है। उनके प्रेम की अभिव्यक्ति एस.एम.एस (व्हाट्सएप टेलीफोनिक मैसेज) के माध्यम से होती है। पुरुष कलाकार उस लड़की को टूटने से बचा लेता है। इस उपन्यास की विशिष्टता पूरे उपन्यास की चैट शैली में प्रस्तुति है। यह सर्वथा नया प्रयोग है। इसलिए यह उपन्यास स्वागतयोग्य है। एक उपन्यास 'मेघमाला' प्रकाशित हुआ है जिसके लेखक भवेश चंद्र मिश्र शिवांशु है। यह एक ऐतिहासिक उपन्यास है। इसके कथानक का कालखंड सातवीं शताब्दी का है। उन दिनों भारत पर गुप्त, चोल एवं चालुक्य राजाओं का शासन था। चालुक्य राजा पुलकेशिन द्वितीय और गंगनरेश की अप्रतिम सुंदरी पुत्री मेघमाला के बीच प्रेमप्रसंग को आधार बनाकर यह उपन्यास लिखा गया है। ऐतिहासिक उपन्यासों में राजमहलों में चलते प्रेम, षड्यंत्र, युद्ध, पराक्रम जैसे तत्त्वों की उपस्थिति अनिवार्य होती है। ऐसे ही प्रसंग इस उपन्यास में भी हैं। मैथिली में ऐतिहासिक उपन्यास बहुत कम लिखे गए हैं। लेखक शिवांशु जी ने अपने लेखन–कौशल, शैली और शिल्प से उपन्यास को रोचक और ऐतिहासिक बना दिया है। मेरी जानकारी के अनुसार मैथिली में भवेश चंद्र झा 'शिवांशु' अकेले ही समकालीन ऐतिहासिक उपन्यासकार हैं।

इसके अतिरिक्त मैथिली के प्रसिद्ध उपन्यासकार रवींद्र नारायण मिश्र जिन्होंने अब तक 20 उपन्यास लिखे हैं, का एक उपन्यास 'जयतु जानकी' प्रकाश में आया है। श्री मिश्र का ही एक और उपन्यास 'यज्ञसेनी' भी इसी वर्ष प्रकाश में आया है। मिथिलेश सिन्हा 'दाथवासी' का एक उपन्यास 'विक्ट्री' प्रकाशित हुआ है। इसके अतिरिक्त और एक उपन्यास 'चालीस नंबर पंद्रहम तल्ला' प्रकाशित हुआ है जिसके लेखक शैलेंद्र कुमार झा हैं।

अनुवाद

अनुवाद विधा में मैथिली, हिंदी के प्रसिद्ध कथाकार संपादक गौरीनाथ का एक कहानी संग्रह 'बहरिया बसात' शीर्षक से प्रकाशित हुआ है। इस अनूदित पुस्तक में

उर्दू, बांगला, मराठी, हिंदी, अंग्रेजी व पंजाबी, सीरियाई, जापानी भाषा की कथाओं का चयनकर उनका अनुवाद किया गया है। ये सभी कहानियाँ प्रसिद्ध लेखकों–ऋत्विक घटक, इंतजार हुसैन, हरियश राय, अमृता प्रीतम, जकारिया आदि की कहानियाँ हैं। अनुवाद–कला की कसौटी पर चमक के साथ खरी उतरती ये कहानियाँ एक ही स्थान पर अनेक समाजों और संस्कृति का परिचय कराती हैं।

नाट्यालेख

प्रसिद्ध कवि, संपादक, प्रकाशक, साहित्य अकादमी पुरस्कारप्राप्त अजित आजाद का एक नाट्यालेख 'नेपथ्य' नवारंभ प्रकाशन से प्रकाशित हुआ है।

नाटक

इस वर्ष एक नाटक 'मिथिलाक उद्गम' का प्रकाशन हुआ है, नाटककार राधेश्याम मिश्र हैं।

निबंध–संग्रह / आलेख–संग्रह

निबंध / आलेख विधा में इस वर्ष कुछ उल्लेखनीय निबंध–संग्रह प्रकाशित हुए हैं। डॉ. स्वीटी कुमारी का 'उभरैत आखर', 'दलित विमर्श ओ किरण' (डॉ. कमलेश मांझी), 'लोकजीवनक संस्कृतिक परंपरा' (डॉ. मेघन प्रसाद), 'विभूति विमर्श' (वीरेंद्र मलिक), 'आलेख गुच्छ' (शशिबोध मिश्र 'शाशे'), 'मैथिली भाषाक विकास में पत्र पत्रिकाक योगदान' (वीरेंद्र मलिक), 'अन्वय' (अजित आजाद), 'केदार नाथ चौधरीक कृतिक दर्शन' (डॉ. राज कुमार प्रसाद) प्रकाशित हुए हैं।

कहानी

कहानी विधा में कई महत्त्वपूर्ण कथा–संग्रह प्रकाशित हुए हैं। नवारंभ प्रकाश से सीढ़ी (नवीन चौधरी), चक्रचालि (डॉ. आभा झा), मोजर (दीपिका झा), बारह विरहिणी (संतोष आनंद), पाकमे मधूरी (विभा रानी), ममतामयी (निनीश्वर सिंह), से बात? (डॉ. चंद्रमणि झा) और शाश्वत (डॉ. नीता झा), परगोत्री (हीरेंद्र कुमार झा) एवं अंतर्जाल (किसलय कृष्ण) का उल्लेख किया जा सकता है।

आलोचना

आलोचना विधा में बौद्धगान में तांत्रिक सिद्धांत (डॉ. जयधारी सिंह), पहुँचनामा (उदय चंद्र झा'विनोद'), तीव्र माध्यम (कमल मोहन चुन्नू), मंडन मिश्र–मीमांसा अद्वैत समागम (संपादन–रमेश / विनय कुमार झा) और सबसे महत्त्वपूर्ण प्रकाशन मैथिली साहित्य में लोक–अलोक (डॉ. देवशंकर नवीन) है।

लघुकथा / बीहनि कथा

इस वर्ष डॉ. प्रमोद कुमार का बीहनि कथा संग्रह 'पेंपी' बहुत चर्चित रहा है। इस संग्रह में 80 पृष्ठों में 66 बीहनि–कथा वर्णित हैं।

❑❑❑

18

संताली साहित्य

डॉ. दुली हेम्ब्रोम
सहायक प्राध्यापक, संताली विभाग, विद्यासागर
विश्वविद्यालय, मेदिनीपुर, पश्चिम बंगाल

प्राचीन काल से ही भारत देश में आग्नेयभाषी लोगों का निवास रहा है। इस प्रजाति के लोगों में संताल, मुंडा, हो, खड़िया, भूमिज, कोरकू, कोरवा आदि जनजातीय लोग प्रमुख हैं। इन सबमें संताल लोगों की जनसंख्या उन सभी जनजातियों से अधिक है। भारत की जनजातियों में गोंड, भील के बाद तीसरा स्थान संताल जनजाति का है। संताल लोगों की आबादी इस देश में बिहार, झारखंड, पश्चिम बंगाल, ओडिशा और असम में पाई जाती है। संताल लोगों की मातृभाषा संताली कहलाती है। कहने और सुनने की परंपरा जितनी आदिम है, संताली साहित्य भी उतना ही आदिम है। संताल समाज आज भी इसी परंपरा को वहन कर रहा है। अधिकांश संताली साहित्य आज तक अलिखित है। मुख्यतः वह मौखिक परंपरा में ही उपलब्ध है। इस दृष्टि से संताली साहित्य आदिम परंपरा की एक अमूल्य धरोहर है।

संताली भाषा के लिए लिखित साहित्य का प्रारंभ 17वीं शताब्दी के आसपास माना जाता है। सर्वप्रथम लिखित साहित्य का प्रारंभ मिशनरियों द्वारा शुरू हुआ। रेवरेंट जार्मिया फिलिप्स जलेश्वर के संताल गाँव–गाँव घूमते थे। वे संतालों के बीच प्रचलित गीत, पहेली, कहानी सुनाते थे। बाद में उसी का संकलन कर 1845 ईस्वी में पुस्तकाकार प्रकाशित किया गया। यही पुस्तक संताली भाषा की प्रथम पुस्तक मानी जाती है। यह बांग्ला लिपि में प्रकाशित की गई थी लेकिन पुस्तक का नाम किसी को भी ज्ञात नहीं है। माननीय महादेव हांसदा जी के अनुसार रेवरेंट जार्मिया फिलिप्स लिखित पहली पुस्तक का नाम 'ए संताली प्राइमर है'।

1850 ई. में दूसरी पुस्तक प्रकाशित हुई जिसका नाम 'संताली भाषा शिक्षा' है। किंतु डॉ. रतन हेंब्रम के अनुसार जार्मिया फिलिप्स की दूसरी पुस्तक का नाम 'सेकवेल टू द संताली प्राइमर' है। 1852 ईस्वी में तीसरी पुस्तक प्रकाशित हुई जिसका नाम है– 'एन इंट्रोडक्शन टू द संताली लैंग्वेज'। इसके बाद मिशनरियों ने बहुत सारी पुस्तकों का प्रकाशन किया। विदेशी मिशनरियों के अलावा वे भारतीय संताल जो कि मिशन

ग्रहण कर चुके थे, उन लोगों ने भी लिखना शुरू किया। उनमें बिराम हांसदा की 'बेनागाड़िया सेरेञ पुथी' नामक पुस्तक प्रसिद्ध है। दूला हेंब्रम ने 1870 ईस्वी में 'मेदिनीपुर सेरेञ पुथी' बांग्ला लिपि में प्रकाशित की थी।

कुछ लोगों का विचार है कि सर्वप्रथम माझी रामदास टुडू रेसका द्वारा लिखित 1894 ई. में खेरोवाल बोंगसे धरम पुंथी नामक पुस्तक का प्रकाशन हुआ था। इनका जन्म 1854 ई. में 2 अक्टूबर को वर्तमान झारखंड राज्य के सिंहभूम जिला के घाटशिला के नजदीक काड़वाकाटा गाँव में हुआ था। उन्होंने ही संताल के आदि मानव मानवी पिरचु हाड़ाम पिलचु बुढी की सृष्टि कथा लिखी थी। इनके ही वंशधर आज खेरवाल जाति के हैं जो आगे चलकर विभिन्न गोत्रों में विभक्त हुए। इनका सारा इतिहास इस पुस्तक में लिखित है। संभवतः 1894 में यह पुस्तक ग्रथरी ठाकुर मुर्मू एवं डमन चंद्र हांसदा की सहायता से कोलकाता के वेदांत प्रेस से प्रकाशित हुई। वह पद्य में 68 पृष्ठों वाली एक पुस्तक थी। इस प्रकार हम देखते हैं कि विदेशी, देशी एवं संताल विद्वानों द्वारा संताली भाषा के संबंध में अनेक पुस्तकों का प्रकाशन हुआ। अभी संताली साहित्य की 2024 ई. में प्रकाशित की गई पुस्तकों की सूची एवं पुस्तकों के संबंध में विवरण दिया जा रहा है।

- **कहानी**

दुलाड़ दारहा— सुशील हसदा ''चीलबिंधा'' द्वारा लिखित यह पुस्तक 2024 में प्रकाशित हुई। यह पुस्तक एक दर्जन कहानियों की संकलित पुस्तक है। इस पुस्तक का प्रकाशन संताली बुक्स, जमशेदपुर, झारखंड से हुआ है। इस पुस्तक में मायनो नाना, दुलाड़ चिन्हा, दायिक, कुल्ही दुडूप्, गाबाव ताहेंना, ओवारिस, सिबाड़, दुलाड़ दारहा, हारियाड़ गोड़ोम बा, मानी, करम कपाल, मेला लाडू आदि कहानियाँ प्रकाशित हैं। इन पुस्तक में सबसे सुंदर कहानी 'दुलाड़ दारहा' है। इस पुस्तक के लेखक 'जिगास' नामक पत्रिका के संपादक भी रहे हैं। उनकी पकड़ कहानी के अलावा कविता और लेख पर भी है। उन्होंने समाज के सभी पहलुओं को उजागर करने का प्रयास किया है। इसका ही एक नमूना 'दुलाड़ दारहा' में पाते हैं।

इटा भाटा रेन करीगल— यह एक अनूदित पुस्तक है जिसकी मूल पुस्तक ओड़ियाभाषी कहानी लेखिका गायित्री सरफा द्वारा लिखित है। यह पुस्तक साहित्य अकादेमी पुरस्कार (2017 ई.) से पुरस्कृत है। इस पुस्तक के अनुवादक ठाकुरदास हांसदा हैं जो जानुमघुटू गाँव, प्रतापगढ़, बादाम पहाड़, मयूरभंज, ओड़िशा के रहने वाले हैं। यह पुस्तक चंदन प्रिंटर्स भुवनेश्वर, ओडिशा से 2024 में प्रकाशित हुई है। इसमें डि दादल हेलकाव, एनहों नोवा जीयन, पीपीड़ोयाङ रङ, दाविदार, दापन हपनेरा, लांदा, लीटाः ओंड़हें, हपनेरा आर आपात, कविता की चाँद, माधु छाया, जाड़े की रितु–एक चिठी पत्री, फूल कुमारी और राजपुत्र की कहानी इत्यादि शामिल हैं।

सीतामाला– पवित्र हेंब्रम द्वारा लिखित यह पुस्तक दाबांकी, मानपुर, जमशेदपुर के संताली बुक्स से प्रकाशित हुई है। इस पुस्तक में कुल 15 कहानियाँ हैं। इसमें प्रथम कहानी सीतामला है। इसी तरह से हारखेत, आखिर, मान, तारा आञचार, बयहा हिंसा, चालाः हर रे, हाय रे चाँद, मलंग सिदुर रे मेद् दाः, हालत, कुकमु दिसम, राज ओड़ाः, जापुद् दिन, पाटाबिंधा एवं काजली इत्यादि कहानियाँ भी हैं।

लेखक अपने सामने घट रही परिस्थितियों को देखकर अपने अंतर्मन से निकली हुई बातों को कहानी के माध्यम से रखने का प्रयास करता है। इन कहानियों में अलग–अलग तरह के बिंदुओं पर लिखा गया है। इनमें समाज के दुःख–सुख, प्यार, जुदाई और महिला विषयक कहानियाँ प्रमुखता से हैं।

- **कविता**

'फेडात रे सेंगेल'– इसके लेखक श्रीमान रघुनाथ हेम्ब्रम हैं। यह पुस्तक वर्ष 2024 में हांस–हांसली पब्लिकेशन, बारिपदा, मयुरभंज, ओडिशा से प्रकाशित हुई है। इस पुस्तक में कुल 26 कविताएँ हैं। इन कविताओं में फुरगाल बहुत अच्छी कविता है। इसके अलावा आंगेन अरसङ, आराड़, एड़े साताम, भरमे–भरमे जावरा, हिसी, बुरू लदम रे, ढेंका लेवेद् रासा आदि कविताएँ शामिल हैं। इस पुस्तक में सीधे–सीधे समाज के विभिन्न पहलुओं पर लिखने का प्रयास है।

लेखक का कहना है कि साहित्य हमारे भीतर है। यह समाज एक काठ के टुकड़े जैसा है। हम यानी लेखक जैसा चाहते हैं वैसा ही सामान बना सकते हैं। कोई पलंग, कोई मचिया तो कोई हल। 'फेडात रे सेंगेल' (कविताओं की संकलित पुस्तक) में मधु रस भरा पड़ा है। इसे ही पाठकों को चखकर आजमाने की बातें कही गई हैं।

कुसी–रासका– इसके लेखक दुबई टुडू हैं। यह पुस्तक दिसंबर 2024 में प्रकाशित है। यह पुस्तक छोटे बच्चों के लिए संताल पुरखों के जमाने में घर के छोटे–छोटे बच्चों को कहानी, लोरी सब सुनाते थे वही कहानी लौरी, कुदुम आदि विभिन्न पत्रिकाओं में छापी गई हैं जैसे कि सिली, हेमाल आड़ाङ, जीवी, भावना, दिसम गोडेत, उमुल और सारजम उमुल आदि। छुपी हुई वही ''गिदरा बावली'' जैसी लोरियों को इकट्ठा करके एक पुस्तक के आकार में 'कुसी रासका' तैयार की गई है।

कुकुड़ूबूर मालापताम– इसकी लेखिका सरस्वती हांसदा हैं। यह चंदन प्रिंटर्स, भुवनेश्वर, ओडिशा से 2024 में प्रकाशित हुई है। उनकी पहली पुस्तक 'टुटुरी बाटुरी बाहू कुड़ी' एवं 'कुकुड़ूबूर मालापताम' दूसरा कविता–संग्रह है। इस पुस्तक में 43 कविताएँ हैं। इस पुस्तक में अधिकतर महिलाओं से संबंधित कविताएँ लिखी गई हैं। इनमें आयो आड़ाङ, कुड़ी हपन, गाते, काराम डार आदि बहुत अच्छी–अच्छी कविताएँ हैं।

मायानाड़ी– लेखिका लुतीरेरम हेंब्रम हैं। यह अकिलबाति पब्लिकेशन, भालुक खुलीया, झाड़ग्राम से दिसंबर, 2024 में प्रकाशित हुई है। इस पुस्तक में कुल 21 कविताएँ

हैं। इन कविताओं के संबंध में लेखिका कहती हैं कि 'मेरी पहली पुस्तक 'रायबार' एवं दूसरी 'मायानाड़ी' मानव के साथ जाने–अनजाने में किसी न किसी तरह से जुड़ी हुई है। मानव के सुख–दुख, अच्छे–बुरे, अमीर–गरीब सभी तरह के बात–विचार मानव के अंतर में निहित रहते हैं। साथ में प्यार–दुलार, पढ़ना–लिखना एवं नाच–गाना भी विद्यमान है। इसके अलावा ठंडा–गरम, जाड़ा–बरसात, चाँद–तारा, पेड़–पौधा, पशु–पक्षी एवं सारे जंतु–जानवर के साथ मानव का कोई ना कोई संबंध जरूर रहता है। वह चाहे अच्छे का हो या बुरे का, सबको अपने अंतर मन से पिरोकर 'मायानाड़ी' पुस्तक के रूप में मेरा एक छोटा–सा प्रयास है।'

इस पुस्तक में बहुत अच्छी–अच्छी कविताएँ जैसे कि 'जापुद', 'जुवान', 'आकिल', 'चाँद देवता' और 'मायानाड़ी' कविताएँ संकलित हैं।

विरबानटा बाजाल (लेखक दुर्गादास सोरेन) – यह पुस्तक 28 दिसंबर 2024 को प्रकाशित हुई है। यह पुस्तक 1855–56 साल में हुए संताल विद्रोह पर आधारित है जिसके महानायक वीर सिदो–कान्हु –चादु भैरो– फुलो झानो तथा वीर बाजाल रहे हैं। बाजाल ने भी अंग्रेज हुकूमत के विरोध में आवाज उठाई थी। इस विद्रोह में यह वर्णित है कि भारत को अंग्रेजों से आजाद करने के लिए सर्वप्रथम संतालों ने विद्रोह किया था।

रिदाय ताला खोन– यह कविता की पुस्तक है। इसके कवि हैं वैद्यनाथ हांसदा। पुस्तक का प्रकाशन संताली बुक्स द्वारा 2024 के दिसंबर महीने में किया गया था। पुस्तक में 59 कविताएँ हैं। सारी कविताएँ संताल समाज को लेकर सृजित की गई हैं। किसी कविता में समाज के गुणों तो किसी में दोषों को दर्शाया गया है। उनका कहना है कि इससे समाज और आगे बढ़ेगा। सरकारी स्तर पर संताल समुदाय की अवहेलना तथा संताल आदिवासियों के निम्न साक्षरता दर पर भी कवि ने अपनी बात रखी है। पुस्तक में समाज सुधार की जरूरत पर भी चर्चा की गई है।

इञ आयो आर तिनाङ गान ओनोड़हें– यह मदन मोहन सोरेन द्वारा रचित कविता–संग्रह है। कविता–संग्रह में लंबी–लंबी कुल तीस कविताएँ हैं। मदन मोहन सोरेन संताली के आधुनिक कवि हैं। उनके इस कविता–संग्रह का प्रकाशन हांस हांसली पब्लिकेशन, बारीपदा द्वारा किया गया है। मदन सोरेन की यह चौथी पुस्तक है। इनमें सम्मिलित सभी कविताएँ आधुनिक कविताएँ हैं। इन संताली कविताओं से संताली साहित्य और विकसित होगा। पुस्तक का नाम 'मेरी माँ और अन्य कविताए' हैं।

बेरेद् पे हो आदिवासी– पुस्तक का नाम है 'आदिवासी जागो।' यह युवा कवयित्री सुचित्रा हांसदा का कविता–संग्रह है। सुचित्रा हांसदा उद्‌बोध करने वाली कविताओं की कवयित्री हैं। उनकी कविताओं को पढ़कर आपको लगेगा अब तो आदिवासी जागेंगे। वैसे आदिवासी सालों से जगे हुए हैं किंतु सभ्यता के साथ वे कदम

नहीं मिला पाए। अभी कदम मिलाना है। इस कविता–संग्रह में सुचित्रा हांसदा सभ्यता के साथ कदम मिलाने को कह रही हैं। 'बेरेद् पे हो आदिवासी' पुस्तक का प्रकाशन सागुन कंप्यूटर प्रेस, हुगली द्वारा 2024 में किया गया। कविता–संगह में सौ कविताएँ हैं।

निरोड़ खेरवाड़ा सांवता– कवि दशमत मुर्मू द्वारा लिखित इस कविता–संग्रह का प्रकाशन 2024 में हुआ है। कविता–संग्रह में कुल 55 कविताएँ हैं। पुस्तक का प्रकाशन खुद दशमत मुर्मू ने ही किया है। दशमत के इस कविता–संग्रह की करीब सारी कविताएँ संताल समाज, रीति–रिवाज और धर्म तथा आजीविका पर आधारित हैं। समाज के गुण–दोष को भी समेटे हुए है यह कविता–संग्रह। कवि ने गलत रास्ता अपनाने वालों को भी कविताओं के द्वारा सही रास्ता दिखाने की कोशिश की है। निरोड़ खेरवाड़ सांवता की कविताओं को पढ़कर बहुत अच्छा लगता है। मनोरंजन के साथ–साथ लुप्त हो रहे रीति–रिवाजों की भी याद आ जाती है। उन्होंने भाषा साहित्य तथा आजीविका पर भी अपना विचार स्पष्ट किया है। संताल जिन चीजों के साथ अपने को जुड़ा हुआ महसूस करते हैं तथा जुड़े हुए होते हैं, सभी चीजों को कवि दशमत ने स्पर्श करते हुए कविताओं की रचना की है। संग्रह की कई कविताएँ आधुनिक हैं तो कई पुरानी शैली से लिखी गई हैं। कोई–कोई कविता लोक शैली में भी लिखी गई है। इस प्रकार से दशमत मुर्मू ने सभी तथ्यों को समेट लिया है।

- **यात्रा साहित्य**

दाड़ान दिनाल– यह पद्मश्री डॉ. दमयंती बेसरा द्वारा लिखित भ्रमण साहित्य है। इसका प्रकाशन भी गत वर्ष हुआ है। पुस्तक का प्रकाशन भी स्वयं किया है। इस पुस्तक के जरिए संताल साहित्य के प्रति दमयंती बेसरा के जूनून को समझा जा सकता है। संताली साहित्य में भ्रमण साहित्य न के बराबर है। सब मिलाकार भ्रमण से संबंधित सिर्फ दो या तीन ही पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। इस प्रकार देखा जाए तो यह भ्रमण साहित्य में मील का पत्थर साबित हो सकती है।

डॉ. दमयंती बेसरा ने आज तक जिन जगहों का भ्रमण किया है, इस पुस्तक में उन सभी जगहों के बारे में उल्लेख है। साथ ही उन्होंने उन जगहों के बारे में अपना अनुभव भी साझा किया है। डॉ. बेसरा ने गोवा, पटियाला, इंफाल, शांतिनिकेतन, पुणे, पोर्टब्लेयर, जयपुर, शिलांग, हैदराबाद, इंफाल, गंगटोक, पुरी, रायपुर, त्रिशूर, भोपाल आदि जगहों का भ्रमण किया है तथा इन सभी जगहों के बारे में बताया है।

इस पुस्तक के पूर्व डॉ. बेसरा ने और भी बहुत सारी संताली तथा ओड़िआ भाषा में पुस्तकों का प्रकाशन किया है और कराया है। आशा है, आनेवाले दिनों में भी उनका साहित्य सृजन बना रहेगा।

- **नाटक**

टाका रेयाः दारे बुटारे दुलाड़ ए राः जोङ कान– इस नाटक के लेखक

हैं बासुदेव सोरेन। पुस्तक का प्रकाशन 2024 में हुआ है। प्रकाशक हैं मार्शल बांबेर पब्लिकेशन, झाड़ग्राम। इस नाटक के माध्यम से लेखक का कहना है कि इस युग में प्यार नाम की कोई चीज नहीं है। जो प्यार के नाम से हमारे बीच मौजूद है, वह बिक चुका है। इसलिए जहाँ पैसे का वास है, प्यार वहीं चला गया है। चारों ओर धोखा, खून, डिवोर्स देखने को मिल रहा है। धन के लालच में कहीं पत्नी दूसरी शादी कर रही है तो कहीं पति द्वारा पत्नी को सताया जा रहा है या मारा जा रहा है। और तो और बच्चों द्वारा भी माता–पिता को बेघर किया जा रहा है। भाई–भाई या भाई–बहनों में संपत्ति को लेकर खूनी संघर्ष तो अब आम हो चुका है। इसलिए नाटक का नाम भी लेखक ने सही ही रखा है– धन के महल में प्यार का रोना। यह पुस्तक समाज को खुद की तस्वीर दिखाती है।

- **उपन्यास**

दुली माई दुलाड़ आञचार तेदो दापाल काञ मे– बोयहा विश्वनाथ टुडू द्वारा लिखित इस उपन्यास का प्रकाशन 2024 में किया गया है। बोयहा विश्वनाथ की यह 108वीं पुस्तक है। पुस्तक डॉक्टर फटिक चंद्र हेंब्रम को समर्पित है। सारना पब्लिशर्स ने इस पुस्तक को प्रकाशित किया है। इस उपन्यास में भी लेखक ने प्यार की बात कही है। पुस्तक में बाप–बेटी के प्यार को दर्शाया गया है। प्रौढ़ अवस्था में सभी को एक छाँव की जरूरत होती है। बच्चों से उसी छाँव की आस में बुजुर्ग आशान्वित होते हैं कि बच्चों की वह छाँव उन्हें भी नसीब होगी। लेकिन सभी बुजुर्गों को वह प्यार और आदर की छाँव नसीब नहीं होती। उपन्यास में बुजुर्गों की उसी चाहत को दर्शाया गया है।

- **निबंध–संग्रह**

सांवहेद् साकवा– इस पुस्तक के रचनाकार हैं नाजीर हेंब्रम। पुस्तक का प्रकाशन संताली बुक्स, जमशेदपुर द्वारा 2024 में किया गया है। पुस्तक में कई लेख हैं। सभी लेख संताली समाज के बारे में लिखे गए हैं। पहले लेख में संतालों की न्याय व्यवस्था के बारे में बताया गया है। पुस्तक के दूसरे लेख में संतालों के संबंध में सबसे प्रमुख पर्व सोहराय के बारे में वर्णित है। सोहराय में भाई–बहनों के प्यार को दर्शाया गया है। वह न हो तो सोहराय कैसे फीका पड़ जाता है, लेखक ने लिखने का प्रयास किया है। इसके बाद वाले लेख में भारत के प्रथम विद्रोह संताल हूल के बारे में लिखा गया है। हूल में आध्यात्मिक ताकत के बारे में लेखक ने अपने विचार के साथ–साथ वर्षों से सुनाई जा रही लोककथाओं का जिक्र किया है। बाद के लेखों में विवाह संस्कार के प्रकार, शहीदों के बोल, संतालों की जनसंख्या, साहित्य अकादमी पुरस्कार, संताली लोक–चरित्र माधव सिंह, देवी माँ की कृपा तथा संताली वाद्य यंत्र बांसुरी के बारे में लिखा गया है। लेखक नाजीर हेंब्रम ने बहुत ही सटीक और मँजे हुए लेखक की भाँति पुस्तक को लिखा है। पुस्तक में दी गई

सूचना एवं शैली से पता ही नहीं चलता कि यह लेखक युवा है।

- **अनुवाद**

आनंदमठ– बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय कृत कालजयी बांगला उपन्यास का यह संताली अनुवाद है। संताली अनुवाद जोबा मुर्मू ने किया है। पुस्तक का प्रकाशन संताली बुक्स, जमशेदपुर ने किया है। वर्तमान में जोबा मुर्मू संताली साहित्य के उज्ज्वल सितारे हैं। उन्होंने बहुत–सी किताबों का लेखन तथा अनुवाद भी किया है। बाल साहित्य पुरस्कार के विजेता जोबा मुर्मू ने 'आनंदमठ' का बहुत ही बेहतर अनुवाद किया है। जोबा मुर्मू का अनुवाद पढ़कर आपको जरा सा भी आभास नहीं होगा कि यह दूसरी भाषा से अनूदित कृति है। 'आनंदमठ' में ही भारत का राष्ट्रीय गीत उल्लिखित है। उस गीत को छोड़कर उपन्यास में लगभग सभी गीतों का संताली अनुवाद किया गया है। चूंकि वह गीत राष्ट्र के पहचान के साथ इस पुस्तक की भी धरोहर है इसलिए शायद जोबा मुर्मू ने उसे उसी अवस्था में छोड़ा है। वर्तमान परिपेक्ष्य में उस पुस्तक का संताली में अनुवाद होना गर्व की बात है। इससे संताली साहित्य और उन्नत एवं विकसित होगा।

- **एकांकी**

मिद् गांडा गायान– चार एकांकी नाटकों का यह संग्रह बहुत ही बढ़िया पुस्तक है। शिबू सोरेन द्वारा लिखित इस पुस्तक का प्रकाशन 2024 में हुआ है। प्रकाशक हैं सागुन कंप्यूटर प्रेस, हुगली। संतालों में एकांकी नाटक काफी सालों से प्रचलित है। प्रत्येक गाँव में एकांकी नाटक के लेखक आपको मिल जाएँगे। लेकिन पुस्तकाकार में बहुत कम ही प्रकाशित हुए हैं। इसलिए भी यह बहुत महत्त्वपूर्ण पुस्तक है। इस पुस्तक में नाटकों का सृजन भी बहुत अच्छी तरह और सूझबूझ के साथ शिबू सोरेन ने किया है जिसके लिए उनको सालों याद किया जाएगा। संग्रह के 'नक्सलवाद' नाटक में नक्सलवाद से प्रभावित संताली समाज को दिखाया गया है। दूसरा नाटक है 'संगठन'। हम जानते हैं संगठनमूलक या सम्मेलनमूलक कार्यक्रम संताली समाज में बहुत प्रचलित हैं। इसका संताल समाज में प्रभाव एवं इसके लाभ तथा इन संगठनों के अगुवाओं के बारे में काफी लिखा गया है। तीसरा नाटक है 'वर्तमान स्थिति'। इसमें भी संतालों की वर्तमान स्थिति पर लिखा गया है। अंतिम तथा चौथा नाटक है 'प्रकाश'। संताल वर्षों से अंधकारमय जीवन जीने को मजबूर हैं। उनकी मौलिक जरूरतों की भी पूर्ति नहीं हो पा रही है। उनके पास मौलिक सुविधाओं का भी अभाव है। वे लोग प्रकाश के इंतजार में वर्षों से हैं। उनको आशा है उनके समाज में भी औरों की भाँति प्रकाश आएगा। उनके समाज में भी उजाला फैलेगा। वह भी दूसरे लोगों जैसे शिक्षित होंगे, गाँवों में शिक्षा की लौ जलेगी, बिजली के तार लगेंगे और उनके गाँवों में उजाला होगा। इन सारी बातों को सम्मिलित करते हुए 'मार्शल' नाटक लिखा

गया है। यह नाटक–संग्रह जरूर समाज में बदलाव लाने का काम करेगा।

- **बाल साहित्य**

काहनी गाथनी– इस बाल कथा साहित्य कहानी–संग्रह की लेखिका हैं झानो मुर्मू। यह कहानी–संग्रह बाल कहानियों से युक्त है। इस पुस्तक का प्रकाशन 2024 में लेखिका द्वारा ही किया गया है। झानो मुर्मू भुवनेश्वर की रहने वाली हैं। इस कहानी संग्रह में 12 बाल कहानियाँ हैं। सभी कहानियाँ बालमन को गुदगुदाने के साथ–साथ मनोरंजन से भी भरी हैं। बालमन के लिए इस प्रकार की कहानी उपयुक्त होती है। झानो मुर्मू ने बहुत ही सलीके से कहानियों की रचना की है। लोक कथा की तरह इन कहानियों में जंतु–जानवर भी हैं। इसके अलावा गाँव तथा जंगल और नदियाँ भी हैं। झानो मुर्मू ने बालमन के मनोरंजन हेतु हर संभव कोशिश की है। बच्चों को पढ़ने में असुविधा न हो और आसानी से समझ सके; उसके लिए वाक्य को छोटे–छोटे रूपों में लिखा गया है। 'खराब कार्य का फल भी खराब ही आता है और अच्छा कार्य सफलता देता है,' इस बात को कहानी के माध्यम से झानो मुर्मू ने बच्चों को बताने की कोशिश की है। इस किताब की कहानियों को बच्चे आसानी से समझ जाएँगे। इस कहानी संग्रह का प्रकाशन 2024 में हुआ है।

- **आलोचना**

मानमी और सांवहेद्– डॉक्टर गंगाधर हांसदा द्वारा लिखित इस पुस्तक का नाम है 'मनुष्य और साहित्य।' पुस्तक का प्रकाशन 2024 में लेखक के द्वारा ही किया गया है। गंगाधर हांसदा संताली के विख्यात लेखक हैं। उनकी किताबें कॉलेजों तथा विश्वविद्यालयों में भी पढ़ाई जाती हैं। उन्होंने बहुत सारी किताबों की रचना की है। इस पुस्तक में मनुष्य के लिए साहित्य तथा साहित्य के लिए मनुष्य के पूरक होने की बातों को विस्तार से लिखा गया है। इस पुस्तक में कुल 30 लेख हैं। इन लेखों में साहित्य की लगभग सभी विधाओं को संजोया गया है। कहीं कहानियों की चर्चा है तो कहीं उपन्यासों की। कहीं नाटक की बातें कही गई हैं तो कहीं लोककथाओं की। इस प्रकार से संपूर्ण विधाओं का स्पर्श करते हुए लेखक ने अपने लेखनी को विराम दिया है।

यह पुस्तक विद्यार्थियों के लिए जितनी महत्त्वपूर्ण है, आम लोगों के लिए भी उतना ही उपयोगी है। शोध छात्रों के लिए तो यह पुस्तक बहुत उपयोगी है।

गेलेज्– इस आलेख पुस्तक के रचयिता है सुब्रत बास्के। पुस्तक का प्रकाशन 2024 ई. को माँ तारा पब्लिकेशन, बांकुड़ा ने किया है। आलेख के इस संग्रह में संताली साहित्य से लेकर इतिहास, परंपरा, रीति–रिवाज के साथ–साथ कलमकारों के भी योगदान को रेखांकित किया गया है। संताली साहित्य के इतिहास को किन–किन कलमकारों ने अपने कमल की दवात से सींचा है, उन सारे कलमकारों को भी

रेखांकित किया गया है।

पुस्तक में 10 लेख हैं। इसमें संताली साहित्य के इतिहास में आंदोलन सृष्टि करने वाली कहानियाँ तथा कविताओं के बारे में लिखा गया है लेकिन सबसे ज्यादा लेख कलमकारों के अवदान को ही रेखांकित करते हैं। इस प्रकार से यह पुस्तक हमें लेखक तथा उनके सृष्टि के बल से भी पाठकों का परिचय कराती है। कलमकारों के अवदान को इस प्रकार रेखांकित करने वाली पुस्तकों में इस पुस्तक की गिनती की जाएगी। यही इस पुस्तक की विशेषता बन गई है। पुस्तक का नाम भी अनुसंधान रखा गया है जिसका संताली नाम है 'गेलेज्'।

- **इतिहास**

बुरु रे सेंगेल– 'जंगल में आग' पुस्तक के लेखक हैं लक्ष्मी नारायण हांसदा। यह पुस्तक आंदोलन पर आधारित है। पुस्तक का प्रकाशन 2024 में कवितीका, मेदिनीपुर की ओर से किया गया है।

संताली साहित्य में आंदोलन पर आधारित पुस्तकों में यह भी एक विशेष पुस्तक है। इस प्रकार की पुस्तकें संताली में एकाध ही प्रकाशित हुई हैं। आंदोलन के ऊपर कविताएँ तो बहुत मिलेंगी लेकिन इतिहास मिलने से रहा। वैसे संतालों के धार्मिक, राजनीतिक तथा लोक इतिहास के संदर्भ में गैर संताल लेखकों ने ही लिखा है। इस प्रकार से यह नये जमाने की इतिहास की पुस्तक कही जा सकती है। पुस्तक में 13 अध्याय हैं। इन 13 अध्यायों में ही इतिहासकार लक्ष्मी नारायण हांसदा ने अपने कलम की शक्ति को झोंक दिया है। यह सभी वर्ग एवं आयु के पाठकों के लिए महत्त्वपूर्ण पुस्तक है।

मुर्शिदाबाद जेला रे संताड़ कोवाः सावता आरिचालि– पुस्तक का विमोचन 2024 में हुआ है। लेखक हैं गोपाल सोरेन तथा प्रकाशक हैं सागुन कंप्यूटर प्रेस, हुगली। चार अध्यायों की यह पुस्तक मुर्शिदाबाद के आसपास के क्षेत्रों के संताली रीति–रिवाज, परंपरा तथा अन्य संस्कृतियों के बारे में लिखी गई है। लेखक ने इस पुस्तक को जातिविज्ञान शैली में लिखा है।

इनमें पश्चिम बंगाल के मुर्शिदाबाद जिला तथा उसके आसपास के क्षेत्रों में मनाए जाने वाले सारे पर्वों को बारे में लिखा है। जो भी इस पुस्तक को पढ़ता है, संतालों की और पुस्तक को पढ़ने की जरूरत नहीं रह जाती। पुस्तक में पूजा–पाठ, नाच–गाना, खान–पान से लेकर मेहमाननवाजी के बारे में व्यवस्थित ढंग से तथा सूचनाओं का वर्णन करते हुए लिखा गया है। संतालों के बारे में नहीं जानने वाले पाठकों का हाथ भी इस पुस्तक पर पड़ता है तो बहुत आसानी से वे संताल एवं उनके उनके रीति–रिवाजों को जान सकते हैं।

❑❑❑

संस्कृत साहित्य

19

प्रो. अजय कुमार मिश्र
छह पुस्तकें प्रकाशित। विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में लेखादि प्रकाशित। नाट्यम, साहित्य–मीमांसा और रसत्रय पत्रिकाओं का संपादन। राष्ट्रपति द्वारा महर्षि बादरायण व्यास सम्मान से सम्मानित। संप्रति– प्रोफेसर, केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, दिल्ली

वर्ष 2024 के संस्कृत साहित्य की तहकीकात करने के पहले द हिन्दू अखबार में 23 अक्टूबर 2005 में मुकुंद पद्मनाभन के द्वारा अंबर्तो इको (Umberto Eco, इटली) के एक साक्षात्कार के विषय में जिक्र करना चाहता हूँ। इको ने अपनी एक किताब लिखी थी जिसका नाम ''द नेम ऑफ द रोज'' (The Name of the Rose) था और अमूमन सभी प्रकाशकों का अंदाजा था कि इसकी प्रतियों के अधिक बिकने की गुंजाइश नहीं थी। इसका सबब प्रकाशक कुनबा यह जता रहा था कि इको की इस किताब का वर्ण्य–विषय (डिडक्टिव, मेटा फिजिक्स, मीडिवल हिस्ट्री तथा थियोलॉजी के ताने–बाने से कसे जाने के कारण) पाठकों को रिझा नहीं पाएगा। लेकिन इसका ठीक उल्टा यह हुआ कि रातोंरात इसकी सिर्फ अमेरिका में ही तीस लाख प्रतियाँ बिक गईं। इको वस्तुतः पेशे से सिमोटिक (हस्ताक्षर विज्ञान का अध्येता) था और प्रकाशक इस तरह के विषय से जुड़े लेखकों की किताबों के बिकने की कोई उम्मीद भी नहीं रखते हैं। लेकिन उन्हें इसका भी ध्यान रखना चाहिए कि आदि महाकाव्य रामायण के प्रणेता महर्षि वाल्मीकि दुनिया के इस प्रथम महाकाव्य को लिखने के पूर्व दस्यु समाज से संबंधित थे और आचार्य मम्मट ने काव्य रचने की शक्ति के प्रसंग में प्रतिभा के जिस शाश्वत तथा सनातन गुण की अनिवार्यता को प्रमुखता से गिनाया है, उसे आज के प्रकाशकों को समझना चाहिए। लेकिन साहित्य के बाजार में 'बेस्ट–सेलर' की अदबी राजनीति और प्रकाशकों के द्वारा लेखक के मत्थे अपने पुस्तक प्रकाशनों का ठीकरा फोड़ना सर्जनात्मक स्वातंत्र्य को लेकर एक बहुत ही बड़ा प्रश्नचिह्न खड़ा करता है।

फिर भी, हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि अनुवाद प्रौद्योगिकी ने जहाँ भाषा के वैविध्यपूर्ण आयामों को एक नया अवसर दिया है, वहीं दूसरी ओर गिने–चुने शक्तिशाली तथा प्रभावी प्रकाशकों के शिकंजों को भी थोड़ा शिथिल किया है, बशर्ते

उस नामचीन प्रकाशक ने अपने लेखकों के कॉपीराइट पर नाग की तरह अपना फन फैलाकर उसे कहीं हड़प न लिया हो? यह भी समझने तथा समझाने की बात है कि आदि महाकाव्य रामायण को जब लोककवि तुलसीदास ने लोकचेतना के काव्य–श्रृंगार के रूप में वैश्विक बनाया, तो उस समय 'रामचरितमानस' को बेस्ट सेलर की उपाधि से नवाजे जाने वाला कोई प्रकाशक या संस्था थी या नहीं? मिलाजुलाकर तात्पर्य यह है कि किसी पुस्तक या ग्रंथ की लोकप्रियता का निकष उसकी पाठ्य–सामग्री की कालजयिता के साथ–साथ उसकी भाषा भी होती है जिसमें आज की भाषा प्रौद्योगिकी के दौर में उसका अनुवाद या छाया अनुवाद भी केंद्र में अपनी भूमिका निभाता है न कि 'बेस्ट सेलर' का।

साल 2024 में भी संस्कृत साहित्य अनुवाद के साथ–साथ मौलिक सृजन वाङ्मय, स्वतंत्र समीक्षा ग्रंथ तथा संस्कृत भाषा तथा साहित्य से जुड़ी अन्य पुस्तकें प्रकाश में आई हैं जो संस्कृत भाषा के आधुनिक साहित्य के वैविध्य की जीवंतता की संपुष्टि करती हैं।

संस्कृत से जुड़े संगणकीय भाषाविज्ञान तथा न्यायशास्त्र के लब्धप्रतिष्ठ विद्वान तथा केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, दिल्ली के कुलपति प्रो. श्रीनिवास वरखेड़ी के मूल संस्कृत भाषा में लिखित ग्रंथ 'शास्त्रपद्धतिः'[1] की अजय कुमार मिश्र द्वारा इसी नाम से हिंदी भाषा में अनूदित पुस्तक इस साल का एक मानीखेज शाया माना जाना चाहिए। इसके अनुवादक अजय कुमार मिश्र ने प्रस्तुत पुस्तक में बतौर एक अनुवादक के रूप में जो लिखा है उससे भी इसकी महत्ता स्पष्ट होती है– "भारतीय ज्ञान की मूल परंपरा जो संस्कृत में ही सन्निहित है– शास्त्रपद्धतिः इसी अक्षुण्ण परंपरा के शास्त्रों के इंद्रधनुषी डोमेन को रचती है। अतः भारतीय साहित्य के चतुर्दिक तथा समावेशी ज्ञान को अक्षुण्ण बनाए रखने में भारत की सभी लोकप्रिय भाषाओं में इसका तड़ित चालक के रूप में अनुवाद अपेक्षित लगता है। इससे हम आज के अनेक मनगढ़ंत साहित्यिक तथा दार्शनिक प्रश्नों का प्रत्युत्तर देने में समर्थ होंगे क्योंकि औपनिवेशिक दासता के पश्चात् साहित्य के माध्यम से एशिया महादेशों, विशेषकर भारत पर सांस्कृतिक तथा बौद्धिक आक्रमण का षड्यंत्र रचा जा रहा है जबकि संस्कृत तथा उसका अखंडित शास्त्र न केवल भारतीय, अपितु पाश्चात्य साहित्य चिंतन के लिए ऊर्जा गृह का कार्य करता आया है। इस सूक्ष्मता को समझने के लिए भारतीय दर्शन साहित्य के साथ–साथ समकालीन पाश्चात्य चिंतन को भी विशेष ढंग से समझना होगा। भारतीय मनीषा के पुनः आविष्करण के लिए शास्त्रपद्धतिः जैसी पुस्तक बहुत ही महत्त्वपूर्ण मानी जा सकती है।'' (कालजयी कृति शास्त्रपद्धतिः को अनुवादक जितना समझ सका, पृष्ठः 16–17)।

1. केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, दिल्ली

प्रस्तुत पुस्तक पारंपरिक दृष्टि से सूत्र, वृत्ति, वार्तिक, टीका, भाष्य और निबंध आदि के भेदों तथा प्रभेदों की शास्त्रीय कसौटी पर भारतीय–दर्शन–चिंतन तथा उसके तत्त्वान्वेषी क्षितिज पर एक नवाचारी सौंदर्य–विमर्श की भित्तिका को खड़ा करती है जो भारतीय ज्ञान परंपरा (आई.के.एस) के अध्ययन–अध्यापन के लिए आवश्यक जान पड़ता है। साथ ही साथ शास्त्र की गाँठ के मिथक तोड़ते हुए मेटा–फिजिक्स, थियोलॉजी तथा शास्त्र परंपरा के गहन चिंतन और उसके फलसफे को पाठक तक पहुँचाती हुई मालूम पड़ती है। यही कारण है कि इसका अनेक भारतीय भाषाओं में अनुवाद चल रहा है। फिलहाल हिंदी के अलावा कन्नड़ (विश्वनाथ सुंकसाल) तथा मराठी (डा. रेणुका बाकारे) में इसका अनुवाद हो चुका है। नमूने के तौर पर संस्कृत में लिखित एक अंतिम अंश जिसे मूल लेखक ने समीक्षा के निकष का मापदंड निर्धारित किया है, उसे निम्न रूप में पढ़ा जा सकता है। यह पंक्ति मूलतः चर्चित व्याख्याकार मल्लिनाथ की है– "नामूलं लिख्यते किञ्चित् नानपेक्षितमुच्यते" अर्थात् ऐसा कुछ भी नहीं लिखा गया है जो मौलिक न हो और अनपेक्षित हो। मूल के विपरीत नहीं होना चाहिए। (यहाँ 'अ' विरोध भाव का बोधक है) इसे मूल (जड़) को रोकने में सहायता नहीं करनी चाहिए। बल्कि यह मूलों (जड़ों) पर ही आधारित होना चाहिए। निर्मूल अर्थात् बिना प्रमाण के नहीं होना चाहिए। मूल प्रमाण अर्थात् प्रामाणिक होना चाहिए। इसी प्रकार किसी को भी अप्रत्याशित या अवांछित को नहीं छूना चाहिए और बहुत व्यापक भी नहीं।" (पृष्ठ 141)

इस साल आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी अनूदित आचार्य भरतमुनि के विश्वविख्यात ग्रंथ 'नाट्यशास्त्र' के समग्र अध्यायों (सैंतीस) का प्रकाशन इसलिए भी भारतीय साहित्य के बाजार की प्रौद्योगिक दुनिया में मानीखेज माना जा सकता है कि आचार्य त्रिपाठी न केवल संस्कृत और हिंदी के जाने–माने बहुपठित एवं समीक्षित लेखक के रूप में प्रतिष्ठित हैं बल्कि संस्कृत साहित्य की समकालीन दुनिया में "आधुनिक भरतमुनि" के नाम से भी प्रसिद्ध हैं। अतः जाहिर सी बात है कि अनुवाद जो परकाया प्रवेश के रूप में माना जाता है, उस कर्म के लिए उस भाषा में अवगाहन के भाषिक संस्कार का होना अनिवार्यता है। आचार्य त्रिपाठी संस्कृत–हिंदी की अंतरात्मा की भावधाराओं को अपने प्रखर–शास्त्र–ज्ञान की सूक्ष्मता से परखने में पारखी हैं। यही कारण है कि उनका यह हिंदी अनुवाद 'नाट्यशास्त्र'[2] भाषा के सारल्य तथा प्रांजल भावाभिव्यक्ति के संस्कार के कारण तथा लालित्योष्मा से सिक्त होने के कारण इसे लोकप्रिय संस्करण माना जा सकता है। अनुवाद में अनुवादक ने हिंदी के संस्कार के अनुसार तद्भव शब्दों को प्रश्रय दिया है ताकि संस्कृत से इतर पाठक सहृदय समाज नाट्यशास्त्र की आत्मा को समझ सकें। यही कारण है कि जाने–माने फिल्मकार परेश रावल तथा राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय सोसाइटी के अध्यक्ष ने प्रस्तुत पुस्तक के अपने

2. राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, दिल्ली।

आमुख में सही ही लिखा है– "मेरा मानना है कि 'नाट्यशास्त्र' को देश की विभिन्न स्थानीय भाषाओं में भी अनूदित कराकर प्रचारित–प्रसारित करना चाहिए जिससे कि संपूर्ण देशवासियों को इसके बारे में पता चले। जैसे हम सभी अपने–अपने घरों में 'रामायण', 'महाभारत' की पुस्तकें रखते हैं, वैसे ही 'नाट्यशास्त्र' को भी प्रत्येक घर तक पहुँचाना हमारा लक्ष्य होना चाहिए। समाज में इस शास्त्र का जितना विस्तार होगा समाज से कटुता, विसंगतियाँ उतनी ही दूर जाएँगी।" (पृष्ठ 5)। कला–मर्मज्ञ रावल द्वारा इसी क्रम में इस अनुवाद की भूरि–भूरि प्रशंसा किए जाने का महत्त्व इसलिए भी अधिक बढ़ जाता है कि आचार्य त्रिपाठी ने सन् 2006 में 'संक्षिप्तनाट्यशास्त्रम्' के रूप में वाणी प्रकाशन से हिंदी अनुवाद प्रकाशित करवाया था, उसका अब एक समग्र तथा विशिष्ट संस्करण पाठक समाज को इकट्ठा हाथ लग जाएगा। प्रस्तुत ग्रंथ की एक विशेषता यह भी है कि आचार्य त्रिपाठी ने इस ग्रंथ के अनुवाद के शास्त्रीय दर्शन को समझाने के लिए तथा उनके अर्थों के मौलिक भावों को उन्मीलित करने के लिए संस्कृत शास्त्र के महान कश्मीरी पंडित आचार्य अभिनवगुप्त की प्रख्यात टीका 'अभिनव भारती' को भी अपने चिंतन के लिए ऊर्जागृह के रूप में तात्विक आधार बनाया है। इससे शास्त्र रक्षा, उसका समुचित संवर्धन तथा भारत के औपनिवेशिक घटाटोप के कारण संस्कृत और उसके शास्त्र के अर्थ विस्फारन में जो बौद्धिक संकट उत्पन्न किया गया, उसका भी समाधान निकलता दिखता है।

ध्यातव्य है कि इस ग्रंथ के समग्र अध्यायों के अनुवाद में संस्कृति विद्या–मनीषी तथा उर्वर अनुवादधर्मी प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी ने 'नाट्यशास्त्र' से जुड़ी अनेक पांडुलिपियों का अध्ययन किया है। लेकिन ध्यातव्य है कि पाठक या अनुसंधानकर्ता को मूल संस्कृत से इसके हिंदी अनुवाद को मिलाने में किसी तरह की भ्रांति न उत्पन्न हो, इसके लिए इसमें श्लोक संख्या लगभग चालीस पांडुलिपियों के आधार पर (चार खंडों में सन् 1926–1964 के बीच अभिनव भारती टीका से समादृत सर्वाधिक प्रामाणिक संस्करण के अनुसार) दी गई है।

इस साल आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी का चर्चित संस्कृत महाकाव्य प्रकाशित हुआ जो कुल चौंसठ सर्गों में निबद्ध है। इसमें मूल संस्कृत का मनोरम हिंदी अनुवाद स्वयं महाकाव्यकार द्वारा किया गया है। इससे अनुवाद की महत्ता बढ़ जाती है। बहुपठित–समीक्षक कवि तथा महाकाव्यकार त्रिपाठी जी ने प्रस्तुत महाकाव्य में जहाँ एक ओर राम महाकाव्य को एक अभिनव अंदाज दिया है, वहीं दूसरी ओर आदिकवि वाल्मीकि के साथ भी न्याय किया है जो इस समीक्ष्य महाकाव्य 'कवि चरितामृतम्'[3] के नाम से भी आभासित होता है। प्रस्तुत महाकाव्य में क्रमशः उपोद्घात, साहिती का वर्णन, वशिष्ठ और अरुंधती के दर्शन, पुत्र लाभ, कवि का जन्म महोत्सव, करुणा का जन्म, वशिष्ठ आश्रम जाना, वशिष्ठ के आश्रम में ब्रह्मचर्य, कवि का आत्म निवेदन,

3. न्यू भारतीय बुक कॉरपोरेशन, दिल्ली

साहिती में करुणा समावर्तन, दशरथ से मित्रता, सामज्ञ का पिछला वृत्तांत, साहिती में वापसी, पिछला वृत्तांत, साहिती में विप्लव की तैयारी, अभियान, करुणा की खोज, पुनर्मिलन, साहिती में करुणा की वापसी, विवाह का निश्चय, साहिती में कवि और सामज्ञ का पुनः समागम और राम का वृत्तांत, मंगल परिणय, माता और पिता का निधन, कवि और करुणा की संतति, अयोध्या गमन, राम का दर्शन, लक्ष्मण का आगमन, उपवन विहार, राजकुल में जाना, स्रग्धरा का नृत्य, स्रग्धरा के कवि के घर में रहना, कवि के विषय में किंवदंतियाँ, अयोध्या में विपर्यय, अयोध्या से निवृत्ति, करुणा की हत्या, करुणा से रहित कवि का संसार, लक्ष्मण का विमर्श, सामज्ञ से फिर भेंट, सामज्ञ का वृत्तांत, भारवी मंगल, राम के लिए कवि की चिंता, राम और जानकी का दर्शन, राम का विषाद, आख्यान दर्शन, वशिष्ठ के उपदेश, कवि की तपश्चर्या, नारद का आगमन और अयोध्या का पूर्व वृत्तांत, वाल्मीकि के आश्रम में सीता और लक्ष्मण के साथ राम का आगमन, अयोध्या का वृत्तांत, चित्रकूट में मिलाप, वाल्मीकि की सलाह से राम का दंडकारण्यक जाना, आदि काव्य का उदय, वाल्मीकि के आश्रम में सीता का आगमन, आश्रम में शत्रुघ्न का आगमन, कुश और लव का कैशोर्य, अश्वमेध, सीता का अंतर्ध्यान होना, यज्ञ विमर्श, राम का वाल्मीकि के लिए संदेश, श्रीरामायण महायज्ञ, सीता और राम का मिलन और काव्य का उपसंहार जैसे चौंसठ अध्यायों के अंतर्गत आचार्य त्रिपाठी ने नयी शैली में विषय–वस्तु को प्रस्तुत किया है। आचार्य त्रिपाठी ने प्रस्तुत महाकाव्य में मूल तत्त्व की रक्षा करने के साथ–साथ उसमें समकालीन धर्मों को भी पिरोने का भरसक प्रयास किया है जिसमें इस महाकाव्य का युगीन धर्म और निखर गया है। साथ ही महाकाव्य के श्लोक की पंक्तियों में युगीन सुभाषित वचनों की चमक तो है ही। इसके अतिरिक्त उनकी भाषा संरचना इस तथ्य की सर्वथा पुष्टि करती है– संस्कृत में समकालीन भावों को संप्रेषित करने की एक अद्भुत प्राण–शक्ति है। इससे साफ होता है कि संस्कृत अपनी अभिव्यक्तिपरक सामर्थ्य से आप्लावित है और इसका भी ज्ञान रहे कि इसकी ठोस तथा भास्वरित चतुर्मुखी संप्रेषणीयता का लालित्य तथा सारल्य संस्कृत को नित्य नूतन प्रवाहमय बनाता है। इसमें महाकाव्य के शास्त्रीय मापदंडों के निर्वाह के साथ रामायण की शास्त्रीय अप्रोच को भाषा की सरलता तथा भाव को लोकवेदना की भूमि पर निःसृत किया है। यही कारण है कि 'कवि चरितामृतम' संस्कृत वाङ्मय में रामकाव्यों पर लिखी रचनाओं से बहुत ही आगे की रचना मानी जानी चाहिए। करुणा, प्रेम प्रांजलता, उसका दर्शन तथा अनेक स्थानों पर आचार्य त्रिपाठी की नवोन्मेषशालिनी प्रतिभा रामायण सृजन कला को एक नया आयाम देती है। वाक्यविन्यास की मनोरमता तथा आम बातचीत की शैली, उसका कथनोपकथन नाट्यशैली के क्षितिज पर भी प्रस्तुत महाकाव्य में उभरता दिखता है। इसमें महाकाव्यकार आचार्य त्रिपाठी ने वाल्मीकि के चरित्र का जो रेखांकन किया है, संभवतः

वैसी मौलिक उद्भावना किसी संस्कृत रचनाकार ने नहीं की है। करुणा के महाकवि वाल्मीकि को पुरुषोत्तम राम से इस बात का मलाल है कि भगवान राम अपनी भार्या सीता और लक्ष्मण जी के साथ दक्षिणापथ से लौटते हुए उनके आश्रम में नहीं आए और उनकी नजर में वे अब उन्हें याद नहीं करते हैं– 'अपि नामाथ रामस्य मनो नु परिवर्तिम्। राजा जातः स मां किंतु नैव स्मरति पूर्ववत् ।।22/56।। महाकवि वाल्मीकि को यह शिकायत इसलिए है कि वे उनकी एक झलक देखना चाहते हैं क्योंकि महाकवि वाल्मीकि धीमान गुरु वशिष्ठ की मेधा, भरत की व्यथा और दैन्य, रामजी की वेदना, सीता की सरलता, लक्ष्मण का सेवाभाव और शौर्य– इन सबको याद कर के अपने भाव–प्रवाह में निमग्न रहते थे–

वसिष्ठस्य गुरोर्मेधां गाम्भीर्यँ चैव धीमतः।
भरतस्य व्यथां दैन्यं रामस्यापि च वेदनाम्।।
सीताया ऋजुतां शैर्यं शुश्रूषां लक्ष्मणस्य च।
स्मारं स्मारमसौ तस्यौ भाव प्रवाहसम्प्लुतः।।
14–15/56।।

और इसी मनोदशा में अपने दिन गुजारते हुए व्याध्र के द्वारा क्रौंच दम्पति के नर पक्षी को बाण से मारे जाने की दुःखांत घटना आदि महाकाव्य के सृजन का मूल कारण रहा है। महाकवि वाल्मीकि के राम ने अनुराग में अनुकीर्तन के महत्त्व पर बल दिया है जिसको लेकर आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी ने अभिनवगुप्त तथा आचार्य भरत प्रोक्त अनुकीर्तन–माहात्म्य को अपनी टिप्पणी के क्रम में स्पष्ट किया है। इस दम्पति युगल के संयोग श्रृंगार प्रेम प्रसंग तथा एकाएक बाण के कारण हताहत नर पक्षी द्वारा प्राणांत के समय अपने जीवन साथी को अंतिम रूप में देखा जाना, वस्तुतः वह दृश्य भट्टनायक के रस के साधारणीकरण के सिद्धांत से परिपाक होकर व्यक्तिगत नहीं, अपितु वैश्विक दुःख का स्वरूप ले लेता है। यही कारण है कि आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी ने वाल्मीकि के माध्यम से सृजनधर्मिता की वैश्विकता को उजागर करवाया है– ''नासौ शोकोमदीयोस्ति, शोकस्तस्य कवेरयम्। कविनानुभूयते योऽसौशोकः सर्वजनस्य सः//63/56।।

भाषा–शैली तथा सुभाषित की दृष्टि से भी प्रस्तुत महाकाव्य लालित्यमय है। इनमें संस्कृत का पारंपरिक शास्त्रीय माहात्म्य तो है ही। साथ ही साथ ठेठ हिंदी की आम बोलचाल की शैली को जबरदस्त रूप में उकेरा गया है, देशज मिजाज से भरी जिसमें उसका मेटाफर भी सादगी भरा लेकिन बहुत प्रभावी और अर्थपूर्ण लगता है। इससे भाषा के काठिन्य की गाँठ ढीली होती दिखती है। मिसाल के तौर पर मन के तंतुओं को कालरूपी मूषिक द्वारा काटा जाना (मनस्तन्तू–नकृंतत् कालमूषिकः ।।45/41।।), बैल के जैसा मनुष्य (बलीवर्दसमः सैष नो जानीते जनः सुतम्

।।53/4।।), चुगलखोर कुछ भी बक–बक कर रहे थे (यत्किञ्चित् पिशुना जजल्पुरितरे ताटस्थ्यमायम्बिरे।।44/411)।

प्रस्तुत महाकाव्य में अंतिम चौसठवाँ सर्ग माँ सीता और पुरुषोत्तम के मिलन और काव्य के उपसंहार के रूप में काव्यकार ने प्रस्तुत किया है। उसमें तथा अन्य सर्गों में काव्य–लालित्य की दृष्टि से महाकवि कालिदास तथा महाकवि भवभूति के प्रभाव के साथ स्त्री–विमर्श के प्रसंग में आचार्य त्रिपाठी जी के अन्य कविता संग्रह 'चतुरस्र' (संस्कृत से हिंदी स्वयं आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी अनूदित, साहित्य अकादमी, 2005, दिल्ली) में भी पढ़ा जा सकता है।

इस साल दो युवा संस्कृत कवि डॉ. अरविंद कुमार तिवारी तथा पंकज कुमार झा (दोनों क्रमशः संपादक तथा सहसंपादक) ने शारदायनम[4] नामक आधुनिक संस्कृत काव्य, विशेषकर संस्कृत गीतिका का मनोरम संकलन प्रस्तुत किया है। माँ शारदे के व्यक्तित्व तथा महिमा–मंडन को लेकर लिखे गए प्रस्तुत संग्रह में जाने–माने संस्कृत के अनेक प्रौढ़ तथा युवा कवियों तथा कवयित्रियों की रचनाओं को स्थान देकर संस्कृत भाषा की समसामयिक कृतियों को उजागृत कर इस वाङ्मय की श्रीवृद्धि की गई है। 'शारदायनम्' के प्रकाशन से तदस्तीक होती है कि संस्कृत की समसामयिक कविताओं में ऐसे अनेक रचनाकार हैं जिन्हें अमूमन अधिसंख्य पाठक समाज नहीं जानता है। यह तथ्य अलग है कि माँ सरस्वती के व्यक्तित्व पर आधृत प्रस्तुत संकलन में कुल 61 छोटी तथा मझोली कविताओं को स्थान दिया गया है। इसकी भक्तिपरक रचनाधर्मिता होने के कारण समष्टि से अधिक व्यष्टि की ओर झुका रहना स्वाभाविक है। लेकिन युवा/युवती की लेखनी से यह उम्मीद की जा सकती है कि व्यक्तिगत, धार्मिक तथा भक्तिभाव के साथ इन रचनाओं में जागतिक–सामूहिक कल्याण, प्रखर राष्ट्रवाद तथा लोक–भावना से जुड़े मेटाफर को भी विशेष रूप में चमत्कृत किया जाना चाहिए। इससे आज की संस्कृत कविता की धार और तीक्ष्ण होगी।

राम विनय सिंह की कविता '"अम्ब! बिम्बमपि दर्शय"' में व्यक्तिगत श्रद्धा सहज ही पढ़ी जा सकती है– बाल्यादेव जपन्ती नित्यं नामरसं रसना, संप्रति शुभविस्रम्भयुता जाता कोमलवचना।। उसी प्रकार "जननि! सङग्मनी परिपाहि माम्" कविता में भी रहस बिहारी द्विवेदी ने माँ शारदे से अपनी याचना करते हुए लिखा है– सकलशब्दयुते! श्रुतिवर्णिते! विमलबुद्धिविधायिनी। भय हरे! गति दे! कविशक्ति दे! जननि! सङग्वनी परिपाहि माम्। प्रस्तुत कविता चूर्णक शैली की एक बहुत ही अच्छी मिसाल मानी जा सकती है। साथ ही साथ इसमें कवि निर्भीकता तथा रचनाशक्ति की श्रेष्ठता प्रदान करने की बात कहता है। मनतोष भट्टाचार्य ने अपनी कविता 'भारती मम भारती' में माँ शारदे के वपु–सौंदर्य में श्रृंगार के साथ–साथ उसमें आध्यात्मिक भाव को भी अंकित करने का प्रयास किया है– सितहंसयुते

4. एजुकेशनल बुक सर्विस, दिल्ली

ह्ययि धातृसुते/हर विष्णुपितामहशक्रनुते।। कुचुभारनते सितपर्णयुते/ह्ययि पुस्तकरे प्रणमाम्यमरे ।।4।। यहाँ स्त्री शरीरांग के लिए 'कुच' शब्द बहुत ही मर्यादित है। धर्मदत्त चतुर्वेदी ने भी माँ सरस्वती के प्रति श्रद्धा का अंकन करते हुए भारतीय जनजीवन में पाश्चात्य संस्कृति के दुष्प्रभाव के निदान के लिए भी कामना की है– ''पाश्चात्य–संस्कृतिर्हा मे भारते चलन्ती, कामादिभोगतृष्णा शुचितां विदूषयंती'' ।।5।। (हे शारदे! त्वदीया।।)

युवा चर्चित कवि अरविंद कुमार पांडेय ने लेखन, शिक्षण तथा व्याख्या आदि में नूतन कौशल प्राप्त करने की कामना की है। 'वागर्चना' में विशन लाल गौड़ समूची दुनिया को पाक बनाए जाने की कामना करते हुए भारतभूमि को यश–वैभव तथा समृद्धि से परिपूर्ण देखना चाहते हैं– कुरु विश्वमखिलं पावनं, भव्यं विभावय भारते।। श्री कुशाग्र अनिकेत ने भी उनकी सारस्वत प्रतिमूर्ति का बहुत ही जीवंत वर्णन किया है– कण्ठे संस्कृतभारती करतले कृष्णानना लेखनी/जिह्वायां कवितासुधा नयनर्योवेर्णाक्षरा द्यञ्जनम् ।।6।। सूर्यकांत त्रिपाठी ने भी माँ सरस्वती को राष्ट्र की संरक्षिका तथा नीति नैपुण्यता का संवर्धक कहा है– "राष्ट्ररक्षिका नीतिवर्धिका भारतभूमि विलासयुता"। (जयति भारती)। उसी प्रकार आभा झा ने माँ सरस्वती से कामना की है कि हृदय के आकाश में जो मोह, माया तथा लोलुपता का बादल आच्छादित है, उसे अपाकृत कर उससे ज्योत्स्ना (चाँद की किरणें) रूपी विश्वप्रेम की अमृत वर्षा की तरह वर्षा करवाइए– "दूरय दूरय हृदयगगन तो जननि! मोहमय–मेघम्/वर्षय वर्षय विश्व–प्रेम–पीयूष–किरण–राकेशम्"।। (सरस्वती वंदना)। इस कविता में इस बात पर भी काफी दुःख व्यक्त किया गया है कि दया रोती है, प्रेम विषाद करता है तथा सद्भाव घोर रुदन कर रहा है। साथ ही मनुष्यता क्रंदन करती है और दानवता गरज रही है। इस कविता में मानवीय संबंधों की वैश्विकता की स्थापना की बात की गई है और रिश्तों के विखंडन तथा उपेक्षा को लेकर भी पर्याप्त चिंता जताई गई है।

इस मनोरम संकलन में पद्मश्री अभिराज राजेंद्र मिश्र (शारदाश्वघाटी काव्यम्), मातः (सरस्वती वंदनपरा द्विपदिका), कमला पांडेय (भारते भातु संस्कुर्वती भारती), जनार्दन प्रसाद पांडेय 'मणि' (दयसे न कथम्), महाराजदीन पांडेय (वाङ्महिमा), निरंजन मिश्र (वीणानिनादिनि शारदे), स्व. जानकी वल्लभ शास्त्री (भारती वसंत गीतिः), हर्षदेव माधव (वाग्वादिनीस्तवः), पंकज कुमार झा (वरदे! श्रीलोचने), अरविंद कुमार तिवारी (भारतीवंदनम्) तथा परमानंद झा (पायात्पदांबुज–रजः) की गीतिकाएँ संस्कृत भाषा के आधुनिक साहित्य को समादृत करती हैं। लेकिन इस संग्रह में आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी, आचार्य हरिदत्त शर्मा आदि सुकवियों के साथ–साथ संस्कृत के युवा कवि प्रवीण पाड्या, बलराम शुक्ल, कौशल तिवारी, ऋषिराज तथा युवराज भट्टराई जैसे कवियों से आमंत्रित कविता को स्थान मिल पाता तो इस संग्रह में चार

चाँद लग जाते और जिस प्रकार स्वर्गीय वासुदेव द्विवेदी शास्त्री तथा जानकी वल्लभ शास्त्री जी की कविताओं को इसमें संचयित किया गया है, उसी प्रकार स्वर्गीय पद्मश्री रमाकांत शुक्ल तथा इच्छाराम द्विवेदी 'प्रणव' आदि कवियों की सरस्वती वंदना से जुड़ी कविताओं को चयनित किया जाना अपेक्षित है।

साहित्य अकादेमी से संस्कृत बालसाहित्य लेखन के लिए पुरस्कृत युवा विद्वान अरविंद कुमार तिवारी की पुस्तकः सूक्तिमालिका[5] भी इस साल की मौलिक रचनाओं में महत्त्वपूर्ण मानी जा सकती है। रचनाकार तिवारी ने कुल पाँच अध्यायों के अंर्तगत लोकरंजक, सरल तथा जीवनोपयोगी सुभाषितों का सृजन किया है। इसकी संस्कृत तथा हिंदी अनूदित भाषा बहुत ही सरल तथा हृदयग्राही है। लेकिन कुछेक जगहों पर नजीर के तौर पर 'प्रपा' (प्र.23), 'सट्टक' (पृ.40), 'भाटक' (वही), 'रावकं' (पृ.52), 'कासार' (पृ.56) आदि शब्दों के हिंदी अनुवाद भाषा की दृष्टि से प्रासादिक नहीं माने जा सकते हैं। उसी प्रकार पक्षी के लिए 'खेचर' (पृ.35) भी है और स्वर्ग के लिए 'नाकं' (पृ.48) की जगह स्वर्ग का प्रयोग भी ललित और सरल होता। लेकिन इस पुस्तिका का महत्त्व इसलिए बढ़ जाता है कि संस्कृत भाषा के आधुनिक साहित्य में सुभाषित को लेकर कोई रचना ग्रंथ प्रकाश में नहीं आया है। इसमें सुभाषित वचनों की क्लासिकल गाँठ तथा भारी भरकम रूपक या उपमादि को पिरोने का भरसक प्रयास नहीं किया गया है। अतः भाषा के सारल्य तथा भाव की लोकजन्यता के सबब से भी इसे मानीखेज माना जाना चाहिए। मजे की बात है कि इसमें नैतिकता, धर्मभीरूता तथा दर्शन आदि के साथ लोक–संबंधों और रिश्तों को भी लेकर मनोरम मुहावरेदार सुभाषित वाक्यों का विन्यास भाषा लेखन तथा संस्कृत अभिव्यक्ति की सशक्त क्षमता की पुष्टि करता है। कवि लिखता है– 'श्वसुरालये श्यालः शरीरे भाल इव दृश्यते'– श्वसुराल में साला शरीर में ललाट की तरह दिखता है। (1/9)। उसी प्रकार धनाढ्य, बलशाली तथा गुणवान को क्रमशः श्रम, भ्रम तथा क्रम (मर्यादा) को हमेशा बरकरार रखना चाहिए–'धनवन्तः श्रमं न त्यजेयुः/, बलवन्तः भ्रमंव पालयेयुः/गुणवंतः क्रमं न विस्मरेयुः ।।39/3।। उसी प्रकार भाषा का प्रभावी रूपक तथा उसका श्लेष भी पठनीय है– कुरूपोऽपि मिलिन्दः सुमारिवन्दप्रियो विलोक्यते।।13/1।। उपकृतः स्वजन इव पालितः श्वजनः काले रक्षति ।।14/1।।– उपकृतः स्वजन के समान पालित स्वजन समय आने पर रक्षा करता है। उसी प्रकार आयुर्वेदजन्य सुभाषित भी ध्यातव्य है– "भोजनांते पीतं तक्रं वक्रमपि वायुमपसारयति।।30/1।। उसी प्रकार "वर्षर्तौ भेकानां राज्यम्। वसन्ते केकानां राज्यम् ।।36।।2।। अर्थात् बारिश में मेंढ़क तथा वसंत में मयूर की चाँदी कटती है।

गौतम पटेल की रचना 'कृष्णं परं धीमहि[6] भगवान कृष्ण से जुड़े भक्ति काव्य की

5. सत्यम् पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।
6. केंद्रीय संस्कृत बिंब विद्यालय, दिल्ली।

एक अतीव महत्त्वपूर्ण रचना मानी जा सकती है। इसका बहुत बड़ा कारण यह भी है कि इस राग काव्य के कुल 568 महत्त्वपूर्ण मूल संस्कृत श्लोक जो शार्दूल विक्रीडित छंद में पिरोए गए हैं, उनमें भक्ति के समर्पण भाव, दार्शनिक तथा आध्यात्मिक भाव रहने के कारण क्लासिकल के रूप में निखरते प्रतीत होते हैं। कुलपति प्रो. श्रीनिवास वरखेड़ी ने भी पुस्तक के अपने पुरोवाक् में सही ही लिखा है– "विशिष्य मोक्षसाधनसामग्रयां भतिरेव गरीयसी, इत्युक्वात् भक्तिप्रधानर्मिदं काव्यं समेषां भगवद्भक्तानां मोदाय कल्पते इत्यतः संदर्भेऽस्मिन आचार्याय शुभाभिनन्दनानि।" (पृष्ठ ii) इस रचना में शृंगार, धर्म तथा नीति जैसे फलसफा की त्रिवेणी की ऊर्मि सहज ही सहृदय सामाजिकों की चित्तवृत्ति को अपने आप में सहज ही आवर्त करती मालूम पड़ती है। यद्यपि इनकी रचना पर भर्तृहरि के 'नीतिशतक' का प्रभाव जरूर दिखता है– ''केयूराः नहि भूषयन्ति पुरुषं पुष्यं न वा चन्दनम्, सर्वकालमयं विनाशसहितं लोके स्थित सर्वथा"।। 254।। लेकिन ठीक इसी श्लोक की अगली दो पंक्तियों में भगवान श्रीकृष्ण को सच्ची भक्ति के जरिए बिना कोई लाप–लपेट के, सरलता तथा आसानी से पा लेने की भी बात करते हैं– ''कृष्णे या करुणा परा विलासिता वृत्तिश्च भक्त्यात्मिका सा साध्या सरला सदैव सुखदा कृष्णंवृत्तिश्च परं धीमहि"।। वही।। कवि की भक्ति पराकाष्ठा तो तब देखने को मिलती है, जब वह कहता है कि मुझे स्वर्ग या मोक्ष आदि की कोई लालसा नहीं है, अपितु मैं भगवान श्रीकृष्ण जी को अपने चित्त में हमेशा उसी तरह बसा कर रखना चाहता हूँ जैसे वे राधाजी के मन–मंदिर में रात–दिन रचे–बसे रहते हैं– "नाकं नैव चनैव शैव पदवीं मुक्तिं परां शाश्वतीं काडेक्ष केवलमेव कृष्णस्मरणं राधासमं मानसम।। आनन्दैकरसं च मोदसहितं भूमासमं व्यापक ब्रह्मानंदसहोदरं भवतु मे कृष्णं परं धीमदि"।।26।।

पद्मश्री अभिराज राजेंद्र मिश्र के नंदीवाक से संबलित ब्रज सुंदर मिश्र विरचित कविता–संग्रह "कोणार्ककाव्यम्"[7] साहित्य, संस्कृति तथा इतिहास के बीच कुल 214 संस्कृत श्लोकों के जरिए एक जीवंत रिश्तों का तानाबाना बुनता है।

साथ ही साथ इसमें मूल संस्कृत का हिंदी–ओड़िया अनुवाद, ट्रांसलिट्रेशन व अन्वय को प्रस्तुत किया गया है। लेकिन इन श्लोकों का मनोरम हिंदी अनुवाद इसके संस्करण को और व्यापक बनाता है। कवि मिश्र ने इसमें कोणार्क (ओडिशा) अवस्थित सूर्य मंदिर से जुड़ी किंवदंतियों को पौराणिक माहात्म्य के साथ तथा अनेक ऐतिहासिक साक्ष्यों को श्लोकबद्ध किया है। साथ ही साथ हिंदीनुमा शैली के बोलचाल वाले वाक्यों के संस्कृत अनुवाद के जरिए भाषा को ललित तथा समकालीन बना दिया है। कवि लिखता है कि इस मंदिर के निर्माण में 12 वर्ष लगे जिसका निर्माण (13वीं सदी के आसपास) गंगवंशीय लांगूला नरसिंह देव ने करवाया था। आज भी दुनिया में इसकी स्थापत्य कला प्रख्यात है– '' एतेषु सर्वेषु च मंदिरेषु/तदुत्कलीयं हि वरं परन्तु/त

7. निधिबुक सेंटर, दिल्ली।

तस्य कुत्रापि तुलास्ति भूमौ/तदेकमेवात्र न तु द्वितीयम ।।204।। लेकिन इसमें इस बात को भी लेकर अफसोस जताया गया है कि इसमें संरक्षण तथा संवर्धन के लिए समुचित रूप से कदम नहीं उठाए जा रहे हैं। साथ ही साथ मध्यकालीन शासक जहाँगीर की सेनाओं द्वारा इसको लूटे जाने तथा घोर क्षति पहुँचाने की भी बात उठाई गई है– ''जाहाङ्गिराख्यो भवनाधिपोऽसौ तल्लुण्ठनं चाक्रमणं चकार'' ।।154।। भारतीय संस्कृति में सूर्य पूजा के माहात्म्य तथा उनके स्थापत्य की चर्चा के क्रम में गुजरात की पुष्पवती नदी (मधीरा नामक गाँव, जिला मेहसान जनपद), 11वीं शताब्दी तथा कश्मीर के अनंतनाग स्थित मार्तण्ड मंदिर (8वीं शताब्दी कर्कोटक राजवंशीय ललितादित्य) की भी चर्चा करता है। गौरतलब है कि कोणार्क मंदिर में सूर्य का अर्क (प्रथम किरण) तथा गुजरात और कश्मीर के इन सूर्य मंदिरों में क्रमशः दोपहर तथा डूबते सूरज की प्रथम किरण सबसे पहले दस्तक देती है। ध्यातव्य है कि ऐसा माना जाता है कि सिंकदर ने भी इस मार्तण्ड मंदिर को रौंदा था।

प्रस्तुत रचना में डूबते को तिनके का सहारा (प्लवन्नरश्चाश्रयते तृणं यत् ।।104।।, रात के बाद सुबह होती है। (शेषे निशाया भवति प्रभातम् ।।207।।, मानो सिर पर वज्राघात हुआ (पपात मुंडे सहसा च वज्रः।।110।। क्रूर समय के लिए भला क्या असंभव होता है। (कराल–कालः कुरूते न किं वा।।163।। जैसी भाषिक प्रांजलता तथा शांब द्वारा सूर्य भगवान की अर्चना से उसको कुष्ठ रोग से मुक्ति का पौराणिक प्रसंग भी शैली और कथानक को मनभावन बनाता मालूम पड़ता है।

इस साल संस्कृत साहित्य के साथ–साथ इससे जुड़े शास्त्रीय ग्रंथों का प्रकाशन भी संस्कृत भाषा की श्रीवृद्धि तथा जीवंतता के प्रबल प्रमाण माने जा सकते हैं। श्रीमंत भद्र ने आचार्य आशाधर भट्ट लिखित पांडुलिपियों का मिलान कर 'रसिकानंदः[8] नामक एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण शास्त्र–ग्रंथ का संपादन किया है। प्रस्तुत पुस्तक में भक्ति रस के प्राधान्य तथा उसके दार्शनिक सिद्धांतों की स्थापना के क्रम में आशाधर भट्ट के व्यक्तित्व–कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए परिभाषा, श्रृंगार, हास्य, करुण, रौद्र, वीर, भयानक, वीभत्स, अद्भुत, शांत, भक्ति, भाव तथा प्रकीर्ण प्रकरणों के अंतर्गत रसों तथा भावों की व्याख्या करते भक्तिरस के माहात्म्य और प्राधान्यता को स्थापित किया गया। गौरतलब है कि कवि ने इसमें भक्ति रस के अतिरिक्त अन्य रसों के खंडन–मंडन की अपेक्षा भक्ति रस की प्रधानता की बात की है। हाँ, यह बात जरूर है कि कवि एवं शास्त्रकार आशाधर भट्ट ने मम्मट आदि की देवतादि विषयक चर्चा को उठाया है और भगवान कृष्ण की लीलाओं के प्रसंग के अलावा जयदेव के अद्भुत रस का इसमें विमर्श किया गया है। साथ ही साथ आचार्य भरत के साथ जयदेव के विरोधी पक्षों का इसमें समर्थन किया गया है। कवि भट्ट ने अपने शास्त्रीय पक्षों को प्रतिपादित करने के लिए स्वरचित सरल, ललित तथा लोकजन्य नजीर को प्रस्तुत किया है– "यथा योषिति

श्रृंगारः कामिनः कामुके स्त्रियाः। तथा भक्तस्य गोविन्दे रतिर्भक्ते हरेरपि ।।6। –(भक्ति–रसप्रकरणम्)। ध्यातव्य है कि इसी क्रम में यह भी लिखा गया है कि आलंबन तथा विभाव आदि तो भक्ति रस से पूर्ण आनंद के लिए होता है। इसके लिए आचार्य भट्ट ने 'श्रीमद्भगवत गीता' के उद्धरण को भी अपनी पाद टिप्पणी में लिखा है– मयि चानन्ययोगेन भक्तिरव्यभिचारिणी/विविक्रदेशसेवित्वमरतिर्जनसंसदि ।।13/11।।

उसी प्रकार राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के अनुसार भारतीय ज्ञान परंपरा को बढ़ावा देने तथा बहुशास्त्रीय अध्ययन की दृष्टि से कुलपति प्रो. श्रीनिवास वरखेड़ी के प्रधान संपादकत्व में सुब्राय वि. भट्ट की पुस्तिका "मीमांसकोऽयं कविकुल गुरुः"[1] भी काफी महत्त्व की मानी जा सकती है।

मल्टीडिसिप्लीनरी अध्ययन को बढ़ावा देने के लिए महाकवि कालिदास के साहित्य में मीमांसा दर्शन के प्रभावों के अन्वेषण की दृष्टि से भट्ट की पुस्तिका मीमांसकोऽयं कविकुल गुरुः[9] अच्छी कृति मानी जा सकती है। इसमें समीक्षक भट्ट ने 'रघुवंश', 'अभिज्ञान शाकुंतल' तथा 'कुमारसंभव' आदि रचनाओं में गुंफित मीमांसा दर्शन की व्याख्या के लिए जैमिनि सूत्र, श्लोकवार्तिक तथा उसके आकृतिवाद, तैत्तिरीय संहिता, मनुस्मृति, तंत्रवार्तिक तथा आपस्तंबश्रौत सूत्र के कतिपय उदाहरणों से एक नवाचारी तबरा प्रस्तुत करने का भरसक प्रयास किया है। समीक्षक ने भी माना है कि रघुवंश के मंगलाचरण– ''वागर्थाविव सम्पृक्तौ वागर्थ–प्रतिपत्तये'' (1/1) में शब्द और अर्थ के नित्य एक निश्चित संबंध (अर्थ) होते हैं– "औत्पत्तिकस्तु शब्दस्यार्थेन संबंधः तस्य ज्ञानम् उपदेशः अत्यतिरेकश्चार्थेऽनुपलब्धे तत्प्रमाणं बादरायणस्यानपेक्षत्वात्" (जैमिनि सूत्र 1–1–5)। सरल मानक संस्कृत की दृष्टि से भी यह पुस्तिका श्लाघ्य मानी जा सकती है।

'सहृदयरञ्जनी[10] के प्रकाशन से आचार्य श्री कृष्णप्रेमी जैसे बहुमुखी संस्कृत रचनाकार का व्यक्तित्व तथा कृतित्व प्रकाश में आने से संस्कृत भाषा के आधुनिक साहित्य की श्रीवृद्धि हुई है। समग्र रूप में संस्कृत भाषा में लिखित प्रस्तुत ग्रंथ के संपादक डा. एस. उमापति ने इनके विषय में दुलर्भ जानकारी देते हुए इनकी विभिन्न कृतियों पर स्थाली पुलक न्याय से परिचयात्मक विवरण तो जरूर दिया है लेकिन अपनी समीक्षा–दृष्टि से विशेषकर "श्रीरुक्मिणी–परिणय महाकाव्य", "श्री जानकी विजय महाकाव्य", "श्रीराधिका विलास चंपू काव्य" तथा "वसंतोत्सव नाटक" के सामान्य परिचय में उसके शास्त्रीय पक्षों को भी प्रस्तुत किया है। इसके अलावा संस्कृत साहित्य में सामान्य काव्य–लक्षण, वृत्त लक्षण, अलंकार, नायिका नायक लक्षण के साथ रस तथा रीति निरूपण भी किया है।

संस्कृत साहित्य तथा भारतीय विद्या के विद्वान् सुज्ञान कुमार माहान्ति द्वारा

8. केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, दिल्ली
9. वही–
10. केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, दिल्ली।

लिखित तथा संपादित समीक्षात्मक ग्रंथ– "हिमाचल प्रदेशस्य सांस्कृतिक रिक्थं प्रति संस्कृतस्य योगदान"[11] भी बहुत ही तात्विक विश्लेषण तथा ऐतिहासिक चेतना से संवलित माना जा सकता है। इसका बहुत बड़ा सबब यह भी है कि माहान्ति ने इसके पहले अध्याय में जहाँ हिमाचल प्रदेश के इतिहास को उसके विविध प्रमाणों के साथ प्रस्तुत किया है जिसके बारे में अमूमन आम जानकारी नहीं के बराबर मिलती है, उसी प्रकार दूसरी ओर हिमाचल की प्राकृतिक सुषमा तथा वेद पुराण आदि की इस प्रदेश की माटी के साथ सप्रमाण चर्चा भी सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की दृष्टि तथा इस राज्य के नवाचारी चिंतन पर भी व्यापक प्रकाश डालती है। इसमें जहाँ भारत का अतीत गौरव झलकता है, वहीं देरिदा ने अपने उत्तर आधुनिकवादी (पोस्टमॉडर्निस्ट) के फलसफे के तहत जो स्थानीय (भौगोलिक) मुद्दों को तरजीह दी है, वे सारे तथ्य भी इसमें प्रतीत होते हैं। इस दृष्टि से रामायण तथा महाभारत का एक नया अध्ययन किया जाना चाहिए। लेखक माहान्ति भी अनेक साक्ष्यों के आधार पर यह मानते हैं कि सिंधु सभ्यता वैदिक सभ्यता का ही परिवर्तित स्वरूप है।

यद्यपि गद्य साहित्य का लेखन पद्य साहित्य की अपेक्षा थोड़ा कठिन माना जाता है लेकिन संस्कृत साहित्य सृजन के विविध कालखंडों में भी इस विधा में भी लेखन किया जाता रहा है। इस साल में संस्कृत कथा का प्रकाशन गौरतलब है। युवा कथाकार प्रमोद शुक्ल की छोटी–छोटी कथाओं का संग्रह ''कथालापः''[12] सरल मानक संस्कृत के प्रासादिक गुणों से सिक्त है जिसमें "कस्मिन मासे अति शैत्यं भवति?", 'राज्ञः पुत्रः', 'राजकुमारस्य बुद्धिमत्ता', 'हस्त–प्रक्षालनम्', 'मार्गे रोटिका', 'जापान देशे विवेकानन्दः', 'घूम्रदंडिका' जैसी 21 कथाओं को चयनित किया गया है। इनमें क्रमशः प्रथम अधिक रोचक है क्योंकि भूत के माध्यम से ऋतु ज्ञान आदि के प्रसंगों को उठाया गया है जिसमें बच्चों की दिलचस्पी का होना स्वाभाविक ही है। उसी प्रकार दूसरे में राजपुत्रों के बीच सम्राट बनाने के लिए मिट्टी के मटके में ओस की बूंदों को भरकर लाने की प्रतियोगिता भी गौरतलब है जिसमें एक पुत्र उस मटके को पहले पानी से सांद्र कर ओस की बूँद भरने में सफल होता है– "घटः जलं शोषयित्वा आर्द्रः अभवत्। ततः परं घटः तुषारकणान् शोषयितुं न शक्नोति स्म'' (पृष्ठ 13–14)। उसी प्रकार तीसरे तथा चौथे में मुख प्रक्षालन आदि के समय जल अपव्यय तथा चौथे में अन्न को ब्रह्म की तरह मानने पर बल दिया गया है और उसकी बर्बादी करने की निंदा की गई है– "अन्नं न निन्द्यात। प्राणो वा अन्नम्। अन्नं वै ब्रह्म। इति" (पृ.28)। उसी प्रकार नरेंद्र और शिवाकांत के बीच बातचीत के माध्यम से अनाज (शस्य) के विविध प्रकार के दानों के माहात्म्य की चर्चा भी सांस्कृतिक महत्त्व को दर्शाती है। पाँचवीं कथा जापान देशवासियों में फूट–फूटकर भरी देशभक्ति की भावना को अंकित करती है। उसी

11. केंद्रीयसंस्कृत विश्वविद्यालय, दिल्ली।
12. निदेशक, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, दिल्ली।

प्रकार छठी सिगरेट पीने की समस्या तथा 'पाटिम दूरभाषः' (स्मार्टफोन) मोबाइल फोन के दुष्प्रभाव विशेषकर बच्चों के लिए अंकित करती है। इन कथाओं में प्रयोग किए गए शब्द स्तबक यथा–महापण (मॉल पृ.8), 'सम्पुटाशः (सैंडविच, पृ. वही), संयावः (हलवा, वही) पयोहिमः (आइसक्रीम, वही), मृदुपत्रकम् (टिशू पेपर, वही), औशीरिका (वाश बेसिन, पृ.22), कूर्पासकः (जैकिट, वही), वस्त्रचूर्णम, (सर्फ, पृ.वही), 'प्लास्टिक पुटकम् (प्लास्टिक की थैली, वही), अंवकरः (कचरा, पृ.30), प्रत्यूर्जिता (एलर्जी, पृ.61), महार्घा (महंगी, पृ. वही) जैसे– मनोरम नये शब्दों का प्रयोग इसकी भाषिक प्रांजलता तथा प्रवाह की पुष्टि करता है। लेकिन इसके प्रयोग का तो अंतिम निर्णय तथा वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग ही करेगा।

उसी प्रकार जाने–माने संस्कृत विद्वान तथा सरल मानक संस्कृत के लोक प्रचारक गोपबंधु मिश्र द्वारा हिंदी से संस्कृत भाषा में अनूदित "त्रयः संन्यासिनः तथा चतेषां मातरः''[13] (मूल लेखक गोविंद प्रसाद शर्मा) भी प्रेरणास्पद तथा दिलचस्प मानी जा सकती है। इसमें आदि शंकराचार्य, श्री चैतन्य महाप्रभु तथा स्वामी विवेकानंद जी की माताएँ क्रमशः आर्यांबा शची देवी तथा भुवनेश्वरी देवी के प्रेरणास्पद प्रसंगों को उकेरा गया है– ''यैः महापुरुषेः देशस्य सांस्कृतिकं राष्ट्रियं च जीवनं प्रभावितम् तथा च राष्ट्रियैकतयाः दृढ़ीकरणे येषां महत्त्वपूर्णा भूमिका अस्ति, तेषु आद्यशङ्कराचार्यः प्रमुखो विद्यते''। (आद्यशङ्कराचार्यः तस्य माता आर्याम्बाङ्करा)

बहुचर्चित संस्कृत कथाकार तथा सरल मानक संस्कृत (एस.एस.एस.) के महत्त्वपूर्ण पुराधाओं में एक जनार्दन हेगडे का कथा–संग्रह 'पात्रता'[14] 'किं श्रेयसे...? मानवतायाः अर्थः' 'जीवनं सुखशय्यायेत', 'कृतज्ञतानिष्कृतिः', 'आभि–मुख्यं', 'पल्लवित जीवनम्' 'अनर्घ्यं रत्नम्', 'संबन्धः', 'संस्कारः' तथा 'क्षणिक सुखम्' जैसी कुल चौदह कहानियों का संग्रह है जिनमें कथानकों की समसामयिकता, रोचकता के साथ मानव संबंधों के बीच स्वाभाविक तथा आर्थिक स्पर्धा के कारण टूटते रिश्तों को भी अंकित किया गया है। फलतः संस्कृत भाषा अपनी संप्रेषणीयता तथा स्वाभाविकता के कारण बहुत ही मनभावन हो उठी है। प्रस्तुत संग्रह की कथा 'पात्रता' भी एक उपेक्षित बालिका तथा उसकी पारिवारिक परिस्थिति को अंकित करते गुरु–शिष्या के आदर्श संबंधों को भी रेखांकित करती है। अपनी कक्षा लेता एक शिक्षक यह बात समझ लेता है कि मीना जो पिछले बेंच पर बैठकर पढ़ाई करती है, वह अपनी पारिवारिक समस्याओं तथा उसकी चिंताओं के कारण अपनी पढ़ाई में बहुत ही पीछे छूट रही है– ''परहयः शत्रौ अहं गृहपाठ लेखने मग्न, आसम् कार्यार्थं सा मां द्वित्रवारम् आहूतवती। तत् लेखनव्यग्रया मया न श्रुतम्। अतः क्रोधेन आगत्य लेखन पुस्तकं लेखनीं च आच्छिद्य विदाये अग्नौ अस्थाज्ञापयत सा।..."। यद्यपि विमाता के द्वारा यह दुर्व्यवहार बाल साहित्य की दृष्टि

13. संस्कृत भारती, बंगलुरु।
14. संस्कृत भारती, बंगलुरु।

से बालमन को अधिक नहीं भा सकता। लेकिन साहित्य के जरिये समाज के यथार्थ को बहुत ही प्रभावी ढंग से उकेरा गया है। उसी प्रकार समाज में बढ़ रही तलाक की समस्या तथा उसके सबब को लेकर 'जीवनं सुखशय्यायेत' भी पठनीय है। इसमें दम्पति विच्छेद के कारणों को प्रफुल्ला ने जो निदान द्योतिनी को समझाया है, वह बहुत ध्यान देने की बात है– ''मम कथनं भवत्याः प्रीत्यै भवेत् उतन इति नाहं जाने, तथापि वदामि। पतिगृहम् आगतायाः स्नुषायाः प्रथमं कर्तव्यं तु–पत्युः श्वश्रवोः च हृदयस्य जयः इति। तदर्भ भवत्या प्रयासः एव न कृतः।।" (पृ.25) कथाकार इस कथा के माध्यम से जानलेवा भौतिक स्पर्धा में करियर की अपेक्षा जीवन (प्रबंधन) पर अधिक बल देने का संदेश देता है। उसी प्रकार "कस्य ललाटे किं लिखितम् इति को वा जानाति" (पृ.9), "अधिकप्रीत्या सा लालिता यत्र तस्यैव प्रभावः अयम्" (पृ.21), "सुवर्णाण्डप्रसवित्री कुक्कुटी इव अस्ति उद्योगः (पृ.39) जैसे सरल लेकिन लच्छेदार संस्कृत वाक्य–विन्यास तथा 'क्रेडिटकार्ड द्वारा' (पृ.5) 'अम्बु–लेन्स' (पृ.13), 'जीवबिमा' (पृ.17, जीवन बीमा), 'काफीपायिनः' (पृ. 33), 'डिकाक्शन काफी' (पृ.33), 'रक्तापोहने (पृ.43, डायलिसिस्) तथा 'मरणशासनं' (पृ. 61, विल्) आदि संस्कृत तथा आंग्ल भाषा मिश्रित शब्द–गुच्छ तथा नवाचारी शब्दों के निर्माण भी आजकल की संस्कृत के भाषावैज्ञानिक अध्ययन के कपाट खोलते हैं।

गोपबंधु मिश्र लिखित उपन्यास 'विसङ्गति[15] भी इस साल की महत्त्वपूर्ण रचनाओं में मानी जा सकती है। लब्धप्रतिष्ठ कथाकार, कवि तथा नाट्यकार पद्मश्री अभिराज राजेंद्र मिश्र ग्रंथ में संलग्न अपने नान्दीवाक् में लिखते हैं– "कथावस्तुनः सनवोऽर्थः संप्रति समवलोक्यते मिश्रवर्यस्योपन्यासे विसङ्गति शीर्षके। उपन्यासेऽस्मिन् मुंशिप्रेमचन्दस्य व्यक्तिचरित्र चित्रण शैली स्फारीभूता दृश्यते। अस्यां कृतौ गौराङ्ग,–चिन्मयी प्रभृति पात्राणां माध्यमेन समाज–विशेषचित्रणं येन प्रातिभकौशलेन कुरुते उपन्यासकारः, तत्सर्वं नूनं नट्यप्रस्थानं प्रतीयते। (पृ.IV)। उपन्यास की रोचकता सहज प्रेम–प्रसंगों तथा तरुण तरुणियों का एक–दूसरे के प्रति सहज लगाव (आकर्षण) तथा औपनिषदिक सरल चूर्णक तथा आम बोलचाल की शैली में कथानकों का अपने आप बढ़ना और उसके तारतम्य में पाठक मन को रिझाना भी शैली तथा बिंब की दृष्टि से प्रभावोत्पादक है। गौराङ्ग तथा नन्दिता के बीच अपने पुत्र वरुण की पढ़ाई–लिखाई को लेकर चिंता जताया जाना स्वाभाविक है। नन्दिता द्वारा वरुण के साहित्य आदि पढ़ने से उसके करियर में सफलता की गुंजाइश नहीं दिखना आज के माता–पिता के आम नजरिये को दर्शाता है– किं साहित्येन तस्य जीवनं चलिष्यति? तेन उदरपूर्तिः परिवारपोषणं भविष्यति? उच्चैः कोपेन वदन्ती आसीत् नन्दिता।'' (पृ.32)। प्रख्यात उपन्यासकार मिश्र ने इस प्रसंग के माध्यम से प्रोफेशनल कोर्स तथा अर्थार्जन की जानलेवा मानसिकता को भी इंगित करने का भरसक प्रयास किया है।

जाने–माने कवि तथा कथाकार बनमाली विश्वाल ने पांडुलिपि विज्ञान को अपनी

15. केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, दिल्ली

कविताओं में 'हस्तलेखशास्त्रम्'[16] के रूप में लिखकर संस्कृत रचना की एक नवोन्मेषी शैली का आगाज किया है। इन श्लोकों का हिंदी तथा अंग्रेजी अनुवाद के साथ अन्वय आदि दिया जाना निश्चित रूप से इस विधा को प्रशस्त करेगा तथा अनुसंधानकर्ताओं के लिए गंभीर सामग्री प्रस्तुत करेगा। उसी प्रकार शब्द या पद के अनुसार तत्क्षण संस्कृत श्लोक बनाकर बोलने की अद्‌भुत स्मरणशक्ति से जुड़ी विलक्षण प्रतिभा को लेकर शतावधानी रामनाथ आचार्य की रचनाओं का षण्मुख हेब्बार अनूदित ग्रंथ 'अक्षरसमीक्षा'[17] भी गौरतलब है। संक्षेपग्रंथ हार योजना के अंतर्गत लिखित पुस्तिका 'भगवती श्रुतिः[18] (प्रकाश रंजन मिश्र) भी वेद से जुड़े भारतीय विद्वान बाल गंगाधर टिळक, शंकर बाल कृष्ण दीक्षित, अविनाश चंद्र दास के साथ–साथ पाश्चात्य विद्वान मैक्समूलर, जैकोबी तथा विंटरनित्स के मंत्रों तथा वैदिक शाखाओं आदि को सरल संस्कृत भाषा में सार रूप में प्रस्तुत करती है। इसी ग्रंथहार माला के अंतर्गत के.मनोज्ञा ने अपनी संस्कृत पुस्तिका 'औपनिषदसिद्धांतः'[19] में विविध उपनिषदों के दर्शन को प्रस्तुत किया है।

वस्तुतः लेखिका शम्पापाल की इसी ग्रंथमाला की पुस्तिका "संस्कृत साहित्ये आत्मत्यागविमर्शः"[20] संस्कृत के समग्र वाङ्मय में संदर्भित आत्मत्याग के प्रसंगों को लिखकर पाठक को सर्वथा एक नयी सामग्री पाठक तक एक साथ पहुँचाती है जो भारतीय चिंतनधारा में संस्कृति तथा सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की भावना को अंकित करता है। इस साल वास्तुशास्त्रावरणी[21] (लेखक कृष्ण कुमार भार्गव तथा गिरीश भट्‌ट बि.) तथा 'होरानिबंध–सङ्ग्रह'[22] (लेखक देरेबैलु शिव प्रसाद तंत्री) भी क्रमशः गृह वास्तु तथा ज्योतिषशास्त्र से जुड़ी सरल मानक संस्कृत की शैली में पुष्कल सामग्री मानी जा सकती है। इसी प्रकार केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय ने ही व्याकरण शास्त्र तथा उस विधा से जुड़े उनके दर्शन शास्त्र के प्रमुख अंशों को बहुत ही सरल, रोचक और प्रभावी संस्कृत भाषा में 'शाब्द–बोधप्रक्रियाविमर्शः[23] (लेखक के.एस. कृष्णाचार्य केम्पदहल्ली), शेष नारायण लिखित 'सूक्ति रत्नाकर'[24] (संपादक वामन बालकृष्ण भागवत तथा कुलकर्णी मल्हार) और 'वाक्चणः'[25] (संपादक प्रमोद भट्‌ट) नामक पुस्तिकाओं को संस्कृत माध्यम से कुलपति श्री निवास वरखेड़ी के ही मुख्य संपादकत्व में प्रकाशित किया है जो शास्त्र संवर्धन तथा पारंपरिक छात्रों के लिए बहुत ही उपयोगी जान पड़ती

16. केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, दिल्ली
17. केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, दिल्ली।
18. केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, दिल्ली
19. केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, दिल्ली।
21. केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, दिल्ली
22. केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, दिल्ली,
23. केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, दिल्ली
24. केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, दिल्ली,
25. केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यायल, दिल्ली,

है। इनमें 'वाक्चण' शोध–पत्रों के संग्रह होने के कारण इसकी सामग्री और रोचक हो गई है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि संस्कृत साहित्य–2024 की विविध विधाओं की कतिपय मानीखेज पुस्तकों के तहकीकात से तस्दीक होती है कि इस साल की साया की गई किताबें भी संस्कृत भाषा के आधुनिक साहित्य की प्रखर रचना–धर्मिता के एक बहुत ही जीवंत इंद्रधनुष का वितान रचती हैं जिसके प्रखर प्रकाश के बीच उन समीक्षकों का मटमैला फलसफा खुद–ब–खुद धूमिल होकर अपाकृत होता मालूम पड़ता है जो संस्कृत साहित्य की समकालीन सृजनता का लेकर मनगढ़ंत सवाल उठा रहे हैं।

❑❑❑

कु और सु का संग्राम ही साहित्य का इतिहास है।

– आचार्य रामचंद्र शुक्ल

हिंदी आलोचना

20

डॉ. आलोक रंजन पांडेय

एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, रामानुजन कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

किसी भी कृति का महत्त्व तब समझ में आता है जब उसका मूल्यांकन होता है। वर्तमान समय में आलोचना साहित्य का वह आवश्यक तत्त्व बन गई है जिसके बिना साहित्य अधूरा है। आज की आलोचना नयी दृष्टि से सैकड़ों वर्ष पूर्व के साहित्य और वर्तमान साहित्य पर अपना मूल्यांकन प्रस्तुत कर रही है और नये आयामों को जन्म दे रही है जो साहित्य के लिए भी आवश्यक है और समाज के लिए भी। 21वीं सदी का चौथाई हिस्सा बीतने को है और हिंदी साहित्य में निरंतर नयी संवेदनाओं एवं नयी भावभूमियों को खोजने की कोशिश भी की जा रही है। साहित्यिक पुस्तकों के प्रकाशन के साथ उनके मूल्यांकन के लिए आलोचना की भी आवश्यकता होती है। आलोचना एक पाँव अपने अतीत में रखकर परंपरा की तलाश और पुनर्मूल्यांकन करने की कोशिश करती है तो दूसरा पाँव भविष्य की दिशा में रखकर आगे बढ़ती रहती है। वर्तमान का मूल्यांकन भी इन्हीं दो स्थितियों में संभव होता है। आलोचना यानी एक विशिष्ट प्रकार से किसी भी रचना को देखने की पद्धति। भारतेंदु युग से गद्य के रूप में जो आलोचना हिंदी साहित्य को प्राप्त हुई, उसकी जड़ संस्कृति में टीकाओं के लेखन से लेकर रीतिकाल तक में लिखी टीकाओं तक भी मिलती है। इस तरह यह एक परंपरागत विधा रही है। साहित्य के लिए आलोचना एक आवश्यक विधा है। यह साहित्य की अर्थवत्ता को बेहतर ढंग से समझने में अध्येताओं की मदद करती है। बिना आलोचना के साहित्य का विकास भी संभव नहीं है और न ही उसमें कुछ नया जुड़ पाता है। किसी भी साहित्यिक कृति की आलोचना के लिए यह आवश्यक है कि उससे जुड़ी समकालीन राजनीतिक–सामाजिक और आर्थिक स्थितियों को ध्यान में रखते हुए रचना का मूल्यांकन किया जाए। आलोचक रचना और उसके रचनाकार के साथ पाठकों को जोड़ने का काम करता है। गत वर्ष आलोचना के क्षेत्र में अनेक नयी किताबें आई जिनमें से कुछ पर हम अपना ध्यान केंद्रित करेंगे।

'मुक्तिबोधः कविता का आद्यबिंब' राजकमल प्रकाशन से आई यह किताब वर्तमान समय में आलोचना के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण स्थान बनाने वाले आलोचक कृष्णमुरारी मिश्र की है। हिंदी साहित्य में आदिम काल से चले आ रहे बिंबों के निर्माण में और उस निर्मिती के पीछे की प्रक्रिया के रूप में उनकी पड़ताल अध्ययनयोग्य है। कविताओं और कथाओं में बिंबों की संरचना और उसकी वस्तुनिष्ठता पर उनका कार्य महत्त्वपूर्ण रहा है। इसी क्रम में उनकी यह किताब मुक्तिबोध की कविताओं में आए बिंबों की पड़ताल करती है। मुक्तिबोध की कविताएँ फैंटसी और बिंबों के लिए जानी जाती हैं। उनका प्रयोगधर्मी काव्य प्रयोगवाद और नयी कविता के क्षेत्र में अत्यंत प्रभावशाली रहा है। कृष्णमुरारी उन कविताओं के मूल्यांकन हेतु नये आयामों की खोज करते हैं और पाठक को उससे अवगत कराते हैं। इस किताब में मुक्तिबोध की कविताओं की बिंब–निर्माण पद्धति को आंतरिक और बाह्य दोनों तरीके से समझाने की कोशिश की गई है। इस प्रक्रिया में मनोविश्लेषण का भी सहारा लिया गया है। मुक्तिबोध मार्क्सवादी कवि थे और उन्हें वैश्विक राजनीति से लेकर दर्शन और मनोविश्लेषण का भी ज्ञान था। उस वक्त तक फ्रायड का मनोविश्लेषण भी साहित्यिक दुनिया में अपनी महत्त्वपूर्ण उपस्थिति दर्ज कर चुका था। अज्ञेय से लेकर जैनेंद्र तक उनसे प्रभावित थे। कविता के निर्माण के पीछे के मनोवैज्ञानिक कारण भी होते हैं और बिंब के निर्माण की पद्धति उससे संचालित होती है। इस संदर्भ में उनकी एक महत्त्वपूर्ण कविता 'ब्रह्मराक्षस' के माध्यम से उनके बिंब–निर्माण की प्रक्रिया का अध्ययन करते हैं।

'नवाँ दशक' राजकमल प्रकाशन से आई आलोचना की पुस्तक है। हिंदी साहित्य में आलोचना की जो पुस्तकें प्रकाशित हैं, मुख्यतः उनमें अभी तक आठवें दशक के कवियों की ही बात की जा रही थी जबकि नवें दशक में अनेक कवियों का आविर्भाव हुआ जिन्होंने अपने काव्य के माध्यम से बदलते समाजार्थिक रूप को दर्ज किया। आलोचक हैं युवा कवि–लेखक अविनाश मिश्र। इस किताब के लेख सबसे पहले 'पहल' पत्रिका में स्वतंत्र रूप से प्रकाशित हुए थे, बाद में उन्हें एकत्र किया गया। नब्बे के दशक में जिस प्रकार से वैश्वीकरण और निजीकरण के आगमन के साथ समाज में छोटे–छोटे बदलाव हुए, उन्हें कविता का विषय बनाया गया। यह पुस्तक उन कवियों की कविताओं में आए विचलन को रेखांकित करने का प्रयास करती है। इस किताब में अष्टभुजा शुक्ल, केशव तिवारी, पंकज चतुर्वेदी, हरीशचंद्र पांडे के साथ ही अनेक कवियों पर तफ़सील से बातचीत की गई है। आलोचना का यह ढंग अपने से पूर्ववर्ती आलोचकों से भिन्न भी है। जैसे–जैसे आर्थिक व्यवस्था बदलती है, कविता के भी पैमाने और उसके मूल्यांकन के भी पैमाने बदलने लगते हैं। इस बात की तरफ अविनाश मिश्र ने विशेष ध्यान दिया है। ये आलोचनाएँ खंडन और मंडन की बजाय कविता की 'विचारधारा पर विचार' करती हैं। किताब का पूर्वकथन भी इस मामले में

एक महत्त्वपूर्ण अंश है जिसमें उन कवियों पर भी बात की गई है जो उन आलेखों में छूट गए हैं। इसमें से मोना गुलाटी की पुस्तक उपलब्ध नहीं है, फिर भी उनकी प्रभावशाली कविताओं पर बात की गई है।

'समकालीन सभ्यता के संकट की महागाथा : निर्वासन' पुस्तक अनेक लेखों का संग्रह है जो राजीव कुमार द्वारा संकलित है। अखिलेश के प्रसिद्ध उपन्यास 'निर्वासन' पर ये लेख लिखे गए हैं। किसी भी कृति के मूल्यांकन का यह तरीका भी हो सकता है। अनेक आलोचकों और समीक्षकों के माध्यम से किसी भी कृति को देखने के और उसके मूल्यांकन के अनेक तरीके हो सकते हैं। ये किताब विविध प्रकार के मूल्यांकन और संदर्भों से भरी हुई है। इस किताब के विभिन्न लेख अलग–अलग ढंग से इस कृति के अनेक आयामों और संदर्भों की पड़ताल करते हैं। इस उपन्यास के कथानक का वस्तुगत वर्णन जिस हिसाब से किया गया है और उसमें जिस तरह से प्रतिरोध के विभिन्न पहलू आए हैं, वे जन के जीवन से स्पेक्ट्रम के अनेक रंग बनकर आते हैं। ये सभी संदर्भ इस उपन्यास में किस ढंग से आए हैं और क्या वे एक उद्देश्य की तरफ ले जाने में सक्षम हुए हैं या नहीं; इन सभी पहलुओं पर विचार किया गया है। साथ ही उपन्यास के सौंदर्यशास्त्र और बनावट पर भी विचार किया गया है। 'निर्वासन' में जिस संकट की तरफ संकेत किया गया है, वह मात्र इस उपन्यास के पात्रों का संकट नहीं है बल्कि वह वर्तमान समय के मनुष्य का भी संकट है। उन संकटों को रेखांकित करते हुए इस रचना के माध्यम से उम्मीद बंधाने की कोशिश भी की गई है।

'हरिशंकर परसाई : देश के इस दौर में' परसाई पर केंद्रित महत्त्वपूर्ण पुस्तक है। हरिशंकर परसाई का व्यंग्य साहित्य में वही स्थान है जो हिंदी कविता के साहित्य में कबीर को प्राप्त है, कथा साहित्य में प्रेमचंद को प्राप्त है और आधुनिक कविता में मुक्तिबोध को प्राप्त है। यह किताब वरिष्ठ आलोचक विश्वनाथ त्रिपाठी द्वारा लिखी गई है। इस किताब में परसाई के व्यंग्य–निबंधों का विस्तृत विवेचन है। यह विवेचन वर्तमान घटनाओं को संदर्भ बनाकर किया गया है। आलोचक की अपनी एक गहरी दृष्टि है जो इस आलोचना में दिखती है। वे इस पुस्तक के माध्यम से परसाई के व्यंग्यों के संवेदनात्मक पक्ष को भी हमारे समक्ष रखते हैं। वरिष्ठ कथाकार ज्ञानरंजन ने इस पुस्तक के बारे में कहा है कि 'यह अभी तक की एक अनुपम और अद्वितीय पुस्तक है जिसमें परसाई के रचना संसार को समझने और उद्घाटित करने का प्रयास किया गया है।' वास्तव में समझने और उद्घाटन की प्रक्रिया के बीच में वैचारिकी को एक टूल की तरह इस्तेमाल करते हुए विश्वनाथ त्रिपाठी ने पाठक को भी उस प्रक्रिया में जोड़कर रखा है। वे मानते हैं कि 'परसाई का रचनाकार एक इतिहास–पुरुष है जो अपने समय का सबकुछ देख रहा है और अपने युग का चित्र बना रहा है विवेक के साथ।' इस विवेकवान दृष्टि के पीछे का जो संसार है और उनमें जो तत्कालीन

परिस्थितियों के प्रति प्रतिक्रिया है, उन्हीं से एक व्यंग्य का जन्म होता है। उस दृष्टि को समझने के लिए यह पुस्तक महत्त्वपूर्ण है।

'दिगम्बर विद्रोहिणी : अक्क महादेवी' सेतु प्रकाशन से आई एक महत्त्वपूर्ण पुस्तक है। किसी भी गंभीर आलोचक का कार्य मात्र रचनाओं का मूल्यांकन करना ही नहीं है बल्कि वे साहित्य अथवा साहित्यकार जिनपर पर्याप्त चर्चा नहीं हो पाई है और जिनका विवेचन होना चाहिए; उनको पाठकों के समक्ष लाना भी होता है। इसी प्रकार का काम सुभाष राय द्वारा किया गया है। कन्नड़ में बारहवीं शताब्दी की संत अक्क महादेवी एक महत्त्वपूर्ण कवयित्री के रूप में भी जानी गईं। बारहवीं शताब्दी ही वह सदी है जिसमें भक्ति आंदोलन चल रहा था और जो हिंदी का स्वर्णकाल भी था। हिंदी प्रदेश उनसे एक लंबे समय तक अनजान भी रहा है। लेकिन इस पुस्तक में उनके अवदान एवं उनकी कविताओं को सामने लाने का प्रयास किया गया है। भक्ति आंदोलन के दौरान जिस प्रकार हिंदी साहित्य में अनेक महत्त्वपूर्ण कवियों का उदय हुआ, उनमें अक्क महादेवी भी एक थीं। यह किताब गंभीर शोध का परिणाम है। किसी कवि पर इस प्रकार का गंभीर शोध हजारीप्रसाद द्विवेदी द्वारा भी किया गया था। इस शोध के साथ ही उनपर आलोचना और उन कविताओं में से सौ का छायानुवाद भी इस पुस्तक में समाहित है। यह पुस्तक रजा पुस्तकमाला के रूप में प्रकाशित की गई है। इसके माध्यम से संवेदना और संभावना के स्तर पर एक महत्त्वपूर्ण कवयित्री को पाठकों के समक्ष रखने का प्रयास किया गया है।

'हिंदी कविता के सरोकार' पुस्तक देवशंकर नवीन द्वारा लिखी गई है। हिंदी कविता अनेक सरोकारों से जुड़ी हुई है। हिंदी कवियों की कई तरह की चिंताएँ होती हैं और इन्हीं चिंताओं के कारण ही वह मनुष्यता के पक्ष में खड़ा होता है। समकालीन कविता के साथ उनमें समकालीनता की पहचान करने के लिए कौन से तत्त्व होने चाहिए, इन्हें इस पुस्तक में तलाशने की कोशिश की गई है। समकालीन बोध बिना इतिहासबोध के नहीं हो सकता। यह किताब इतिहासबोध और समकालीनता के बीच के अंतरसंबंध को दिखाने का भी प्रयास करती है। कोई भी रचना लंबे समय तक प्रासंगिक तभी रह सकती है जब वह समकालीन यथार्थ को उसके विभिन्न संदर्भों के साथ दर्ज करे। यह किताब बदलती सामाजिक परिस्थितियों और उनके बीच बदलते रिश्ते और लैंगिक संवेदनाओं की पहचान भी करती है। काव्य आलोचना की दृष्टि से यह किताब बहुत महत्त्वपूर्ण है।

'रेणु : कहानी का हीरामन' मृत्युंजय पांडे द्वारा लिखी गई एक महत्त्वपूर्ण पुस्तक है। रेणु अपने समय के महत्त्वपूर्ण रचनाकार रहे हैं। उनके कथा साहित्य में आंचलिकता एक महत्त्वपूर्ण तत्त्व रहा है। यह किताब उनकी कहानियों पर केंद्रित है। उनकी कहानियों में व्याप्त वैविध्य को इस पुस्तक के माध्यम से रेखांकित करने का

प्रयास किया गया है। उनकी हर कहानी अद्वितीय है जिसके कारण इस किताब के लेख महत्त्वपूर्ण हो जाते हैं। इस किताब में कहानियों में प्रयोग की गई विभिन्न शैलियों और संवेदना के स्तर पर उनकी रचनात्मकता के विभिन्न पहलुओं को दिखाया गया है। यह किताब उनकी कहानियों के माध्यम से एक ऐसे सच को सामने रखने का प्रयास करती है जो महाकाव्यात्मक सत्य है। यह किताब इसलिए भी महत्त्वपूर्ण है कि अनेक पुस्तकें उनके उपन्यास मैला आंचल तक ही सीमित रह जाती हैं। उनकी कहानियों में भी कुछ ही को केंद्र बनाकर लेख लिखे गए। लेकिन इस प्रकार की पुस्तक योजना नवीन और प्रभावी है। यह किताब रेणु पर शोध कर रहे शोधार्थियों और अध्येताओं के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण पुस्तक साबित होगी क्योंकि यह उनकी कहानियों के हर पक्ष पर समग्रता से बात करती है।

राजकमल प्रकाशन द्वारा प्रकाशित 'निर्गुण काव्य में नारी' अनिल राय द्वारा लिखित पुस्तक है जो निर्गुण कवियों के नारी के प्रति दृष्टिकोण का विश्लेषण करती है। पुस्तक में बताया गया है कि नारी सृष्टि का आधार और जीवनी शक्ति है जो प्रारंभ से ही चिंतन का केंद्र रही है। लेखक ने इस धारणा को चुनौती दी है कि संत नारी के विरोधी थे। उन्होंने सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संदर्भों में निर्गुण कवियों की नारी भावना का मूल्यांकन किया है। उनका मानना है कि निर्गुण कवियों ने स्त्री भक्तों पर जो कुछ भी लिखा है, उसका सही मूल्यांकन नहीं किया गया और इसीलिए यह धारणा प्रबल हो गई कि वे (मुख्यतः संत) नारी के घोर निंदक और विरोधी थे। पूरी पुस्तक में वे निर्गुण कवियों के नारीविषयक मतों को एक नयी दृष्टि से देखने का प्रयास करते हैं। वे लिखते हैं कि ''इसका कारण संभवतः यह रहा कि उनके साहित्य को समग्रता में नहीं देखा गया और न ही संदर्भ के सही परिप्रेक्ष्य में उसे विश्लेषित करने की कोशिश की गई। इसके लिए यह बहुत आवश्यक है कि उस समय की सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, ऐतिहासिक तथा सांस्कृतिक स्थितियों के आलोक में उसका मूल्यांकन किया जाए। इन तमाम संदर्भों के सही परिप्रेक्ष्य में निर्गुण कवियों की नारी–भावना का जब हम विश्लेषण करते हैं तो सारी पिछली बद्धमूल धारणाएँ निराधार हो जाती हैं। एक नयी दृष्टि से यह पुस्तक इसी मिथक को तोड़ने और निर्गुण काव्य के इस पक्ष–विशेष के मूल्यांकन में कुछ नए आयाम जोड़ने का एक विनम्र प्रयास है।''

राजकमल प्रकाशन से ही प्रकाशित एक अन्य पुस्तक 'साहित्य और समीक्षा' के लेखक राजनाथ हैं। इस पुस्तक में लेखक ने साहित्यिक सिद्धांतों और आलोचना पर केंद्रित अपने विचारों को प्रस्तुत किया है। इसमें संकलित निबंध साहित्य के विश्लेषण और मूल्यांकन पर विशेष जोर देते हैं। यह साहित्य, सिद्धांत और आलोचना के क्षेत्र में कार्यरत अध्येताओं, शोधार्थियों, अध्यापकों और छात्रों के लिए उपयोगी सिद्ध हो

सकती है। लेखक ने इस पुस्तक में साहित्य और समालोचना से जुड़े कुछ ऐसे बिंदुओं और समस्याओं पर विचार किया है जो किसी भी भाषा के साहित्य को समझने के लिए जरूरी हैं। राजनाथ अंग्रेजी साहित्य और पाश्चात्य साहित्य–आलोचना के मर्मज्ञ विद्वान हैं। पाश्चात्य साहित्य–समीक्षा के संदर्भ में लिखे गए उनके ये लेख साहित्य के अध्ययन, अध्यापन और विश्लेषण के विभिन्न आयामों पर विचार करते हैं। जो पाठक साहित्यिक आलोचना और सिद्धांतों को जानने व समझने में रुचि रखते हैं, उनके लिए यह पुस्तक बेहद मूल्यवान है।

सेतु प्रकाशन द्वारा प्रकाशित 'बचपन और बालसाहित्य के सरोकार' ओमप्रकाश कश्यप द्वारा लिखित लगभग साढ़े पाँच सौ पृष्ठों की एक महत्त्वपूर्ण पुस्तक है जो बालसाहित्य के विविध पहलुओं और बचपन से संबंधित सरोकारों पर गहन दृष्टि प्रस्तुत करती है। यह पुस्तक बालकों के क्रियाकलाप के परिप्रेक्ष्य में मनोवैज्ञानिक मुद्दों पर चर्चा करती है और हिंदी बालसाहित्य की यात्रा का विहंगावलोकन करती है। लेखक ने बालसाहित्य की मुख्य प्रेरणाओं, बालसाहित्यिक चेतना के उभार, आधुनिक युग में बाल साहित्य की मुख्य प्रवृत्तियों और चुनौतियों पर भी विचार किया है। ओमप्रकाश कश्यप दर्शन और आलोचना साहित्य के प्रखर विद्वान हैं। साथ ही इन्होंने कथासाहित्य और बालसाहित्य भी भरपूर लिखा है। यह पुस्तक भी उनकी तर्कशील शोधपरक दृष्टि का प्रमाण है। इससे पूर्व वे बालसाहित्य की आलोचनात्मक कृतियों के साथ–साथ 'परीकथाएँ एवं विज्ञान लेखन' जैसी विचारपूर्ण कृति साहित्य जगत् को दे चुके हैं। हिंदी बालसाहित्य की यात्रा का विहंगावलोकन उन्होंने वैदिक काल से प्रारंभ किया है। साहित्य में बचपन की दस्तक को रेखांकित करते हुए उन्होंने बालसाहित्य की मुख्य प्रेरणाओं, बालसाहित्यिक चेतना के उभार आदि पर दृष्टिपात करते हुए आधुनिक युग में बाल साहित्य की मुख्य प्रवृत्तियों और चुनौतियों की भी चर्चा की है। तीसरे अध्याय में बालसाहित्य के विभिन्न सरोकारों की चर्चा है। 'बालसाहित्य और बचपन' शीर्षक अध्याय में शिक्षा के बाजारीकरण से लेकर मनोरंजन की राजनीति तक 12 विभिन्न बिंदुओं पर विचार रखे गए हैं। 'हिंदी बालसाहित्य और आधुनिकता बोध' शीर्षक अध्याय में इंटरनेट की खूबियों और खामियों पर विचार किया गया है। 'बालसाहित्य और विज्ञान लेखन' अध्याय में विज्ञान लेखन और नैतिकता पर विमर्श प्रस्तुत किया गया है। इसी में हमें यह संकेत भी मिलता है कि बालमन पर जितना सटीक और स्थायी प्रभाव छंदयुक्त कविता और सरल भाषा में कही गई कहानी का पड़ता है, उतना किसी अन्य विधा का नहीं। बालसाहित्य के गंभीर अध्येताओं के लिए यह एक आवश्यक पुस्तक है।

सेतु प्रकाशन से ही प्रकाशित एवं बजरंग बिहारी तिवारी द्वारा लिखित 'दलित कविता : प्रश्न और परिप्रेक्ष्य' एक महत्त्वपूर्ण पुस्तक है जो दलित साहित्य आंदोलन के

समक्ष बाहरी चुनौतियों के साथ–साथ आंतरिक प्रश्नों पर भी गहन विचार करती है। पुस्तक में दलित जाति–समुदायों के शिक्षित युवाओं के अनुभवों और उनकी साहित्यिक अभिव्यक्तियों पर विशेष ध्यान दिया गया है। लेखक का मानना है कि ''दलित साहित्यांदोलन के समक्ष बाहरी चुनौतियाँ तो हैं ही, आंतरिक प्रश्न भी मौजूद हैं। तमाम दलित जाति–समुदायों के शिक्षित युवा सामने आ रहे हैं। ये अपने कुनबों के प्रथम शिक्षित लोग हैं। इनके अनुभव कम विस्फोटक, कम व्यथापूरित, कम अर्थवान नहीं हैं। इन्हें अनुकूल माहौल और उत्प्रेरक परिवेश उपलब्ध कराना समय की माँग है। वर्गीय दृष्टि से ये संभावनाशील रचनाकार सबसे निचले पायदान पर हैं। यह जिम्मेदारी नये मध्यवर्ग पर आयद होती है कि वह अपने वर्गीय हितों के अनपहचाने, अलक्षित दबावों को पहचाने और उनसे हर मुमकिन निजात पाने की कोशिश करे। ऐसा न हो कि दलित साहित्य में अभिनव स्वरों के आगमन पर वर्गीय स्वार्थ प्रतिकूल असर डालने में सफल हों।'' इसीलिए यह कहा जा सकता है कि यह पुस्तक दलित साहित्य, विशेषकर दलित कविता के अध्ययन में रुचि रखने वाले पाठकों, शोधार्थियों और साहित्य–प्रेमियों के लिए मूल्यवान सिद्ध होगी।

'हिंदी कहानी : परंपरा और समकाल' अजय वर्मा द्वारा लिखित पुस्तक है जिसका प्रकाशन सेतु प्रकाशन द्वारा किया गया है। यह पुस्तक हिंदी कहानी की विकास यात्रा, उसकी परंपरा और समकालीन संदर्भों का गहन विश्लेषण प्रस्तुत करती है। लेखक ने आधुनिक युग के जटिल और बहुरंगी यथार्थ को ध्यान में रखते हुए इस दौर के लेखकों की जीवनदृष्टि, रचना की थीम, अनुभव, संवेदना की दिशाओं, शिल्प और भाषा में आए परिवर्तनों पर विशेष जोर दिया है। जैसा कि इस पुस्तक की भूमिका में लिखा गया है, आज के दौर का यथार्थ जटिल और बहुरंगी है। जीवन के परिप्रेक्ष्य बहुत व्यापक हो गए हैं और उसी हिसाब से इस दौर में सक्रिय लेखकों की जीवनदृष्टि, रचना की थीम, अनुभव और संवेदना की दिशाओं, शिल्प, भाषा सबमें पर्याप्त भिन्नता है। ठोस यथार्थ दिखने में आभासी मालूम पड़ता है और इसके प्रति लेखकों के दृष्टिकोण भी अलग–अलग हैं। लेखक वर्तमान समय को दोष देते दिखाई पड़ते हैं कि यह समाज, संस्कृति, राजनीति और मानवीय संबंध; इन सबकी चेतना को विखंडित कर रहा है। पुस्तक में पुरानी परंपरा और नयी परंपरा में भेद किया गया है और नयी परंपरा को कम महत्व दिया गया है।

वर्ष 2024 में प्रकाशित इन पुस्तकों ने साहित्य व समाज के अनेकानेक महत्त्वपूर्ण पहलुओं को छुआ है और उनका नयी दृष्टि से मूल्यांकन भी किया है। इसके जरिए नए विचारों और साहित्यिक सिद्धांतों को पाठक तक पहुँचाने का विशेष प्रयास किया गया है। इसमें कोई दो राय नहीं कि आलोचना भी साहित्य की जीवंतता बनाए रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। हिंदी साहित्य में आलोचना ने भी अपनी जिम्मेदारी पूरी

निष्ठा से निभायी है और आशा है कि ये कारवाँ आगे भी ऐसे ही चलता रहेगा। ये पुस्तकें आलोचना के क्षेत्र को समृद्ध करती हैं। इनके अतिरिक्त और कई आलोचनात्मक पुस्तकें भी प्रकाशित हुई हैं जो विभिन्न क्षेत्रों में दखल देती हैं। इससे हिंदी साहित्य के अध्येताओं को विकल्प भी मिलता है और साथ ही उन्हें समग्रता से किसी विधा को समझने में मदद भी मिलती है।

सहायक ग्रंथः

1. 'मुक्तिबोधः कविता का आद्यबिंब', कृष्णमुरारी मिश्र, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
2. 'नवाँ दशक', अविनाश मिश्र, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
3. 'समकालीन सभ्यता के संकट की महागाथाः निर्वासन', राजीव कुमार, लोकभारती प्रकाशन
4. 'हरिशंकर परसाईः देश के इस दौर में', विश्वनाथ त्रिपाठी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
5. 'दिगंबर विद्रोहिणीः अक्क महादेवी', सुभाष राय, सेतु प्रकाशन, नयी दिल्ली
6. 'हिंदी कविता के सरोकार', देवशंकर नवीन, सेतु प्रकाशन, नयी दिल्ली
7. 'रेणुः कहानी का हीरामन', मृत्युंजय पांडेय, सेतु प्रकाशन, नयी दिल्ली
8. 'निर्गुण काव्य में नारी', अनिल राय, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
9. 'साहित्य और समीक्षा', राजनाथ, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
10. 'बचपन और बालसाहित्य के सरोकार', ओमप्रकाश कश्यप, सेतु प्रकाशन, नयी दिल्ली
11. 'दलित कविताः प्रश्न और परिप्रेक्ष्य', बजरंग बिहारी तिवारी, सेतु प्रकाशन, नयी दिल्ली
12. 'हिंदी कहानीः परंपरा और समकाल', अजय वर्मा, सेतु प्रकाशन, नयी दिल्ली

❑❑❑

हिंदी कहानी

21

प्रो. अवध किशोर प्रसाद

कवि और चिंतक। प्रकाशित रचनाएँ– 'काव्यशास्त्र और रूप' (आलोचना), दर्पण (काव्य), 'जीवन दीप '(कहानी–संग्रह), 'रेत के फूल' (गज़ल संग्रह), 'आदर्श बालक' (बालकथा), 'मधुमातल बहे बयार' (ललित निबंध–संग्रह)। राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित। संप्रति–स्वतंत्र लेखन।

कहानियाँ कहाँ उपजती हैं, किससे उपजती हैं, से ज्यादा जरूरी सवाल ये है कि कहानियाँ होती किसकी हैं। दरअसल कहानियाँ हर जगह उपजती हैं, जहाँ कुछ नहीं उपजता वहाँ भी, जहाँ जमीन नम है, वहाँ भी और जहाँ बंजर हो चुकी, वहाँ भी। वस्तुतः कहानी के लिए कोई जमीन बंजर नहीं। जहाँ सामाजिक, व्यावहारिक शून्य रहता है, वहाँ कहानी का आरंभ एक स्वाभाविक घटना होती है और यही घटना विभिन्न आयामों में कहानी के रूप में अभिव्यक्त होकर पाठकों का मनोरंजन और ज्ञानवर्धन कर साहित्य रचना के उद्देश्य को पूर्ण करती है। इस दृष्टि से कहानियों का विश्लेषण मूल्य और महत्त्व रखता है। इस तथ्य को दृष्टिपथ में रखकर वर्ष 2024 की कहानियों का सर्वेक्षण करने का प्रयास किया गया है। प्रस्तुत है वर्ष 2024 में उपलब्ध संकलनों और पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित कहानियों का विश्लेषण।

वर्ष 2024 में वरिष्ठ, कनिष्ठ एवं नवोदित कथाकारों की कहानियों के अनेक संकलन प्रकाशित हुए हैं। "मितऊ" वरिष्ठ कथाकार गोविंद उपाध्याय का चौदहवाँ कहानी–संग्रह है। इसका प्रकाशन न्यू वर्ल्ड पब्लिकेशन, नयी दिल्ली से हुआ है। इसमें प्रेम पर आधारित पंद्रह कहानियाँ संकलित हैं। इसकी सभी पंद्रह कहानियों में प्रेम भावना की अभिव्यक्ति हुई है। कहीं चुटकी भर धूप की तरह चुटकी भर प्रेम है, कहीं मात्र प्रेमाभास, तो कहीं विशुद्ध दाम्पत्य प्रेम की अभिव्यक्ति हुई है। संकलन की पहली कहानी "यह बहुत पुरानी बात है" अंतर्जातीय प्रेम की कहानी है जिसमें राजन और अनुराधा के प्रेम का वर्णन हुआ है। इनका विजातीय प्रेम अनेक संगतियों एवं विसंगतियों के बाद अपूर्ण रह जाता है। दोनों किसी दूसरे से विवाह कर सुखद दाम्पत्य जीवन व्यतीत करते हैं। "वान्या तुम लौट आओ" अतृप्त प्रेम की अधूरी कहानी है। इसमें मुखर्जी के रिश्तेदार की बेटी मुखर्जी साहब के घर रहती है। अपने ऑफिस

में एक वर्ष के लिए एप्रेंटिसशिप के रूप में नियुक्त समीर से वह सोद्देश्य संपर्क बढ़ाता है और उसे अपने घर बुलाता है जहाँ उसकी मुलाकात वान्या से होती है और दोनों में प्रेम हो जाता है। मुखर्जी साहब वान्या से शारीरिक संपर्क स्थापित करता है जिससे वह गर्भवती हो जाती है। मुखर्जी वान्या के गर्भपात हेतु समीर के साथ उसे अस्पताल भेजता है। रास्ते में दोनों एक दूसरे से प्यार का इजहार करते हैं। किंतु घर आने पर मुखर्जी साहब वान्या को उसके घर पहुँचा देता है। समीर वान्या से कभी मिल नहीं पाता है। कहानी में इस प्रेम प्रसंग को थोड़ा और बढ़ाकर किसी परिणति तक ले जाया जाता तो कहानी में रोचकता आ जाती। कभी–कभी जब आकाश मेघाच्छन्न रहता है और सूरज का कोई कोना बादल से मुक्त रहता है, तो धरती को एक चुटकी धूप मिलती है। उसी प्रकार घटनाओं के घटाटोप में विवरणात्मक लंबी कहानी "मुझे नहीं मालूम" में दीपेन के मन में अपनी सहकर्मी रुबीन मुखर्जी के प्रति एकतरफा प्रेम उत्पन्न होता है। रूबीन मुखर्जी के नकारात्मक उत्तर से दीपेन के विक्षिप्त होने में एक चुटकी प्रेम की अभिव्यक्ति हुई है। "मेज नंबर सात" भी मानसिक उद्वेलन, अंतर्द्वंद्व और अतृप्त प्रेम की कहानी है। पुस्तकालय की सात नंबर मेज पर बैठकर पुस्तक पढ़ने वाली शोध छात्रा तलाकशुदा रागिनी घोषाल के प्रति उसी पुस्तकालय में कार्यरत कथानायक आकृष्ट हो जाता है। उससे संपर्क बढ़ाता है और अपने अंदर के प्रेम को व्यक्त करता है किंतु रागिनी घोषाल अपनी ही सीमाओं में बँधी रहती है। इस कहानी में एकतरफा प्रेम की अभिव्यक्ति हुई है। "चलो किस्सा खत्म हुआ" प्रभा नाम की लड़की की दर्दभरी कहानी है। जवानी के जोश में वह एक लड़के से प्यार कर बैठती है किंतु उसके घर वाले उसका विवाह जल्दीबाजी में भूल से एक विवाहित पुरुष से कर देते हैं जिसके साथ उसका निर्वाह नहीं होता है और वह अपने मायके लौट आती है। वहाँ सबके तानों से तंग आकर आत्महत्या कर लेती है। कहानीकार ने प्रभा के जीवन की दर्दभरी स्थितियों का मार्मिक चित्रण किया है। कहानी की कथावस्तु कहानी के शीर्षक की सार्थकता सिद्ध करती है। "दो कदम साथ–साथ" विधुर दीपेंद्र और तलाकशुदा तानिया की प्रेम कहानी है। दोनों में प्रेम होता है, दोनों साथ–साथ रहते हैं किंतु उनके प्रेम को कोई नाम या रूप नहीं दिया गया है। वे सिर्फ साथ–साथ रहते हैं। शीर्षक सार्थक है– "पतझड़ में वसंत"। विरोधाभासी शीर्षक की तरह ही विरोधाभासी प्लॉट पर निर्मित कहानी है। संकलन की अन्य कहानियों– 'इन्तेहा', 'चौथे पहर का गीत', 'सूर्यास्त' आदि में अतृप्त प्रेम की अभिव्यक्ति हुई है। 'तुम तो ऐसी नहीं थी' दाम्पत्य प्रेम की दर्द भरी दुखांत कहानी है। शीर्षकनामा संकलन की अंतिम कहानी 'मितऊ' में देवर–भाभी के बीच के सात्विक, निर्मल और निश्छल प्रेम की अभिव्यक्ति हुई है। इस कहानी में कथाकार ने मोहिनी के इन शब्दों में 'मितऊ' शब्द की व्याख्या की है– "हमारी तरफ जब एक जैसे नाम वाले दो लोग मिलते हैं, तो एक दूसरे को मितऊ

कहकर बुलाते हैं। अपने ही नाम को पुकारना थोड़े ही अच्छा लगता है।"

संकलन की सभी कहानियों में किसी न किसी रूप में प्रेम की अभिव्यक्ति हुई है, भले ही वह विजातीय प्रेम हो। कहानियों में कथा प्रवाह है, विवरण में रोचकता और भाषा में गतिशीलता।

समीक्ष्य वर्ष में गोविंद उपाध्याय का दूसरा और सोलहवाँ कहानी–संग्रह "बिना पते वाला आदमी" प्रकाशित हुआ है। इसका प्रकाशन अनुज्ञा बुक्स, दिल्ली से हुआ है। इसमें भी पंद्रह कहानियाँ संकलित हैं। संकलन की पहली 'छीतुरिया के बामन' शीर्षक कहानी में छीतुरिया निवासी वंश लोचन सिंह और राम लोचन सिंह के परिवार में घटी घटनाओं के माध्यम से कथाकार ने वर्तमान पीढ़ी में होने वाले बदलाव का विवरण दिया है। वर्तमान पढ़ी–लिखी, शिक्षित पीढ़ी समस्त मर्यादाओं और आदर्शों को तोड़कर नये सिरे से जीवन जीने, जीवन साथी चुनने में व्यस्त हो गई है। परिवारों में अंतर्जातीय विवाह, माता–पिता की सहमति–असहमति को नजरअंदाज कर आज के लड़के–लड़कियाँ अपनी मर्जी से विवाह करने लगे हैं। कथाकार ने इस परिवर्तन को बड़े ही स्पष्ट शब्दों में रेखांकित किया है। 'अकेलापन' शीर्षक कहानी में किशोर के एकांतिक जीवन की त्रासदी का वर्णन किया गया है। उसकी पत्नी श्रद्धा उसे छोड़कर चली जाती है, तबसे वह अकेले रहता है। 'खलनायिका' नैना चक्रवर्ती के जीवन में आई उथल–पुथल की कहानी है। वह विवेक अग्रवाल की कंपनी में बड़े पद पर आसीन अच्छी सूझ–बूझ रखने वाली महिला है, उसके विरुद्ध विवेक अग्रवाल से अवैध संबंध रखने की गलतफहमी के कारण अखबारों में खबरें छप रही थीं जिस कारण उसे थाने के चक्कर लगाने पड़ रहे थे और सब–इंस्पेक्टर मधु चंद्रा के टेढ़े–मेढ़े सवालों के उत्तर देने पड़ रहे थे। वह धैर्य से सारी परिस्थितियों का सामना करती है। अंत में दूध का दूध और पानी का पानी होता है। उसकी निर्दोषिता सिद्ध होती है। वह कंपनी से त्यागपत्र देकर घर चली आती है। इस कहानी में अफवाहों से घिरी एक औरत के विवेक और धैर्य को रेखांकित किया गया है। 'अपने हिस्से का झूठ' ग्रामीण परिवेश की कहानी है। इसमें गाँव के रहवासी विंदेश्वरी के लंबे परिवार के सदस्यों का वर्णन किया गया है। इस कहानी में अपने स्वार्थ की सिद्धि हेतु परिवार के सदस्य झूठ का सहारा लेकर एक–दूसरे पर झूठा मुकदमा करते हैं। कथाकार ने विंदेश्वरी के पारिवारिक जीवन, परिवार के लोगों की मानसिक, आर्थिक स्थितियों का चित्रण किया है। 'फुंतडू' तीन दोस्तों– स्टेफिन, रामेंद्र और विभास की कहानी है। उनका बचपन और केशौर्य रंगरेलियों में बीतता है। तीनों एक साथ अनेक प्रकार के व्यावसायिक कार्य– दुर्गापूजा में नारियल बेचने, दीपावली में बर्तन बेचने आदि का काम करते हैं। जवानी में नौकरी लगने पर एक–एक कर बिछुड़ जाते हैं। इस कहानी में कथाकार ने बाल प्रेम, युवा प्रेम, पितृ प्रेम, मातृ प्रेम का बड़ा ही सुंदर

वर्णन किया है। 'प्रतिस्पर्धा' दमयंती और सुनयना दो बहनों की कहानी है– दमयंती बड़ी है और सुनयना छोटी। दमयंती हर बात में सुनयना से प्रतिस्पर्धा करती है। किंतु सुनयना उसे अन्यथा नहीं लेती है और अपने में मस्त रहती है। इस कहानी में दमयंती के माध्यम से त्रिया चरित्र का उद्घाटन किया गया है। 'सुबह की चाय' सामान्य–सी घटना पर लिखी गई सामान्य कहानी है। अपनी पत्नी वीणा की मृत्यु पर विष्णु स्वयं चाय बनाना सीखकर रोज पाँच बजे चाय पीने लगता है और अपने व्हाट्सएप ग्रुप के दोस्तों को भी चाय ऑफर करने लगता है। कहानी मनोरंजक है। 'पितृदोष' एक अंध विश्वासी पिता की कहानी है जो अपने पुत्र की सफलता के लिए पंडित और मुल्लाओं के पीछे पागल रहता है किंतु जब उसका पुत्र अपने चाचा की समझाइश पर काम करता है तो उसे सफलता मिलती है। इस कहानी में यह स्पष्ट किया गया है कि अंधविश्वास के जाल से निकलकर जब मनुष्य यथार्थ की धरती पर जीवन की समस्याओं का सामना करता है तो उसे सफलता मिलती है। 'कायांतर' विद्याधर नामक एक साधारण आदमी की कहानी है जो अपनी मेहनत और लगन से पत्रिका के संवाददाता से उठकर उसका संपादक बन जाता है।

'ये शहर हुआ बेगाना' शीर्षक कहानी में एक सरकारीकर्मी के द्वारा अवकाश प्राप्ति के बाद सरकारी आवास को छोड़ने की प्रक्रिया और दूसरे शहर में जाने की स्थितियों का मनोरंजक वर्णन किया गया है। इसमें मिलिंद अवकाश–प्राप्ति के बाद अपने शहर को छोड़कर अपनी बेटी के पास दिल्ली जाता है। 'बोल मेरी मछली कितना पानी' अनूठी कथावस्तु पर लिखी अनूठी कहानी है। इसमें डॉक्टर नीलेश कुमार के विवाह का रोमांचक वर्णन हुआ है। डॉक्टर के क्लीनिक में आने वाली चार भिन्न–भिन्न स्टेटस की लड़कियों में एक के चुनाव की जिस प्रक्रिया का वर्णन हुआ है, वह रोमांचक है। लड़के वाले लड़की और उसके पिता की स्थिति एवं हैसियत की जाँच–परख करते हैं इसलिए कहानी का शीर्षक सार्थक और सटीक है। 'लाट साहब' और 'ये मोह के धागे' क्रमशः महत्त्वाकांक्षा के पतन एवं वात्सल्य प्रेम की कहानियाँ हैं। 'लाट साहब' में गिरधारी अपने बेटे को लाट साहब बनाने की महत्वाकांक्षा में बेटे के चोर हो जाने पर थाने–कचहरी के चक्कर में फँस जाता है तो 'मोह के धागे' में अवकाशप्राप्त एकनाथ अपनी छोटी बेटी दीपिका की नन्हीं–सी बिटिया लाली के मोह में फँसकर वहीं का होकर रह जाता है। शीर्षकनामा संकलन की अंतिम 'बिना पते वाला आदमी' कहानी में कथाकार ने एक अवकाशप्राप्त कर्मचारी प्रभाकर के घुमंतू जीवन की अभिव्यक्ति की है और यह स्पष्ट किया है कि अवकाश प्राप्ति के बाद मनुष्य का जीवन अस्त–व्यस्त, अस्थाई और अस्थिर हो जाता है। कहानी की अंतिम पंक्तियाँ– "पहले तो यह सवाल कोई नहीं पूछता था कि प्रभाकर जी आजकल कहाँ रहते हैं? तब सरकारी ही सही, अपना एक पता तो था।" कहानी

के कथ्य को स्पष्ट करती है और शीर्षक की सार्थकता भी सिद्ध करती है।

संकलन की कहानियों की भाषा सरल, सुबोधगम्य है। न शब्दाडंबर, न अर्थगांभीर्य। गोविंद उपाध्याय सीधी–सरल भाषा में अपनी बात कहने में सिद्धहस्त हैं। इन कहानियों में इनका यह गुण सहज ही दृष्टिगोचर होता है।

"चयनित कहानियाँ" उत्पीड़ित और शोषित मानवता के दुःख–दर्दों और संघर्षों की अभिव्यक्ति के लिए प्रसिद्ध और प्रतिबद्ध कथाकार अरविंद गुप्त का पाँचवाँ कहानी–संग्रह है– इसका प्रकाशन न्यू वर्ल्ड पब्लिकेशन, नयी दिल्ली से हुआ है। इसमें चौदह कहानियाँ संकलित हैं। संकलन की पहली 'देहरी के पार' चिंतनप्रधान कहानी है जिसमें कथानायक कमलजीत के चिंतन के हवाले से कथाकार ने एक मध्यमवर्गीय मनुष्य के संघर्षपूर्ण जीवन का वर्णन किया है जिसके परिवार के सभी सदस्य किसी–न–किसी उहापोह से ग्रस्त रहते हैं जिनके समक्ष दुःख अधिक, सुख कम है। "गढ़" ग्रामीण परिवेश की कहानी है। यह कहानी प्राचीन जमींदारी जमाने की याद ताजा करा देती है जहाँ गरीबों का शोषण, उत्पीड़न और भयादोहन होता था। इस कहानी में जीतनगढ़ की खाली पड़ी गैरमजरुआ जमीन पर नींव खोदकर घर बनाने की तैयारी करता है किंतु तभी उसके द्वारा खोदी गई नींव पर गाँव का दबंग आदमी बहादुर सिंह कब्जा जमाकर अपना घर बनाने लगता है। जीतन हाथ मलकर रह जाता है। ''सर्द हवाओं के बीच'' बिना किसी थीम के वर्णनात्मक कहानी है। इसमें सर्दियों के एक दिन आस–पास घटने वाली घटनाओं का वर्णन किया गया है। पाठक कथाप्रवाह में बहता चलता है किंतु अंत में उसे कुछ भी हाथ नहीं आता है फिर भी कहानी रोचक है। ''मोनालिसा का सपना'' संकलन की सबसे लंबी, मार्मिक और सारगर्भित कहानी है। इसमें ठेंडू वर्मी और मेडिको लॉन के बीच के प्रेम एवं तज्जन्य उत्पन्न समस्याओं की अभिव्यक्ति हुई है। ठेंडू वर्मी मेडिको से प्यार कर बैठती है और उसपर विश्वास कर उसे अपनी देह भी समर्पित कर देती है। वह गर्भवती हो जाती है। ठेंडू वर्मी मेडिको पर विश्वास कर अपना गर्भपात भी नहीं करवाती किंतु जब वह नहीं आता है और लोगों की उँगलियाँ उठने लगती हैं तब वह माँ के साथ अन्यत्र चली जाती है जहाँ वह गर्भस्थ बेटे को जन्म देती है और स्वतंत्र जीवनयापन करती है। इस कहानी में कथाकार ने कथानायक चित्रकार के घुमंतू एवं यायावरी जिंदगी के वर्णन के माध्यम से देश–विदेश के रमणीक स्थलों, दृश्यावलियों का वर्णन किया है जिससे कहानी में रोचकता का समावेश हो गया है। ''भाईजान'' मुस्लिम धर्म में व्याप्त कुरीतियों एवं उनसे उत्पन्न दुष्परिणामों की कहानी है। असलम के जीवन की घटनाओं का वर्णन करते हुए कथाकार इन सड़ी–गली रीतियों को त्यागने की सम्मति देता है। ''देशराग'' शीर्षक के अनुरूप देश की राजनीतिक उथल–पुथल, साहित्यिक–सांस्कृतिक चेतना की अद्भुत कहानी है। इसमें कथाकार ने विश्वभर में

होने वाली क्रांतियों, परिवर्तनों, साहित्यिक–दार्शनिक विचारकों के मतों की अभिव्यक्ति की है। यह कहानी कम, शोध अधिक है। ''आबोदाना'' रिक्शाचालक नरेश की कहानी है। इस कहानी में नरेश के जीवन की घटनाओं का वर्णन करते हुए कथाकार ने गाँव के निम्नवर्गीय लोगों एवं मजदूरों की यातनाभरी जिंदगी का वर्णन किया है। ''अंतर्देशीय'' शीर्षक कहानी में बाढ़ग्रस्त क्षेत्र के निवासियों की आँखोंदेखी त्रासद स्थितियों का वर्णन किया गया है। बाढ़ग्रस्त क्षेत्र के लोगों का जीवन अभावग्रस्त, संकटापन्न, संघर्षपूर्ण और दर्दनाक होता है। कथावाचक अंतर्देशीय के माध्यम से अपने मामा की मृत्यु की सूचना पाकर अपनी मामी से मिलने गाँव जाता है। इसी क्रम में वह अपने बचपन से लेकर वर्तमान की घटनाओं का जिक्र करते हुए बाढ़ग्रस्त क्षेत्र की दर्दनाक एवं रोमांचक स्थितियों का वर्णन करता है। ''ओवरकोट'' विवरणात्मक कहानी है। इसमें ओवरकोट को चिंतन का आधार बनाकर एक परिवार के सदस्यों, उनके क्रियाकलापों, प्रवृत्तियों आदि का चित्रण किया गया है। ओवरकोट की खरीददारी पर व्यंग्य किया गया है। ''कुर्बानी'' शीर्षक कहानी में हिंदू मुस्लिम दंगे का वर्णन हुआ है। जहाँ कहीं भी ऐसे दंगे होते हैं उनमें यथार्थ कम, गलतफहमियाँ अधिक होती हैं। फलतः निर्दोष लोग मारे जाते हैं। इस कहानी में भी दंगाइयों द्वारा निर्दोष रहमान की हत्या होती है। उसपर गोमांस पकाने का इल्जाम लगाया जाता है जबकि जाँचोपरांत यह पाया जाता है कि उसके फ्रीज़ में रखा हुआ मांस गाय का नहीं बल्कि बकरे का था। ''सवाल–दर–सवाल'' ट्रेन की यात्रा के क्रम में पिता–पुत्री के बीच सवाल–जवाब की मनोरंजक कहानी है। इसमें ट्रेन खुलने पर पुत्री पिता से स्टेशन के नाम के साथ तरह–तरह के सवाल पूछती है और पिता स्टेशन का नाम बतलाने के साथ अपने जीवन में घटी घटनाओं का जिक्र करता है। पूरी कहानी में पच्चीस प्रश्न पूछे गए हैं जिनमें अधिकांश अगले स्टेशन के बारे में है तो कुछ देश–विदेश की प्रसिद्ध महिलाओं के विषय में है। अंत में पुत्री के प्रश्न ''पापा अब?'' पर पिता कहानी के उपसंहारस्वरूप जीवन की सच्चाई का उद्घाटन करता है– ''कोई बात नहीं बेटा! यह सब तो होता ही रहता है। निराश नहीं होना है। आगे बढ़ते रहना है........फिर भी सवाल–दर–सवाल तो होते रहेंगे ही।'' यह अपने ढंग की अनूठी कहानी है। ''नौलखा हार'' कृतघ्न संतति की कहानी है। नौलखा हार पाने के लिए बेटे द्वारा बूढ़ी माता से बदसलूकी की जाती है। इस कहानी में कथाकार ने रिश्तों की कड़वाहट का वर्णन किया है। यह आज के युग की सच्चाई को बयान करती है। संकलन की अंतिम ''अक्कड़–बक्कड़'' शीर्षक कहानी में बलात्कार पीड़िता छोटी–सी बच्ची उर्मिला की दर्दभरी किंतु साहसिक जिंदगी का वर्णन किया गया है। संकलन की कहानियाँ विवरणात्मक हैं। सरल भाषा में जीवन–जगत की सच्चाइयों का बड़ा ही सटीक वर्णन किया गया है।

"प्रतिनिधि कहानियाँ" वरिष्ठ कथाकार महेश कटारे का ग्यारहवाँ कहानी–संग्रह है। यह आधार प्रकाशन, हरियाणा से प्रकाशित हुआ है। इसमें बारह कहानियाँ संकलित हैं। संकलन की पहली कहानी ''बाकी सब ठीक है'' ग्रामीण परवेश की कहानी है। इसमें एक गाँव में घटने वाली विविध घटनाओं– एक मास्टर के गाँव में टिक जाने, महंतिन के क्रियाकलाप, बुधिया का थानेदार द्वारा बलात्कार के फलस्वरूप पेट बढ़ने की चिंता आदि का चित्रण किया गया है। "पराजित गंधर्व'' नाच–गान करने वाले गोपीनाथ की कहानी है जो किसी बड़े घराने में जन्म लेता है किंतु बचपन से ही वह कुल की मर्यादा के विपरीत नाच–गान जैसे काम में लिप्त हो जाता है। उसके घर–परिवार के लोग उसके इस कार्य से त्रस्त रहते हैं। पिता की पिटाई, शादी के बाद ससुर की समझाइश भी उसे प्रभावित नहीं कर पाते। किंतु रैयतवाड़ी में प्रोग्राम देने की सूचना पर बेटे की टोक– ''आज रैयतवाड़ी में नाचोगे'' पर वह स्तंभित हो जाता है। कहानी का अप्रत्याशित अंत पाठक को सोचने के लिए बाध्य कर देता है। कहानी में गोपीनाथ के नाच के लिए जाने वाले रास्ते का वर्णन रोमांचक है। "काठ की कोख'' दकियानूसी विचारधारा की कहानी है। इसमें उस परिवार का उल्लेख किया गया है जिसमें लड़कियाँ पैदा करना निषिद्ध माना जाता था। उस गर्भ को घरेलू उपचार से गिराए जाने का उपक्रम किया जाता था जिसमें बेटी होने की संभावना रहती थी। इस कहानी में कथानायिका गोमती के गर्भाधान पर उसके साथ भी वैसा ही उपक्रम किया जाता है और अंत में बेटी होने पर उसे मौत के घाट उतार दिया जाता है और गोमती को बतलाया जाता है कि उसने मृत बेटे को जन्म दिया था। "मुर्दा स्थगित'' हास्यास्पद और विवरणात्मक कहानी है जिसमें शहर की एक सड़क से शाही दंपति की सवारी के गुजरने के दृश्य का वर्णन करते हुए एक सामान्य आदमी की लाश को शाही दंपति की सवारी के निकलने तक पुलिस द्वारा छिपाने का प्रयास करते हुए दिखलाया गया है। इस कहानी में शहर की व्यवस्था, अखबारनवीसी, पुलिस की नाकामी आदि पर टिप्पणी की गई है जो व्यंग्य और हास्य उत्पन्न करती है। "इतिकथा अथकथा'' प्रतीकात्मक कहानी है। इसमें किस्सागो गंगाराम पटेल के बारे में कहने के माध्यम से कथाकार ने एक पेड़ पर रहने वाले विभिन्न प्रकार के पक्षियों और विशेषकर एक चिड़ा–चिड़ी के जोड़े के उत्कर्ष की व्याख्या के बहाने देश–दुनिया में होने वाले परिवर्तनों को रेखांकित किया है। कथाकार की किस्सागोई अद्भुत है। ''पहियों पर चढ़े सुख'' हाट में बिकने जाने वाली सरवती की मनोगत भावनाओं को व्यक्त करती मार्मिक कहानी है। रेशमपुरा से चलकर हमीरपुर हाट में पहुँचने तक बैलगाड़ी पर बैठी सरवती गाड़ीवान सुखदेव का स्पर्श पाकर रोमांचित हो जाती है। किंतु वह जानती है कि इस रोमांच का उसके लिए कोई महत्त्व नहीं है क्योंकि वह हाट पर बिक जाएगी और कोई उसे खरीद लेगा। फिर भी उसके मन में

भावनाओं का ज्वार उठता–गिरता है, उसे उद्वेलित करता है और स्वतः शमित भी हो जाता है– कथाकार ने सरवती और सुखदेव के मनोगत भावों का बड़ा ही रोमांचक वर्णन किया है। ''पार'' शीर्षक कहानी में भी 'पहियों पर चढ़े सुख' की तरह एक चुटकी प्रेम का वर्णन हुआ है। इसमें कमला और नदी पार कराने वाले रामा के प्रेम का वर्णन हुआ है। ''छछिया भर छाछ'' कथानायक रमैनी अर्थात् रामायणी प्रसाद शर्मा के नामर्द और विवाह के बाद मर्द होने की कहानी है। उसके बचपन से गाँवभर में नामर्द होने की अफवाह को उसकी पत्नी रामरती दूर कर यह साबित करती है कि रामायणी मर्द है। ''आदि पाप'' एक विवरणात्मक कहानी है। इसमें भोपाल स्टेशन पर गाड़ियों की चिल्लपों के बीच एक ठेले वाले खजेरा, एक भीख माँगने वाले बिज्जू और एक भिखारिन सावित्री के विषय में चर्चा के क्रम में कथाकार ने सावित्री और बिज्जू के प्रेम का वर्णन किया है। संकलन की अन्य कहानियाँ– 'बच्चों को सब बताऊंगी', 'कुकाल में हंटर', 'फागुन की मौत' आदि अपने ढंग की शीर्षक के अनुरूप अनूठी कहानियाँ हैं। संकलन की सभी कहानियाँ सरल भाषा–शैली में हैं। भावों की कमनीयता और कहीं–कहीं कल्पना की उड़ान तथा काव्यमयी भाषा के प्रयोग से कहानियों की गुणवत्ता बढ़ गई है।

"कॉर्बेल का उपहार'' वरिष्ठ कथाकार हरिप्रकाश राठी का दसवाँ कहानी–संग्रह है। इसका प्रकाशन राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर से हुआ है। इसमें सत्रह कहानियाँ संकलित हैं। संकलन की पहली कहानी ''पिंजरे'' मनमोहक है। इसमें कथाकार ने म्यूजियम में बंद होने के बाद स्वप्न में देखे प्रेमचंद, टालस्टाय, गांधी, तुलसीदास, फ्रायड और ममी बनी नृत्यांगना के साथ बिताए गए क्षणों का रोमांचक वर्णन किया है। इसमें लेखकों से बातचीत के क्रम में उनके अनुभवों एवं मंतव्यों की जानकारी का भी उल्लेख किया है। 'वे आँखें' पूर्वजन्म की घटनाओं पर विश्वास की कहानी है। इसमें कथाकार ने राधाबल्लभ के जीवन में घटने वाली घटनाओं के माध्यम से मनुष्य के अतीत और वर्तमान की स्थितियों का बड़ा ही रोमांचक वर्णन किया है। कहानी में शास्त्रसम्मत विचारों की अभिव्यक्ति के साथ मनुष्य को अंधविश्वास के अँधेरे में न भटकने की सीख दी गई है। ''महाभूत'' शीर्षक कहानी में गाँवभर के मृतकों की अर्थी सजाने एवं दाह संस्कार करने वाले टीकाराम के व्यक्तित्व के उत्कर्षापकर्ष का मनोहारी वर्णन किया गया है। टीकाराम अद्भुत गुणसंपन्न व्यक्ति था। जब गाँव में कोरोना का संक्रमण फैलता है और लाशों का अंबार लग जाता है तब भी टीकाराम सारी लाशों को ठिकाने लगाता है। अंत में वह भी कोरोना की चपेट में आकर मर जाता है, तब कोई उसकी लाश को उठाने नहीं आता किंतु गाँव का ठाकुर वीरभद्र सिंह उसकी लाश का अंतिम संस्कार करता है। बाद में गाँव वाले गाँव के बीच में टीकाराम की मूर्ति स्थापित कर उसे सम्मान देते हैं और वह पंचभूत से महाभूत बन

जाता है। इस कहानी का विकासक्रम बड़ा ही सुनियोजित, एतदर्थ मनोरंजक है। ''चमगादड़ें'' रोचक कथावस्तु पर लिखी रोचक कहानी है। इसमें चमगादड़ की अर्थवत्ता और प्रासंगिकता का वर्णन किया गया है। चमगादड़ हमेशा उल्टा लटकता है, इस बात को कथावाचक का बड़ा भाई तुलसी के कथन– "सब कै निंदा जे जड़ करहिं, तेई चमगादुर होई अवतरहिं" से स्पष्ट करता है। कथावाचक अपने कृत्य पर लज्जित हो जाता है क्योंकि दूसरों की निंदा करने की उसकी प्रवृत्ति थी। उसने अपने बॉस की निंदा की जिस कारण उसका प्रमोशन नहीं हुआ। बड़े भाई द्वारा चमगादड़ की इस व्याख्या पर वह सोचने लगता है। यह एक मनोरंजक कहानी है। "चुगता मोती हंस" तीन भागों में विन्यस्त दार्शनिक चिंतन की कहानी है। पहले भाग में संजय और रानी दंपति के अनन्य प्रेम एवं उनकी अभिरुचियों का वर्णन किया गया है। दूसरे भाग में संजय के दार्शनिक–आध्यात्मिक चिंतन के क्रम में कुंती की तरह मंत्र द्वारा चंद्र, मंगल, बुध देवों के आह्वान के फलस्वरूप अनेक सुंदरियों के आगमन पर उनके साथ भोग करता है। उसे यह भी जानकारी होती है कि हर स्त्री–पुरुष में गुण–दोष दोनों होते हैं, मनुष्य को हंस की तरह नीर–क्षीर विवेक से गुण को ग्रहण करना चाहिए। उसके भीतर की अज्ञानता के कपाट खुल जाते हैं। तीसरे भाग में पत्नी रानी के गुणों के ग्रहण के साथ कहानी का अंत बड़ा ही मार्मिक और ज्ञानवर्धक है। कथाकार का निर्णय– "हम हंस की तरह अवगुणों के पानी को हटाकर गुणों के मोती चुगना सीखें", कहानी के कथ्य एवं शीर्षक की सार्थकता सिद्ध करता है। "थैंक्स कैटी" पशु–प्रेम की कहानी है। इसमें कैटी नामक बिल्ली से कथाकार को हमदर्दी होती है। वह उसे प्रतिदिन दूध और ब्रेड देता है। कुछ दिनों की अनुपस्थिति के बाद जब कैटी एक बिल्ले के साथ कथावाचक के घर लौटती है तो उससे प्रेरित होकर कथावाचक के विधुर मित्र शास्त्री जी और विधवा रीता दाम्पत्य सूत्र में बँधकर खुश होते हैं। इसके लिए कथावाचक कैटी को थैंक्स देता है। कहानी में कोरोना की विभीषिका का भी वर्णन किया गया है। "निष्कर्ष" एक परिवार के सदस्यों के बीच के तर्क–वितर्क की कहानी है। इसमें परिवार के सारे सदस्य जब एक साथ ब्रेकफास्ट के लिए डायनिंग टेबल पर इकट्ठे होते हैं तो उनके बीच किसी–किसी विषय पर तर्क–वितर्क छिड़ जाता है। इसी क्रम में एक बार उनके बीच 'भगवान क्या खाता है' विषय पर तर्क छिड़ जाता है। इस प्रश्न का सटीक उत्तर किसी को नहीं मिलता है। सभी अपने–अपने अनुभवों को बयान करते हैं। सबकी बातों को सुनकर अंत में बिटिया अनन्या कहती है कि 'भगवान अहंकार खाता है। उसका यही भोजन है। मनुष्य के प्रज्ञाचक्षु इसी से खुलते हैं।' सभी इससे सहमत होते हैं। कथाकार ने विभिन्न विषयों पर तर्क–वितर्क की अभिव्यक्ति की है। कहानी मनोरंजक और ज्ञानवर्धक है। शीर्षकनामा "कॉर्वेल का उपहार" पक्षी–प्रेम की रोमांचक कहानी है। इस कहानी में

दक्षिणी अमेरिका की अमेजन नदी के घने जंगलों में मिलने वाले कॉर्बेल तोते के चातुर्य का वर्णन किया गया है जो कथावाचक व्यास के परिवार में प्रेम की रसगंगा बहाकर परिवार के लोगों के मनोमैल को धोकर वहाँ सुखद स्थिति का निर्माण करता है। अपने ग्यारह महीने के आवास के दौरान कॉर्बेल तोता अपने हाव–भाव और अपनी बोल–चाल से सभी का मन मोह लेता है। उसकी वर्षगाँठ मनाई जाती है और हर कोई उसे कुछ न कुछ उपहार देता है किंतु व्यास उसे भीगे मन से खुले आसमान में छोड़कर अनोखा उपहार देता है। इस कहानी में तोते के खरीदने से लेकर उसे मुक्त करने के बीच बहुसंख्यक प्रसंगों का रोचक, रोमांचक और सुखद वर्णन हुआ है। संकलन की अन्य कहानियाँ– 'अनिमेशन', 'हेमू की आँखें', 'रौशनी', 'जमूरा' आदि रोचक कथावस्तु पर लिखी रोचक कहानियाँ हैं। नातिदीर्घ कलेवर में लिखी हरिप्रकाश राठी की कहानियाँ रोचक होती हैं। साहित्य, संस्कृति, दर्शन और अध्यात्म के ज्ञान से भरे संकलन की कहानियाँ मनोरंजक भी हैं और ज्ञानवर्धक भी। कहानियों की भाषा सरल और बोधगम्य है।

"अब कोई लेकिन नहीं" टी. पी. पोद्दार का पहला कहानी–संग्रह है। यह बोधि प्रकाशन, जयपुर से प्रकाशित हुआ है। इसमें नौ कहानियाँ संकलित हैं। संकलन की पहली कहानी "और आबदा चली गई" एक चरित्रप्रधान कहानी है। इसमें आबदा नामक चूड़ी बेचने वाली मुस्लिम औरत की चारित्रिक विशेषताओं का विश्लेषण किया गया है। आबदा चूड़ी बेचने के साथ–साथ लोगों की भलाई के काम भी करती थी। वह सबका कल्याण चाहती थी। जब अकरम की गतिविधियाँ उसे सशंकित करती हैं, उसे लगता है कि मोहल्ले में कुछ अनिष्ट होने वाला है तो वह अपने पूरे परिवार के साथ मोहल्ला छोड़कर अन्यत्र चली जाती है। इस कहानी में बंगाली पर्व–त्योहारों का वर्णन किया गया है। कहानी लंबी है परंतु रोचक है। ''रिशु काना'' दिलचस्प कहानी है। इसमें रिशु नामक अंधे आदमी के जीवन–चरित्र को रेखांकित करने के क्रम में उसके गाँव का बड़ा ही सुंदर विवरण प्रस्तुत किया गया है। रिशु जन्मांध नहीं था। वह सिउड़ी का रहने वाला पढ़ा–लिखा विद्वान जनप्रिय शिक्षक था। एक दुर्घटना में उसने अपनी पत्नी, बच्चे और अपनी आँखें खो दीं। मंदिर के पुजारी को वह मिलता है जो उसकी देखभाल कर राजमहल के बगल के कमरे में रहने की व्यवस्था कर देता है। रिशु को गाँव के बच्चे रिशु काना कहकर चिढ़ाते हैं किंतु वह इसका बुरा नहीं मानता है। गाँववालों के लिए रिशु अंत तक रहस्य बना रहता है। अंत में सिउड़ी से आए एक संबंधी के मुखातिब उसका रहस्योद्घाटन होता है। कथाकार ने रिशु का विवरण रहस्यात्मक ढंग से किया है। संपूर्ण कहानी में गाँव, गाँव में चलने वाले बाज़ार, गाँव के रहवासियों, जोगु की चाय की दुकान की गहमागहमी आदि का बड़ा ही रोमांचक वर्णन हुआ है। रहस्य और रोमांच से भरा पाठक अंत तक बंधा रहता है।

"अपेक्षा उपेक्षा" एक मातृहीन बालक शिवा की कहानी है जो भरे–पूरे परिवार में भी उपेक्षित जीवनयापन करता है जिस कारण वह बिगड़ जाता है और उपेक्षा ही उसकी मृत्यु का कारण बनती है। शिवा को जिस प्रेम और ममता की अपेक्षा रहती है, वह उसे नहीं मिलता है और जिस उपेक्षा से उसका जीवन दुखी होता है, वही मिलता है। कहानी का शीर्षक सार्थक और सटीक है। ''उसने भरोसे की लाज रख ली" शीर्षक कहानी में कमला नामक लड़की का चरित्रांकन किया गया है। कमला के चुलबुलेपन और गर्भ धारण नहीं करने के कारण उसके ससुराल वाले उससे घृणा करने लगते हैं और अंत में उसे उसके मायके भेज देते हैं। लंबे अरसे के बाद वह स्वस्थ पुत्र को जन्म देकर मर जाती है। पुत्र को प्राप्त कर सभी खुश तो होते हैं पर उसकी मौत से सभी दुखी होते हैं। कहानी की अंतिम पंक्तियाँ– "जीजा जी दीदी के चेहरे को देख सुबक रहे थे। दीदी के मुस्कुराते होठ मानो कह रहे थे– आपके भरोसे की लाज मैंने रख ली है" कहानी के कथ्य को स्पष्ट करती है और शीर्षक की सार्थकता भी सिद्ध करती है। ''नियति'' उस नियति नाम की लड़की की कहानी है जो विवाह के लिए इच्छुक लकवाग्रस्त पिता से वायदा लेती है कि वह तभी जाएगी जब वे खुद चलकर उसे डोली तक पहुँचाएँगे। शीर्षकनामा "अब कोई लेकिन नहीं" युग–युगांतर से चली आ रही सौतिया डाह की कहानी है। समरेश की संतानहीनता की चिंता एवं स्वयं गर्भाधान नहीं कर सकने की असमर्थता पर मंजूषा पति की दूसरी शादी एक निर्धन माता–पिता की बेसहारा बेटी संगीता से करवा देती है जो उसके लिए पीड़ादायक होता है। संगीता के कलुषित व्यवहार से तंग आकर वह अन्यत्र जाकर नौकरी करने का निर्णय लेती है। समरेश का बार–बार आग्रह उसे अपने निर्णय से नहीं डिगा सकता। मंजूषा की अंतिम उक्ति– "बस मैंने कहा अब कोई लेकिन नहीं" समरेश को चुप करा देती है। इस कहानी में पतिपरायणा के रूप में मंजूषा का त्याग और बलिदान अद्भुत है और संगीता का सौतिया डाह भी अनोखा है। कहानी में दोनों किस्म के चरित्रों का सम्यक् विकासक्रम प्रस्तुत किया गया है। मंजूषा का चरित्र लोकरंजक है।

संकलन की अन्य कहानियाँ 'अहसास', 'पूर्वाभास' लंबी, विवरणात्मक किंतु रोचक हैं। "सौ वर्षों का प्रेम" वरिष्ठ कथाकार रणीराम गढ़वाली का कहानी–संग्रह है। यह नेशनल पेपरबैक्स, नयी दिल्ली से प्रकाशित हुआ है। इसमें तेरह कहानियाँ संकलित हैं। जिस प्रकार फणीश्वरनाथ रेणु ने पूर्णियाँ अंचल को अपनी कहानियों में रूपायित कर आंचलिकता को आयाम दिया, राजेंद्र अवस्थी ने मध्य प्रदेश के बस्तर जिले की गोंड जाति के जन–जीवन को अपनी कहानियों में रूपायित कर नये अध्याय का सूत्रपात किया, उसी प्रकार रणीराम गढ़वाली ने अपनी कहानियों में गढ़वाली अंचल के पहाड़ी जीवन को अभिव्यक्त कर इस परंपरा को आगे बढ़ाया है। संकलन की अधिकांश कहानियों– 'खिरमू', 'घरबैंस', 'एक पहाड़ी लड़की', 'घुटवा' आदि में

पहाड़ी जीवन के वर्णन से आंचलिकता की सौंधी गंध मिलती है। संकलन की कहानियों में ग्रामीण और पहाड़ी शब्दों का बहुल प्रयोग हुआ है।

"एक जिंदगी.....एक स्क्रिप्ट भर!" 'दरिया बंदर कोट' के बाद उपासना का दूसरा कहानी–संकलन है। यह लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज से प्रकाशित हुआ है। इसमें अनूठी कथावस्तु पर लिखी छह लंबी और अनूठी कहानियाँ संकलित हैं। प्रसिद्ध समीक्षक चंदन पांडेय ने लिखा है– "लोक के आलोक में रचा हुआ उपासना का यह सम्मोहक गद्य उदासी के ऐसे वर्णन और ऐसे शेड्स हैं जैसे लेखिका उदासी की नयी परिभाषा गढ़ रही हो।" संकलन की शीर्षकनामा पहली कहानी ''एक जिंदगी....एक स्क्रिप्ट भर'' गीता और शंकर के दरमियान घट रहे निम्न मध्यवर्ग जीवन के शोक गीत सरीखी है जिसकी उदास धुन पर इस कहानी का ताना–बाना बुना गया है। कहानी में वर्णन इतना मार्मिक और अथाह विस्तार लिए हुए है कि लगता है कोई एक नयी पृथ्वी है जिस पर शंकर और गीता अपनी विह्लताओं को जी–भोग रहे हैं। ''कार्तिक का पहला फूल ''शीर्षक कहानी में वयोवृद्ध ओझा जी के उड़हुल के फूल के प्रति ममत्व के वर्णन में कथाकार ने मानव जीवन के सत्य का चित्रण किया है। जिस उड़हुल के फूल के प्रति ओझा जी का सारा ममत्व केंद्रित था, बहू के द्वारा तोड़ लिए जाने पर उन्हें थोड़ी उदासी तो होती है किंतु वे अन्यमनस्क नहीं होते हैं। यह एक चिंतनप्रधान मार्मिक कहानी है। ''एगही सजनवां बिनु ए राम'' अद्भुत शीर्षक की तरह ही लंबी अद्भुत कहानी में गाँव तक पहुँची हुई अधकचरी आधुनिकता एवं ठंडी क्रूरता को हथियार बनाए सामंती मूल्यों का आपसी टकराव दिखलाया गया है और इस टकराव में सिलिंडर भइया और रतनी दीदी जैसे लोगों के निस्सार होते जीवन का अंकन मार्मिक और कौतुहलपूर्ण है। ''नाथ बाबा की जय'' धर्मांधता की कहानी है। धर्म का लक्ष्य मनुष्य को मनुष्य से, समाज से और सबसे बढ़कर मानवता से जोड़ना होता है किंतु मिथ्याडंबर में फँसे लोग धर्म के उद्देश्य, लक्ष्य एवं उसमें निहित पवित्रता को त्याग कर उसके लक्ष्य को सीमित कर देते हैं। इस कहानी में कोर पूजन के बहाने उसके अनुयायी दुकानों, गुमटियों, घरों को लाठियों से तोड़ने में संलग्न हो जाते हैं। एक ओर लोग नाथ बाबा की जयकार करते हैं तो दूसरी ओर मनुष्यों को बर्बादी के कगार पर ला खड़ा कर देते हैं। संकलन की अन्य कहानियाँ– 'टूटी परिधि का वृत्त', 'अनभ्यास का नियम' लंबी तथा विवरणात्मक हैं। इनमें भी कथाकार का चिंतन मुखर हुआ है।

संकलन की लंबी कहानियों में कल्पना की उड़ान, भावों की कमनीयता एवं भाषिक सौष्ठव है। इनमें विचारों का गुंफन हुआ है। कहानियाँ लंबी हैं पर उबाऊ नहीं हैं। पाठक अंत तक बँधा रहता है।

वर्ष 2024 में देश भर से ढेर सारी पत्र–पत्रिकाओं (दैनिक, मासिक, त्रैमासिक

अर्धवार्षिक आदि) का प्रकाशन हुआ है जिनमें कई कहानियाँ प्रकाशित हुई हैं। प्रस्तुत है कुछ उपलब्ध पत्रिकाओं की कहानियों का विश्लेषण–

'दैनिक हिंदुस्तान' के 'रविवारीय फुर्सत' में एक कहानी का प्रकाशन होता है। इधर कुछ काल से फुर्सत अंक में 'कादंबिनी' के पुराने अंकों की एक कहानी का प्रकाशन हो रहा है। संपादक के अनुसार– 'कादंबिनी' की झलक आज के नये पाठक कर सकेंगे।" प्रस्तुत है उपलब्ध कुछ कहानियों की मीमांसा– 27 अक्तूबर, 2024 के अंक में निर्मल गुप्त की 'दिशा–परिवर्तन' शीर्षक कहानी में जीवन के यथार्थ का सामना नहीं कर सकने के कारण लेखन की निरर्थकता सिद्ध करने का प्रयास किया गया है। भास्कर के कथन– "मैंने लिखना छोड़ दिया है" के आलोक में कथाकार ने इस सत्य का उद्घाटन किया है। 24 नवंबर, 2024 अंक में प्रसिद्ध कथाकार ममता कालिया की 'दफ्तर में मौसम' शीर्षक कहानी में कथाकार ने एक दफ्तर में घटित घटनाओं, उसमें कार्यरत कर्मचारियों, उनकी चिल्लपों, उन की प्रवृत्तियों, आपसी झगड़ों एवं मौसम के सुहानेपन का रोमांचक वर्णन किया है। 8 दिसंबर, 2024 अंक में शायान अहमद मदनी की हास्य कहानी प्रकाशित हुई है। इसमें विवाह को लेकर हास्य की सृष्टि की गई है। 15 दिसंबर, 2024 अंक में अखिलेश तिवारी की 'कुर्सियों के घेरे' रोमांचक कहानी है। इस क्रम में कथाकार ने ऑफिस में अधिकारियों– मंत्री से लेकर अफसर तक की प्रवृत्तियों एवं कुर्सीपरस्ती का वर्णन किया है जो मनोरंजक एवं दिलचस्प है। 29 दिसंबर, 2024 के अंक में प्रसिद्ध कथाकार अचला नागर की 'अफसर' शीर्षक कहानी प्रकाशित हुई है। यह एक मनोविश्लेषणात्मक कहानी है। इसमें एक अफसर अंबिका बाबू की अपनी पतिपरायणा पत्नी बऊआ के प्रति अफसरशाही का वर्णन किया गया है। अंबिका बाबू को अपनी गलतियों का अहसास तो होता है किंतु इसी घुटन में उसकी मौत हो जाती है। उसकी मृत्यु पर उसकी पत्नी कहती है– ''विजय के पिता जी, ये क्या किया तुमने! कम से कम मुसीबत की घड़ी में तो अफसरी का तौक उतारकर एक पति की तरह अपनी औरत से बात की होती तुमने..... क्या पता वह शायद गिरती–ढहती इमारत को रोक ही लेती।''

''वनिता'' मरियम मम्मन मैथ्यू के संपादन में दिल्ली से प्रकाशित मासिक पत्रिका है। यह महिलाओं की खास पत्रिका है। इसमें प्रकाशित कहानियाँ विशेषकर महिला कथाकारों की होती हैं। इसके सितंबर, 2024 अंक में चार कहानियाँ संकलित हैं। 'पुरस्कार' पुष्पा भाटिया की सकारात्मक सोच की कहानी है। 'उलझी गुत्थी' सुमन वाजपेयी की दो अंकों में समाप्त होने वाली लंबी कहानी है। 'डीएडीक्शन' रेणु गुप्ता की शीर्षक के अनुरूप नशामुक्ति की कहानी है। इसमें नशामुक्ति की सुंदर युक्ति का वर्णन किया गया है। अपने पति प्रांजल के नशा सेवन से तंग आकर ईशानी अपनी डॉक्टर सहेली शालू से परामर्श लेकर उसका चेकअप करवाती है और उसे बतलाती

है कि ड्रिंक करने से उसका लीवर खराब हो गया है। वह उसे योग–सेंटर ले जाती है, पार्क में घुमाती है और घर में चुनमुन चिरैयों को पाल लेती है। इससे प्रांजल का मन बदल जाता है और वह पीना छोड़ देता है। यह दाम्पत्य प्रेम की शिक्षाप्रद कहानी है। 'बड़कऊ' ज्योत्स्ना सिंह के व्यक्तित्व–विश्लेषण की कहानी है।

'वनिता' के अक्तूबर, 2024 अंक में चार कहानियाँ हैं। संजय कुमार सिंह की 'खिड़की वाली लड़की' दिलचस्प कहानी है। हवेली की खिड़की पर नजर आने वाली लड़की लॉज के लड़कों में मोहब्बत का सुरूर जगा देती है। वह लड़की थैलेसिमिया जैसी जानलेवा बीमारी से ग्रस्त थी। हमेशा उसे खून लेना पड़ता था। इस जीवन से तंग आकर उसने खून लेने से इनकार कर दिया। परिवार के सदस्यों की समझाइश बेअसर हो गई। जब लॉज के लड़कों को इसकी जानकारी हुई तो वे उस लड़की सरोज के पास गए और उससे आग्रह किया। उनके आग्रह में इतना मनुहार और तर्क में इतनी जान थी कि सरोज को मानना पड़ा। इससे सभी में खुशियाँ छा गईं। यह एक निष्कलुष प्रेम की कहानी है। 'उलझी गुत्थी' सुमन वाजपेयी की दो किस्तों में चलने वाली लंबी कहानी है। यह अक्तूबर, 2024 के अंक में छपी है। 'एक नयी शुरुआत' संगीता माथुर की दिलचस्प कहानी है। शीर्षक के अनुरूप कहानी की कथावस्तु है, एतदर्थ शीर्षक सार्थक और सटीक है। 'अगला स्टेशन मंडी हाउस है' गोपाल सिन्हा की हास्य कहानी है। इसमें दिल्ली मेट्रो से सफर करने की कठिनाइयों का वर्णन किया गया है। कथाकार ने यात्रियों की विभिन्न प्रकार की सात कोटियाँ बनाई हैं और उनका मनोरंजक विवरण प्रस्तुत किया है जो व्यंग्यात्मक है। कहानी रोचक है। 'वनिता' के नवंबर, 2024 अंक में पाँच कहानियाँ– शोभा माथुर की 'माँ मेरा घर कहाँ है', चित्रलेखा अग्रवाल की किस्तों में चलने वाली लंबी कहानी 'प्रेम कथा का क्लाइमेक्स', डॉक्टर दीपक पंचोली की 'गुप्त रहस्य', आभा श्रीवास्तव की 'नहीं पता' और कमल किशोर सक्सेना की 'हसबेंड रिपेअरिंग सेंटर' संकलित हैं।

''किस्सा'' भागलपुर, बिहार से अनामिका शिव के संपादन में प्रकाशित कहानी केंद्रित त्रैमासिक पत्रिका है। 'किस्सा–36' में नौ कहानियाँ संकलित हैं– महेश कटारे की 'रोशनीघर' में कथाकार ने सिंगरौली के विंध्य नगर में स्थित बिजली बनने वाले स्थान की यात्रा के क्रम में विभिन्न प्रकार के भावों की अभिव्यक्ति की है जो बड़ा ही दिलचस्प है। कहानी में प्राकृतिक सुषमा के वर्णन के साथ–साथ देश में फैली जाति व्यवस्था पर विस्तार से विचार किया गया है। इसके साथ ही विकलांगों के जीवन की सार्थकता–निरर्थकता को लेखक ने उम्मेद सिंह और उसकी पत्नी मंजरी के जीवन क्रम में अभिव्यक्त किया है। विवेक द्विवेदी की 'काजू' विस्मय–विमुग्धकारी विवरणात्मक कहानी है। इसमें काजू के माध्यम से एक नेता भैया के उत्थान–पतन, अमर्ष–विमर्श एवं संघर्ष की अभिव्यक्ति हुई है। चितरंजन भारती की 'टूअर' आज के युग की कहानी

है। इसमें वृद्ध पिता को अकेले छोड़कर मौज–मस्ती करने वाली संततियों की कृतघ्नता को उजागर किया गया है। 'संवाद अनायास' रजनी गुप्ता की कल्पनाप्रसूत भावनात्मक कहानी है। इसमें अनिकेत और लोरी के बीच पनपते और शमित हो जाते प्रेम की अभिव्यक्ति के माध्यम से कथाकार ने प्रेम की एकनिष्ठता, समय सीमा के अंतराल में उसके क्षरण और जीवन की निस्सारता पर चिंता व्यक्त की है। 'गरीब की गाय' नंदन पंडित की कहानी है। इस कहानी में कथाकार ने किसानों की गरीबी, दीनता एवं परवशता का मार्मिक चित्रण किया है। यह कहानी प्रेमचंद युग की याद दिलाती है जब गरीब और निर्धन किसान साहूकारों और लालाओं के कर्ज तले दम तोड़ते थे। अतीत और वर्तमान का चित्रण करती अरविंद गुप्त की ''देस वीराना'' एक शोधपरक वर्णनात्मक कहानी है जिसमें कथाकार ने देश के एक भू–भाग के इतिहास का विवरण प्रस्तुत किया है। ''पहले की बात कुछ और थी'' से शुरू कर कथाकार स्थान की प्राचीन गरिमा का चित्रण करता है, तो ''अब की बात कुछ और है'' से प्राचीन नष्टप्रायः सुविधाओं की अनुपलब्धता से वर्तमान की कठिनाइयों का विवरण प्रस्तुत करता है। इन दो वाक्यांशों के बीच कथाकार ने एक अच्छी कहानी की सृष्टि कर दी है। 'पूस की एक रात'' डॉक्टर रंजना जायसवाल की मर्मस्पर्शी कहानी है। पूस की एक ठंड भरी रात में सब्जीविक्रेता जगदीश दस बजे रात तक ठंड से सिकुड़ा हुआ सब्जी का ठेला लगाए खड़ा रहता है किंतु दुर्भाग्य से कोई भी ग्राहक नहीं आता और थक–हार कर वह घर लौट जाता है। वह कॉलोनी की एक मेम साहब के पास जाता है, जो सब्जी तो लेती है किंतु उसे साहब और मेम दोनों की डाँट–फटकार सुननी पड़ती है। इस कहानी में जगदीश की दीनता एवं उसकी अभाव भरी जिंदगी का मर्मस्पर्शी चित्रण किया गया है। 'ए मुहब्बत तेरे अंजाम पे' शिवानी की मर्मस्पर्शी शीर्षक की तरह दिलचस्प एक भग्नहृदया पत्नी मीना की कहानी है।

राजस्थान के कथाकारों को केंद्र में रखकर 'किस्सा–39' का प्रकाशन किया गया है। इसमें बारह कहानियाँ संकलित हैं। देश के बँटवारे के परिणामस्वरूप भारत और पाकिस्तान के बीच दंगे हुए जिसकी विभीषिका का चित्रण करती अनेक कहानियाँ लिखी गईं। कृष्ण कल्पित की ''पाकिस्तान के इस तरफ'' शीर्षक कहानी में हिंदुस्तान और पाकिस्तान के बीच की स्थितियों का वर्णन किया गया है। कथानायक अपना शहर छोड़कर जैतसर आ जाता है। किंतु यह स्थान, यहाँ की स्थितियाँ एवं यहाँ का वातावरण उसे रास नहीं आता है और वह अपने शहर को लौट जाता है। इस कहानी में कथानायक की स्मृतियों के हवाले से तत्कालीन परिवेश का चित्रण गया है जो न तो दुखद है और न ही मार्मिक। चरण सिंह 'पथिक' की ''कस्तूरी गंध'' मिले–जुले भावों की ग्रामीण परिवेश की कहानी है। डॉक्टर पद्मजा शर्मा की ''गुलाब अब भी झरते हैं'' एक विधवा मजदूरिन की बेटी किस्सू की दर्दभरी कहानी है। किस्सू की माँ

जिसके घर में काम करती थी, किस्सू भी माँ के साथ जाती थी और मेम की फुलवारी में गुलाब के नीचे खेलती–खाती थी। कोरोना के कारण किस्सू की मौत हो जाती है, फिर भी मेम को लगता है कि किस्सू गुलाब के नीचे खेलने आएगी। इस कहानी में वैधव्य की पीड़ा और मेम के हृदय में किस्सू के प्रति संवेदना की मार्मिक अभिव्यक्ति हुई है। लक्ष्मी शर्मा की ''गजबन'' विवरणात्मक चरित्रप्रधान कहानी है। इसमें भूगोल के रिसर्च स्कॉलर दिवाकर की मोटर साइकिल यात्रा के हवाले से कथाकार ने रेलवे गुमटी पर कार्य करने वाली गजबन–नीरा दम्पति की रसभरी कहानी का उल्लेख किया है। राजस्थानी भाषा–संस्कृति की गरिमा से पूर्ण यह एक सारगर्भित, दिलचस्प और रोमांचक कहानी है। आशा शर्मा की 'मोह के समीकरण', रजनी मोरवाल की 'पाँचवाँ मौसम', किरण राजपुरोहित 'नितिल्ला' की ''कुर्जा ए म्हारो भँवर मिला दे'' और शिवानी जयपुर की 'प्रेम भगति को पैड़ो न्यारो' प्रेम और मोह की मार्मिक कहानियाँ हैं। तसनीम खान की 'धीने रख दे रे ढोला' अतृप्त वासना के अधूरे प्रेम की कहानी है। कविता मुखर की 'पिंजड़ा तोड़' अनूठी कथावस्तु पर लिखी कहानी है। अंक की सभी कहानियाँ, जैसा कि संपादिका ने संपादकीय में उद्घोषित किया है, राजस्थानी भाषा, संस्कृति और सभ्यता से परिपूर्ण हैं। इनमें राजस्थानी शब्दों, मुहावरों, पहनावे–ओढ़ावे आदि का सम्यक् प्रयोग हुआ है।

वर्ष 2024 की कहानियों के अध्ययन और अनुशीलन से यह स्पष्ट होता है कि इन कहानियों में वह सबकुछ है जो आज के परिवार और समाज में घटित हो रहा है। कथाकारों ने अपनी कहानियों में इन सबका वर्णन किया है। इन कहानियों में भाव–वैविध्य, वर्णन–वैविध्य और तथ्य–वैविध्य देखने को मिलता है। इस वर्ष प्रेम की दीपावली सजाकर गोविंद उपाध्याय जी ने अपने संकलन ''मितऊ' 'के माध्यम से प्रेम की अभिव्यक्ति की है। कहीं चुटकी भर धूप की तरह चुटकी भर प्रेम है, कहीं मात्र प्रेमाभास, तो कहीं विशुद्ध दाम्पत्य की अभिव्यक्ति हुई है। कहानियों में विरह गीत गाते प्रेमी–प्रेमिका के दर्शन भी हुए हैं। 'वनिता' अपनी गरिमा का निर्वाह करती हुई दाम्पत्य प्रेम की कहानियों का प्रसाद लेकर आई है जिससे प्रेम मंदिर का सूनापन बहुत हद तक दूर हुआ है। इस वर्ष भी पूर्व के वर्षों की भाँति कहानियों में नारी चेतना की स्फूर्ति, वात्सल्य प्रेम और मानव मन की चेतना का संचार करने वाली कहानियों का प्रणयन हुआ है। यद्यपि बारिश में भीगती कृषक किशोरी के पायलों की झनकार सुनाई नहीं पड़ी, तथापि प्रेमचंद के होरी की चौपाल सजती रही। अजय की 'राम बचन खेती क्यों करे', नंदन पंडित की 'गरीब की गाय' जैसी कहानियों में किसान की गरीबी के चित्र खींचे गए हैं। हिंदी कहानियों में विमर्श को स्थापित करने वाले राजेंद्र यादव की गरिमा का निर्वाह करते हुए जितेंद्र कुमार ने दलित विमर्श की 'रिजर्वेशन' जैसी कहानी लिखकर दलित विमर्श को कायम रखा। अंतर्जातीय विवाह भारतीय समाज

की सांस्कृतिक चेतना का एक अनिवार्य तत्त्व बन गया है। कथाकारों ने अंतर्जातीय विवाह को केंद्र में रखकर बहुसंख्यक कहानियों का प्रणयन किया है। गोविंद उपाध्याय के संकलन ''मितऊ'' की कहानियों में जहाँ प्रेम की दीपावली सजी है, वहीं अंतर्जातीय विवाह की अभिव्यक्ति हुई है। टी.पी. पोद्दार की 'नियति' ऐसी ही कहानी है। भारतीय परिवार में वृद्ध माता–पिताओं की सबसे बड़ी त्रासदी उनकी कृतघ्न संतानें हैं जो उन्हें वृद्धावस्था में, जबकि उन्हें सहारे की आवश्यकता होती है, अकेले छोड़ देती हैं। इस तथ्य को दृष्टिपथ में रखकर अनेक कथाकारों ने कृतघ्न संततियों की कहानियों का प्रणयन किया है। अरविंद गुप्त की 'नौलखाहार', चितरंजन भारती की 'टूअर' आदि ऐसी ही कहानियाँ हैं। इस वर्ष देशभक्ति की कहानियों की भी रचना हुई है। बाला शर्मा की 'आखिरी मुलाकात' देशभक्ति की कहानी है। भक्ति भावना की अभिव्यक्ति अशोक की 'किंकणी माँ', उपासना की 'नाथ बाबा की जय' आदि कहानियों में हुई है। फणीश्वरनाथ रेणु ने पूर्णिया अंचल को अपनी कहानियों में चित्रित कर जिस प्रकार हिंदी कहानियों में आंचलिकता को स्थापित किया है, उसी प्रकार रणीराम गढ़वाली ने उत्तराखंड के पहाड़ी जीवन को अपनी कहानियों में चित्रित कर इस परंपरा को एक नया आयाम दिया है। 'जब आसमान रो पड़ा', 'एक किनारा रेतीला', 'एक पहाड़ी लड़की' आदि ऐसी ही कहानियाँ हैं जिनमें पहाड़ी जीवन की अभिव्यक्ति हुई है।

निष्कर्षतः, हम कह सकते हैं कि वर्ष 2024 की कहानियों में भाव–वैविध्य, वर्णन–वैविध्य और तथ्य–वैविध्य है। इन कहानियों का विचारफलक व्यापक, बहुआयामी और बहुसंदर्भी है।

❑❑❑

22

हिंदी गद्य की अन्य विधाएँ

प्रो. त्रिभुवननाथ शुक्ल

पूर्व प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी एवं भाषा–विज्ञान विभाग रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय। अनेक प्रशासनिक निकायों के सदस्य। तीस से अधिक पुस्तकें प्रकाशित। रवींद्रनाथ टैगोर साहित्य सम्मान, सुब्रहमण्यम भारती सम्मान, उत्तरप्रदेश हिंदी संस्थान के साहित्यभूषण सम्मान सहित अनेक पुरस्कारों से सम्मानित। संप्रति–स्वतंत्र लेखन।

साहित्य सदैव से अपने कठिन समय को साधता चला आ रहा है। इसी अर्थ में संतों का साहित्य शक्ति का वृंदावन है, चंदनवन है। इसीलिए तो वह अप्रतिहत है। इसकी नैरंतर्यता हिंदी गद्य की विविध विधाओं से ही सघन होती है। निबंध, संस्मरण, रेखाचित्र, रिपोर्ताज, डायरी, यात्रावृत्तांत, जीवनी एवं आत्मकथाओं में साहित्य का मूल्य तत्त्व निहित है। निदेशालय की पत्रिका वार्षिकी का उपक्रम इसका आधार अथवा स्रोत बना हुआ है। यह हमारे अपने समय के साहित्य की बड़ी उपलब्धि है। यह उपलब्धि इस अर्थ में है कि इससे साहित्य का इतिहास, भूगोल एवं समाजशास्त्र भी सध जाता है।

साहित्य कालरथ पर सवार होकर समय की मर्यादानुसार अपने सृजनधर्मी स्वभाव की अभिव्यक्ति करता है। उसकी यह अभिव्यक्ति कविता में नहीं अपितु गद्य की अन्य विधाओं में ही अभिव्यक्त हो पाती है। रचनाकार इन्हीं विधाओं में अपने कठिन समय की अभिव्यक्ति करता है। भारतीय जनता की जातीय स्मृति का इतिहास इन्हीं विधाओं में साकार हो जाता है। रचनाकार के 'सम्यक् ज्ञान और 'प्रत्यक्ष' अनुभव का मंथन इन्हीं विधाओं में मुखरित हो पाता है और कभी–कभी यह अभिव्यक्ति इतनी सधी हुई होती है कि वह शास्त्र का रूप ले लेती है, जैसे आचार्य रामचंद्र शुक्ल और उनके चिंतामणि के निबंध। इसी परंपरा में आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, कुबेरनाथ राय एवं विद्यानिवास मिश्र आदि के निबंध भी सहेजे जा सकते हैं। साहित्य की यह विधागत डगर रचनाकार से तप की माँग करती है। बिना तपस्या के लिखा हुआ साहित्य अपने स्थायी महत्त्व का नहीं रह पाता। उसका ऐसा होना ही रचना का धर्म और स्वभाव बन जाता है और यही धर्म और स्वभाव उसका अक्स बनकर समाज के स्पंद का सृजन करता है। हमारे यहाँ इसी भाव को उजागर करने वाला स्पंदशास्त्र भी है।

2024 में प्रकाशित आद्याप्रसाद द्विवेदी की कृति 'गूलर के फूल' में हमारी परंपरा के पूर्वजों को बहुत आदर के साथ सहेजा गया है। मैं इसे भारतीय साहित्य का एक सांस्कृतिक पक्ष मानता हूँ। द्विवेदी जी ने अपने पूर्ववर्तियों को 'गूलर के फूल' शीर्षक से स्मरण किया है। इनकी लोकधर्मिता सभी निबंधों में अनुस्यूत है। यह लोक बहुत रिझाता है, खींचता है, पहचान देता है। इसमें अंतः पावित्र्य की भावानुभूति होती है। गुदगुदाता भी है, जागरण की शक्ति पैदा करता है, इसमें इतिहास का बीज है, संस्कृति की ज्योति है, नैरंतर्यता है, कालबोधकता है, कला–बोधकता और सच्चिदानंदात्मकता है। कुल मिलाकर लोक में सब कुछ समाया हुआ है। इसमें मुंशी नवजादिकलाल, डॉ. रामकमल राय, कर्मयोगी विवेकी राय, डॉ. कृष्णबिहारी मिश्र, भोजपुरी के कीट्स: जनकवि विसराम का वाणी–विधान किया गया है। इन संस्कृत पुरुषों के अतिरिक्त तेरह निबंध और हैं– 'गूलर के फूल', 'लोक संस्कृति में यक्षपूजा की परंपरा', 'भारतीयता के मूलस्तर', 'गंधर्व और गंधर्वविवाह', 'किन्नर', 'अरुणोदय का स्वर्णिम परिक्षेत्रः अरुणाचल', 'विज्ञापनों में नारी–शरीर के प्रदर्शन का औचित्य'; 'राजनीति का स्खलन और रामचरितमानस' 'लोकगीतों में रामकथा का प्रतिपक्ष', 'लोककला के समक्ष वर्तमान चुनौतियाँ', 'बटोहिया' 'कोहबर', 'बाजार और साहित्य'। इन सभी निबंधों में लोक का स्वर बनने की सामर्थ्य है। यह पुस्तक अभिधा प्रकाशन, मुजफ्फरपुर से प्रकाशित है।

मदनचंद भट्ट की पुस्तक (राजकमल प्रकाशन) 'हिमालय का इतिहास' एक महत्त्वपूर्ण पुस्तक है। स्वदेश दीपक की 'मैंने माण्डू नहीं देखा' शीर्षक से 'डायरी' प्रकाशित हुई है। वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली से 2024 में प्रकाशित यह पुस्तक डायरी विधा की थोड़े ही समय में चर्चित हो जाने वाली कृति है। इसे डायरी विधा की मानक कृति कहा जा सकता है।

हृदयनारायण दीक्षित की पुस्तक 'हिंदुत्व का मधु' (2024) वाणी प्रकाशन से प्रकाशित हुई है। पुस्तक के अंतर्गत दिए गए सभी आलेख 'हिंदुत्व' के विविध पक्षों से हमारा परिचय कराते हैं। मैं इसे पढ़ने के बाद इस निष्कर्ष पर पहुँच सका कि लेखक का व्यापक अनुभव हिंदुत्व की सार्थक व्याख्या करने में काम आ सका है।

संस्मरण विधा के अंतर्गत वाणी प्रकाशन से 2024 में चार पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं 'वे दिन वे लोग: एवं संस्मरण यात्रा' (राधा भट्ट); अमृतलाल नागर की 'बाबूजी–बेटाजी एंड कंपनी' (अचला नागर), 'दास की यादों में प्रसाद' (डॉ. कल्याण प्रसाद वर्मा) और 'समय शिला पर' (नमिता सिंह)। 'वे दिन वे लोग' में लेखिका ने समय–समय पर आए जीवनानुभवों को अत्यंत व्यापकता के साथ रोचक शैली में व्यक्त किया है। कृति में ऐसे अनेक चरित्र आए हैं जो नयी सोच एवं नयी राह की चेतना से युक्त हैं। अचला नागर अमृतलाल नागर की सुपुत्री हैं। उनकी यह कृति संस्मरण साहित्य का मॉडल

प्रदान करती है। एक लेखक का परिवार लेखक से जुड़कर कैसे अपना जीवन दर्शन तैयार करता है और पथ प्रदर्शन प्राप्त करता है, यह इस कृति की विशेषता है। दास की यादों में डॉ. कल्याण वर्मा ने मानवीय संवेदनाओं की ऐसी मिठास घोल दी है जो पाठक के आस्वाद को अंत तक बनाए रखती है। इस पुस्तक का कहन बहुत बेजोड़ है। नमिता सिंह ने 'समय की शिला' में जो कुछ बयां किया है, वह मानव जीवन का सच है। यह सच्चाई पाठक को स्पर्श किए बिना नहीं रह पाती। ऐसा लगता है कि लेखिका का अनुभव एक सभ्य समाज का अनुभव है।

वाणी प्रकाशन से 2024 में यात्रा साहित्य पर दो महत्त्वपूर्ण पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं— मेरी भारत यात्रा (एको एम. टैगोर, अनुवाद तोमोका मुशिका) और 'मुसाफिर हूँ यारों' (सुधी मिश्र)। 'मेरी भारत यात्रा' पुस्तक भारत दर्शन कराने की सामर्थ्य रखती है। इसमें भारतीय गौरव का अन्वाख्यान किया गया है। इसको पढ़ने के बाद लगता है कि इसे पुनः पढ़ा जाए। यही इस कृति की विशेषता है। 'मुसाफिर हूँ यारो' पुस्तक अलमस्त मुसाफिरी का जीता जागता उदाहरण है। इसमें मुसाफिर और मुसाफिरी असंपृक्त से लगते हैं। दोनों में अविभाज्य संबंध स्थापित करते हैं। इसी में जीवन है और जीवन में भी यही है। इसकी लेखन—शैली अनूठी एवं आकर्षक है।

मुझे अपने लेखन अनुसंधान के क्रम में आत्मकथा पर केंद्रित दो महत्त्वपूर्ण कृतियाँ उपलब्ध हो पाई हैं। ये दोनों 2024 में वाणी से ही प्रकाशित हुई हैं— दुख की शक्ति (चाङयावन, नरेश कौशिक), अकथ कहानी (प्रेमकुमार मणि)। दुख की शक्ति आत्मकथा हमें दुख के क्षणों में आनंद की अनुभूति कराती है। हमारे साथ यह अनुभव साझा करती है कि संकट के समय में भी हम अपने आपको कैसे बचाए रख सकते हैं। इतना ही नहीं, कैसे इससे हम निकल सकते हैं, यह भी कृति का कथ्य हमें बताता चलता है। इसमें बतरस का भी आनंद है।

हिंदी पत्र लेखन विधा अब भले ही अंत की ओर हो परंतु इसका लेखन कौशल अत्यंत स्फूर्त है। वाणी प्रकाशन से 2024 में प्रकाशित 'दिनकर के पत्र' एक अपूर्व कृति है। इसके लेखक हैं— कन्हैयालाल फूलफगर और अरविंद कुमार सिंह।

साक्षात्कार विधा के अंतर्गत राजकमल प्रकाशन से 2024 में प्रकाश चंद्र दुबे ने सुप्रसिद्ध व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई का साक्षात्कार 'किस्सा कुर्सी का' शीर्षक से संपादित किया। प्रकाशचंद्र दुबे हरिशंकर परसाई के भानजे हैं। ये जबलपुर में ही रहकर उनकी स्मृतियों को ताजा किए हुए हैं। इस साक्षात्कार में परसाई जी ने अनेक राजनेताओं की पोल खोलते हुए उनके द्वारा किए गए जनता के शोषण की विवेचना की है। बड़ी निर्भीकता और बेबाकी से उन्होंने जो लाल मिर्च का तड़का लगाया है, वह आज हमें बहुत कुछ कहने को विवश करता है। समाज में हमारी भागीदारी कहाँ पर, किस रूप में और कितनी होनी चाहिए, यह सब इस साक्षात्कार में उपलब्ध है।

जब कोई समय और कर्त्तव्य की सीमाएँ लाँघ जाता है, तब हरिशंकर परसाई जैसे लेखकों को अपनी व्यंग्य की धार को चोख (धारदार) करना पड़ता है। इस धार से कोई मरता नहीं, अपितु मरे हुए से भी बदतर होकर तिलमिलाता है। उसकी यही तिलमिलाहट व्यंग्यकार के रचनाकर्म को ऊँचाई और गहराई प्रदान करती है। काशीनाथ सिंह की संस्मरणात्मक कृति 'आहटें सुन रहा है यादों की' शीर्षक से राजकमल (2024) प्रकाशित हुई है। 'आहटें सुन रहा है यादों की' शीर्षक से प्रकाशित यह कृति शुभ–अशुभ; सकारात्मक–नकारात्मक और भदेस जैसे अनेक संस्मरणों का खजाना है। इसमें इतिहासबोध, व्यक्तित्वबोध और कालबोध एक साथ समाहित है। कृति की बोधात्मक प्रकृति स्वयं रचनाकार की प्रकृति और उसकी रचना–प्रक्रिया का बोध कराती है।

इसी प्रकाशन से 2024 में ही सतीश कुमार की कृति–'बोरसी भर आँच : अतीत का सैरबीन' संस्मरण साहित्य की सुंदर मिसाल है। इसमें लोक की अनुभूति है, गाँव है, माँ है, परिवार है और अपने लोग हैं जो समय–समय पर सुख–दुख में सहभागी बनते हैं। यही लोक का सच है और सीमा भी।

राजकमल प्रकाशन (2024) से प्रकाशित डायरी विधा की कृति है 'देश ही देशः क्रोएशिया प्रवास डायरी'। यह डायरी केवल व्यक्ति सापेक्ष न होकर व्यापक अनुभव सापेक्ष है। गरिमा श्रीवास्तव एक विदुषी एवं चिंतनशील लेखिका हैं। इस कृति में आए हुए अनेक आख्यान पाठकों के ज्ञान को विस्तार देने की सामर्थ्य रखते हैं। कहीं–कहीं व्याकरणिक च्युति कृतिबोध में बाधा जरूर पैदा करती है। यह उनका दोष नहीं है, अपितु इस पीढ़ी के लेखकों का सामूहिक दोष बन गया है।

'पत्र' विधा के अंतर्गत आने वाली दो कृतियाँ हमारा ध्यान खींचती हैं। ये कृतियाँ हैं– मेरे प्रिय (सैयद हैदर रजा और कृष्ण खन्ना, अनु. प्रभात रंजन, राजकमल प्रकाशन 2024) और गीजर्स सैयद हैदर रजा और अन्य कलाकार मित्रों के बीच पत्राचार/अनु. वर्तुल सिंह (राजकमल प्रकाशन, 2024)। इन दोनों कृतियों में समाज, परिवार और लोक का सच झाँकता है। इनमें प्रतिरोध भी है और मनुहार भी, औपचारिकता भी है अनौपचारिकता भी। यह कृति कई प्रकार के अनुभवों को साझा करती है।

आत्मकथा विधा के अंतर्गत शिवनाथ कृत 'वे भी दिन थे' (अनुवाद– निर्मल विनोद) राजकमल प्रकाशन, 2024 से प्रकाशित हुई है। इसमें लेखक ने अपनी आपबीती की ऐसी गाथा प्रस्तुत की है जिसे पढ़ने पर यह मनुष्य जीवन का अपना अनुभव लगता है। कृति की भाषा साफ–सुथरी और शैली प्रभावोत्पादक एवं प्रेरणास्पद है। आत्मकथा साहित्य में प्राप्त जीवनानुभव और सीखें आँखें खोलने वाली होती हैं। इन अर्थों में प्रस्तुत कृति अपनी विधा की उत्तम कृति कही जा सकती है।

'यात्रा वृत्तांत' के अंतर्गत प्रकाशित राजकमल प्रकाशन से प्रकाशित मात्सुओ

बाशो (अनुः सुरेश सलिल) की 'उत्तर की यात्राएँ' एक पूर्ण कृति है। इसमें लेखक के व्यापक अनुभव के दर्शन होते हैं। इसमें ऐसे वृत्तांत हैं जिन्हें पढ़कर भारत के अमिट वैभव का ज्ञान प्राप्त होता है। कृति की भाषा आकर्षक एवं आवर्जक है।

रेमाधव पब्लिकेशंस दिल्ली (2024) द्वारा रिपोर्ताज विधा की तीन महत्त्वपूर्ण कृतियाँ प्रकाशित हुई हैं– अविनाश कल्ला की कृति 'अमेरिका 2020', मनदीप पुनिया की 'किसान आंदोलनः ग्राउंड जीरो 2020–21', भाषा सिंह की 'शाहीन बागः लोकतंत्र की नयी करवट'।

'अमेरिका 2020' में अंतरराष्ट्रीय स्थितियों और उसके वैश्विक प्रभाव के क्षेत्रों का समुद्घाटन किया गया है। आज पूरा विश्व एक ग्लोबल विलेज हो गया है। इन तमाम वैश्विक संदर्भों का लेखा–जोखा हमें इस पुस्तक में देखने को मिलता है और यह भी ज्ञात होता है कि आज हम आर्थिक दबावों के आगे झुकते हुए कैसे अपने मानवीय मूल्यों की अवहेलना करते जा रहे हैं। यह विश्व मानवता के संदर्भ में एक घातक एवं विनाशकारी प्रवाह है। यदि हम इस प्रवृत्ति को रोक नहीं पाए तो पूरी मानवता पर प्रश्न–चिह्न लगते देर नहीं लगेगी।

'किसान आंदोलन' में किसानों की भयावह क्रांतिकारी स्थिति और प्रजातंत्र से टकराहट की घटिया सोच का विवेचन मिलता है। यह आंदोलन देशविरोधी ताकतों की राह पर कैसे फला–फूला, इसका भी सटीक विवेचन किया गया है। इस आँधी में राष्ट्रविरोधी ताकतों ने गरम तवे पर रोटी सेंकने का जो काम किया है, वह भी हमें देखने को मिलता है। इसमें मूल्यों की लड़ाई कम, राजनीतिक लाभ की लड़ाई अधिक परिलक्षित होती है। वर्तमान सत्ता से टकराहट का एक असफल और पानी पर लाठी चलाने वाला आंदोलन कहा जा सकता है। यह कृति पक्षधरता से बचकर चलती है, यही इसकी सबसे बड़ी सफलता और विशेषता कही जा सकती है।

'शाहीन बागः लोकतंत्र की नयी करवट' एक षड्यंत्रकारी सोच को उजागर करने वाली किताब है। इसे साहित्य का राजनैतिक दस्तावेज कहें तो अत्युक्ति नहीं होगी। जब राजनीतिक पार्टियाँ सत्ता से सीधे टकरा नहीं पातीं, तब उनके द्वारा ऐसे जन–आंदोलन खड़े कर दिए जाते हैं। इन आंदोलनों से राजनैतिक पार्टियों को उतना लाभ नहीं मिल पाता जितना कि वे सोचकर चलती हैं। हाँ, इसमें उनकी हानि अधिक होती है जिनका इनसे कुछ लेना–देना होता ही नहीं।

वाणी प्रकाशन, दिल्ली (2024) से पाँच पुस्तकें संस्मरण विधा के अंतर्गत प्रकाशित हुई हैं– 'रोशनी के फूल' (निदा फाजली); 'यहाँ कौन है तेरा' (भगवानदास मोरवाल); 'वे नायाब औरतें' (मृदुला गर्ग); 'मीना मेरे आगे' (सत्य व्यास); 'पगडंडियाँ' (राहुल 'नील')।

'रोशनी के फूल' में लेखक ने प्रेरक चरित्रों का संस्मरण लिखकर संस्मरण विधा को एक नयी गति प्रदान की है। मनुष्य की भटकन, चरित्रों का बेतरतीब रिश्ता और

मनुष्य जीवन के घातों–प्रतिघातों की चर्चा इसमें की गई है। 'यहाँ कौन है तेरा' में लेखक ने जीवन में आने वाले कटु अनुभवों का बड़ी बेबाकी से विवेचन किया है। इसमें आशा–निराशा के घोर गहन क्षणों की विवेचना और उन अवसादों से बचकर निकलने वाले अनुभवों को साझा किया गया है। लेखक के ये अनुभव एवं रिश्ते समाज के अपने रिश्ते जान पड़ते हैं। इससे लेखक की सिद्धहस्तता दिखाई पड़ती है। 'वे नायाब औरतें' में मृदुला गर्ग ने स्त्रीजीवन के कटु सत्य का विवेचन किया है। इसे स्त्री विमर्श का प्रामाणिक दस्तावेज माना जा सकता है। जीवन की सच्चाई कभी–कभी परेशानियों का कारण कैसे बन जाती है, इस मनोभाव को बहुत स्पष्ट ढंग से विवेचित किया गया है। 'गीता मेरे आगे' में लेखक ने रिश्तों की सच्चाई का विवेचन किया है। रिश्तों को बचाए रखने में मनुष्य को कितनी उलझनों का सामना करना पड़ सकता है, इसका सपाट शैली में विश्लेषण किया है। 'पगडंडियाँ' में जीवन में आने वाले मोड़ और उनसे मनुष्य को अपने जीवन में क्या सीख मिलती है, का विवेचन किया गया है।

वाणी से जीवनी साहित्य पर एक पुस्तक (2024) प्रकाशित हुई है– अंबेडकरः एक जीवन (शशि थरूर)। इसमें अंबेडकर के जीवन दर्शन पर प्रकाश डाला गया है। वैसे तो अंबेडकर पर इधर अनेक कृतियाँ प्रकाशित हुई हैं परंतु इस कृति में अंबेडकर के जीवन के यथार्थ पर प्रकाश डाला गया है। अंबेडकर को लेकर अनेक मिथक खड़े किए गए हैं। प्रस्तुत कृति में इनका सही विवेचन किया गया है।

स्त्री विमर्श पर वाणी से ही 2024 में द सेकेण्ड सेक्स (सीमेन द बोवार, अनु. मोनिका सिंह) प्रकाशित हुई है।

वाणी से 2024 में निबंध विधा के अंतर्गत निम्नलिखित कृतियाँ प्रकाशित हुई हैं– 'संचारिणी' (विद्यानिवास मिश्र), लेखक की साहित्यिक 'यात्रा' (नंद किशोर आचार्य); 'लेखक का मन' (भगवानदास मोरवाल) 'गिर रहा है आग पानी' (विद्यानिवास मिश्र) 'आम आदमी की लालटेन' (विश्वनाथ प्रसाद)।

प्रभात प्रकाशन से 2024 में कुछ महत्त्वपूर्ण जीवनियाँ प्रकाशित हुई हैं– 'ज्योति पुंज' (नरेंद्र मोदी); 'सेतुबंध' (राजाभाई नेने / नरेंद्र मोदी); 'विश्वशांति गुरु दलाई लामा' (मयंक छाया); 'योगगुरु स्वामी रामदेव' (अशोक राज), 'हमारे डॉ. हेडगेवार' (डॉ. श्याम बहादुर वर्मा), 'हमारे गुरुजी' (संदीप देव), 'हमारे बालासाहब देवरस' (सं. राय बहादुराय / राजीव गुप्ता); 'हमारे अशोक सिंहल जी' (राजीव गुप्ता); 'हमारे रज्जू भैया' (देवेंद्र स्वरूप / ब्रजकिशोर शर्मा); 'हमारे सुदर्शन जी' (सं. बल्देव भाई शर्मा); शहीद उधम सिंह' (पूनम यादव); 'अमर शहीद खुदीराम बोस' (स्वतंत्र कुमार); 'नूतन सदी के नवनीत श्री गुरुजी' (डॉ. धनंजय गिरि); 'शब्दपुरुष माणिक चंद्र वाजपेयी' (सच्चिदानंद जोशी एवं संजय द्विवेदी), 'विनायक दामोदर' (राजेन्द्र पटेरिया), 'नेताजी सुभाषः चित्रमय जीवनी' (रघुवेंद्र तंवर); 'जननायक अटल जीः संपूर्ण जीवन' (किंशुक

नाग), 'मैं हूँ मलाला' (अनीता गौड़); 'मैरीकॉम की जीवनगाथा' (अनीता गौड़); 'रमण महर्षि' (अनीता गौड़); 'लुई ब्रेल' (प्रत्यूष कुमार); 'महामानव मृत्युंजय' (रवींद्र किशोर सिन्हा); 'नारदमुनि की आत्मकथा' (प्रीति श्रीवास्तव); 'विरसा मुंडा' (गोपीकृष्ण कँवर); 'ठक्कर बापा' (श्वेता परमार–निक्की), 'दिशोम गुरु शिबू सोरेन' (अनुज कुमार सिन्हा) इत्यादि।

अक्तूबर–दिसंबर (2024) में कथेतर साहित्य की कुछ और महत्त्वपूर्ण कृतियाँ प्रकाशित हुई हैं। इन्हें बेस्ट सेलर की श्रेणी में रखा गया है। ये पुस्तकें हैं– 'प्रोफेसर की डायरी'– लक्ष्मण यादव (प्रकाशक अनबाउंड स्क्रिप्ट), 'ओमेंद्र रत्नू' (प्रभात प्रकान)। 'प्रोफेसर की डायरी' टिप्पणियों की शैली में अपने समय का लेखा–जोखा प्रस्तुत करती है। इसमें समाज और राजनीति की बड़ी परिघटना है तो उनके बीच आकार लेते एक प्रबुद्ध युवक की कहानी की है। 'महाराणाः सहस्र वर्षों का धर्म युद्ध' में मेवाड़ के योद्धाओं का विवेचन है। सहस्र वर्ष तक अरावली की पहाड़ियों में यायावरी जीवन जीने वाले मेवाड़ के वीर योद्धाओं के कारण ही भारत में आज केसरिया लहराता है। यह पुस्तक भ्रांतियों को दूर करने के साथ मान्यताओं को भी स्थापित करती है।

'भारतवर्ष के आक्रांताओं की कलंक कथाएँ'– परशुराम गुप्त (प्रभात प्रकाशन) भारतवर्ष की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और धार्मिक स्थलों पर प्रहार करने वाले विदेशी आक्रांताओं के क्रूर कृत्यों को संवेदना के साथ बयां करती है।

युवावस्था में लोग सुनहरे भविष्य का स्वप्न बुनते हैं पर भगत सिंह ने स्वतंत्रता का स्वप्न देखा और उसके लिए बलिदान हो गए। 'अमर शहीद भगत सिंह'– महेश शर्मा (प्रभात प्रकाशन) में उनके प्रेरणादायक जीवन को उकेरा गया है।

'जनसंदेश 2024 : 'हिंदुत्त्व की हैट्रिक'– हर्ष कुमार (प्रभात प्रकाशन) में लोकसभा चुनावः 2024 के नतीजे का विश्लेषण करते हुए यह व्याख्या की गई कि देश की जनता ने कैसे हिंदुत्व की डोर को कसकर थाम रखा है।

'रूह'– मानव कौल (प्रकाशकः हिंद युग्म) में कश्मीर के पथरीले रास्ते पर चलते हुए जीवन के नवांकुर देखने के बाद बचपन की यादों को बहुत ही मर्मस्पर्शी ढंग से सहेजते हुए आज और कल की तुलना की गई है।

'कतरनें'– मानव कौल (हिंद, युग्म) पढ़कर पता चलता है कि क्या आप सोचते हैं कि किताबें भी बातें करती हैं, लेकिन यह हकीकत है। किताब पढ़ते हुए जब कहानी के संसार में प्रवेश होता है तो कहानी के एक सिरे पर आप होते हैं और दूसरा सिरा किताब ही होती है।

'सुपरकॉप अजीत डोभाल'– महेश दत्त शर्मा (प्रभात प्रकाशन) राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल ने कठिन ऑपरेशन का सफल संचालन किया है। राष्ट्र के सम्मान को सर्वोपरि मानने वाले डोभाल की यह प्रेरक जीवनी उनके राष्ट्रजीवन की झलक है।

'पूर्णाहुति'– सर्वेश तिवारी (प्रभात प्रकाशन) में मुगलों के आक्रमण और चित्तौड़ के योद्धाओं की वीरता और बलिदान को जीवंत रूप में बहुत अच्छे से चित्रित किया गया है। इसके साथ ही प्रेम, भक्ति और शौर्य की गाथा का बखूबी बखान किया गया है।

'डायनमिक–डीएम'– हीरालाल, कुमुदवर्मा (प्रभात प्रकाशन) 'सीक्रेट एजेंट्स'– हर्षा शर्मा (प्रभात प्रकाशन), 'जादूनामा– जावेद अख्तर'– अरविंद मंडलोई (मंजुल पब्लिशिंग हाउस), 'जितनी मिट्टी उतनी सोना'– अशोक पांडेय (हिंद युग्म प्रकाशन) 'विभाजन की विभीषिका'– मनोहर पुरी (प्रभात प्रकाशन), 'भारत के वारेन बफेः राकेश झुनझुनवाला'– महेश दत्त शर्मा (प्रभात प्रकाशन), 'उसने गाँधी को क्यों मारा'– अशोक कुमार पांडेय (राजकमल प्रकाशन)।

यशस्वी भारत– मोहन भागवत, (प्रभात प्रकाशन), 'यार बटोही', 'चौदह लेखकों का समूह' (हिंद युग्म) 'मैं भगत सिंह बोल रहा हूँ'– अनिल कुमार (प्रभात प्रकाशन) अक्टूबर–दिसंबर 2024 हिंदी में अनूदित कुछ चर्चित कथेतर साहित्य की पुस्तकें प्रकाशित हुईं हैं।

'द हिडन हिंदु'– लेखक एवं अनुवादक अक्षत गुप्ता (प्रभात प्रकाशन), सनातन भारतीय मान्यताओं के विज्ञानसम्मत वर्णन को पढ़ते हुए संस्कृति और अध्यात्म से साक्षात्कार होता है। इस पुस्तक में लेखक ने हिंदू धर्म के गहन दार्शनिक पहलुओं को स्पर्श किया है।

'द नागा वारियर्स'– बैटल ऑफ गोकुल खंड लेखक एवं अनुवादक अक्षत गुप्ता (प्रभात प्रकाशन) मंजुल पब्लिशिंग हाउस। धर्म की रक्षा के लिए नागा योद्धाओं के संघर्ष को चित्रित करती यह पुस्तक साहस, बलिदान और विजय की अविस्मरणीय कहानियों के माध्यम से पाठकों को आकर्षित करती है।

द हिडन हिंदू– लेखक एवं अनुवादक अक्षत गुप्ता (प्रकाशक प्रभात प्रकाशन)। कालातीत हिंदू पौराणिक कथाओं की यह तीसरी कड़ी सभी आयुवर्ग के पाठकों के लिए पठनीय है। इस पुस्तक में प्रासंगिक पात्रों के माध्यम से पहचान और उद्देश्य को खोजने का प्रयास है।

रतन टाटाः एक प्रकाश स्तंभ– शांतनु नायडू, अनुवादः अखिलेश अवस्थी (मंजुल पब्लिशिंग हाउस)। भारतीय उद्योग जगत के शीर्ष व्यक्तित्व रतन टाटा के जीवन के अनछुए पहलुओं को बताने के साथ–साथ यह पुस्तक एक 27 वर्षीय युवा और रतन टाटा की मित्रता की असाधारण कहानी कहती है।

ए हिट मैन– लेखकः एस. हुसैन जैदी, अनु. रचना भोला 'यामिनी', (प्रकाशकः साइमन एंड शूस्टर इंक)। सच्ची घटनाओं पर आधारित यह पुस्तक आखिर तक पाठकों को रोमांच में बनाए रखती है। दोहरे हत्याकांड के आरोप में घिरने के बाद

एजेंट लीमा की कहानी रहस्य और संदेह के कोहरे में लिपटती जाती है।

महागाथाः पुराणों से 100 कहानियाँ– लेखक सत्यार्थ नायक, अनु. आशुतोष गर्ग (हार्पर कोलिस पब्लिशर्स)। पौराणिक साहित्य में रुचि रखने वालों के लिए यह पुस्तक अत्यंत उपयोगी सिद्ध होगी। इसमें ब्रह्मा की सृष्टि से लेकर विष्णु भगवान के सुदर्शन तक अनेक कहानियों को समेटा गया है।

'मैडम प्रेसिडेंटः द्रौपदी मुर्मू': संदीप साहू, अनु. अनीता पी. सिन्हा (प्रकाशक पेंगुइन रैंडम हाउस)। यह पुस्तक भारत की 15वीं राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू की पहली और प्रामाणिक जीवनी है। पुस्तक उनके व्यक्तिगत और राजनीतिक जीवन के संघर्षों का विस्तार से वर्णन करती है।

'आई डोंट लव यू एनिमोर'– लेखक ऋत्विक सिंह, अनु. ऋत्विक सिंह (प्रभात प्रकाशन)। यदि प्रेम के बदलें में किसी को निराशा मिली हो, तो यह पुस्तक इस संदर्भ में पठनीय होगी। भावनात्मक यात्रा को बताती यह पुस्तक लेखक की डायरी की तरह महसूस होगी।

इंडिया अर्थात् भारत– लेखक : जे. साईं दीपक, अनुवादः पंकज सक्सेना (प्रकाशक ब्लूमसबरी पब्लिशिंग)। पुस्तक यूरोपीय औपनिवेशिक मानसिकता की पड़ताल करती है, साथ ही भारतीय संविधान की उत्पत्ति का रेखांकन भी करती है। इसमें 'सहिष्णुता', 'धर्मनिरपेक्षता' और 'मानवतावाद' को खोजने का प्रयास है।

सीतायण– लेखक चित्रा बनर्जी दिवाकरुणी, अनु. आशुतोष गर्ग (मंजुल पब्लिशिंग हाउस)। अपेक्षाओं की जहरीली बेल में प्रेम कितना उलझा है, यह पुस्तक इसका सही उत्तर देती है। यह पहचान बहुत ही प्रासंगिक है। माता सीता की जगह स्वयं को रखकर आप प्रेम और विश्वास को दूसरी दृष्टि से भी समझ सकते हैं।

जिंदगी एक दिन बदल जाएगी– लेखकः सारण्या उमाकाथन, अनु. विद्या लटवाए (प्रकाश बुक्स इंडिया)। यह पुस्तक पाठक में एक विश्वास पैदा करती है। उसे रुकने के बजाय आगे बढ़ते रहने की प्रेरणा देती है।

कितने गाजी आए कितने गाजी गए– केजेएस टाइनी, दिल्ली, अनु. नितिन माथुर, आनंदराव (प्रभात प्रकाशन)। इस पुस्तक में जीवन के सत्य का इतिहास मिलता है और आगे बढ़ने की प्रेरणा भी।

'टाटा स्टोरीज'– लेखकः हरीश भट्ट, अनु. संजीव मिश्र (प्रकाशक पेंगुइन रैंडम हाउस)। ये 40 कहानियाँ किसी भी मनुष्य के लिए सदैव प्रेरक रहेंगी। इनमें जीवन के गहन अनुभव हैं और व्यापकता भी।

'संसारः देवताओं की घाटी में प्रवेश'– सक्षम गर्ग, अनु. आशुतोष गर्ग प्रकाशक (मंजुल पब्लिशिंग हाउस)। इसमें ईश्वरी भाव की अनुभूति और जीवन सत्य और उसके प्रभाव, अभाव और स्वभाव की आत्मकथा व्यक्त हुई है।

'दोगलापनः जिंदगी और स्टार्टअप्स का खरा सच'– लेखकः अश्नीर ग्रोवर, अनु. मंजीर सकुर (प्रकाशक पेंगुइन रैंडम हाउस)। यह पुस्तक भाँति–भाँति के लोगों की चाल–ढाल की कहानी, प्रवृत्ति और चरित्र को व्यक्त करती है।

'इश्क बाकी'– लेखक, पंकज दुबे (प्रकाशकः पैंगुइन रैंडम हाउस)। प्रेम की दास्तां कहती कुछ अलग प्रकार की कृति है।

'द हिडन हिंदू–2'– लेखक एवं अनुवादक अक्षत गुप्ता, (प्रभात प्रकाशन)। यह पौराणिक युग के सत्य एवं अनुभवों का साझा करने वाली एक महत्त्वपूर्ण कृति है।

'इंडियाज मोस्ट फीयरलेस–3'– लेखक शिव अरूर, राहुल सिंह, अनु. संदीप जोशी (प्रकाशक पैंगुइन रैंडम हाउस)। भारत की अस्मिता और उसके प्रभाव की गाथा पठनीय है।

विश्वबंधु भारत, लेखक एस. जयशंकर, अनु. सुजाता शिवेन (प्रका. रूपा पब्लिकेशन)। यह एक सधी हुई भारत की रीतिसंबंधी पुस्तक है। भारत को समझने के लिए इसे पढ़ना जरूरी मालूम होता है।

प्रो. अमरनाथ शर्मा (कलकत्ता) ने सेवानिवृत्ति के बाद कई महत्त्वपूर्ण कार्य किए हैं। मेरे इस विषय से संबंधित उनका एक ऐतिहासिक ग्रंथ दो खंडों में 'आजाद भारत के असली सितारे' (सर्वभाषा ट्रस्ट प्रकाशन) प्रकाशित हुआ है। इन दोनों पुस्तकों में उन्होंने 59 हस्तियों पर प्रकाश डाला है। भाग 1 में अन्ना हजारे से लेकर नानाजी देशमुख तक को शामिल किया गया है। अन्ना हजारे और नानाजी देशमुख की वैचारिक भूमिका पर तटस्थ दृष्टि से यथातथ्य विचार किया गया है। इसी खंड में जवाहरलाल नेहरू, जयप्रकाश नारायण, ईएमएस नंबूदरीपाद, ज्योति बसु, इंदिरा गाँधी और कांसीराम तक शामिल हैं। भाग–2 में साईंनाथ से लेकर सोनी सोरी तक पर लिखा गया है। इस भाग में अंबेडकर; पेरियार ई.वी. स्वामी; लोहिया; राजेंद्रबाबू, राहुल सांकृत्यायन, लक्ष्मी सहगल के साथ स्वामी रामदेव भी हैं। कुल मिलाकर यह अपूर्व प्रयास कहा जा सकता है। इसमें लेखक की सिद्धहस्तता स्पष्ट दिखाई पड़ती है। आखिर साहित्य है तो अनुभव व्यापार ही। जिसका यह अनुभव जितना व्यापक होगा, उसकी रचना भी उतनी ही विराट होगी।

कुल मिलाकर हिंदी की अन्य विधाओं का 2024 का सृजन संसार व्यापक रहा है। इस आलेख में जिन कृतियों का उल्लेख किया गया है, केवल उतना ही प्रकाशन हुआ है, यह नहीं कहा जा सकता। मैंने अनेक प्रकाशकों, लेखकों, पत्र–पत्रिकाओं और अन्य संभावित माध्यमों से इसे तैयार किया है। वास्तव में यह गहन सर्वेक्षण एवं शोध का कार्य है। अंततः कहना चाहूँगा, इन विधाओं के लेखन एवं प्रकाशन की परंपरा यथेष्ट समृद्ध है।

❑❑❑

हिंदी नाटक और रंगमंच

23

डॉ. अरुणाभ सौरभ
सहायक आचार्य, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
(एनसीईआरटी), श्यामला हिल्स, भोपाल।

वस्तुतः नाटक साहित्य की वह विधा है जिसकी सफलता का परीक्षण रंगमंच पर होता है। चूँकि रंगमंच युग विशेष की जनरुचि और तत्कालीन आर्थिक व्यवस्था पर निर्भर होता है इसलिए समय के साथ नाटक के स्वरूप में भी परिवर्तन होता है।

'काव्येषु नाटकं रम्यम्– संस्कृत का यह कथन नाटक पर बिल्कुल सटीक बैठता है।

संस्कृति नाट्यपरंपरा में भी नाटक काव्य है और एक विशेष प्रकार का काव्य है–दृश्यकाव्य। 'काव्येषु नाटकं रम्यम्' कहकर उसकी विशिष्टता ही रेखांकित की गई है। लेखन से लेकर प्रस्तुतीकरण तक नाटक में कई कलाएँ संश्लिष्ट होती हैं, तब कहीं वह अखंड सत्य और काव्यात्मक सौंदर्य की विलक्षण सृष्टि कर पाता है। रंगमंच पर भी एक काव्य की सृष्टि होती है विभिन्न माध्यमों से, कलाओं से; जिससे रंगमंच एक कार्य का, कृति का रूप लेता है। आस्वादन और संप्रेषण दोनों साथ–साथ चलते हैं। अनेक प्रकार के भावों–अवस्थाओं से युक्त, रस भाव, क्रियाओं के अभिनय, कर्म द्वारा संसार को सुख–शांति देने वाला यह नाटक इसीलिए हमारे यहाँ विलक्षण कृति माना गया है।

आचार्य भरत ने नाट्यशास्त्र के प्रथम अध्याय में नाटक को तीनों लोकों के विशाल भावों का अनुकीर्तन कहा है तथा इसे सार्ववर्णिक पंचम वेद बतलाया है। भरत के अनुसार ऐसा कोई ज्ञान, शिल्प, विद्या, योग एवं कर्म नहीं है जो नाटक में दिखाई न पड़े–

न तज्ज्ञानं न तच्छिल्पं न सा विद्या न सा कला।
न सा योगो न तत्कर्म नाट्येऽस्मिन् यन्न दृष्यते।।

नाटक के माध्यम से हम कला के समस्त स्वरूपों में प्रविष्ट होते हैं। नाटक जहाँ कला का एक श्रेष्ठ माध्यम है, एक समेकित माध्यम है, वहीं नाटक में प्रकाश व्यवस्था, ध्वनि व्यवस्था और वैज्ञानिक उपकरणों का उपयोग होता है। नाटक के माध्यम से

एक शिक्षार्थी का सर्वांगीण विकास होता है इसीलिए शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में नाटक बहुत उपयोगी और सार्थक सिद्ध हो सकता है। ज्ञान के समस्त अनुशासनों को नाटक के माध्यम से हम सुगमतापूर्वक पढ़ा सकते हैं। इसकी भूमिका तब और महत्त्वपूर्ण हो जाती है जब आधुनिक तकनीक से जोड़कर कक्षा में सर्वसुलभ बनाने के साथ ही विद्यार्थियों की रुचि को विकसित किया जाए। नाटक को ध्यान में रखकर ही साहित्य शास्त्र के सभी सिद्धांतों की निर्मिति हुई है। नाटकीय कथानक ऐसा होना चाहिए जिसके बहिरंग पक्ष और अंतरंग पक्ष में आकर्षक तत्व सम्मिलित हो। किसी भी नाटक में देश, काल, वातावरण बहिरंग पक्ष है और पात्रों की परिकल्पना अंतरंग पक्ष है। जिस समय कथानक का प्रयोग होता है, उस समय का युगीन परिवेश, रहन–सहन, भाषा और संवादों का जीता–जागता वर्णन होना चाहिए।

नाटक को आज शिक्षण–अधिगम की आधुनिकतम प्रणाली से जोड़ा जाना उचित है। यही कारण है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में नाटक एवं रंगमंच के माध्यम से शिक्षा देने की बात की गई है। साहित्यिक विधाओं में नाटक एक महत्त्वपूर्ण विधा है। इसके माध्यम से न सिर्फ साहित्यिक अभिक्षमता का विकास होता है बल्कि इस एक विधा से अन्यान्य विधाओं जैसे कविता, कहानी का कल्पना–लोक भी जुड़ता है। नाटक की विषय–वस्तु जहाँ एक तरफ कहानी बुनने की कला में पारंगत करती है, वहीं संवादों की अदायगी में एक लय का समावेश तथा भावातिरेक में संवादों का बोलना उसे कविता की पद्यात्मकता के समीप ले जाता है।

भारत में रंगकर्म और रंगमंच की विशाल और समृद्ध परंपरा है। देश के हर गाँव, कस्बे से लेकर शहरी क्षेत्र तक नाटक लगातार मंचित तथा प्रदर्शित होते रहे हैं। आज तकनीकी विकास ने नाटकों की दिशा बदल दी है। अब लाइट–साउंड इफेक्ट से नाटकों का प्रदर्शन थ्रीडी पिक्चर्स की तरह देखने को मिलता है। एलईडी लाइट, पार, विम और हेज लाइट की चमक से रंग, संगीत और कोरस गायन, कोरियोग्राफी से नाटक को भरा जा रहा है। तकनीकी विकास और कौशल से रंगमंचीय तकनीक भले ही विकसित हुई हो मगर अभिनेयता की दृष्टि से इन तकनीकों के व्यावहारिक लाभ की समीक्षा की जानी चाहिए। नाटक खेले जा रहे हैं, उसपर लिखने वालों की भारी कमी है। इस कमी की भरपाई राजेश कुमार और अमितेश कुमार कर रहे हैं। अमितेश लगातार नाटकों पर दत्तचित्त होकर लिख रहे हैं। अमितेश कुमार 'द वायर' में लिखते हैं– "सिनेमा और किताब की तरह रंगकर्म के दर्शक/समीक्षक को यह सुविधा नहीं है कि वह अपने एकांत में और कहीं भी रहकर इनका दर्शक और पाठक बनाता रहे। रंगमंच स्थानीय परिघटना है और उसे स्थानीय परिदृश्य में रहकर ही देखा और समझा जा सकता है इसलिए रंगमंच के बारे में और वर्षांत पर समीक्षा करते हुए किसी की राय अगर होगी, तो वह किसी एक शहर के बारे में हो सकती है।

तथापि पूरे वर्ष में हिंदी नाटकों की प्रस्तुतियों पर लिखना अत्यंत कठिन है।... हिंदी रंगमंच के क्षेत्र में सबसे अधिक संकट है रंगमंच पर लेखन का। इस विषय पर लिखने वाले लोग उँगलियों पर गिने जा सकते हैं। रंगमंच–लेखन के क्षेत्र में हिंदी का युवा लेखन कहाँ है? हिंदी पढ़ने–लिखने वाला समाज हर शहर में एक नौजवान भी नहीं तैयार कर पा रहा है जो अपने शहर के रंगमंच से राब्ता रख कर उसका विश्लेषण या परिचय हिंदी के पाठक समुदाय को उपलब्ध कराता रहे।''

आधुनिक हिंदी नाटक एवं रंगमंच पर कोई बात राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय पर बातचीत किए बगैर असंभव है। राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय वर्षभर में अपने पूर्व निर्धारित कार्यक्रमों में से कई महत्त्वपूर्ण नाटकों की प्रस्तुति, नाटकों का प्रकाशन, रंगमंच विषय पर पाठ्य पुस्तकें मुद्रित करना, पारंपरिक शास्त्रीय, लोक रंगमंचीय शैली का विकास तथा नाटकों के संरक्षण–संवर्धन से संबंधित कार्य करता आ रहा है। 'भारत रंग महोत्सव' भारत में रंगमच का सबसे बड़ा उत्सव है जिसमें सर्वाधिक नाटकों की प्रस्तुतियाँ अभिनव रंग शैली को आधार बनाकर की जाती हैं। राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय का प्रकाशन विभाग भी पूर्व की भाँति सक्रिय है। अपने निम्नलिखित दायित्व के साथः–

- रंगमंच विषय पर पाठ्य पुस्तकें मुद्रित करना
- रंगमंच विषय पर महत्त्वपूर्ण पुस्तकों के अंग्रेजी से हिंदी अनुवाद की व्यवस्था करना
- रंगमंच विषय पर अन्य महत्त्वपूर्ण पुस्तकों को प्रकाशित करना।

'थियेटर इन इंडिया' और 'रंग–प्रसंग' नाम से राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय अंग्रेजी और हिंदी भाषा में क्रमशः जर्नल का प्रकाशन भी करता है। हालाँकि 'रंग–प्रसंग' का प्रकाशन पिछले कुछ वर्षों में अनियमित रहा है। इन दिनों एनएसडी के प्रकाशन से कुछ अच्छी किताबें जरूर छपी हैं जिनमें भरतमुनि के नाट्य शास्त्र का राधावल्लभ त्रिपाठी द्वारा किया गया महत्त्वपूर्ण अनुवाद और अभिनय की भारतीय पद्धति (प्रसन्ना) का रवींद्र त्रिपाठी द्वारा किया गया अनुवाद प्रमुख हैं।

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के रंगमंडल ने ऐसे विभिन्न नाट्यकारों और निर्देशकों के कार्यों को प्रस्तुत किया है जो इसके साथ समय–समय पर जुड़े रहे हैं। रंगमंडल का उद्देश्य विद्यालय के स्नातकों को उनके शैक्षिक हित के लिए और साथ ही नाटकों को पेशेवर रूप में प्रस्तुत करने के लिए मंच उपलब्ध कराना था। समय के साथ–साथ समकालीन और आधुनिक नाटकों पर कार्य करने और नियमित रूप से प्रायोगिक कार्यों को शामिल करने वाला यह रंगमंडल राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय का एक प्रमुख संस्थान बन गया। प्रस्तुतियों के अतिरिक्त यह गर्मियों में अपना स्वयं का उत्सव भी आयोजित करता है जिसमें नई प्रस्तुतियों को शामिल कर पूर्वमंचित प्रस्तुतियों के साथ मंचित किया जाता है। 'संस्कार रंग टोली' (थियेटर इन एजुकेशन कंपनी) अपनी

स्थापना 1989 से लेकर यह देश में रंगमंच शिक्षा का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण स्रोत है। 'संस्कार रंग टोली' में अभिनेता–शिक्षक बच्चों के साथ और बच्चों के लिए प्रस्तुतियाँ बनाते हैं। टाई कंपनी का प्रमुख फोकस सर्जनात्मक पाठ्यक्रम पर आधारित और विद्यालय में प्रतिभागिता करने वाले नाटकों पर होता है जो कि विशेषकर विभिन्न आयु वर्ग के बच्चों के लिए तैयार किए जाते हैं। नाटकों का प्रमुख उद्देश्य एक ऐसा माहौल तैयार करना होता है जिसमें कि बच्चे प्रश्न पूछें, निर्णय लें और अपनी जागरूकता के मुताबिक बृहद् सामाजिक परिप्रेक्ष्य में अपनी पसंद–नापसंद बता सकें। 'भारत रंग महोत्सव' आज रंगमंच को पूर्णतः समर्पित एशिया का सबसे बड़ा रंगमंच उत्सव माना जाता है। राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय प्रस्तुतियों/प्रदर्शनों के मंचन होने के साथ–साथ प्रदर्शनियाँ, पुरस्कार वितरण समारोह, निर्देशकों और कलाकारों के साथ आम जनता व अन्य पेशेवर रंगकर्मियों की अंतरंग बातचीत, उल्लेखनीय प्रस्तुतियों को दर्शाती छायाचित्र प्रदर्शनियाँ, खुला मंच और बैठकें और दूसरे शहर में भारंगम का संस्करण जिसमें भारंगम की कुछ प्रस्तुतियाँ मंचित की जाती हैं, भी शामिल रही हैं। इसके अतिरिक्त जश्ने बचपन, थियेटर ओलिंपियाड, बाल–संगम आदि राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के प्रमुख आयोजन हैं जो इन दिनों भी सक्रिय हैं।

साल 2024 में 'भारत रंग महोत्सव' (BRM) 1 फरवरी से 21 फरवरी के बीच आयोजित किया गया था। यह महोत्सव 15 शहरों में आयोजित किया गया था। इस महोत्सव में 150 से ज्यादा नाटक देखे गए। इसके अलावा कार्यशालाएँ, चर्चाएँ और मास्टर कक्षाएँ भी आयोजित की गई थीं। इस महोत्सव की थीम 'वसुधैव कुटुंबकम–वंदे भारंगम' रही। वहीं, साल 2024 में विश्व रंगमंच दिवस 27 मार्च को मनाया गया था। इस दिन को रंगमंच के महत्त्व को उजागर करने के लिए मनाया जाता है। इस साल विश्व रंगमंच दिवस की थीम 'रंगमंच और शांति की संस्कृति' थी। राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के कार्यक्रम 'श्रुति' की निरंतरता बनी रही। 'श्रुति' के तहत् संपन्न हुए मुख्य आयोजन में 'रंग प्रसंग' के 58वें अंक का लोकार्पण और उसपर चर्चा, 14 फरवरी 2025 को सुष्मिता मुखर्जी से आसिफ अली की बातचीत, 13 फरवरी 2025 को प्रदीप सरदाना के द्वारा राज कपूर स्मृति व्याख्यान दिया गया। 11 फरवरी 2025 को अतुल तिवारी के साथ अजित राय की बातचीत, 10 फरवरी 2025 अनिल गोयल के साथ प्रताप सहगल की बातचीत, 04 फरवरी 2025 को आलोक शुक्ला लिखित नाटक अजीब दास्तां और एक अन्य नाटक पर संगम पांडेय की बातचीत रहे।

दिल्ली में इस साल 20 सितंबर से 29 सितंबर 2024 "इंडिया हैबिटेट सेंटर थिएटर फेस्टिवल'' में 12 नाटक प्रस्तुत किए गए जिन्होंने दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। 'आईएचसी थिएटर फेस्टिवल' 2024 में प्रदर्शित नाटकों की सूची इस प्रकार है–

• "अ लाइफ इन पोएट्री" निर्देशित जेरी पिंटो द्वारा

- "घासीराम कोतवाल" युक्त फिल्म सहकारी समिति द्वारा निर्देशित
- "त्रासदी" मानव कौल द्वारा निर्देशित
- "मदर म्यूज क्विंटेट" नवीन किशोर और जीवराज सिंह द्वारा निर्देशित
- "कल्गितुरा" सचिन शिंदे द्वारा निर्देशित
- "वेटिंग फॉर नसीर" श्रीनिवास बीसेट्टी द्वारा निर्देशित
- "रघुनाथ" विद्युत कृ नाथ द्वारा निर्देशित
- "जंप" मनीष वर्मा द्वारा निर्देशित
- "दिस टाइम" आकर्ष खुराना द्वारा निर्देशित
- "उर्मिला" निमि रैफेल द्वारा निर्देशित
- "रेड" डेनियल ओवेन डिसूजा द्वारा निर्देशित
- "एबोरिजिनल क्राई" विक्टर थौदाम द्वारा निर्देशित

जयपुर की गतिविधियों की बात करें तो जवाहर कला केंद्र के 'युवा नाट्य समारोह' के तीसरे दिन 30 जून, 2024 को मनीषा कुलश्रेष्ठ की कहानी पर आधारित नाटक 'कठपुतलियाँ' का मंचन उल्लेखनीय रहा।

भोपाल स्थित 'मध्यप्रदेश नाट्य विद्यालय' टीकम जोशी के निर्देशन में लगातार सक्रिय है। 'मध्यप्रदेश नाट्य विद्यालय' का उद्देश्य पारंपरिक शास्त्रीय और आधुनिक रंग जगत संबंधी योजनाबद्ध शिक्षण, प्रशिक्षण, प्रदर्शन की अत्याधुनिक प्रविधियाँ, संग्रह, सर्वेक्षण, दस्तावेजीकरण, संग्रहालय, पुस्तकालय आदि कार्य श्रेष्ठ रंगकला मनीषियों के सान्निध्य, सहयोग और मार्गदर्शन में करना है। इन दिनों 'मध्यप्रदेश नाट्य विद्यालय' की कुछ चर्चित प्रस्तुतियाँ– सत्र 2022–23 के विद्यार्थियों की अंतिम नाट्य प्रस्तुति प्रेरणा स्रोतः नील साइमन कृत "द गुड डॉक्टर" जिसमें परिकल्पना एवं निर्देशनः विद्यानिधि वनारसे, मध्यप्रदेश नाट्य विद्यालय एवं भारत भवन के संयुक्त आयोजन में, विश्व रंगमंच दिवस के अवसर पर मध्यप्रदेश नाट्य विद्यालय एवं भारत भवन के संयुक्त आयोजन में, विश्व रंगमंच दिवस के अवसर पर 'मध्यप्रदेश नाट्य विद्यालय' के सत्र 2022–23 के विद्यार्थियों द्वारा कक्षाभ्यास प्रस्तुति, लेखकः दिनेश नायर, निर्देशकः टीकम जोशी, अंतरंग, भारत भवन, भोपाल रहीं। इसके अलावा 'मध्यप्रदेश नाट्य विद्यालय' के सत्र 2022–23 के विद्यार्थियों द्वारा कक्षाभ्यास प्रस्तुति वीर अभिमन्यु पारसी रंगमंच शैली पर आधारित नाटक है जिसमें परिकल्पना एवं निर्देशन हेमा सिंह का है जिसका प्रदर्शन जनजातीय संग्रहालय, श्यामला हिल्स, भोपाल में किया गया। भारतीय शास्त्रीय नाट्यशैली पर आधारित नाट्य प्रस्तुति महाकवि भास कृत दूतवाक्यम् एवं महाकवि भवभूति कृत मालती माधव की प्रस्तुतियाँ महत्त्वपूर्ण रहीं जिसका निर्देशन सी.आर. जाम्बे ने किया और इसमें यक्षगान गुरु संजीव सुवर्णा का था। इसका प्रदर्शन परधौनी सभाग्रह, जनजातीय संग्रहालय,

श्यामला हिल्स, भोपाल में किया गया। 'सब ठाठ पड़ा रह जाएगा' और 'वराहमिहिर' नाटक की प्रस्तुति हो या चर्चित नाटक 'रॉन्ग टर्न' जिसका आलेख एवं निर्देशन रंजीत कपूर ने और सहनिर्देशन प्रसन्न सोनी ने किया। रंगप्रयोग, मध्यप्रदेश नाट्य विद्यालय, भोपाल के आयोजन के तहत 15–16 सितंबर को 'रानी दाई' का मंचन किया गया। रवींद्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय का टैगोर स्कूल ऑफ ड्रामा इन दिनों नाटक और रंगमंच के क्षेत्र में बेहतर कार्य कर रहा है। नाटकों का शिक्षण, देश के शीर्ष रंग व्यक्तित्व से विद्यार्थियों का संवाद कराना, नाटकों का प्रदर्शन आदि कई महत्त्वपूर्ण कार्यों के अतिरिक्त 'रंग संवाद' नाम से एक जर्नल का प्रकाशन भी इस नाट्य विद्यालय की सफलता है। रवींद्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्री संतोष चौबे स्वयं बहुविधाधर्मी सर्जक व्यक्तित्व हैं। भोपाल की रंग संस्था 'द राइजिंग सोसायटी ऑफ आर्ट एंड कल्चर' ने शहीद भवन, भोपाल में कई नाटकों का प्रदर्शन किया है। इस संस्था की प्रीती झा तिवारी और तन्हा जी ने इन दिनों कई नाटकों का मंचन किया जिन्होंने प्रस्तुति और अभिनय की दृष्टि से दर्शकों का ध्यान अपनी ओर खींचा है। इस समूह के तत्वावधान में 12वाँ 'करुनेश नाट्य समारोह' का आयोजन 20–22 दिसंबर, 2024 में किया गया। इस समारोह में 'पुरुष', 'डाकू', 'मजनूँ लाउंसमेंट' आदि नाटकों की अद्वितीय प्रस्तुति की गई। महान नाटककार भारतेंदु के जीवन पर आधारित प्रसन्ना द्वारा लिखित नाटक 'सीमा पार' इस समूह की उपलब्धि रही। कसा हुआ अभिनय, सधी पटकथा और संवाद इस नाटक की विशिष्टता है। अभिनय और निर्देशन के लिए इस नाटक को लंबे समय तक याद किया जाएगा। भारत भवन में 04 सितंबर, 2024 को इसका प्रथम मंचन अत्यंत सफल रहा। मोहन राकेश के क्लासिक नाटक 'आषाढ़ का एक दिन' को नए ढंग से रूपांतरित करके 'फिर आषाढ़ का एक और दिन' नाटक का मंचन भी प्रभाव छोड़ता है। 'विहान समूह' भोपाल में काफी सक्रिय है। नाटक 'हास्यचूड़ामणि' का मंचन विहान नाट्य समूह के कलाकारों द्वारा सौरभ अनंत के निर्देशन में देशभर में कई जगहों पर किया गया। विहान के कलाकारों द्वारा रंग–संगीत की प्रस्तुति हेमंत देवलेकर के संगीत निर्देशन में दी गई। इसके अतिरिक्त स्कूली बच्चों को रंगकर्म से जोड़ने की दिशा में की गई इस समूह की पहल का स्वागत होना चाहिए।

उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी द्वारा निम्नलिखित नाट्य रंगमंच संबंधी कार्यक्रमों का आयोजन किया गया–

05 दिसंबर, 2023	उ.प्र. संगीत नाटक अकादमी की रसमंच योजना के अंतर्गत आकांक्षा थिएटर आर्ट द्वारा नाट्य मंचन।	नाटक–मीठी ईद, नाट्य रूपा.–प्रेरणा अग्रवाल लेखक–बी.एल.गौड़

08 फरवरी 2024	उ.प्र. संगीत नाटक अकादमी, लखनऊ (संस्कृति विभाग, उ.प्र.) एवं गौरैया संस्कृति संस्थान, लखनऊ द्वारा रसमंच योजना के अंतर्गत 'मकरंदोत्सव' कार्यशाला की प्रस्तुति	प्रशिक्षिका–सुश्री रंजना मिश्रा, लखनऊ, गायन प्रस्तुति– 'कबीर के राम' श्री राजेश पांडेय, मुंबई
17 फरवरी, 2024	उ.प्र. संगीत नाटक अकादमी, लखनऊ (संस्कृति विभाग, उ.प्र.) की रसमंच योजना के अतर्गत बिंब सांस्कृतिक समिति, लखनऊ की हास्य नाट्य प्रस्तुति।	नाट्य प्रस्तुति– 'बात का बतंगड़, लेखक–तमाल बोस निर्देशक एवं दृश्य–परिकल्पना–कपूर।
16 मार्च, 2024	उ.प्र. संगीत नाटक अकादमी, लखनऊ (संस्कृति विभाग, उ.प्र.) की रसमंच योजना के अंतर्गत अवध कला अकादमी द्वारा नाटक एवं गीतों की प्रस्तुति।	'अवध उत्सव' के अंतर्गत नाटक एवं गीतों की प्रस्तुति
27 मार्च, 2024	उ.प्र. संगीत नाटक अकादमी, लखनऊ (संस्कृति विभाग, उ. प्र.) की रसमंच योजना के अंतर्गत मुनाल संस्था द्वारा गीतों पर आधारित कार्यक्रम	उ. प्र. व उत्तराखंड के लोकगीत व लोकनृत्य की प्रस्तुति

सत्यदेव त्रिपाठी 'संवेद' में प्रवीण सांस्कृतिक मंच पटना की प्रस्तुति पर लिखते हैं– "पटना के 'प्रवीण सांस्कृतिक मंच' द्वारा आयोजित चार दिवसीय नाट्योत्सव देखने का अवसर बना जो अपनी निर्मिति व प्रस्तुति में खाँटी एवं विविधरंगी रंगकर्म का जीता–जागता रूप बनकर दिल–दिमाग पर छाया हुआ है, लेकिन यह कसक भी साल रही है कि यदि थोड़ी–सी सोच व सक्रियता और जुड़ जाती तो यह अपने ढंग के नाट्योत्सवी रंगकर्म की मिसाल बन जाता....!!"

पटना आधुनिक हिंदी रंगमंच का प्रमुख केंद्र है जहाँ हर साल की भाँति नाटकों की धूम रही। कालिदास रंगालय और प्रेमचंद रंगशाला सहित सभी केंद्रों पर मंचन में गतिशीलता रही। नई नवेली संस्था 'हाउस ऑफ वेरायटी' ने काफी ध्यानाकर्षक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। पुंज प्रकाश के सफल मार्गदर्शन में यहाँ कई महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम प्रस्तुत हुए। दिनकर जी की रश्मिरथी के नए शिल्प में मंचन ने सबको अपनी ओर आकर्षित किया। पटना में आयोजित होने वाला 'पाटलीपुत्र नाट्य महोत्सव'

बिहार में लगातार आयोजित होने वाला सबसे पुराना रंग महोत्सव है। इस वर्ष इसके अड़तीसवें संस्करण का आयोजन हुआ। महोत्सव की उद्घाटन प्रस्तुति थी सौरभ अनंत लिखित और निर्देशित प्रस्तुति 'गाँधी गाथा'। महोत्सव के दूसरे दिन परिसर में जहाँगीर निर्देशित नुक्कड़ नाटक 'ओक्का बोक्का' की प्रस्तुति हुई जो स्त्री उत्पीड़न की सामाजिक समस्या के बारे में बात करते हुए नागरिक होने की जिम्मेदारी की तरफ दर्शकों का ध्यान आकर्षित करता है। उसी दिन मंच पर प्रवीण गुंजन निर्देशित और सुधांशु फिरदौस लिखित 'कथा' की प्रस्तुति हुई। 33वें पाटलीपुत्र नाट्य महोत्सव में नीलेश दीपक द्वारा निर्देशित और विजयदान देथा की कहानी पर आधारित 'केंचुली' का मंचन अत्यंत प्रशंसनीय रहा। नीलेश दीपक सुप्रसिद्ध युवा रंगकर्मी हैं। इन्होंने कई अन्य प्रस्तुतियाँ इस वर्ष दी हैं। हिंदी रंगभूमि के तत्त्वावधान में मानव कौल लिखित नाटक 'बलि और शंभू' की प्रस्तुति ने रंगकर्मियों को चकित किया है। नीलेश के पास एक स्वायत्त रंग–भाषा है जिससे हर नाटक में नई जान फूँकते हैं। पटना के कालीदास रंगालय में अगस्त के पहले सप्ताह में तीन दिनों का 'पुरबिया रंग महोत्सव' हुआ। इस महोत्सव का आयोजन आशा रेपर्टरी ने किया था। महोत्सव की प्रस्तुतियों में तीनों ही प्रस्तुतियाँ नाटक की नहीं थीं बल्कि अपनी बात कहने के लिए उपर्युक्त साहित्य का चुनाव किया गया था। मो. जहाँगीर ने हृषिकेश सुलभ की 'खुला' कहानी की 'पकवाघर' शीर्षक से, हरिशंकर रवि ने तुलसीराम की आत्मकथा 'मुर्दहिया' की और श्याम साहनी ने फणीश्वरनाथ रेणु की कहानी 'रसप्रिया' की प्रस्तुति' की। (संदर्भ के लिए अमितेश कुमार का ब्लॉग रंग विमर्श https://rangwimarsh.blogspot.com देख सकते हैं)

बिहार में पटना के अतिरिक्त दरभंगा, मुजफ्फरपुर, सहरसा, बेगूसराय, आरा, भागलपुर और पूर्णिया भी नाटकों के केंद्र रहे हैं जहाँ ग्रामीण और लोक रंगमंच और आधुनिक रंगमंच की धारा अविरल प्रवाहमान है जिसकी गति धीमी जरूर है। सुपौल जिला के ग्रामीण रंगमंच में वीना बभनगामा के समृद्ध रंगमंच को कौन भूल सकता है जिसमें संजीव कुमार झा ने 'कोजगरा महोत्सव' में कई ऐतिहासिक प्रस्तुतियाँ दी हैं।

अस्मिता ग्रुप के निर्देशक अरविंद गौड़ समसामयिक सवालों को संवेदनशील ढंग से उठाते हैं। ऐसे नाटकों में 'कोर्टमार्शल', 'तारा', रामकली', 'मोटेराम का सत्याग्रह', 'पार्टीशन', 'अंबेडकर और गांधी', 'अमृतसर आ गया' और 'जिन लाहौर नइ देख्या ओ जन्म्याई नाइ' प्रमुख हैं। अरविंद गौड़ बहुत कलाकारों को मंच पर उतारकर अभिनव प्रयोग करते हैं। एनएसडी स्नातक साजिदा साजी और जोय के किए गए नाटकों में 'ओथेलो', 'अंधायुग', 'विरासत', 'युग' ने दर्शकों का ध्यान अपनी तरफ आकर्षित किया। तहमीना दुर्रानी के उपन्यास के रूपांतरण 'कुफ़्र' की अच्छी खासी चर्चा रही।

बीते दो वर्षों में प्रयागराज में रहने वाले सुप्रसिद्ध रंगकर्मी प्रवीण शेखर द्वारा कई नाटकों का निर्देशन किया गया। इसमें प्रमुख रहे नाटक 'पक्षी और दीमक' का मंचन– लेखकः रसूल हमजातफ और मुक्तिबोध, नाट्य रूपांतरणः प्रवीण शेखर, अमर सिंह, निर्देशनः प्रवीण शेखर; 'खाय का खरा किस्सा' का मंचन–लेखकः सुमन कुमार, कहानीः भुवनेश्वर, निर्देशनः प्रवीण शेखर; नाटक 'हवालात' का मंचन– लेखकः सर्वेश्वर दयाल सक्सेना एवं बैकस्टेज टीम, कविताएँः केदारनाथ अग्रवाल, निर्देशनः प्रवीण शेखर; नाटक 'बाजी' का प्रदर्शन– एंटन चेखव की कहानी 'द बेट' पर आधारित, रूपांतरणः अविनाश चंद्र मिश्र, निर्देशनः प्रवीण शेखर। 'कामदेव का अपना, बसंत ऋतु का सपना' शेक्सपियर कृत अंग्रेजी नाटक 'अ मिड समर नाइट्स ड्रीम', भारतीय रूपांतरणः हबीब तनवीर, निर्देशनः प्रवीण शेखर। पूर्वोत्तर रेलवे राजभाषा विभाग के तत्वावधान में 22 अगस्त, 2024 को रेलवे प्रेक्षागृह, गोरखपुर में "क्षेत्रीय रेलवे हिंदी नाटक प्रतियोगिता–2024" का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में पूर्वोत्तर रेलवे मुख्यालय, यांत्रिक कारखाना, गोरखपुर की नाट्यटीम ने हड़ताल एवं बंदी पर आधारित नाटक "बंद", लखनऊ मंडल की नाट्य टीम ने महाभारत के कर्ण के जीवन पर आधारित "रश्मिरथी", वाराणसी मंडल की नाट्य टीम ने बड़े भाई एवं छोटे भाई के प्रेम पर आधारित नाटक "बड़े भाई साहब" तथा इज्जतनगर मंडल की नाट्य टीम ने पर्यावरण पर आधारित "अस्तित्व का सवाल" नाटक का मंचन किया।

'मैथिली लोक रंग' (मैलोरंग) दिल्ली की बहुचर्चित रंग–संस्था ने वर्ष 2023–24 और 2025 में कई नाट्य प्रदर्शन किए हैं। इस दौरान रेपर्टरी ने कई नए नाटकों का प्रदर्शन किया है। इसके अलावा यह संस्था अपना वार्षिक आयोजन 'मिथिला रंग महोत्सव' भी शानदार ढंग से करती है। 'मैथिली लोक रंग'–मैलोरंग द्वारा विश्व रंगमंच दिवस के अवसर पर दो दिवसीय 'मिथिला रंग महोत्सव' का आयोजन किया गया। महोत्सव के पहले दिन नई दिल्ली के मंडी हाउस स्थित एलटीजी सभागार में महाकवि भास रचित नाटक 'अभिषेकनाटकम्' का मंचन किया गया और राही मासूम रजा के चर्चित उपन्यास 'टोपी शुक्ला' का सफलतापूर्वक मंचन किया गया। इसी संस्था को 'भारत रंग महोत्सव' में पहला मैथिली नाटक मंचन करने का भी सौभाग्य प्राप्त है। इस संस्था के निर्देशक डॉ. प्रकाश चंद्र झा स्वयं राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के प्रकाशन अधिकारी हैं। उक्त वर्षों में प्रकाश जी के निर्देशन में 'भारत भाग्य विधाता', 'तीसरी कसम', 'कालेसूट वाला आदमी', 'ललका पाग', 'सीता वनवास', 'अंधेर नगरी', 'मीनाक्षी' आदि नाटकों का मंचन सफलतापूर्वक किया गया है।

हिंदी कहानी और उपन्यास को मंच पर बिल्कुल सहज ढंग से प्रस्तुत करने का श्रेय देवेंद्र राज अंकुर जी को है। बिना किसी अतिरिक्त सेट, कॉस्ट्यूम, प्रॉपर्टी और डिजाइन के, मात्र कुछ पात्रों के अभिनय से पूरी कहानी को यथावत् मंच पर रख देने

का अंकुर जी का यह अनूठा प्रयोग है। अंकुर जी की संस्था 'संभव' ने इधर कई नाटकों का मंचन देशभर में किया।

हिंदी की लंबी कविताएँ रंगमंच पर भी लगातार मंचित होती रही हैं। नाटकीयता लंबी कविता का प्राणतत्व है। बिना नाटकीयता और रंग–प्रभाव के कोई लंबी कविता लिखी जाए तो वह असफल ही होगी। कथा में प्रवाह और नाट्योचित गुण इसके प्रभावी आधार हैं। हिंदी रंगमंच पर लंबी कविताओं की प्रस्तुतियाँ काफी सराहनीय रही हैं। कई नाट्य संस्थाओं ने निराला, मुक्तिबोध से लेकर आजतक की लंबी कविताओं का मंचन किया है जिसकी संपूर्ण सूची उपलब्ध कराना संभव नहीं है। बानगी के तौर पर कुछ लंबी कविताओं के नाट्यमंचन की छवि यहाँ दी जा रही है। यह सिर्फ उदाहरण के तौर पर दी जा रही है जो न तो अंतिम है और न अंतहीन। व्योमेश शुक्ल ने 'कामायनी' महाकाव्य, 'रश्मिरथी' और 'राम की शक्तिपूजा' की अलग ढंग से लाइट–साउंड प्रस्तुति से हिंदी रंगप्रेमी दर्शकों का ध्यान लगातार अपनी ओर खींचा। 'रूपवाणी' वाराणसी के बैनर तले व्योमेश शुक्ल लगातार कई शहरों में नाट्य–प्रस्तुति दे चुके हैं। संगीतबद्धता और नृत्य संरचना से व्योमेश के नाटकों का एक अलग प्रभाव दिखता है। स्टेज क्राफ्ट और प्रॉपर्टी के इस्तेमाल में भी व्योमेश शुक्ल बेजोड़ हैं। अरुणाभ सौरभ की लंबी कविता 'आद्य नायिका' का नाट्यमंचन क्रमशः कई जगह हुआ जिनमें नीलेश दीपक द्वारा निर्देशित भोपाल में इसका मंचन और फिर लखन लाल अहिरवार द्वारा छतरपुर में इसका प्रभावशाली मंचन प्रमुख है। लखन लाल अहिरवार ने छतरपुर के गाँधी आश्रम में बुंदेली रंगमंच आर्ट एंड कल्चरल सोसायटी के तत्त्वावधान में 01 जून 2024 को इसका मंचन किया और भोपाल में निर्मल पांडेय स्मृति फिल्म फेस्टिवल में 10 अगस्त 2024 में 'आद्य नायिका' का एक और मंचन किया। श्रीकांत वर्मा की बहुचर्चित कविता 'मगध' का मंचन दिलीप गुप्ता के निर्देशन में सफल साबित हुआ।

राजेश कुमार लिखते हैं–

"दिल्ली में कई संस्थाएँ हैं जो सालभर वर्कशॉप करती हैं, कलाकारों को प्रशिक्षण देती है और उनके साथ मिलकर बेहतरीन प्रस्तुतियाँ देती हैं। उनमें ब्लैक पर्ल आर्ट्स की 'सुखिया मर गया भूख से', 'खूबसूरत बहू', 'चैनपुर की दास्तान' अपनी गुणवत्ता को लेकर चर्चा में रही। विकास बाहरी के अनेकों नाटक साल भर में देशभर में हुए। नया नाटक 'पतझड़ और खिड़की', 'दरारें', 'चिड़ियाँ और चाँद' की कई प्रस्तुतियाँ नाट्य महोत्सवों में हुई। 'विवेचना' नाट्य संस्था जबलपुर द्वारा आयोजित राष्ट्रीय नाटक समारोह का आयोजन प्रतिवर्ष निरंतर जारी है।''

पटना, लखनऊ और भोपाल और जयपुर जैसी जगहों ने हिंदी नाटकों को खाद–पानी देने का काम किया है। 'इप्टा' ने पूरे देश में घूम–घूम कर 'ढाई आखर प्रेम के' का अद्भुत आयोजन किया। 'इप्टा', पटना ने तनवीर अख्तर के निर्देशन में

राजेश कुमार के नाटक 'काया धूल हो जासी' का मंचन प्रेमचंद रंगशाला में किया। 'नट मंडप' द्वारा मंचित नाटक 'बापू', 'अर्थ दोष' और 'साला मैं तो साहब बन गया' अपनी भव्यता और विचारोत्तेजकता को लेकर हिंदी क्षेत्र में आकर्षण का केंद्र बना रहा। पटना का 'पाटलिपुत्र रंग महोत्सव' जैसा आयोजन निरंतर अपनी ऊँचाई छू रहा है।

जयपुर का जवाहर कला केंद्र हो या चंडीगढ़ में पंजाब विश्वविद्यालय का थियेटर विभाग, हर जगह नाटकों का स्थिति यथावत् रही।

इधर के वर्षों में प्रकाशित कुछ महत्त्वपूर्ण नाटक, 'देस'—अभिषेक मजूमदार, 'जानत तुलसीदास'—अविनाश चंद्र मिश्र, अंतिका प्रकाशन, 'महाबली'—असगर वजाहत, राजपाल एंड संस, 'अगरबत्ती'—आशीष पाठक, वाणी प्रकाशन, 'जॉन एलिया का जिन्न'—इरशाद खान सिंकदर, राजपाल प्रकाशन, 'एक अधपका सा नाटक'—चिराग खंडेलवाल, राजकमल प्रकाशन, 'बागड़बिल्ला'—ओमकार घाग, राजकमल प्रकाशन, वाणी प्रकाशन से प्रकाशित नाटक 'इमरोज'—कुनाल हृदय, 'हुलहुलिया'— रवींद्र भारती, 'चोर निकल के भागा'—मृणाल पांडे, 'संपूर्ण नाटक'—मृणाल पांडे, 'जादू का कालीन'—मृदुला गर्ग, 'गोडसे@गाँधी.कॉम'— असगर वजाहत, 'ईश्वर—अल्लाह'—असगर वजाहत, 'पाकिस्तान में गाँधी'—असगर वजाहत, 'नुक्कड़ पर दस्तक'— अरविंद गौड़, 'अंबेडकर और गाँधी'— राजेश कुमार, 'लल्लन'— मिस रमा पांडेय, 'बुल्लेश'—प्रताप सहगल, 'पूर्णावतार' (काव्य नाटक)— हेतु भारद्वाज, 'सपना बचपन का 'रंगमंच'— मो. असलम खान, 'दास्तान—ए—राम'— दानिश इकबाल, 'लोई'—प्रताप सोमवंशी, 'पूर्ण पुरुष'—विजय पंडित, 'बार्किंग डॉग एंड पेइंड गेस्ट'—विशाल विजय, 'पॉपकोर्न विद परसाई'— निलय उपाध्याय, 'चिंगारियाँ'—मधु धवन, 'सुकरात का घाव'—चंद्रकांत देवताले, 'आदमखोर'—रमाशंकर निशेश, 'कुक्कू डार्लिंग'—रमाशंकर निशेश, 'चील घर'—रमाशंकर निशेश, 'तीन नाटक'—रमाशंकर निशेश, 'नाट्य समग्र'—1 (हास्य—व्यंग्य एवं सामाजिक नाटक)— दया प्रकाश सिन्हा, 'नाट्य समग्र'—2 (समकालीन नाटक)— दया प्रकाश सिन्हा, 'नाट्य समग्र'—3 (ऐतिहासिक एवं पौराणिक नाटक— दया प्रकाश सिन्हा, 'सम्राट अशोक'—दया प्रकाश सिन्हा, 'दुश्मन'—दया प्रकाश सिन्हा, मकरंद देशपांडे—'एपिक गड़बड़' आदि नाटक प्रमुख हैं। इंदिरा दांगी ने भोपाल की रानी कमलापति पर एक महत्त्वपूर्ण नाटक लिखा है। माधुरी सुबोध का मीराबाई के जीवन पर आधारित नाटक 'मन वृंदावन' की कई प्रस्तुतियाँ हिंदी रंगभूमि के तत्त्वावधान में नीलेश दीपक के कुशल निर्देशन में कई बार सफलतापूर्वक मंचित हुई। भक्तिकाल के महान संत कवि रैदास के जीवन पर आधारित नाटक लिखा है सहरसा बिहार के नाटककार संगीत कुमार झा ने। संत रविदास नाटक रैदास के जीवन के विविध प्रसंगों को यथासंभव प्रस्तुत करता है। शैली के स्तर पर यह नाटक पारसी शैली में ही मंच पर प्रस्तुत किया जा सकता है। लेखक ने शोधपरक और प्रामाणिक ढंग से रैदास के

जीवन को छुआ है। कवि विनय कुमार का काव्य नाटक 'आत्मज' भी प्रकाशित हुआ जो अपने कथ्य और शिल्प, दोनों में आकर्षित करता है। रिंकल शर्मा की 'प्रेमचंद मंच पर' शीर्षक से तीन भागों में प्रभाकर प्रकाशन से किताब प्रकाशित हुई है। नई किताब प्रकाशन समूह ने नाटकों के प्रकाशन में इजाफा किया है। असगर वजाहत ने 'नाटक' (दो खंड) हैदर अली के संपादन में, भुवनेश्वरः' नाटक एवं एकांकी समग्र, भूमिका—सुधीर विद्यार्थी, 'मशाल वो सुभाष की व अन्य नाटक'—अनुराधा बनर्जी, 'घर वापसी' तथा 'सुखिया मर गया'— राजेश कुमार, 'ऑक्सीजन', 'शत्रुगंध'— योगेश त्रिपाठी, 'गनपत सूरती क्या करे'— निर्मिश ठाकुर, 'कंधे पर बैठा शाप'—मीरा कांत, 'अतः किम'—राधा कृष्ण सहाय— ये सभी किताबें प्रकाशन की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण उपलब्धि रही। इसी प्रकाशन से रंगमंच पर कई पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं जैसे— 'रंग विमर्श'—ज्योतिष जोशी, 'रंगमंच सिनेमा और टेलीविजन'—राजेंद्र उपाध्याय, 'हिंदी दलित रंगमंच की दस्तक'—सं—मोहनदास नैमिशराय, 'हिंदी रंगमंच समकालीन विमर्श'—सत्यदेव त्रिपाठी, 'रंग वैचारिकी नए संदर्भों में'— सं—आशा आदि। क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल ने नाटक को शिक्षण—अधिगम से जोड़ने हेतु कई कार्यक्रम अरुणाभ सौरभ के संयोजन में चलाए हैं। रंगमंच शिक्षण शास्त्र पर आधारित शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम गुजरात, महाराष्ट्र और गोवा राज्य के शिक्षक—प्रशिक्षकों के लिए किया गया। इसके तहत एक हैंडबुक का प्रकाशन भी किया गया। इसके अलावा सेवापूर्व शिक्षकों के लिए भोपाल के क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान में भीष्म साहनी लिखित नाटक 'कबिरा खड़ा बाजार में' का आयोजन हुआ। बेपरवाह, निर्भीक, दृढ़ और फक्कड़ व्यक्तित्व वाले मस्तमौला कबीर का व्यक्तित्व सदियों से भारतीय मन को प्रभावित करता रहा है। उस युग की तानाशाही, धर्मांधता और आडंबरों के विरुद्ध संघर्ष करने वाले कबीर आज भी हमारे बीच एक स्थायी और प्रेरक मूल्य की तरह स्थापित हैं। इसी कारण आज भी कबीर के पदों को समाज—सुधार की दृष्टि से प्रासंगिक माना जाता है। भीष्म साहनी कृत 'कबिरा खड़ा बाजार में' युग प्रवर्तक कबीर के व्यक्तित्व को प्रस्तुत करने वाली बहुमंचित और चर्चित नाट्यकृति है। इस नाटक में संस्थान के B.Ed., M.Ed. एकीकृत के छात्र—छात्राओं ने मंचन किया। क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल के सेवापूर्व शिक्षक प्रशिक्षुओं के लिए नाट्य कार्यशाला और प्रदर्शन के तहत नाट्यप्रस्तुति 'दास्तान—ए—झाँसी' का मंचन दिनांक 29 दिसंबर 2023 को पी.एस.एस.सी.आई.वी.आई के निनाद सभागार, श्यामला हिल्स, भोपाल में किया गया। नाटक 'दास्तान—ए—झाँसी' का लेखन अमिताभ श्रीवास्तव ने और नाट्य आलेख हरिकेश मौर्य, परिकल्पना रमण कुमार और निर्देशन अरुणाभ सौरभ ने किया है। प्रस्तुति बी.ए. बी.एड. पाँचवाँ सेमेस्टर के क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान के विद्यार्थियों की रही जिसे मैलोरंग, नई दिल्ली के सहयोग से किया गया।

अमितेश कुमार ने लिखा है–

"इस साल बुजुर्ग रंगकर्मियों ने अपने समय को भी याद किया है। एमके रैना और अमोल पालेकर ने अपने संस्मरणों की किताब अंग्रेजी में प्रकाशित की। देवेंद्र राज अंकुर ने कहानी के रंगमंच के प्रयोग के पचास साल पूरे होने पर एक किताब लिखी। अमाल अल्लाना ने अपने पिता इब्राहिम अलकाजी की जीवनी प्रकाशित की।''

देवेंद्र राज अंकुर जी की किताब 'रचना प्रक्रिया के पड़ाव' इस वर्ष की उपलब्धि रही।

हिंदी नाटक लेखन में महिलाओं की सक्रियता ने एक खास वातावरण का निर्माण किया है। इनमें से एक चर्चित और बहु प्रशंसित नाम है– विभा रानी! विभा रानी के लिखे कई नाटक एकदम अलग विषय–वस्तु और अनछुए प्रसंगों के कारण मशहूर हुए हैं जैसे आओ तनिक प्रेम करें, पीर पराई, अगले जनम मोहे बिटिया ना कीजो, प्रेग्नेंट फादर और मटन मसाला चिकन चिली प्रमुख हैं। विभा रानी की एकल नाट्य प्रस्तुतियाँ भी काफी सराही गई हैं।

नाटक प्रदर्शनकारी विधा है, नाटक का सब कुछ प्रदर्शन पर ही आधारित होता है। इसके बावजूद अच्छे नाटक निरंतर लिखे जाने चाहिए जो अनुपात में कम हैं, तथापि जो रंगकर्मी हैं, वे नए नाटकों को करने की जहमत कम उठाते हैं। बने–बनाए पैटर्न में काम करने में उनको आसानी होती है। साहित्य का पढ़ना उनका न के बराबर होता है। बिना साहित्य को गंभीरता से पढ़े न तो कोई अच्छा अभिनेता बन सकता है, न ही निर्देशक। रंगकर्मियों की पढ़त काफी कमजोर है इस समय। प्रदर्शन मात्र के लिए वे अपने संवादों को याद करते हैं, बाकी साहित्य की अन्य विधाएँ नहीं पढ़ते जिससे उनके भीतर का अभिनेता पूर्णतः बाहर नहीं आ पाता। जो गंभीरतापूर्वक पढ़ते हैं, वे आपको अलग ही दिख जाते हैं। साहित्य की अन्य विधाओं की तरह नाटक का लेखन अपेक्षाकृत कम हो रहा है। हालाँकि जो उपलब्ध है और जो काम हो रहा है, वह भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं है। नाटक धाराप्रवाह परंपरा है जिसकी धार निर्बंध है। कहना ना होगा कि अभी हिंदी नाटक लेखन की धार पतली है जिसका खामियाजा मंचन को ही भुगतना पड़ता है। नाटक को लगातार हाशिये पर धकेला जा रहा है। तथापि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 आने के बाद उम्मीद है कि शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया से जुड़कर इस प्राचीनतम और लोक की विधा का कुछ भला हो जाए। नाटक जारी है, खेला जा रहा है। इस विधा को किस प्रकार भारत में जीवन से जोड़कर और विकसित किया जाए, इस पर सामूहिक रूप से विचार की आवश्यकता है।

❑❑❑

हिंदी पत्रकारिता एवं नव प्रौद्योगिकी साहित्य

24

डॉ. सी. जयशंकर बाबु

संस्थापक संपादक– युग मानस, प्रधान संपादक– अक्षर भारती, सदस्य– हिंदी सलाहकार समिति, गृह मंत्रालय, भारत सरकार। प्रतिष्ठित साहित्यकार। संप्रति–सह आचार्य हिंदी विभाग, पांडिचेरी विश्वविद्यालय।

पत्रकारिता का उदय लोकतांत्रिक व्यवस्था के विकास का परिणाम है जिसका मुख्य उद्देश्य जनहित को बढ़ावा देना है। 'जन' शब्द केवल व्यक्ति को नहीं, बल्कि समग्र समाज को दर्शाता है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति की प्रतिष्ठा और अधिकार शामिल होते हैं। मानवतावादी दृष्टिकोण से देखें तो लोकतांत्रिक समाज और शासन प्रणाली समान रूप से महत्त्वपूर्ण हैं क्योंकि यह व्यवस्था नागरिकों के लिए सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय, स्वतंत्रता, समानता और सम्मान सुनिश्चित करती है। जनतंत्रात्मक मूल्यों की रक्षा के लिए विकसित पत्रकारिता तंत्र को समाज के आदर्श व्यवहार और सुव्यवस्था के रूप में देखा जाता है। लोकतंत्र में पत्रकारिता की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है क्योंकि यह शासन और जनता के बीच संवाद का माध्यम बनती है। अन्याय, अत्याचार, दमन और स्वेच्छाचारिता के विरुद्ध जनचेतना के विकास में इसकी भूमिका को अनेक विचारकों ने स्पष्ट किया है। एडमंड बर्क के अनुसार, पत्रकारिता लोकतंत्र का 'चतुर्थ स्तंभ' है जो विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका के साथ मिलकर लोकतांत्रिक व्यवस्था को सशक्त बनाती है।

भारतीय पत्रकारिता ने 245 वर्ष पूरे किए हैं जबकि हिंदी पत्रकारिता अगले वर्ष द्विशताब्दी वर्ष मनाने जा रही है। इन दो–ढाई सदियों की पत्रकारिता के तकनीकी विकास में निरंतरता है और मीडिया का भी अभूतपूर्व विस्तार होता गया है। बीते वर्षों में पत्रकारिता के स्वरूप में तकनीकी बदलाव हुए हैं। प्रारंभ में, प्रेस (प्रिंट मीडिया) पत्रकारिता का मुख्य माध्यम था लेकिन वैज्ञानिक आविष्कारों के चलते रेडियो, टेलीविजन और अंतर्जाल (इंटरनेट) के माध्यम से संचार प्रणाली में अभूतपूर्व परिवर्तन हुए। इलेक्ट्रॉनिक संचार माध्यमों के विकास के साथ 'मीडिया' शब्द व्यापक हुआ और अब इसमें रेडियो, टेलीविजन भी समाहित हो गया है। एक ओर वेब पत्रकारिता का उद्भव और विकास हुआ तो दूसरी ओर नागरिक पत्रकारिता की अवधारणा भी

विकसित हुई है जिसने जनभागीदारी को बढ़ावा दिया है। हालाँकि, स्वार्थी ताकतों और व्यावसायिक दबावों के कारण पत्रकारिता में कुछ भटकाव भी देखा गया है जिसके चलते इसकी आलोचना होती रही है। पत्रकारिता–मीडिया के मूल्यों की रक्षा और इस तंत्र की प्रासंगिकता सुनिश्चित करने के लिए सतर्कता और विमर्श आवश्यक है।

हिंदी पत्रकारिता और नव प्रौद्योगिकी का वार्षिक सर्वेक्षण

आज मीडिया के बहुआयामी विकास के चलते मीडिया शिक्षा, शोध और विमर्श की प्रासंगिकता पहले से कहीं अधिक बढ़ गई है। हिंदी भाषा में प्रकाशित मीडिया और पत्रकारिता से संबंधित पुस्तकों का व्यवस्थित सर्वेक्षण एवं मूल्यांकन आवश्यक है ताकि लोकतांत्रिक मूल्यों और पत्रकारिता की स्वतंत्रता की रक्षा की दिशा में विकसित चेतना को समझा जा सके। इसके लिए निरंतर शोध और विमर्श भी होते रहने चाहिए जिससे नये युग की पत्रकारिता सार्थक, पारदर्शी और जनहितकारी बनी रह सके।

नव माध्यम के विकास के साथ सूचना संचार के अनेक नये साधनों का उदय हुआ है। इस संदर्भ में हिंदी पत्रकारिता, मीडिया और नव प्रौद्योगिकी से संबंधित पुस्तकों का सालाना सर्वेक्षण अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के तहत केंद्रीय हिंदी निदेशालय प्रत्येक वर्ष हिंदी में प्रकाशित साहित्य और अन्य विधाओं का सर्वेक्षण प्रस्तुत करता है जिससे शोधकर्ताओं को नवीनतम जानकारियाँ उपलब्ध हो सकें।

पत्रकारिता के क्षेत्र में तेजी से होते परिवर्तन को देखते हुए मीडिया शिक्षा और प्रशिक्षण की आवश्यकता भी बढ़ रही है। इसके लिए शोधपरक पुस्तकों, संदर्भ ग्रंथों और अध्ययन सामग्री की लगातार आवश्यकता बनी रहती है। केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा प्रकाशित 'वार्षिकी' के माध्यम से हर वर्ष 'हिंदी पत्रकारिता और नव प्रौद्योगिकी' से संबंधित साहित्य का समग्र आकलन प्रस्तुत किया जाता है। वर्ष 2024 के सर्वेक्षण का परिणाम इस आलेख के रूप में प्रस्तुत है। सर्वेक्षण वर्ष में मीडिया विषयक पत्रिकाओं के कुछ विशेषांक भी प्रकाशित हुए हैं जिनका सामान्य आकलन इस सर्वेक्षण में शामिल है।

सर्वेक्षण वर्ष में प्रकाशित हिंदी पत्रकारिता एवं नव प्रौद्योगिकी साहित्य

वर्ष 2024 में हिंदी में पत्रकारिता एवं नव प्रौद्योगिकी संबंधी कई पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। सर्वेक्षण वर्ष के दौरान हिंदी में पत्रकारिता, मीडिया, नव माध्यम व प्रौद्योगिकी संबंधी लगभग पाँच दर्जन से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। इन कृतियों में मीडिया चिंतन, इतिहास, सैद्धांतिक और व्यावहारिक विश्लेषण, तकनीकी कुशलताएँ, आलोचना, शिक्षण–प्रशिक्षण, पत्रकारिता–कोश, निर्देशिकाएँ, शोध, पत्रकारों के व्यक्तित्व–कृतित्व पर केंद्रित कृतियाँ आदि शामिल हैं।

सर्वेक्षण वर्ष के दौरान मीडिया विषयक पत्रिकाओं के एकाध विशेषांक भी प्रकाशित हुए हैं। साहित्यिक और समाचार–विश्लेषण की पत्रिकाओं में सर्वेक्षण वर्ष के

दौरान मीडिया विषयक विशेषांक, उल्लेखनीय आलेख भी प्रकाशित हुए हैं। नयी प्रौद्योगिकी संबंधी पुस्तकें हिंदी में इस वर्ष बड़ी संख्या में ई–पुस्तकों के रूप में प्रकाशित हुई हैं। मीडिया संबंधी कतिपय कृतियों में भी प्रौद्योगिकी संबंधी चर्चा, मीडिया जगत पर प्रौद्योगिकी एवं उसके प्रभाव से विकसित नये तंत्र तथा नयी व्यवस्थाओं की चर्चा नज़र आती है। नयी प्रौद्योगिकी एवं नये मीडिया पर हिंदी में स्तरीय पुस्तकों का प्रकाशन अपने आप में एक बड़ी उपलब्धि है। इस दिशा में हिंदी में प्रकाशन के प्रयासों की बड़ी अपेक्षा है। आशा है, मीडिया विषयक आधुनिक विचारधारा वाले विद्वान इस दिशा में ध्यान देंगे ताकि भविष्य में अच्छी पुस्तकें सामने आ पाएँ।

सामयिक मीडिया विमर्श

पत्रकारिता से मीडिया तक अवधारणात्मक व तकनीकीपरक क्रांतिकारी बदलाव के आलोक में शैक्षिक व अकादमिक जगत में पत्रकारिता के संबंध में विस्तृत विमर्श जारी है। ऐसे विमर्शों के वैचारिक मंथन में बुद्धिजीवियों, चिंतकों, पत्रकारों और शैक्षिक जगत तथा विभिन्न क्षेत्रों के दिग्गज भी शामिल हैं। इस वजह से मीडिया विमर्श विषयक पुस्तकों, लेखों के प्रकाशन में निरंतरता है। हिंदी में भी ऐसी पुस्तकें और लेख बड़ी संख्या में प्रकाशित हुए हैं।

वर्तमान मीडिया विमर्श में मीडिया की व्यापक और बहुपक्षीय आलोचना देखी जा सकती है, वहीं कुछ स्थानों पर इसके मौजूदा स्वरूप के समर्थन की आवाज़ भी सुनाई देती है। भूमंडलीकरण, उदारीकरण और बाज़ारीकरण जैसी नीतियों और परिस्थितियों के चलते मीडिया के व्यवसायीकरण और इससे जुड़े कई विवादित पहलुओं की आलोचना कहीं न कहीं उचित प्रतीत होती है।

मीडिया को पारंपरिक मिशनरी भावना से अलग करके व्यावसायिक रणनीतियों और बाज़ार–केंद्रित नीतियों का हिस्सा बनने से रोकना ही इस विमर्श का मुख्य उद्देश्य है। इस विमर्श को पुस्तकों और लेखों में दर्ज करना निश्चित रूप से एक सराहनीय प्रयास है। सर्वेक्षण वर्ष के दौरान इस विमर्श को किसी हद तक बल मिला है, हालाँकि गंभीर और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से और अधिक गहन विमर्श की आवश्यकता है।

सर्वेक्षण वर्ष की कालावधि में मीडिया विमर्श पर केंद्रित दर्जनों पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं जो इस प्रकार हैं–

भूपेन सिंह की पुस्तक 'कैद में मीडिया' बदलते दौर में मीडिया की भूमिका और स्वरूप पर विमर्श प्रस्तुत करती है। लोकतंत्र में पत्रकारिता की निष्पक्ष भूमिका खतरे में होने की स्थिति पर यह विमर्श प्रासंगिक है।

राजेश बादल की पुस्तक 'मिस्टर मीडिया' आवरण पृष्ठ पर इस घोषणा के साथ प्रस्तुत है– मीडिया की दुनिया के कड़वे सच। राजेश जी एक पोर्टल के माध्यम

से अपने विचार लगातार साझा किया करते थे, उन सभी 178 लेखों का संकलन है यह पुस्तक। लेख भले ही मीडिया के विभिन्न आयामों पर शामिल हैं, कई लेख भारत में पत्रकारिता व मीडिया की बदलती स्थितियों, मानदंडों, विश्वासों के विमर्श पर केंद्रित हैं।

'रिमोटः द सोशल मीडिया वॉर' शीर्षक से हरीश पापनी की पुस्तक प्रभात प्रकाशन के माध्यम से सामने आई है जिसमें लेखक ने सामाजिक माध्यमों के जरिये झूठे समाचार व गलत सूचनाओं के प्रसार से उत्पन्न हो रहे खतरों की ओर इंगित किया है। पाठकों को भ्रमित करने की दृष्टि से सक्रिय ऐसे तत्वों से मुक्ति के मार्गों पर लेखक ने संकेत दिया है ।

नव माध्यम के दौर में मुख्यतः अमेरिका में उत्पन्न मीडिया के खतरे और विडंबनात्मक स्थितियों से प्रभावित वैश्विक मीडिया का आकलन सोशल मीडिया के उदय, प्रभाव और नियमन की आवश्यकता के परिप्रेक्ष्य में करने का प्रयास फ्रांस बोल्लाक की पुस्तक 'मोब मीडिया' में किया गया है। उनके अनुसार अमेरिका में सोशल मीडिया कंपनियाँ अनुचित रूप से संरक्षित हैं। यह प्रावधान मूल रूप से व्यक्तियों की रक्षा के लिए लाया गया था, न कि बड़े कॉरपोरेट संगठनों की। आज सोशल मीडिया कंपनियाँ विज्ञापन और एल्गोरिदम के माध्यम से अधिकतम लाभ अर्जित करने के उद्देश्य से प्रासंगिक और ट्रेंडिंग जानकारी को बढ़ावा देती हैं चाहे वह सत्य हो या भ्रामक। इसी विमर्श पर केंद्रित इस पुस्तक में कुल सात अध्यायों में विवेचन प्रस्तुत है।

आज के मीडिया विमर्श में मीडिया की व्यापक और बहुआयामी आलोचना देखी जाती है, हालाँकि कुछ स्थानों पर इसके मौजूदा स्वरूप के समर्थन की आवाज़ भी सुनाई देती है। भूमंडलीकरण, उदारीकरण और बाज़ारीकरण जैसी नीतियों और घटनाओं के चलते मीडिया के व्यवसायीकरण और उससे जुड़े विभिन्न नकारात्मक प्रभावों की आलोचना काफी हद तक उचित प्रतीत होती है। इस क्षेत्र में परंपरागत मिशनरी भावना धीरे–धीरे लुप्त होती जा रही है और मीडिया व्यापार–केंद्रित व्यवस्था का रूप लेता जा रहा है। इसे केवल व्यावसायिक लाभ की मानसिकता से संचालित होने से बचाना ही इस विमर्श का मूल उद्देश्य है।

इस चिंतन को पुस्तकों और लेखों के माध्यम से संरक्षित करना एक सकारात्मक प्रयास है। सर्वेक्षण वर्ष के दौरान इस विमर्श को किसी हद तक बल मिला है हालाँकि अभी भी गंभीर और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से अधिक गहराई से अध्ययन करने की आवश्यकता है।

मीडिया शिक्षण–प्रशिक्षणपरक कृतियाँ

विगत चार–पाँच दशकों में मीडिया के क्रांतिकारी विकास के आलोक में

मीडिया–क्षेत्र के लिए बड़ी संख्या में ऐसे जनबल की आवश्यकता होती है जिनके पास मीडिया कार्यों के लिए अपेक्षित विशिष्ट कौशल हो। अतः मीडिया के विभिन्न क्षेत्रों के लिए विभिन्न पाठ्यक्रमों का विकास हुआ है। विभिन्न उच्चतर शिक्षा संस्थानों यथा विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों के साथ–साथ मीडिया केंद्रों के अपने प्रशिक्षण केंद्रों का भी विकास हुआ है। पत्रकारिता, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, नया मीडिया, दृश्य संचार, विभिन्न संचार माध्यमों से संबंधित विभिन्न पाठ्यक्रमों के स्नातक, स्नातकोत्तर एवं शोध–उपाधियों के अलावा डिप्लोमा, स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रमों के संचालन की व्यवस्था है। पत्रकारिता विषयक अलग से विश्वविद्यालय भी संस्थापित हैं। इन तमाम संस्थानों में शिक्षण–प्रशिक्षण कार्यों के लिए पाठ्य–पुस्तकों, संदर्भ व सहायक ग्रंथों की माँग होती है। इस माँग की पूर्ति के लिए उपयोगी पुस्तकों का प्रकाशन हर वर्ष हो रहा है। भले ही पाठ्यक्रम में शामिल करने के लक्ष्य से लेखन न होने के बावजूद कतिपय पुस्तकों का पाठ्यक्रम के अनुरूप विषयों के साथ लेखन किया जाता है। हिंदी में मीडिया शिक्षण–प्रशिक्षणपरक विषयों की स्तरीय पुस्तकों की माँग भी लगातार बढ़ रही है।

वर्ष 2024 के दौरान पत्रकारिता व मीडिया विषयक शिक्षणोपयोगी दो दर्ज़न से अधिक कृतियाँ सामने आई हैं। इन पुस्तकों का लेखन भले ही केवल संबंधित विषय पर केंद्रित होकर नहीं लिखा गया हो, लेकिन उनकी सामग्री छात्रोपयोगी भी है। ऐसी तमाम पुस्तकों के उनमें वर्णित विषय–वस्तु के आधार पर वर्गीकरण में पत्रकारिता, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, जनसंचार, मास मीडिया, हिंदी पत्रकारिता, साहित्यिक पत्रकारिता, मीडिया के लिए सामग्री उत्पादन एवं सृजन कौशल, मीडिया संबंधी शोध आदि वर्गों की पुस्तकों की संक्षिप्त चर्चा या उल्लेख आगे प्रस्तुत है –

आनंद प्रधान की पुस्तक 'न्यूज़ चैनलों का जनतंत्र, 'दृश्यांतर' के शीर्षक से अजित राय की पुस्तक, 'भूमण्डलीकरण : मीडिया की आचार संहिता' के शीर्षक से अमित कुमार विश्वास की पुस्तक, 'उत्तर–सत्यवाद' के शीर्षक से विवेक सिंह की पुस्तक के नवीन संस्करण प्रकाशित हुए हैं।

'मीडिया और समाज में ट्रांसजेंडर प्रतिनिधित्व का विमर्श' पर केंद्रित डॉ. संतोष कुमार तथा डॉ. नरेश कुमार गौतम की पुस्तक प्रकाशित हुई है। मीडिया में अल्पसंख्यक विमर्श की दृष्टि से यह उल्लेखनीय प्रकाशन है ।

सामाजिक माध्यमों की प्रबलता के क्रम में कई पुस्तकें सामाजिक माध्यमों पर केंद्रित हो रही हैं। 'सोशल मीडिया पुनर्प्राप्ति और सुरक्षा' के शीर्षक से रेजिस सी. मौर्य की पुस्तक हिंदी संस्करण, 'सोशल मीडिया से कमाई के तरीके : सफलता की रणनीतियाँ' के शीर्षक से संजीव राउत की पुस्तक, 'लघु व्यवसायों के लिए सोशल मीडिया विपणन' (नए ग्राहक कैसे प्राप्त करें, अधिक धन कमाएँ और भीड़ से अलग

रहें) के शीर्षक से जॉन लॉ की पुस्तक का हिंदी संस्करण, 'सोशल मीडिया से पैसे कमाने के तरीके' शीर्षक से मानस रंजन की पुस्तक, कविता भाटिया की पुस्तक 'सोशल मीडिया वर्चुअल से वास्तविकता' आदि उल्लेखनीय हैं। सिनेमा विषयक अनुशीलन पर केंद्रित 'वो सुबह कभी तो आएगी' शीर्षक से चित्रा प्रसाद की पुस्तक और राजेश कुमार की पुस्तक 'हिंदी सिनेमा एक अध्ययन' उल्लेखनीय हैं।

मीडिया के लिए सामग्री–सृजन एवं उत्पादन कौशल–संबंधी चिंतन की दृष्टि से भी कुछ पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। एस. सी. पंत की पुस्तक 'मुद्रण कला एवं प्रेस कानून' को तक्षशिला प्रकाशन ने प्रकाशित किया है। मुद्रण माध्यम के रूप में पत्रकारिता की गतिविधियों के लिए 'प्रेस' के नाम की रूढ़ संज्ञा काफी समय से हिंदी में प्रचलित है। अख़बारों के माध्यम से लोकचेतना जागृत करने की पत्रकारिता की गतिविधियों पर पकड़ बनाए रखने के लिए सरकार ने कई कानून बनाए हैं। भारत में अंग्रेज़ों के दौर में पत्रकारिता विकसित हुई थी। भारतीय भाषाओं की पत्रकारिता की वजह से अंग्रेज़ी सत्ता जिन चुनौतियों और खतरों को सामना कर रही थी, उसी का परिणाम वर्नाकुलर प्रेस अधिनियम था। कालांतर में ऐसे कई कानून बनाए गए हैं। मुद्रण तंत्र संबंधी कई तकनीकी पहलुओं के अलावा प्रेस कानूनों का आकलन इस पुस्तक की विषयवस्तु है। पत्रकारिता के विद्यार्थियों के लिए उपयोगी पुस्तक के रूप में इस प्रकाशन की प्रासंगिकता है। 'वीडियो उत्पादन और संपादन यूट्यूब' के शीर्षक से भी एक पुस्तक प्रकाशित हुई है। अमोल महाजन की पुस्तक 'मीडिया और संचार : एक व्यापक मार्गदर्शिका : पत्रकारिता और समाचार रिपोर्टिंग' शीर्षक से सामने आई है।

शिक्षण–प्रशिक्षण की दृष्टि से प्रकाशित हिंदी पत्रकारिता, मीडिया, संचार, विज्ञापन, जनसंपर्क, नव प्रौद्योगिकी आदि पर केंद्रित कुछ और पुस्तकों में प्रो. ओम प्रकाश सिंह की पुस्तक 'संचार के मूल सिद्धांत', डॉ. अजय कुमार सिंह की पुस्तक 'मीडिया की बदलती भाषा', 'संचार शोध और मीडिया' के शीर्षक से धनंजय चोपड़ा की पुस्तक, डॉ. मुक्तिनाथ झा और सुधांशु श्रीवास्तव की पुस्तक 'विज्ञापन और जन संपर्क', परिमल कुमार की पुस्तक 'रिपोर्टर ऑन द ग्राउंड', शशिकांत मिश्र की पुस्तक 'मीडिया लाइफ', सतीश कुमार राय की पुस्तक 'हिंदी–पत्रकारिता के प्रतिमान', 'न्यूज़ चैनलों का जनतंत्र' शीर्षक से आनंद प्रधान की पुस्तक, अजित राय की पुस्तक 'दृश्यांतर', अमित कुमार विश्वास की पुस्तक 'भूमंडलीकरण : मीडिया की आचार संहिता', सिनेमा पर केंद्रित पुस्तकों में धर्मेंद्र नाथ ओझा की पुस्तक 'हिंदुस्तानी साइलेंट सिनेमा', डॉ. सुनील बापु बनसोडे की 'साहित्य, समाज और हिंदी सिनेमा', प्रो. रमा की पुस्तक 'सिनेमा और स्त्री', मृदुला पंडित की पुस्तक 'सिनेमा और यथार्थ', कृत्रिम बुद्धिमत्ता पर केंद्रित डॉ. सुनील कुमार शर्मा की पुस्तकें 'आर्टिफिशियल इंटलिजेंसः एक अध्ययन' तथा 'चैट जीपीटीः एक अध्ययन' आदि उल्लेखनीय हैं।

पत्रकारिता के इतिहास और परंपरा पर केंद्रित पुस्तकें

पत्रकारिता के इतिहास लेखन की लंबी परंपरा है। रामरतन भटनागर जी ने अपना शोधकार्य 'The Rise and Growth of Hindi Journalism' भारत की आज़ादी के पूर्व तक ही प्रस्तुत किया था। उनके इस बृहद् इतिहास में 1826 से 1945 तक की हिंदी पत्रकारिता का विस्तृत, अनुसंधानपरक विश्लेषण–विवेचन प्रस्तुत किया गया है। भटनागर जी ने अपनी इस पुस्तक में अपने पूर्व के जिन इतिहासकारों के नामों का उल्लेख किया है, उनमें बी. राधाकृष्ण दास, बी. बालमुकुंद गुप्त, गार्सा दा तासी, पं. रामचंद्र शुक्ल, डॉ. रमाशंकर शुक्ल 'रसाल', नंदकुमार देवशर्मा, पं. विष्णुदत्त शुक्ल, बी. एस. ठाकुर, सुशील कुमार पांडेय, कमलापति शास्त्री, पुरुषोत्तमदास टंडन, प्रेमनारायण टंडन आदि शामिल हैं। लगातार इतिहास को अद्यतन करने की भी आवश्यकता है। ऐसी आवश्यकता की पूर्ति की दिशा में निर्देशिकाओं, संग्रहों, सर्वेक्षणों की बड़ी भूमिका होती है। इस दिशा में समय–समय पर कई प्रयास हुए हैं। इतिहास लेखन की इस लंबी परंपरा के क्रम में सर्वेक्षण वर्ष के दौरान कुछ उल्लेखनीय कृतियाँ प्रकाशित हुई हैं जिनकी इतिहास की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण भूमिका है।

राजकमल प्रकाशन की ओर से मृणाल पांडे की पुस्तक 'हिंदी पत्रकारिता एक यात्रा' शीर्षक पुस्तक के रूप में हिंदी में अनूदित संस्करण हर्ष रंजन ने प्रस्तुत किया है। इस पुस्तक में हिंदी की यात्रा, हिंदी अख़बार के कारोबार, डिजिटल मीडिया, विस्तारवाद, न्यू मीडिया और पारिस्थितिकी सहित कोविड के बाद के काल में मीडिया पर विवेचन प्रस्तुत है।

सामयिक प्रकाशन द्वारा अच्युतानंद मिश्र के संपादन में 'हिंदी के प्रमुख समाचारपत्र और पत्रिकाएँ' चार खंडों में प्रकाशित हुई है। हिंदी पत्रकारिता के इतिहास संवर्धन में यह पुस्तक उल्लेखनीय है। प्रथम खंड में साप्ताहिक 'हिंदुस्तान', 'धर्मयुग', 'दिनमान' और 'रविवार' के योगदान के कई आयामों का आकलन प्रस्तुत है जबकि द्वितीय खंड में 'आज', 'हिंदुस्तान', 'दैनिक नवज्योति' और 'नवभारत' दैनिकों का अनुशीलन प्रस्तुत है। तृतीय खंड में 'नवभारत' टाइम्स, ' नई दुनिया', 'स्वतंत्र भारत', 'दैनिक जागरण' और 'अमर उजाला' की चर्चा है। चतुर्थ खंड में 'राजस्थान पत्रिका', 'युगधर्म', 'दैनिक भास्कर', 'देशबंधु', 'स्वदेश' और 'प्रभात खबर' पर केंद्रित विभिन्न लेखकों के अभिमत हैं। हिंदी के प्रतिष्ठित व प्रचलित अख़बारों, पत्रिकाओं पर यह विस्तृत आकलन निश्चित ही स्वागत योग्य है।

'अंग्रेजी राज और हिंदी की प्रतिबंधित पत्रकारिता' शीर्षक से प्रकाशित संतोष भदौरिया की पुस्तक में संघर्ष और बंधन, जेल–जब्ती–जुर्माना, देश–दुनिया, पग–पग प्रगतिवाद, कहन–विस्तार आदि पर विवेचन प्रस्तुत है जिससे इन अख़बारों के ऐतिहासिक महत्व और भूमिका के कई आयाम स्पष्ट हो जाते हैं।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास द्वारा प्रकाशित जवाहर कर्नावट की पुस्तक 'विदेशों में हिंदी पत्रकारिता' (27 देशों की हिंदी पत्रकारिता का सिंहावलोकन) का चार अध्यायों में विषय–विवेचन किया गया है। मेहनत से दस्तावेजीकृत इस पुस्तक की प्रस्तावना विजयदत्त श्रीधर जी (पद्मश्री) ने लिखी है।

'तीन श्रेष्ठ कवियों का हिंदी पत्रकारिता में अवदानः अज्ञेय, रघुवीर सहाय, धर्मवीर भारती' के शीर्षक से अच्युतानंद मिश्र जी की एक पुस्तक सामने आई है जिसमें साहित्यिक पत्रकारों द्वारा हिंदी पत्रकारिता की प्रतिष्ठा बढ़ाने के ऐतिहासिक योगदान का विशिष्ट आकलन प्रस्तुत है। इस पुस्तक में प्रकाशित अच्युतानंद जी का यह कथन तीन कवि–पत्रकारों के योगदान के आकलन की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है– "स्वाधीन भारत में भारतीय भाषाओं की पत्रकारिता को व्यवस्था विरोध की सशक्त भाषा, भाषा के संस्कार, संस्कारों के लिए संघर्ष और वैचारिक आधार देने का काम भी ऐसे संपादक–पत्रकारों ने किया था जो मूलतः साहित्य से पत्रकारिता में आए थे। इन्होंने साहित्य के साथ–साथ पत्रकारिता को भी अपनी अभिव्यक्ति का साधन बनाया था।"

हिंदी पत्रकारिता शीघ्र ही अपने द्विशताब्दी उत्सव की ओर अग्रसर हो रही है। उसके उज्ज्वल इतिहास को सुसमृद्ध करने के उद्देश्य से किए जा रहे ये तमाम प्रयास स्वागत योग्य हैं।

मीडिया भाषिक विमर्श

मीडिया में भाषा–विमर्श एक अत्यंत प्रासंगिक मुद्दा है। इस पर केंद्रित डायमंड पॉकेट बुक्स द्वारा प्रकाशित और डॉ. शिवशंकर अवस्थी द्वारा संपादित पुस्तक 'मीडिया और भाषा' सामायिक भाषा–विमर्श की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। इस पुस्तक में कुल 41 आलेख हैं। कानपुर में आयोजित ऑथर्स गिल्ड ऑफ इंडिया की संगोष्ठी की कार्यवाही के रूप में प्रकाशित इस पुस्तक में मीडिया से जुड़े व्यक्तियों के अलावा शिक्षकों और लेखकों के भी विचार शामिल हैं। प्रकाशन विभाग से जुड़े प्रतिष्ठित पत्रकार (पद्मश्री से अलंकृत) स्व. (हाल ही में स्वर्ग सिधारे) डॉ. श्याम सिंह शशि जी का एक लघु लेख 'हिंदी, मीडिया तथा कुछ संस्मरण' शीर्षक से शामिल हैं जिसमें उन्होंने विचार दिया है कि "हिंदी को राष्ट्रीय स्वरूप देने का सर्वाधिक श्रेय हिंदीतर विभूतियों को जाता है।" संपादक डॉ. अवस्थी का मानना है कि "अगर उस काल को याद करें जब हिंदी पत्रकारिता में राजेंद्र माथुर–राजेंद्र अवस्थी–राजेंद्र यादव जैसे संपादक/लेखक थे। उनके दौर में हिंदी पत्र–पत्रिकाओं में अंग्रेज़ी शब्दों के प्रयोग की मनाही थी। ऐसा नहीं है कि वे अंग्रेज़ी विरोधी थे, वे अंग्रेज़ी के अच्छे जानकार थे लेकिन हिंदी लेखन में अंग्रेज़ी शब्दों के प्रयोग को उसी तरह अनुचित मानते थे जिस तरह अंग्रेज़ी लेखन में हिंदी शब्दों का प्रयोग। पर अब स्थिति बदल गई है। बड़े अफसोस की बात है कि अब 'धर्मयुग' 'कादंबिनी' और 'दिनमान' का जमाना नहीं रहा। उनके जैसे

पाठक भी नहीं रहे।"

क्षेत्रीय पत्रकारिता विवेचन

'उत्तर प्रदेश में क्षेत्रीय प्रिंट मीडिया और पत्रकारिता शिक्षण' शीर्षक से डॉ. अभिनव और निखिल रस्तोगी की पुस्तक उत्तर प्रदेश में क्षेत्रीय प्रिंट मीडिया और पत्रकारिता शिक्षण से संबंधित विभिन्न पहलुओं को विस्तार से प्रस्तुत करती है। इस पुस्तक में उत्तर प्रदेश में प्रिंट मीडिया के ऐतिहासिक, सामाजिक और प्रशासनिक पहलुओं को विस्तृत रूप से प्रस्तुत किया गया है। उत्तर प्रदेश की प्रशासनिक और सामाजिक संरचना के अनुशीलन के प्रयास के रूप में उत्तर प्रदेश राज्य की प्रशासनिक व्यवस्था, जनसंख्या, धार्मिक और भाषाई परिदृश्य, उच्च न्यायालय (इलाहाबाद), सिविल सचिवालय, विधान परिषद्, विधानसभा, राज्यसभा और लोकसभा सीटों से जुड़े प्रमुख बिंदुओं पर प्रकाश डाला गया है। उत्तर प्रदेश के अठारह मंडलों में प्रिंट मीडिया की स्थिति के अध्ययन के क्रम में वाराणसी, फैज़ाबाद, आगरा, आजमगढ़, कानपुर, चित्रकूट, झांसी, बरेली, बस्ती, मिर्जापुर, मुरादाबाद, मेरठ, लखनऊ, बुरहानपुर, गोरखपुर, अलीगढ़ मंडल आदि क्षेत्रों में प्रकाशित स्थानीय समाचार पत्र–पत्रिकाओं और राष्ट्रीय प्रिंट मीडिया के नामों व उनकी प्रसार संख्या का आकलन प्रस्तुत है। यह पुस्तक उत्तर प्रदेश में प्रिंट मीडिया की व्यापकता, इसकी विकास यात्रा, सरकार के साथ संबंध और स्थानीय से राष्ट्रीय स्तर तक इसके प्रभाव का समग्र विश्लेषण प्रस्तुत करती है। पत्रकारिता के छात्रों, शोधकर्ताओं और मीडिया क्षेत्र में रुचि रखने वालों के लिए यह एक उपयोगी पुस्तक है।

मीडिया संबंधी सांस्कृतिक विमर्श

आज मीडिया सांस्कृतिक अभिव्यक्ति और विमर्श का महत्त्वपूर्ण मंच बन चुका है। यह न केवल संस्कृति का संरक्षण और प्रचार करता है, बल्कि इसमें नये सांस्कृतिक रूपों का निर्माण भी होता है। हालाँकि, यह ज़रूरी है कि मीडिया सांस्कृतिक विविधता और स्थानीय परंपराओं को सुरक्षित रखते हुए संतुलित विमर्श को आगे बढ़ाए।

प्रभात प्रकाशन द्वारा प्रकाशित सुभाष मिश्र की पुस्तक 'मीडिया और रंगमंच' एक ऐसी पुस्तक है जो इन दोनों क्षेत्रों से जुड़े कई मुद्दों और सवालों पर विचार करती है। यह पुस्तक दो भागों में विभाजित है। पहले भाग में रंगमंच संबंधी लेखक की चिंता, संवेदना और सरोकार प्रकट होते हैं, वहीं दूसरे भाग में मीडिया की स्थिति और उसकी चुनौतियों पर गहरी विचारशीलता देखी जा सकती है। लेखक की दृष्टि में मीडिया समाज और राष्ट्र की दिशा निर्धारित करने वाला एक शक्तिशाली नियंत्रक बन चुका है। मीडिया और रंगमंच के विविध आयामों पर केंद्रित कुल 29 आलेख इस पुस्तक में शामिल हैं। मीडिया के सांस्कृतिक विमर्श के कुछ संवेदनात्मक पक्षों पर चिंतन इस पुस्तक में हम देख सकते हैं।

मीडिया और रंगमंच दोनों समाज में सूचना, विचार, अभिव्यक्ति और जनचेतना के वाहक रहे हैं। जहाँ मीडिया समाचार, डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म और दृश्य–श्रव्य माध्यमों से तथ्यों और घटनाओं को जनमानस तक पहुँचाता है, वहीं रंगमंच अपनी नाटकीय प्रस्तुतियों और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के माध्यम से सामाजिक मुद्दों को गहराई से समझाने और जनता को जागरूक करने का कार्य करता है। रंगमंच और मीडिया एक–दूसरे के पूरक हैं। जहाँ मीडिया रंगमंच को व्यापक दर्शकों तक पहुँचाने का मंच प्रदान करता है, वहीं रंगमंच मीडिया को गहराई और कलात्मक अभिव्यक्ति से समृद्ध करता है। दोनों मिलकर समाज में सांस्कृतिक, राजनीतिक और सामाजिक जागरूकता बढ़ाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

हिंदी पत्रकारिता के साथ–साथ हिंदी की जननी मानी जाने वाली संस्कृत भाषा में भी आज पत्रकारिता विकसित हो रही है। 'संस्कृत पत्रकारिता' शीर्षक से कथ्य विमर्श पर केंद्रित डॉ. शुभंकर मिश्र की पुस्तक प्रकाशित हुई है जिसमें संस्कृत पत्रकारिता के कथ्य और भाषिक विमर्श शामिल हैं। इस पुस्तक में संस्कृत भाषा विमर्श के साथ–साथ संस्कृत पत्रकारिता के ऐतिहासिक परिदृश्य, संस्कृत समाचार–पत्र, पत्रिकाएँ, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया संबंधी आकलन सहित संस्कृत के संपादकों के परिचयात्मक योगदान पर भी विवेचन प्रस्तुत है। संस्कृत भाषा भारतीय संस्कृति की अमूल्य धरोहर है, अतः संस्कृत पत्रकारिता का विकास भारतीय सांस्कृतिक जागरण का प्रयास है।

मीडिया फिक्शन की भी एक पुस्तक 'मीडिया रेवोल्यूशन 2030' के शीर्षक से सामने आई है जिसके लेखक हैं विकास शर्मा।

मीडिया समग्र, कोश और निर्देशिकाएँ

बहुभाषी भारत की भाषा सांख्यिकी के आधार पर यह स्पष्ट है कि हिंदी पत्रकारिता सबसे विस्तृत है। हिंदी भारत के विशाल भू–भाग में व्यवहार की भाषा है। हिंदी पत्रकारिता द्विशताब्दी उत्सव की ओर अग्रसर है। दो सदियों में भारतीय पत्रकारिता संख्यात्मक दृष्टि से अंग्रेज़ी की पत्रकारिता की तुलना में एक बृहद् एवं व्यापक क्षेत्र के रूप में विकसित है। हिंदी पत्रकारिता के इतिहास को निरंतर अक्षरबद्ध करते रहने के लिए पत्रकारिता संबंधी कोशों, निर्देशिकाओं, सर्वेक्षणात्मक आलेखों की विशिष्ट भूमिका होती है। पत्रकारिता संबंधी सर्वेक्षणात्मक आलेखों, पुस्तकों, मीडिया समग्रों, कोशों के प्रकाशन की लंबी परंपरा है। कई शोध–पत्रिकाएँ इस दिशा में अपनी भूमिका निभा रही हैं। संग्रहालयों और पुरालेखों की भी विशिष्ट भूमिका होती है जहाँ विभिन्न प्रकाशनों, शोध–सामग्री को सुरक्षित करने का प्रयास किया जाता है जिससे अनुसंधान कार्यों के लिए कई आधार मिल जाते हैं। आफ़ताब आलम के संपादन में पत्रकारिता कोशों का प्रकाशन लगातार होता रहा है। वर्ष 2024 में पत्रकारिता कोश प्रकाश में नहीं आ पाया।

मीडिया विषयक पत्रिकाएँ/मीडिया पर केंद्रित विशेषांक

मीडिया प्रोफ़ेशनलों के आत्मचिंतन और आत्ममंथन के प्रकल्प के रूप में प्रकाशित जनसंचार के सरोकारों पर केंद्रित त्रैमासिक पत्रिका 'मीडिया विमर्श' का अक्तूबर–दिसंबर 2024 का विशेषांक वरिष्ठ पत्रकार और संपादक उमेश उपाध्याय के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर केंद्रित अंक के रूप में प्रकाशित किया गया है। स्व. 'उपाध्याय जी के स्मरण' पर केंद्रित इस विशेषांक में कुल 20 आलेख उपाध्याय जी को समर्पित हैं जिनमें तीन अंग्रेज़ी के आलेख हैं, शेष हिंदी के हैं। इसके अलावा 60 और प्रबुद्ध व्यक्तियों के संस्मरण शामिल हैं जिसमें कई प्रमुख राजनेताओं, मीडिया व्यावसायियों, शिक्षा जगत के विद्वानों आदि ने अपने विचार प्रकट किए हैं। अपने संपादकीय में प्रो. संजय द्विवेदी ने लिखा है "रमेश उपाध्याय हमारे समय के अप्रतिम बुद्धिजीवी, प्रखर वक्ता और सच को सलीके के साथ कहने वाले पत्रकार थे। उनके निधन से हिंदी मीडिया का एक सितारा अस्त हो गया। वे वैश्विक मीडिया के भारत विरोधी चेहरे को उजागर करने वाले साहसी पत्रकारों में थे। अनुभवी पत्रकार व संचारक के रूप में उमेश जी ने मीडिया की हर विधा में काम किया। टीवी पत्रकारिता से प्रारंभ कर वे ऑनलाइन माध्यमों और कारपोरेट कम्युनिकेशन के भी सिद्ध हस्ताक्षर बने। श्री उपाध्याय ने 'प्रेस ट्रस्ट ऑफ इंडिया', 'ऑल इंडिया रेडियो', 'डीडी न्यूज', 'नेटवर्क 18', 'जनमत टीवी' और 'जी न्यूज' सहित कई नेटवर्क के साथ काम किया।" यह विशेषांक स्व. रमेश उपाध्याय के व्यक्तित्व, सेवाएँ और वैचारिकी के कई आयामों को उजागर करता है। मीडिया विमर्श के इस अंक में उमेश उपाध्याय के व्यक्तित्व और कृतित्व पर सर्वश्री डॉ. सच्चिदानंद जोशी, प्रो.गोविंद सिंह, प्रो. राकेश गोस्वामी सहित कई विद्वानों ने अपने उद्गार प्रकट किए हैं।

'समागम' पत्रिका (संपादक – मनोज कुमार) का फरवरी, 2024 का अंक नया दौर का मीडिया, चुनौती और संभावना पर केंद्रित रहा। मीडिया शोध पर केंद्रित मासिक पत्रिका 'जनमीडिया' (संपादक– अनिल चमाड़िया) के वर्ष 2024 के दौरान प्रकाशित अंकों में पत्रकारिता के कई आयामों पर शोधपरक आलेख प्रकाशित हुए हैं।

2025 के आरंभ में विमोचित पुस्तकें

वर्ष 2024 के दौरान लेखनबद्ध होकर 2025 के आरंभ में विमोचित पत्रकारिता/मीडिया, नव प्रौद्योगिकी विषयक कृतियों की संख्या लगभग एक दर्जन है। 'मीडिया प्रबंधन की एक पाठ्यपुस्तक' के शीर्षक से तेजस फड़के की पुस्तक जनवरी, 2025 में सामने आई है जिसमें मीडिया की अवधारणा को स्पष्ट करने के साथ–साथ मीडिया प्रबंधन के विभिन्न आयामों पर विस्तृत विवेचन मीडिया के विद्यार्थियों के पठन हेतु किया गया है।

नयी प्रौद्योगिकी और नव माध्यम संबंधी साहित्य

वर्तमान डिजिटल युग की अपेक्षाओं के आलोक में हिंदी मीडिया भी अपनी भूमिका बखूबी निभा रहा है। हिंदी के कई अख़बारों के ऑनलाइन समाचार पोर्टल सक्रिय हैं। डिजिटल परिवेश में विकसित तकनीकी सुविधाओं का फ़ायदा उठाते हुए कई पोर्टल हिंदी के अलावा कई भारतीय भाषाओं तथा अंग्रेज़ी में भी समाचार व फीचर परोस रहे हैं। नागरिक पत्रकारिता के विकास में सोशल मीडिया की बड़ी भूमिका है। बड़ी संख्या में नागरिक सामाजिक माध्यमों में कई प्रकार से समाचार संप्रेषण की गतिविधियों में सक्रिय नज़र आते हैं। समाचार पोर्टलों में सोशल मीडिया के माध्यम से समाचार आदान–प्रदान की गतिविधियाँ प्रबल होती जा रही हैं। मोबाइल अनुप्रयोगों (ऐप्स) के साथ–साथ सामाजिक चैनलों के माध्यम से पल–पल समाचार परोसने के अलावा ई–अख़बार भी पोर्टल के माध्यम से समाचार उपलब्ध करा रहे हैं। छोटे अख़बार भी इन मामलों में सक्रिय हैं। इनके अलावा यू–ट्यूब पर भी वीडियो समाचार देखने का अवसर प्रदान कर रहे हैं। फेसबुक, एक्स (ट्विटर), इंस्टाग्राम आदि सामाजिक माध्यम भी समाचार संप्रेषण की गतिविधियों में अपने ढंग से सक्रिय हैं। जन भागीदारी से यह सक्रियता स्पष्ट होती है। बड़े अख़बारों के अपने टीवी चैनल होने से मुद्रित माध्यम, इलेक्ट्रॉनिक माध्यम और वेबमाध्यम में उनकी सक्रियता नज़र आती है। कई नागरिक पत्रकार ब्लॉगों, यू–ट्यूब चैनलों और अन्य सामाजिक माध्यमों में अपनी सकारात्मक, नकारात्मक सक्रियता दर्शा रहे हैं। सामाजिक माध्यमों में कई ऐसी भी गतिविधियाँ हो रही हैं जिनमें झूठी ख़बरें परोसते हुए उन्हें वायरल करते रहते हैं, अतः इनकी सच्चाई की पुष्टि के लिए व्यवस्थाएँ विकसित करने की आवश्यकता पड़ गई है। प्राकृतिक भाषा संसाधन के बृहत् भाषा प्रतिरूपों की वजह से विकसित प्रजनक कृत्रिम बुद्धि (Generative AI) की सुविधाओं के माध्यम से समाचार डेटा विश्लेषण, संश्लेषण संभव हो पा रहा है मगर उसकी भी कई सीमाएँ हैं।

नव प्रौद्योगिकी सूचनाओं का भंडारण, पुनःप्राप्ति, संसाधन, प्रदर्शन, प्रसारण की सुविधाओं के साथ–साथ पल भर में विश्वव्यापी बनाने की क्षमता के साथ विकसित हुई है। व्यापक भाषिक मॉडलों के विकास के परिणामस्वरूप विकसित प्रजनक कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने मीडिया जगत की गति को असीमित कर दिया है। जो सूचना प्रौद्योगिकी एवं संचार प्रौद्योगिकी नव प्रौद्योगिकी के रूप में सामने आई थी, वही कृत्रिम बुद्धिमत्ता के साथ जुड़कर दुनिया की रीति, नीति, गति व प्रगति को नए रूप में परिभाषित कर रही है। आज परंपरागत मीडिया की उपस्थिति के बावजूद वह कई रूप में नव मीडिया से प्रभावित है और परंपरागत मीडिया के उत्पाद (सूचना एवं समाचार) को परोसने का काम नया मीडिया तेजी से कर रहा है। इस नये मीडिया की पहचान केवल इसकी तकनीकी उन्नति से ही नहीं होती, बल्कि इसके विशिष्ट गुणों को समझना भी आवश्यक

है। इनमें से एक प्रमुख विशेषता है बहुमाध्यमीय क्षमता जो पाठ, चित्र, ध्वनि, दृश्य और अनुप्राणन (एनिमेशन) को एक साथ प्रस्तुत करने की क्षमता प्रदान करती है। इसके अलावा, नये मीडिया की एक और महत्त्वपूर्ण विशेषता 'आभासी यथार्थ' (Virtual Reality) है जो डिजिटल तकनीक के माध्यम से अनुभव और दृश्य जगत में क्रांतिकारी परिवर्तन ला रहा है। हाल के वर्षों में, इस क्षेत्र में संवर्धित वास्तविकता (**Augmented Reality -AR),** आभासी वास्तविकता (Virtual Reality -VR) और मिश्रित वास्तविकता (Mixed Reality -MR) जैसी अत्याधुनिक तकनीकों का विकास हुआ है। इन नवाचारों ने दृश्य और अनुभव की दुनिया में अभूतपूर्व क्रांति ला दी है जिससे डिजिटल और भौतिक जगत का संलयन पहले से कहीं अधिक प्रभावशाली और वास्तविक प्रतीत होता है।

कंप्यूटरीकृत परिवेश प्रारंभ में गति, विश्वसनीयता और गुणवत्ता जैसे कुछ गुणों से विकसित माना जाता था। हालाँकि, सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (ICT) के विकास के साथ, इन विशेषताओं में कई नये गुण भी जुड़ गए हैं। शैक्षिक दृष्टिकोण से इस क्षेत्र में नवीन विशेषताओं की पहचान इन पंक्तियों के लेखक द्वारा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) द्वारा वित्त पोषित एक बृहद् शोध परियोजना के दौरान की गई। वर्तमान समय में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के लगभग सत्रह प्रमुख अभिलक्षणों की गणना की जा सकती है, जो इस प्रकार हैं– अधिगम क्षमता (Learning Ability), अंतः क्रियात्मकता (Interactivity), बहुमाध्यमीय क्षमता (Multimedia Capability), रचनात्मकता (Creativity), सौंदर्यबोधपरकता (Aesthetic Sensibility), विश्लेषणात्मक क्षमता (Analytical Ability), समस्या समाधान की क्षमता (Problem-Solving Ability), स्वचालन (Automation), संचार एवं संप्रेषण (Communication & Transmission), नेटवर्किंग (Networking), सूचना भंडारण (Information Storage), सूचना खोज एवं पुनः प्राप्ति (Information Retrieval & Search), गति (Speed), विश्वसनीयता (Reliability), सुनम्यता (Flexibility), क्रमादेशिता (Programmability) और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence)। इन अभिलक्षणों ने सूचना तकनीक से विकसित नव प्रौद्योगिकी को अधिक प्रभावी, उपयोगकर्ता–केंद्रित और बहुआयामी बना दिया है जिससे यह शिक्षा, अनुसंधान, उद्योग और दैनिक जीवन में व्यापक रूप से उपयोगी सिद्ध हो रही है। नव प्रौद्योगिकी ने परंपरागत मुद्रित पुस्तकों के अलावा ई–पुस्तकों को भी जन्म दिया है जिन्हें कंप्यूटर, मोबाइल सहित डिजिटल साधनों में पढ़ सकते हैं। ई–पुस्तक पठन के लिए भी अलग से साधन उपलब्ध हो गए हैं जिनके लिए विकसित पुस्तक संस्करणों को किंडल संस्करण की संज्ञा दी जा रही है। नव प्रौद्योगिकी से संबंधित पुस्तकें आजकल ई–पुस्तकों के रूप में ही बढ़–चढ़कर प्रकाशित हो रही हैं। मशीनी अनुवाद

की सुविधा का लाभ उठाते हुए कई प्रकाशक अंग्रेज़ी में लिखी गई पुस्तकों का विभिन्न भाषाओं में अनुवाद संस्करण भी उपलब्ध करा रहे हैं।

इस नये परिवेश, नव प्रौद्योगिकी, नया मीडिया आदि विषयों में सर्वेक्षण—वर्ष के दौरान प्रकाशित पुस्तकों का संक्षिप्त आकलन आगे प्रस्तुत है। नयी प्रौद्योगिकी के दायरे में चर्चा की जाने लायक पुस्तकें सर्वेक्षण—वर्ष के दौरान तीन दर्जन से भी अधिक प्रकाशित हुई हैं।

'कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मानवता का भविष्य : अवसर, चुनौतियाँ और भविष्य के लिए तैयारी' शीर्षक से एंजेलियो सिल्वा की पुस्तक का हिंदी संस्करण सामने आया है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता के विकास के क्रम में कई विमर्श फैल रहे हैं, इसी क्रम में यह पुस्तक कृत्रिम बुद्धिमत्ता से उत्पन्न अवसरों, चुनौतियों और भविष्य की तैयारी संबंधी विभिन्न आयामों में विचार—मंथन पर केंद्रित है ।

भाषा के मानक प्रयोग और अपेक्षित विषयों पर अपने विचारों का उत्पादन करने की क्षमता के साथ विकसित प्रजनक कृत्रिम बुद्धिमत्ता का शिक्षण—प्रशिक्षण, व्यापार के अलावा अनुसंधान के क्षेत्र में भी बढ़—चढ़कर प्रयोग होने लगा है। वाएल बदवी की पुस्तक का हिंदी संस्करण 'जनरेटिव एआई टूल्स के साथ खोज में क्रांति' शीर्षक से प्रकाशित हुआ है। आधुनिक प्रवृत्तियों को प्रौद्योगिकी और प्रौद्योगिकी के क्रम में विकसित कृत्रिम बुद्धिमत्ता काफ़ी प्रभावित कर रही है। इन्हीं प्रभावों में अनुसंधान के परिप्रेक्ष्य में कृत्रिम बुद्धिमत्ता पर विवेचन इस पुस्तक का केंद्रीय विषय है।

अमोल महाजन की पुस्तक हिंदी संस्करण 'बेसिक प्रोग्रामिंग गाइड' क्रमादेशन की मूलभूत कुशलताएँ सिखाने की दृष्टि से मार्गदर्शिका के रूप में प्रकाशित हुई है।

थियो सिल्वा की पुस्तक 'दैनिक जीवन में कृत्रिम बुद्धिमत्ताः उत्पादकता बढ़ाने के लिए उपकरण' के शीर्षक से हिंदी संस्करण के रूप में जनवरी, 2024 में सामने आई है।

डॉ. नवनीत शर्मा की पुस्तक 'किशोर विद्यार्थियों पर सोशल मीडिया' किशोर विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार, अध्ययन की आदतों और शैक्षिक उपलब्धियों पर सोशल मीडिया के प्रभाव का विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत करती है। यह न केवल सोशल मीडिया उपयोग के विविध पहलुओं को उजागर करती है, बल्कि स्थानीयता, विद्यालय प्रबंधन, बोर्ड संबद्धता और लिंग के आधार पर तुलनात्मक विश्लेषण भी प्रदान करती है। सोशल मीडिया और किशोर विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार, अध्ययन शैली और शैक्षिक उपलब्धियों के बीच अंतर्संबंध को समझने की दृष्टि से लिखित इस पुस्तक में सोशल मीडिया के प्रभावों का विभिन्न सकारात्मक और नकारात्मक रूपों में वर्गीकरण करके एक व्यापक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया गया है। किशोरों के जीवन में सोशल मीडिया के बढ़ते प्रभाव से उत्पन्न अवसरों और चुनौतियों की गहरी समझ विकसित

करने में यह पुस्तक सहायक है।

विगत वर्षों की तुलना में इस वर्ष उन्हीं नए मुद्दों पर ध्यान देने वाली कृतियाँ सामने आई हैं जिनमें परंपरागत संचार की जगह पल भर में दुनिया भर में समाचार को व्यापक बनाने वाले आधुनिक संचार माध्यमों और प्रणालियों पर चिंतन शामिल है। निश्चित रूप से नव प्रौद्योगिकी का समाज पर गहरा प्रभाव है। मीडिया को संवर्धित करने वाले तमाम आयामों पर आकलन इन कृतियों में मिल पाया है। यह आशा की जा सकती है कि आगामी दिनों में नव माध्यम और नव प्रौद्योगिकी व नये मीडिया पर केंद्रित स्तरीय मानक कृतियाँ सामने आ पाएँगी।

तमाम सीमाओं के बावजूद 2024 के दौरान हिंदी पत्रकारिता एवं नव प्रौद्योगिकी से संबंधित साहित्य विषयक आकलन इस विषय के अध्येताओं के लिए निश्चय ही उपयोगी सिद्ध होगा।

❑❑❑

मैंने तुम्हारी कल्पना की
ताकि दुःख से उबरने के लिए
प्रार्थनाएँ न करनी पड़े
मैंने तुम्हारी कल्पना की
ताकि नींद के लिए
अँधेरे की कामना न करनी पड़े

— मंगलेश डबराल

हिंदी बाल साहित्य

25

डॉ. सुरेंद्र विक्रम

नई कविताः लघुमानव और नैतिक संक्रमण', 'समकालीन बाल साहित्यः परख और पहचान', बालसाहित्यः परंपरा प्रगति और प्रयोग', 'हिंदी बाल साहित्यः विविध परिदृश्य', 'हिंदी बाल साहित्य शोध का इतिहास', 'हिंदी बाल पत्रकारिता का इतिहास', आदि 24 कृतियाँ प्रकाशित। उत्तरप्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ सहित चालीस से अधिक संस्थाओं द्वारा पुरस्कृत/सम्मानित। संप्रति–लखनऊ विश्वविद्यालय से संबद्ध क्रिश्चियन कॉलेज में विभागाध्यक्ष

फ्रांस के सुप्रसिद्ध विद्वान रूसो का कहना है कि– ''बालक का मन शिक्षा की पाठ्यपुस्तक है जिसे उसको पहले पृष्ठ से लेकर अंत तक भली–भाँति अध्ययन करना चाहिए।'' दूसरी ओर आयु वर्ग एवं शिक्षा मनोविज्ञान पर विचार करते हुए मनोवैज्ञानिकों ने इस बात पर बल दिया है कि अवस्था के अनुसार प्रत्येक बालक का अपना पृथक् अस्तित्व होता है। बालक समाज की एक स्वतंत्र इकाई है। उसकी स्वतंत्रता और कोमलता के संबंध में रवींद्रनाथ ठाकुर ने ठीक ही लिखा हैः–

''बालक की प्रकृति में मन का प्रताप बहुत क्षीण होता है। जगत–संसार और उसकी अपनी कल्पना उस पर अलग–अलग आघात करती है। एक के बाद दूसरी आकर उपस्थित होती है। मन का बंधन उसके लिए पीड़ादायक होता है। सुसंलग्न कार्य–कारण सूत्र पकड़कर चीज को शुरू से लेकर आखिर तक पकड़े रहना उसके लिए दुस्साध्य होता है। इसलिए यह कहा जाता है कि बच्चों के लिए लेखन आसान नहीं है। उनके मनोविज्ञान को समझे बिना बालसाहित्य लिखा ही नहीं जा सकता।''

बच्चों की कल्पनाएँ और अनुभव बड़ों से सर्वथा भिन्न होते हैं। यह बात शत–प्रतिशत सही है कि उनकी दुनिया बड़ों की दुनिया से अलग होती है। इसीलिए यह कहा जाता है कि बच्चों के लिए साहित्य लिखने में वही सफल हो सकता है जो बड़प्पन के भार को रत्ती–रत्ती कम कर बच्चों की तरह सरलता, कौतूहल और जिज्ञासा को स्वाभाविक रूप से अपने मन में धारण कर ले।

यह सर्वमान्य सत्य है कि हिंदी बालसाहित्य की एक समृद्ध परंपरा रही है। इसने धीरे–धीरे ही सही लेकिन निश्चित रूप से साहित्य की स्वीकृत विधा के रूप में अपनी पहचान बनाई है। बालसाहित्य लेखन की परंपरा में अनेक बदलाव भी आए हैं। समस्त विधाओं जैसे– कविता, कहानी, नाटक, उपन्यास के साथ–साथ बालजीवनियाँ,

चुटकुले, पहेलियाँ तथा वैज्ञानिक बालसाहित्य आदि का विपुल भंडार भरा पड़ा है। इसके बावजूद आज इक्कीसवीं सदी में बच्चों की जनसंख्या को देखते हुए और भी स्तरीय बालसाहित्य की आवश्यकता महसूस की जा रही है। इसका कारण यह है कि चूँकि साहित्य समाज का दर्पण होता है इसलिए समाज में जो कुछ भी घटित हो रहा है, साहित्य में उसका प्रतिफलन आवश्यक है। बालसाहित्य इसका अपवाद नहीं है।

सन् 2024 में प्रकाशित हिंदी बाल साहित्य

यह सुखद है कि प्रतिवर्ष हिंदी बालसाहित्य की सैकड़ों पुस्तकें प्रकाशित होती हैं लेकिन इसका दूसरा दुखद पहलू भी है कि इनमें से अधिकांश पुस्तकें बच्चों तक नहीं पहुँच पाती हैं। ज्यादातर प्रकाशक गुणा–भाग लगाकर ही पुस्तक प्रकाशन में हाथ आजमाता है। इन विषम परिस्थितियों के बावजूद इस बात से भी इनकार नहीं किया जा सकता है कि पुस्तकें छप रही हैं और पुस्तक मेले भी हो रहे हैं। दिल्ली में तो प्रतिवर्ष अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेला सजता है और मजेदार बात यह है कि खूब भीड़–भाड़ भी होती है। इस बात से भी इनकार नहीं किया जा सकता है कि आज भी कुछ प्रकाशक अपने विवेक से अच्छी पांडुलिपियों को आकर्षक साज–सज्जा के साथ प्रकाशित कर रहे हैं। कई पुस्तक मेलों में भ्रमण करते हुए निजी प्रकाशकों से बातचीत में यह बात भी सामने आई कि पाँच सौ प्रतियों का संस्करण बेचने में उन्हें लगभग एक साल लग जाता रहे। कुछ पुस्तकें तो दो–तीन साल में ही बिक पाती हैं। यह संकट पठनीयता का है या इसके पीछे की कहानी कुछ और ही है।

हर वर्ष की भाँति इस वर्ष भी छपने वाली बालसाहित्य की पुस्तकों में मेरी नजर में अधिकांश बालकहानियाँ और बालकविताएँ ही आई हैं। कुछ बालउपन्यास भी पढ़ने को मिले, बालनाटकों का पूर्व के वर्षों की भाँति टोटा ही रहा। स्फुट बालोपयोगी प्रकाशनों के अंतर्गत भी कुछ पुस्तकें प्राप्त हुईं। कुछ पुस्तकों के नये संस्करण छपे तो देखकर अच्छा लगा। लाख प्रयत्न करने के बावजूद बालसाहित्य की अन्य विधाओं में प्रकाशित पुस्तकें नहीं मिल सकीं। इस बात में भी सच्चाई है कि पूरे देश में छपने वाली बालसाहित्य की पुस्तकों की जानकारी इकट्ठा करना भी बेहद श्रमसाध्य कार्य है। अधिकांश प्रकाशक इस बात में रुचि नहीं लेते कि उनके प्रकाशन की अधिक से अधिक पुस्तकें समीक्षकों/आलोचकों तक पहुँचे। कुछ लेखक मित्र अवश्य अपनी–अपनी पुस्तकें भेजते रहते हैं। कुल मिलाकर इस वार्षिक आकलन के लिए लगभग साल भर सजग/सचेत रहते हुए एकत्र की गई पुस्तकों के बारे में पाठकों को जानकारी देते हुए मुझे संतोष का अनुभव हो रहा है।

बाल कविताएँ

इस वर्ष प्रकाशित रमेश प्रसून की पुस्तक चंदामामा टूर के (चंदामामा दूर के नहीं) में चंदा को लेकर ढेर सारी कल्पनाएँ हैं। चंदा शुरू से ही बच्चों के लिए आकर्षण

का केंद्र रहा है। आकर्षण भी ऐसा–वैसा नहीं बल्कि जबर्दस्त आकर्षण। यही कारण है कि वह बच्चों का मामा है जिसे देखते ही उसके सामने बच्चों की शिकायतों का पिटारा खुलना शुरू हो जाता है। जबसे चंद्रयान–3 का सफल प्रक्षेपण हुआ है उसके रिश्तों में और मजबूती आई है। पूरा देश इस अजूबे को टकटकी लगाए देख रहा है, फिर बच्चे इससे कैसे अछूते रह सकते हैं। उनकी ढेर सारी जिज्ञासाओं को ध्यान में रखकर इस पुस्तक का ताना–बाना बुना गया है। चंदामामा जब तक टूर पर रहेंगे, धरती पर नए–नए संदेश भेजते रहेंगे जिसमें ढेर सारी जिज्ञासाओं का समाधान होगा तो नयी–नयी जानकारियाँ भी मिलेंगी। चार–चार पंक्तियों में पूरी पुस्तक का विन्यास फैला हुआ है। साथ ही कम प्रयोग होने वाले और कठिन शब्दों के अर्थ देकर रचनाकार ने बच्चों के इस पूरे संग्रह को आसान और रोचक बना दिया है।

'तुम गुलाब बन जाओ'– सुकीर्ति भटनागर की 40 बालकविताओं का संग्रह है जिसमें बचपन, सपना, सूरज दादा, सुंदर मन और मन की शक्ति जैसे विषयों पर कविताएँ हैं। प्रकृति, पर्यावरण, ऋतुएँ और पारिवारिक संबंधों पर लिखी गई कविताओं के माध्यम से बच्चों को जोड़कर यह बताने का प्रयास किया गया है कि इन सभी से हमारा गहरा नाता है। अंतिम कविता 'तुम गुलाब बन जाओ' में गुलाब की तरह काँटों के बीच में रहकर अपनी अलग पहचान बनाने पर बल दिया गया है।

किरण सिंह की पुस्तक 'पिंकी का सपना' में उनकी कुछ चुनी हुई बालकविताएँ हैं जिनमें नये–पुराने का समुच्चय है। वैसे भी कविता कभी पुरानी नहीं होती, विषय जरूर बदल जाते हैं। इस संग्रह में प्रार्थना और गणेश वंदना के अतिरिक्त अन्य 30 बालकविताएँ भी हैं। इनमें देशभक्ति, तीज–त्योहार, पशु–पक्षी के साथ नियम–कानून को भी पिरोया गया है। संग्रह की बहुत सी कविताएँ पारंपरिक हैं मगर 'मुनिया बर्तन न धोएगी' की कथावस्तु क्रांतिकारी है। इससे समाज में बदलाव की संभावना नजर आती है। वैसे भी समाज में बालश्रम का निषेध किया जाना चाहिए। बच्चों के समुचित विकास के लिए बालश्रम पर पूरी तरह प्रतिबंध लगना चाहिए।

आलोच्य वर्ष में डॉ. आर. पी. सारस्वत के बाल कविता–संग्रह 'छुट्टन है तैयार' और शिक्षाप्रद बालपद्यकथाओं के संग्रह 'चतुर मेमना और मूर्ख भेड़िया' का प्रकाशन हुआ। बकौल रचनाकार– इसमें तितली रानी है, दादी का घर है, स्कूल चलने की इच्छा है, आम हैं, जामुन हैं और नकलची बंदर है तो बरसात भी है, बसंत ऋतु भी है, गौरैया है, मौसी और रंग–बिरंगी पिचकारी भी है। विविध विषयों से सजी इस पुस्तक की रचनाओं में बालमनोविज्ञान की अद्भुत पकड़ है। प्रस्तुत संकलन में कुल 24 बालकविताएँ हैं जिनमें कुछ विषय नये हैं तो कुछ परंपरागत। कहीं स्कूल चलने की बात है तो कहीं खानपान के क्रम में आम, जामुन, बिस्कुट और करारी मूँगफली पर कविताएँ हैं। गौरैया, पूसी और मंकी भी रचनाकार के दायरे में हैं। सारस्वत जी

के बालगीतों की एक और विशेषता है कि परिवार और छोटे बच्चों को लेकर बुना गया उनका ताना–बाना रिश्तों की मजबूत बुनियाद का आधार है। उनकी पुस्तकों के आवरण पर परिवार के बच्चों का होना दादू की अनिवार्य शर्त होती है। हो भी क्यों नहीं क्योंकि दादू जी परिवार की असली धुरी हैं। परिवार प्रगति की ऐसी इकाई है जिसे सहज रूप में नकारा नहीं जा सकता। कविताओं में भाषा का सौंदर्य देखते ही बनता है । इन कविताओं में कहीं पर भी छंद शिथिल नहीं हैं। इस दृष्टि से पुस्तक स्वागत योग्य है।

'चतुर मेमना और मूर्ख भेड़िया' में आठ पद्यकथाएँ हैं। इन पद्यकथाओं की विषयवस्तु भले ही लोककथाओं से जुड़ी हुई है मगर प्रस्तुतीकरण में आधुनिकता का ध्यान रखा गया है। 'पंडित जी', 'कपटी बंदर', 'नदी और नाव', 'राजा और मोची', 'बगुला भगत', 'माघ नाम के महाकवि', 'रामभक्त भानुदास' तथा 'रचना चतुर मेमना और मूर्ख भेड़िया' शीर्षकों में कथा का विस्तार बड़े रोचक ढंग से किया गया है। सभी पद्यकथाओं में प्रस्तुतीकरण भाषा–शैली और छंद का निर्वाह सफलतापूर्वक किया गया है। रचनाओं के साथ दिए गए श्वेत–श्याम चित्रों में विशेष आकर्षण नहीं है पर कथा को विस्तार देने में इनकी भूमिका अवश्य है। ऐसी कथाएँ पढ़ने में बच्चों की रुचि होती है जिनमें कहानी और कविता दोनों का आनंद मिलता है। इनका पुनर्पाठ हमारी ऐतिहासिक परंपरा को बल प्रदान करता है।

मौलिक बाल काव्य सृजन के साथ–साथ डॉ. आर. पी. सारस्वत ने तितली पर केंद्रित बाल कविताओं का संकलन 'तितली है कुछ तो चालाक' तथा चाँद पर केंद्रित बाल कविता संकलन 'आसमान का हीरो चाँद' का बड़े परिश्रम से विस्तृत पटल पर इधर–उधर फैली हुई कविताओं का संकलन और संपादन करके बहुत महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। 'तितली है कुछ तो चालाक' में उनकी 26 पृष्ठों की भूमिका उनकी शोध और पठनवृत्ति का जीवंत उदाहरण है। इसके संकलन और संयोजन में उन्होंने कठिन परिश्रम किया है। 152 पृष्ठों के संकलन में एक ही विषय विशेष पर केंद्रित 82 बाल कविताओं को एक ही जगह पर उपलब्ध कराकर उन्होंने शोधकर्ताओं का बहुत भला किया है। पत्र–पत्रिकाओं, विभिन्न संकलनों और पाठ्यपुस्तकों के साथ–साथ गूगल की सहायता से भी इन्हें संकलित किया गया है।

डॉ. आर. पी. सारस्वत के संपादन में ही इस वर्ष 'आसमान का हीरो चाँद' शीर्षक से प्रकाशित पुस्तक चाँद पर केंद्रित चमकदार 127 बालकविताओं का संकलन है जिसे हम संपादक की अनोखी सूझ–बूझ और कठिन परिश्रम का उत्कृष्ट नमूना भी कह सकते हैं। इस संकलन के आरंभ में चाँद के बदलते स्वरूप पर रामधारी सिंह 'दिनकर' का 'चाँद का कुर्ता' कविता के अलग–अलग रंग हैं। चाँद इतना रूप बदलता है कि उसके नाप का कोई कुर्ता बनवाना भी टेढ़ी खीर है। इसके बाद बालस्वरूप राही भी

चंदामामा का नकाब उतारकर उसे जाली सिद्ध कर चुके हैं। खुद संपादक चाँद पर आधारित कविताओं को पढ़ते–पढ़ते इतना खो गए कि चाँद को चेतावनी ही दे डाली–

चंदा मामा होशियार, हम जल्दी आने वाले हैं।
एक नई दुनिया प्यारी सी वहीं बसाने वाले हैं।
दूर–दूर से तुम्हें निहारा
करते थे हम बच्चे।
अब हमको लगता कैसे तुम
हमको देते गच्चे।
टूर बनाकर शोर– शराबा वहीं मचाने वाले हैं।
चंदा मामा होशियार हम जल्दी आने वाले हैं।

संपादक के रूप में डॉ. सतीश चंद्र भगत ने भी राष्ट्रीय बालकविताओं पर केंद्रित संकलन 'देश हमारा भारत प्यारा' शीर्षक से 77 बालकविताओं का संकलन संपादित करके एक बड़े अभाव की पूर्ति की है।

126 पृष्ठों के इस संकलन में नए–पुराने बालसाहित्यकारों को एक मंच पर लाकर बच्चों के लिए उपयोगी देशभक्तिपूर्ण रचनाएँ संकलित की गई हैं। 77 कवियों की विविध विषयक रचनाओं के अलग–अलग आस्वाद के बावजूद उनकी भावनाओं में देशप्रेम ही सर्वोपरि है। ऐसे संकलन बच्चों तक अवश्य पहुँचने चाहिए।

'जंगल में स्कूल' संजय कुमार जांगिड़ का पहला बालकाव्य संकलन है जिसकी अधिकांश कविताएँ आधुनिक भावबोध से जुड़ी हुई हैं। रचनाकार की इस बात से भी सहमति व्यक्त की जा सकती है कि ये रचनाएँ बच्चों के आसपास के परिवेश से संपृक्त हैं। चूँकि संजय जांगिड़ अध्यापन से जुड़े हुए हैं इसलिए उन्हें बच्चों के बीच में समय बिताने का भरपूर अवसर मिलता है। इसी अवसर का लाभ उठाते हुए उन्होंने बालमन को अंदर तक स्पर्श करने वाली कविताओं का सृजन किया है। बकौल रचनाकार– "बाल मन के बीच रहकर उनके मन के भाव व विचारों को शब्दों में उतार देता हूँ। यह काव्य संग्रह न केवल बालसाहित्य है बल्कि यह मेरी तपस्या व साधना भी है।"

रचनाकार की यह स्वीकारोक्ति और विनम्रता संग्रह पढ़ते हुए महसूस भी की जा सकती है। हालाँकि पहला संग्रह होने के कारण कहीं–कहीं पुनरावलोकन व सुधार की भी गुंजाइश है, यति, गति, लय, तुक और भाषा का परिमार्जन काव्य को और परिपक्व बनाता है। मुझे आशा है कि संजय जांगिड़ अपने आगामी संकलन में और चुस्त–दुरुस्त रूप में पाठकों के सामने आएँगे।

यह बात बिल्कुल सही है कि लोरियाँ अब बहुत कम लिखी जा रही हैं। उल्लेखनीय और महत्त्वपूर्ण लोरियाँ लिखकर अपनी अलग पहचान बनाने वालों में उँगलियों पर गिने जाने वाले लोग हैं। ऐसे में युवा पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करते हुए

उमाशंकर शुक्ल 'दर्पण' का यह प्रयास इस अर्थ में स्वागतयोग्य है कि 101 लोरियों का संग्रह 'छम छम करती आई निंदिया' विषयों की विविधता और व्यापकता के कारण पाठकों का ध्यान अपनी ओर खींचता है। इन लोरियों में कहीं समुंदर तक ले जाने की कल्पना है तो कहीं निंदिया रानी के अखबार छापने का अभिनव प्रयोग है। उस अखबार की सजावट तितली, तारे, भौंरे और जुगनू के चित्रों से होगी। ऐसी अनुभूतियों के साथ –साथ सूरज और चंदा दोनों को एक साथ सुलाने की कल्पना के क्या कहने? गरज यह कि इस लोरी–संग्रह में प्रकृति, परिवेश, मौसम के साथ गाँव–गिराँव को भी समेटने का प्रयास इसे उल्लेखनीय बनाता है। पुस्तक में आकर्षक और नयनाभिराम चित्रों की कमी खटकती है।

15 वर्षीय रचनाकार रश्मि चौधरी का कविता–संग्रह 'सपने' (52 कविताओं की पुस्तक) नये–पुराने विषयों को समेटकर तैयार किया गया है। पारिवारिक रिश्तों में मम्मी–पापा का रिश्ता सबसे नजदीकी होता है। कहा तो यह भी जाता है कि बेटियों को मम्मी की अपेक्षा पापा अधिक प्रिय होते हैं। रश्मि की भावना 'पापा मेरी दुनिया' कविता की इन पंक्तियों में उजागर हुई है– मेरी छोटी सी दुनिया को/अपने प्यार से नापा है/मेरी साँसें जिनमें बसती हैं/वो ही मेरे पापा हैं/अनोखा है जिनका प्यार/बस वो ही एक हैं/जीना मैंने उनसे सीखा/वो ही सबसे नेक हैं/सामने आईं कई कठिनाइयाँ/हमेशा उन्होंने झेली हैं/कहते– साथ हूँ मैं बेटा/तुम नहीं अकेली हो/उनसे मिली हर प्रेरणा को मैंने अपनाया है/हर कठिनाई से लड़ना/उन्होंने ही सिखाया है। ऐसी ही अनेक भावनाप्रधान कविताओं का यह संग्रह विशेष रूप से इसलिए उपयोगी है कि इनमें रिश्तों की गर्माहट और संबंधों की मिठास को महसूस किया जा सकता है। रश्मि का यह संग्रह उसकी अलग पहचान बनाएगा, ऐसा मेरा विश्वास है।

डॉ. वेदप्रकाश अग्निहोत्री के बालगीतिका संग्रह 'प्यारा बचपन' में 51 मोतियों को पिरोकर माला बनाने का प्रयास किया गया है। दैनंदिन जीवन से लेकर प्रकृति–पर्यावरण, रिश्ते–नाते तथा पशु–पक्षी आदि विषयों पर लिखी गई रचनाओं के इस संग्रह में बच्चों को अपना परिवेश देखने को मिलेगा। संग्रह को पढ़ते हुए मुझे ऐसा लगा कि क्या गीतिका की जगह गीत लिखकर अपनी बात पूरी नहीं की जा सकती थी। छंदों की दृष्टि से यति, गति, लय, तुक तथा आरोह–अवरोह सब अधिकांश रचनाओं में दुरुस्त लगे। पठनीयता की दृष्टि से यह संग्रह बच्चों के लिए विशेष रूप से उपयोगी है। आलोच्य वर्ष में ही प्रकाशित उनके एक और संग्रह 'कविता की गुल्लक' में कुल 33 बालकविताएँ हैं जिनके विषय गाँव, जंगल, टीवी, अखबार, साइकिल, किसान, धरती, दादा तथा चंदा आदि हैं। इन विषयों को केंद्र में रखकर ही 'कविता की गुल्लक' का सृजन किया गया है। कवि इसी कामना के साथ यह कृति

बच्चों को समर्पित कर रहा है– बच्चों को कर सके प्रभावित/कविता की गुल्लक मनमोहक। हमारी धरती में हरियाली के साथ–साथ खुशहाली भी है इसीलिए कवि धरती को एक ओर जीवन का आधार मानता है तो दूसरी ओर झरना, नदी, हिमालय तथा सागर से सुसज्जित संसार की कल्पना कर व्यापक परिदृश्य का परिचय देता है। पुस्तक में दिए गए श्वेत–श्याम चित्र अच्छे हैं, लेकिन अगर ये रंगीन होते तो उनका आकर्षण और अधिक बढ़ जाता।

आलोच्य वर्ष में प्रकाशित डॉ. मंजुलता श्रीवास्तव की दो पुस्तकें क्रमशः 'चली लोमड़ी दावत खाने' और 'कुट–कुट चिड़िया' प्रकाशित हुईं। 'चली लोमड़ी दावत खाने' में कुल 34 बालकविताएँ हैं जिनमें कई विषय तो परंपरागत और प्रचलित हैं लेकिन उनका प्रस्तुतीकरण और निर्वाह कुशलतापूर्वक आधुनिकता से जुड़ा हुआ है। उन्हें विशेष रूप से पशु–पक्षियों से लगाव है। चिड़ियों से तो उन्हें इतना अपनापन मिलता है कि अपने घर में बनाए गए घोंसले में चिड़ियों का आना–जाना और उनका क्रियाकलाप देखकर स्वतः कई कविताएँ फूट पड़ी हैं। उदाहरण के लिए निम्नलिखित कविता में मंजुलता जी चिड़िया से सहज ढंग से बातचीत कर रही हैं। उसे कुछ समझा रही हैं– चलो लॉन में चिड़िया रानी/हम तुमको दें दाना–पानी/छप–छप यहाँ नहाना मन से/करना तुम अपनी मनमानी/छत पर जाकर पंख सुखाना/और लौटकर काकुन खाना/तेज धूप जब हो जाए तो/घर के भीतर तुम आ जाना/फुर–फुर उड़ना चीं–चीं गाना/खुली हवा में पर फैलाना/अगर शाम को ठंड लगे तो/पेड़ों में छिपकर सो जाना। दूसरी पुस्तक 'कुट–कुट चिड़िया' में कुल 22 कविताएँ हैं। रंग–बिरंगे फूल, सूरज कहाँ चला जाता है, नानी के घर जाना है, रोबोट, मेला, अनोखा बस्ता जैसी कविताओं के साथ–साथ इसमें 'पृथ्वी से अर्थिंग होती है' कविता पढ़ना अपने आपमें सुखद है। संग्रह की सभी कविताओं में बच्चों को समसामयिकता से जोड़ने का प्रयास किया गया है। परिवार, समाज और भारतीय संस्कृति के साथ पारिवारिक रिश्तों की खुशबू भी इस संग्रह की कविताओं में पिरोई गई है। संग्रह की रोचक कविताओं को पढ़कर बच्चे अवश्य आनंदित होंगे, ऐसा मेरा विश्वास है।

इस वर्ष श्यामपलट पांडेय के तीन काव्य–संग्रह– 'हँसते बच्चे अच्छे लगते', 'आओ हम बूँदों संग नाचें' और 'चूहा मोबाइल ले आया' प्रकाशित हुए। इन तीनों संग्रहों के माध्यम से पांडेय जी की शताधिक बालकविताएँ पढ़ते हुए लगा कि उनके पास कहने के लिए विषयों की कमी नहीं है। 'हँसते बच्चे अच्छे लगते' संग्रह में तीज–त्योहार, तितली– बिजली से लेकर इंद्रधनुष, चंद्रयान तक को कविताओं का विषय बनाया गया है। मचान से लटकती हुई लौकी को जिस कौशल के साथ कविता में पिरोया गया है, उससे कवि की सूक्ष्मदृष्टि का पता चलता है। कविता पढ़ते हुए लटकती हुई लौकी आँखों के सामने घूम जाती है– सभी सब्जियों में गुणकारी/

लौकी प्रथम पंक्ति में आती / हल्की होती बेहद पाचक / भोजन का है स्वाद बढ़ाती / जब मचान से लटक लौकियाँ / सुंदर रोचक दृश्य बनातीं / करते छूने की जिद बच्चे / खुश होते, जब घर में आतीं।

'आओ! हम बूँदों संग नाचें' संग्रह में भी जानवरों पर केंद्रित कविताएँ हैं। चंदामामा–सूरज दादा के बिना कैसे बात बनती? शीर्षक कविता में बारिश का विहंगम दृश्य प्रस्तुत किया गया है। होली के पर्व की रचनाओं में रंगों के उत्सव की चर्चा की गई है।

श्यामपलट पाण्डेय की 77 बालकविताओं की तीसरी पुस्तक 'चूहा मोबाइल ले आया' का शीर्षक तकनीकी दुनिया की ओर संकेत कर रहा है। यह शुभ संकेत है कि इस संग्रह की कविताएँ छंद की दृष्टि से पूरी तरह व्यवस्थित हैं। साथ ही कविताओं में गेयता का भी पूरा ध्यान रखा गया है। पाण्डेय जी सुनियोजित ढंग से बच्चों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर लगातार जिस तरह से कविताओं का सृजन के साथ प्रकाशन भी कर रहे हैं, वह प्रशंसनीय और अनुकरणीय है।

संत कुमार वाजपेयी 'संत' के बाल कविता–संग्रह 'मेरे भैया' में 25 रचनाएँ हैं जो आपसी संबंधों, खान–पान और मौसम से जुड़ी हुई हैं। इनमें एक ओर गोभी की पकौड़ी है तो दूसरी ओर बताशे पानी के, गाजर–मूली और करेला भी अपना सौंदर्य बिखेर रहे हैं। हँसने का स्वास्थ्य पर अनुकूल प्रभाव पड़ता है, इसलिए कवि इसे स्वस्थ जीवन के लिए आवश्यक मानता है। साथ ही रोने से पड़ने वाले प्रतिकूल प्रभाव से दूर रहने की नसीहत दी गई है–दूर सदा रहना रोने से / अच्छी सीख सिखाता हँसना / क्षण भर में ही असर दिखाता / चिंता मुक्त कराता हँसना / संकट में भी धैर्य बँधाकर / है साहस उपजाता हँसना / जगमग करता सारा जीवन / खुशहाली है लाता हँसना। भाषा–शैली और प्रस्तुतीकरण की दृष्टि से भी यह संग्रह उपयोगी है। बच्चों के बीच में इसका स्वागत किया जाएगा, ऐसा मेरा मानना है।

हरीलाल 'मिलन' की 31 बाल कविताओं की पुस्तक 'एक रहेंगे नेक रहेंगे' विविध विषयवस्तु को समेटे हुए हर वय के बच्चों का प्रतिनिधित्व करती है। अधिकांश कविताएँ सहज, सरल और छोटी हैं जो आसानी से बच्चों के मन–मस्तिष्क पर छा सकती हैं। कवि ने 'रामचरितमानस' के सातों कांडों की कथा को बहुत ही रोचक ढंग से प्रस्तुत किया है। जहाँ भारत माँ की शान तिरंगा, भारत माता की जय बोलें तथा मानचित्र भारत का कविताएँ देशभक्ति से परिपूर्ण हैं, वहीं सूरज, पेड़, अखबार, मोबाइल, तितली, गुलाब तथा पानी पर केंद्रित कविताएँ दैनंदिन जीवन के उद्घोष से जुड़ी हुई हैं।

'पेड़ लगाएँ ऐसा झिलमिल तारों जैसा' पुस्तक रामनरेश उज्ज्वल की 40 बालकविताओं का संग्रह है जिसमें प्रकृति, पर्यावरण, पशु– पक्षी, फूल–पत्ते, गाँव–गिराँव, हँसी– ठिठोली, पढ़ाई–लिखाई, चिड़िया–तितली आदि विषयों को समेटती हुई

मनमोहक छवियाँ हैं। शीर्षक कविता की शानदार कल्पना से मन आह्लादित हो जाता है– पेड़ लगाएँ ऐसा/ झिलमिल तारों जैसा/बिस्किट के हों पत्ते जिसमें/टॉफी के ही फल हों/चुइंगम जैसा गोंद भी निकले/शकरकंद सी जड़ हो/डाल पकड़कर अगर हिलाएँ/टप–टप बरसे पैसा/पेड़ लगाएँ ऐसा/डाल तोड़कर दूध निकालें/फिर पूरा पी जाएँ/मक्खन–बर्फी दही जमाके/हम बच्चे मिल खाएँ/रात अँधेरे में चमके जो/लगे सितारों जैसा/पेड़ लगाएँ ऐसा।

मेरा निश्चित मत है कि ऐसी कल्पना से बच्चे न केवल आनंदित होंगे बल्कि इसे गाने गुनगुनाने की भी भरपूर कोशिश करेंगे। पुस्तक का आवरण आकर्षक है, मगर कविताओं के साथ अंदर दिए गए चित्रों में वह आकर्षण नहीं है जो बच्चों की कविताओं की पुस्तक में होने चाहिए।

पूनम सिन्हा 'श्रेयसी' के बालकविता–संग्रह 'रोबू रोबोट' में विविध विषयक 28 रचनाएँ हैं। कंप्यूटर, लैपटॉप, मोबाइल तथा वायुयान से लेकर मछली रानी, चिड़िया, रसगुल्ला और बस्ता भारी–कविताओं के बहाने कवयित्री ने बच्चों से सीधा संवाद किया है। चिड़िया किससे बात करती है, निम्नलिखित पंक्तियों में यही जिज्ञासा है–

चिड़िया रानी चिड़िया रानी/आज कहो तुम एक कहानी।

पंख लिए कैसे उड़ती हो, बातें तुम किससे करती हो?

पर्यावरण संरक्षण के लिए वृक्षों को बचाने का अभियान 'वृक्ष न काटो' में देखा जा सकता है। लोक धुनों पर आधारित आइस–पाइस, पकड़ा–पकड़ी और ओक्का–बोक्का तीन तड़ोका कविताएँ बच्चे अवश्य पसंद करेंगे। पुस्तक का मुखपृष्ठ शीर्षक के अनुरूप है, मगर कविताओं के साथ दिए गए चित्र कहीं से भी प्रभावित नहीं करते।

आलोच्य वर्ष में दीनदयाल शर्मा के दो संकलन 'चुनिंदा बालकविताएँ' और 'चुनिंदा शिशुगीत' प्रकाशित हुए। पहले संकलन में प्रकृति, मौसम, पेड़, बादल, चिड़िया तथा बिजली पर आधारित छोटी–छोटी कविताएँ हैं जो समसामयिक परिवेश से जुड़ी हुई हैं। उल्टा–पुल्टा कविता तो बिलकुल नया ही वितान बनाती है जिसमें कहीं बिना पंखों के हाथी के उड़ने की कल्पना है, तो कहीं बकरी दो अंडे देती है। गूँगी औरत शोर करती है तो मुर्गा म्याऊँ–म्याऊँ और बिल्ली की कुकड़ू–कूँ से हास्य बोध उत्पन्न होता है। 'कुदरत का जादू' में अद्भुत कल्पना है तो 'पापा गर मैं चिड़िया होता' में बच्चा भारी बस्ता तथा होमवर्क से आक्रांत दिखाई देता है। चिड़िया बनकर इतनी दूर उड़ने की कल्पना है, जहाँ वह सबकी पकड़ से बहुत दूर चला जाए।

दूसरी पुस्तक में शिशुगीत हैं। तितली, टीवी, बोलियाँ तथा मछली पर एक से अधिक शिशुगीत हैं। आठ–आठ पंक्तियों के इन शिशुगीतों में परंपरागत उपलब्ध विषयों का ही चयन किया गया है। कुत्ता, बंदर, मेंढक, घोड़ा, कौआ, उल्लू, तोता तथा पतंग आदि विषयों पर केंद्रित शिशुगीतों में दोहराव बहुत है। अगर पुस्तक के चित्र

रंगीन होते तो बच्चों को अधिक आनंद आता।

इस वर्ष इंजी. ललित शौर्य का बाल कविताओं का संग्रह 'बाल तरंग' शीर्षक से प्रकाशित हुआ जिसमें कुल 11 कविताएँ हैं। यह संग्रह इसलिए विशेष रूप से उल्लेखनीय और महत्त्वपूर्ण है कि इसमें हिंदी के साथ–साथ उन्हीं कविताओं का गढ़वाली, कुमाऊनी और अंग्रेजी में भी अनुवाद दिया गया है। कुछ संकलन हिंदी के साथ–साथ अंग्रेजी में तो मेरी दृष्टि में आए हैं, मगर एक साथ चार भाषाओं/बोलियों में यह प्रकाशन पहली बार हुआ है।

आलोच्य वर्ष में अंकुश कानपुरी उपनाम से लेखन करने वाले डॉ. जयप्रकाश प्रजापति के दो बाल काव्य–संकलन 'आओ रेल चलाएँ हम' और 'पिंजरे में तोता' प्रकाशित हुए। 35 बाल कविताओं का संकलन 'आओ रेल चलाएँ हम' में अनेक प्रचलित विषय हैं लेकिन पूरनमासी का चाँद कविता में चमकते हुए चाँद का जो चित्र कवि ने खींचा है, वह अलग छवि प्रदर्शित करता है। 'पिंजरे में तोता' संग्रह में कुल 33 बालकविताएँ हैं। शीर्षक कविता में पिंजरे में बंद तोते की विवशता उसकी स्वतंत्रता पर सीधा प्रहार है। संकलन को पढ़ते हुए इस बात का अहसास हुआ कि कवि को प्राकृतिक उपादानों से बहुत प्रेम है, इसीलिए इस संग्रह में 'अम्मा अब नहीं बरसता पानी', 'काले–काले मेघा आए', 'सावन आया', 'उमस भरी गर्मी' के साथ 'मेरा गाँव मेरा बचपन', 'पेड़ हमारे जीवनदाता' जैसी कविताओं की भरमार है।

इस वर्ष डॉ. नरेश चंद्र त्रिपाठी का कविता–संग्रह 'हरित धरा की ओर' पर्यावरण की सुरक्षा में उठाया गया वह कदम है जिसमें वृक्षों को काटने के बजाय उन्हें अधिक से अधिक लगाने, आम–बरगद–नीम–पीपल के संरक्षण और जैव विविधता पर ध्यान देने की आवश्यकता पर बल दिया गया है।

इस वर्ष प्रकाशित 'बाल पहेली गीत' सहित 35 अन्य बाल कविताओं का संकलन 'भारत की पहचान तिरंगा' डॉ. महेश मधुकर की नवीनतम कृति है।

डॉ. संजीव कुमार के कविता–संग्रह 'वीर सिपाही' में कुल 22 रचनाएँ हैं। 'चाँद से रिश्ता पुराना', 'तितली का स्वागत', 'समय एक दोस्त', 'काँटों के फूल' सहित अन्य कविताओं में विचारों की प्रधानता है इसलिए छंद की दृष्टि से इनमें आवश्यक संतुलन नहीं बन पाया है। मुखपृष्ठ पर दो सिपाहियों के चित्र और भारत का प्रतीक तिरंगा अत्यंत मनोहारी है।

राजेंद्र उपाध्याय मूल रूप से बड़ों के लिए लिखते हैं लेकिन इस वर्ष प्रकाशित उनकी बाल कविताओं की पुस्तक 'झूले' में 24 वैचारिक रचनाएँ हैं। इनके शीर्षक विषय सहित 'अमरूद', 'मामा लाए आम', 'हाथ हमारे', 'जामुन और चवन्नियाँ' (हालाँकि चवन्नियाँ लंबे अरसे से बंद हो चुकी हैं) के साथ पारिवारिक रिश्तों की मिठास में पगे हुए विषय 'मेरी भी एक नानी थी' और 'नाना का कबाड़' पढ़ते हुए

कमाल का अनुभव होता है।

महाभारत की कथा से आज भी पाठकों/दर्शकों को कुछ न कुछ अवश्य मिलता है। अगर ऐसा न होता तो सोशल मीडिया से लेकर दूरदर्शन और विभिन्न चैनलों पर इसे बार–बार प्रचारित–प्रसारित न किया जाता। महाभारत का युद्ध आज मुहावरा बन गया है। इसी प्रसंग को लेकर शिवमोहन यादव ने 'श्रीकृष्ण–अर्जुन युद्ध' खंडकाव्य की रचना की है। इस खंडकाव्य को मंगलाचरण के अतिरिक्त कुल 11 अध्यायों में विभाजित किया गया है जो इस प्रकार हैं– अर्ध्य खंड, चिंतन खंड, ब्रह्मलोक भ्रमण खंड, कैलाश भ्रमण खंड, इंद्रलोक भ्रमण खंड, व्यथा खंड, नारद चित्रसेन संवाद, अभयदान खंड, नारद श्रीकृष्ण संवाद और युद्ध खंड। खंडकाव्य में छंदों का निर्वाह इतनी कुशलता से किया गया है कि कहीं पर भी अवरोध उत्पन्न नहीं होता है। भाषा की रवानी उद्घोष करती हुई ऐसा कथालोक बनाती है जिसमें पाठक लगातार ऊभ–चूभ होता रहता है। पुस्तक का मुखपृष्ठ कथा के अनुरूप ही तैयार किया गया है।

बालकहानियाँ

वर्ष 2024 में प्रकाशित डॉ. मोहम्मद अरशद खान की पुस्तक 'जूते निकले घूमने' बाल कहानियों का संग्रह है। सात रोचक कहानियों से सजी–धजी 24 पृष्ठों की यह पुस्तक पूरी तरह से रंगीन ग्लेज पेपर पर छपी और सुंदर चित्रों से सुसज्जित है। इसकी सभी कहानियाँ नन्हे–मुन्ने पाठकों को केंद्र में रखकर लिखी गई हैं। इन बाल कहानियों में बालमनोविज्ञान, रोचकता, सरल भाषा–शैली, छोटी–छोटी वाक्य–संरचना और प्रस्तुतीकरण का विशेष ध्यान रखा गया है। पूरी पुस्तक बच्चों के लिए एक गुलदस्ता है। संवाद की दृष्टि से कहानी 'मुनमुन गुस्सा है' का एक उदाहरण प्रस्तुत है–

मुनमुन बहुत गुस्सा है। उसके गाल गुब्बारे की तरह फूले हुए हैं।
लेकिन वह किस बात पर गुस्सा है?
मुनमुन अपनी दीदी से गुस्सा है।
भला किसलिए?
इसलिए कि घर में कोई भी नई चीज आती है तो बस दीदी के लिए।
और उसे क्या मिलता है
दीदी के छोटे पड़ गए कपड़े
दीदी के पहने हुए जूते
दीदी का पुराना बस्ता
दीदी की कवर फटी किताबें
दीदी की खटारा साइकिल।

डॉ. रंजना जायसवाल की 12 बालकहानियों का संग्रह 'मदद वाले हाथ' इस अर्थ में विशेष रूप से उपयोगी है कि इसमें बच्चों का पूरा परिवेश हिलोरें ले रहा है। कहानीकार ने इन कहानियों का ताना–बाना इस प्रकार बुना है कि एक कड़ी से दूसरी कड़ी स्वयमेव जुड़ती चली जाती है। इन कहानियों में भी बच्चों को समाज का सही आइना दिखाने का प्रयास किया गया है। ऊँची मंजिल पाने के लिए लक्ष्य के साथ–साथ परिश्रम और लगन बहुत जरूरी है। सभी कहानियों की भाषा–शैली सरल और बोधगम्य है। कहीं पर भी भाषा बनावटी नहीं लगती।

नीलम राकेश का बाल कथा–संग्रह 'बच्चों के राम' शीर्षक से ही स्पष्ट है कि इसमें राम की परंपरागत कथा को सहज और सरल बनाकर प्रस्तुत किया गया है। रामजन्म की कथा से लेकर महाज्ञानी रावण से ज्ञान लेने तक का पूरा विवरण बच्चों के लिए बहुत ही संक्षेप में लेकिन प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया गया है। आज ऐसे कथानकों से बच्चों को परिचित कराने की महती आवश्यकता इसलिए भी है कि कहीं ऐसा न हो कि बच्चे अपनी माँ से पूछें कि ये राम–लक्ष्मण कौन थे? हालाँकि सोशल–मीडिया, दूरदर्शन ने इस कथा को अलग–अलग ढंग से कई बार प्रस्तुत किया है, लेकिन पुस्तक के रूप में आने से बच्चों के लिए वह सहज ही ग्राह्य होगी।

'फूलों की चोरी' पुस्तक में शीर्षक रचना के अतिरिक्त और छह बाल कहानियाँ दी गई हैं जिनमें बहुप्रचलित और बच्चों में बहुत ही लोकप्रिय एक कविता 'मछली जल की रानी' को कहानी का शीर्षक बनाया गया है। इसमें अवांतर रूप से जल के महत्त्व को बताते हुए इस खतरे का भी आभास कराया गया है कि जल–प्रदूषण हमारे लिए कितना खतरनाक है– "और ये लोग वहाँ रोज नहाते हैं, कपड़े धोते हैं, फूल–पत्ती और जाने क्या–क्या पानी में डालते हैं, यह सब जल प्रदूषण का कारण है। इसकी वजह से वहाँ पर पानी में ऑक्सीजन की कमी हो जाती है, ऑक्सीजन कम होगा तो फिर ....(पृष्ठ 42)

डॉ. संजीव कुमार की बाल कहानी 'शुंग की जादुई अँगूठी' उस कथा का हिस्सा है जिसमें चिराग को रगड़ने से जिन्न पैदा होकर कुछ न कुछ करिश्मा अवश्य करता है। अलादीन का चिराग और शुंग की जादुई अँगूठी अपने–अपने करतब दिखाकर राजा–महाराजाओं के महल तक ले जाते हैं और फिर कहीं महल गायब हो जाता है तो कहीं राजकुमारी। पुस्तक में कंप्यूटर से बनाए गए चित्र जिन्न के साथ महल को भी उभारने में सफल हैं।

आलोच्य वर्ष में घमंडीलाल अग्रवाल की तीन मौलिक तथा दो संपादित कुल पाँच बाल कहानियों की पुस्तकें प्रकाशित हुईं। पहली पुस्तक 'गुल्लू और फुदकू' में शीर्षक कहानी के अतिरिक्त अन्य 17 बाल कहानियाँ हैं। संग्रह की कहानियों में मनोरंजन का पूरा ध्यान रखा गया है, साथ ही विज्ञान की पृष्ठभूमि को साकार करती इन

कहानियों में शिक्षा को भी वरीयता दी गई है। 'पेट की छुट्टियाँ', 'प्लास्टिक की बोतलें' तथा 'हरे और नीले डस्टबिन' कहानियाँ समसामयिक घटनाचक्र पर आधारित हैं जबकि 'सात रंगों का तिलिस्म' में इंद्रधनुष की जानकारी कई कोणों से प्रस्तुत की गई है।

दूसरे संग्रह 'कपीश डर गया' में कुल 10 कहानियाँ हैं। जीव–जंतुओं और पशुओं को केंद्र में रखकर इनका ताना–बाना बुना गया है। 'चीते की दादागिरी' हो या 'चिड़चिड़ा शेर', 'गधों की माँग' हो या 'तितली और मधुमक्खियाँ', सभी कहानियाँ जंगलगाथा का प्रतिनिधित्व करती हैं। प्रत्येक कहानियों के साथ दिए गए चित्र पाठकों को विशेष रूप से पसंद आएँगे।

अगली पुस्तक 'खजाने की तलाश' में साहसिक और मनोरंजक कारनामों के साथ–साथ जंगल में खजाना तलाश करने की कथा है। इसका मुख्य पात्र अनन्य खजाने की तलाश में जंगल पहुँच जाता है। कहानी में गुफा और अनन्य का संवाद बड़ा रोचक है जिसमें दुनिया में बुद्धिमान व्यक्ति, संकट में मनुष्य का साथ देने वाला तथा लक्ष्य प्राप्ति में सफलता किसे मिलती है जैसे प्रश्नों का अनन्य बड़ा सटीक उत्तर देता है। इससे गुफा अपना खजाना अनन्य को सौंप देती है। गणतंत्र दिवस पर अनन्य को इस बहादुरी के लिए सम्मानित भी किया जाता है।

उपर्युक्त पुस्तकों के अतिरिक्त घमंडीलाल अग्रवाल के संपादन में 'जीव–जंतुओं की रोचक बालकहानियाँ' तथा 'बच्चों के लिए मनोरंजक कहानियाँ' शीर्षकों से दो पुस्तकें भी प्रकाशित हुईं हैं। 'जीव–जंतुओं की रोचक बालकहानियाँ' में देश के 25 बालसाहित्यकारों की रचनाएँ संकलित की गई हैं। इन कहानियों में जीव–जंतुओं के प्रति प्रेम के साथ उनके विभिन्न क्रियाकलापों को विशेष रूप से रेखांकित किया गया है। संकलन में एक ओर 'चतुर मोर', 'मोटू चूहा', 'चमकी चुहिया', 'बिल्लो रानी', 'मीकू बंदर' है तो दूसरी ओर 'मच्छरों का ट्रेनिंग सेंटर', 'एक सारस की कथा', 'आँखें खुल गईं' तथा 'मेढक का पैसा' जैसी कहानियों में जीव–जंतुओं का पूरा संसार समाया हुआ है। कहानियों के साथ दिए गए श्वेत–श्याम चित्रों के साथ बहुरंगी आवरण पुस्तक में चार चाँद लगा रहा है।

'बच्चों के लिए मनोरंजक कहानियाँ' पुस्तक में भी लगभग उन्हीं रचनाकारों की बालकहानियाँ हैं जिनकी कहानियाँ उपर्युक्त संकलन में ली गई हैं। 'कहाँ गईं परियाँ', 'यूँ मुस्कुराए स्कूटी', 'स्टेट बोर्ड और जूते', 'पैसों का पेड़', 'पेड़ पर लटकी किताबें', 'पेड़ों को सोने दो', 'बाबा बिगाड़ी की होली' तथा 'अंतरिक्ष की सैर' कहानियों में मनोरंजन ही मनोरंजन है। कुछ कहानियाँ तो पढ़कर हँसते–हँसते पेट फूलने लगता है।

'तमिल बाल कहानियाँ' पुस्तक में तमिल की 12 बालकहानियाँ संकलित की गई

हैं जिनका अनुवाद एस. भाग्यम शर्मा द्वारा किया गया है। इन कहानियों का संपादन त्रिलोक सिंह ठकुरेला ने किया है। संपादक की सूचना के अनुसार इसके संपादन में जिन पुस्तकों का सहयोग लिया गया है, उनमें सी. राजगोपालाचारी की बालकथाएँ, दक्षिण की प्रतिनिधि कहानियाँ, समकालीन तमिल प्रतिनिधि कहानियाँ, झूला, दीपशिखा, टूटन, श्रेष्ठ तमिल कहानियाँ, बंद खिड़कियाँ तथा मुखौटा आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। यह पहल इसलिए महत्त्वपूर्ण है कि इसके माध्यम से हिंदी के पाठक महत्त्वपूर्ण भारतीय भाषा तमिल के बालसाहित्य से परिचित हो सकेंगे। इन कहानियों के शीर्षक पढ़ते हुए बार–बार हिंदी की बाल कहानियों की याद आती है। जैसे 'सोने के फल का खज़ाना', 'मल्लिका का घर', 'बिना पंख वाला पक्षी', 'उड़नेवाला हाथी' और 'गाने वाली लकड़ी की गुड़िया' तथा 'आलसी सूरज' शीर्षकों में अनुवादक का कौशल भी प्रशंसनीय है। यह बात और अधिक प्रशंसनीय है कि प्रकाशक ने तमिल के अतिरिक्त पंजाबी, वज्जिका, गुजराती तथा हिंदी की बालकहानियों का भी प्रकाशन किया है।

डॉ. संजीव कुमार की पुस्तक 'मखमली खरगोश' में शीर्षक कथा के अतिरिक्त कुल पाँच और बालकहानियाँ हैं। इनमें एक ओर अलग–अलग देशों का परिवेश है, तो दूसरी ओर डोर्री डायन की भी कथा है। मेरा मानना है कि डायन, भूत–प्रेत और परियों की अप्रासंगिक कहानियाँ बच्चों को नहीं दी जानी चाहिए। अगर देना ही है तो इन्हें आज के परिवेश में ढालकर सरल और सुबोध भाषा में लिखकर ही प्रस्तुत करना चाहिए। डॉ. संजीव कुमार की अगली पुस्तक 'हरक्यूलिस' में एक ही कथा को विस्तार दिया गया है। 'हरक्यूलिस' एक महान हीरो और दृढ़निश्चयी व्यक्ति है। इस कहानी में उसके जन्म से पहले की भी कथा बताई गई है। उसके संघर्ष और प्रगति में उसका कौशल भी महत्त्वपूर्ण है। अनेक झंझावातों ने ही उसे ऐतिहासिक पात्र बनाकर हरक्यूलिस नाम से विभूषित किया।

आलोच्य वर्ष में अलका प्रमोद के दो बाल कहानी–संग्रह 'चाँद पर क्रिकेट' और 'परीलोक का रहस्य' का प्रकाशन हुआ। 'चाँद पर क्रिकेट' में शीर्षक कहानी के अतिरिक्त नौ और बालकहानियाँ हैं, जबकि 'परीलोक का रहस्य' में एक विस्तृत कथा है। कहानीकार ने बच्चों से बातचीत में इन कहानियों के रहस्य पर पर्दा उठाते हुए स्वयं उद्घाटन किया है कि इन कहानियों में शरारतों के साथ प्रदूषण के खतरों से भी बचने का संकेत किया गया है। पशु–पक्षियों से प्रेम करना, पेड़–पौधों को उचित संरक्षण देना, दोस्ती का धर्म निभाना तथा सफाई–पसंद होना मनुष्योचित गुण हैं, इसलिए उदार मन से इनका निर्वहन करना चाहिए। कहानियों की भाषा–शैली सरल और सुबोध है।

अलका प्रमोद की दूसरी पुस्तक 'परीलोक का रहस्य' एक विस्तृत कथा है,

जिसका विन्यास छोटे–छोटे आठ खंडों में बँटा हुआ है। लेखिका अपनी बात में बच्चों से संवाद करती हुई स्वयं कहती है कि– 'तुम कहानी पढ़ना प्रारंभ करोगे तो तुमको इतना आनंद आएगा कि एक बार में पूरी पुस्तक पढ़ लोगे।' सही भी है– चित्रों सहित पुस्तक का फैलाव कुल 22 पृष्ठों में ही तो है। अन्वी परीलोक में किन परिस्थितियों से गुजरती है, यह पढ़ना बड़ा रोचक है। निया को अन्वी बड़ी बुद्धिमानी से परीलोक से कैसे वापस ले आती है, यह जद्दोजहद तब खत्म हो जाती है जब अन्वी की नींद टूटती है और वह हड़बड़ाकर उठ बैठती है। इस लंबी कथा का समापन देखिए–

मम्मी उसे गले लगाकर बोली– 'तुम अकेले कहाँ चली गई थीं, हम कितना डर गए थे। तुमको ढूँढते–ढूँढते हम यहाँ तक आए तो यहाँ तुम बेसुध पड़ी मिलीं।' अन्वी अभी भी परेशान थी। उसे समझ नहीं आ रहा था कि वह सच में परीलोक गई थी और परियों उसे यहाँ छोड़ गईं या कि उसने कोई सपना देखा।

इस वर्ष डॉ. इंदु गुप्ता के दो बाल कहानी–संग्रह 'जंगल की मजेदार कहानियाँ' तथा 'समझदार स्पंदन' प्रकाशित हुए। 'जंगल की मज़ेदार कहानियाँ' शीर्षक से ही स्पष्ट है, जंगल के पात्रों को आधार बनाकर जो कहानियाँ लिखी गई हैं, उनमें 'मैं मैं हूँ और तुम तुम' हो के आलोक में इस निष्कर्ष पर पहुँचकर कहना ही पड़ता है– 'जान बची तो लाखों पाए'। दरअसल जंगल का माहौल कहानियों में बरकरार रखने के लिए उसके परिवेश की छोटी–छोटी चीजों को ध्यान में रखना पड़ता है। यह रचनाकार का कौशल है कि उसने इन कहानियों में कथानकों का चयन ही जंगल को ध्यान में रखकर किया है। डॉ. इंदु गुप्ता के ही दूसरे संग्रह 'समझदार स्पंदन' में कुल 12 कहानियाँ हैं जिनमें विषयों की विविधता है। इक्कीसवीं सदी में बच्चों की आधुनिक सोच को रेखांकित करती इन कहानियों में समझदार स्पंदन और प्रकृति का जादू है तो विया का इंद्रधनुष और बादल, आशियाना दोस्त का, रोमी की दोस्ती और गिगी गवैया के माध्यम से बच्चों को समसामयिकता से जोड़ने की पहल प्रभावित करती है। अध्यापन से जुड़ी रही लेखिका ने बालमनोविज्ञान को अच्छी तरह परखकर इन कहानियों का सृजन किया है।

राजेंद्र प्रसाद श्रीवास्तव के दो बाल कहानी–संग्रह 'हँसमुख हाथी की होली' तथा 'लिली और मनचली' इस वर्ष प्रकाशित हुए। 'हँसमुख हाथी की होली' में शीर्षक के अतिरिक्त कुल और 9 कहानियाँ हैं। जंगली जानवरों और जीव–जंतुओं पर केंद्रित ये सभी कहानियाँ मनोरंजक के साथ–साथ उनके दैनंदिन जीवन से भी जुड़ी हुई हैं। दूसरी पुस्तक 'लिली और मनचली' में भी आवरण कथा के अतिरिक्त अन्य 9 कहानियाँ हैं। कहानी 'अमरबेल' में उसकी संरचना को बालपाठकों को इस प्रकार समझाया गया है– अमरबेल में हरी पत्तियाँ नहीं होतीं, इस कारण यह अपना भोजन खुद नहीं बना पाते। अपने भोजन व पानी के लिए दूसरे पौधों पर ही उन्हें आश्रित रहना पड़ता है।

अमरबेल की शाखों पर कुछ खास स्थानों से बहुत पतली रेशमनुमा जड़ें निकलती हैं, यह जड़ें पौधे की छाल को भेजती हुई उसके फ्लोएम तक पहुँच जाती हैं और वहाँ से पौधे की पत्तियों से जड़ व तने की ओर दौड़ रहे भोजन को सोखकर अपनी शाखों में पहुँचा देती हैं। ऐसी ही जानकारियों से ओतप्रोत यह संकलन बच्चों के लिए बहुत उपयोगी है।

आलोच्य वर्ष में प्रकाशित गोविंद शर्मा का बालकथा संग्रह 'ऐसे मिली सीख' देखने से तो यही लगता है कि इसमें केवल सीखपरक कहानियाँ ही होंगी लेकिन अपनी बात में इसे लेखक ने बड़े तार्किक ढंग से स्पष्ट किया है कि– 'सीख की भी एक शर्त है– उपदेश के रूप में प्रस्तुत न हो। बालपाठकों को यह न लगे कि उन्हें शिक्षा देने के लिए यह कहानी रची गई है। उन्हें लगना चाहिए कि एक रोचक कहानी मिली है, उसका मनोरंजन हुआ है, सीख तो उसे अनायास ही मिल गई।' इस दृष्टि से संग्रह की शीर्षक कथा सहित सभी बारह कहानियाँ सीधे उपदेश नहीं देती हैं। 'सद्भावनाओं का चक्रव्यूह' हो या 'बाबा की ममता', 'दोस्ती जिंदाबाद', 'जल की रानी और सोने का अंडा' सभी कहानियों में मनोरंजन की प्रधानता है। वैसे भी लगभग पाँच दशक से बालसाहित्य से जुड़े होने के कारण गोविंद शर्मा जी की कहानियों में इतनी परिपक्वता, प्रवाह और मनोरंजन का प्राधान्य रहता है कि एक बार पढ़ना शुरू करके छोड़ना बड़ा मुश्किल होता है।

'चल मेरी ढोलक ठुमक–ठुम' रवांई क्षेत्र की लोककथाओं का संग्रह है जिसमें शीर्षक कथा के अतिरिक्त अन्य छोटी–बड़ी 45 लोककथाएँ संकलित की गई हैं। रवांई क्षेत्र उत्तराखंड के उत्तरकाशी का वह क्षेत्र है जहाँ रवांल्टी भाषा व्यवहार में आती है। महावीर रवांल्टा लंबे समय से रवांल्टी भाषा को लेकर सर्वेक्षणपरक कार्य कर रहे हैं। उन्होंने इसी क्रम में इन लोककथाओं का संग्रह तैयार किया जिसे समय साक्ष्य प्रकाशन, देहरादून ने प्रकाशित किया है। रवांई क्षेत्र में फैली हुई ये लोककथाएँ बच्चों को भी पसंद आएँगी क्योंकि इनमें उस क्षेत्र के माटी की महक तो है ही, इन लोककथाओं में संस्कार भी विद्यमान हैं। भले ही इनमें उत्तराखंड की संस्कृति दर्शाई गई है लेकिन भारत का एक प्रमुख राज्य होने के नाते यह संस्कृति भारत का भी प्रतिनिधित्व करती है।

इसी वर्ष महावीर रवांल्टा की प्रकाशित पुस्तक 'स्वतंत्रता आंदोलन की कहानी' भी ऐतिहासिक दस्तावेज है। लेखक ने स्वतंत्रता आंदोलन की पूरी कहानी को बिल्कुल सरल और सहज भाषा में बच्चों की रुचि के अनुरूप ढालकर प्रस्तुत किया है। आंदोलन की लंबी कथा को छोटे–छोटे खंडों में विभाजित करके लेखक ने इसे और उपयोगी बना दिया है।

डॉ. अर्चना प्रकाश मूलतः बड़ों के लिए लिखती हैं, लेकिन उनका बाल कहानियों

का पहला प्रकाशित संग्रह 'बादल और बिजली' देखकर अच्छा लगा कि उन्होंने बालसाहित्य के क्षेत्र में भी अपनी उपस्थिति दर्ज की है। यह संग्रह उनकी ग्यारह बालकहानियों का संग्रह है जिसमें 'इंद्रधनुष', 'डबल गिट' और 'अनोखी बात' के साथ 'असली सुंदरता', 'उड़ान तथा झोला' और 'पालीथीन बैग' शीर्षकों की कहानियाँ समाज की छोटी–छोटी चीजों पर केंद्रित हैं जिनसे हमारा जीवन संचालित होता है। यह पढ़कर अच्छा लगा कि वीरांगना अहिल्याबाई होल्कर के जीवन के प्रसंगों को लेखिका ने कहानी के माध्यम से प्रस्तुत किया है। यह प्रेरक कथा बच्चों के लिए विशेष रूप से उपयोगी होगी, ऐसा मेरा मानना है।

आलोच्य वर्ष में रमाशंकर की दो बाल कहानियों की पुस्तकें '15 जासूसी बाल कहानियाँ' तथा 'मिशन 02' प्रकाशित हुईं। इनमें से पहली पुस्तक '15 जासूसी बाल कहानियाँ' विशेष रूप से रहस्य, रोमांच, कौतूहल, जिज्ञासा व मनोरंजन का खजाना है। 'डिटेक्टिव जोजो' तथा 'जासूस नंबर वन' कहानियों को पढ़ते हुए 'बहरूपिया और दूसरा कातिल' तक पहुँचकर ही पाठक विश्राम लेता है। आगे 'चोर के घर चोर' कहानी उस मुहावरे को चरितार्थ करती है जिसमें सेर को सवा सेर मिल ही जाता है। खजाने की तलाश ऐसा विषय है जिस पर कई पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं, लेकिन इस कहानी में जिज्ञासा का चरमोत्कर्ष देखते ही बनता है। 'गुफा का भेद' कहानी उसी का प्रस्थान बिंदु है जो पाठकों को बाँधकर रखता है। मिशन 02 रमाशंकर की आधुनिक एवं वैज्ञानिक सोच को दर्शाती हुई बारह कहानियों का संग्रह है।

तथ्य यह है कि वैज्ञानिक विषयों पर केंद्रित बालकहानियों में तर्कसंगत अभिव्यक्ति की महती आवश्यकता होती है। वैज्ञानिक प्रयोगों के सहारे स्वस्थ बालकहानियाँ लिखना भ्रम तो हो सकता है, लेकिन जहाँ तक कसौटी का सवाल है उस पर खरी उतरती हुई कहानियाँ विज्ञान के आधारभूत ढाँचे में फिट भी हो जाएँ, यह इतना आसान भी तो नहीं है। कथा शीर्षक 02 का विस्तार 'आधा पानी पूरा पानी' कहानी में देखा जा सकता है। 'मैं ऐसा क्यों हूँ' कहानी में राहुल की अभिव्यक्ति और अभिभावकों की अंतर्भुक्ति का समन्वय देखा जा सकता है। संग्रह की सभी कहानियों में एक ओर बच्चों को कल्पना की सैर कराई गई है तो दूसरी ओर यथार्थ की दुनिया में जीने का संकल्प लेना भी सिखाया गया है। चित्रकार जावेद आलम का बनाया हुआ पुस्तक का बहुरंगी मुखपृष्ठ तो बहुत प्रभावित करता है लेकिन पुस्तक के अंदर कहानियों के साथ बनाए गए श्वेत–श्याम चित्र में आकर्षण कम है।

श्यामपलट पाण्डेय का 16 बालकहानियों का संग्रह 'धरती ने मनाया त्योहार' इस अर्थ में बहुत महत्त्वपूर्ण है कि इसमें जंगल बचाने की अनूठी पहल है, पंखी के हौसलों की उड़ान है, आपसी सहयोग से पढ़ाई है तो तटबंध का निर्माण, मुझे इंजीनियर बनना है, वह अपने निर्णय पर अटल था तथा आज से क्यों नहीं जैसे विषयों

के माध्यम से प्रकृति, पर्यावरण, आपसी तालमेल, पारिवारिक समन्वय का अहसास भी कराया गया है।

इन कहानियों की विशेषता यह है कि इनमें न तो सपाटबयानी है और न ही आसानी से लक्ष्य प्राप्ति के लिए जुगाडू प्रकृति या तिकड़म का सहारा लेने की सलाह दी गई है। कठोर परिश्रम से लक्ष्य तक पहुँचने का आनंद देती इन कहानियों में इस बात पर भी बल दिया गया है कि अपने सही निर्णय पर अटल रहने वाला ही जीवन में सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ सकता है। कहानियों की भाषा–शैली में कोई बनावटीपन नहीं है। ऐसा लगता है कि कहीं–कहीं कहानियाँ पाठकों से खुद संवाद करती हैं।

गिरिजा कुलश्रेष्ठ बड़ों के साथ–साथ बच्चों के लिए भी लगातार लिखती रही हैं। इस वर्ष सन 2024 में प्रकाशित उनकी दो पुस्तकें 'नदी झूठ नहीं बोलती व अन्य कहानियाँ' तथा 'अपनी खिड़की से' प्रकाशित हुईं। 'नदी झूठ नहीं बोलती' में कुल 12 कहानियाँ तथा 'अपनी खिड़की से' में कुल 17 बालकहानियाँ संकलित की गई हैं। उनकी कहानियों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे हमेशा बच्चों के परिवेश से जुड़ी होने के कारण पठनीय होती हैं। यह भी सत्य है कि उनकी कहानियों के पात्र पाठकों से सीधे साक्षात्कार करते हैं। उनकी कहानियों के कथानकों की बुनावट ऐसी होती है कि एक बार पढ़ना शुरू करो तो छोड़ने का मन नहीं करता है। वह मिट्टी की बात से शुरू करती हैं तो आँगन में नीम, बादल कहाँ गया, कोयल की तरकीब बताते–बताते सवाल भी खड़ा कर देती हैं कि आखिर तनु को रोना क्यों आया? 'नदी झूठ नहीं बोलती' कहानी पढ़ते–पढ़ते पेड़–पौधों की बातचीत इतनी सहज लगने लगती है कि पूरा प्राकृतिक वातावरण रसमय हो जाता है। इसके अतिरिक्त अन्य कहानियाँ भी पाठकों को बाँधकर रखने में सक्षम है। 'छुटकू की उड़ान में' बुलबुल का छोटा बच्चा कैसे उड़ना सीखता है, बड़े स्वाभाविक ढंग से उसका चित्रण किया गया है। 'मैं तो छुटकी हूँ' में गिलहरी का पूरा रोडमैप दिखाकर उसकी दिनचर्या को बताया गया है। दोनों संग्रहों की कहानियाँ भाषा–शैली की दृष्टि से जितनी परिपक्व हैं, प्रस्तुतीकरण की दृष्टि से भी उनमें एक पुष्ट बहाव है जो पाठकों को बाँधकर रखता है। दोनों संग्रहों को पाठकों का मान मिलेगा, ऐसा मेरा विश्वास है।

श्रीमती राज फ़ौजदार वैसे लेखन के क्षेत्र में लंबे समय से जुड़ी हुई हैं मगर उन्होंने बच्चों के लिए लिखना हाल ही में शुरू किया है। उनकी बालकहानियों की पुस्तक 'किस्सा कोटर का' 15 ऐसी कहानियों का संग्रह है जिसमें उनके निजी अनुभवों का संसार समाया हुआ है। उनका पशु–पक्षियों के प्रति लगाव ही इन कहानियों का निमित्त बना है। हमारे आसपास गौरैया, कोयल, कौआ, बुलबुल, कबूतर, मुर्गा–मुर्गी तथा तोता–मैना आदि अक्सर दिखलाई दे जाते हैं। आदत के अनुसार बच्चों का इससे सहज ही रिश्ता जुड़ जाता है। वे उनके बारे में और विस्तार से

जानना भी चाहते हैं। इन कहानियों में बच्चों को पशु–पक्षियों की प्रवृत्तियों, आदतों और उनकी जीवनचर्या आदि से जोड़ने का सफल प्रयास किया गया है।

संग्रह की कहानियों को पढ़ते हुए ऐसा लग सकता है कि पाठकों को इन कहानियों में कथातत्वों के सूत्र कम मिलें, मगर उसमें रचनाकार के अपने आसपास देखने–सुनने, अनुभव की आँच में पकी हुई सोंधी–सोंधी खुशबू अवश्य मिलेगी।

जे. पी. (जयप्रकाश) पांडेय की बाल कहानियों की पुस्तक 'नीली राजकुमारी' में कुल 6 बालकहानियाँ है जिनके शीर्षक इस प्रकार हैं– 'रानी मधुमक्खी', 'शैतान मंत्री', 'बड़े मुंशीजी', 'नीली राजकुमारी', 'दादी की पूजा' तथा 'जाड़े और कोको'।

'रानी मधुमक्खी' कहानी में मधुमक्खियों के परिवार की रोचक जानकारियाँ दी गई हैं। मधुमक्खी के शहद बनाने की जटिल प्रक्रिया भी अच्छी तरह से बच्चों को इस कहानी में बताई गई है। इसके साथ ही अप्रत्यक्ष रूप से वृक्षारोपण का संदेश और पर्यावरण संरक्षण पर भी बल दिया गया है। 'शैतान मंत्री' कहानी आपसी सौहार्द और भाई–चारे पर आधारित है। शेर यह प्रण लेता है कि अब वह नियमित रूप से अपने राज्य में भ्रमण पर निकलेगा और सभी पशु–पक्षियों का ध्यान रखेगा। अन्य कहानियाँ 'दादी की पूजा', 'बड़े मुंशीजी' और 'जाड़े और कोको' में भी बच्चों का अनूठा रोचक संसार समाया हुआ है। पूरी पुस्तक रंगबिरंगी है और चित्रों का संयोजन नयनाभिराम है।

पद्मा चौगांवकर की मातृभाषा मराठी है, लेकिन उन्होंने प्रभूत मात्रा में हिंदी भाषा में लेखन कार्य किया है। उनकी शताधिक कहानियाँ लंबे समय से बच्चों के बीच में न केवल लोकप्रिय हैं बल्कि लगातार अपनी उपस्थिति से बच्चों का मनोरंजन और ज्ञानवर्धन भी कर रही हैं। आलोच्य वर्ष में उनकी बाल कहानियों की दो पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं– 'कहानियाँ गुदगुदी वाली' और 'कहानियाँ कुछ कहती हैं'। दोनों पुस्तकों में 12–12 कहानियों को संकलित किया गया है। 'कहानियाँ गुदगुदी वाली' में ऐसी कहानियों को प्रधानता दी गई है जो बच्चों को खुश करने, हँसाने और जीवन को सरस, सुगम और सुखमय बनाने के लिए अति आवश्यक हैं। इन कहानियों के शीर्षक ही गुदगुदी पैदा करने के लिए पर्याप्त हैं– 'बेटिकट बकरी', 'उलटफेर', 'छींक कराची', 'दोने में हँसी' तथा 'उनसे पहले वे मरे'। जीवन में घटने वाली छोटी–छोटी घटनाओं को इन कहानियों का आधार बनाया गया है। इनके संवाद इतने प्रभावशाली हैं कि कथा का विस्तार स्वयमेव आगे–आगे बढ़ता रहता है।

'कहानियाँ कुछ कहती हैं' पुस्तक में 'दोस्ती के साथ प्यारा दुश्मन', 'अनोखा उत्सव', 'नहीं चली चालबाजी' तथा 'छोटा काम बड़ा काम' कहानियों के साथ 'मुनिया बदल गई', 'सीख मिली', 'हम बनेंगे मॉडेल' और 'होली में हुड़दंग' की कल्पना जीवन में सतर्कता और अनुशासन से जुड़ी हुई है। अधिकांश कहानियाँ जीव–जंतुओं के

जीवन और दिनचर्या पर आधारित हैं जिनमें विविधताओं का खजाना भरा हुआ है। यह भी सही है कि हमारी सोच का दैनंदिन जीवन पर सीधा असर पड़ता है, इसीलिए कहा गया है कि हमें सकारात्मक सोच अपनानी चाहिए। छोटे–छोटे संवादों ने इन कहानियों में मिठास घोल दी है।

डॉ. मधु पंत बहुत लंबे समय से बालसाहित्य के सृजन के साथ–साथ उसके उन्नयन और प्रचार में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। राष्ट्रीय बाल भवन, नई दिल्ली की निदेशक के रूप में उन्होंने बच्चों और बालसाहित्य के क्षेत्र में अनेक उल्लेखनीय प्रयोग किए हैं। लेखन के क्षेत्र में भी उनके ऐसे ही प्रयोग का एक उदाहरण है उनकी पुस्तक– 'उल्लू और काला चश्मा'। आखिर उल्लू को काला चश्मा क्यों चाहिए? इसी सवाल का जवाब पुस्तक में बड़ी ही रोचक शैली में दिया गया है। यह पुस्तक तीन भागों में विभाजित है। इसका पहला भाग कहानी के रूप में प्रस्तुत किया है। दूसरे भाग में इसी कहानी को 'काले चश्मे का रहस्य' शीर्षक से कविता के रूप में ढाला गया है और अंत में तीसरा भाग गतिविधियों के रूप में 'करके सीखें' शीर्षक के रूप में दिया गया है।

'रोशनी के पंख' सुधा भार्गव की ऐसी 20 बालकहानियों का संग्रह है जिसमें ज्ञान और विज्ञान का अद्‌भुत समन्वय है। यह समन्वय बच्चों की वैज्ञानिक दृष्टि को तो विकसित करेगा ही, उनकी कल्पना की सोच को नया आकाश भी प्रदान करेगा। इस संग्रह की मजेदार कहानियों में 'अलगुल्लू की रसभरी', 'जादू भरी थैली', 'लाल मुँह का जेंटलमैन', 'चाकलेटी डांसर', 'चार आँखों की चौकड़ी' और 'हीरो हो गया जीरो' में सूरजमुखी की कहानी, प्लास्टिक का बढ़ता प्रयोग, पटाखों से हानियाँ और रात की रानी चमेली की व्यथा–कथा को बड़े रोचक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। कहानियाँ लंबी अवश्य हैं, लेकिन यह कहानीकार का कौशल है कि उसने इन्हें बोझिल नहीं होने दिया है। विशेष रूप से किशोरों को इन कहानियों में विशेष आनंद आएगा।

इस वर्ष प्रकाशित रेनू सैनी का बालकहानी–संग्रह 'नटखट बचपन' जीवन की स्वर्णिम यादों से जुड़ा हुआ है। सच में बचपन हर एक की खट्‌टी–मीठी यादों का ऐसा खजाना होता है, जिसमें डूबने–उतराने का अपना अलग ही आनंद होता है। वस्तुतः इस संग्रह की अधिकांश कहानियों में बचपन ही समाया हुआ है। लेखिका का यह कथन बिल्कुल सही है कि– ''बच्चों को सही दिशा देने में कहानियाँ निर्णायक भूमिका निभाती हैं। रोचक और मन को लुभाने वाली कहानियाँ जब बच्चे पढ़ते हैं तो वे कई बार उनमें अपना स्वरूप देखते हैं। कहानियों के माध्यम से सीख ग्रहण करना बेहद सरल है। प्राचीन काल से ही कहानियाँ किसी न किसी रूप में बच्चों को सुनाई जाती रही हैं। समय के साथ–साथ कहानियों का रूप नयी पीढ़ी के अनुसार बदलना चाहिए।'' सेब का रंग क्यों बदला? में बड़े तार्किक ढंग से विधि मैडम ने रासायनिक

परिवर्तन के बारे में पूरी कक्षा को विस्तार से बताया– ''जब फीनोलेज व क्लोरोजेनिक अम्ल तथा थोड़ी मात्रा में कैटेचिन का ऑक्सीकरण हो जाता है, जिससे सेब का रंग भूरा या बादामी हो जाता है। इसलिए सेब को अधिक समय तक काटकर नहीं रखना चाहिए, बल्कि सेब को ही क्यों किसी भी फल को अधिक समय तक काट कर नहीं रखना चाहिए। फल को काटते ही तुरंत खा लेना चाहिए।'' 'पतंग के पेंच', 'बूढ़ी परी', 'पानी की घंटी का कमाल' तथा 'गणित सरल है' कहानियों में क्रमशः पतंगबाजी प्रतियोगिता में हेतल का जीतना, प्रत्यक्ष का बड़े–बुजुर्गों के प्रति हृदय परिवर्तन, जीवन में पानी का महत्त्व तथा गणित की मजेदार पढ़ाई का बड़ा रोचक वर्णन किया गया है। 'दाँतों की सफाई' सामान्य कहानी है जिसमें अच्छे स्वास्थ्य के लिए दाँतों के महत्त्व पर प्रकाश डाला गया है।

इस वर्ष प्रकाशित अंकुश की 'आदर्श बालकथाएँ' पुस्तक में कुल 10 बाल कहानियाँ हैं। जैसा कि इसके शीर्षक 'आदर्श' से स्पष्ट है कि इसमें सामाजिक परिवेश में व्याप्त विसंगतियों को इन छोटी–छोटी कहानियों का आधार बनाया गया है। 'चालाक कौए का अंत', 'लालची किसान', 'लालची लड़का', 'सोनू की हरकत' तथा 'नानी की सीख' कहानियों में कहीं न कहीं यह बताने का प्रयास किया गया है कि लालच नहीं करना चाहिए। अधिक लालच के चक्कर में व्यक्ति अपना ही नुकसान कर लेता है।

आलोच्य वर्ष में प्रकाशित डॉ. सुधा गुप्ता 'अमृता' का 21 बाल कहानियों का संग्रह 'अक्ल बड़ी या भैंस' बच्चों के परिवेश से जुड़कर उनके मनोविज्ञान की झाँकी प्रस्तुत करता है जिसमें बचपन की छवियाँ विद्यमान हैं। संग्रह की पहली कहानी 'मायरा का गुस्सा' का ताना–बाना इतना स्वाभाविक और प्रभावशाली ढंग से बुना गया है कि मायरा की पूरी दिनचर्या सामने आ गई है। उसी दिनचर्या से ही मायरा का गुस्सा भी निकलकर सामने आया है। यह तो गनीमत है कि दादी उसकी बेस्ट फ्रेंड के रूप में अवतरित होकर इतने अच्छे ढंग से सब सँभाल लेती हैं कि मायरा का मन पढ़ाई में तो लगने ही लगा है, उसका सारा होमवर्क भी समय से हो जाता है। बाल मनोविज्ञान के साँचे में ढली हुई यह कहानी पाठकों को अंदर तक भिगो देती है। 'एक थी मीशा' और 'दीदी माँ' (दादी माँ) कहानियों में बच्चों की दैनंदिन जीवनचर्या का खाका खींचा गया है। उनकी छोटी–छोटी गतिविधियों की बानगी कहानियों में प्रस्तुत की गई है।

संग्रह की अन्य कहानियाँ भी पाठकों को बाँधकर रखने में सक्षम हैं। कहानीकार ने कहीं–कहीं संवादों के माध्यम से ऐसा चित्र खींचा है कि उसके पात्र बिल्कुल जीवंत हो गए हैं।

आलोच्य वर्ष में डॉ. विमला भंडारी की बालकहानियों के दो संग्रह– 'मस्तानों की

टोली' और 'मधुबन की सरस कहानियाँ' प्रकाशित हुए। मस्तानों की टोली में कुल 12 कहानियाँ हैं तो मधुबन की सरस कहानियाँ में 13 कहानियाँ। दोनों पुस्तकों की 25 कहानियों में कहीं मनोरंजन की बहार है तो कहीं समय को पहचानते हुए बचत करने की सलाह। लापता रोटी का टुकड़ा किसी भूखे के पास जाकर इस बात का संदेश देता है कि खाने की वस्तुओं का सही प्रयोग ही उसका सदुपयोग है। इसीलिए बचपन से यह नसीहत दी जाती है कि थाली में परोसे गए खाने को पूरा खत्म करके ही उठना चाहिए।

संग्रह की अन्य कहानियों में इस बात का भी संकेत मिलता है कि सत्य की मशाल हमेशा जलती है जबकि झूठ कुछ समय के लिए भले ही दैदीप्यमान दिखे, उसका अंत जल्दी होना निश्चित है। यही नियति भी है। शीर्षक कथा 'मस्तानों की टोली' में ट्रैफिक के नियमों की अवहेलना न करने की नसीहत दी गई है। साथ ही मोबाइल के अधिक प्रयोग न करने पर भी बल दिया गया है। वैसे ही आजकल रील बनाने के चक्कर में भावी पीढ़ी कभी–कभी इतना उग्र और व्यग्र हो जाती है कि उसे अपनी और परंपरागत मर्यादा की भी परवाह नहीं रहती है। इसमें अप्रत्यक्ष रूप से सावधानी हटी दुर्घटना घटी का मंतव्य भी छिपा हुआ है। कुल मिलाकर मस्तानों की टोली में मस्ती ही मस्ती है।

मधुबन की सरस कहानियाँ में एक ओर 'दोस्ती की कीमत', 'जान बची लाखों पाए', 'जैसे को तैसा' जैसी मुहावरेदार कहानियाँ हैं तो दूसरी ओर 'बड़ा सो बड़ा फल', 'चलोगे मेरे साथ', 'रोशनी के घेरे' तथा 'भाग लो यहाँ से' कहानियों में केरल के राज्य वृक्ष नारियल की दास्तान, बंदर द्वारा शेर से मेमने की रक्षा, अँधेरे–उजाले की दास्तान तथा रक्षक के भक्षक बनने की कथा आख्यान के रूप में प्रस्तुत की गई है। शेर के वाक्य में चेतावनी का चेहरा भी छिपा हुआ है– 'तब रक्षक ही पकड़ने आ जाएँ तो भाग जाना ही बेहतर है। इसी में बुद्धिमानी है।'

इस वर्ष प्रकाशित भगवत प्रसाद पांडेय की पुस्तक 'पहाड़ों से निकली पहाड़ों की कहानियाँ' इस अर्थ में महत्त्वपूर्ण है कि इनका विधान पहाड़ों की तरह ही बेहद खूबसूरत और अलौकिक है। बालसाहित्यकार प्रो. मोहम्मद अरशद खान की टिप्पणी से सहमत होते हुए यह कहा जा सकता है कि भगवत प्रसाद जी ने लिखने के लिए कभी नहीं लिखा है। उन्होंने हमेशा मन की आवाज को ही कागज पर उतारा है। वे निरंतर पहाड़ी संस्कृति से संपर्क में रहने वाले प्रकृति के सच्चे उपासक हैं। उन्हें नजदीक से जानने वाले लोग पेड़–पौधों, पशु–पक्षियों के प्रति उनके उत्कट प्रेम से परिचित हैं। यही कारण है कि उनकी बालकहानियों में पहाड़ की संस्कृति और भौगोलिक विशिष्टताओं के चित्र अत्यंत सहज रूप में अंकित हुए हैं।

प्रस्तुत संग्रह में कुल 31 बालकहानियाँ हैं जिनमें पर्वतराज हिमालय के आँगन

में पहाड़, घाटी, नदी–झरने, वन–उपवन तथा पशु–पक्षी सभी को देखा जा सकता है। इस संग्रह की मनभावन कहानियों में ऐसा संसार समाया हुआ है जिसमें रंग–बिरंगे और मनमोहक चित्रों की भरमार है। इस वैशिष्ट्य को संग्रह पढ़कर ही जाना जा सकता है। अनुभव की थाती को संजोए हुए तथा मनोविज्ञान की कसौटी पर रची गई इन कहानियों की एक विशेषता और है जिसे विशेष रूप से रेखांकित किया जाना चाहिए और वह है–रचनाकार की भाषा पर अद्भुत पकड़। बच्चों के लिए ह्रदय तल की गहराइयों से निकली हुई भाषा उन्हें बच्चों का दोस्त भी बनाती है। इस उपयोगी संग्रह में अगर कहानियों के साथ दिए गए चित्रों पर भी उतनी ही मेहनत की गई होती तो यह संग्रह और नयनाभिराम हो सकता था। समग्रतः भाषा–शैली, कथानक और प्रस्तुतीकरण की दृष्टि से यह संग्रह निश्चय ही प्रशंसनीय है।

इस वर्ष प्रकाशित समीर गांगुली की जिन दो पुस्तकों का उल्लेख विशेष रूप से किया जाना चाहिए, उनके नाम हैं– 'भले भूतों की कहानियाँ' और 'जेड जुइंग की डायरी'। 'भले भूतों की कहानियाँ' छोटी–बड़ी दस घटनाओं पर केंद्रित है जो आपस में एक दूसरे से गुँथी हुई हैं। अब यह लेखक की कल्पना और कलम का कमाल है कि उसे बहुत सारे भूतों में भी कुछ भूत लगते हैं। संग्रह की पहली कहानी 'भूतो और भूत' का ऐसा ताना–बाना बुना गया है कि पढ़ते–पढ़ते कहीं हँसी आती है तो कहीं आश्चर्य से मुँह खुला रह जाता है। साधारण ढंग से उठाई गई भूतों की कथा जब आई.ए.एस. बने भूतों पर समाप्त होती है तो इस बदलाव में भूतो की ही भूमिका का उल्लेख होना सही अर्थों में मन और दृढ़ इच्छा शक्ति का बदलाव है और यही भले भूत का संकल्प कथा को इतना बाँधकर रखता है कि आई.ए.एस.भूतो आधी रात को भी उस भूत को ढूँढता है जिसने उसकी जिंदगी ही बदल दी है।

अगली कथा में छोटा डॉक्टर, बड़ा डॉक्टर भी भूतराजा का इलाज होम्योपैथिक दवाओं से करता है और वह पूरी तरह ठीक हो जाता है। हालाँकि यह कथा सपने में बुनी गई है लेकिन इसका उद्देश्य परोपकार की भावना पर बल देना है।

एक प्रयोगधर्मी कहानीकार के रूप में समीर गांगुली की पकड़ हर एक कहानी में दिखाई देती है। 'भूत का फूल बाग' और 'नरक सागर' कहानियाँ भी अलग–अलग मिजाज की है जिनमें भूतों की उठापटक लगातार जारी रहती है। अंतिम कहानी 'भूतो का रिक्शा' में गिरधारी हवाई और भूत की भ्रमण करते–करते जो बातचीत होती है, उससे पूरे भूतलोक का नक्शा उभर कर सामने आ जाता है। यह कहानीकार के लेखन का कौशल है कि पूरा कहानी–संग्रह पढ़ते हुए हम भूतों के तरह–तरह के किस्सों से परिचित तो होते ही हैं, उनमें नमक–मिर्च लगाकर जो विस्तार दिया गया है, वह कहानियों के साथ–साथ उसे कल्पनालोक में ले जाता है जहाँ रहस्यमय घटाटोप अंधकार और उजाला दोनों साथ–साथ चलते हैं।

समीर गांगुली की दूसरी पुस्तक 'जेड–जुइंग की डायरी' किशोर पाठकों को महान आविष्कारक जेड जुइंग के साथ विभिन्न ग्रहों की रोमांचक यात्राओं पर ले जाती है। कथा का खूबसूरती से किया गया विस्तार अलौकिक आविष्कारों और इतिहास की परतों में दबे हुए रहस्यों से उनका परिचय कराता है। यह कहानीकार की कहन शैली का चमत्कार है कि इन सभी कहानियों में हर जगह कौतूहल विराजमान है, साथ ही साथ हर मोड़ पर जिज्ञासा है। कहीं–कहीं खतरे भी हैं लेकिन महत्त्वपूर्ण बात यह है कि हारकर भी हार न मानने का जो दृढ़संकल्प है, उसने पूरी पुस्तक को जीवंत बना दिया है। इस पुस्तक में एक लघु उपन्यास और सात कहानियों को विज्ञान और फैंटेसी के तथ्यों से गढ़ा गया है। हर कहानी एक–दूसरे से बिल्कुल अलग है लेकिन पढ़ते समय यह अलगाव बहुत बारीकी से देखने पर ही नजर आता है। विशेष रूप से किशोर पाठकों को मनोरंजन के साथ–साथ, नए–नए अविष्कारों से भी जोड़ती हुई ये कहानियाँ पठनीय होने के साथ–साथ कल्पना से भी जोड़ने में सक्षम हैं।

इस वर्ष प्रकाशित वंदना यादव के बाल कहानी–संग्रह 'पिकनिक और अन्य कहानियाँ' में ऐसी कहानियाँ हैं जिनमें बचपन की सोंधी–सोंधी खुशबू फैली हुई है। बकौल कहानीकार, इन कहानियों में मासूमियत की बातें हैं। इन कहानियों के नायक बिल्कुल आपके जैसे हैं– सीधे–सादे, मगर जहीन। सभी कहानियों के चरित्र प्रकृति के नजदीक रहना पसंद करते हैं। पशु–पक्षियों की दुनिया उनको लुभाती है। पशु–पक्षियों के साथ–साथ प्रकृति से भी प्रेम करने वाली कथा, शरारती गिलहरी के साथ सुंदर की कथा बच्चों की मनोवृत्ति से जुड़ी हुई है। 'चिड़िया के खेत' और 'सब कुछ बन जाऊँ' जिज्ञासा के साथ अत्यधिक फैलाव से बचने का संदेश देती है। सच तो यह है कि हमें अपनी इच्छाओं का विस्तार अपनी सामर्थ्य के अनुसार ही करना चाहिए।

दीनदयाल शर्मा की 'चुनिंदा बालकहानियाँ' में पहली कहानी अपने शीर्षक– 'यह भी एक कहानी है' के कारण जिज्ञासा से भरी हुई है। कहीं ऊहापोह तो कहीं पश्चाताप के बीच में झूलती हुई यह कहानी वास्तव में कहानी की कहानी है। अन्य कहानियों में 'पश्चाताप के आँसू', 'अंजू की सीख', 'पापा झूठ नहीं बोलते', 'कैसे आया बदलाव', 'लेखराम जी की गाय', 'इनाम और सजा' में भी रोज–रोज घट रही घटनाओं को बड़े सहज ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

इस वर्ष ललित शौर्य के दो बाल कहानी–संग्रह 'जंगल हम बचाएँगे' और 'परियों का संदेश' प्रकाशित हुए। पहली पुस्तक 'जंगल हम बचाएँगे' में 'आग बुझाने वाले', 'आग नहीं बाग लगाएँ', 'जलते जंगलों को बचाओ' तथा 'फॉरेस्ट वॉरियर्स' विषयक चार कहानियाँ हैं। सभी कहानियों की मुख्य कथावस्तु आग से सुरक्षा ही है, इसीलिए जंगल में लगने वाली आग से बचाव के लिए पुस्तक के द्वितीय आवरण पर

कुछ ध्यान रखने योग्य बातों का भी उल्लेख किया गया है। जंगल सुरक्षित रहेंगे तो हमें आसानी से लकड़ियाँ, औषधियाँ, पेड़–पौधे तथा अन्य आवश्यक चीजें मुहैया हो पाएँगी।

'परियों का संदेश' पुस्तक में कुल 10 कहानियाँ हैं। बाल–साहित्य में इस बात पर भी बहुत बहस होती रही है कि बच्चों के लिए परियों की कहानियों की कोई प्रासंगिकता नहीं है। दरअसल, अगर जादू–टोना से हटकर परियों की कहानियों को आज के परिवेश में प्रस्तुत किया जाए तो बच्चों के बीच में उनका स्वागत किया जाएगा। कहानीकार ने इन कहानियों को नए ढंग से प्रस्तुत किया है, इसलिए बच्चों के लिए इनकी उपयोगिता असंदिग्ध है।

बालनाटक

यह विडंबना ही है कि प्रतिवर्ष बालसाहित्य की ढेर सारी पुस्तकें प्रकाशित होती हैं लेकिन बच्चों के लिए नाटक के नाम पर सन्नाटा ही नजर आता है। हाँ, छिटपुट प्रकाशन अवश्य होते हैं जिन्हें ऊँट के मुँह में जीरा ही कहा जा सकता है। बहरहाल इस वर्ष प्रकाशित बालनाटकों की प्राप्त पुस्तकों में भगवती प्रसाद द्विवेदी का 'मेरे प्रिय बाल नाटक' में कुल 21 नाटकों में अधिकांश एक अंक के एकांकी हैं लेकिन कुछ नाटकों का विस्तार कई अंकों में हुआ है। इनकी एक और विशेषता है कि इनमें बच्चों की रुचि के अनूकूल ऐसे पात्रों का चयन किया गया है जो बच्चों को आपस में जोड़ने का काम करते हैं। इन नाटकों की कथावस्तु ऐतिहासिक, सामाजिक और सांस्कृतिक है। इन नाटकों में सामाजिक मूल्यों को भी बरकरार रखने की शिक्षा दी गई है।

हालांकि कुछ नाटक 'आदमी की खोज' नाटक–संग्रह में पहले भी संकलित होकर पाठकों तक पहुँच चुके हैं, लेकिन इस संग्रह में पूरे 21 नाटकों को एक साथ पढ़ना भी सुखकर प्रतीत हो रहा है। रचनाकार की बाल काव्य में सघन रुचि होने के कारण बीच–बीच में कविताओं को नाटकों से सजाया गया है। ये अंश मंचन के समय नाटकों को और लालित्य प्रदान करते हैं।

हिंदी बाल साहित्य में नाटकों की कमी है, यह बात बराबर उठती रहती है और इसमें सच्चाई भी है। हास्य बाल नाटक तो टार्च लेकर खोजने पर ही मिलेंगे। ऐसे में रमाशंकर की पुस्तक '9 हास्य बाल नाटक' सन्नाटे को तोड़ती नजर आती है। शीर्षक से ही अंदाजा लगाया जा सकता है कि नाटक मजेदार के साथ–साथ कितने दमदार भी होंगे——— 'आसमान से गिरे खजूर में अटके', 'कलुआ दि ग्रेट', 'जूते की देन', 'गप्प में शरत', 'बजरंगी की लट्ठ', 'उल्टा–पुल्टा', 'मनुष्य की दुम', 'सियार के बजे बारह' तथा 'नुस्खे का कमाल'।

वैसे तो बच्चों के लिए नाटक लिखना ही आसान नहीं है। अगर हास्य नाटकों की बात की जाए तो सहज, सरल और मनोविनोद से भरपूर नाटकों का सृजन निश्चय

ही टेढ़ी खीर है। यह बात भी सही है कि बड़ों के लिए नाटकों में अपेक्षाकृत विस्तृत फैलाव और सोच का विस्तार होता है लेकिन बच्चों के लिए नाटक लिखने में उनका मनोविज्ञान, भाषा–शैली, पात्रों का चयन, कथानक तथा संवाद योजना में उनकी ग्रहण क्षमता का सबसे पहले ध्यान रखना पड़ता है।

प्रस्तुत संकलन में विषयों का चयन ही इस दृष्टि से किया गया है कि वे पाठकों/दर्शकों को गुदगुदाने का पूरा प्रयास करेंगे। उनके संवाद लहालोट कर देंगे। यह भी हो सकता है कि हँसते–हँसते आपका पेट ही फूल जाए। ये नाटक इस दृष्टि से भी लिखे गए हैं कि बिना अधिक ताम–झाम के स्टेज पर इनका मंचन किया जा सके। विद्यालयों में सांस्कृतिक कार्यक्रमों के लिए नाटकों की खोज अक्सर की जाती है, इस दृष्टि से ऐसी पुस्तक बड़े अभाव की पूर्ति करती है।

डॉ. मधु पंत का चार बाल नाटकों का संग्रह 'लौकी ने ढूँढ़ा दूल्हा' में शीर्षक नाटक के अतिरिक्त 'जंगल में फैशन शो', 'सभी हैं अव्वल' और 'जंगल की बेटी' संकलित किए गए हैं। इन सभी नाटकों में हास्य को परोसने का अंदाज निराला है। नाटकीयता ऐसी कि बस पूछिए मत, जहाँ–जहाँ काव्यात्मक प्रस्तुति है, उनमें गायन को विशेष महत्त्व दिया गया है। कहीं पर भी छंद शिथिल नहीं हैं और भाषा खनकती हुई आगे ही आगे बढ़ती चली जाती है।

इन सभी नाटकों में बालमनोविज्ञान की एक–एक कड़ी को सहजता से पिरोकर प्रस्तुत किया गया है। लौकी अपने विवेक से जिस प्रकार कद्दू का दूल्हे के रूप में चयन करती है, उसके पीछे कद्दू की सादगी अनिवार्य शर्त है–

आज मिला लौकी को दूल्हा रे।
पालक आया, आलू आया
लाल टमाटर भी इतराया
पर लौकी ने ढूँढ़ा कद्दू रे
कद्दू हँसकर मन में फूला रे।
आज मिला लौकी को दूल्हा रे।

डॉ. संजीव कुमार की बालनाटकों की दो पुस्तकें 'बाल मजदूर' और निर्मल गंगा' भी इस वर्ष प्रकाशित हुई। 'बाल मजदूर' संग्रह में छोटे–छोटे 5 नाटक हैं। 'बाल मजदूर' बल्कि कहें, बाल श्रमिक नुक्कड़ नाटक है जिसमें बाल–मजदूरी का निषेध करने की बात कही गई है। 'नारी के हैं रूप अनेक' की मुख्य पात्र पन्ना धाय हैं जिन्होंने उदय सिंह के लिए अपने बेटे का बलिदान कर दिया था। 'साहस व वीरता की देवी रानी लक्ष्मीबाई' के साथ–साथ 'नई सुबह' संभावनाओं पर केंद्रित नाटक है। 'निर्मल गंगा' नाटक को सूत्रधार, राजगुरु, भगीरथ, राजा सगर, देवी गंगा, विष्णु, ब्रह्मा जी, नारद जी, शिव जी, पंडित जी तथा यजमान आदि छोटे–छोटे प्रसंगों में बाँटकर

प्रस्तुत किया गया है।

संजीव कुमार का संग्रह 'चरखे की धुन' भी नाटकों का संग्रह है। इसमें 6 नाटकों में नुक्कड़ नाटक भी शामिल है जबकि अंतिम चार 'छात्रों की विदाई' 'भूल न जाना' 'युगल गीत' और 'गुदड़ी के लाल' में काव्यात्मक अभिव्यक्ति है जो बच्चों को संवेग स्वर में गाने की प्रेरणा देते हैं। यह बिल्कुल सत्य है कि नाटक लिखना एक कठिन विधा है। काव्य रूपक और एकांकी तो अत्यधिक परिश्रम और कौशल की माँग करते हैं।

बाल उपन्यास

'पहाड़ी के उस पार' डॉ. मोहम्मद अरशद खान का एक बाल उपन्यास है। यह छत्तीसगढ़ के दंतेवाड़ा एवं बस्तर जैसे नक्सल प्रभावित इलाकों की पृष्ठभूमि पर आधारित है। वास्तव में यह उपन्यास शहर की जगमगाहट के उस पार सिसकते हुए अंधेरे की कहानी है। किरनदुल की पहाड़ियाँ इस विसंगति की विभाजन रेखा हैं। कहानी इस प्रकार है कि प्रोफेसर रमन एक वनस्पतिशास्त्री हैं जिनके कदम औषधीय पौधों की खोज में जगह–जगह भटकते रहते हैं। उनकी इस यात्रा के साथी होते हैं– विक्की और मोंटू। ऐसी ही एक यात्रा के दौरान वह अबूझमाड़ के जंगलों में जा पहुँचते हैं। अबूझमाड़ यानी ऐसी अबूझ धरती जहाँ चप्पे–चप्पे पर खतरे मँडराते हैं, जहाँ कदम–कदम पर आशंकाएँ थरथराती हैं। खोज के दौरान वे नक्सलियों के बीच फँस जाते हैं और नजरबंद कर लिए जाते हैं। इसके साथ ही शुरू होता है– रोमांचक घटनाओं का सिलसिला। षड्यंत्र, संघर्ष, साहस और जीवटता से भरा हुआ एक ऐसा रोचक उपन्यास जिसे पढ़ना शुरू करें तो रुक ही नहीं सकते। इस उपन्यास की विषयवस्तु राजनीतिक है पर अरशद ने उसे बिना राजनीतिक रंग दिए आगे बढ़ाया है। इस उपन्यास में जहाँ एक ओर सरकार और कानून की अपनी मजबूरी का उल्लेख है तो वहीं दूसरी ओर उस सिस्टम को भी रेखांकित किया गया है जिनके कारण नक्सलवाद पैदा होता है। इसमें नक्सली जीवन की समस्याओं और उनके समाधान की ओर भी लेखक की दृष्टि गई है। बच्चों के लिए ही नहीं बल्कि उन बड़ों के लिए भी यह उपन्यास उपयोगी है जो नक्सली नाम सुनकर ही आतंकी होने का भ्रम पाल बैठे हैं। उनकी निगाह उस व्यवस्था की ओर नहीं जाती जिसके कारण यह समस्या जन्म लेती है। बाल साहित्य में इस तरह के उपन्यास बहुत कम लिखे गए हैं। 20 परिच्छेदों में बँटे हुए इस उपन्यास का प्रकाशन फ्लाइट ड्रीम्स पब्लिकेशन ने किया है तथा इसके चित्र पार्थ सेनगुप्ता ने बनाए हैं।

डॉ संजीव कुमार का बाल उपन्यास 'बर्फ के देश में' भोलू भालू, उसके पिता कालू और माँ डिम्बा की उस यात्रा से जुड़ा हुआ है जिसमें बर्फ पर चलने, घूमने–फिरने और उससे खेलने का आनंद जुड़ा हुआ है। गिरती हुई बर्फ के साथ

भोलू की जिज्ञासा पहाड़ के बारे में भी जानने की होती है। उसके पिता कालू ने बताया कि– धरती के अंदर बहुत गहराई पर बहुत गर्म लावा बहता है। फिर चट्टानों के खिसकने से यही लावा बाहर निकलता है और इकट्ठा हो जाता है। लावा इतना गर्म होता है कि उसके ठंडा होने पर पहाड़ बन जाते हैं। यह भी कहा जाता है कि जब दो टेटोनिक प्लेटें एक–दूसरे से टकराती हैं तो एक प्लेट दूसरी प्लेट के नीचे घुस जाती है, तो ऊपर वाली प्लेट पृथ्वी से बाहर निकलकर पहाड़ का रूप लेती है। इस काम में करोड़ों साल का समय लगता है क्योंकि पहाड़ प्रतिवर्ष 5 इंच से 10 इंच तक बढ़ते हैं। इस उपन्यास से ठंडी हवाएँ, ग्लेशियर, म्यूजियम के साथ–साथ शहीद स्मारक का वर्णन करके रचनाकार ने उन अमर शहीदों की स्मृति को भी सजीव रखने का सफल प्रयास किया है। कलेवर में छोटा होने के बावजूद जितनी जानकारियाँ इसमें दी गई हैं, वह पाठकों को बाँधकर रखती हैं। पुस्तक का आवरण आकर्षक है लेकिन अंदर एक भी चित्र का न होना आश्चर्य प्रकट करता है।

'नाचू के रंग' उपन्यास गोविन्द शर्मा का बड़ा ही रोचक और मनोरंजन से भरपूर है। इसकी कथावस्तु में नाचू एक ऐसा बालक है जो पहले अपने ब्रश और रंगों से खेलते हुए लोगों का मनोरंजन करता था लेकिन बड़ा होने पर वह प्रेरक व्यक्तिगत के रूप में सामने आया। एक ओर सफाई और दूसरी ओर पर्यावरण की सुर उसके मुख्य उद्देश्य हो गए। वह खाली जमीन पर वृक्षारोपण करवाने के साथ–साथ खुश इस कार्य में ऐसा रमा कि रिकॉर्ड बन गया।

उपन्यासकार ने नाचू की जो तस्वीर आरंभ में खींची है, वह इतनी मनमोहक है कि दिल में उतरती चली जाती है– 'जब वह (नाचू) मुस्कुराता है तो इसका मतलब है, अभी उसने कुछ नया नहीं किया है, किसी भी समय कर सकता है। हँसी का मतलब है कि वह कुछ कर चुका और उसे किसी की परवाह नहीं।' ऐसे अनूठे बालक के रंग और ब्रश दो ऐसे औजार है जिनसे वह अद्भुत कारनामे करके लोगों का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट करता है। एक से एक किस्सों से सुसज्जित यह उपन्यास पाठकों को पूरी तरह बाँधकर रखता है।

इस वर्ष समीर गांगुली का एक अद्भुत उपन्यास प्रकाशित हुआ है– 'एक गुलाबी भैंसा अलग–सा।' सच तो यह है कि यह हिंदी बाल साहित्य लेखन में एक तरह का प्रयोग है और प्रयोग भी ऐसा–वैसा नहीं बल्कि बाल मनोविज्ञान की गहराइयों में उतरकर कल्पनाशीलता की उड़ान भरते हुए लाजवाब अनुभवों से गुजरते हुए एक ऐसे भैंसे की दास्तान जो जंगल में भटककर बहुत कुछ सीखता है। अनोखी यात्रा पर निकला हुआ गुलाबी भैंसा सही अर्थों में जिंदगी के उद्देश्य को तलाश रहा है। इसमें उसकी भाँति–भाँति के जीवों से मुलाकात होती है। यह मुलाकात इतनी रोचक और रहस्यों से भरी होती है कि उसमें नैसर्गिक सुषमा के बार–बार दर्शन होते हैं। इसमें

कल्पनाओं का ऐसा लोक गढ़ा गया है जिसमें बच्चों के साथ सामान्य पाठक भी ऊभ–चूभ होते रहेंगे।

इस पूरे उपन्यास की कथा के शीर्षक इतने मजेदार हैं कि जिन्हें पढ़कर ही जानने की जिज्ञासा जन्म लेने लगती है– 'मेरी कहानी', 'शेरों के साथ', 'मगरमच्छों से मदद', 'हर हाल में खुशी', 'गाइड सियार से मुलाकात', 'चाहते क्या हो', 'खूबसूरती का झरना', 'कछुवा ज्ञान', 'सात कई जमे पत्थर', 'सुरंग और कूड़ेदान' और अंत में 'मिल गया मकसद'। इन छोटे–छोटे प्रसंगों से गुजरते हुए जितना पाठक आह्लादित होता है, उतनी ही रोचक यात्रा गुलाबी भैंसे की भी होती है।

इस उपन्यास की जितनी अच्छी कथावस्तु, प्रस्तुतीकरण और कहन शैली है, उतनी ही अच्छी इसकी बहुरंगी प्रस्तुति है। मुखपृष्ठ तो कमाल का है। पुस्तक के अंदर दिए गए चित्रों ने इसमें चार चाँद लगा दिए हैं। जैसे–जैसे कथावस्तु आगे बढ़ती है, पाठक अवाक् और उसका मुँह खुला का खुला रह जाता है। अब आगे क्या होगा, जानने की जिज्ञासा उपन्यास में बराबर बनी रहती है और यह जिज्ञासा तभी समाप्त होती है जब वह मकसद पर पहुँचता है।

सौम्या पाण्डेय 'पूर्ति' का बाल उपन्यास 'शुभू का स्कूल' बच्चों और किशोरों के स्कूल से जुड़े रोचक प्रसंगों पर आधारित है। इस उपन्यास की मुख्य पात्र शुभू कक्षा 3 की छात्रा है। कोरोना काल में ऑनलाइन कक्षाओं में कुछ बच्चों का मन लगता था, लेकिन कुछ बच्चे जबर्दस्ती माता–पिता के बार–बार कहने पर अनमने कंप्यूटर के सामने बैठ जाते थे। कोरोना के बाद स्कूल नियमित खुलते ही बच्चों की दिनचर्या में बदलाव आता है। कुछ बच्चों ने पहली बार स्कूल जाना शुरू किया। अब वही क्रम स्कूल जाने की तैयारी, स्कूल का पहला दिन, स्कूल में खटपट, स्कूल की कैंटीन, स्कूल का स्पोर्ट्स–डे, पहली पिकनिक और फाइनल एग्जाम पूरे साल भर चलने वाला रूटीन। उसी रूटीन में इस उपन्यास की प्रमुख पात्र शुभू की गप्पें, उसको मिले पैसे, उसका कविता पाठ और रिजल्ट– सभी घटनाओं को इतने मनोवैज्ञानिक ढंग से पिरोया गया है कि एक–एक बदलता घटनाचक्र जीवन–प्रसंगों को जीवंत कर देता है। ढेर सारी ऊहापोह और उनके बीच में समस्याओं की जुड़ती कड़ियाँ, लेकिन इस सबके बीच में शुभू का हार नहीं मानना उपन्यास को रोचक बना देता है। परिस्थितियाँ कैसी भी हों, जीवन में कभी भी हार नहीं माननी चाहिए। निराशा हमारे मनोबल को तोड़ देती है, इसलिए उसे जीवन में आने ही नहीं देना चाहिए। इस उपन्यास को एक ही बैठक में पूरा पढ़ा जा सकता है। कहीं–कहीं संवाद आत्मकथन जैसे लगते हैं। कविता पाठ वाले अध्याय में कविताओं की प्रस्तुति उपन्यास में एक और रंग भर देती है। भाषा–शैली इतनी सहज और प्रभावशाली है कि एक जिज्ञासा समाप्त होते ही दूसरी बढ़ जाती है और वह तभी खत्म होती है, जब उपन्यास समाप्त हो जाता है।

उपन्यास के मुखपृष्ठ पर बना प्राइमरी स्कूल और बैग लटकाए स्कूल जाती बच्ची का चित्र पाठकों को इसे पढ़ने के लिए स्वाभाविक ही प्रेरित करता है। यह उपन्यास बच्चों के साथ–साथ अभिभावक के लिए भी उतना ही पठनीय है।

आलोच्य वर्ष में फ्लाई ड्रीम्स पब्लिकेशन ने 5 ऐसे उपन्यासों का प्रकाशन किया जिनमें फंतासी, रहस्य–रोमांच, नई खोज और साहस की कथाएँ हैं। 'माया का रहस्यमयी टीला' : डॉ. शील कौशिक, 'जादुई अँगूठी' : डॉ. मंजरी शुक्ला, 'एडवेंचर्स ऑफ गोलू' : मनमोहन भाटिया, 'हाथिस्तान': प्रांजल सक्सेना और 'क्रिस्टल साम्राज्य': सुमन बाजपेयी– उपन्यासों में एकसाथ इतनी घटनाओं का मिला–जुला रूप देखने को मिलता है कि कभी हम हतप्रभ हो जाते हैं तो कभी कल्पना लोक में विचरण करते हुए दूसरे ही ग्रह में पहुँच जाते हैं। 'माया का रहस्यमयी टीला' में भवानी जंगल के रेतीले टीले पर बसने वाली लाल रंग की चींटियों और काली चीटियों के वर्चस्व संघर्ष को दिखाया है। उपन्यास में यह जानना रहस्य–रोमांच से भर देता है कि एलियन चींटियों ने रूप बदलकर माया चींटी में ऐसा परिवर्तन किया कि उसका स्वभाव पूरी तरह बदल गया। इस रोचक उपन्यास में प्रस्तुतीकरण इतना प्रभावशाली है कि अंत तक जिज्ञासा बनी रहती है। यह जिज्ञासा ही पूरे उपन्यास को बाँधकर रखती है। पुस्तक का मुखपृष्ठ बहुत ही आकर्षक और नयनाभिराम है। इसका स्वागत होना चाहिए।

'जादुई अँगूठी' में जिज्ञासा से भरपूर मुरब्बा भोलू को ढूँढने निकल पड़ता है, रास्ते में उसे बौने जादूगरों के आक्रमण का सामना करना पड़ता है। परिणामस्वरूप भोलू बौनों के चंगुल में फँस जाता है। हँसोड़ कद्दू, उड़ने वाली मछली, बोलने वाली नटखट नाव और मजाकिया बंदर कैसे मुरब्बा की मदद करते हैं, यह उपन्यास पढ़कर ही जाना जा सकता है। इसे दोस्ती की मिसाल बनाकर पाठकों के बीच में इसी उद्देश्य से परोसा गया है कि अगर मजबूत इरादों के साथ आगे बढ़ा जाए तो मंजिल अवश्य मिलती है।

'एडवेंचर्स ऑफ गोलू' शीर्षक ही बता रहा है कि इसमें साहस की कथाएँ हैं और यह भी सच है कि साहस के साथ किया गया कार्य हमेशा सफल होता है। यह गोलू का साहस ही है जो उसे साहसिक पुरस्कार विजेता बालक गौरांग बना देता है। साहस की इस कथा में उसके तत्काल निर्णय लेने की क्षमता से ही अपराधी पकड़े जाते हैं। उसे इस साहसिक कार्य के लिए पुरस्कार मिलता है। इस पूरे उपन्यास की कथा काल्पनिक होते हुए भी ऐसा वातावरण तैयार करती है जिसमें लगातार डुबकी लगाने के बावजूद पाठक ऊबते नहीं हैं।

सुमन बाजपेयी का 'क्रिस्टल साम्राज्य' रहस्य–रोमांच से भरा हुआ एक ऐसा उपन्यास है जिसमें पाठक जितना डूबते जाएँगे, उतना ही मोती पाएँगे। मोती भी ऐसे–वैसे नहीं, बिल्कुल चमकदार और कीमती इतने कि उनका मूल्य आँका ही नहीं

जा सकता है। क्रिस्टल क्या है, जादुई क्रिस्टल वह भी रंग–बिरंगा, यह तो पुस्तक पढ़ने पर ही पता चलेगा। बिन्नी का अजीब सपना और सपने में सुनहरा शेर, उड़ने वाला घोड़ा यह सब ऐसी फंतासी है जिसने पूरे उपन्यास को महत्त्वपूर्ण ही नहीं, उल्लेखनीय बना दिया है। पाठक जैसे–जैसे उपन्यास पढ़ते जाएँगे, वैसे–वैसे ही एक के बाद एक सारे रहस्य खुलते जाएँगे। चमकती गुफा, जानवरों की आकृतियाँ, अद्भुत मीनार, पंखों वाला घोड़ा, गहराता रहस्य और लौटता आत्मविश्वास सब कुछ इस करीने से इस उपन्यास में पिरोया गया है। एक जिज्ञासा खत्म नहीं होती कि दूसरी आगे आ जाती है और यही इस उपन्यास की सफलता का रहस्य है। बहरहाल, उपन्यास की कथावस्तु जितनी रोचक है, उतने ही पार्थ सेनगुप्ता के आकर्षक और मुखर चित्र हैं।

इस वर्ष प्रकाशित प्रांजल सक्सेना का एक अद्भुत उपन्यास 'हाथिस्तान' गजप्रलय की आहट में हाथियों की अनोखी दुनिया की अनोखी दास्तान है। इसका आरंभ ही भूमिका के रूप में गज गप्प से किया गया है– 'गजप्रेमियों को चिंघाड़ भरा नमस्कार! थोड़ा चौंक तो रहे होंगे आप कि बिना आपको जाने, बिना आपसे मिले, बिना आपको देखे भी, मैंने आपको गजप्रेमी क्यों बुलाया? वह इसलिए क्योंकि मुझे पूरा भरोसा है कि हाथिस्तान आपके हाथ में है तो आप पहले से ही गजप्रेमी होंगे।'

उपन्यासकार को बचपन से ही हाथियों से बड़ा लगाव रहा है, यह उसी गजप्रेम का परिणाम है कि 200 पृष्ठों का हाथिस्तान पूरी हाथियों की दास्तान के रूप में पुस्तकाकार सामने आया है। पूरा उपन्यास बातचीत शैली में लिखा गया है, इसलिए इसे पढ़ते हुए हम ऐसे दृश्यों से रूबरू होते हैं जो धीरे–धीरे एक–एक करके मानसपटल पर अंकित होते चले जाएँ। उपन्यास की शब्दावली ऐसी कि दिल की गहराइयों में उतरती चली जाए। जैसे– बदलागज मचाने वाला है पूरे ब्रह्मांड में गजप्रलय। हाथिस्तान की रोचक यात्रा करते हुए आप पाएँगे कि रोहन और सोनाली दोनों हाथिस्तान की ओर गजप्रलय रोकने निकल पड़ते हैं। इस काम में सिर्फ चुनौतियाँ और चुनौतियाँ हैं, चुनौतियाँ भी ऐसी–वैसी नहीं, अभूतपूर्व। युद्ध के रूप में उपस्थित चुनौतियों से लड़ना इतना आसान नहीं है। लेकिन कहा गया है– जहाँ चाह–वहाँ राह, अगर हमारी चाह मजबूत हो तो रास्ते अपने आप निकल आते हैं।

'हमारी भी सुनो' अलका प्रमोद का सामाजिक परिवेश से जुड़ा हुआ महत्त्वपूर्ण उपन्यास है जिसमें परिवार के वे सूत्र भी हैं जो उसे बिखरने से बचाते हैं, तो बच्चों को कितनी छूट मिले कि वे बंधन भी महसूस न करें और न ही अधिक छूट मिलने पर बहकने लगें, यह भी बताते हैं। उपन्यासकार ने संकेत कर दिया है कि यह उन दोस्तों की कहानी है जो हमेशा एक दूसरे का साथ देते हैं तथा कोई मुसीबत आने पर मिलजुलकर उसका समाधान खोजते हैं। आपसी सहयोग के साथ एक दूसरे के

पूरक बनकर बुद्धिमानी से आगे बढ़ना दोस्ती को और मजबूत करना है।

पद्मा चौगांवकर का किशोरों के लिए लिखा गया उपन्यास 'सरहद के उस पार' उन किशोरों के मन में अवश्य अपने मूल्यों के प्रति आस्था जगाएगा जो अपनी जड़ों से जुड़ने के महत्त्व को जानते और समझते हैं। ऐसे लोग हर परिस्थिति में सकारात्मक सोच को ही विशिष्ट महत्त्व देते हैं। दरअसल, हमारी सोच हमारी संवेदनाओं से जुड़ी होती है और यही संवेदना हमारे जीवन को सरस और रसमय बनाती है। नीरस जीवन व्यक्ति को गहन अंधकार में ढकेल देता है।

राजा सुमंतक के कीर्तिसर राज्य पर विजय न प्राप्त करने से शुरू हुआ उपन्यास अजेय कीर्तिसर से प्रारंभ होकर कीर्तिसर विजय पर समाप्त होता है। इसके बीच में सुभद्र का स्वप्न लक्ष्य की ओर बढ़ता हुआ रहस्यमयी सुरंग तक पहुँच जाता है। अंत में कीर्तिसर विजय के साथ परिणति होती है। ऐसा हो सकता है कि ऐतिहासिक सूत्रों को समेटे हुए यह किशोर उपन्यास पढ़ने में थोड़ा अधिक परिश्रम करना पड़े, लेकिन एक दूसरे के तारों को जोड़ने पर इसकी पठनीयता अवश्य आनंदित करेगी।

स्फुट बालोपयोगी लेखन

इसके अंतर्गत बालसाहित्य की मुख्य विधाओं से इतर लेखन किया जाता है। यात्रा–विवरण, रिपोर्ताज, संस्मरण, ज्ञानवर्धक आलेख, पहेलियाँ आदि इसके प्रमुख घटक हैं। इस वर्ष प्रकाशित पुस्तकों में दीनदयाल शर्मा की 'चुनिंदा बालपहेलियाँ' में 57 पहेलियाँ और अंत में उनके उत्तर भी दिए गए हैं लेकिन हर पृष्ठ पर 4–4 पंक्तियों की काव्यमय पहेलियों के साथ दिए गए श्वेत–श्याम चित्र खुद ही पहेलियों के उत्तर हैं। पहेलियाँ हमारी जिज्ञासा का केंद्र होती हैं, इसीलिए इनके उत्तर बाद में दिए जाते थे। इस पुस्तक में उसी पृष्ठ पर दिए गए चित्रों से पहेलियों को बूझने की जिज्ञासा ही समाप्त हो गई है।

इसी वर्ष पहेलियों की एक और पुस्तक 'आओ सहेली सुनो पहेली' (कैलाश वाजपेयी) का भी प्रकाशन हुआ। अच्छी बात यह है कि इस पहेली पुस्तक में ऊपर वाली गलती नहीं दुहराई गई है, मतलब यह कि उसी पृष्ठ पर पहेली के साथ चित्र नहीं दिए गए हैं। प्रत्येक पृष्ठ पर चार–चार पंक्तियों की दो–दो पहेलियाँ दी गई हैं। 20 पहेलियों के बाद उनके सचित्र उत्तर दिए गए हैं। यही क्रम बरकरार रखते हुए कुल 80 पहेलियाँ पुस्तक में दी गई हैं। इन काव्यमय पहेलियों के उत्तर बूझने में बच्चों को आनंद आएगा, ऐसा मेरा विश्वास है।

इस वर्ष प्रकाशित डॉ. संजीव कुमार की पुस्तक 'दशावतार' में आनंदी बुआ के द्वारा चार्ल्स डार्विन के सिद्धांत के बहाने मत्स्यावतार, कूर्मावतार, वराह अवतार, नृसिंह अवतार, वामन अवतार, परशुराम अवतार, रामावतार व कृष्णावतार, भगवान बुद्ध और कल्कि अवतार– दसों अवतारों की कथा बड़े सरल शब्दों में प्रस्तुत की गई है।

हालांकि इन अवतारों के बारे में पहले भी अनेक पुस्तकों में जानकारी दी गई है, लेकिन डॉक्टर संजीव कुमार ने बच्चों के लिए कम से कम शब्दों में यह जानकारी देकर महत्त्वपूर्ण कार्य किया है।

डॉ. विमला भंडारी के संपादन में प्रकाशित बच्चों का ज्ञानवर्धक आलेख संग्रह प्रकृति, स्वास्थ्य, खेल, अंतरिक्ष और पौराणिक संदर्भों को समेटे हुए बाल–साहित्य में आलेख विधा का प्रतिनिधित्व करता है। संविदा संस्था के सौजन्य से आयोजित प्रतियोगिता में प्राप्त आलेखों को एक जगह एकत्र करके पुस्तक के रूप में प्रकाशित करने का संकल्प एक नयी विधा के रूप में सामने आया। कुल 33 आलेखों को विधागत बाँटकर पाठकों को महत्त्वपूर्ण जानकारी उपलब्ध कराई गई है। अंतरिक्ष और विज्ञान से जुड़े हुए विषयों–तारामंडल की सैर, तारों की उत्पत्ति, प्लूटो की व्यथा गाथा, अंतरिक्ष में भारतीय उड़ान तथा क्रिस्टीना के साथ–साथ जीवों की अंतरिम यात्रा के बारे में अद्भुत जानकारी दी गई है। पुस्तक का आवरण बड़ा शानदार है, ऐसी पुस्तकें पुस्तकालयों में अवश्य होनी चाहिए।

सलिला संस्था के द्वारा अब तक 15 राष्ट्रीय बाल–साहित्यकार सम्मेलनों का आयोजन समय–समय पर किया जाता रहा है। इस अवसर पर किसी एक बाल–साहित्यकार पर केंद्रित सलिल प्रवाह का विशेषांक हिंदी में प्रकाशित किया जाता है। इस बार का अंक डॉ. शील कौशिक पर केंद्रित किया गया है जिसमें उनकी विभिन्न विधाओं की चुनी हुई रचनाओं के साथ–साथ उनकी सृजन यात्रा को बहुरंगी चित्रों के माध्यम से प्रदर्शित किया गया है।

अलका प्रमोद ने 'चमकते सितारे प्रेरणा हमारे' शीर्षक से अलग–अलग क्षेत्रों के चमकते हुए सितारों का आख्यान जीवनी के रूप में प्रस्तुत किया है। महान समाज–सुधारक ईश्वर चंद्र विद्यासागर, कर्मठ साहसी रानी लक्ष्मीबाई, वीरांगना झलकारीबाई, देशभक्त भीका जी रुस्तम कामा, युवा संन्यासी स्वामी विवेकानंद, उपन्यास जगत के सम्राट प्रेमचंद, निर्बल का सहारा साहित्य का सितारा महाश्वेता देवी तथा महान वैज्ञानिक राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम की महत्त्वपूर्ण गाथा को बच्चों के लिए रोचक शैली में प्रस्तुत किया गया है। जिनका चयन इस पुस्तक के लिए किया गया है, वे निश्चय ही न केवल हमारे प्रेरणास्रोत हैं बल्कि आकाश में चमकते हुए सितारे ही हैं। ऐसी पुस्तक बच्चों के लिए इसलिए उपयोगी होती है कि बच्चे उन सितारों के व्यक्तित्व और कृतित्व से विस्तार से परिचित हो सकें जिन्होंने न केवल अपने क्षेत्र में बल्कि पूरे भारत में अपना नाम रोशन किया है।

रजनीकांत शुक्ल विगत कई वर्षों से राष्ट्रीय बाल वीरता पुरस्कार प्राप्त बहादुर बच्चों की साहसी कहानियों का लेखन कर रहे हैं। पिछले दिनों बच्चों की पत्रिका 'देवपुत्र' ने दिसंबर 2024 का पूरा अंक ही इस टिप्पणी के साथ प्रकाशित किया था–

"'देवपुत्र' के इस विशिष्ट बाल प्रतिभा अंक में वर्ष 2024 में भारत की महामहिम राष्ट्रपति सुश्री द्रौपदी मुर्मू जी द्वारा 'प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार' से पुरस्कृत, समाज जीवन के विविध क्षेत्रों के राष्ट्र के विभिन्न प्रांतों, महिला एवं बाल विकास मंत्रालय के माध्यम से चुने गए असाधारण प्रतिभाशाली बच्चों की सत्य कहानियाँ प्रस्तुत हैं। इस सामग्री को आपके लिए रोचक एवं प्रेरक ढंग से तैयार किया है– विख्यात बालसाहित्य सर्जक एवं वीर बालकों पर सतत लिखने वाले श्री रजनीकांत शुक्ल जी ने।'' वास्तव में यह बहुत बड़ी उपलब्धि थी कि कोई पत्रिका इस तरह का संग्रहणीय विशेषांक निकालकर अपनी उपस्थिति दर्ज कराए। इन बहादुर बच्चों की कहानियों को रजनीकांत शुक्ल जी ने 'साहस को सलाम और अन्य कहानियाँ' शीर्षक से लिपिबद्ध करके पुस्तकाकार प्रकाशित कराया है। वास्तव में ये साहस कथाएँ इतनी रोचक और प्रेरणादायक हैं कि हर बच्चे को इन्हें पढ़कर कुछ न कुछ सीखना चाहिए। इनके शीर्षक ही अमिट छाप छोड़ते हैं। शीर्षक देखें– मस्ती की सजा, नहर में साइकिल, बाघ का सामना, दोस्त के लिए, लुटेरे का सामना, चोर से मुकाबला, बाँटोगे तो मिलेगा, गर्मी की छुट्टी, पड़ोस की आग, बदबूदार कुँआ, संकट में सूझबूझ, कोई नहीं तो हम, साहस को सलाम, मैं आ रहा हूँ, भाई का ख्याल, डूबतों को बचाया, और नाव पलट गई, दोस्तों की खातिर, हमलावर जर्मन शेफर्ड, करंट की चपेट में, नदी के घाट पर, बिजली की चपेट में, तुमसे पहले जाऊँगी, बाद में माइक और दोस्ती के लिए। हालाँकि इनका सृजन कहानियों के फॉर्म में ही किया गया है लेकिन जहाँ तक विधागत विवेचन का प्रश्न है, इसे मैं सीधे कहानी न कहकर स्फुट बालोपयोगी लेखन के अंतर्गत मानता हूँ।

शोध और समीक्षा

आलोच्य वर्ष में हिंदी बाल साहित्य और बालसाहित्यकारों पर केंद्रित कई शोध प्रबंधों पर शोधार्थियों को पी.एचडी. की उपाधियाँ प्राप्त हुईं। पहले से उपाधि प्राप्त कुछ शोधप्रबंध पुस्तकाकार भी प्रकाशित हुए। ऐसे शोधप्रबंधों में डॉ. रीता सिंह का शोध प्रबंध 'बिहार के बालसाहित्यकार : एक अध्ययन' महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है। अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से प्रस्तुत शोधप्रबंध को 5 अध्यायों में विभक्त किया गया है। प्रथम अध्याय में बिहार के बाल–साहित्य का स्वरूप और सीमा, द्वितीय अध्याय में बिहार के बाल–साहित्य के विकास का विवेचन, तृतीय अध्याय में बिहार के बाल–साहित्यकारों की गद्य रचनाओं का वस्तुगत वैशिष्ट्य, चतुर्थ अध्याय में बिहार के बाल–साहित्यकारों की पद्य रचनाओं का वस्तुगत वैशिष्ट्य तथा पंचम अध्याय में बाल साहित्यकारों के मध्य बिहार के बाल–साहित्यकारों का स्थान के अंतर्गत हिंदी बाल–साहित्य बिहार के रचनाकारों के योगदान को मूल्यांकित करने का सफल प्रयास किया गया है।

इन पंक्तियों के लेखक डॉ. सुरेन्द्र विक्रम का विस्तृत ग्रंथ 'हिंदी बाल पत्रकारिता

का इतिहास' इसी वर्ष प्रकाशित होकर चर्चा में आया है। पुस्तक के विषय में स्वयं कुछ न कहकर पत्रकारिता के स्तंभ प्रो. संजीव भानावत की संक्षिप्त टिप्पणी यहाँ उद्धृत कर रहा हूँ– 'डॉ. सुरेंद्र विक्रम बधाई के पात्र हैं जिन्होंने अपने चार दशक के श्रम को हिंदी बाल पत्रकारिता के इतिहास के रूप में हमारे सामने प्रस्तुत किया है। विश्वास है उनका यह ग्रंथ आने वाले समय में बाल पत्रकारिता के विविध पक्षों पर गंभीर शोध को और प्रोत्साहित करेगा। हिंदी पत्रकारिता के इतिहास लेखन में उनका यह प्रयास अध्ययन अनुसंधान के नए पृष्ठ जोड़ सकेगा, ऐसा विश्वास है।'

प्रस्तुत ग्रंथ में लगभग 200 बाल पत्रिकाओं का पूरा लेखा–जोखा प्रस्तुत किया गया है। परिशिष्ट में कुछ प्रमुख बाल पत्रिकाओं के मुख्यपृष्ठों को देकर पुस्तक को और अधिक प्रामाणिक बनाने का प्रयास किया गया है।

ओमप्रकाश कश्यप की पुस्तक 'बचपन और बालसाहित्य के सरोकार' लेखक के सुचिंतित प्रयास का परिणाम है। इसकी भूमिका में उन मुद्दों को उठाया गया है जो बच्चों के साथ–साथ बचपन और बाल–साहित्य से जुड़े हुए हैं। पुस्तक को निम्नलिखित अध्यायों में विभाजित किया गया है– हिंदी बाल साहित्य की यात्रा : एक विहंगावलोकन, बालसाहित्य का विकास युग : साहित्य में बचपन की दस्तक, बालसाहित्य के सरोकार, बालसाहित्य और बचपन, हिंदी बालसाहित्य और आधुनिकताबोध, बालसाहित्य और विज्ञान लेखन तथा उपसंहार।

यह पुस्तक एक ओर हमें हिंदी बालसाहित्य की विकास–यात्रा से जोड़ती है तो दूसरी ओर उसके सरोकारों को केंद्र में रखकर पूरे परिदृश्य का खाका खींचती है। बाल–साहित्य सृजन से जुड़े हुए हर रचनाकार को यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए।

आलोच्य वर्ष में डॉ. परशुराम शुक्ल के बालसाहित्य पर केंद्रित निम्नलिखित शोध प्रबंध पुस्तकाकार प्रकाशित हुए– 'परशुराम शुक्ल के बालसाहित्य में पर्यावरणीय चेतना'– डॉ. अनुभूति शर्मा, 'परशुराम शुक्ल की बाल कविता के विविध आयाम'– डॉ. रीना सोलंकी, 'परशुराम शुक्ल की बाल कविता में नए प्रयोग'– डॉ. सुधा मिश्रा। इन ग्रंथों में परशुराम शुक्ल जी के विपुल बालसाहित्य को विभिन्न कोणों से परखकर रेखांकित करने का सफल प्रयास किया गया है।

यह बिल्कुल सत्य है कि आज जो बालसाहित्य लिखा जा रहा है उसमें विविधता है, संभावनाओं की तलाश है तथा बच्चों को कुछ नया देने की कोशिश है।

❑❑❑

हिंदी भाषाविज्ञान

26

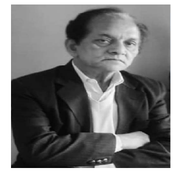

डॉ. गोविन्द स्वरूप गुप्त
प्रतिष्ठित भाषाविद्। पूर्व सह आचार्य, भाषाविज्ञान विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय।

भाषा–विज्ञान और साहित्य को अलग–अलग परिभाषित करें तो सरल शब्दों में कह सकते हैं कि भाषा–विज्ञान किसी भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन है जिसमें व्याकरण नियम, शब्दों की रचना, ध्वनि परिवर्तन, वाक् ध्वनि का उच्चारण आदि अध्ययन का विषय होते हैं जबकि साहित्य के अंतर्गत किसी भी क्षेत्र में किसी भी प्रकार का लिखित कार्य समाहित हो सकता है। भाषा–विज्ञान भाषा की संरचना और उपयोग का अध्ययन करता है। साहित्य में कलात्मक अभिव्यक्तियों के निर्माण के लिए भाषा का उपयोग होता है। भाषा के कलात्मक प्रयोग के संदर्भ में ही शैली–विज्ञान का उद्भव हुआ है। भाषा का शैलीगत सौंदर्य ही साहित्य की सृष्टि करता है। भाषा–विज्ञान किसी साहित्यिक रचना के सामाजिक, सांस्कृतिक संदर्भ को उजागर कर सकता है।

अनुवाद या अनूदित साहित्य भी भाषा–विज्ञान की ही एक महत्त्वपूर्ण विधा है। अनुवाद में अर्थ, शैली और सांस्कृतिक संदर्भों की सूक्ष्म अभिव्यक्ति होती है। वास्तव में भाषा–विज्ञान साहित्य की समझ को बढ़ाने में सहायक सिद्ध होता है। दूसरी ओर साहित्य भाषा–विश्लेषण के लिए व्यावहारिक उदाहरण और संदर्भ प्रदान करता है। इस प्रकार संप्रेषणीय उपकरण एवं साहित्य के कलात्मक माध्यम, दोनों रूपों में भाषा की गहरी सोच–समझ विकसित होती है। यह भाषा, भाषा–विज्ञान और साहित्य के पारस्परिक अन्योन्याश्रित संबंध का भी परिचायक है। साहित्य में ही हमें भाषा का यथार्थ रूप प्राप्त होता है। भाषा–विज्ञान का आधार तो वास्तव में साहित्य ही है। यदि किसी भाषा का तुलनात्मक अध्ययन करते हैं तो उसके लिए भी साहित्य ही आवश्यक सामग्री उपलब्ध करा सकता है।

भारत में भाषा–वैज्ञानिक अध्ययन की दीर्घकालीन परंपरा रही है। भारत की सबसे प्राचीनतम भाषा तमिल और संस्कृत को माना जाता है। संस्कृत तो दुनिया की सबसे पुरानी भाषाओं में से एक है। भाषा–वैज्ञानिक चिंतन संस्कृत साहित्य में भरा पड़ा है। पाणिनि, पतंजलि, कात्यायन, भर्तृहरि आदि से लेकर वर्तमान समय तक

भारतीय भाषाशास्त्रीय चिंतन और उसके साहित्य की एक गौरवशाली परंपरा अपने समृद्ध स्वरूप में सदैव विद्यमान रही है लेकिन हमारे देश का यह दुर्भाग्य रहा है कि लगभग 1000 सालों की गुलामी और अंततः अंग्रेजी शासन काल में भारतीय भाषाओं पर अंग्रेजी का वर्चस्व बढ़ता गया। भारतीय समाज अपने 'स्व' को भूलता गया। मात्र 75 वर्ष पहले ही भारत आजाद हुआ है। हम अभी अपने बहुआयामी अस्तित्व की लड़ाई लड़ने में लगे हुए हैं। भाषा भी इनमें से एक है। अंग्रेजी का प्रभुत्व हमारे मन—मस्तिष्क, भाषा एवं समाज पर अभी भी हावी है। देश—विदेश में सामाजिक संपर्क की व्यापक भाषा होने के कारण अंग्रेजी में ही अधिकतर भाषा—विज्ञान साहित्य भी लिखा जाता रहा है। हाल के कुछ दशकों में भारत सरकार के विशेष प्रयास से भारतीय संपर्क भाषा हिंदी में प्रकाशित भाषा—विज्ञान साहित्य को प्रोत्साहन प्राप्त हुआ है। इस दिशा में 'भाषा' त्रैमासिक पत्रिका का सराहनीय योगदान है। 'वार्षिकी' के माध्यम से इसमें हर वर्ष हिंदी साहित्य की विभिन्न विधाओं में प्रकाशित साहित्य का परिचयात्मक विवरण एक दस्तावेज के रूप में प्रस्तुत हो जाता है। यह हिंदी भाषा और साहित्य की समृद्धि को भी प्रकट करता है।

भाषा केवल संचार का माध्यम ही, नहीं संस्कृति की वाहक भी होती है। भारतीय संदर्भ में जब हम भाषा की बात करते हैं तो प्राचीनतम संस्कृत से लेकर आज तक का भाषा विकासक्रम सामने आ जाता है। वर्तमान में संस्कृत की उत्तराधिकारिणी भाषा हिंदी संपूर्ण भारत की संपर्क भाषा ही नहीं बल्कि बहुविध साहित्यिक, सांस्कृतिक भावधारा का अवगाहन करने वाली राष्ट्रीय एकता एवं सद्भाव की सरिता है। इस दृष्टि से वर्ष 2024 में हिंदी में भाषावैज्ञानिक विधाओं के लेखन, प्रकाशन और कार्यक्रम आयोजनों का भी अपना महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है।

वर्ष 2024 में प्रकाशित नई पुस्तकों में लेखिका सुमन लता यादव की पुस्तक 'सारांश वस्तुनिष्ठ हिंदी साहित्य', 'भाषा—विज्ञान', 'काव्यशास्त्र' प्रकाशित हुई। डॉक्टर कपिल देव द्विवेदी की पुस्तक 'भाषा—विज्ञान एवं भाषा शास्त्र', हेमंत कुकरेती और सुमीता कुकरेती की पुस्तक 'हिंदी भाषा और साहित्य का वस्तुनिष्ठ इतिहास', डॉक्टर सीताराम झा 'श्याम' की पुस्तक 'भाषा—विज्ञान तथा हिंदी भाषा का वैज्ञानिक विश्लेषण', डॉ. राम शकल पांडे की हिंदी—भाषा शिक्षण, राम प्रकाश, श्याम बाबू शर्मा और सरलता द्वारा रचित 'हिंदी भाषा संरचना' और 'भाषा—विज्ञान' पुस्तकें प्रकाशित हुईं। डॉक्टर जयेश एल व्यास की पुस्तक 'भाषा—विज्ञान एवं हिंदी भाषा', डॉ. विवेक शंकर की पुस्तक 'आधुनिक भाषा—विज्ञान', कृपाशंकर सिंह और चतुर्भुज सहाय की पुस्तक 'आधुनिक भाषा—विज्ञान', डॉक्टर अरुण कुमार मिश्रा की 'भाषा—विज्ञान', महेंद्र नाथ दुबे और डॉक्टर मीनाक्षी दुबे कृत 'भाषा, भाषा—विज्ञान और राजभाषा हिंदी', डॉक्टर गंगा सहाय प्रेमी की पुस्तक 'भाषा—विज्ञान एवं हिंदी भाषा', शशि कला

जायसवाल की पुस्तक 'भाषा–विज्ञान', तथा नई शिक्षा नीति पर आधारित डॉक्टर शिखा रस्तोगी एवं पुष्प शर्मा 'विशेष' द्वारा रचित 'भाषा–विज्ञान', 'हिंदी भाषा तथा देवनागरी लिपि', डॉ. अमित कुमार सिंह की 'भाषा भाषा', 'विज्ञान एवं हिंदी भाषा', रामगोपाल शर्मा 'दिनेश' की पुस्तक भाषा–विज्ञान और हिंदी, शबनम अख्तर की 'हिंदी भाषा', प्रोफेसर नरेश मिश्र की पुस्तक भाषा–विज्ञान और हिंदी भाषा, राजनाथ भट्ट की 'भाषा–विज्ञान और हिंदी भाषा', डॉक्टर शिखा त्रिपाठी की पुस्तक 'भाषा–विज्ञान का स्वरूप', कैलाश नाथ पांडे की 'भाषा–विज्ञान का रसायन', डॉक्टर रवि दत्त 'कौशिश' की पुस्तक 'हिंदी भाषा एवं भाषा–विज्ञान की रूपरेखा', डॉक्टर इला मिश्रा की पुस्तक 'भाषा–विज्ञान की उपयोगिता', प्रोफेसर रामकिशोर शर्मा की पुस्तक 'भाषा–विज्ञान', 'हिंदी भाषा और लिपि', डॉक्टर प्रार्थना अवस्थी की 'भाषा–विज्ञान एवं हिंदी भाषा', डॉक्टर शुभा वाजपेई की पुस्तक 'भाषा–विज्ञान, हिंदी भाषा तथा देवनागरी लिपि', हिंदी कुंज द्वारा प्रकाशित 'भाषा की प्रमुख विशेषताएँ', 'भाषा के अभिलक्षण', डॉक्टर विनम्र सेन सिंह की पुस्तक 'भाषा–विज्ञान तथा हिंदी भाषा', राजमल बोरा द्वारा संपादित 'भाषा–विज्ञान', बी.डी. शर्मा की 'भाषा–विज्ञान एवं हिंदी भाषा', डॉक्टर राजेश कुमार की पुस्तक 'हिंदी भाषा–विज्ञान विविध आयाम', शंभु सुमन कृत 'हिंदी व्याकरण का भाषा शास्त्र', डॉक्टर अर्चना अग्रवाल की पुस्तक 'संस्कृत भाषा–विज्ञान', श्रीमती निर्मल कुमारी वार्ष्णेय कृत 'भाषा–विज्ञान–सैद्धांतिक विश्लेषण', डॉक्टर राजेश श्रीवास्तव 'शंबर' की 'भाषा–विज्ञान', डॉक्टर स्नेह लता की पुस्तक सामान्य 'भाषा–विज्ञान', डॉक्टर लोकेश बाली की पुस्तक 'भाषा–विज्ञान', डॉ. रामचंद्र, डॉ गणेश राजअधिकारी, वासुदेव सौरभ द्वारा लिखित 'भाषा–विज्ञान एवं नेपाली भाषा', भारतीय विद्या संस्थान द्वारा प्रकाशित 'भाषा एवं भाषा–विज्ञान एक दृष्टि' तथा यूजीसी नेट 'टीजीटी' पीजीटी आदि परीक्षा उपयोगी हिंदी भाषा–विज्ञान विषयक महत्त्वपूर्ण प्रश्नों का संकलन प्रकाशित हुआ।

डॉक्टर रामदेव त्रिपाठी की पुस्तक 'भाषा–विज्ञान की भारतीय परंपरा और पाणिनि', हिंदी कुंज द्वारा प्रकाशित 'भाषा–विज्ञान के अध्ययन के प्रकार एवं पद्धतियाँ', डॉक्टर मंगल देव शास्त्री की तुलनात्मक 'भाषा शास्त्र तथा भाषा–विज्ञान' एवं डॉक्टर चंद्रनाथ झा की 'भाषा–विज्ञान' आदि अनेक पुस्तकें प्रकाशित हुई। इनमें से अनेक पुस्तकों का नवीन संस्करण और बहुत–सी नई पुस्तकें भी प्रकाशित हुईं।

इन प्रकाशनों के अतिरिक्त वर्तमान में यूट्यूब चैनलों के माध्यम से भी हिंदी भाषा–विज्ञान के विभिन्न पक्षों पर अध्ययन–अध्यापन प्रगति पर रहा है। ई–बुक के रूप में भी हिंदी भाषा–विज्ञान साहित्य उपलब्ध किया जा रहा है। सुरेश पंत की पुस्तक 'भाषा के बहाने' में एक नयी शैली का प्रयोग किया गया है। इस पुस्तक में खेल–खेल में भाषा की बारीकियों को समझाया गया है। लेखक भाषा–विज्ञान की

किसी मुश्किल प्रमेय को गप्प के मजे की तरह हल करते हुए भाषा–विज्ञान के मर्म तक पहुँच जाता है। यह लेखन–शैली पाठक के लिए अत्यधिक रुचिकर हो जाती है। मुकेश अग्रवाल की 'भाषा–विज्ञान एवं हिंदी भाषा', डॉक्टर केशव दत्त रूबाली की पुस्तक 'आधुनिक भाषा–विज्ञान', कुलदीप त्रिपाठी के संपादन में 'बांदा जिले का भाषा–विज्ञान एवं शब्दकोश', प्रोफेसर बीएल शर्मा की पुस्तक 'हिंदी भाषा का शिक्षण विज्ञान', कला जोशी कृत 'भीली का भाषा–विज्ञान', कमलेश कमल की पुस्तक 'भाषा संशय शोधन', डॉक्टर ओम प्रकाश भारद्वाज की 'मानक हिंदी का संरचनात्मक भाषा–विज्ञान', डॉक्टर विजय पाल सिंह की पुस्तक 'भाषा–विज्ञान', डॉ. रामलाल वर्मा की– 'प्रोक्ति विश्लेषण और शैक्षिक भाषा–विज्ञान', प्रोफेसर उमाशंकर शर्मा 'ऋषि' की 'भाषा–विज्ञान की रूपरेखा', पिंटू कुमार के संपादन में 'मीणी भाषा और साहित्य', संत समीर की पुस्तक– 'अच्छी हिंदी कैसे लिखें', डॉ. चंद्रशेखर पाठक द्वारा लिखित 'कुमाऊंनी शब्द संरचना', डॉक्टर राजेंद्र प्रसाद सिंह की पुस्तक 'हिंदी के प्रमुख भाषा–वैज्ञानिक', 'बोलियाँ एवं अस्मिता मूलक भाषा–विज्ञान', विजय कुमार मल्होत्रा की– 'कंप्यूटर के भाषिक अनुप्रयोग', राहुल खटे की पुस्तक 'राजभाषा हिंदी के नवोन्मेषी आयाम', प्रियंका सिंह की पुस्तक 'भाषा और हिंदी आलोचना अंतर्संबंध', गोपाल राय की 'हिंदी भाषा का विकास', श्याम बाबू शर्मा द्वारा लिखित 'राजभाषा एवं अनुप्रयोग', राजमणि शर्मा की पुस्तक– 'अपभ्रंश भाषा और साहित्य', डॉ. अर्चना श्रीवास्तव की 'शब्द निर्णय एवं शब्द निर्माण', डोगरी संस्था जम्मू द्वारा प्रकाशित 'डोगरी लेखन शैली', डॉ. गुर्रमकोंडा नीरजा की पुस्तक 'अनुप्रयुक्त भाषा–विज्ञान की व्यावहारिक परख', कमलेश कमल की– 'शब्द संधान', डॉ. विनीता रानी की पुस्तक 'भाषा–विज्ञान और हिंदी भाषा', पुनीत कुमार राय की पुस्तक 'वस्तुनिष्ठ हिंदी', अब्दुल वफा की 'विज्ञान शिक्षण', अनुजप्रताप सिंह की पुस्तक 'भाषा–विज्ञान', तक्षशिला प्रकाशन द्वारा 'भाषा और चिंतन', अवधेश मोहन गुप्त की पुस्तक 'राजभाषा सहायिका' और विभा गुप्ता द्वारा लिखित 'अनुवाद के भाषिक पक्ष' आदि हिंदी भाषा–विज्ञान साहित्य के संदर्भ में महत्त्वपूर्ण प्रकाशन हुए।

वर्ष 2024 में हिंदी भाषा–विज्ञान की कुछ नयी पुस्तकें प्रकाशित हुईं और कुछ का नया संस्करण छपा। भाषा–विज्ञान के प्रसिद्ध लेखकों में डॉक्टर भोलानाथ तिवारी, डॉक्टर कपिल देव द्विवेदी, श्यामसुंदर दास, कामता प्रसाद गुरु आदि की पुस्तकों का नया संस्करण प्रकाशित हुआ। इसके अतिरिक्त सरलता राम प्रकाश और श्याम बाबू शर्मा की पुस्तक 'हिंदी भाषा संरचना और भाषा–विज्ञान', डॉ. विवेक शंकर की पुस्तक 'आधुनिक भाषा–विज्ञान' (राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी), इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (इग्नू) पाठ्यक्रम पर आधारित नीरज की पुस्तक 'भाषा–विज्ञान और हिंदी भाषा', डॉक्टर त्रिलोकीनाथ श्रीवास्तव की 'भाषा–विज्ञान और

हिंदी भाषा', डॉक्टर महेंद्र नाथ की पुस्तक 'भाषा, भाषाविज्ञान और राजभाषा हिंदी', डॉक्टर सीताराम झा श्याम की पुस्तक 'भाषा–विज्ञान तथा हिंदी भाषा का वैज्ञानिक विश्लेषण' (बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी), आदि पुस्तकें प्रकाशित हुईं। इंटीग्रेटेड पब्लिकेशंस, नयी दिल्ली द्वारा हिंदी में भाषा–विज्ञान और बहु विषयक अध्ययन एकीकृत प्रकाशित हुआ। हिंदी में यह संपादित पुस्तक है। दूरस्थ शिक्षा निदेशालय, महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक द्वारा एम.ए. हिंदी पूर्वार्ध हेतु 'भाषा–विज्ञान एवं हिंदी भाषा' पुस्तक प्रकाशित हुई। नई शिक्षा नीति 2020 के पाठ्यक्रम के अनुसार हिंदी भाषाविज्ञान, हिंदी भाषा तथा देवनागरी लिपि पर आधारित बी.ए. छठे सेमेस्टर के लिए ई–बुक का प्रकाशन भी किया गया। इस पुस्तक को तैयार करने में डॉक्टर मंजू, सहायक प्रोफेसर, देवता महाविद्यालय, बिजनौर, डॉ. राजेश कुमार सहायक प्रोफेसर, तिलक महाविद्यालय, औरैया तथा भोलेनाथ यादव, प्रवक्ता, सरस्वती ग्रुप आफ कॉलेज, गोरखपुर का विशेष योगदान रहा है। प्रभाकर प्रकाशन द्वारा 'हिंदी व्याकरण', 'भाषा–विज्ञान' और 'हिंदी साहित्य का इतिहास' तीन किताबों का कॉम्बो सेट हिंदी अध्ययन के लिए एक उत्तम संरचना के रूप में प्रकाशित हुआ। राधाकृष्ण प्रकाशन द्वारा 'भाषा–विज्ञान की भूमिका' नामक पुस्तक का हिंदी संस्करण 2024 में प्रकाशित हुआ। बाहरी प्रकाशन द्वारा भाषा और साहित्य पर किताबें एवं पत्रिकाएँ विगत 40 वर्षों से प्रकाशित होती रही हैं। यह भारत में भाषा–विज्ञान पर किताबें प्रकाशित करने वाला पहला प्रकाशन है। भाषा–विज्ञान के विविध पक्षों पर इनकी प्रकाशित पुस्तकें एवं पत्रिकाएँ एक नवीनतम आयाम प्रस्तुत करती हैं।

❑❑❑

स्त्री साहित्य

27

डॉ. विशाला शर्मा

आदिवासी साहित्य एवं संस्कृति महिला सशक्तीकरण एवं चुनौतियाँ, साहित्य में पर्यावरण चेतना, इक्कीसवीं सदी का उपन्यास साहित्य सहित कई पुस्तकें प्रकाशित। अनेक पुरस्कारों से पुरस्कृत। संप्रति–प्रोफेसर/विभागाध्यक्ष, चेतना कला वरिष्ठ महाविद्यालय, संभाजीनगर, महाराष्ट्र।

छायावादी युग से हिंदी साहित्य के आधुनिक स्त्री विमर्श का आरंभ माना जाता है। इस युग के आधार स्तंभों में से एक महादेवी वर्मा स्त्री–विमर्श से संबंधित लेखन करने वाली प्रथम लेखिका मानी जाती हैं। उन्होंने स्त्रियों से संबंधित समस्याओं को अपनी लेखनी के माध्यम से वाणी देने का प्रयास किया है। महादेवी वर्मा के साहित्य में स्त्रियों से संबंधित विभिन्न प्रश्नों, समस्याओं, दुख, पीड़ा आदि की अभिव्यक्ति हुई है। आधुनिक स्त्री–विमर्श सामाजिक, आर्थिक आदि विभिन्न स्तरों पर पुरुष–प्रधान समाज में लैंगिक समानता का पक्षधर है। स्त्री में जागृति लाना, उसे उसके अस्तित्व से परिचित कराना तथा उसे एक 'मानवी' होने का बोध कराने से लेकर परिवार में 'दासी' और समाज में 'भोग्या' के रूप में स्थापित भ्रांति से उसे बाहर निकालने का प्रयास स्त्री–विमर्श के अंतर्गत हुआ है। सामान्य रूप से हम यह भी कह सकते हैं कि स्त्री–विमर्श वह साहित्यिक आंदोलन है जिसमें स्त्री अस्मिता को केंद्र में रखकर साहित्य की रचना की जाती है। अंग्रेजी 'फेमिनिज्म' के पर्याय के रूप में हमारे यहाँ साहित्य में 'स्त्री–विमर्श' वाला आंदोलन चला। पश्चिम में सर्वप्रथम स्त्री आंदोलन की शुरुआत 1949 में सिमोन द बोउवार की 'द सेकंड सेक्स' नामक पुस्तक से हुई। इसी पुस्तक को केंद्र में रखकर पश्चिम एवं भारत में स्त्री–विमर्श आंदोलन खड़ा हुआ। भारत में भी इसका प्रभाव दिखाई देने लगा परंतु पश्चिमी देशों की परिस्थितियों और हमारे देश की स्थितियों में जमीन–आसमान का फर्क है। हमारे यहाँ की स्त्री धर्म, कर्मकांड, परंपरा, रीति–रिवाज आदि में जकड़ी हुई चारदीवारी के भीतर ही कैद है। भारतीय स्त्री–विमर्श की अपनी जमीनी समस्याएँ हैं। परंतु पश्चिम में स्त्री–विमर्श अपनी चौखट कब से लाँघ चुका है। वहाँ की स्त्री आसमान में उड़ान भरने के लिए तत्पर है। अपने स्व एवं अस्तित्व के साथ–साथ क्षमताओं को भी उसने पहचान लिया है। भारतीय स्त्री–विमर्श अब कहीं जाकर चौखट के बाहर अपना एक कदम रख पाया

है। उसे घरबार, रिश्ते–नाते सँभालते हुए अपने स्व की रक्षा करनी पड़ती है। इन सभी स्थितियों को हिंदी साहित्य में साहित्यकारों ने चित्रित करने का प्रयास किया है। भारतीय स्त्री की जिजीविषा और संघर्ष की आवाज साहित्य के माध्यम से सुनाई देती है।

कहानी, उपन्यास, आत्मकथा, कविता आदि साहित्य की विभिन्न विधाओं में नारी विमर्श को केंद्र में रखकर स्त्री एवं पुरुष लेखकों द्वारा विपुल मात्रा में लेखन हो रहा है। वैदिक साहित्य में शक्ति के रूप में नारी की प्रशंसा की गई है। इसी को आदर्श मानकर हमारे यहाँ नारी को देवी का दर्जा दिया गया था। परंतु वैदिकोत्तर कालखंड में नारी को घर में कैद करके रखा गया। उसकी स्वतंत्रता तथा अस्तित्व पर पाबंदियाँ लगा दी गईं। अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाने का कार्य नारी–विमर्श ने हिंदी साहित्य के माध्यम से किया। महादेवी वर्मा से सूत्रपात हुए इस यज्ञ में उषा प्रियंवदा, कृष्णा सोबती, मन्नू भंडारी, शशि प्रभा शास्त्री, मृदुला गर्ग, राजी सेठ, मैत्रेयी पुष्पा, ममता कालिया, नासिरा शर्मा, प्रभा खेतान आदि अनेक लेखिकाओं ने समिधाएँ अर्पण की हैं। साथ ही अनामिका, गीतांजलि श्री, इंदुमती, इंदु बाली, डॉ जया परांजपे, संतोष श्रीवास्तव, उर्मिला शिरीष, प्रमिला वर्मा, रेखा जैन, शांति सुमन, प्रिया वर्मा आदि अनेकानेक लेखिकाएँ हैं जिन्होंने नारी–विमर्श का स्वर इक्कीसवीं सदी में भी अपनी लेखनी द्वारा बुलंद किया है।

अपनी बात 2024 में प्रकाशित कुछ आलोचनात्मक पुस्तकों से शुरू करते हैं। 'समकालीन हिंदी कथा साहित्य में नारी विमर्श' पुस्तक डॉ. संजय ढोडरे द्वारा लिखित विकास प्रकाशन, कानपुर से प्रकाशित हुई है। समकालीन महिला कथाकारों के स्त्री–विमर्श को लेखकीय दृष्टि से स्थान प्राप्त हुआ है। 'कबीर का स्त्री चिंतन : एक नया परिप्रेक्ष्य' डॉ. प्रेम शीला द्वारा लिखित पुस्तक कबीर के स्त्री विषयक विचारों को आधुनिक परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करती है।

'स्त्री अस्मिता का संघर्ष और मीरा' पुस्तक की लेखिका डॉ. प्रतिमा खाटमरा हैं। विकास प्रकाशन से प्रकाशित इस पुस्तक में संत कवयित्री मीरा के संघर्ष को स्थान मिला है। 'प्रभा खेतान और नासिरा शर्मा के उपन्यासों में नारी पात्र' डॉ. ज्योति सिंह द्वारा लिखित पुस्तक है जो 21वीं सदी की दो प्रमुख लेखिकाओं प्रभा खेतान और नासिरा शर्मा के संपूर्ण उपन्यासों के नारी पात्रों की स्वतंत्रता, नारी मुक्ति की अवधारणा, नारी का जीवन मूल्यों के प्रति आकर्षण, कामकाजी या नौकरीपेशा नारी की मानसिकता जैसे कई प्रश्नों को उठाती है।

वान्या पब्लिकेशन से 'सुशीला टाकभौरे का साहित्य और नई संवेदना' डॉ. सुखदेव राम पाटील द्वारा लिखित पुस्तक नारी–विमर्श के साथ–साथ दलित विमर्श की पृष्ठभूमि को भी उजागर करती है। 'गीतांजलि श्री के कथा साहित्य में स्त्री–विमर्श' डॉ. विद्या खरे की पुस्तक है जो गीतांजलि श्री के संपूर्ण कथा लेखन में लेखिका की

दृष्टि से भारतीय नारी के विभिन्न पक्षों को रखती है।

नासिरा शर्मा की पहचान प्रगतिशील मानव धर्म की लेखिका के रूप में रही है। नासिरा शर्मा की इस वर्ष एक नयी पुस्तक प्रकाशित हुई है– 'फिलिस्तीन : एक नया कर्बला'। लोकभारती प्रकाशन, दिल्ली से प्रकाशित इस पुस्तक में फिलिस्तीन और इजरायल की समस्याओं पर प्रकाश डाला गया है। प्रस्तुत पुस्तक के माध्यम से हम इन दोनों देशों के राजनीतिक, सामाजिक, साहित्यिक आदि पक्ष को अच्छी तरह से समझ सकते हैं। लेखिका ने इस पुस्तक में फिलिस्तीन व इजराइल इन दोनों देशों की मूलभूत समस्याओं को समझने के लिए कहानियाँ, कविताएँ, विविध विषयों पर लेख तथा साक्षात्कार संकलित किए हैं। स्वयं एक संवेदनशील स्त्री होने के कारण नासिरा शर्मा ने वहाँ की स्त्रियों की दशा को भी बखूबी ढंग से अपने पुस्तक में चित्रित करने का प्रयास किया है। लेखिका ने ईरान और इराक की स्त्रियों की स्थिति के बारे में भी विस्तृत लेखन किया है। मुस्लिम स्त्रियों के प्रश्नों को प्राथमिकता देने वाली लेखिका के इस विशिष्ट पहलू का दर्शन हमें प्रस्तुत पुस्तक के माध्यम से होता है।

सुमन केसरी का काव्य नाटक 'हिडिंबा' भी इसी वर्ष प्रकाशित हुआ है। महाभारत का एक छोटा–सा एवं उपेक्षित पात्र है–हिडिंबा। इसी उपेक्षित पात्र को केंद्र में रखकर सुमन केसरी जैसी वरिष्ठ लेखिका ने यह काव्य नाटक प्रस्तुत किया है। काव्य नाटक के माध्यम से लेखिका लगातार इन ऐतिहासिक पात्रों के द्वारा एक नया स्त्री–विमर्श प्रस्तुत करने में सफल रही हैं। हिडिंबा द्वारा स्त्री मन की परतें खोलने के साथ–साथ लेखिका ने ऐतिहासिक कालखंड की विसंगतियों को प्रस्तुत करते हुए आधुनिक स्त्री की समस्याओं को भी सामने रखने का प्रयास किया है।

'एक आँख कौंधती है' विनोद पदरज की स्त्री–केंद्रित कविताओं का संग्रह है। समकालीन स्त्री–विमर्श की अच्छी पहचान रखने वाले कवि के रूप में विनोद पदरज जाने जाते हैं। उनके इस कविता–संग्रह में कवि ने स्त्री के सभी रूपों का चित्रण किया है। एक प्रसिद्ध उक्ति है, 'स्त्री जन्म नहीं लेती, बल्कि बनाई जाती है।' प्रस्तुत उक्ति के अनुसार समाज ने स्त्री के जन्म लेने के पश्चात् उसे विविध रूपों में विभाजित कर दिया है जिसमें माँ, बहन, बेटी, बीवी आदि रूप आते हैं। कवि ने प्रस्तुत काव्य–संग्रह में स्त्री के जन्म लेने से लेकर उसके द्वारा समाज में निभाए जाने वाले सभी किरदारों पर कविताएँ लिखी हैं जिसमें माँ से लेकर, समाज में स्त्री के बदनाम रूप 'वेश्या' पर भी कविताएँ हैं। माँ के ममतामयी रूप के दर्शन भी इस काव्य संग्रह में हमें होते हैं। साथ ही 'सभ्य' समाज को 'असभ्य' लगने वाले स्त्री के अबूझ प्रश्नों तक भी हम पहुँचते हैं। कवि का कहना है कि स्त्री सौंदर्य के अभिलाषी व्यक्तियों के लिए यह काव्य–संग्रह नहीं है। प्रस्तुत काव्य संग्रह में हमें अपने साथ विविध भूमिकाओं– माँ, बहन, बेटी, पत्नी– में जुड़ी स्त्रियों के दुःख की अनुभूति मिलती है। स्त्री को देखने का

एक नवीन दृष्टिकोण यह काव्य–संग्रह हमें प्रदान करता है।

सुनीता कोरथवाल ने कविता के क्षेत्र में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है। ग्रामांचलिक क्षेत्र पर लेखनी चलाने वाली कवयित्री मानवीय मनोविज्ञान की अच्छी परख रखती है। स्त्री मुक्ति का स्वर सुनीता की कविताओं में मुख्य रूप से देखा जा सकता है। सन 2024 में सुनीता कोरथवाल का चौथा काव्य–संग्रह 'साझे की बेटियाँ' प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत काव्य–संग्रह में पुरातत्व, मानव मन, स्त्री पक्ष तथा खोखली रूढ़ियों, परंपराओं के विरुद्ध आवाज उठाने का प्रयास हुआ है। प्रस्तुत काव्य–संग्रह की कविताएँ वास्तविक धरातल पर आधारित हैं। पुरुष प्रधान समाज में रहने वाली कवयित्री अपनी कविताओं में स्त्रियों की दशा का तथा स्त्री मुक्ति का नारा लगाने का साहसी प्रयास अपनी लेखनी के माध्यम से करती दिखाई देती है। समाज के दोगलेपन तथा स्त्री सौंदर्य के प्रति देखने के दृष्टिकोण को अपनी कविताओं में कवयित्री ने चित्रित किया है। ग्रामीण समाज के मनोहारी दृश्य को चित्रित करने वाली कवयित्री परिस्थितियों के खिलाफ बगावत करते हुए स्त्री उत्पीड़न के खिलाफ अपना स्वर ऊँचा करती है, यही इस संग्रह की प्रमुख विशेषता है। सुप्रतिष्ठित कवयित्री डॉ. शशिकला लढ़िया प्रणीत 'कितनी अहिल्याएँ' काव्य–संग्रह कृति में संगृहीत समस्त कविताएँ प्रौढ़ एवं परिष्कृत हैं। ये अखंड काव्य रस से अनुप्राणित हैं और जिजीविषा, अपेक्षा, उपेक्षा, नैराश्य व उजास के धागों से उलझती–सुलझती ज़िंदगी की अप्रतिम तस्वीर प्रस्तुत करती हैं। स्त्री की मर्म वेदना का उद्‌घाटन 'लेकिन क्यों' तथा अन्य कविताओं में सहजता से देखा जा सकता है।

'सब माया है' (बेतरतीब किस्से) डॉ. अजीत के किस्सों के संग्रह में न तो काव्य है, न कहानी–उपन्यास और न ही किस्सों का संग्रह। इसे किसी विधा में बाँधना सहज नहीं है। परंतु इस पुस्तक में लेखक ने जिस विषय को लेकर लेखन किया है, वह वर्तमान में एकदम भिन्न है। प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने स्त्री की पारंपरिक छवि को दरकिनार करते हुए उसे एक मनुष्य के रूप में चित्रित किया है। प्रस्तुत पुस्तक में मुख्यतः दो ही पात्र दिखाई देते हैं जिनका कोई विशिष्ट नाम नहीं है, वह केवल स्त्री और पुरुष है। स्त्री जिसे माया के नाम से संबोधित किया जाता है; वह मानसिक रूप से परिपक्व है तथा चेतना के रूप में परिष्कृत। पुस्तक में चित्रित स्त्री नैतिक, सामाजिक दबाव तथा नियमावली से मुक्त है। नायिका के पास हर प्रश्न का उत्तर है। नायक–नायिका के बीच न तो दोस्ती का रिश्ता है, न प्रेम का और न ही किसी अन्य प्रकार का। डॉ. अजीत स्त्री मन के लेखक होने के कारण स्त्री मन की समझ रखते हैं। और यही स्त्री उनकी इस पुस्तक में प्रकट हुई है। लेखक ने माया को पारंपरिक स्त्री के रूप में चित्रित नहीं किया है बल्कि वे उसे एक मानवी का रूप प्रदान करते दिखाई देते हैं। प्रस्तुत पुस्तक में न तो रूढ़िवादी स्त्रीवाद के दर्शन होते हैं, न स्त्री की

दैवीयता के। स्त्री को एक मानव के रूप में चित्रित करने का प्रयास लेखक द्वारा हुआ है। माँ पर 84 लेखिकाओं के संस्मरण की पुस्तक 'हमारी अम्मा' भी इस साल लोकार्पित हुई। वरिष्ठ लेखिका रीता दास राम ने इसका संपादन किया है। 'स्त्री दर्पण' की टीम ने इस वर्ष 3 माह तक 'हमारी अम्मा' शृंखला चलाई।

स्त्री जीवन के अक्स पर आधारित 'टेम्स नदी बहती रही' शीर्षक से प्रकाशित डॉ. रूबी भूषण के संग्रह की अधिकतर कहानियाँ नारी केंद्रित हैं। लेखिका ने अपनी कहानियों के माध्यम से समय की धारा में तटों से टकराती जूझती नदी के प्रवाह और स्त्री जीवन की समानता को रेखांकित किया है। समकाल में नारी स्वतंत्र चेतना के बावजूद उन दंशों से मुक्त नहीं हो पाती है। लगता है कि फसल कितनी ही हरी हो जाए, पककर सुनहरी हो जाए, अन्नपूर्णा भी हो जाए, मगर सूखा कंटीलापन नारी के जीवन से दूर नहीं होता। रूबी भूषण की कहानियों में स्मृतियाँ कथा प्रवाह को रचती हैं, पर संघर्षों के साथ कथा तत्त्व उसमें भरा–पूरा होता है। इससे चरित्र की विमर्शीय संवेदना अपने आप उतर आती है। उनकी कहानियों में ग्राम अंचल है तो कस्बाई समाज, महानगरीय जीवन और विदेशी जमीन पर बदलते दाम्पत्य के रिश्ते भी हैं। उनकी कहानी सामाजिक और वैश्विक परिप्रेक्ष्य में जेंडर बोध को रचती है।

'चांद घाटी की अनारो' सविता शर्मा का पहला उपन्यास है। यह उपन्यास अति पिछड़ी बावरिया जनजाति में जन्मी पली बढ़ी अनारो के जीवन को उजागर करता है। अनारो के माध्यम से लेखिका स्त्री के संघर्षों और अस्तित्व की लड़ाई को आगे ले जाती है। अनारो के द्वारा महिलाओं को एकजुट करना और उन्हें काम पर लगाना आंगनबाड़ी महिलाओं की भूमिका को भी चित्रित करता है। अनारो का पति गिरधर खूब शराब पीता है। अनारो अपनी सास रामकली के साथ वेद के खेतों में काम करने जाती है जो अनारो की गरीबी और लाचारी का फायदा उठाता है। अनारो निरंतर खुद को समृद्ध करने के लिए काम करती रहती है। बस्ती के दलित बच्चों को पढ़ाने के लिए उनके घर जाने लगती है। उसके द्वारा हाथ से बनाया सामान शहरों में खूब पसंद किया जाता है और पंचायत चुनाव में एक साधारण महिला होने के बावजूद रामकली पूरे गाँव के समर्थन के साथ जीत हासिल करती है।

गीताश्री का 'सामा चकवा' उपन्यास मिथिला की प्रसिद्ध लोककथा पर आधारित है। सामा कृष्ण की पुत्री थी जो अपने भाई साम से बहुत प्रेम करती थी। पर्यावरण और स्त्री को केंद्र में रखकर प्रस्तुत उपन्यास की रचना गीताश्री ने की है। उपन्यास की पात्र सामा पर्यावरण, जंगली पेड़ आदि के प्रति संवेदनशील भाव रखती है। लेखिका ने द्वापर युग के प्रसंग के माध्यम से आधुनिक युग की कहानी बताने का प्रयास किया है। सामा को जंगल के एक युवक से प्रेम होता है। यह बात जब सामा के पिता अर्थात् कृष्ण को पता चलती है तो वह क्रोधित होकर सामा को पक्षी होने का शाप दे देते हैं।

प्रस्तुत उपन्यास में लेखिका ने कृष्ण के संदिग्ध आचरण पर सामा के भाई अर्थात साम द्वारा अपने पिता कृष्ण से संवाद करते दिखाया है। कृष्ण साम से कहते हैं कि जब किसी का आचरण कुल को बदनाम करने लगे तो नगर में चर्चा होने लगती है इसीलिए मैंने उसे शाप देने का निर्णय लिया। प्रस्तुत उपन्यास में कृष्ण के आचरण पर अनेक सवाल उठाए किए गए हैं। लेखिका ने आरंभ में ही कहा है कि कान्हा अब द्वारकाधीश कृष्ण बन गए और अब उनका आग्रह नहीं, आदेश चलता है। वृंदावन में गोपियों संग रास रचाने वाले कृष्ण अब अपनी बेटी के प्रेम करने से नाराज होकर उसे सजा देते हैं। राजकुमारी पुत्री का किसी जंगल में रहने वाले युवक से प्रेम करना उन्हें अच्छा नहीं लगता। उपन्यास में कृष्ण का पिता रूप के अलावा द्वारकाधीश वाला ही रूप अधिक उजागर हुआ दिखाई देता है। 'सामा चकवा' उपन्यास के माध्यम से लेखिका ने एक पुत्री की व्यथा को चित्रित करने का प्रयास किया है।

प्रमिला वर्मा का 'रॉबर्ट गिल की पारो' एक शानदार मर्मस्पर्शी, ऐतिहासिक उपन्यास है। इस उपन्यास में भारतीय और पाश्चात्य देश की संस्कृतियों के संगम की कथा है लेकिन लेखिका बेहद सावधानी से कथा रचती है। कथा का एक महत्त्वपूर्ण उद्देश्य भारत के ऐतिहासिक, पुरातात्त्विक स्थल अजंता तथा एलोरा की गुफाओं की खोज है। औरंगाबाद से अजंता गाँव की दूरी एलोरा, वर्गुणा नदी का आकार, जंगल झाड़ियाँ, जानवर, विषैले सर्प, झरने और तमाम कँटीले उलझे रास्तों के बीच इन गुफाओं को खोजना और उनकी सफाई और चित्रकारी करने के साथ विकसित होती है, रॉबर्ट और पारो की प्रेमकथा। एक नायक है–रॉबर्ट गिल और उसकी चार प्रेम कहानियाँ क्रम से धाराप्रवाह, अत्यंत सहजता और स्वाभाविकता के साथ चलती हैं। रॉबर्ट का व्यक्तित्व सम्मोहित करता है। अजंता एलोरा की खोज से उसके विकास–विस्तार और परिष्कार तक की कहानी यानी इतिहास का एक महत्त्वपूर्ण कालखंड रॉबर्ट की जीवन यात्रा के साथ–साथ पाठकों के सम्मुख उपस्थित होता जाता है।

इस उपन्यास की सारी स्त्रियाँ लीसा, फ्लावरड्यू, एनी और पारो अपनी भूमिका में सशक्त हैं और ईमानदार भी। रॉबर्ट से चारों ने एकनिष्ठ प्रेम किया। लीसा का प्रेम और उसका आत्मसम्मान उसके प्रति पारो से भी अधिक करुणा, पीड़ा और आदर उपजाते हैं। वह रॉबर्ट का पहला प्रेम थी। रॉबर्ट ने अपने जीवन की हर बात उसे बताई लेकिन जो सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण और स्मरण रखने वाली बात थी, वह नहीं बताई कि उसकी सगाई फ्लावरड्यू से हो चुकी है। यह बात रॉबर्ट के मुख से सुनकर हो सकता है वह अपने जीवन की दिशा बदल देती लेकिन रॉबर्ट की भीरुता और लीसा को खो देने के भय ने उसे सच बताने से रोका। पुरुष अपनी सुविधानुसार प्यार करता है संभवतः इसलिए रॉबर्ट ने पारो से विवाह नहीं किया। महादेव ने प्रस्ताव रखा कि पारो गर्भवती है इसलिए उससे विवाह कर लो तब रॉबर्ट का खलनायक वाला जो रूप सामने

आता है वह कथा में आगे भी उसके प्रति संवेदना को जागने नहीं देता। पारो से विवाह कर अगर रॉबर्ट उसे सम्मान से अपने घर में रखता तो पारो को भयावह मृत्यु का शिकार नहीं होना पड़ता। उसके अपनों ने ही पत्थरों से मारकर उसकी और उसके बच्चे की जान ले ली और घर में आग लगा दी। बाद में रॉबर्ट ने उस जले हुए घर में जहाँ पारो की देह भी खाक में मिल गई थी, एक चबूतरा बनवाया और उस पर लिखवाया पारो रॉबर्ट।

यह उपन्यास इसलिए भी महत्त्वपूर्ण है कि इसके माध्यम से लेखिका ने पश्चिमी संस्कृति के संबंध में हम भारतीयों के दृष्टिकोण को परिष्कृत किया है। सामान्यतः यह माना जाता है कि पश्चिम में दैहिक संबंधों और विवाहेतर संबंधों को बुरा नहीं माना जाता। वहाँ का समाज इस मनुष्य प्रवृत्ति को रेखांकित करने योग्य नहीं समझता। यह वहाँ आम बात है। स्त्रियाँ किसी भी देश की हों, अमीर हों या गरीब, शिक्षित हों या अशिक्षित, उनके जीवन के अभिशाप और संघर्ष एक जैसे होते हैं इसलिए फ्लावरड्यू का यह चिंतन स्त्री–विमर्श को धार देता है। यह मार्मिक अभिव्यक्ति इस उपन्यास की स्त्रियों के प्रति ही नहीं बल्कि इस तरह की अभिशप्त जिंदगी जी रही तमाम स्त्रियों के प्रति करुणा जागृत करती है। लेखिका ने इन स्त्रियों के जीवन की विडंबना को अत्यंत खूबसूरती से गूँथकर मर्मस्पर्शी बना दिया है। रॉबर्ट की मृत्यु जबकि वह सत्तर वर्ष से अधिक आयु पार कर चुका था तब होती है। वह मृत्यु पर लीसा, पारो, फ्लावर, एनी सबको याद करता है। लेखिका ने समापन को अतीत और वर्तमान के मिलन–बिंदु की लयात्मक कोमलता और आत्मीयता को करुण रस में भिगोकर प्रस्तुत किया है, कुछ इस तरह कि रॉबर्ट का जाना महसूस होता है। जाना एक पीड़ादायक शब्द है जिसके पीछे का सन्नाटा बरसों बरस तक छाया रहता है और मथता है।

संतोष श्रीवास्तव की 'कर्म से तपोवन तक (कथा माधवी और गालव की)' बारह अध्यायों में लिखी कथा पितृसत्तात्मक व्यवस्था में स्त्री–विमर्श की अद्‌भुत कथा है। उपन्यास में एक ऐसी स्त्री की कथा है जिसका (कु) भाग्य पिता ने लिख दिया था। वह गालव की गुरुदक्षिणा के लिए एक मोहरा थी... वह विभिन्न राजाओं की एक अंकशायिनी मात्र थी। प्रस्तुत कथा यह सोचने के लिए मजबूर कर देती है कि क्या स्त्री का हृदय नहीं, कामनाएँ नहीं, क्या वह केवल एक भोग्या है?

राजा ययाति की कथा से प्रारंभ हुआ उपन्यास माधवी और गालव पर केंद्रित हो जाता है। गालव अपनी गुरुदक्षिणा को पूरा कर सकने की इच्छा के साथ राजा ययाति के पास आते हैं। उसे गुरुदक्षिणा में गुरु विश्वामित्र को देने हेतु 800 सफेद अश्व जिसके कर्ण श्यामवर्ण के हों, चाहिए थे। वह यह दान माँगते हैं लेकिन अपना राजपाट त्यागने के पश्चात् राजा ययाति के पास उस समय कुछ नहीं था। परिणामस्वरूप वह गालव को अपनी पुत्री माधवी सौंप देते हैं। यहीं से शुरू होती है माधवी की कथा जो

दारुण भी है और स्त्री–विमर्श के लिए सामयिक भी।

राजा ययाति की पुत्री अभूतपूर्व सौंदर्यमयी है और उसे आशीर्वाद प्राप्त है कि वह चिरयौवना रहेगी और चार चक्रवर्ती राजकुमारों को जन्म देगी। अत्यंत रूपवान पुत्री को इस प्रकार दान करते हुए एक पिता का हृदय क्यों नहीं काँपा? यह प्रश्न आज भी विचारणीय है। लेखिका इस प्रश्न का उत्तर इस तरह देती है कि 'सर्वत्र पूज्यते नारी' के इस श्लोक के बावजूद 'नारी केवल भोग्या है'।

राजा ययाति गालव से यह कहते हैं कि तुम भारत देश के विभिन्न राज्यों में जाना। माधवी को उन राज्यों के राजाओं को सौंपना जहाँ ऐसे विलक्षण घोड़े हों। माधवी उन्हें चक्रवर्ती पुत्र देगी और तुम उनसे शुल्क स्वरूप अश्व माँगना। लेखिका ने उपन्यास में यह प्रश्न उपस्थित किया है कि क्या एक राजा की पुत्री बिकेगी? बल्कि एक नहीं, अनेक बार? पिता का ऐसा स्वरूप शताब्दियों में भी देखने को नहीं मिला जहाँ पिता पुत्री की कोख बेचने की सलाह देता है। गालव जिस राजा के पास इस तरह के अश्व हैं, उनके पास जाते और माधवी को उन्हें सौंपकर अश्व एकत्रित करते। इस तरह गालव ने 600 अश्व इकट्ठे किए थे। ऐसे में गुरुदक्षिणा पूरी करने के हठ या लालच कहें, गालव माधवी को लेकर गुरु विश्वामित्र के पास ही पहुँच गए और यहाँ गालव क्या कहते हैं– 'गुरुवर! बचे हुए 200 घोड़ों की जगह आप माधवी से अपनी इच्छा पूर्ति करें।'' माधवी के जीवन के रिश्तों में उसके प्रति पुरुष की भूमिका नकारात्मक रही है। पिता ने अपने पिता होने का कर्त्तव्य नहीं निभाया। उसे राजकोष का एक हीरा समझकर वस्तु की तरह दान दे दिया। इस तरह पहले दोषी तो उसके पिता ही हैं और दूसरा दोषी गालव है जिसने उसे चक्रवर्ती पुत्रों की उत्पत्ति हेतु और शुल्क में श्वेत अश्व की प्राप्ति हेतु उसका उपभोग कराया। यह स्त्री विमर्श का एक अद्‌भुत किस्सा है जहाँ पिता, गालव अर्थात् उसका प्रिय, तीनों राजा और फिर गुरु विश्वामित्र सभी ने माधवी को एक उपकरण बनाया है।

गालव को अपने दोष का एहसास होता है। गहरे आत्ममंथन अथवा आत्मग्लानि से मुक्त ही नहीं हो सका गालव और अंत में चिरयौवना का वरदान प्राप्त माधवी पुनः अपने जीवन को उन कठोर रास्तों पर धकेल देती है जो रास्ता तपोवन की ओर जाता है। प्रस्तुत उपन्यास में लेखिका ने लीक से हटकर नया स्त्री–विमर्श प्रस्तुत किया है। लेखिका इस मिथ को भी तोड़ती नजर आती है जहाँ स्त्री को पूजनीय बताया गया है। पुरुष प्रधान व्यवस्था में नारी केवल भोग्या है, भेंट एवं दान की वस्तु मात्र है।

'रुक जाओ वैदेही' प्रमिला वर्मा का स्त्री–विमर्श का आख्यान है। आश्रम में समाज और परिवार और अपनी ही संतानों से प्रताड़ित स्त्रियाँ रह रही हैं। उस आश्रम में वैदेही नामक विदुषी महिला रहती है। वह विवाहित है परंतु पारिवारिक कलह से वह आश्रम में आकर रहने लगती है। इस आश्रम में गुरुतुल्य बाबा शंभूनाथ हैं और उनके

अनेक शिष्य हैं जो दीक्षा लिए हुए हैं। बाबा के पूरे देश में कई आश्रम हैं।

स्वामी महेश जो बाबा के अति प्रिय शिष्य हैं, का आश्रम में आई परम विदुषी, सुंदर, नम्र स्वभाव की स्वाभिमानी लड़की वैदेही से प्रेम हो जाता है। उपन्यास में प्रेम संबंधों को उस रूप में दर्शाया है जिसके समक्ष हमें सोचने पर मजबूर किया जाता है कि गलत क्या है, सही क्या है?

वैदेही अपने पति दयानंद का अनुचित व्यवहार तथा शारीरिक रूप से अक्षम होना स्वीकार भी लेती लेकिन अपने पुरुषत्व के दिखावे में उसके समक्ष ही अन्य औरतों को कमरे में ले जाना वह कैसे बर्दाश्त करती? आखिर वह समाज के समक्ष साबित क्या करना चाहता था कि सारी गलतियां वैदेही की ही हैं। अनुचित व्यवहार को, मारपीट को वह कैसे और क्यों बर्दाश्त करे? वह तो पति के घर में कितने अरमानों से आई थी। हालाँकि उसकी आगे पढ़ने की इच्छा थी। वह पीएच. डी. करना चाहती थी और बहुत कुछ करना चाहती थी।

वैदेही ने अपने इस निर्णय से भारतीय परंपरा, संस्कृति को ललकारा है। पूरा उपन्यास स्त्री–विमर्श की अद्भुत कथा है। कब तक प्रताड़ित होती रहेगी स्त्री... एक कस्बाई स्त्री जब अपने स्वाभिमान को लेकर उठ खड़ी होती है तो आम मध्यवर्ग की स्त्रियाँ क्यों अपने को असहाय पाती हैं। यहाँ यह उपन्यास प्रश्न–चिन्ह लगाता है। वैदेही बाँझ नहीं है... जैसा कि उसकी सास ने उसे प्रचारित किया है लेकिन एक स्त्री, ससुराल की बहू अपनी सास को कैसे बताए कि तुम्हारा बेटा ही अक्षम है।

वैदेही आश्रम पहुँच जाती है। सास उसे धिक्कारती है। बेटा दयानंद, वैदेही का पति भी यह साबित करता है कि वैदेही ही गलत थी। लेखिका ने उपन्यास में सिद्ध किया है कि प्रेम पाप नहीं है... लेकिन वह पति के प्रति पत्नी का एकनिष्ठ होना अस्वीकार भी नहीं करती। वे मानती हैं कि पति भी तो इस लायक हो। वैदेही आश्रम में आकर महेश स्वामी से अंतरंग संबंधों को स्वीकारती है।

महेश स्वामी के बच्चे की माँ बनने वाली है। बाबा शंभूनाथ कहते हैं, बच्चे का जन्म आश्रम में ही होगा। उसकी सास जो वैदेही के पुत्र जन्म की जानकारी मिलने पर वैदेही को लेने आती है, उसके साथ जाने की आज्ञा देते हैं। हतप्रभ वैदेही बाबा की आज्ञा को शिरोधार्य करती है लेकिन उसका हृदय रो उठता है।

प्रमिला ने उपन्यास में नारी की मानसिकता का अभूतपूर्व वर्णन किया है और यह सिद्ध किया है कि नारी अपने अनुकूल वातावरण चुनने में आज भी अक्षम है। आज जब आधी आबादी का प्रश्न है तो यह स्वतंत्रता स्त्री को अपने भीतर से लानी होगी। अमीर वर्ग की स्त्री अपनी राहों पर निकल चुकी है। पिस रही हैं वे स्त्रियाँ जो मध्य वर्ग और निम्न मध्य वर्ग से आती हैं। लेखिका प्रश्न करती है, क्या तमाम प्रताड़ित स्त्रियाँ विमर्श के किसी पन्नों पर आ पाती हैं?

बाबा की आज्ञा से वैदेही लौट तो जाती है लेकिन वह वहाँ पुनः प्रताड़ित है पति से। वह उसके बेटे को संपोला बोलता है। वैसे पति का कथन भी गलत नहीं, वह क्यों स्वीकार करे किसी दूसरे के अंश को। यहाँ वह लांछना का शिकार है। वैदेही चुप रही लेकिन एक दिन पति के लांछनों से तंग आकर वैदेही अपनी सास को बता देती है कि उसका पुत्र संतान उत्पत्ति में अक्षम है। मैं बाँझ शब्द को सुनना नहीं चाहती। प्रत्येक स्त्री पुरुष प्रेम चाहता है। फिर मैंने चाहा तो इसमें गलत क्या था।

यहाँ स्त्री विमर्श के साथ पुरुष विमर्श भी है। एक आततायी पुरुष वैदेही के प्रति समय आने पर नम्र और उदार हो उठता है। परंपरावादी सामाजिक मूल्यों का ढाँचा प्रमिला तोड़ती नजर आती है। उनकी कथा की नायिका अपने पैरों पर खड़ी होती है। शंभूनाथ बाबा द्वारा लिखी कितनी ही किताबों का अनुवाद करने वाली वैदेही बाबा द्वारा बताए साधना अग्निहोत्री के इंस्टीट्यूट में शोध सलाहकार बनकर इंस्टिट्यूट पहुँचती है।

सास माँ की मृत्यु पर वैदेही का ससुराल पहुँचना और पुत्र सौमित्र का अपने सांसारिक पिता को बाबा! बाबा! पुकारना रोमांचित करता है। आखिर वह क्षण आ ही गया जब दयानंद उसे रोकना चाहता है। वह पुत्र को स्वीकार करता है लेकिन वैदेही रुकती नहीं और अपने इंस्टिट्यूट वापस लौट जाती है। उपन्यास में वैदेही मानो संस्कारों और परंपराओं से मुक्त दिख रही है।

उर्मिला शिरीष की 'दस प्रतिनिधि कहानियाँ' कहानी–संग्रह इसी वर्ष किताबघर प्रकाशन से प्रकाशित हुआ है। इस कहानी–संग्रह में कुल मिलाकर दस कहानियाँ संकलित हैं जिसमें से कुछ कहानियाँ स्त्री–विमर्श पर केंद्रित हैं। लेखिका ने कहानी–संग्रह में अपने और पराए अनुभवों को कथानक में पिरोया है। कहानी संग्रह की पहली कहानी 'सिगरेट' चानी और प्रिया की है। प्रस्तुत कहानी में सिगरेट प्रतीक है जो स्वयं तो जलती ही है और पीने वालों को भी जलाकर राख करती है। पति–पत्नी के बीच मौजूद मोह को यह कहानी प्रस्तुत करती है। प्रिया चानी के सिगरेट पीने और लड़कियों से फ्लर्ट करने की आदत को जानते हुए भी उसे छोड़कर नहीं रहना चाहती। परिवार–पति के बीच परिवार–विमर्श और स्त्री–विमर्श का एक नया पक्ष प्रस्तुत कहानी में लेखिका ने चित्रित किया है। 'चीख' उर्मिला शिरीष द्वारा लिखित एक ऐसी कहानी है जिसमें स्त्री पर होने वाले बलात्कार के सामाजिक और मानसिक पक्ष को दर्शाने का प्रयास किया है। लेखिका को लगता है कि जब किसी स्त्री पर बलात्कार होता है तो उसके शरीर पर लगे घाव कुछ समय में भर जाते हैं परंतु समाज द्वारा उसे जिस उपेक्षा और हिकारत की नजर से देखा जाता है, उसके घाव कभी नहीं भरते। समाज यह बार–बार जताने का प्रयास करता है कि गुनहगार बस बलात्कार पीड़ित स्त्री ही है। प्रस्तुत कहानी में लेखिका समाज को कटघरे में खड़ाकर यह प्रश्न करती है कि

बलात्कार करने वाला व्यक्ति समाज में सर ऊँचा करके घूमता है परंतु बलात्कार से उत्पीड़ित स्त्री निरपराध होते हुए भी इसकी सजा क्यों पाती है?

'बाँधो न नाव इस ठाव बंधु' कहानी में लेखिका ने पात्रों के अंतर्द्वंद्व को चित्रित करने का प्रयास किया है। पिता–पुत्र के संबंध पर आधारित इस कहानी में पिता के किसी अन्य स्त्री के साथ अवैध संबंधों को पुत्र किस प्रकार स्वीकारता है, इसे मुख्य रूप से दर्शाया गया है। पुत्र की कशमकश को प्रस्तुत कहानी में चित्रित किया गया है। 'उसका अपना रास्ता' कहानी में लेखिका यह प्रश्न करती है कि क्या किसी लड़की को अपना रास्ता चुनने की आजादी मिलती है? प्रस्तुत कहानी उन युवा लड़कियों की इच्छाओं की कहानी है जो अपने सपनों, इच्छाओं को पूर्ण करने के लिए ऊँचे आसमान में उड़ान भरना चाहती है परंतु मध्यवर्गीय समाज में यह सपने देखना कितना उचित है, इसे लेखिका ने प्रस्तुत कहानी के माध्यम से चित्रित किया है। कहानी में एक मध्यवर्गीय परिवार है। इस परिवार में एक युवा लड़की फैशन शो में मॉडल बनने की इच्छा रखती है। पिता लड़की को मॉडल न बनने के लिए अलग–अलग तरीके से समझाते हैं। लड़की का असल संघर्ष तो घर की चारदीवारी के भीतर ही शुरू होता है। युवा लड़की एवं समाज की मानसिकता को लेखक ने बखूबी ढंग से प्रस्तुत कहानी में चित्रित करने का प्रयास किया है। 'पत्ते झड़ रहे हैं' कहानी–संग्रह की अगली कहानी है जिसमें पति–पत्नी की इच्छाओं को लेखिका ने चित्रित करने का प्रयास किया है। पति–पत्नी की अपनी–अपनी इच्छाएँ हैं, जिन्हें वे कभी पूरा नहीं कर पाते। पत्नी अपने पति का प्यार पाना चाहती है तो पति व्यावहारिक संघर्ष करते हुए उस पर विजय पाना चाहता है। लेखिका ने पति–पत्नी के आपसी संबंधों को प्रस्तुत कहानी में चित्रित किया है। कुल मिलाकर उर्मिला शिरीष ने स्त्री समस्याओं, इच्छाओं को विविध कोनों से देखने एवं विश्लेषित करने का प्रयास अपने कहानी–संग्रह में किया है।

'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः' वाली हमारी वैदिक संस्कृति में नारी को समान अधिकार प्राप्त था। सामाजिक कार्यों के साथ–साथ शिक्षा, यज्ञ, होम–हवन आदि धार्मिक आदि सभी कार्यों में स्त्रियाँ हिस्सा लेती थीं परंतु वैदिकोत्तर कालखंड में स्त्रियों का सामाजिक स्तर पुरुष–प्रधान समाज व्यवस्था में निम्नतर होता गया। स्त्री को 'शूद्रों में भी शूद्र' माना जाने लगा। आधुनिक काल तक आते–आते स्त्री को केवल 'मादा' रूप में देखा जाने लगा। वर्तमान में वह 'पूज्या से भोग्या' के रूप में देखी जाने लगी है। इन्हीं बातों को केंद्र में रखकर वर्तमान स्त्री विमर्श, स्त्री को 'मादा' से 'मानवी' रूप में देखने का अभिलाषी है। इस बात को केंद्र में रखकर 2024 में लिखे गए समस्त हिंदी साहित्य में स्त्री–विमर्श के अंतर्गत स्त्री के विभिन्न रूपों के दर्शन होते हैं। समस्त हिंदी साहित्य के अंतर्गत स्त्री को समानता का अधिकार दिलाने का प्रयास होता हुआ दिखाई देता है।

❑❑❑

संपर्क सूत्र

1. डॉ. रीतामणि वैश्य, एसोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष हिंदी विभाग, गुवाहाटी विश्वविद्यालय, गुवाहाटी, असम–781014

   फोन–9435116133, ई-मेल– ritamonibaishya841@gmail.com

2. डॉ. अनामिका राजवंशी, सहायक, आचार्य, असमिया विभाग, गौहाटी, विश्वविद्यालय (असम)–781014

   फोन– 8011525011, ई-मेल–anamika@gauhati.ac.in

3. डॉ. जुबेदा हाशिम मुल्लाँ, बैतुल हाशमी, मकान नं.–152, ताजनगर, हुबली, धारवाड़, कर्नाटक–580031

   फोन– 7619378123, ई-मेल–zubeda.h.mulla@gmail.com

4. डॉ. अरुण होता, 2 एफ, धर्मतल्ला रोड, क़स्बा, कोलकाता 700042, मोबाइल–9434884339

   ई-मेल–ahota5@gmail-com

5. डॉ. टी.जी. प्रभाशंकर 'प्रेमी', प्रभुप्रिया, 39, लेन, III ब्लॉक, III स्टेज, बसेश्वर नगर, बैंगलुरू–560079

   फोन– 9880781278 ई-मेल– tgprabhashankar@yahoo-com

6. डॉ. महाराजकृष्ण 'भरत', शारदा कॉलोनी, विद्याधर निवास, पटोली, ब्राह्मणा, मुट्ठी, जम्मू–181205

   फोन–9419113462, ई-मेल–profmaharajkrishen@gmail.com

7. डॉ. चंद्रलेखा डि' सौझा, 4, शशिसदन, प्रथम तल, मंडवेल, वास्को–द–गामा, गोवा–403802 फोन–9823258550, ई मेल–chanda.dsouza@gmail.com

8. प्रो. दीपेंद्रसिंह जाडेजा, ए–104, राजेंद्रनगर सोसायटी, राजपिपला, जिला–नर्मदा, गुजरात–393145

   फोन–9427342074, ई-मेल–d.p.jadeja-hindi@msubaroda.ac.in

9. श्री ओम गोस्वामी, 181, पहाड़िया स्ट्रीट, जम्मू तवी (जम्मू)–180001

   फोन–9419203453, ई-मेल–om_goswami47@gmail.com

10. डॉ. बी. संतोष कुमारी, H-410, The Royal Castle, Tirumudivakkam, Chennai-600044, Email- santoshikb1977@gmail-com, Mobile- 09444961961

11. डॉ. गुर्रमकोंडा नीरजा, Co-Editor, Sravanti, Assistant Professor, High Education and Research Institute, Dakshin Bharat Hindi Prachar Sabha, T. Nagar, Chennai-600017

फोन– 9849986346 ई–मेल– neerajagkonda@gmail-com

12. श्री ज्ञानबहादुर छेत्री, चांदमारी, प्रभुराम कार्की पथ, तेजपुर, गुवाहाटी, असम–784001

फोन– 9435084499, 8638553897–ई मेल– gyanbahadurkshetri@gmail-com

13. प्रो. राम आह्लाद चौधरी, Professor & Former Head, Department of Hindi, University of Calcutta

Mobile: 94320 51500, E mail- ramahlad@gmail-com

14. प्रो. स्वर्णप्रभा चैनारी, बोडो विभाग, गुवाहाटी विश्वविद्यालय, कामरूप (मेट्रो), असम–781014 फोन–9435144323, ई-मेल–swarna@gauhati.ac.in

15. डॉ. एलाङबम विजय लक्ष्मी, Uripok, Ningthokhonjam, Lekai, Manipur, Imphal-795001 मोबाइल न.–09856138333 E mail- vningthoukhongjam@gmail.com

16. Shri Thangjam Shitaljit Singh, Kongpal mutum leikai, Imphal east, Manipur, PS - Porompat P.O- Porompat-795005

Mobile- 9615253602, ई-मेल–sitaljtt@gmail.com

17. डॉ. पी. विट्ठल, प्रोफेसर, मराठी विभाग, स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाड़ा विश्वविद्यालय, नांदेड़–431606 महाराष्ट्र

मोबाइल– 9850241332 ईमेलः p-vitthal75@gmail.com

18. प्रो. बी अशोक, 'Saket', Darshan Nagar 225, Kudappan Kannu, P.O. Trivandrum-695043, Kerala

Mobile- 9496253860, Email- asoksaketh16@gmail.com

19. श्री वैद्यनाथ झा, ई–27, अर्जुन मार्ग, डीएलएफ फेस–1, गुरुग्राम–122002

फोन–9582221968, ई-मेल–vaidyanath1949@gmail.com

20. डॉ. दुली हेम्ब्रोम, सहायक प्राध्यापक, संथाली विभाग, विद्यासागर विश्वविद्यालय मेदिनीपुर, पश्चिम बंगाल–721102

फोन–8250076967, ई-मेल–dulee@mail.vidyasagar.ac.in

21. प्रो. अजय कुमार मिश्र, संस्कृत साहित्य विभाग, केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, 56–57, सांस्थानिक क्षेत्र, जनकपुरी, नई दिल्ली–110058

फोन–9968303243, ई-मेल–ajaykmishracsu@gmail.com

22. डॉ. आलोक रंजन पांडेय, एसोसिएट प्रोफेसर (हिंदी विभाग), रामानुजन कॉलेज दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली–110019

फोन. 9540572211 ई-मेल– alok-pandey76@yahoo.com

23. प्रोफेसर अवध किशोर प्रसाद, C/o श्री कुमार राकेश, ग्रीन फील्ड स्कूल, ए–2 ब्लॉक, सफदरजंग एनक्लेव, नई दिल्ली–110029

फोन–9999191008, ई-मेल–akpdkundhur1940@gmail.com

24. प्रो. त्रिभुवननाथ शुक्ल, 56, अशोक नगर, आधारतल जबलपुर, मध्यप्रदेश–482004

फोन–9425044685, ई-मेल–tnshukla13@gmail.com

25. डॉ. अरुणाभ सौरभ, सहायक प्राध्यापक, भाषा शिक्षा विभाग, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, एन.सी.ई.आर.टी, श्यामला हिल्स, भोपाल, म.प्र.–462013

फोन–9871963960, ई-मेल–arunabhsaurabh@gmail.com

26. डॉ. सी जयशंकर बाबु, Head, Hindi Dept., Pondicherry University, Puduchery-605014 फोन–9442023405, ई-मेल–professorbabuji1@gmail.com

27. डॉ. सुरेंद्र विक्रम, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग, लखनऊ क्रिश्चियन कॉलेज, (लखनऊ विश्वविद्यालय), आवास–सी–1245, एम आई जी राजाजीपुरम, लखनऊ, उत्तरप्रदेश–226017

फोन– 8960285470, ई-मेल–vikram.surendra7@gmail.com

28. डॉ. गोविंद स्वरूप गुप्त, फ्लैट नं.–212, ब्लॉक आई, सिलवर लाइन अपार्टमेंट (बी.बी.डी), फैजाबाद रोड, लखनऊ–226028

फोन नं–9335257117, ई-मेल–dr-govindswaroopgupta@gmail-com

29. डॉ. विशाला शर्मा, प्लॉट नं.16, मयूर पार्क रोड़, संकल्प नगर, हरसुल, औरंगाबाद महाराष्ट्र–431001 फोन नं–9422734035 ई-मेल– vishalasharma22@gmail.com

❑❑❑

वार्षिकी (वार्षिक)
P.E.D. NO.-1035
450-2024 (DSK-II)

प्रधान संपादक की कलम से...

इस वाक् तप की व्याख्या इस प्रकार है कि तप कोई आत्मपीड़ा का साधन न होकर आत्मविकास एवं आत्मसाक्षात्कार की कल्याणकारी योजना है। अनुद्वेगकर वक्ता द्वारा प्रयुक्त शब्द ऐसे नहीं होने चाहिए जो श्रोता के मन में उद्वेग या उत्तेजना उत्पन्न करें और न ही अभद्र हों। वक्ता द्वारा प्रयुक्त किए गए शब्दों की उपयुक्तता की परीक्षा श्रोताओं की प्रतिक्रिया से होती है। अनेक लोग अपने जीवन में इस तप की कमी के कारण अपने जीवन में विफल होते हैं और अपने बंधुओं को खो देते हैं। उसका कारण मात्र वाणी की कटुता है। यह शब्दों की कठोरता और उनके विवेकशून्य विचारों की दुर्गंध है। सत्य, प्रिय और हितसत्य भाषण ही श्रेष्ठ है परंतु सत्यप्रिय वचन प्रिय और हितकारी भी हों, इन तीनों के होने पर ही वह वक्तृत्व वाङ्मय तप कहलाता है जो साधक के लिए कल्याणकारी सिद्ध होता है। आत्मोन्नति के रचनात्मक कार्य में वाक्शक्ति का सदुपयोग करना ही भगवान की दृष्टि में वाक्संयम अथवा वाङ्मय तप है।

अपने सशक्त माध्यम वाणी के द्वारा वक्ता की बौद्धिक पात्रता, मानसिक शिष्टता एवं शारीरिक संयम प्रकट होते हैं। यदि वक्ता अपने व्यक्तित्व के इन सभी स्तरों पर संगठित न हो तो उसकी वाणी में कोई शक्ति, कोई चमत्कृति नहीं होती। वाणी एक कर्मेंद्रिय है जिसके सतत् क्रियाशील रहने से मनुष्य की शक्ति का सर्वाधिक व्यय होता है। अतः वाणी के संयम के द्वारा बहुत बड़ी मात्रा में शक्ति का संचय किया जा सकता है जिसका सदुपयोग हम अपनी साधना में कर सकते हैं।

प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी 'देशगव्हाणकर'

केंद्रीय हिंदी निदेशालय
शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार
पश्चिमी खंड-7 रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-110066
दूरभाष:- 011-20862356 एक्सटेंशन- 248 / 231 / 234
bhashaunit@gmail.com
www.chdpublication.education.gov.in www.chd.education.gov.in
प्रबंधक, भारत सरकार मुद्रणालय मिंटो रोड,नई दिल्ली-110002, द्वारा प्रकाशित

वार्षिकी-2024